३८५९

श्री

जैनप्रबोध पुस्तक.

भाग पहेलो

एमां

समस्त श्रावक भाइउने अवश्य खपमां आववा योग्य एवां स्तवनादिकोने यथायोग्य शुद्ध करी

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्रीमुंबापुरी मध्यें.

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यां छे.

संवत् १९४५ ना सन १८८९.

माघशुक्ल ५ मी मंगळवार.

प्रस्तावना.

आ जैनप्रबोध नामक पुस्तकनो प्रथमभाग छा
पी जाहेरमां मूकतां समस्त महारा साधर्मि भाइयो
ने हुं सविनय प्रार्थना करुं छुं, के केटलाएक न्हाना
महोटां स्तवनो, सज्झायो, प्रभातियां, चोढालीयां, छंदो,
लावणीयो, होरीयो अने अनेक प्रकारना तप कर
वानो विधि, आदें देइने बीजा पण घणा प्रकारना बूटा
बोल, जेवा के प्रत्येक वांचनार साहेबने अवश्य ख
पमां आवे तेवा तेवा घणी सूक्ष्मताथी शोधीने आ
पुस्तकमां बधा मली सुमारें साडा सातशें ग्रंथो दाख
ल करेला छे. एटले प्रथम अढी रूपैयानी किंमतनो
जैनप्रबोध जे में छापेलो हतो, तेमां जे जे स्तवना
दिको हतां ते सर्व पूरे पूरां आ पुस्तकमां दाखल
करीने वली बीजां पण तेना पोणा भाग जेटलां
नविन स्तवनादि वधारे दाखल करेलां छे. तेमज
आगला पुस्तकमां नारकी आदिकनां चित्रोनां काली
शाइथी छापेलां मात्र चार पृष्ठोज आदिमां नाख्यां
हतां, तेने स्थानकें हालमां जूदा जूदा पांचे रंगमां
चित्रेलां शोल पृष्ठों आ ग्रंथनी आदिमां हकीगत स
हित नाख्यां छे. परंतु ते चित्र हालमां मात्र पांचशो
पुस्तकोमांज नाखीने पुठां बंधावेलां छे, माटें जे साहेबो
लगभग एक वर्षनी अंदर ए पुस्तक खरीद करशे, ते
साहेबोने ते रंगीन चित्र साथेंनुं पुस्तक मली शकशे.

तेमज आ ग्रंथ, सर्व श्रावक मंमळने उपयोगी होवाथी एमां कांइ पण फायदो थवानी आशा न राखतां पुस्तक छापतां जे खरच लाग्यो छे, तेटलीज रकम उपजाववा माटें हालमां मात्र एनी किंमत रु० ३) अंके त्रणज राखेली छे. ए वातनो निश्चय करवा माटें प्रथम जे रत्नसार नामें पुस्तकनो बीजो भाग बार रुपैयानी किंमतवालो छपायो हतो, तेमां जेटला श्लोकसंख्यानो समावेश करेलो छे, तेटलाज श्लोकसंख्यानो आमां पण समावेश कर्या छतां तेना चतुर्थांश जेटली किम्मत राखी छे. ते उपरथीज सज्जनोना मनमां महारुं लखवुं खरेखरुं समजाइ जशे.

माटे हुं आशा राखुं छुं के जे साहेबो आ पुस्तकमां आवेली सर्व बाबतो वांची जशे, तेमने आ ग्रंथ अवश्य प्रिय लागशे, तेथी ते उपकारी सज्जनो बीजा पण पोताना निकटवर्त्ती बंधुउने आ पुस्तक खरीद करवानी भलामण करी पोतानी सुजनता प्रदर्शित करशे.

आ पुस्तक छापतां आगल माफक अजितनाथनुं एक स्तवन तथा श्रीपार्श्वनाथनुं एक स्तवन बे वखत छपाइ गयेलुं छे, तेमज प्रुफ तपासतां नजरदोषथी तथा स्थूल बुद्धिना प्रसंगथी महाराथी जे कांइ आ ग्रंथमां अशुद्धता रहेली होय, ते गुणज्ञोयें महारा उपर क्षमा राखी सुधारीने वांचवुं. हुं आ ग्रंथमां थयेली अशुद्धता संबंधी समस्त वांचक वर्गनी साथें मिछामि दुक्कडं करुं छुं. ते स्वीकारशो. किं बहु विलेखनेन.

॥ अथास्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका प्रारंभः ॥



॥ प्रथम चैत्यवंदनादिक (१७) नी अनुक्रमणिका ॥



॥ आरति तथा मंगलीक दीपक (८) ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रजीनां स्तवनो (११) ॥

॥ तूटक प्रभातीयां (३२) नी अनुक्रमणिका ॥

श्रीशत्रुंजयना स्तवनादिक (२४) नी अनुक्रमणिका॥

॥ श्री समेत शिखरादि तीर्थोनां स्तवनो (८) ॥

॥ तूटक न्हानां स्तवनो (१७) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ महोटां स्तवनो तथा रास अने चोढाली
यां वगेरे (१७) नी अनुक्रमणिका.

॥ छंद (ए) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ संघाउ (४ए) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ श्रीआदिजिननां स्तवनो (२१) नी अनुक्रमणिका ॥

॥ केशरीयाजीनां स्तवनो (६) ॥

॥ श्रीअजितनाथनां स्तवनो (११) ॥

॥ श्री संन्नवजिनन्नां स्तवनो (१०) ॥

॥ श्री अभिनंदन जिननां स्तवनो (७) ॥

॥ श्री सुमतिनाथनां स्तवनो (७) ॥

॥ श्री पद्म प्रभजिननां स्तवनो (८) ॥

॥ श्री सुपार्श्व जिननां स्तवनो (७) ॥

॥ श्रीचंद्रप्रभजिननां स्तवनो (७) ॥

॥ श्री सुविधि जिननां स्तवनो (१०) ॥

॥ श्री शीतलनाथनां स्तवनो (१०) ॥

॥ श्री श्रेयांसजिननां स्तवनो (७) ॥

॥ श्रीवासुपूज्य जिननां स्तवनो (६)॥

॥ श्री विमलजिननां स्तवनो (७) ॥

॥ श्री अनंत नाथनां स्तवनो (१०) ॥

॥ श्रीधर्मजिनना स्तवनो (८) ॥

॥ श्रीशांतिनाथनां स्तवनो ॥ २१ ॥

॥ श्रीकुंथुजिननां स्तवनो ॥ ७ ॥

॥ श्री अरनाथजिननां स्तवनो ॥ ८ ॥

श्री मल्लिजिननां स्तवनो ॥ १० ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रतजिननां स्तवनो ॥ ६ ॥

॥ श्रीनमिजिननां स्तवनो ॥ ६ ॥

॥ श्री अरिष्ट नेमिनाथनां स्तवनो ॥ २५ ॥

॥ श्रीपार्श्व जिननां स्तवनो ॥ ४६ ॥

॥ अथ महावीर जिननां स्तवनो ॥ २७॥

श्रीसीमंधरप्रमुखवीशविहरमानजिननां स्तवनो॥२१॥

॥ लावणीयो १ ८ नी अनुक्रमणिका ॥

॥ होरी वसंत वगेरे ॥ १ १ ॥ नी अनुक्रमणिका.

अथ प्रास्ताविक कवित, दोहा, चोपाइ वगेरे.

अथ बूटक बोलोनी अनुक्रमणिका.

ए पुस्तकमां सर्वमली (७९७) बाबतो छे.

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥





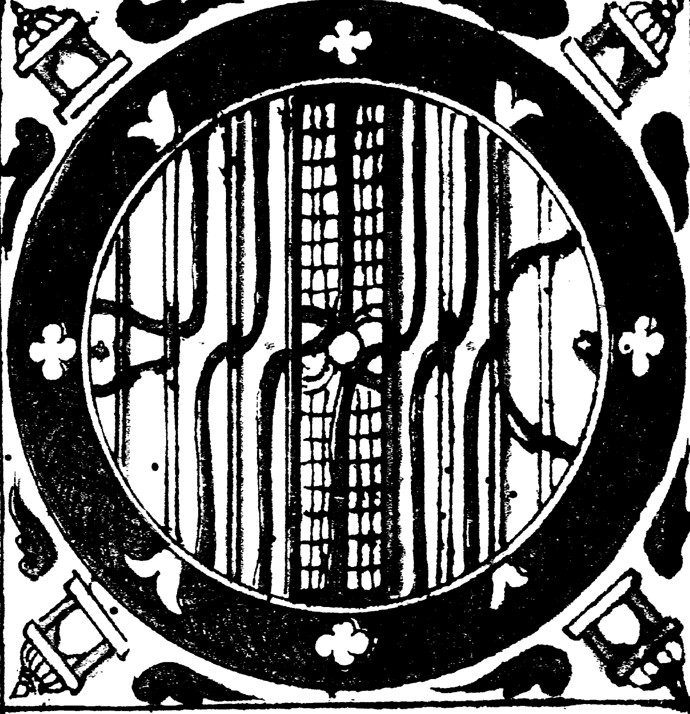


॥ अढी द्वीप वर्णनम् ॥

तीर्छा लोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र छे, तेना मध्यमां
पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढी द्वीपने विषे मनुष्यनी
वस्ति छे. ते अढी द्वीपमां पण प्रथम जंबुद्वीप मध्यमां गोल
थालीने आकारे लाख योजनुं छे. तेमां सात वास क्षेत्र छे. ति-
हां पहेलुं दक्षिण दिशा तरफ जेमां आपणे वसीयें छैयें ते
भरत क्षेत्र छे, तेनी वच्चमां वैताढ्य पर्वत छे, ते पर्वतनी द-
क्षिण बाजु त्रण खंड तथा उत्तर बाजु त्रण खंड मलीने छ
खंड गंगा अने सिंधू नदीथी थयेला छे, ते छये खंडमां ब-
त्रीश हजार देश छे. ए भरत क्षेत्रनी सीमा चुल हिमवंत
पर्वत सूधी छे. हिमवंत पर्वत पछी हिमवंत नामे युगलिया
नुं क्षेत्र छे. ते पछी महा हिमवंत पर्वत छे, ते पछी वली
हरि वर्ष नामे युगलीयानुं क्षेत्र छे. ते पछी निषध पर्वत छे,
पछी पूर्व पश्चिम एवा बे विभागे वहेंचाएलुं थयुं महा वि-
देह क्षेत्र छे. तेनी वच्चमां मेरु पर्वत छे, अने मेरुनी उत्तर द-
क्षिणे देवकुरु तथा उत्तर कुरु ए बे युगलीयानां क्षेत्र छे, त-
था चार महोटा गजदंता पर्वत छे, पछी नीलवंत पर्वत छे, प-
छी रम्यक नामे युगलीयानुं क्षेत्र छे, पछी रुपी पर्वत छे, ते
पछी हिरण्यवंत नामे युगलीयानुं क्षेत्र छे, ते पछी शिख
री पर्वत छे. पछी छेहेलुं उत्तर तरफ ऐरवत क्षेत्र छे. अ-
ने जंबुद्वीपने फरतो बे लाख योजन पहोलो लवण समुद्र
छे. तेने फरतो चार लाख योजन पहोलो धातकी खंड चूडीने
आकारें छे तेने फरतो आठ लाख योजन पोहोळो कालोद
समुद्र छे. तेने फरतो शोल लाख योजन पहोलो पुष्कर द्वीप
छे तेने अर्द्ध भागे आठ लाख योजन सुधीमां मनुष्य छे,
तेटलो भाग मानुषोत्तर पर्वतें करी वींटेलो छे, पूर्वे जंबुद्वीप
मां जे पर्वत तथा वास क्षेत्र कह्यां, तेथी बमणां धातकी खं-
डमां छे, अने पुष्करार्द्ध द्वीपमां पण बमणां छे. इति ॥



अढीद्वीप



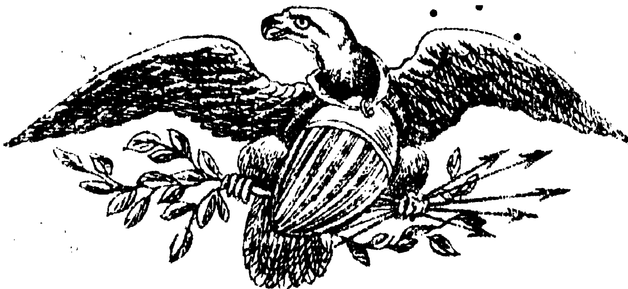
जंबुद्वीप

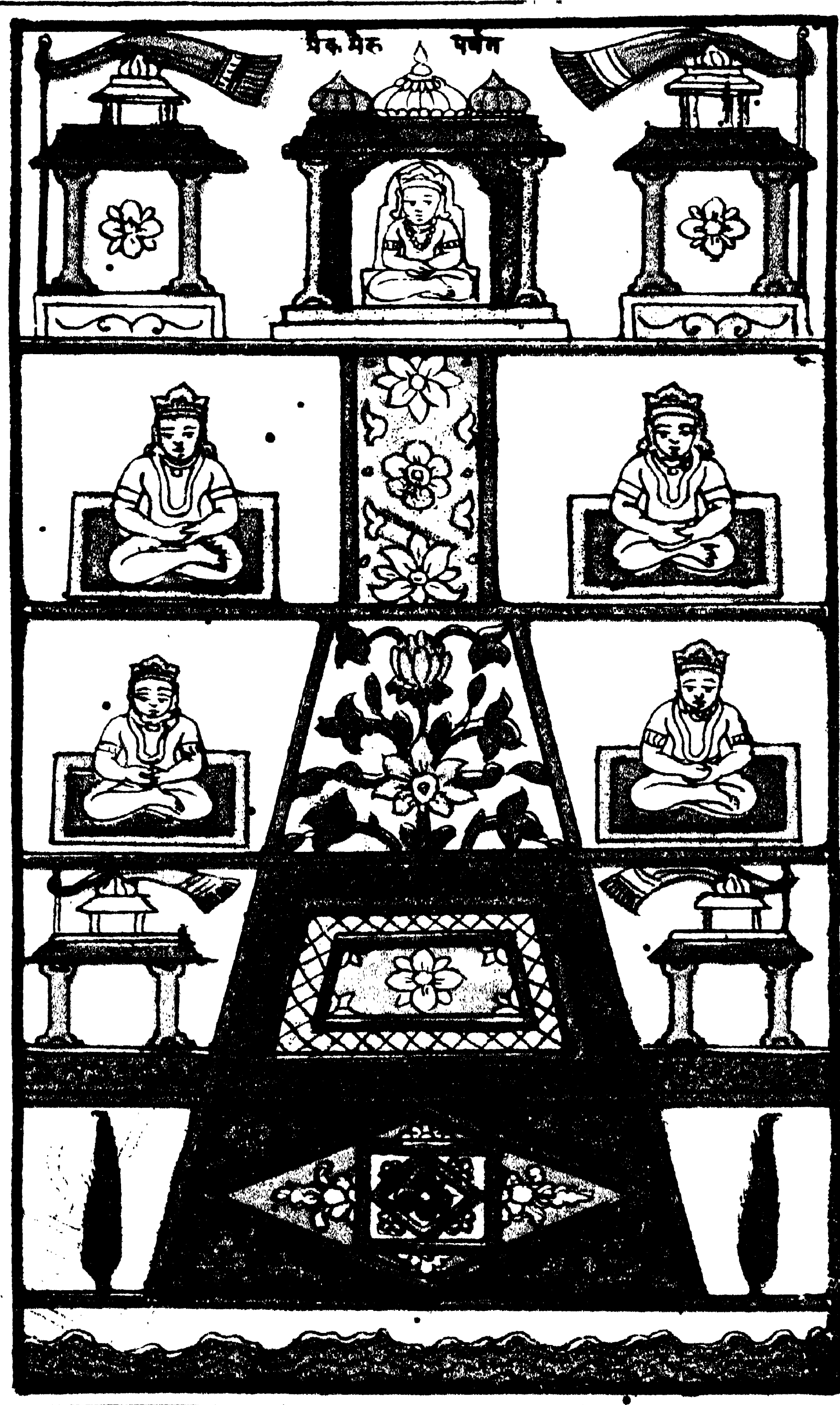
॥ मेरु पर्वत संक्षेप वर्णनम् ॥

मेरु पर्वत कनकमय वाटलो छे, तेनी ऊंचाई लाख योजननी छे
तेमां एक हजार योजननो कंद पृथ्वी माहे छे, अने ऊपर नवा-
णुं हजार योजन छे, तथा ते शिखरने विषे एक हजार योजन
पहोलो छे, अने नीचे धरनीमां तलीये दश हजार नेवुं यो
जननी ऊपर वली एक योजनना अगीयार भाग करीये तेवा
दश भाग जेटलो पहोलो छे, ते लाख योजनना ऊंचा मेरुनी
ऊपर वली चालीश योजननी ऊंची चूलिका छे, ते चूलिकानी
ऊपर एक शाश्वत जिनमंदिर छे.

ते मेरुना शिखरने विषे चूलिकाना तलीयामां पंडक वन
छे, तेमां चार दिशाये चार जिन भुवन छे. तिहांथी नीचे वली
छत्रीश हजार योजन आवीये तेवारे मेखलाने विषे सोमनस्य
वन छे, तेमां पण चार शाश्वत चैत्य छे. ते सोमनस्य वनथी
साडा बासठ हजार योजन हेठल आवीये तेवारे नंदन
वन छे, तेमां पण चार दिशाये चार जिन भुवन छे. पछी
ते नंदन वनथी पांचशें योजन हेठे आवीये तिहां समभूतल
पृथ्वी छे, तिहां भद्रशाल वन छे, तेने विषे पण चार जिन प्रा-
साद छे, एम सर्व मली सत्तर जिन प्रासाद छे.

मेरुनो पहेलो कांड हजार योजननो धरतीमां छे, ते माटी
पाषाण, वज्ररत्न तथा कांकरानो छे, तेथी ऊपर बीजो सोमन
स्य वन सुधी ६३००० योजननो कांड ते स्फटिक रत्न, अंक
रत्न, रूपा तथा सोनानो छे. तेथी ऊपर छत्रीश हजार योज-
ननो त्रीजो कांड ते रक्तवर्ण कनकनो छे. इति




सुमेरु पर्वत

॥ अथ नरक दोहा प्रारंभः ॥

तिहां प्रथम कयी नरक पृथ्वी सुधी कया प्रकारनी वेदना छे ते संबंधी दोहा

पापकर्मथी प्राणिया, ऊपन्या नरक मझार ॥ परमाधामी परस्पर, वेदन क्षेत्र विचार ॥१॥ त्रिहुं नरके त्रण वेदना, बीजा त्रिकमां दोय ॥ सातमिये क्षेत्र क्रोहथी, क्षण एक सुख नहिं होय ॥२॥ लाठी लंगर कोरडा, चाबक तणा प्रहार ॥ जकड पकड कर बांधिने, दे मुदगरनी मार ॥३॥ सांकडे घाली सामटा, मारे विविध प्रकार ॥ घोर अंधारे घालियां, पडिया करे पुकार ॥४॥

॥ अथ पहेला आंकनां चित्र संबंधी दोहा ॥

तीक्ष्ण रौद्र परिणामथी, घणा जीव संहार ॥ वैर बांधिने ऊपना, नरक गतीने द्वार ॥४॥ परमाधामी घेरियो, सांकले घाल्यो सोय ॥ शस्त्र ऊघाडा तोलिने मारण लागा तोय ॥५॥ जीव हिंसा पापें करी, ऊपन्यो नरक मझार ॥ परमाधामी ते हने, हणवा करे होकार ॥६॥ जता जड जे जडता, चपल स्वभावी जीव ॥ माथे मुदगर पाडता, बहुली पाडे रीव ॥७॥ अनुचित कारज जे करे, तेहना एह हवाल ॥

॥ बीजा आंकना चित्रना दोहा ॥

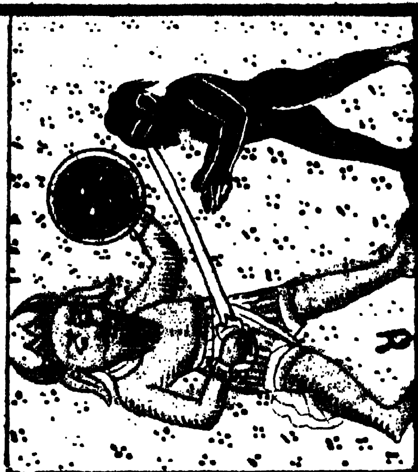
रागतणा रसिया हूता, सुणि सुणि करता तान ॥ धर्मकथा नवि सांभली, तेहना कापे कान ॥८॥

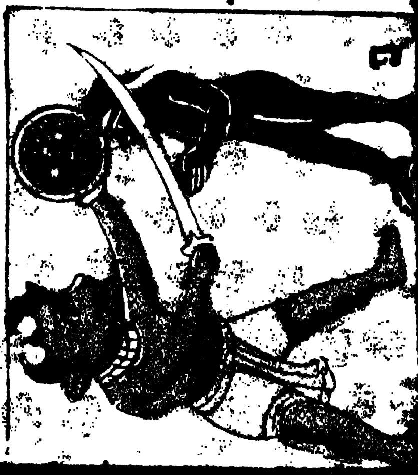
॥ त्रीजा आंकना चित्रना दोहा ॥

पर रमणीना रूपनो, विषय वखाण्यो जोई ॥ देव गुरु निरख्या नहीं, काढे आंख्यो दोई ॥९॥

॥ चोथा आंकना चित्रनां दोहा ॥

कच्ची कलियां तोडता, न गण्यो रातने दीह ॥ जई नरकमां ऊपना, काटे नाक अबीह ॥१॥ रीछादिक वनजीवने, आहेडी पाड्या फंद ॥ नाक विधारी नाथिया, तेहना करत निकंद ॥२॥ सुरभी गंध सूंघ्या घणा, गुच्छा फूल फराक ॥ अतर फूलेल पडावीयां, छेदे तेहनां नाक ॥३॥






॥ पांचमा अंकना चित्रना दोहा ॥

जूठ वचन बोल्या घणा, कूड कपटनी खाण ॥ परमाधामी तेहनी, जीभ काढे जडताण ॥१॥ बोल फैल सुख बोलता, किणरी न करे काण ॥ साचो कदिय न बोलता, जीभ काढे जडताण ॥२॥

॥ छठ्ठा अंकना चित्रना दोहा ॥

घर घर भार भुता घणा, न कियो धर्म लगार ॥ अवसर तो चिंत्यो नहीं, गले धूंसर सहे मार ॥३॥ गाडी रथमां बेसिने, बलद दोडाव्या वाट ॥ अग्नि तपावी धूंसरो, दई दोडावे घाट ॥४॥ वज्र कंटकसी रे-तमां दोडावे दई मार ॥ बहिल दोडाव्या वाटमां, तेहना ओह प्रकार ॥५॥ लाकडी लेई मारता, घणा घणेरा ढोर ॥ परमाधामी तेहने, बांधे जूडा जोड ॥६॥ पापी पाप पुरा कर्या, आव्यो अमारी पास ॥ बांधे धोसरो मेलीने, मारे सांकल चास ॥७॥ बांधे सांकल मेलतां, ऊपर मारे मार ॥ पापी रथ खेड्या घणा, भोगवे कुःजनो चार ॥८॥

॥ सातमा अंकना चित्रना दोहा ॥

रस्ते लूंट्या रांकने, करी कोप अन्याय ॥ मार मार्या तेहने, पील्या घां-णी मांय ॥९॥ काचा कवला फल भख्यां, गाजर मूला कंद ॥ ऊंधे माथे नाखिने, पील्यां करे आक्रंद ॥१०॥ गरिब जीवने मारता, करता बहु अन्याय ॥ जूं लिख पण मारी घणी, पील्या घाणी मांय ॥११॥

॥ आठमां अंकना चित्रना दोहा ॥

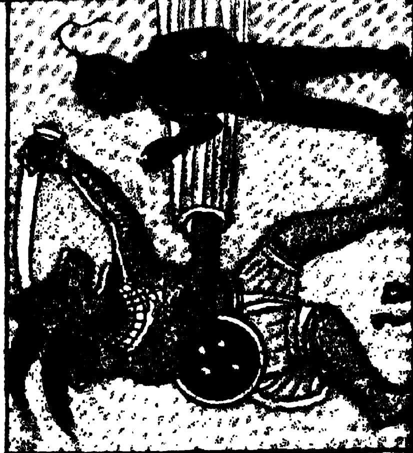
वनस्पति छेदन कर्युं, काप्या तरु वनराय ॥ घणा भूल कर कापिया, का-पे तेहनी काय ॥१२॥ चटचट चूटे चामडी, त्रटत्रट त्रोडे मांस ॥ तण बाउंठ तन्नमां, जाणे कसीया कास ॥१३॥ लाकडुं बोध्या सलरां, न्याभें पडता जीव ॥ अण दीठा ने बोरतां, करे नरकमें रीव ॥१४॥

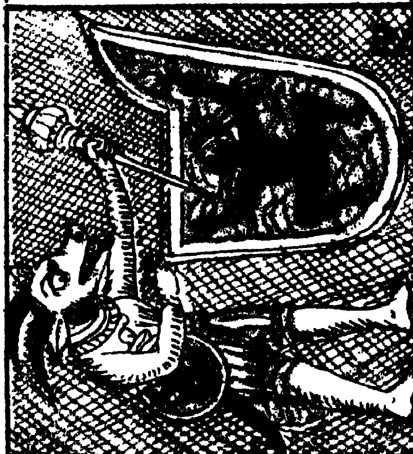
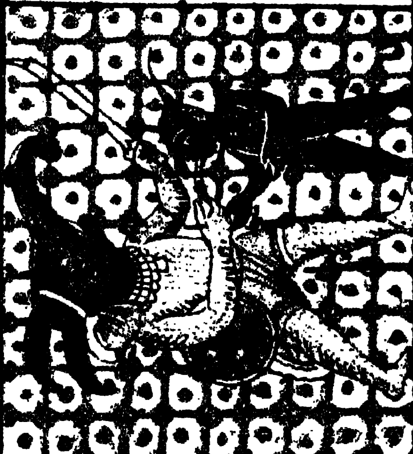
॥ नवमा अंकना चित्रना दोहा ॥

हलुवाई भवने विषे, कर्या पापने घोर ॥ परमाधामी तेहने, टे कडाईमां बोल ॥१५॥ कसाईने भव जे कर्या, हिंसा कर्म अघोर ॥ कुंभीमां लई कापना, करता जूओ रोल ॥१६॥ सड्या धान्य भर्या घणा, तडके नाख्या जीव ॥ कुंभी-मांहे कापनो, पच्यो करे छे रीव ॥१७॥ साहसिक थईने मारता, ससलाने व-लिरोल ॥ कुंभीमां लई कापना, न मले छे आर ने आल ॥१८॥ पापी पांगपालाकी-था, रांध्या जीव विशेष ॥ कुंभीमां लई अवतर्या, ऊंडी पाडे चीश ॥१९॥ कुंभी लोह कडवतणी, बलतां गरजा होय ॥ यज्ञ होम कीधा घणा, तेहना फलने जोय ॥२०॥ लाय लूंय बाधी घणी, करता जोरा न्याय ॥ कुंभी मांहे नाखियां, छे अरडीयाय

॥ दशमा अंकना चित्रना दोहा ॥

फूल नवाख तोडना, दसरा बेगण गोर ॥ कांटा वींधे अंगमां, कांईनयाले जोर ॥२१॥ फूल नवारा ढांकतां, फूला सेज बिछाय ॥ सुखभोग किया तेहने, कां-टे चांपे काय ॥२२॥ सूईयां सहकु तपाविने, तीखी अणीयां जोर ॥ चांपे स-हना अंगमां, करतो सौर बकोर ॥२३॥


॥ अगीआरमा चित्रना दोहा ॥

कोमल कलियां फूलनी, तोडी गुंथ्या हार ॥ सामली वृक्षे बांधीने, दे आजकनी मार ॥१॥ डोडे घणां जे छोडतां, तोड्यां तरुवर फूल ॥ आंध्या वृक्षने सामली, देजा न्यारां सूल ॥२॥ जन्म जन्म जे जेरीयां, तोड्यां तरुवर पान ॥ ऊंधे मस्तक बांधीने, ताणे करे हेरान ॥३॥ कूट सामली मोटकूं, बांधे तरुवर डाल ॥ तीजा जेहनां पानडां, जैसी खांडा धार ॥४॥

॥ बारमा चित्रना दोहा ॥

मा बापे सुत मोहथी, पोढा कीधो पोष ॥ नारी वशथी नीवड्यो, दुःखदाई दम शोष ॥१॥ छाती ऊपर लात दे, आंखे दई अंगार ॥ मात पिता गुण चोर ते सहता कष्ट अपार ॥२॥ सुयरतणुं मोहोदुं कीयुं, दीया छातीरे पाय ॥ लाते करीने लेहता, नीसरे कुं से ऊपाय ॥३॥

॥ तेरमा आंकना चित्रना दोहा ॥

कोल भरोसा देईने, कपट कर्या घणी वार ॥ पर्वत पडता दुःख सहे, ऊपर तरवारोंरी मार ॥१॥ वचन चूकाडे नर हुवे, माया कपटी जेह ॥ पटक पछाडी पर्वते, खंडखंड करे देह ॥२॥ जूठा सोगन खावता, करता चुगली चाड ॥ जेहावर यमदूत ते, करत पछाड पछाड ॥३॥

॥ चौदमा चित्रना दोहा ॥

सामली तरुने छाहडे, पापी बेठो जाय ॥ पान रूप शस्त्र जे पडे, खंड खंड होय काय ॥१॥ सासु वहु संतापती, करती नीत कपट ॥ परमाधामी तेहने, दे दुःख दपट ॥२॥ करता चाबत रागरा, घरघर भांडे पाड ॥ केहता लाकु कलेसणी, ते लहे दुःख अपार ॥३॥ नरक मांहेथी नासतां, कुट सामली जाय ॥ ऊपरथी पडे पानडां, जाणे मारया घाय ॥४॥

॥ पन्नरमा चित्रना दोहा ॥

सासु वहु संतापति, दुःख देती दिनरात ॥ जाई नरकमां ऊपनी, न्यारी छातीपर लात ॥२॥ शोक तणा सुत ऊपरे, धमकी धेष धरना ॥ पाडु भरतार आहणी, ऊपर मार भरत ॥३॥ लडती पीयर सासरे, देती सजन सराप ॥ कूड कलंक चढावती, अवगुण गाली आप ॥४॥ घात करे विश्वास दे, छल करती छक माह ॥ निर्लज नारी तेहने, दे वे दुःख अथाह ॥५॥ अनुचित कारज जे करे, तेहना एह हवाल ॥ सांभली धर्मज आदरे, पामे सुख रसाल ॥६॥ लडती पीयर सासरे, करती कलेश कुरूप ॥ लातेवात चलावती, जिण लहुं दीसे रूप ॥७॥

॥ शोलमा चित्रना दोहा ॥

कुहाडे करी कापीयां, लीला महोटां झाड ॥ परमाधामी तेहनां, मस्तक छेदे कुहाड ॥१॥ केरी कोहाला पावला, भूमि विदारण जेह ॥ पृथ्वीकाय आरंभथी, पामे कष्ट अछेह ॥२॥





॥ सत्तरमा चित्रना दोहा ॥

जतां जड नंनोरता, चपल स्वभावी जीव ॥ माथे फरसी पाडता, अहुली पाडे रीव ॥१॥ मित्र मांहे जता थकां, जन्म कापतां जडा ॥ परमाधामी तेहने, मारे फरसी मार ॥२॥

॥ अढारमा चित्रना दोहा ॥

पून्य रही धूमवतो, करतो अनरथ मूल ॥ कामण ठवी गर्भ गलावतो, तेहने मोयुं त्रिशूल ॥१॥ गुरुद्रोही चेलो हुवे, वेष विराधक जेह ॥ मारग लोपी मत्तियो, पामे दुःख अछेह ॥२॥ मानवनो भव पामिने, हणिया जलचर जीव ॥ दया न आणी दिलमां, करतो पाप सदीव ॥३॥ निल्लंछण कर्म कीया घणा, पाप कर्या अति जेह ॥ परमाधामी तेहने शूले परोई देय ॥४॥ अग्नि आरंभ किया घणा, कीधा हिंसा धर्म ॥ ते त्रिशूले ऊछालीया, देखो आयां कर्म ॥५॥ कुसंगत कीधी घणी, जेह सेवी परनार ॥ ऊंधे शूले परोईया, दे वलि ऊपर मार ॥५॥

॥ ओगणीशमा चित्रना दोहा ॥

पाप प्रभावथी ऊपनो, कुंभी पाकनी मांय ॥ ऊपर चूंटे कागडा, मांहे कीडा खाय ॥१॥ वली ऊपर चूंटे कागडा, त्रटत्रट त्रूटे काय ॥ कुंभी मांहे पड्यो थको, सहुनो दुःख अपाय ॥२॥

॥ वीशमा चित्रना दोहा ॥

चोरी करीने पारकी, लेता धननो राशि ॥ अथडावे आंधा करी, दे देख-हुली त्राश ॥१॥ धर्मी थईने धूतिया, करी ठगाई कूर ॥ परमाधामी तेहना कष्ट कडूर ॥२॥ पापे पेशो मेलता, घणा कीया आक्रंद ॥ जा नरकमें ऊपनो, भरका पाडे अंध ॥३॥

॥ एकवीशमा चित्रना दोहा ॥

वेर विछोहा पाडीयां, जूठ्या कसाई भाल ॥ चक भमाडी बरछीयें पटक पछाडे काल ॥१॥ गला भरडी घरेणा लीया, भाल हत्याकुरी एम ॥ पटके बरछी परोईने, करवे करता नेम ॥२॥ कीया निलंछन ढोरने, डाल्या नाणी बांधा ॥ गगडावी गिरिऊपरे कढे तेहनी साथ ॥३॥ हाली नगा भवने पिषे, फाड्या धरती पेट ॥ परमाधामी तेहने मारे बरछी नेट ॥४॥

॥ बावीशमा चित्रना दोहा ॥

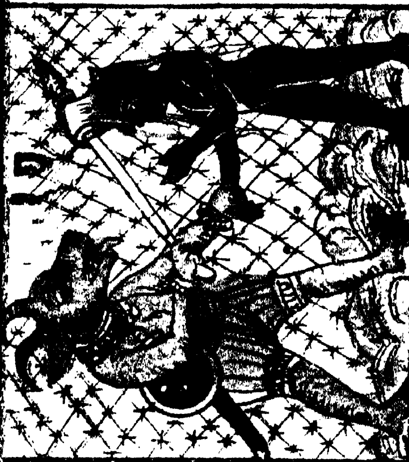
होका पीता होंशशुं, ढोल्या अणगलनीर ॥ तातूं आसु पावता, ऊठे अहुली पीर ॥१॥ हिंसा धर्मने आदर्यो, लागो कुकर्म केड ॥ परमाधामी तेहने, मुखमें शीशु रेड ॥२॥ हणिया हुक्का पीवतां, अग्नि जलादिक जीव ॥ तातुं लोह तपावीने, मुख चांप्या करे रीव ॥३॥ करी अंगार अग्नि तणा, चलमलरी चड डोल ॥ भांग तमाकु जे पीये, पामे नरकनी पोल ॥४॥













॥ त्रेवीशमा चित्रना दोहा ॥

सम सोगंद लईने भांजिया, सेव्या व्यसन अपार ॥ लाल चोळ गोळो करी, चांपे मुखमें क्षार ॥१॥ ऊपर मुद्गर मारता, मूके महोटी पोक ॥ करता किस चल्यो नही, एम कहे यम लोक ॥२॥ चोथुं व्रत न आदरी, कीधो शीलनो खंड ॥ परमाधामी तेहने, मारे मुद्गर दंड ॥३॥ एवा व्यसनने सेवतां, पामे एह हवाल ॥

॥ चोवीशमा चित्रना दोहा ॥

दगा द्रोह करि दंडिया, राज हुकुम मद छाक ॥ लई नरकमां ऊपन्यो, माथे धरी करांत ॥१॥ अग्नी तपावी धरतियें, ऊर्ध्व जसाडी धार ॥ बे जण ताणे ताकिने, पापी करत पोकार ॥२॥

॥ पच्चीशमा चित्रना दोहा ॥

अनाचार अति सेवतो, करतो घणो अन्याय ॥ वज्र तणा कांटा करी, वींधण लागा पाय ॥१॥ गलके फांसी घरके, दोडावे दई मार ॥ किकंतो हेठ पडे, पगनी पीड अपार ॥ धरती धुंधी अग्नि ज्युं, तीखी करवत धार ॥ तिण ऊपर चढावतां, करतो बहु पोकार ॥३॥ साधुने संतापनां वचन कह्यां अति घोर ॥ परमाधामी तेहने फांसी दई डोर ॥४॥

॥ छवीशमा चित्रना दोहा ॥

कसाई थईने काढीयां, दारू भठ्ठी दाह ॥ पापा कर्मथी पामीये, नरक निवासकी आह ॥१॥ रुधिर रूप मदिरा करी, प्याला अग्नि तपाय ॥ मुख फाडीने पावतां, वेदन सही न जाय ॥२॥ मद्य पीधुं मानवभवे, छक्या रहेन छयल्ल ॥ तरवो पावे लाल करी, तोहि न छूटे गयल ॥३॥

॥ सत्तावीशमा चित्रना दोहा ॥

निज नारीने परिहरि, पर रमणीसे प्यार ॥ सूला करे साथरे, घसे पाय संभार ॥१॥ ज्युं ज्युं सूलो जल बले, त्युं त्युं करे पुकार ॥ परमाधामी बोलीया, ताहरा कृत्य संभार ॥२॥ परजी पराई गोरडी, ने अनुराग धरंत ॥ सूके हाडे श्वान जिम, लाजे पेट भरंत ॥३॥ हिंसा करीने कुलता, जाणे ज्युं मोक्ष ॥ जेहने हिंसक गुरु भल्या, पोहोच्या नरके गोक्ष ॥ ने गुरु लोभी लंपटी, तेहना मान्या वेण ॥ लई नरकमां ऊपना, बाशामो नही चेण ॥ कोशी पावड कीया घणा, ढोल्या अणगल नीर ॥ परमाधामी तेहने पग पकडीने चीर ॥

॥ अठावीशमा चित्रना दोहा ॥

सूस लईने भांगिया, ना लोया गुरु पास ॥ लई नरकमां ऊपन्या, खंड खंड कर्या तास ॥१॥ विष दई प्राणीस मारिया, करि करि क्रोध प्रचंड ॥ परमाधामी तेहनुं, शरीर करे शतखंड ॥२॥










॥ ओगणत्रीसमा चित्रना दोहा ॥

साधुजन संतापिया, निंदा कीधी अपार ॥ ताते थंभे बांधिने, दे मुद्गरकी मार ॥१॥ पालो देखी थरहरे, कंपण लागे देह ॥ दादा मुझ जो ओरखे, कदी न करशुं तेह ॥२॥

॥ त्रीसमा चित्रना दोहा ॥

चार स्नान क्रियानहीं, अंतरगत मन लाय ॥ अणगल पाणी ढोलिया, पड्या नरकमां जाय ॥१॥ जलढोणीने जुमता, दयाज कीधी काय ॥ जलावे अग्नि जालमां, पकड पापीना पाय ॥२॥ साधुतणी निंदा करी, मुंह दीधी गाल ॥ उंधे मस्तक तेहने, बाले अगनी जाल ॥३॥ मधुपुडा पाड्या घणा, लाख लाल ने काल ॥ माखी चूंटे तेहने, दुःखे कीधी काल ॥४॥ डुंगर दव घाल्या घणा, बाल्या वनचर जेह ॥ परमाधामी तेहनी, बाले अग्नि देह ॥५॥

॥ एकत्रीसमा चित्रना दोहा ॥

जलचर जीव विराधिया, हिंसा न गणी कांय ॥ परमाधामी पटकता, नाखे वैतरणी मांय ॥१॥ न्हावण धोवण बहु किया, ढोल्या अणगल नीर ॥ उजल मारी डोलिया, नदी सरोवर तीर ॥२॥ नदि वैतरणी नीरनुं, देखो दुष्ट स्वरूप ॥ रसी रुधिरने पाचनो, कलकलतो दहरूप ॥३॥ बहु दुर्गंधी देखिने, आडु कांठे धाय ॥ नाखे पाछो साहिने परमाधामी पाय ॥४॥ मोची जवमें जे कर्या, मानुष चरता जीव ॥ वैतरणीमां नाखिया, घणी करावे रीव ॥५॥ बलकु मुखथी एम कहे, नहिं वांक हमारो लगार ॥ उंधे मस्तके बांधिने, उपर देवाले मार ॥६॥

॥ बत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

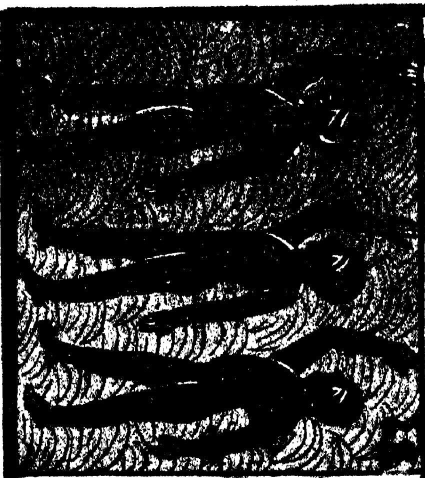
वेश्या विषय विकारथी, अतिसेवी अनाचार ॥ गई नरकमां उपनी सेहती कष्ट अपार ॥१॥ धूर्तपणे धन लेईने, वली न जूवे वाट ॥ हावे भाव नित केलवी, भेजवि नेह निराट ॥२॥ वेश्या दुःख माया करी, सुख विलसे संसार ॥ गई नरकमां उपनी, घणो सहे यम मार ॥३॥

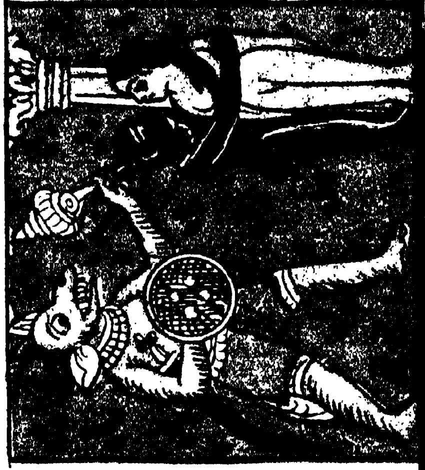
॥ तेत्रिशमा चित्रना दोहा ॥

इष्ट पिंड करमो कियो, संग कियो परनार ॥ अग्नि तपावी पूतली, जोडे छाती जार ॥१॥ जनु भनु महाराजजी, मत दो मोटो त्रास ॥ छोडो हांसो कंठनो, जिम लेउ थोडो श्वास ॥२॥ परनारी जे छूटो नहीं तो लागे मोटो डाग ॥ परनारीने परिहरो, उपर बडारी आग ॥३॥ राजा दंडे लोक लंडे, नरक जाय कुलजूल ॥ जिणने चंदो आरभो, तिने परनारी शुं प्रीत ॥४॥ परनारीना नेहथी, पाणी उतरी जाय ॥ थोडा सुखने कारणे, मार कनंतो खाय ॥५॥ घर डाणी दासी भणी, सुखे न सूवे आय ॥ जेणे चंदो आरभो, परनारी घर जाय ॥६॥

॥ चोत्रिशमा चित्रना दोहा ॥

कूडकपट करी जोलवी, पर थापण धनराश ॥ देई विश्वासने वंचिया, सहे नरकमां त्रास ॥१॥ हिंसा धर्म जे आदरी, हाथे चूंट्या जंत ॥ गई नरकमें उपन्या, देखो दुःखरा तंत ॥२॥





॥ पांत्रीशमा चित्रना दुहा ॥

धन देता ने चोरता, करता रागने द्वेष ॥ परमाधामी तेहने मुखमां मारे मेख ॥१॥

॥ छत्रीशमा चित्रना दुहा ॥

वस्तु वेचाण आपियां, गाडा पोठी ऊंट ॥ साह कहीने तो लतां, अटे मांही लूंट ॥१॥ अंधाण परां ने मारता, देता घडी उडाय ॥ कूडा जन्न जणावतां, पोहता नरक मझार ॥२॥ धणी धणीशुं विणसता, [illegible] देणारा चोर ॥ किया पसार पापना, ज्यूं करि छूटे जोर ॥३॥ ताडी नीर कटारियां, आमा सामी आय ॥ पाप किया भव पाछले, कोण छुडावे आय ॥४॥ पूरव वयर संबंधथी, करे परस्पर घात ॥ शस्त्र झटोझट मारता, रूपे जुदा किरात ॥५॥ पापी पारानी परें, मली मलीने जाय ॥ करडा वचन कही घणा, ऊपर मेले घाय ॥६॥

॥ साडत्रीशमा चित्रनां दुहा ॥

घेरैया होलीतणा, हसता पाणी ढोल ॥ परमाधामी बोलिया, घणी उडावो रोल ॥१॥ तडका तल उकालिने, आणी कोप अपार ॥ पिचकारी भरि छांटिने, ऊपर छांटे खार ॥२॥ ओछे पाणी माछली, तरफड करती तेह ॥ भरडो लचीने फूंकता, दाझे त्यांरी देह ॥३॥ परमाधामी आगथी, तल तप्त करेह ॥ भरी पिचकारी तेहने, छांटे वेदन अछेह ॥४॥ आवो रे वड घेरिया पापकरम हुशियार ॥ छांट्यो ताता तेलशुं, ऊपर लगाव्यो खार ॥५॥ माय सुणे भगिनी सुणे, सुणे वलि लोक अनेर ॥ गावे उघाडी गालियां, लाज नहिं यलगार ॥६॥ होली कलहनुं मूल छे, लाज हीण नर थाय ॥ बालकनो ओरे रहे, पण अकल जुदानी जाय ॥७॥



३५
३६
३७

॥ अडत्रीशमा चित्रना दोहा ॥

हरण शशाने रोझडा, करता मननी मोज ॥ गरिब जीवारे मारता, त्यांछे लाग्यो पाछो वेर ॥१॥ लिया शिकार खांखड, डोबा भरनारु ॥ क्षण जीवितने कारणे, क्रोण लगाया जकु ॥२॥ सिंह सिकार कीधा घणा, बांध्या वयर अथाग ॥ पाप करमथी पामियो, नरक निगोदकी आग ॥३॥ परमाधामी वाघना, रूप करी विकराल ॥ उछलता आया झालीने, संकट सजन विशाल ॥४॥ सिंह तणो भव पावने, मार्या वनचर जीव ॥ हिंसक भवमें हिंसिया, ते करता अति रीव ॥५॥

॥ ओगणचालीसमा चित्रना दोहा ॥

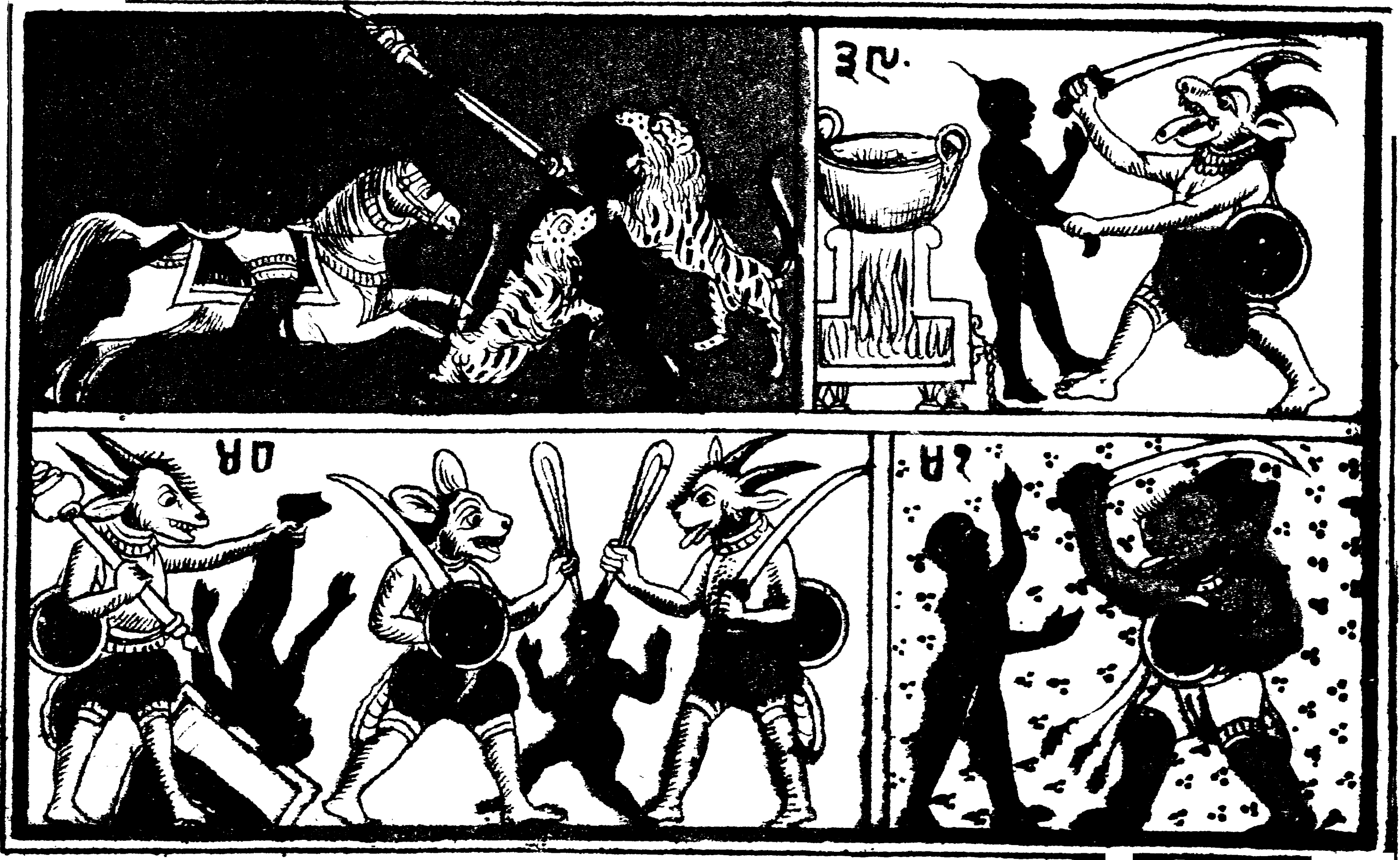
तुं तो हतो शीकारी, कीनी अहोत खुवारी ॥ कर कर जीवारी घात, पडियो नरक मझार ॥१॥ छेदीने मांस वढावोरे, सूला करने खवावोरे ॥ नरसो कर कर लाल, पकड पापीने पावोरे ॥२॥

॥ चालीसमा चित्रना दोहा ॥

धोबीने भव धोईया, बाइ वस्तर वेश ॥ जलचर जीव विणासिया, अणगळ नीर अशेष ॥१॥ नरकवास मेलावथी, नरकावासमां माडाल ॥ कड पकड यमदूतते, करत पछाड पछाड ॥२॥ धोबी कपडा धोवाडरे, शिला ऊपर पछाडरे ॥ त्युं परमाधामी पग पायक, पापीने पछाडरे ॥३॥ अजेता मत मारोरे, मा गरिबने तारोरे ॥ वारवार कहुं तुम आगेरे, मनु नाथु विनती मागेरे ॥४॥ तव बोले यम रायारे, पाप कीना सवायारे ॥ तु नरक तणा दुःख देखीरे, मोढुं कयुं बिलखायरे ॥५॥ दिलमां दया न आणीरे, पाप करी मोज माणीरे ॥ तु नरकमां पडयोरे, परभवनी चिंता न आणीरे ॥६॥ परने धासको पाडता, करी करि आडी कूर ॥ गोली शिला ऊपर, भांगिक्यो चकचूर ॥७॥ पथ्थर ऊपर पकडियो, छूटे लोही धार ॥ काग चूंटे तेहने धोबीनो अवतार ॥८॥ चख परख्यो देखतां, कूडां माठा रूप ॥ शिला तले चांपिया, भार दई भरपूर ॥९॥

॥ एकतालीसमा चित्रना दोहा ॥

मद मांस भक्षण विपाक दोहा ॥ पशु जीव मरायारे, मधु मांस ते खायारे ॥ ते कर्म उदये आयारे, क्युं रोवे पापी जीवडारे ॥१॥ तव बोले करजोडीरे, अबको मोकुं छोडीरे ॥ नर भवमें भटकुं रे, श्री जिनधर्म आदरशुं रे ॥२॥ कीयो उपकार न वीसारशुं रे ॥ तब ते नटकी बोल्यारे, चुपको रह मो हत्यारे ॥ नरनो भव पायोरे, तुं तो युंही गमायोरे ॥३॥ धोयो रोव्यां शुं नह विसर गयोरे ॥४॥ भेस गणरा भडीतारे, कीया विण नहीं सरतारे ॥ तें तो हरि न त्यागीरे, आंखाने लयु लागीरे ॥५॥ घणरी ज्वाल उतारोरे, ऊपर खार संचारोरे ॥ हवे मांडी मोघर मुशलांरे, वीधो तेने त्रिशुलांरे ॥६॥ मार मार करतारे, हीये रोष धरतारे ॥ त्यारे घडघड लागी पापी धूजवारे ॥ कीयां पाप करमने भूजवारे ॥ छीपाना भवने विषे, कीधा रंगणपास ॥ परमाधामी तेहने घणो पमाडे त्रास ॥



॥ बेंतालिसमा चित्रना दोहा ॥

करे कुंभने घणे मकोरेरे, अने परमाधामी मार ॥ वैक्रियरूपे अनाचारे, दोरडुं सुंकळ गाथारे ॥१॥ ढिंक होय कडाकारे, भुख तृष्णा अकाळा ॥ तोडे पापीने आयरे, लांबी चांच अनायरे ॥२॥

॥ त्रेंतालिसमा चित्रना दोहा ॥

पोंशी पाळ्या पासमां, तेनर मोर चकोर ॥ गये नरकमां उपन्यो, भमतो कष्ट कठोर ॥१॥ को को करता कगडा, त्रटत्रट तोडी खाय ॥ परमाधामी पापनि, धमडी मार धाय ॥२॥ नीचतणे भव नाखिया, नदी सरोवर ताल ॥ दया न आणी हिंसमां, पोहनो नरक विचाल ॥३॥ ती जीव्या बाळा कुडना, करक करि करि कोपाव-लग्या गृधने पंखिया, उत्कट रचिया टोप ॥४॥ कणा टोपकरि क्रोधसें दवइं अमहार॥ भीम भयंकर नरकमां, नाखे नरकमझार ॥५॥ कागडा कर कूराळीरे, जाळ जाळ विकराळीरे ॥ उड उड आही चांचेरे, नाखे देह विदारे ॥६॥ अंगोपांगे विलस्या रे, चांचतणा देईकणाकार ॥ बहन अहुली थायरे, थर थर कंपे कायरे ॥७॥

॥ चुमालिसमा चित्रना दोहा ॥

सूयर होय कूं आवारे, कोलाने विकराळारे ॥ काडे पापीने आयरे, करि करि तुंड ऊलाळारे ॥१॥ नानी देखु थजघजे, न मांहि नाखे खाट ॥ परमाधामी तेहना, काटे देनुं हाथ ॥२॥ सूवर सावर जोकडा, हरिणो दिकना जीव ॥ मसल्या मान्या अहोनिश, करतो पाप सदीव ॥३॥ परमाधामी तेहने, करी सूवरनो रूप ॥ हणना हर्ष धरी घणो, करी अति क्रोध कुरूप ॥४॥

॥ पिस्तालीसमा चित्रना दोहा ॥

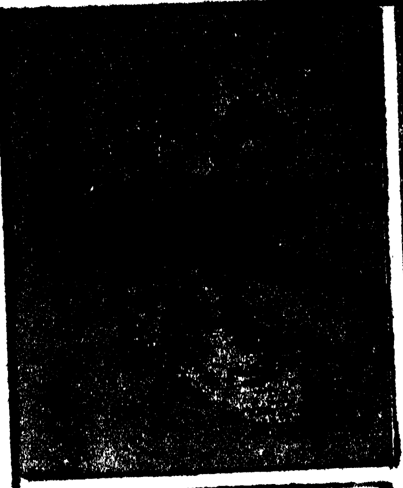
घणा दोडाव्या घोडला, मान्या अरछी बाण ॥ करे शिकारो सामटी, न गणी धर्मनी आण ॥१॥ पीले वरणे सोनेरीरे, कालि लीक कल केरीरे ॥ कुं वाघना रूपरे, शार्दूल केसरी विरूप ॥२॥ पापकर्मथी मारिया, मरी नरकमां जाय ॥ परमाधामी वाघनो रूप करीने जाय ॥३॥ ऊछलता चोकावारे, गाजकरे कसराळारे ॥ अजकरो कोई चाहारारे, पापीने पकडो पछाडारे ॥४॥ जजतां घरलागारे ॥ मतवाळा लागारे ॥ ज्युं परमाधामी दुःखदायक, दोडी आण वलगारे ॥५॥ तिन दसरा भूंक्यारे, लगे जोगने द्रुक्यारे ॥ अज कोई आय छुडावीरे पड्यो कुकुआ करे पीडावीरे ॥६॥ अजनहिं तोहि छोडरे, करे लाडने कोडरे ॥ परवश पडियो आयरे, मारे होडाहोडरा ॥७॥ मांसभक्षक मान्या घणा, केनी न मानी वात ॥ गई ऊपजे ते नरकमां, घणी पामे छे त्रास ॥८॥

॥ छेतालिशमा चित्रना दोहा ॥

सिंह शिकार किया घणा, बांध्या वैर अथाग ॥ पाप करीने उपन्या, नरकमांहे दुःखलाग ॥१॥ परमाधामी वाघनां, रूप करी विकराल ॥ अंगोपांग वेहना, सहे बहुल दना २

॥ सुडतालिसमा चित्रना दोहा ॥

मार देवे यमरायारे, तपे तेने सवायारे ॥ करी वैक्रिये सरूप, चित्ता सरप लगायारे ॥१॥ तव करे हायहायारे, तोडण लागा कायारे ॥ मुने सुज नहीं कांईरे, दुःखदीये छे घणा आंईरे ॥२॥ क्युं कर होशे सुजरे, परभव मे दीधुं दुःखरे ॥ तें तो धर्मनकी धोरे, श्री जगन्नाथनोरे ॥३॥ अज क्युं कर रोवेरे, कीधां कर्मन लेवेरे ॥ अजुहीन पणुं क्युं लाजेरे, पापी जुबडारे ॥४॥ करतो महारो महारोरे, कुटम्बने परिवारोरे॥ अज तो किणरो को नहींरे, नही कोई ताहरोरे ॥५॥ मुसलमान तणे भवे, मान्या वीछी साप ॥ पापकर्मथी पामियो, नरक कष्ट महाताप ॥६॥ कणा टोप करि क्रोधमा, देवे दंख महार ॥ भीम भयंकर नरकमा, नाखे नरकमझार ॥७॥ सात व्यसनने सेवता, करता महोटां पाप ॥ गई नरकमां उपन्या, तेहने वींट्या साप ॥८॥ मात पिताने पीडतो, करतो झगडा पाप ॥ गई नरकमां उपन्यो, वींटी वळगा साप ॥९॥











॥ अडतालिसमा चित्रना दोहा ॥

आप कुटुंबने कारणे, कर्या कोडि आरंभ ॥ माया अतिही केलवी, रोप्यो पापनो थंभ ॥१॥ कर्म अशुभ भारे करी, जीव अधोगति जाय ॥ छेदन भेदन बहु सहे, कोई सहाय न थाय ॥२॥

॥ ओगणपचासमा चित्रना दोहा ॥

पीछे पछतावो करे, कुमति भलीया आय ॥ खोटे गेले घालियो, लूंट्यो वस्ती मांय ॥१॥ माहो माहे लडाविया, करि हाकोटा हाक ॥ गयेडा मीठा भलग, खाक री वाताक ॥२॥

॥ पचासमा चित्रना दोहा ॥

हायमें पापी शुं कर्युं, हारी मनुष देह ॥ आडा कोई न आविया, करता घणो सनेह ॥१॥

॥ एकावनमा चित्रना दोहा ॥

अहनिश पर निंदा करे, धर्मवचन न सुहाय ॥ पर परिवादना योगथी, मरी नरकमां जाय ॥१॥ परमाधामी तेहने, वेदना करे अपार ॥ अहि वीछी वलगाडिने, दिये वलि ऊपर मार ॥२॥ आण दीठी आण सांभली, करे पराई वात ॥ आगपिंड पापें भरे, ते चंडाल कहात ॥३॥ अतुली बूल निंदा तणुं, लाग्युं व्यसन अछेह ॥ शेठतणी पुत्रीपरे, पामे अनरथ तेह ॥४॥ गांडा गूंगा छेदतो, मान्या गरिबा रंक ॥ जई नरकमां ऊपन्या, तोडी खाये डंख ॥५॥ चाडी खाधी चोतरें, करता घणेरा पाप ॥ जई नरकमां ऊपन्या, काटे वीछू साप ॥६॥

॥ बावनमा चित्रना दोहा ॥

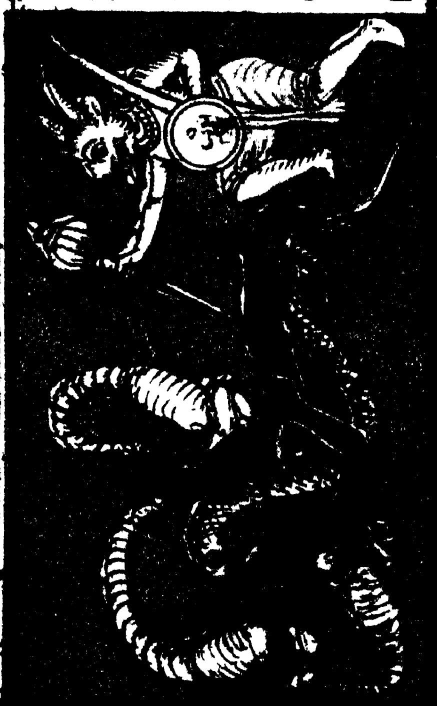
मन मेलो मीठो मुखें, कूड कपटनो कोश ॥ पाप करम पोते करी, परना काढे दोष ॥१॥ दुर्जन सज्जन थई मले, बोले मधुरी वाण ॥ दुर्जन कुटिलाईपणुं, नवी तजे करे हाण ॥२॥ पाप अढारे सेवतो, पहोतो नरक मझार ॥ परमाधामी वेदना, करे कटयारी मार ॥३॥ भीड्यो घाली बाथमां, आरणी क्रोध कठोर ॥ कुटिल कटारी मारता, कांई न चाले जोर ॥४॥











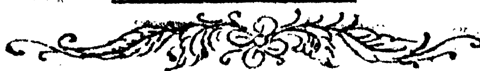
॥ त्रेपनमा चित्रना दुहा ॥

छत्रीश भेदरें रसवती, निपजावे हुशियार ॥ शाक पाक बहु सा
लणा, नित आरोगें सार ॥१॥ छलनणा रसिया थका, न करे
धर्म लगार ॥ लक्षा लक्ष न ओळखे, माने धन्य अवतार ॥२॥
पोतानो पिंड पोषियो, न दियुं सुपात्रें दान ॥ रसगारव करि रा
चियो, माच्यो मन धरि मान ॥३॥ हसतां बाधा होशथी, कंद
मूळ पशु मांस ॥ भोजन कीधां रात्रिनां, न गण्यो दोष दीसां-
स ॥४॥ छेदी कुमळी डाळडी, बाधां लक्ष अलक्ष ॥ परमा
धामी तेहने, देवे बहुलां दुःख ॥५॥ पाप सेवी नरकें गयो,
अशरण थयो अनाथ ॥ परमा धामी तेहने, दुर्गंध कलजदे
हाथ ॥६॥

॥ चोपनमा चित्रना दुहा ॥

मेणा माछी मेघळा, कोलि वाघरी नेह ॥ श्वान शिकार दो-
डाविने, जीव हणाव्या तेह ॥१॥ ताकी मार्या तिरका, वि-
विध वनचर जीव ॥ हत्या करिने ऊपन्यो, नरके करतो रीव
॥२॥ परमाधामी श्वाननां, रूप करी विकराळ ॥ कसताका
च्याफाडिने, तडफडतां नतफाळ ॥३॥ पूरव पाप प्रभावथी, क
रता सोर बकोर ॥ परवश पडिया आपदा, भमता कष्ट क-
ठोर ॥४॥ पाप करीने फूलता, लगार न आणी लाज ॥ प-
रमाधामी तेहने, करता तीरज मार ॥५॥ वाटे घाट नंतेर-
ता, घणाने करता पीड ॥ परमाधामी तेहने, ताकी मारे तीर ॥
६॥ तांकी देतां तीरका, तडफड मरता जीव ॥ उपाच्या ते पाप
फलमां, शोचे झूरे सदीव ॥७॥

इति नरक वेदना वर्णन दुहा समाप्त.





वस्तुपाल तेजपाल मंत्रीश्वरें जे जे धर्म कार्य कर्यां छे ते नो संक्षेप वर्णन विक्रम संवत १२७८ना वर्षमां एक पंडिते लखेलुं छे ते नीचे प्रमाणे लखीयें छैयें.

१३०० तेरशो श्री जिन प्रासाद शिखरबंध कराव्यां.

३२०२ त्रणहजार बशोने बे प्रासाद जीर्णोद्धार कराव्यां.

२३०० बे हजार ने त्रणशो महेश्वरनां प्रासाद कराव्यां.

१०५००० एक लाख ने पांच हजार नवीन जिन बिंब भराव्यां.

१००००० एक लाख महेश्वरना लिंग स्थाप्यां.

८४ चोराशी पाषाण बंध सरोवर कराव्यां.

९८४ नवशो ने चोराशी पौषध शाला करावी.

८८२ आठशोने ब्याशी वेदशाला करावी.

७०१ तपस्वीयोने रहेवा सारु सातशेने एक मठ कराव्या.

४०० चारशें पाणीनां परब कराव्या.

३६००००० छत्रीश लाख द्रव्य खरचीने ज्ञान पुस्तकोना भंडार कराव्या.

३००००० त्रण लाख द्रव्य खरचीने खंभायतमां ज्ञानभंडार कराव्या.

१८९६००००० अढार क्रोडने छन्नु लाख द्रव्य शत्रुंजय तीर्थने विषे खरच्या.

१८८३००००० अढार क्रोडने त्र्याशी लाख द्रव्यनो श्रीगिरनार तीर्थे व्यय कीधो.

१२५३००००० बार क्रोडने त्रेपन लाख द्रव्य श्री आबु तीर्थे खरच्युं संवत १२८५मां वर्षे आबुयें पायो नाख्यो ते संवत १२९२ना वर्षे आबुयें ध्वज चढावी.

५०० पांचशें सिंघासन हाथीदांतना कराव्यां.

५०५ पांचशें ने पांच समोसरण कराव्यां.

७०० सातशें नीशाळ भणवा माटे करावी.

७०० सातशें धर्मशाळा करावी

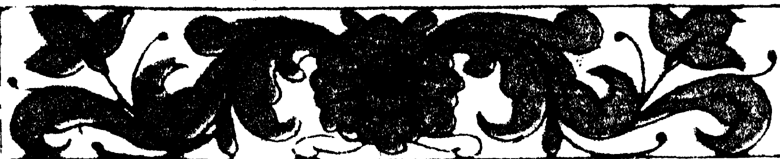
७०० सातशें सत्रुकार मंडाव्या, ओटले सदाव्रत कराव्यां.

५०० पांचशें ब्राह्मण चार वेदना भणनार नित्य प्रत्यें वेद भणता हता. वर्ष प्रत्यें त्रणवार संघपूजा साधर्मी वात्सल्य करता हता.

१००० एक हजार कापडी दिन प्रत्यें दानशाळायें आहार लेता हता.

१२॥ साडी बार यात्रा श्री शत्रुंजयनी कीधी.





२१ एकवीश आचार्योने पट्टथापना करी.
१००० एक हजार सिंहासन महात्मा निमित्ते कराव्यां.
३५०० त्रण हजार ने पांचशे तपोधन गच्छ सन्यासीनी था-
पना करी.
१००० एक हजार संघ पूजा करावी.
१८०० अढारसें साधुओ एकला महात्मा आहार वोहोरता.
८४ चोराशी मसीत तुरक लोकोमी करावी.
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरची श्री शत्रुंजये तोरण बंधाव्युं.
४०० चारशे वरकन्या परणाव्या.
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरची हजे तोरण बंधाव्युं.
३००००० त्रण लाख द्रव्य खरचीने द्वारिकाये तोरण बंधाव्युं.
४६४ चारशे चोशठ वाव्य करावी.
९०० नवशे कुवा कराव्या.
३३३२१८०० सर्व मली त्रण अब्ज तहोंतर क्रोड अढोतेर लाख अ-
ढार हजार आठशे शोल लोढीयें ठीए. एटलुं द्रव्य
पुण्य माटे खरच्युं संवत १२[illegible]मां वस्तुपाले स्वर्गा-
रोहण कर्युं.

हवे तीर्थयात्रायें गया तेवारे साथे ने परिवार लीधो
ते कहे छे.

२४ चोवीश रथ हाथी दांतना संघमां हतां.
४५०० चार हजारने पांचशे सेहेज वाला संघमां हतां.
४५०० चार हजारने पांचशे गाडलां संघमां हतां.
११०० अगीआरशें वहेल.
५०५ पांचशे ने पांच पालखी साथे हती.
२००० बे हजार पीठीया हता.
७०० सातशें सुखासन.
२२०० बे हजार बशें श्वेतांबर साधु साथे हता.
११०० अगीयारशें दिगम्बर वृषधारी साधु हता.
४०८ चारशें ने आठ ऊंट साथे हता.
४५० चारशें ने पच्याश जैन गायन करनारा कोलकुस-
घमां हता.
१००० एक हजार कंदोई मीठाई करनारा साथे हता.
३३०० त्रण हजार ने त्रणशे चारण साथे हता.
३३०० त्रण हजार ने त्रणशे भाट साथे हता.
१३५० कुंभार माटीना वासण बनावनारा साथे लीधा.
४००० चार हजार घोडा साथे हता.



छ लेश्या उपर जंबु वृक्ष नु दृष्टांत.

७००००० सात लाख माणस साथें हता.
५०० पांचशें सुतार साथें हता.
३५० त्रणशें ने पच्चाश दीवटियां साथें हता.
१००० एक हजार लुहार साथें हता.

एटला संघना परिवार सहित यात्रायें कर्यां.

हवे बीजा पण म्होटा म्होटा संसारी काम कर्यां ते लखीयें छैयें.

३६ छत्रीश गढ कराव्या.
६३ त्रेशठ वखत लडाई करवा माटे संग्राममां चडीने जय मेळव्युं
२४ चोवीश जिनघरनी जोलावी.
१८ अढार वर्ष व्यापार कर्यो.
१००० एक हजार वर्षासन आप्यां.
४ चार राजा सेवा करता हता.
१८०० अढारशें वहाण कराव्यां हता.

वस्तुपाल तेजपालनी उदारताना आ पुस्तकमां मांगलिकरूपे आ [illegible]मा नाखी छे. ते अन्य यवनादिकोना स्थानकोमां द्रव्य व्यय कर्युं छे ते पण जैनने दीपाववा माटेज छे ते एमनो चरित्र वांचवाथी समजाशे. वस्तुपाल संवत १२९८ मां स्वर्गारोहण थया अने तेजपाल संवत १३०८ मां स्वर्गारोहण थया छे. इति श्रेयं.

॥ अथ लेश्या स्वभाव दोहा ॥

षट्लेश्या कहि भुवने, कृष्ण नील कापोत॥ तेजो पद्म छट्ठी शुकल, परिणामे सज होत ॥१॥ कठियारा षट एकला, कुष्ट भारक काज ॥ भूख लगी जब आम्रतरु, देख्यो सकल समाज ॥२॥ कृष्ण थड कटण कहे, डाला कटण नील ॥ कहे कपोति लघु डालि सज, फल ल्यो तेजस लीन ॥३॥ पद्म कहे पक्व फल लियो, शुकल कहे सनाभा धरती पडिया पक्व फल, ल्यो खावो कहे लाज ॥४॥ जिनकी जैसी लेशिया, तेसा बांधे कर्म ॥ सद्गुरु की गम जो मिले, जब जगतको भर्म ॥५॥ इति षट्लेश्या स्वरूप दोहा ॥ समाप्त ॥



॥ श्री नवकार मांगलिकरूप ॥

॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवझायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्व साहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्व पावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च स व्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं होइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति पंच प रमेष्ठि मंगलम् ॥ एमां पद नव छे, संपदा आठ छे ॥

॥ अथ खमासमण अथवा प्रणिपात ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए ॥ निसीहिआए ॥ मच्छएण वंदामि ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं, जय जय महाप्रभु ॥ देवाधिदेव, सर्वज्ञ श्रीवी तराग देव ॥ मुह दिठं परमेसर, सुंदर सोम सहाव, भूरि भवंतर संचिउ, नठो सो सवि पाव ॥ १ ॥ जे में पाप कियां बाला पणे, अहवा अन्नाणे ॥ असुभ वंतर ॥ सो सो खंम, जयो परमेसर ॥ तुह मुह दिठं सिरि पास जिणेसर ॥ २ ॥ पास पसी पसाउ क रि, वीनतडी अवधार ॥ संसारडो बिहामणो, सामी आवागमण निवार ॥ ३ ॥ हच्छडा ले सुलखणा, जे जिनवर पूजंत ॥ एके पुसें बाहिरा, परघर काम करं

त ॥ ४ ॥ कवणें वाडी वावीयां,कवणें गूंथ्यां फूल ॥ कवणें जिनवर चढावियां, जाव सरीसां मूल ॥ ५ ॥ वाडी वेलो मोहोरीउ, सोवन कूंपली एण. ॥ पास जिणेसर पूजियें, पंचे अंगुलीएण ॥ ६ ॥ दो धोला दो सामला, दो रत्तोप्पलवन्न ॥ मरगयवन्ना दुन्नि जिण, सोलस कंचनवन्न ॥ ७ ॥ नियनियमान क राविया, नरहेसनयणानंद ॥ ते में नावें वंदिया, ए चउवीस जिणंद ॥ ८ ॥ वत्थु ॥ कम्म नूमिहिं, कम्म नूमिहिं, पढम संघयणि, उक्कोसो सत्तरिसउ जिणवरा ण विहरंत लप्नइ, नव कोडी केवली, कोडि सहस्स नव साहु गमइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणे ॥ बिहुं कोडीहिं वरनाण, समणह कोडी सहस्स डुअ, थु णसुं निच्च विहाणि ॥ जयउ सामी.जयउ सामी, रिसह सिरि सत्तुंजि, उज्जिंत पहु नेमिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ नरुअच्छहिं मुणि'सुव्वय, मुहरि पास डुहडुरिय खंमण, अवर विदेहिं तिच्छयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि, तीआणागयसंपइ, वंदुं जिण सव्वेवि ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्का ठप्पन्न अठ्ठ को डीउ ॥ पंचसयं चउतिसा, तियलोए चेइए वंदे ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥

॥ ते तरिया रे नाई ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ आदिजिनं वंदे गुणसदनं, सदनंतामलबोधं रे ॥ बोधंतागुण. विस्तृतकीर्त्तिं, कीर्त्तितपथमविरो धं रे ॥ आदि जि० ॥ १ ॥ रोधरहित विस्फुरडुपयो

गं, योगं दधतमभंगं रे ॥ भंगं नय व्रजपेशलवाचं, वाचं यमसुख संगं रे ॥ आदि० ॥ २ ॥ संगत पद शुचिवचनतरंगं, रंगं जगति ददानं रे ॥ दान सुरद्रुम मंजुल हृदयं, हृदयंगम गुणभानं रे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ भानंदित सुरवर पुन्नागं, नागर मानसहंसं रे ॥ हंसगतिं पंचमगति वासं, वासव विहिताशंसं रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ शंसंतं नयवचनम नवमं, नवमंगल दातारं रे ॥ तार स्वरमघघनपव मानं, मानसुभट जेतारं रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इत्थं स्तुतः प्रथमतीर्थपतिः प्रमोदा, च्छ्रीमद्यशोविजयवाच कपुंगवेन ॥ श्रीपुंमरीकगिरिराज विराजमानो, मा नोन्मुखानि वितनोतु सतां सुखानि ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण

॥ अथ शीतलजिन स्तवन ॥

॥ वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ, सुणो एक वीन ति रे लोल ॥ के वारि प्रभु माहारे तुमशुं प्रीत, के अवरशुं आखडी रे लोल ॥ १ ॥ के वारि प्रभु भद्दिल पुर अवतार, के दृढरथ राजियो रे लोल ॥ के वारि प्रभु नंदा मात मलार, कें कुलमां गाजीयो रे लोल ॥ २ ॥ के वारि प्रभु श्रीवत्स लंछन पाय, के प्रभुजी ने दीपतुं रे लोल ॥ के वारि प्रभु चंद कहे कर जोड, के अविहड रंगशुं रे लोल ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ विमल जिनस्तवन ॥ कुंअरखडानी देशी ॥

॥ विमल विमल गुण राजता, बाह्य अभ्यंतर भेद ॥ जिणंद जुहारीएं ॥ सूची पुला दृष्टांतथी,

मन वंच काय निवेद ॥ जि० ॥ १ ॥ स्पष्ट बद्ध नि धत्त ने, नीकाचित अतिशेष ॥ जि० ॥ आत्मप्रदेशमांहे मल्या, मल ते कर्म प्रदेश ॥ जि० ॥ २ ॥ असंख प्रदेशी चिन्मयी, चेतन गुण संजार ॥ जि० ॥ प्रदेशों प्रदेशों रमी रही, वर्गणा कर्म अपार ॥ जि० ॥ ३ ॥ पंच रसायन नावना, नावित आतम तत्त्व जि० ॥ उपलता तेम्ही कनकता, पामे उत्तम सत्त्व ॥ जि० ॥ ४ ॥ प्रथम नावना श्रुततणी, बीजी तप तिय सत्त्व ॥ जि० ॥ तुरीय एकता नावना, पंचम नाव सुसत्त्व ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम करी सवे प्रदेशने, विमल कस्या जिनराय ॥ जि० ॥ नाम यथार्थ विचारीने, नमे स्वरूप नित्य पाय ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो ॥ मुज वीनतडी, प्रेम धरीनें इणि परें तुमें संजलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य जुवननो नायक ठे, जस चोशठ इंदर पायक ठे, नाण दरिसण जेहनें खायक ठे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी काया ठे, जस धोरी लंठन पाया ठे, पुंमरीगिणि नगरीनो राया ठे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामांहि बिराजे ठे, जस चोत्रीश अतिशय ठाजे ठे, गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे ठे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ नविजनने ते पडिबोहे ठे, तुम अधिक शीतल गुण शोहे ठे, रूप देखी नविजन मोहे ठे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम

सेवा करवा रसीयो छुं, पण नरतमां दूरें वसीयो छुं, महा मोह राय कर फसीयो छुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छे, पण कांइक मुजथी मरियो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनम् ॥

॥ उवसग्ग हरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स ग्गह रोगमारी, डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसुवि जीवा, पावंति न डुरक दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवप्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महा जस, नत्तिनर निप्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं, नवे नवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ जं किंचि नाम तिछं, सग्गे पायालि तिरिय लोगंमि ॥ जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए ॥ पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्ति

आए ॥ सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥ सद्धाए मेहाए धिईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वद्धमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ अन्नछ उससीएणं० ॥ इति ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंमरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं, लोगहिआणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अजय दयाणं, चक्खु दयाणं, मग्ग दयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं ॥ ५ ॥ धम्म दयाणं, धम्म देसियाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्क वट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाणदंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं. नमो जिणाणं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थस्तुति ॥

॥ जे अइया तित्थयरा, जे जविस्संति अणागए काले ॥ जे आवि वट्टमाणा, ते सव्वे जावउ नमिमो ॥ १ ॥ सुरकय मणुयकयं वा, जुवणतिगे सासयं च जं

तिहं ॥ तं सयलमिह ठिउवि हु, मण वयण तणुहिं पणमामि ॥ २ ॥ जह य जिणाणं जम्मो, दिस्का नाणं च निसिहिया जह ॥ जायं च समोसरणा, ताउ नूमिउ वंदामि ॥ ३ ॥ एवमसासय सासय, पडिमा थुणिया जिणंद चंदाणं ॥ सिरिमं महिंद नुवणिंद, चंदमुणि विंद थुअ महिआ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ काव्यानि ॥

॥ अष्टापदें श्री आदि जिनवर, वीर पावा पुरि वरू ॥ वासु पूज्य चंपा नयरसिद्धा, नेम रेवागिरिवरू ॥ १ ॥ समेत शिखरें वीश जिनवर, मोक्ष पहोता मुनिवरू ॥ चोवीश जिनवर नित्य वंडुं, सयल संघ सुहंकरु ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अशोकवृक्षः सुर पुष्पवृष्टि, र्दिव्यध्वनिश्चामर मासनं च ॥ नामंमलं डुंडुनिरातपत्रं, सत्प्राति हार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥१॥ सकलकरमवारी मोक्ष मार्गाधिकारी, त्रिनुवनउपकारी केवलज्ञानधारी ॥ नवियण नित सेवो देव ए नक्ति नावें, ए जिन नजंतां सर्व संपत्ति आवे ॥ २ ॥ इति काव्यानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ स्तुतिकाव्यानि ॥

॥ सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्त्तमेघो, डुरित तिमिर नानुः कल्पवृक्षोपमानः ॥ नवजलनिधि पोतः सर्व संपत्तिहेतुः, स नवतु नवतां नो श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥ १ ॥ दशावतारो नुवनैकमल्लो, गोपां गनासेवितपादपद्मः ॥ श्रीपार्श्वनाथः पुरुषोत्तमोऽयं,

ददातु वः सर्वसमीहितानि ॥ २ ॥ श्रीपार्श्व नाथो नवपापताप, प्रशांतधाराधरचारुरूपं ॥ विघ्नौ घहंता प्रणतोरगेंद्रः, समस्तकल्याणकरो . जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः, वीरेणाभिहतश्च कर्मनिचयो वीरा य नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे च धृति कीर्ति कांति निचय श्रीवीर नद्रं दिश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअरिहंत स्तुति ॥

॥ एस करेमि पणामं, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सेसाणंच जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ॥१॥ जग मज्ञय जीयाणं, वियंसिय वर नाण दंसण धराणं ॥ नाणुज्जोयगराणं. लोगंमि नमो जिणवराणं ॥२॥ तित्थयरे नगवंते,अणुत्तरे परक्कमे अमिय नाणी॥ तिन्ने सुगइ गइगए, सिद्धिपह देसियं वंदे ॥३॥ वंदामि महा नागं, महामुणिं महायसं महावीरं ॥ अमर नर राय महियं, तित्थयरे मिमस्स तित्थस्स ॥ ४ ॥ वयणा मएण जुवणं. निव्वावंता गुणेसु गवंता ॥ जिय लोग मुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मेसरणं ॥ ५ ॥ उज्जिय जर मरणाणं, सम्मत्तदोसत्त सत्तसरणाणं ॥ तिहुयण जिण सुहियाणं, अरिहंताणं नमोत्ताणं ॥६॥ .एवा श्रीअरिहंतने महारो नमस्कार होजो. श्रीअरिहंत कहेवाय तो के जेणे राग द्वेष रूपीया वैरी जींत्या अने अढार दोषरहित थया ते अढार दोषनां नाम गाथायें करी कहे छे.

॥ अन्नाण कोह मय माण, लोह माया रइय अरइय ॥ निंदा सोग अलिय वयण, चोरिया मच्छर नयाय ॥ १ ॥ पाणीवह पेम कीला, पसंग हा साय जस्स ए दोसा ॥ अठारस विपणठा, नमामि देवाहिदेवं तं ॥ २ ॥ एहवा देवाधिदेव, सुरासुर विहितसेव, सर्वज्ञ नगवंत, जगन्नाथ जगज्जीवना तारक, कुगति मार्ग निवारक, निरीह निरहंकार, निःसंग नि ेम शांत दांत करुणा समुद्र, विश्वोपकार सागर, अनंत गुणना आगर, चोशठ इंद्रना पूजनीक, वज्रऋषननाराचसंघयण, समचतुरस्र संस्थान, एक हजा ने आठ वर प्रधान पुरुष लक्षणना धरणहार, समुद्रनी परें गंनीर, मेरुपर्वतनी परें धीर, शंखनी परें निरंजन, वायुनी परें अप्रति बद्ध विहार, आकाशनी परें निरालंब, जीवनी परें अप्रतिहतगति, कूर्म्मनी परें गुप्तेंद्रिय, खड्गी जीवना शृंगनी परें एक, नारंम पंखीनी परें अप्रमत्त, सिंहनी परें दुर्धर्ष, वृष ननी परें अढार सहस्स सीलांगरथना धुरंधर धोरी, चंद्रमानी परें सौम्यकांति, सूर्यनी परें सतेज, पंखीनी परेंविप्रमुक्त, कुक्षी संबल, वसुंधरानी परें सर्व सहे, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, चोत्रीश अतिशयें करी संयुक्त पांत्रीश नाषा गुण परिकलित, अष्ट महा प्रातिहार्य्यें विराजमान, पादपीठिकासहित सिंहासनासन, छत्रत्रय चामर शोनायमान, पूंठ पाछल नामंमल दीपे, तेजें करी श्रीसूर्यने जींपे, श्रीअरिहंत उपर अशोक वृक्ष

गाया करतो संघातें चाले, धर्मध्वजा आगले ठती ज ह लहे, आकाश गतधर्मचक्र जल हले, देवडुंडुनि स्वामीके आगें वाजे, श्री अरिहंतनी वाणी मेघनी परें गाजे, जोजन हारिणी वाणी अमृत समाणी, सर्व जापानुगामिनी, सर्व लोकना संशयहरे, त्रिभुवनजननां मनने उल्लास करे, मुक्ति नगरी प्रतें सार्थवाह, एहवा देवाधिदेव अरिहंत गुणवंत, नगवंत. वीतराग वीतस्पृह्नी परमात्म परमेश्वर परम निरंजन, तेहोनी गुण स्तुति जणुं ॥ इति अरिहंत स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ स्तुति ढंद ॥

॥ प्रनु पासजी ताहरुं नाम मीतुं, त्रिहूं लोकमां एटलुं सार दीतुं ॥ सदा संमरतां सेवतां पाप नीतुं, मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठूं ॥ १ ॥ मन तुम्ह पासें वसे रात दीसें, मुखपंकज निरखवा हंस हींसे ॥ धन्य ते घडी जे घडी नयण दीसे, नली नक्ति नावें करी वीनवीसे ॥ २ ॥ अहो एह संसार ठे डुःख दोरी, इंद्रजालमां चित्त लागी ठगोरी ॥ प्रनु मानियें विनती एक मोरी, मुंफ तार तुं तार बलिहारि तोरी ॥ ३ ॥ सही सुपन जंजालमां सब्ब मोह्यो, घडीयालमां काल रमतो न जोयो ॥ मुधा एम संसारमां जन्म खोयो, अहो घृत तणे कारणें जल विलोयो ॥ ४ ॥ एतो नमरलो केसुआं भ्रांति धायो, जई शुक तणी चंचुमांहे नरायो ॥ शुकें जंबु जाणी गले डुःख पायो, प्रनु लालचें जीवडो एम वाह्यो ॥ ५ ॥

नम्यो नम्र्मे नूलो रम्यो कम्र्मे नारी, दयाधम्र्मनी श
म्र्मे में नवि विचारी ॥ तोरी नम्र्मवाणी परम सुरक
कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में नवि संनारी ॥ ६ ॥ वि
षय वेलडी सेलडी करिय जाणी, नजी मोह तृष्णा
तजी तुझ वाणी ॥ एहवो नलो नूंभो निज दास जा
णी, प्रनु राखीयें बांहिनी गंहि प्राणी ॥ ७ ॥ माहा
रा विविध अपराधनी कोडि सहीयें, प्रनु शरण आ
व्या तणी लाज वहीयें ॥ वली घणी घणी वीनतिए
म कहीयें, मुझ मानसरें परम हंस रहीयें ॥ ८ ॥ कल
श ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतिगामी ध्याईयें
॥ अति नक्ति नावें विपति जावे, परम संपद पाईयें ॥
प्रनु महिम सागर गुण विरागर,पास अंतरिक जे स्तवे॥
तस सकल मंगल जय जयारव,आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ नगवंतनी पूजा करवा समयें नवे अं ॥
॥ गें तिलक करतां जे पाठ उच्चारवो, ते कहे ले ॥

॥ दोहा ॥ जल नरि संपुट पत्रमां, युगलिक
नर पूजंत ॥ ऋषन चरण अंगुठडो, दायक नवजल
अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काउसग्ग रह्या, विचर्या दे
श विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरे
श ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दा
न ॥ करकांडे प्रनु पूजना, पूजो नवि बहु मान ॥ ३ ॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ नुजा
बलें नवजल तर्या, पूजो खंद महंत ॥ ४ ॥ रत्न
त्रयि गुण ऊजली, सकल सुगुण विशराम ॥ नानि

कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोष ॥ हिम दहे वन खंमनें, हृदय तिलक संतोष ॥ ६ ॥ शोल पोहोर देइ देशना, कंठ विवर वर्त्तूल ॥ मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुण्यथी, तिहुयण जन सेवंत ॥ त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली लोकांतें भगवंत ॥ वसिया तिण कारण भवि, शिर शिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहु विध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति

॥ अथ दोहा ॥

॥ जीवडा जिनवर पूजियें, पूजानां फल जोय ॥ राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभें बांध्युं जल रहे, जल विना कुंभ न होय॥ ज्ञानें बांध्युं मन रहे,गुरु विना ज्ञान न होय ॥२॥ गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु विना घोर अंधार ॥ जे गुरु वाणी वेगला, ते रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ भावें भावना भाविये, भावें दीजें दान ॥ भावें जिनवर पूजियें, भावें केवल ज्ञान ॥ ४ ॥ प्रभु नामकी उषधी, खरे मनशुं खाय ॥ रोग पीडा व्यापे नही,महा दोष मिट जाय ॥ ५ ॥ प्रभुजी पूजन हुं चल्यो, केसर चंदन घनसार ॥ नव अंगें पूजा करी, भव सायर पार उतार ॥६॥ पांच कोडीनें फूलडे, पाम्या देश अढार ॥ कुमारपाल

राजा थयो, वर्त्यो जय जय कार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ मांगलिक काव्यानि ॥

॥ मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः ॥ मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ १ ॥ एक जंबु जग जाणियें, बीजा नेम कुमार ॥ त्रीजा वयर वखाणियें, चोथा गौतम धार ॥ २ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणो भंमार ॥ जे गुरु गौतम समरियें, मन वंछित फल दातार ॥ ३ ॥ अक्षीण महानिशि लब्धिः, केवलश्रीः करांबुजे ॥ नामलक्ष्मीर्मुखे वाणी, तमहं गौतमं स्तुवे ॥ ४ ॥ इति काव्यानि ॥

॥ अथ लोगस्स काउस्सग्ग करवानो ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं

पयासयरा ॥ सागर वर गंजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ लोगस्स समाप्तः ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवन ॥

॥ अब तुं चेतन चेत ले, क्षण लाखिणो जाहि ॥ या जुगमें तेरो को नही, तुं किनको नांहि ॥ अब० ॥ ॥ १ ॥ जननी कामिनीने पिता, बेटा बेटीने जाई ॥ ज्युं पंखी टोलुं मिले, पीछे क्षमी ते जाई ॥ अब० ॥ २ ॥ अंजलि जल सम आउखुं, झरत कयुं जग दीसें ॥ संध्यारंग सम यौवनवय, अनित्य ए विसवा वीसें ॥ अब० ॥ ३ ॥ जिनदास कहे उन कारणें, छोडो मोहको संग ॥ अनुजवकुं चित्त आदरी कर ल्यो सयगुरु संग ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाती स्तवन ॥

॥ जब जिनराज कृपा करे, तब शिब सुख पावे ॥ अक्षय अनुपम संपदा, नव निधि घर आवे ॥ जब० ॥ ॥ १ ॥ ऐसी वस्तु न जगतमें, दिल शाता आवे ॥ सुरतरु रवि शशि प्रमुख जे, जिन तेजें छिपावे ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ जनम जरा मरणा तणां, दुःख दूर गमावे ॥ मन वनमां जिन ध्याननो, जलधर वरसावे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ चिंतामणि रयणें करी, कोण काग उडावे ॥ तिम मूरख जिन छोडीने, अवरां कूं ध्यावे ॥ ज० ॥ ॥ ४ ॥ ईली जमरी संगथी, जमरी पद पावे ॥ ज्ञान विमल प्रजु ध्यानथी, जिन उपमा आवे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ प्रभाती स्तवन ॥

॥ विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग ला गो रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संयम दानादिक सहु, गिनति एक न आवे रे ॥ इंद्रिय सुखमां जों लौं ए मन, वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥ विष० ॥१॥ एक एकके कारण चेतन, बहुत बहुत दुःख पावे रे ॥ तेतो प्रगट पणे जगदीसें, इणि विध भाव लखा वे रे ॥ विष० ॥ २ ॥ मन्मथ वश मातंग जगतमें, परवशता दुःख पावे रे ॥ रसना लुब्ध होय झख मूरख, जाल पड्यो पछतावे रे ॥ विष० ॥ ३ ॥ घ्राण सुवास काज सुन भमरा, संपुटमांहे बंधावे रे ॥ ते सरोज संपुट संयुत फुन, करटीके मुख जावे रे ॥ विष० ॥ ४ ॥ रूप मनोहर देख पतंगा, पडत दीपमां जाई रे ॥ देखो याको दुख कारनमें, नयन भये हे सहाई रे ॥ विष० ॥ ५ ॥ श्रोतेंद्रिय आसक्त मिर गलां, छिनमें शीश कटावे रे ॥ एक एक आसक्त जीव इम, नानाविध दुःख पावे रे ॥ विष० ॥ ६ ॥ पंच प्रबल वर्त्ते नित जाकुं, ताकुं कहा जु कहीयें रे ॥ चिदानंद ए वचन सुणीनें, निज स्वभावमें रहीयें रे ॥ विष० ॥ ७ ॥ इति प्रभाती ॥

॥ अथ प्रभाती स्तवन ॥

॥ पूरवपुण्य उदय करी चेतन, नीका नरभव पा या रे ॥ ए आंकणी ॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि, दुर्लभ अधिक बताया रे ॥ दश दृष्टांतें दोहिला जाकुं,

उत्तराध्ययनें गाया रे ॥ पु० ॥ १ ॥ अवसर पाय विषय रस राचत, ते तो मूढ कहाया रे ॥ काग उडावन काज विप्र जिम, डार मणि पछताया रे ॥ पु० ॥ २ ॥ नदी घोल पाषाण न्याय कर, अर्द्धवाट तुं आया रे ॥ अर्द्ध सुगम आगल रही तिनकुं, जिन कछु मोह घटाया रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ चेतन चारग तिमें निश्चें, मोक्ष द्वार ए काया रे ॥ करत कामना सुरपति याकुं, जिनकुं अनर्गल माया रे ॥ पु० ॥४॥ रोहणगिरि जिम रतन खाण तिम, गुण सहु यामें समाया रे ॥ महिमा मुखथी वर्णत जाकी, सुरपति मन शंकाया रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ कल्पवृक्ष सम संजम केरी, अति शीतल जिहां छाया रे ॥ चरण करण गुण धार महामुनि, मधुकर·मन·लोभाया रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ या तन बिन तिहुं काल कहो किम, साचा सुख निपजाया रे ॥ अवसर पाय न चूक चिदानंद, सदगुरु यों दरसाया रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ आंबिलनी ओलीनां नव स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम स्तवनम् ॥

॥ केशर वरणो हो, के काढ कसूंबो माहारा लाल॥ ॥ ए देशी ॥ गोयम नाणी हो, के कहे सुणो प्राणी माहारा लाल ॥ जिनवर वाणी हो, के हियडे आणी ॥ मा० ॥ आसोमासें हो, के गुरुने पासें ॥ म० ॥ नव पद ध्यासे हो, कें अंग उल्लासें ॥ मा० ॥ १ ॥ आंबिल कीजें हो, के जिन पूजीजें ॥ मा० ॥ जाप

जपीजें हो, के देव वांदीजें ॥ मा० ॥ जावना जावो हो, के सिद्धचक्र ध्यावो ॥ मा० ॥ जिनगुण गावो हो, के शिव सुख पावो ॥ मा० ॥ २ ॥ श्रीश्रीपाळें हो, के मयणा बाळें ॥ मा० ॥ ध्यानरसाळें हो, के रोग ज टाळे ॥ मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यायो हो, के रोग गमायो ॥ मा० ॥ मंत्र आराह्यो हो, के नवपद पा यो ॥ मा० ॥ ३ ॥ जाजनी जोळी हो, के पेहेरि प टोळी ॥ मा० ॥ सह्यिर टोळी हो, के कुंकुम घोळी ॥ मा० ॥ थाळ कचोळी हो, के जिनवर खोळी ॥ मा० ॥ पूजी प्रणमी हो, के कीजें उंळी ॥ मा० ॥ ४ ॥ चैत्रें आसो हो, के मनने उल्लासें ॥ मा० ॥ नवपद ध्याशे हो, के शिवसुख पासें ॥ मा० ॥ उत्तम साग र हो, के पंम्तिराया ॥ मा० ॥ सेवक कांतें हो, के बहु सुख पाया ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति समाप्त ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनम् ॥

॥ आढे लालनी देशी ॥ नवपद महिमा सार, सांजलजो नर नार ॥ आढे लाल ॥ हेज धरी आरा धीयें ॥ तो पामो जवपार, पुत्र कलत्र परिवार ॥ आ० ॥ नवपद मंत्र आराधी यें ॥ १ ॥ आंकणी ॥ आसोमास विचार, नव आंबिल निरधार ॥ आ० ॥ विधिशुं जिनवर पूजीयें ॥ अरिहंत सिद्ध पद सार, गणणुं जी तेर ह जार ॥ आ० ॥ नवपदनुं ईम कीजीयें ॥ २ ॥ म यण सुंदरी श्रीपाल, आराध्यो ततकाल ॥ आ० ॥ फल दायक तेहने थयो ॥ कंचन वरणी काय, देही

तेहनी थाय ॥ आ० ॥ श्रीसिद्धचक्र महिमा कह्यो ॥ ३ ॥ सांभलि सहु नर नार, आराध्यो नवकार ॥ आ० ॥ हेज धरी हियडे घणुं ॥ चैत्र मासें वली एह, नवपदशुं धरो नेह ॥ आ० ॥ पूज्यो घे शिवसुख घणुं ॥ ४ ॥ इणिपरें गौतम स्वाम, नव निधि जेह ने नाम ॥ आ० ॥ नवपद महिमा वखाणीयो ॥ उत्तम सागर शिष्य, प्रणमे ते निश दीस ॥ आ० ॥ नव पद महिमा जाणीयो ॥ ५ ॥ इतिद्वितीयस्तवनं ॥

॥ अथ तृतीय स्तवनं ॥

॥ सीतातो रूपें रूडी ॥ ए देशी ॥ श्री वीर जिणंद वखाण्यो, तिहां गौतम गणधर जाण्यो हो ॥ नवपद ध्याईयें ॥ श्री श्रीपाल नरेशं, मयणायें गुरु उपदेशें हो ॥ नव० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र आराध्यो, तो सयल पदारथ साध्यो हो ॥ न० ॥ आसो मासें कीजें, शुदि सातमे जिन पूजीजें हो ॥ नव० ॥ २ ॥ अष्ट कमल दल थापी, महिमा जस त्रिभुवन व्यापी हो ॥ न० ॥ मध्यदलें जिन ध्याने, ध्यावो उज्वल वानें हो ॥ न० ॥ ३ ॥ पूरव दिशें सिद्ध छाजे, राते तनु तेज विराजे हो ॥ न० ॥ आचारिज पद त्रीजे, जिम सोवन वान करीजें हो ॥ न० ॥ ४ ॥ पश्चिम दिश उवझाया, नीले तनु वान सोहाया हो ॥ न० ॥ साधु सकल घनवानें, उत्तरदिशि ध्यावो ध्यानें हो ॥ न० ॥ ५ ॥ नाण अग्नि कोणें ध्यावो, जिम अत्यंत सुख तुमें पावो हो ॥ न० ॥ दंसण

आराहो प्राणी, नैरुत विदिशें मन आणी हो ॥न०॥ ॥ ६ ॥ वायव्यकोणें कहीजें, चारित्र ध्यायी सुख लीजें हो ॥ न० ॥ ईशाने तप ध्यावो, उज्जल समकित सुख पावो हो ॥ न० ॥ ७ ॥ आसो चैत्रज मासें, जपतां रुद्धि आवे पासें हो ॥ न० ॥ विधिशुं देव वंदीजें, श्रीजिनवर पूजा रचीजें हो ॥ न० ॥ ७ ॥ नव पद जाप जपीजें, आंबिल तप नव दिन कीजें हो ॥ न०॥ श्रीसिद्धचक्र सेवीजें, पंचामृत न्हवण करीजें हो ॥ न० ॥ ए ॥ चउद पूरवनो सार, ए मंत्र वडो नवकार हो ॥ न० ॥ बुध उत्तम सागर राया, शिष्य कांतिसागर सुखपाया हो ॥ न० ॥ १० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ चतुर्थ स्तवनं ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ सेवो रे नवि नावें नवकार, जंपे श्रीगौतम गणधार ॥ नवि सांजलो ॥ हांरे संपद थाय ॥ ज० ॥ हांरे संकट जाय ॥ ज० ॥ आशोने चैत्रें हरष अपार, आणी गणणुं किजें तेर हजार ॥ ज० ॥ १ ॥ चार वरसने वली षट् मास, ध्यान धरो नावें धरी विश्वास ॥ ज० ॥ ध्यायो रे मयणासुंदरी श्रीपाल, तेहनो रोग गयो तत काल ॥ ज० ॥ २ ॥ अष्टकमल दल पूजा रसाल, करी न्हवण गंटयुं ततकाल ॥ ज० ॥ सातशें मही पति तेहनें रे ध्यान, देही पामी कंचन वान ॥ज०॥ ॥ ३ ॥ महिमा कहेतां एनो नावे पार, समरो तिणे कारण नवकार ॥ ज० ॥ इह नव परजव दे सुख

वास, बहु पामे लछी लील विलास ॥ न० ॥ ४ ॥ जाणी रे प्राणी लाज अनंत, सेवो सुखदायक ए मंत ॥ न० ॥ उत्तमसागर पंमित शिष्य, सेवे कांतिसागर निशदीस ॥ न० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थस्तवनं ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम स्तवनं ॥

॥ नवियां श्रीसिद्धचक्र आराधो, तुमें मुक्ति मारगनें साधो, इह नरनव दुर्लन लाधो हो लाल ॥ १ ॥ नवपद जाप जपीजें ॥ त्रण टंक देव वांदीजें. त्रिहुं कालें जिन पूजीजें, आंबिल तप नव दिन कीजें हो लाल ॥ न० ॥ २ ॥ शुदि आसो चैत्रज मासें, तप सातमथी अन्यासें, पद सेव्यां पातक नासे हो लाल ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणाने नृप श्रीपालें, आराध्यो मंत्र उजमालें, एह दुःख दोहगनें टाले हो लाल ॥ न० ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा सारे, तस मयगल गाजे बारें, इति भीति अनीति निवारे हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व विकार अनिष्ट, क्षय जाये दोषी दुष्ट, इणे सेव्या समकित पुष्ट हो लाल ॥ न० ॥ ६ ॥ जसवंत जिनेंद्रसु साखें, नवि सिद्धचक्रना गुण नांखे, ते ज्ञान विनोद रस चाखे हो लाल ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठस्तवनं ॥

॥ जग जीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसिद्ध चक्र आराधीयें, शिव सुख फल सहकार लाल रे ॥ ज्ञानादिक त्रण रतनुं, तेज चढा

वण हार लाल रे ॥ पाठांतरें ॥ श्री सि० ॥१॥ गौतमें पूछंता कह्यो, वीर जिणंद विचार लाल रे ॥ नवपद मंत्र आराधतां, फल लहे नविक अपार लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ २ ॥ धर्मरथनां चार चक्र छे, उपशमनें सुविवेक लाल रे ॥ संवर त्रीजुं जाणीयें, चोथुं सिद्धचक्र छेक लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र रयण बलें, साधे सयल छ खंम लाल रे ॥ तिम सिद्धचक्र प्रनावथी. तेज प्रताप अखंम लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ ४ ॥ मयणाने श्रीपाल जी, जपतां बहु फल लीध लाल रे ॥ गुण जसवंत जिनेंद्रनों, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे ॥ श्रीसिद्ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तम स्तवनं ॥

॥ चिंतामणि स्वामी सच्चा साहेब मेरा ॥ ए देशी ॥

॥आराहो प्राणी साची नवपद सेवा ॥ ए आंकणी ॥ नव निधि आपे नवपद सेवे, इम नांखे श्रीजिनदेवा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र धरो नित्यदिलमें, जैसें गज मन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक एक पद जपतां, हांरे लहीयें सुख सदैवा ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुदित जपतां किम करी न करे, सुरसुख द्रुम फल लेवा ॥ आ० ॥४॥ जिनेंद्र कहे इम, ज्ञान विनोदे, हर्षित द्यो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ अथ अष्टम स्तवनं ॥

॥ राग सारंग ॥ गौतम पूछत श्रीजिन नांखत, व

चन सुधारस पानकी ॥ बलिहारी नवपद ध्यानकी ॥ १ ॥ नवपद सेवे नवमे स्वर्गें, पावत ऋद्धि विमानकी ॥ ब० ॥ २ ॥ याकी महिमा वछन हमकुं, जेसें जसोदा कानकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरूप मदनसो, देही वदन वानकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ याको ध्यान हृदय जब आवत, उपजत लहेरी ज्ञानकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति होवे हिल नीतर, जेसें लोकनमें जानकी ॥ ब०॥६॥ जिनेंद्र ज्ञान विनोद प्रसंगें, नक्ति करो नगवानकी ॥ ब० ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम स्तवनं ॥

॥ पूज्य पधारो मरुदेशों ॥ ए देशी ॥

॥ नवपद महिमा सांजलो, वीर नांखे हो सुणो पर्षदा बार के ॥ ए सरीखो जग को नहीं, आराध्यो हो शिवपद दातार के ॥ न० ॥ १ ॥ नव उली आंबिल तणी, नवी करीयें हो मनने उल्लास के ॥ नूमी शयन ब्रह्म व्रत धरो, नित सुणीयें हो श्रीपालनो रास के ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधि पूर्वक तप करी, ऊजमणुं हो कीजें विस्तार के ॥ साहामी सामिणी पोषियें, जेम लहीयें हो नवनो निस्तार के ॥ ॥ न० ॥ ३ ॥ नरसुख सुरसुख पामीयें, वली पामे हो नव नव जिनधर्म के ॥ अनुक्रमें शिवपद पण लहे, जिहां मोहोटां हो अक्षय सुख शर्म के ॥ न० ॥४॥ सांजली नवियण दिल धरो, सुखदायी हो नव पद अधिकार के ॥ वचन विनोद जिनेंद्रनो, मुज होजो हो न

व नव आधार के ॥ नव० ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ श्रीगौतम पृछा करे, वि‌ ‌ करी शीश नमाय प्रभुजी ॥ अविचल स्थानक मे सुण्युं, कृपा करी मोय बताय प्रभुजी ॥ शिवपुर न‌ ‌ सोहामणुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आठ कर्म अलगां करी, सार्यां आतम काम हो ॥ प्र० ॥ बूटा संसारनां दुःखथकी, तेणे रहे वानुं किहां गाम हो ॥ प्र० ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे ऊर्ध्व लोकमां, सिद्ध शिलातणुं गाम हो गौतम ॥ स्वर्ग छवीशनी उपरें, तेहनां बारे नाम हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ३ ॥ लाख पिस्तालीश जोजना, लांबी पोहोली जाण हो ॥ गौ० ॥ आठ जोजन जाडी विचें, छेडे मंख पंख ज्युं जाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ४ ॥ उज्ज्वल हार मोती तणो, गोदुग्धशंख वखाण हो ॥ गौ० ॥ ते थकी ऊजली अति घणी, उलट छत्र संगण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन स्वर्णसम दीपती, गगारी मगारी जाण हो ॥ गौ० ॥ फटक रत्न थकी निर्मली, सुंआली अत्यंत वखाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्ध राज हो ॥ गौ० ॥ अलोकशुं जाई अड्या, सार्यां आतम काज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ७ ॥ जन्म नहीं मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो ॥ गौ० ॥ वैरी नहीं मित्रज नहीं, नहीं संजोग विजोग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ८ ॥ भूख नहीं तरषा नहीं, नहीं हर्ष नहीं

सोग हो ॥ गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विष या रस योग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ए ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो ॥ गौ० ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मौनपणुं नहीं खेद हो ॥ गौ० ॥ ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर तिहां कोइ नहीं, नहीं वसती न उजाड हो ॥ गौ० ॥ काल सुगाल वर्ते नहीं, रात दिवस तिथि वार हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ॥११॥ राजा नहीं प्रजा नहीं,नहीं ठाकुर नहीं दास हो ॥ गौ०॥ मुक्तिमां गुरु चेला नहीं, नहीं लघु वडाई तास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १२ ॥ अनंता सुखमां झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो ॥ गौ० ॥ सहु कोईनें सुख सारीखां, सघलानें अविचल वास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १३ ॥ अनंत सिद्ध मुगतें गया, वली अनंता जाय हो ॥ गौ० ॥ अवर जग्या रूंधे नही, ज्योतिमां ज्योति समाय हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १४ ॥ केवल ज्ञान सहित छे, केवल दर्शन खास हो ॥ गौ० ॥ खायक समकित दीपतुं कदीय न होवे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १५ ॥ सिद्ध स्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो ॥ गौ० ॥ शिवसुंदरी वेगें वरे, नय कहे सुख अथाग हो ॥ गौ० ॥ शिव० ॥ १६ ॥ इति श्री सिद्धस्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचतीर्थनी आरति लिख्यते ॥

॥ पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शेत्रुंजा मंडण ऋषभ जिणंदा ॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थे आव्या, पूर्व

नवाणुं ज्ञविक मन ज्ञाव्या ॥ आरती कीजें श्रीजि नवरकी ॥ १ ॥ डुसरी आरती शांति जिणंदकी, शांति करे प्रज्ञु शिव मारगकी ॥ पारेवो जिणे शरणे राख्यो, केवल पामीनें धर्म प्रकाश्यो ॥ आ० ॥ २ ॥ तीसरी आरती श्रीनेमनाथ, राजुल नारी तारी निज हाथ ॥ सहस पुरुषशुं संयम लीधो, करी निज आतम कारज सीधो ॥ आ० ॥ ३ ॥ चोथी आरति चिहुं गति वारी, पारसनाथ ज्ञविक हितकारी ॥ गोडी पास शंखेश्वरो पास. ज्ञविजनना पूरे मन आश ॥ आ० ॥ ४ ॥ पांचमी आरती श्रीमहावीर, मेरु परें. म रह्या धीर ॥ साडा बार वरस तप तपीया, कर्म खपावीनें शिव पुर वसिया ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ इणि परें प्रज्ञुजीनी आरती करशो, शुज्ञ परिणामे शिवपुर वरशो ॥ इणि परें जिनजीनी आरती गावे, शुज्ञ परिणामें शिवपुर जावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ कर जोडी सेवक इम बोले, नहीं कोइ माहारा जिनजीने तोले ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चार मंगल ॥

॥ आज घरे नाथ पधार्या, कीजें मंगल चार ॥ आ० ॥ पहिले मंगल प्रज्ञुजीने पूजुं, घसी केसर घनसार ॥ आ० ॥ १ ॥ बीजे मंगल अगर उखेवुं, कंठे ठवुं फूल हार ॥ आ० ॥ त्रीजे मंगल आरती उतारुं, घंट वजावुं रणकार ॥ आ० ॥ २ ॥ चोथे मंगल प्रज्ञुगुण गाऊं ॥ नाटक थइ थइ कार

॥ आ० ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति चारमंगल ॥

॥ अथ मंगलिक दीपक ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो ॥ आरती उतारी ने बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ सोहामणुं घर पर्व दिवाली, अंबर खेले अबला वाली ॥ दी० ॥ देपाल भणे इणें देव अजुआली, भावें भगतें विघ्न निवारी ॥ दी० ॥ देपाल भणे इणें कली कालें, आरती उतारी राजा कुंअरपालें ॥ दी० ॥ ते घर मंगलिक जे घर मंगलिक, चतुर्विध संघ घर मंगलिक दीवो ॥ दी० ॥ इति मंगलिक दीपक संपूर्ण ॥

॥ अथ मोटी आरती ॥

॥ पेहेली रे आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजा मंडण रुषभ जिणंदा ॥ जय जय आरती आदिजिणंद की॥ए आंकणी॥दूसरी आरती मरुदेवी नंदा,जुगला रे धरम निवार करंदा ॥ ज० ॥ १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंहासन मारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित नवी पूजा, देव रुषभ देव अवर न दूजा ॥ ज० ॥ २ ॥ पांचमी आरती प्रभुजीनें भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ आरती कीजें प्रभुशांति जिणंदकी, मृगलंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय जय आरती शांति तुमारी, विश्वसेन अचिरादेवीको नंदा, शांति जिणंद मुख पूनम चंदा ॥ ज० ॥ ४ ॥ आरती की

जें प्रभु नेम जिणंदकी, शंखलंछनकी में जाउं बलि हारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिवादेवीको नंदा, नेमजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरती कीजें प्रभु पास जिणंदकी, फणिंद लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वसेन वामा देवीको नंदा, पासजिणंद मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ६ ॥ आरती कीजें महावीर जिणंदकी, सिंह लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथराय त्रिशला देवीको नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०॥७॥ आरती कीजें प्रभु चोवीश जिणंदकी, चोवीशे जिणंदकी में जाउं बलिहारी ॥ चोवीशे जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०॥८॥ कर जोडी सेवक इम बोले, नही कोइ माहारा प्रभुजीने तोले ॥ आ० ॥९॥ इति आरती संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीचक्केसरी मातानी आरती ॥

॥ जय जय आरती देवी तुमारी, नित प्रणमुं हुं तुम चरणारी ॥ ज० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौख्याली ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ विधि पक्षगछनी शासन देवी, सकल श्रीसंघने सुख करेवी ॥ ज० ॥ ३ ॥ नीलवट टीलडी रत्न बिराजे, कानें कुंमल दोय रवि शशि छाजे ॥ ज० ॥ ॥ ४ ॥ बांहे बाजुबंध बेरखा सोहे, नीलवरण सु चके मन मोहे ॥ ज० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित चूनडी खलके, पाये घुघरडा घम .घम घमके ॥ ज० ॥ ६ ॥ वाहन गरुड चढ्यां बहु प्रेमें, तुज गुण

पार न पाउं केमे ॥ ज० ॥ ७ ॥ चूनडी जडामां देह अति दीपे, नवसरा हारें जग सहु जींपे ॥ ज० ॥ ॥ ८ ॥ नित नित मानी आरती उतारे, रोग शोग नय दूर निवारे ॥ ज० ॥ ए ॥ तस घर पुत्र पौत्रा दिक ठाजे, मनवंछित सुख संपद गाजे ॥ ज० ॥ १० ॥ देवचंद्र मुनि आरती गावे, जयो जयो मंगल नित्य वधावे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ लोजनी सद्याय ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ लोज न करीएं प्राणीया रे, लोज बुरो संसार ॥ लोज समो जगमां नहीं रे, दुर्गतिनो दातार ॥ नविक जन, लोज बूरो रे संसार ॥ १ ॥ करजो तुमें निरधार ॥ न० ॥ जिम पामो नवपार ॥ न० ॥ लोज बूरो रे संसार ॥ ए आंकणी ॥ अति लोजें लखमी पति रे, सागरनामें शेठ ॥ पूर पयोनिधिमां पड्यो रे, जई बेठो तस हेठ ॥ न० ॥ लो० ॥ २ ॥ सोवन मृगना लोजथी रे, दशरथ सुत श्रीराम ॥ सीता नारि गमावीने रे, नमीयो ठामो ठाम ॥ न० ॥ ॥ लो० ॥ ३ ॥ दशमा गुणगणा लगें रे, लोज तणुं ठे जोर ॥ शिवपुर जातां जीवनें रे, एहज मोहोटो चोर ॥ न० ॥ लो० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोजथी रे, दुर्गति पामे जीव ॥ परवश पडीयो बापडो रे, अहोनिश पाडे रीव ॥ न० ॥ लो० ॥ ५ ॥ परिग्रहना परिहारथी रे, लहीयें शिवसुख

सार ॥ देव दाणव नरपति थई रे, जाशे मुक्ति मझार ॥ ज० ॥ लो० ॥ ६ ॥ जावसागर पंमित जणे रे, वीरसागरबुध शिष्य ॥ लोज तणे त्यागें करी रे, पहोंचे सयल जगीश ॥ ज० ॥ लो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलनी नववाड प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुनें चरणे नमी, समरी शारद माय ॥ नवविध शीलनी वाडनो, उत्तम कहुं उपाय ॥ १ ॥ ढाल पहेली ॥ वधावानी ॥ पहेलाने पासो होजी ॥ ए देशी ॥ पहेलीने वाडें होजी वीर जिनवरें कह्यो, सेवो सेवो हो वस्ति विचारीनें जी ॥ स्त्री पशु पमंग होजी वासो वसे जिहां, तिहां न रहेवुं हो शीलव्रत धारीनें जी ॥ २ ॥ जिम तरुमालें होजी वसतो वानरो, मनमां बिये रखे हूंई पडुं जी ॥ मंजारी देखी होजी पिंजरमांहेथी, पोपट चिंते हो रखे मोटें चडूं जी ॥ ३ ॥ जिम सिंहलंकी होजी सुंदरी शिर धरी, जलनुं बेडुं हो जुगतिशुं जालवे जी ॥ तिम मुनि मनमें होजी राखे जालवी, नारीने निरखी होजी चित्त नवि चालवे जी ॥ ४ ॥ जिहां होवे वासो होजी सेहेजें मंजारनो, जोखम लागे हो मुषकनी जातने जी ॥ तेम ब्रह्मचारी होजी नारीनी संगतें, हारे हो हारे रे शीयल सूधातनें जी ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ एम वाड विघटे विषय प्रगटे, शंका कंखा नीपजे ॥ तीव्र कामें धातु बिगडे, रोग बहुविध उपजे ॥ मन्नमांहे विषय व्यापे, विषयशुं मन रहे मली ॥

उदय रत्न कहे तिणे कारण, नव वाड राखो निर्मली ॥ ६

॥ ढाल बीजी ॥

॥ विदर्भदेश कुंडन पुर नयरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिभुवन धणी, अज्ञान तिमिर हर दिनमणि ॥ शील रत्नना जतन तंते, वाड भांखी बीजी भगवंते ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ भगवंत भाखे संघ साखें, शीयल सुरतरु राखवा ॥ मुक्ति मांहा फल हेतु अद्भुत, चारित्रनो रस चाखवा ॥ २ ॥ मीठे वचने माननीशुं, कथा न करे कामनी ॥ वाड विधिशुं जेह पाले, बलिहारी तस नामनी ॥ ३ ॥ वात व्रतने घात कारी, पवन जिम तरुपातने ॥ वात करतां विषय जागे, तेमाटें तजो ए वातनें ॥ ४ ॥ लींबु देखी दूरथी जिम, खटाशें मांढा गले ॥ गगनें गर्जारव सुणीनें, हडकवा जिम उछले ॥ ५ ॥ तिम ब्रह्मचारीना चित्त विणसे, वयण सुंदरीनां सुणी ॥ कथा तजो तिणे कारण, एम प्रकाशे त्रिभुवन धणी ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ त्रीजीनें वाडें रे त्रिभुवन राजीयो रे ॥ एणी परें दीये उपदेश ॥ आसन उंभोरे साधुजी नारीनो रे, मुहूर्त्तलगें सुविशेष ॥ हुं बलिहारी रे जाउं तेहनी रे ॥ १ ॥ धन्य धन्य तेहनी हो मात ॥ शील सुरंगी रे रंगाणी रंगशुं रे, जेहनी साते हो धात ॥ हुं० ॥

॥ २ ॥ शयनासनें रे पाटीनें पाटले रे, जिहां जिहां बेसे होनार ॥ बेघडी लगे रे तिहां बेसे नहीं रे, शील व्रत राखणहार ॥ हुं० ॥ ३ ॥ कोहेला केरीरे गंधसंजो गथी रे, जेम जाये कणकनो वाक ॥ तिम अबलानुं रे आसण सेवतां रे, विणसे शियल सुपाक ॥हुं०॥४॥

॥ ढाल चोथी ॥ हुं वारी रंगढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ चोथीनी वाडे चेतजो हो राज, इम भांखे श्रीजिन भूप रे ॥ संवेगी सूधा साधु जी ॥ नयण कमल विकासीनें हो राज, रखे निरखो रमणीनुं रूप रे ॥ सं० ॥ १ ॥ रूप जोतां रढ लागशे हो राज, देह उल्लसशे अनंग रे ॥ सं० ॥ मनमांहे जागशे मोहनी हो राज, त्यारें होशे व्रतनो भंग रे ॥ सं० ॥ २ ॥ दिनकर साहामुं देखेतां हो राज, नयण घटे जिम तेज रे ॥ सं० ॥ तिम तरुणी तन पेखतां हो राज, हीणुं थाये शीयलशुं हेज रे ॥ सं० ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थांपरवारी मारा साहिबा कंवल मतचालो ॥ ए देशी ॥ पंचमी वाडी परमेसरें, वखाणी हो वारू ॥ सांभलजो श्रोतातुमें, धर्मीव्रत धारू ॥ १ ॥ कूडांतर वरकामिनी, रमे जिहां रागें ॥ स्वरकंकणादिकनो सुणी, तिहां मन्मथ जागे ॥ २ ॥ तिहां वसवुं ब्रह्म चारीनें, नकह्युं वीतरागें ॥ वाड भांगे शील रत्ननी, जिहां लांछन लागे ॥ ३ ॥ अग्निपासें जिम उंगले, भाजनमांहे भरिया ॥ लाखने मीण जाए गली, न

रहे रस जरिया ॥ ४ ॥ तिम हाव जाव नारी तणा, वली हांसुंने रुदना ॥ सांजलतां शीयल वीघरे, मन वधे हो मदना ॥ ५ ॥

॥ ढाल उठी ॥

॥ सहीयां मारा नयण समारो ॥ ए देशी ॥

॥ उठीने वाडे उयल उवीलो, गुण रत्नें गाढो जस्यो जी ॥ सिद्धारथ कुल नंद नगीनो, वीरजिणंद इम जन्नस्यो जी ॥ १ ॥ अव्रतीपणे जे होय आगें, काम क्रीडा बहुविध करी जी ॥ व्रत लेइनें विलसित पेहेलां, रखे संजारो दिल धरी जी ॥ २ ॥ अग्नि जस्यां जिम उपर पूलो, मेले जिम ज्वाला वमे जी ॥ वरस दिवसें जिम विषधरनुं, शंकाये विष संक्रमे जी ॥ ३ ॥ विषय सुख जे विलसित पेहलां, तिम शियल व्रती संजारतो जी ॥ व्याकुल थइनें शीयल विराधे, पछें थाय वलि उरतो जी ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ गढ बुंदीरा वाला ॥ ए देशी ॥

॥ सातमी वाडें वीर पयंपे, सुणो संजमना रागी हो ॥ शीलरथना हो धोरी ॥ सूधा साधु वैरागी, मुज आणाकारी, विषय रसना हो त्यागी ॥ सू० ॥ ॥ १ ॥ सरस आहार तजजो सेहेजें, विगय थोडी वावरजो हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ २ ॥ मादक आहारें मन्मथ जागे, ते जाणी परिहरजो हो ॥ शी० ॥ ॥ सू० ॥ ३ ॥ सन्निपातें जिम घृत जोगें, अधिक करे उजाला हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ ४ ॥ पांचे इंद्रिय

तिम रस पोखे, चारित्रमां करे चाला हो ॥शी०॥स्०॥५

॥ ढाल आठमी ॥

॥ गोठण खोलो कमाड ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशला सुत हो त्रिगडे बेशी एम, आठमी वाड वखाणी शीलनी जी ॥ अतिमात्रा हो आहार तजो अणगार, लालच राखो संयम शीलनी जी ॥ १ ॥ अतिआहारें हो आवे उंघ अपार, स्वपनमां हे हो थाये शील विराधना जी ॥ वली थाये हो तेणे मदवंत देह, संजमनी हो नवि थाये आराधना जी ॥२॥ जिम शेरना हो मापमांहि दोढ शेर, उरीने ऊपर दीजें ढांकणुं जी ॥ नांजे तोलडी हो खीचडी खेरु थाय, तेम अतिमात्राएं व्रत बिगडे घणुं जी॥३॥

॥ ढाल नवमी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ नवमी वाडें निवारजो रे, साधुजी शणगार ॥ शरीर शोजाएं शोने नही, अवनीतलें अणगार ॥ १ ॥ एम उपदेशे वीरजी, मुनिवर धरजो रे मन्न ॥ शीखामण ए माहरी, करजो शील जतन्न ॥ २ ॥ स्नान विलेपन वासना, उत्तम वस्त्र अपार ॥ तेल तंबोल आदें तजी, उद्भट वेश म धार ॥ ३ ॥ धोई नें धरणी धर्यो, जिम रत्न हार्यो कुंनार ॥ तिम शीलरत्नने हारशो, जो करशो सिणगार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ नटीयाणी नी देशी ॥

॥ एकली नारी साथें, मारगें नवि जावुं हो, वली वात विशेष न कीजियें ॥ एक सेजें नर दोय,

शीलवंत नवि सुवे हो, वली सहेजें गाल न दीजियें ॥ १ ॥ न सुवारे निज पास, साडा ठ वरसनी हो कांइ, पुत्रीने पण हेजमां ॥ सात वरस उपरांत, सुतने पण न सूवारे हो, कांइ शीलवंति तेम सेजमां ॥ २ ॥ स्त्रीसंगें नव लाख, जीव पंचेंद्रि हणाये हो, जगवंतें जांख्युं इस्युं ॥ असंख्याता पण जीव, संमूर्छिम पंचेंद्रिय हणाये हो, वली घणुं कहीएं किस्युं ॥ ३ ॥ इम जाणी नर नार, शीयलनी सद्दहणा हो, सूधी दिलमां धारजो ॥ एह डुर्गतिनुं मूल, अब्रह्म सेवा मांहि हो, जातां दिलने वारजो ॥४॥ तपगछ गयण दिणंद, मन वंछित फल दाता हो, श्री हीररत्नसूरी श्वरू ॥ पामी तास पसाय, वाडो एम वखाणी हो, शीयलनी मनोहरु ॥ ५ ॥ खंजात रही चोमास, सत्त रशें त्रेशठें हो, श्रावण वदि बीज बुधें जणे ॥ उदय रत्न कहे कर जोड, शियलवंत नर नारी हो, तेहनें जाऊं जामणे ॥ ६ ॥ इति श्री नववाड सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीतमाकूनी सझाय लिख्यते ॥

॥ प्रीतमसेंती वीनवे, प्रेमदा गुणनी खाण ॥ मेरे लाल ॥ मन मोहन एकण चित्तें, सांजलो चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ १ ॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए आंकणी ॥ मूको एहनो संग ॥ मे० ॥ पंचमांहे जस लीजीयें, मीलें वाधे रंग ॥ मे० ॥ कं० ॥ २ ॥ तमाकू ते जाणियें, खुरासाणीनी आक ॥ मे० ॥ उत्तम जन ते इम कहे, पीवानी तलाक ॥मे०॥ कं० ॥३॥

॥ दूध दहीं ते पीजियें, वलि पीजियें साकर खांम ॥ मे० ॥ घृत पीधे तन उल्लसे, तमाकु परि ढांम ॥ मे० ॥ कं० ॥ ४ ॥ मोह्टोटा साथें बोलतां, मन मां आवे लाज ॥ मे० ॥ दिन पण एलें नीगमे, विणसाडे निज काज ॥ मे० ॥ कं० ॥ ५ ॥ होठ लि ह्लाला साग्विा, श्वास गंधाये जेण ॥ मे० ॥ दांत ते दीसे श्यामला, हैयडुं दाझे तेण ॥ मे० ॥ कं० ॥ ॥ ६ ॥ एठ पियारी आचरे, विटलावे निज जात ॥ मे० ॥ व्यसनी वार्यो नवि रहे, न गणे जात पर जात ॥ मे० ॥ कं० ॥ ७ ॥ एके फूंकें जेटला, वायुकाय हणाय ॥ मे० ॥ खस खस सम काया करे, तो जंबु द्वीप न माय ॥ मे० ॥ कं० ॥ ८ ॥ गुडाकू करी जे पीये; ते नर मूढ गमार ॥ मे० ॥ जल नाखे जे जिहां कने, माखीनो संहार ॥ मे० ॥ ॥ कं० ॥ ए ॥ चोमासाना कुंथुआ, ते किम शुद्ध ज थाय ॥ मे० ॥ तमाकू पीतां थकां. पापें पिंड ज राय ॥मे०॥कं०॥१०॥ तलख तमाकू वापर्यां, परोणा ने लाग ॥ मे० ॥ आगें करता लापसी, पठी ठीकरुं ने आग ॥ मे० ॥ कं०॥११॥ पाणी एकने बिंदुयें, जीव कह्या जिनराय ॥ मे० ॥ वडबीज सम काया करे, जंबुद्वीप न माय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १२ ॥ अग्नि एकने खोडले, जीव कह्या जिनराय ॥ मे० ॥ सरशव सम काया करे, तो जंबूद्वीप न. माय ॥ मे० ॥ ॥कं०॥१३॥ थूंकें संमूर्छिम ऊपजे, नर पचेंद्रिय जीव

॥ मे० ॥ एपण असंख्याता कह्या, श्री जगदीश स देव ॥ मे० ॥ कं० ॥ १४ ॥ जलमां जीव कह्या घणा, संख्य असंख्य अनंत ॥ मे० ॥ नील फूल तिहां ऊपजे, अग्नि प्रजाले जंत ॥ मे० ॥ कं० ॥ ॥ १५ ॥ तमाकू पीतां थकां, ए छकाय हणाय ॥ मे० ॥ ज्योति घटे नयणा तणी, श्वासें पिंम ज राय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १६ ॥ घडी दोय जे व्रत करो, सेवो श्रीजगवान ॥ मे० ॥ दया धर्म जाणी करी, सेवो चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ कं० ॥ १७ ॥ चतुर विचारी समजीयें, धरीएं धर्मनुं ध्यान ॥ मे० ॥ आनंद मुनि एम उच्चरे, ते लहे कोडि कल्याण ॥ मे० ॥ कं० ॥ १८ ॥ इति श्री तमाकूनी सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवनं ॥

॥ प्रह समे जाव धरी घणो, प्रणमुं मन रे आणंदा ॥ धन वेला धन ते घडी, निरखुं प्रजु मुख चंदा ॥ प्र० ॥ १ ॥ रुषज अजित संजव जला, अजिनंदन वंडुं ॥ सुमति पद्मप्रज जिनवरा, श्रीसुपार्श्व जिनेंडु ॥ प्र० ॥ २ ॥ चंडप्रज सुविधि नमुं, शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल प्रजु, अनंत धर्म जिनेश ॥ प्र० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर जिनवरा, ए त्रण चक्री कहीजें ॥ मल्ली मुनि सुव्रत प्रजु, नमि नेम नमीजें ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पार्श्व वीर नित्य वंदिएं, एहवा जिन चोवीश ॥ ज्ञानविमल सूरि प्रणमतां, नित्य होए जगीश ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषजजिन स्तवनं ॥

॥ आज तो वधाई राजा, नाजीके दरबार रे ॥ मरु देवायें बेटो जायो, ऋषज कुमार रे ॥ आ० ॥ १ ॥ अयोध्यामें उच्छव होवे, मुख बोले जयकार रे ॥ घननन घननन घंटा वाजे, देव करे थेईकार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इंड्राणी मली मंगल गावे, लावे मोतीमाल रे ॥ चंदन चरचा पाए लागे, प्रजु जीवो चिरकाल रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नाजीराजा दानज देवे, वरसे अखंम धार रे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि जंमार रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, देवे रथ तूखार रे ॥ हीर चीर पीतांबर देवे, देवे सवि शणगार रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तिन लोकमें दिनकर प्रगट्यो, घर घर मंगल माल रे ॥ केवल कमलारूप निरंजन, आदीश्वर दयाल रे ॥आ०॥६॥

॥ अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ चिंतामणि चिंता सवि चूरे, पूरे मनकी आशा रे ॥ जाव जक्तिशुं जे नर ध्यावे, पावे शिव सुख वासा रे ॥ चिंता० ॥ पूरे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उर देव सब दूर कीए हे, प्रजु गुनका में प्यासा रे ॥ दिलजर दरिसण द्यो प्रजु प्यारे, दोहग दूर पलासा रे ॥ चिंता० ॥ २ ॥ प्रजुजीशुं मेरो चित्त चाहे, चकवा दिनकर जैसा रे ॥ चरणकमलकी गंध सुगंधें, मुऊ मन जमरा वेसा रे ॥ चिं० ॥ ३ ॥ जिन मुख वाणी गंग तरंगें, पाप पंकका नासा रे ॥ देखतहिं

मन विकसित होवें, एहि अजब तमासा रे ॥ चिं० ॥ ॥ ४ ॥ पास जिनेसर पल न विसारुं, जब लग तनमें सासा रे ॥ ग्यानमहोदय चरण सरोजे, कल्याणोदधि हे दासा रे ॥ चिं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे सफल दिवस आज माहरो, दीठो प्रभु नो देदार ॥ लय लागी जिनजीथकी, प्रगट्यो प्रेम अपार ॥ घडी एक विसरो नहिं साहिबा, साहिबा घणो रे सनेह ॥ अंतरजामी छो माहरा, मरुदे वीना नंद ॥ घ० ॥ १ ॥ जीरे लघु थइनें मलडुं रही, प्रभु सेवाने काज ॥ ते दिन क्यारें आवशे, शिव सुखना दातार ॥ घ० ॥ २ ॥ जीरे प्राणेसर प्रभुजी तुमें, आतमना आधार ॥ माहारे मन प्रभु तुमें एक छो, जाणजो जगदाधार ॥ घ० ॥ ३ ॥ जीरे एक घडी प्रभु तुम विना, जाए वरस समान ॥ प्रेम विरह तुझ केम खमुं, जाणो वचन प्रमाण ॥ घ० ॥ ४ ॥ जीरे अंतरगतनी वातडी, कहो केने कहेवाय ॥ वालेसर विशवासीनें, कहेतां दुःख जाय ॥ घ० ॥ ५ ॥ जीरे देव अनेक जगमांहे छे, तेहनी रीत अनेक ॥ तुझ विना अवरनें नही नमुं, एवी मुझ मन टेक ॥ घ० ॥ ६ ॥ जीरे पंडित विवेकवि जय तणो, नमे शुभ मन लाय ॥ हर्षविजय श्रीऋ षभना, जुगतें गुण गाय ॥ घ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तवनं ॥

॥ श्रीरे सिद्धाचल नेटवा, मुऊ मन अधिक उमा हो ॥ रुषन्न जिणंद जुहारीनें, लीजें नव तणो लाहो ॥ श्री० ॥ १ ॥ मणिमय मूरति रुषननी, निपाई अनिराम ॥ नुवन कराव्युं कनकमय, राख्युं नरतें नाम ॥ श्री० ॥ २ ॥ इण गिरि रुषन्न समोसख्या, पूर्व नवाणुं वार ॥ राम पांमव मुगतें गया, पाम्या नवनो पार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नेम विना त्रेवीश जिना, आव्या सिद्ध खेत्र जाणी ॥ शत्रुंजा समुं तीरथ नही, बोल्या सीमंधर वाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्य पसायथी, विमलाचल पायो ॥ कांतिविजय हरषें करी, विमला चल गायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ नोलीडा हंसा रे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथना रे नंदन वीनवुं, वीनतडी अवधार ॥ नवमंमपमां रे नाटक नाचियो,हवे मुऊ दान देवराव॥ हवे मुज पार उतार॥सिद्धा०॥१॥ त्रण रतन मुऊ आपो तातजी, जेम नावे रे संताप ॥ दान देयंतां रे प्रनुजी कसुर किसी, आपो पदवी रे आप ॥सिद्धा०॥ ॥ २ ॥ चरण अंगुठडे मेरु कंपावियो, सुरनुं मोडयुं रे मान॥अष्टकर्मनो रे ऊगडो जीतियो,दीधुं वरसीरे दान ॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ शासन नायक सवि सुख दायक, त्रिशला कूखें रतन्न ॥ सिद्धारथनो रे वंश दीपावियो, प्रनुजी तमें धन्य धन्य ॥ साहेब तुमें धन्य धन्य

॥ सि० ॥४॥ वाचकशेखर कीर्तिविजय गुरु,पामी तास पसाय ॥ धर्म तणे रसें जिन चोवीशना, विनय विजय गुण गाय॥ सि० ॥ ५ ॥ इतिवीरजिन॥

॥ अथ प्रभाती ॥ रागवेलावल ॥

॥जब लगें समकित रत्नकुं, पाया नही प्राणी ॥ तब लगें निज गुण नवि वधे, तरु विण जिम पाणी ॥ ज० ॥ १ ॥ तप संयम किरिया करो, चित्त राखो ठाम ॥ दर्शन विण निष्फल होय, जिम व्योमें चित्राम ॥ ज० ॥ २ ॥ समकित विरहित जीवनें, शिव सुख होये केम ॥ विण हेतु कार्य न नीपजे, मृदविण घट जेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ परंपर कारण मोक्षको, ए छे समकित मूल ॥ श्रेणिक प्रमुख तणी परें, होय सिद्धि अनुकूल ॥ ज० ॥ ४ ॥ चार अनंतानुबंधीआ, त्रिक दर्शन मोह ॥ ज्ञान कहे जे क्षय करे, वंदूं ते जितकोह ॥ ज० ॥ ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रभाति स्तवनं ॥ राग वेलावल ॥

॥ तेदिन क्यारें आवशे, श्रीसिद्धाचल जाशुं ॥ ऋषभ जिणंदने पूजवा, सूरज कुंडमां न्हाशुं ॥ ते० ॥ १ ॥ समवसरणमां बेसीनें, जिनवरनी वाणी ॥ सांभलशुं साचे मनें, परमारथ जाणी ॥ ते० ॥ २ ॥ समकित व्रत सूधां धरी, सद गुरुने वंदी ॥ पाप सब आलोइनें, निज आतम निंदी ॥ ते० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणा दोय टंकनां, करशुं मन कोडें ॥ विषय कषाय वीसारीनें, तप करशुं होडें ॥ ते० ॥ ४ ॥ वाहा

ल्लानें वैरी विच्चें, नवि करशुं वेहेरो ॥ परना अवगुण देखीने, नवि करशुं चेहेरो ॥ ते० ॥ ५ ॥ धरम स्थानक धन वावरी, छकायनें हेतें ॥ पंच महाव्रत लेइनें, पालशुं मन प्रीतें ॥ ते० ॥ ६ ॥ कायानी माया मेलीने, परीसहने सहेशुं ॥ सुख दुःख सघला विसारीनें, समन्नावें रहेशुं ॥ ते० ॥ ७ ॥ अरिहंत देवनें उलखी, गुण तेहना गाशुं ॥ उदय रतन इम उच्चरे, त्यारें निरमल थाशुं ॥ ते० ॥ ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रन्नातें मंगल ॥राग नैरव ॥

॥ जाग नविया धर्म वाहाणुं, साद सद्गुरुनो सुणी ॥ काज कर जीव पुण्य केरां, मोह निद्रा पर हरी ॥ जा० ॥१ ॥ पूरवदिशें जिनतणी वाणी, ज्ञान दिनकर उगीयो ॥ हर्ष हईडा कमल विकस्यां, पाप तिमिर वही गयो ॥ जा० ॥ २ ॥ धर्म मारग हुउ परगट, हृदय नयण निहालीएं ॥ ध्यान जल नवकार दातण, करी वदन पखालीएं ॥ जा० ॥ ३ ॥ सूरजकुंम जई स्नान कीजें, निरमल धोती पेहेरीएं ॥ श्रीआदिनाथ युगादि वंदी, अष्ट कर्म निवारीएं ॥ ॥ जा० ॥ ४ ॥ शीयल समकित धोति पेहेरी, कुसुम करणी कर धरी ॥ प्रह उठी प्रासाद जइएं, श्रीजिन पूजा इम करी ॥ जा० ॥ ५ ॥ सत्य वचन तंबोलना रंग, शील सिणगार पेहेरीएं ॥ माय बाप देव गुरु तेहनां, चरणकमल जुहाररिएं ॥ जा० ॥ ६ ॥ गंन्नारे जइ पूजा रचीएं, रंग मंमप रलियामणो ॥

नयणें निरखी नाथ निहालो, नावना इम नाविएं ॥ जा० ॥ ७ ॥ पहिले मंगल जिनचोवीशे, बीजे गोयम गणहरू ॥ त्रीजे मंगल सद्गुरु नामें, चोथो जिन शासनवरू ॥ ७ ॥ मूलगां ए चार मंगल, सुप्र नातें सोहामणां ॥ नणे नंदीसर सयल सुखकर, दीठे हरष वधामणां ॥ जा० ॥ ए ॥ इति मंगलम् ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनां पांच कल्या ॥

॥ णिकनुं चोढालीयुं प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ प्रेमें प्रणमुं सरसती, मागुं अविरल वाणि ॥वीर तणा गुण गायशुं, पंच कल्याणिक जाणि ॥ १ ॥ गुण गातां जिनजी तणा, लहीएं नवनो पार ॥ सुख समाधि होए जीवनें, सुणजो सहु नर नार ॥२॥

॥ ढाल पहेली ॥ चालो गरबो रमीएं रूडा ॥

॥ रामशुं जो ॥ ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीपना नरतमां जो, रुडूं माहणकुंम बे गाम जो ॥ रुषनदत्त माहण तिहां वसे जो, तस नारी देवानंदा नाम जो ॥ १ ॥ चरित्र सुणो जिनजी तणां जो ॥ ए आंकणी ॥ जेम समकित निर्मल थाय जो ॥ अष्ट माहासिद्धि संपजे जो, वली पातक दूर पलाय जो ॥ च० ॥ २ ॥ उजली बठ आषाढनी जो, योगें उत्तराफाल्गुनी सार जो ॥ पुष्फोत्तर सुविमानथी जो, चवी कूखें लीयो अवतार जो ॥च०॥ ॥ ३ ॥ देवानंदा तेणी रयणीएं जो, सूतां सुपन लह्यां दश चार जो ॥ फल पूछे निज कंतने जो,

कहे रुषनदत्त मन धार जो ॥च०॥ ४ ॥ नोग अरथ सुख पामशुं जो, तमें लेहेशो पुत्र रतन्न जो ॥ देवा नंदा ते सांजली जो, कीधुं मनमां तहत्ति वचन्न जो ॥ च० ॥ ५ ॥ सांसारिक सुख नोगवे जो, सुणो अच रिज हूउं तिण वार जो ॥ सुधर्म इंद तिहां कणे जो, जोइ अवधि तणे अनुसार जो ॥ च० ॥ ६ ॥ चरम जिणेसर ऊपना जो, देखी हरख्यो इंद माहाराज जो ॥ सात आठ पग साहामो जइ जो, एम वंदन करे शुन साज जो ॥ च० ॥ ७ ॥ शक्रस्तव विधिशुं करी जो, फरी बेठो सिंहासन जाम जो ॥ मन विमासण मां पडशुं जो, चित्त चिंतवे सुरपति ताम जो ॥ च० ॥ ८ ॥ जिन चक्री हरि रामजी जो, अंतपंत माहण कुलें जोय जो ॥ आव्या नही नही आवशे जो, एतो उग्रनोग राजकुलें होय जो ॥ च० ॥ ए ॥ अंतिम जिणेसर आविया जो, एतो माहणकुलमां जेण जो ॥ ए तो अछेरा नूत छे जो ॥ थयुं हुंमाअवसर्पिणी तेण जो ॥ च० ॥ १० ॥ काल अनंत जाते थके जो, एहवां दश अछेरां थाय जो ॥ इण अवसरपिणीमां थया जो, ते कहीयें जे चित्त लाय जो ॥ च० ॥ ११ ॥ गर्न हरण उपसर्गनो जो, मूल रूपें आव्या रवि चंद जो ॥ निष्फल देशना जे थई जो, गयो सौधर्में चमरेंद जो ॥ च० ॥ १२ ॥ ए श्री वीरनी वारमां जो, कुल अमर कंका गया जाण जो ॥ नेम नाथने वारे सही जो, स्त्री तीर्थ मल्ली गुण खाण जो ॥च०॥

॥ १३ ॥ एक शो आठ सिद्धा रुषभने जो, वारें सु विधिनें असंयति जो ॥ शीतल नाथ वारें थयुं जो, कुल हरिवंशनी उतपत्ति जो ॥ च० ॥ १४ ॥ एम विचार करे इंदलो जो, प्रभु नीच कुलें अवतार जो ॥ तेहनुं कारण शुं अछे जो, इम चिंतवे हृदय मझार जो ॥ च० ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आशोमासें शरद पूनम ॥
॥ नमनी रात जो ॥ ए देशी ॥

॥ नव मोहोटा कहीएं प्रभुना सत्तावीश जो, मरिची त्रिदंडी तेमांहे त्रीजे नवें रे जो ॥ तिहां भरत चक्रीसर वांदे आवी जोय जो, कुलनो मद करी नीच गोत्र बांध्युं तेहवे रे जो ॥ १ ॥ एतो माहण कुलमां आव्या जिनवर देव जो, अति अणजुगतुं एह थयुं थाशे नही रे जो ॥ जे जिनवर चक्री नीच कुलमांहे जो, छे माहारो आचार धरुं उत्तम कुखें सही रे जो ॥ २ ॥ एम चिंतवी तेड्यो हरिणगमेषी देव जो, कहे माहण कुंमें जइने ए कारज करो रे जो ॥ छे देवानंदानी कूखें चरम जिणंद जो, हर्ष धरीने प्रभुनें तिहांथी संहरो रे जो ॥ ३ ॥ नयर क्षत्रीकुंम राय सिद्धारथ गेह जो, त्रिशलाराणी तेहनी छे रूपें भली रे जो ॥ तस कुखें जइ संक्रमावो प्रभुनें आज जो, त्रिशलानो जे गर्भ अछे ते माहणकुलें रे जो ॥ ४ ॥ जेम इंद्रें कह्युं तेम कीधुं ततक्षण तेण जो, ब्याशी रातने अंतरे प्रभुनें संहर्यो रे जो ॥ माहणी सुपनां

जाणे त्रिशला हरीनें लीध जो, त्रिशला देखी चौद सुपन मनमां धर्यां रे जो ॥ ५ ॥ गज वृषभ अने सिंह लक्ष्मी फूलनी माल जो, चंदो सूरज ध्वज कुंभ पद्मसरोवरु रे जो ॥ सागरने देवविमानज रत्ननी राशि जो, चौदमे सुपनें देखी अग्नि मनोहरु रे जो ॥६॥ शुभ सुहणा देखी हरखी त्रिशला नार जो, परभातें उठीने पीयु आगल कहे रे जो ॥ ते सांभली दिलमां राय सिद्धारथ नेह जो, सुपन पाठक तेडीने पूछे फल लहे रे जो ॥ ७ ॥ तुम होशे राज अरथनें सुत सुख भोग जो, सुणी त्रिशला देवी सुखें गर्भ पोषण करे रे जो ॥ तव माता हेतें प्रभुजी रह्या संलीन जो, ते जाणीने त्रिशला दुख दिलमां धरे रे जो ॥ ८ ॥ में कीधां पाप अघोर भवो भव जेह जो, दैव अटारो दोषी देखी नवि शके रे जो ॥ मुझ गर्भ हर्यो जे किम पामुं हवे तेह जो, रांक तणे घर रत्न चिंतामणि किम टके रे जो ॥ ९ ॥ प्रभुजीएं जाणी ततखिण दुःखनी वात जो, मोह विटंबन जालिम जगमां जे लहुं रे जो ॥ जुउ दीठा विण पण एवडो जागे मोह जो, नजरें बांध्या प्रेमनुं कारण शुं कहुं रे जो ॥ १० ॥ प्रभुगर्भथकी हवे अभिग्रह लीधो एह जो, मात पिता जीवतां संमय लेशुं नही रे जो ॥ एम करुणा आणी तुरत हलाव्युं अंग जो, माताने मन ऊपनो हर्ष घणो सही रे जो ॥ ११ ॥ अहो भाग्य अमारुं जाग्युं सहियर आज जो, गर्भ अमा

रो हाल्यो सहु चिंता गई रे जो ॥ एम सुखभर रहे तां पूरण हुवा नव मास जो, ते ऊपर वली साडी सात रयणी थई रे जो ॥ १२ ॥ तव चैत्र तणी शुदि तेरस उत्तरा रिक्ख जो ॥ जनम्या श्रीजिन वीर हुई वधामणी रे जो ॥ सहु धरणी विकसी जगमां थयो प्रकाश जो. सुर नरपति घर वृष्टि करे सोवन तणी रे जो ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ माहरी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ जनम समय श्रीवीरनो जाणी, आवी छप्पन कुमारी रे ॥ जग जीवन जिनजी ॥ जनम महोत्सव करी गीतज गाये, प्रभुजीनी जाउं बलिहारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥ ततक्षण इंद्र सिंहासण हाल्युं, घोष घंटा वजडावी रे ॥ ज० ॥ मलिया कोडि सुरासुर देवा, मेरु पर्वतें आवी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ इंद्रो पंच रूपें प्रभुजीनें, सुरगिरि ऊपर लावे रे ॥ ज० ॥ यत्न करी हियडामां राखे, प्रभुने शीश नमावे रे ॥ज०॥ ॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशला, निरमल नीरें भरिया रे ॥ ज० ॥ नाहानो बालक ए किम सहेशे, इंद्रे संशय धरिया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ अतुलि बल जिन अवधें जोई, मेरु अंगुठें चंप्यो रे ॥ ज० ॥ पृथिवी हाल कल्लोल थई तव, धरणीधर तिहां कंप्यो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिननुं बल देखीनें सुरपति, भक्ति करीने खमावे रे ॥ ज० ॥ चार वृषभनां रूप धरीनें, जिनवरनें नवरावे रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ अमृत अंगुठे

थापीनें, माता पासें मेले रे ॥ ज० ॥ देव स
हु नंदीसर जाए, आवतां पातक ठेले रे ॥ ज० ॥
॥ ७ ॥ हवे प्रजातें सिद्धारथ राजा. अति घणां
उच्छव मंमावे रे ॥ ज० ॥ चकले चकले नाच करावे,
जगतना दाण मंमावे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ बारमे दि
वसें सज्जन संतोषी, नाम दीधुं वर्द्धमान रे ॥ ज० ॥
अनुक्रमें वधता आठ वरषना, हुआ श्रीजगवान रे
॥ ज० ॥ ए ॥ एक दिन प्रजुजी रमवा चाल्या, तेव
तेवडा संघाती रे ॥ ज० ॥ इंद्र मुखें परशंसा
निसुणी, आव्यो सुर मिथ्याती रे ॥ ज० ॥ १० ॥
पन्नगरूपें जाडें वलगो, प्रजुंजीएं नाख्यो काली रे
॥ ज० ॥ ताड समान वली रूप कीधुं, मुठीएं
नाख्यो उठाली रें ॥ ज० ॥ ११ ॥ चरणे नमीनें
खमावे ते सुर, नाम धरे महावीर रे ॥ ज० ॥ जेहवा
तुमनें इंद्रें वखाण्या, तेहवा छो प्रजु धीर रे ॥ ज०
॥ १२ ॥ मात पिता नीशालें जणवा, मूके बालक
जाणी रे ॥ ज० ॥ इंद्र आवी तिहां प्रश्नज पूछे,
प्रजु कहे अर्थ वखाणी रे ॥ ज० ॥ १३॥ जोबन
वय जाणी प्रजु परण्या, नारी जशोदा नामें रे ॥ ज०॥
अठ्यावीशे वरषें प्रजुना, मात पिता स्वर्ग पामे रे
॥ ज० ॥ १४ ॥ जाइजीनो आग्रह जाणी, दोय वरस
घर वासी रे ॥ ज० ॥ ते हवे लोकांतिक सुर बोले,
प्रजु कहो धर्म प्रकाशी रे ॥ ज० १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥तारेमाथेपंचरंगीपाग,सोनारो छोगलोमारुजी॥एदेशी

॥ प्रभु आपी वरसी दान नवुं रवि ऊगते ॥ जिनव रजी ॥ एक कोडीने आठ लाख सोनइया दिन प्रते ॥ जि०॥मागशिरवदि दशमी उत्तरा योगें मन धरी ॥जि० भाईनी अनुमति मागी नें दीक्षा वरी ॥जि०॥१॥ नेत्र निवमथकी चउनाणी प्रभुजी थया ॥ जि० ॥साधिक एक वरसते चीवर धारी प्रभु रह्या ॥ जि० ॥ पछें दी धुं बंभणने बे वार खंभो खंभें करी ॥ जि० ॥ प्रभु वि हार करे एकाकी अभिग्रह चित्त धरी ॥ जि० ॥ २ ॥ सा डा बार वर्षमां घोर परीसह जे सह्या ॥ जि०॥ शूलपा णीने संगम देव गोशालाना कह्या ॥ जि० ॥ चंमको शीने गोवालें खीर रांधी पग ऊपरें ॥ जि० ॥ काने खी ला खोस्या ते दुष्ट सहु प्रभु उद्धरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ लेइ अडदना बाकला चंदन बाला तारियां ॥ जि० ॥ प्रभु पर उपगारी सुख दुख सम धारिया ॥ जि० ॥ छमासी बेनें नव चोमासी कहीएं रे ॥ जि० ॥ अढीमास त्रि मास मोढमास ए बे बे लहीएं रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ षट कीधा बे बे मास प्रभु सोहामणा ॥जि०॥ बार मासनें पख बहोतर ते रलीयामणा ॥ जि० ॥ छठ बसें उंग णत्रीश बार अठम वखाणीयें ॥ जि० ॥ भद्रादिक प्र तिमा दिन बे चौदश जाणीयें ॥जि०॥५॥ साडा बार वरषें तप कीधां विण पाणीयें ॥ जि० ॥ पारणा त्रण सें उंगण पंचास ते जाणीयें ॥जि०॥ तव कर्म खपावी

ध्यान शुकल मन ध्यावता ॥ जि० ॥ वैशाख शु
दि दशमी उत्तरा जोगें सोहावता ॥ जि० ॥ ६ ॥
शालि वृक्ष तलें प्रभु पाम्या केवल नाण रे ॥ जि० ॥
लोकालोक तणां परकाशी थया प्रभु जाण रे ॥ जि० ॥
इंद्रभूति प्रमुख प्रतिबोधी गण र कीध रे ॥ जि० ॥ सं
घ थापना करीनें धर्मनी देशना दीध रे ॥ जि० ॥ ७ ॥
चौद सहस भला अणगार प्रभुनें शोभता ॥ जि० ॥
वली साधवी सहस छत्रीश कही निर्लोभता ॥ जि० ॥
उंगणशाठ सहस एकलाख ते श्रावक संपदा ॥ जि० ॥
तिन लाखनें सहस अढार ते श्राविका संमुदा ॥
जि० ॥ ८ ॥ चौद पूर्वधारी त्रणशें संख्या जाणीयें
॥ जि० ॥ तेरशें उहिनाणी सातशें केवली वखाणी
यें ॥ जि० ॥ लब्धि धारी सातशें विपुलमति वली पां
चशें ॥ जि० ॥ वली चारशें वादी ते प्रभुजी पासें वसे
॥ जि० ॥ ए ॥ शिष्य सातशेंनें वली चौदशें साधवी
सिद्ध थया ॥ जि० ॥ ए प्रभुजीनो परिवार कहेतां
मन गहगह्यां ॥ जि० ॥ प्रभुजीयें त्रीश वरस घरवासें
भोगव्यां ॥ जि० ॥ छद्मस्थ पणामां बार वरस ते जो
गव्यां ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रीश वरस केवल बेंहेंतालीश
वरस संजम पणुं ॥ जि० ॥ संपूरण बहोंत्तेर वरस
आयु श्रीवीर तणुं ॥ जि० ॥ दीवाली दिवसें स्वाती न
क्षत्र सोहंकरु ॥ जि० ॥ मध्यरातें मुक्ति पहोता प्रभु
जी मनोहरु ॥ जि० ॥ ११ ॥ ए पांच कल्याणक चोवी
शमा जिनवर तणां ॥ जि० ॥ ते भणतां गुणतां हर

ख होये मनमां घणा ॥ जि० ॥ जिनशासन नायक त्रिशला सुत चित्त रंजणो ॥ जि० ॥ नवियणनें शिव सुख कारी नवनय नंजणो ॥ जि० ॥ १ २ ॥ कलश ॥ जय वीरजिनवर संघ सुखकर, थुण्यो अति उत्सुक ध री ॥ संवत सत्तर एक्याशीयें, सूरत चोमासुं करी ॥ श्री सहजसुंदर तणो सेवक, नक्ति एणी परे कहे ॥ प्र नुजीशुं पूरण प्रेम पाम्यो, निन्यलान्न वंछित लहे ॥ १ ३ ॥

॥ अथ आदिनाथस्तवनं ॥

॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीयें, जास सुगंधीरे काय ॥ कल्पवृक्ष परें तास इंद्राणी नयण जे, नृंग परें लपटा य ॥ १ ॥ रोग नरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वा द ॥ तेहथी प्रतिहत तेह मानुं कोई नवि करे, जगमां तुमशुं वाद ॥ २ ॥ वगर धोई तुझ निर्मली, काया कं चन वान ॥ नही प्रस्वेद लगार तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुझ मनथकी, तेहमां चित्त न कोइ ॥ रुधिर आमिष थकी रोग गयो तुझ जन्म थी, दूध सहोदर होई ॥ ४ ॥ श्वासोश्वास कमल स मो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आहार निहार चर्म चक्षुधणी, एहवा तुझ अवदात ॥५॥ चार अतिशय मूलथी, उगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी इग्यार चोत्रीश, एम अतिशय समवायंगें प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ प द्मविजय कहे एम समय प्रन्नु पालजो, जिम थाउं अखय अनंग ॥७॥ इति आदिनाथ स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ परमातम परमेसरू, जगदीसर जिनराज ॥ जगबंधव जगनाण बलिहारी तुम तणी, नवजलधिमां रे झिहाज ॥ १ ॥ तारक वारक मोहनो. धारक निज गुण रूद्धि ॥ अतिशय वंत नदंत रूपाली शिव वधू, परणी लही निज सिद्धि ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन अनंत छे, वली तुझ चरण अनंत ॥ इम दानादि अनंत क्षायिकलावें थया, गुण ते अनंतानंत ॥ ३ ॥ बत्रीश वर्ण समान छे, एकज श्लोक मझार ॥ एक वर्ण प्रभु तुझ न माये जगतमां. केम करी थुणीएं नदार ॥ ४ ॥ तुझ गुण कोण गणी शके, जो पण केवल होय ॥ आविर्लावें तुझ सयल गुण माहरे, प्रछन्न लावथी जोय ॥ ५ ॥ श्रीपंचाशरा पासजी, अरज करुं एक तुझ ॥ आविर्लावथी थाय दयाल कृपानिधि, करुणा कीजें जी मुझ ॥ ६ ॥ श्रीजिन उत्तम ताहरी, आशा अधिक माहाराज ॥ पद्मविजय कहे एम लहुं, शिव नगरीनुं, अक्षय अविचल राज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ जिनपति अविनाशी काशी धणी रे, मननी आशा पूरणहार हो ॥ जिनपति चिंतामणि रे ॥ जिनपति अश्वसेन कुल चंदलो रे, वालो वामा मात मल्हार हो ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ तीन भुवन शिर सेहरो रे, सेवे चोशठ सुरपति पाय हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ नाटक नव नव छंदथी रे, सुरवधू मधुर स्वरें गुण

गाय हो ॥ जि०॥ २ ॥ जि० ॥ तुज रूपें रतिपति धसे रे, अंगथी लाजी रह्यो अनंग हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ तुज उपमा कोई जग नहिं रे, तुं छे गुणराशिनो संग हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नागपति धरणींइने रे, करुणा करीने दीधो नवकार हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ शोल सहस अणगारना रे, साहुणी अडत्रीश सहस विस्तार हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ जादवनी नाठी जरा रे, तो हवे अमनें करो सुपसाय हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ धरणीधर पद्मावती रे, सेवे पार्श्वयक्ष वलि पाय हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ पास आश मुज पूरवा रे, साचो शंखेश्वर महाराज हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ श्रीगुरुपद्मविजय तणो रे, मागे रूपविजय शिवराज हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ शांतिजीनुं मुखडुं जोवा लणी जी, मुज मनडुं रे लोलाय ॥ चितडुं जाणे रे कडी मलुं जी, पण प्रभु किम रे मलाय ॥ शां० ॥ १ ॥ दैव न दीधी मुजने पांखडी जी, आवुं हुं किम रे हजूर ॥ पण प्रभु जाणजो वंदना जी, आतमराम सनूर ॥ शां० ॥ २ ॥ गजपुरी नगरीनो राजीयो जी, अचिरा देवी नंदन एह ॥ जिम रे पारेवडुं राखीयुं जी, तिम प्रभु राखजो नेह ॥ शां० ॥ ३ ॥ मस्तकें मुकुट सोहामणो जी, कानें कुंमल श्रीकार ॥ बांहे बाजूबंध बेरखा जी, कंठडे नवसरो हार ॥ शां० ॥ ४ ॥ आज जलें रे दिन

ऊगीयो जी, दूधडे वूठडा मेह ॥ वाचक सहज सुंदर तणो जी, नित्यलाभ प्रभु गुणगेह ॥ शां०॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ सुगुण सोभागी रे के साहेब माहेरा, श्रीचिंतामणि पाश ॥ पूरव पुण्यें रे के दरिसण देखीयें, पूगी मारा मनडानी आश ॥ हुं बलिहारी रे के जाउं तारा नामनी ॥ १ ॥ काशी देशें रे के नगरी वाराणसी, अश्वसेन राया कुलचंद ॥ माता वामा रे के प्रभुजीने जनमीया, दीठडे परमानंद ॥हुं०॥२॥ मूरत सूरत रे के निरखीने हरखीएं, सांभल मोरा स्वाम ॥ वान वधारणरे के.जगमां सुरतरु, तुं मुझ आतम राम ॥हुं०॥ ॥ ३ ॥ लाल सुरंगी रे के अंगी शोभती, सोहे सोहे प्रभुजीने अंग ॥ शिखर बनाव्युं रे के सुंदर कोरणी, दिसे दिसे नव नवा रंग ॥ हुं० ॥ ४ ॥ शिरपर सोहे रे के मुकुट जडावनो, काने कुंमल श्रीकार ॥ केडें कणदोरो रे के बांहे बेरखा, कंठडे नवसरो हार ॥ हुं० ॥ ५ ॥ विधिपक्ष देहरे रे के मूल नायक प्रभु, भुज मंमण जिनराज ॥ भाविक श्रावक रे के भावे भावना, साहेब गरीब निवाज ॥ हुं० ॥ ६ ॥ कोइ कुमतिआ रे के प्रभुने माने नहिं, ते रडवडशे संसार ॥ नव दंमकमांहे रे के गति छे तेहनें, नहिं लीये भवनो पार ॥ हुं० ॥ ७ ॥ सूत्र सिद्धातें रेके जिनप्रतिमा कही, जिन सरखी निरधार ॥ पूजो प्रणमो रे के भवियण भावशुं, जिम पामो शिव सुख

सार ॥ हुं० ॥ ७ ॥ संवत सत्तर रे के वरस चोराणुं ए, रूडो रूडो नाद्रव मास ॥ स्तवना कीधी रे के पर व पंजूसणे, नित्यलान प्रनुजीनो दास ॥ हुं० ॥ए॥

॥ अथ शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ शांति प्रनु वीनति एक मोरी रे, तारी आंखडी कामणगारी ॥ शांति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय रे, राणी अचिरा देवी माय रे ॥ तुं गजपुर नगरी नो राय ॥ शां० ॥ १ ॥ प्रनु सोवन कांति विराजे रे, मुकुटे हीरा मणि ठाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापूर गाजे ॥ शां० ॥ २ ॥ प्रनु चालीश धनुषनी काया रे, नवि जनना दिलमां नाया रे ॥ कांई राज राजे सर राया ॥ शां० ॥ ३ ॥ प्रनु माहारा ठो अंतर जामी रे, करुं वीनति हुं शिर नामी रे ॥ चउद रा जना ठो तुमें स्वामी ॥ शां० ॥ ४ ॥ प्रनु पर्षदा बारे मांहे रे, दीए देशना अधिक उह्याहें रे ॥ प्रनु अंगी एं नेटया उमाहे ॥ शां० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका बहु पुण्यवंता रे, शुन करणी करे महंता रे ॥ शांति नाथना दरिसण करता ॥ शां० ॥ ६ ॥ संवत अढा र अठाणुउ सार रे, मास कल्प कस्यो तिणि वार रे॥ सूरि मुक्तिपदना धार ॥ शां० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि नेटया रे, धन्य नाग्य हमारां ॥ विमलाचल गिरि नेटया रे, धन्य नाग्य हमारां ॥ ए गिरिवरनो महिमा मोहोटो, कहेतां नावे पार ॥ राय

ए रूख समोसस्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वार रे ॥ ध० ॥
॥ १ ॥ मूल नायक श्रीआदि जिनेसर, चउमुख प्र
तिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यशुं पूजो नावें, समकित मूल
आधार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ जाव जगतिशुं प्रजुगुण गावे,
आपणा जनम सधास्या ॥ यात्रा करी जवि जन
शुज जावें, निरय तिर्यंच गति वास्या रे ॥ ध० ॥३॥
दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा ॥
पतित उद्धारण बिरुद तुमारुं, ए तीरथ जग सारा
रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढार व्यासीएं मास आषा
ढे, वदि आठम सोमवारा ॥ प्रजुजीके चरणे प्रता
पके संघमें. खेम रतन प्रजु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तवनं ॥

॥ शीतल जिननी सेवा कीजें, लीजें संपदा सारी
रे ॥ द्रव्य जाव जिन पूजा करतां, नासे दूरगति
नारी रे ॥ १ ॥ संसारी प्राणी देव पूजो, देव पूजो
हित आणी रे ॥ ज्ञान अनंतुं रूप अनंतुं, शक्ति अ
नंती कहीएं रे ॥ लोकालोक तणा परकाशी, तेहनी
आणज वहीएं रे ॥ संसा० ॥ २ ॥ जक्ति प्रजुनी ह
इडे धरतां, जव जव पातक हरीएं रे ॥ एहवो निश्चें
माहारा मनमां, प्रजु तारे तो तरीएं रे ॥ संसा०
॥ ३ ॥ कर जोडी मद मच्छर मूकी, प्रजुजीने शिर
नामूं रे ॥ अनुजव पदनी लालच अमनें, ते जिनव
रथी पामूं रे ॥ संसा० ॥ ४ ॥ सेवक ऊपर करुणा
करजो, वीनतडी चित्त धारी रे ॥ कहे नित्यलाज प्र

जुने प्रणमी, देजो सेव तुमारी रे ॥ संसा० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लाखीणो सोहावे जिनजी, फूलांनो गले हार॥ आणीने सोहावे जिनजी, अंगीआं जडाव ॥ मोरा पासजी हो लाल, संकट छोडाव स्वामी विघ्न निवार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पदमणी चाली पूजवाने, करी शोल सिणगार ॥ पाए घमके घूघराने, नेउरनो झणकार ॥ मोरा० ॥ २ ॥ मेघमाली देवताने, कीधो घमघोर ॥ गाजे गगन वीजलीने, पाणी वरषे जोर ॥ मो० ॥ ३ ॥ ध्यानथकी नवी चूका, प्रभु पास जिणंद ॥ देही कष्ट निवारवाने, आव्या छे धरणिंद ॥ मो० ॥ ४ ॥ गोडी पारस पूजो जिम, होए रंग रेल ॥ देखी मूर्त्ति पासजीनी, जाणीएं मोहन वेल ॥ मो० ॥ ५ ॥ ठमक ठमक चालतीने, घूघरडी घमकार ॥ ताताथेई ताल वाजे, देवतानी चाल ॥ मो० ॥ ६ ॥ केशर चंदन घशी घणाने, कस्तूरी घनसार ॥ जे नर भावें पूजशेने, उतारे भवपार ॥ मो० ॥ ७ ॥ तुंहीं मारो साहेबो ने, तुंहीं जीवन प्राण ॥ तुमने माने देवताने, मोहोटा राणो राण ॥ मो० ॥ ८ ॥ पंन्डितमांहे शिरोमणिने, कनक विमल गुरु हीर ॥ चरण कमल सेवे सदाने, केसर कवियण धीर ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ दोहा ॥ बे कर जोडी वीनवुं, सुणो जिनवर श्रीशां

ति ॥ पाप खमावुं आपणां, जे कीधां एकांत ॥१॥ ढा
ल ॥ एकांत कहुं सुणो स्वामी, हुंतो चरण तुमारा पामी
॥ मुज मांहे कपट छे बहुलां, तेतो सुणतां मन थाये
फहुलां ॥२॥ परछिद्र प्रगट में कीधां,॥ पागंतरे ॥ प्रछन्न
प्रगट में कीधां, कूडां आल में परने दीधां॥ तेथी छोडावो
मुज तात, शांतिनाथ सुणो मोरी वात ॥ ३ ॥दोहा॥
नव अनंत नमी आवियो, चरण तुमारे देव ॥ जि
म राख्युं पारेवडुं, तिम राखो मुज हेव ॥ ४ ॥
॥ ढाल ॥ हवे एकेंद्रियादिक जीव, दुहव्या करता
अति रीव ॥ तस लाख चोराशी नेद, राग द्वेष प
माड्या खेद ॥ ५ ॥ मृषा बोलंतां नावी लाज, तो
किम सरशे आतम काज ॥ चोरी इण नव परनव की
धी, पररमणीशुं दृष्टिज दीधी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मधु
बिंदुसम विषय सुख, डुख तो मेरु समान ॥ मान
वि मन्न चिंते•नही, करतो क्रोड अज्ञान ॥ ७ ॥
॥ ढाल ॥ अज्ञान पणे ऋद्धि मेली, व्रतवाडि नली
परें नेली ॥ हवे सार करो प्रनु मोरी, रात दिवस से
वा करुं तोरी ॥ ८ ॥ बहु गुनही बुं श्रीशांति, मु
ज टालो नवनी च्रांति ॥ हुंतो मागुं बुं अविचल रा
ज, इम पनणे श्रीजिनराज ॥ ९ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ म्हारुं मन मोह्युं रे श्रीसिद्धाचलें रे, देखीने ह
रषित थाय ॥ विधिशुं कीजें रे यात्रा एहनी रे, नव
नवनां डुःख जाय ॥ मा० ॥ १ ॥ पांचमे आरे रे पा

वन कारणे रे, ए समुं तीर्थ न कोय ॥ मोहोटो म हिमा रे महियल एहनो रे, आ जरतें इहां जोय ॥ ॥ मा० ॥ २ ॥ इणे गिरि आव्या रे जिनवर गणधरा रे, सीधा साधु अनंत ॥ कठिन करम पण इण गिरि फरसतां रे, होये कर्मनी शांत ॥ मा० ॥ ३ ॥ जैन धरमनो जाचो जाणीयें रे, मानव तीर्थ ए थंज॥ सुर नर किन्नर नृप विद्याधरा रे, करता नाटारंज ॥ ॥ मा० ॥ ४ ॥ धन धन दाहाडो रे धन धन ए घडी रे, धरीयें हृदय मझार ॥ ज्ञानविमल प्रजु एहना गुण घणा रे, कहेतां नावे पार ॥ मा० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ संजवजिन स्तवनं ॥

॥ हुं तो जाउंरे जिन दरबार, प्रजु मुख जोवाने॥ प्रजु आपे रे समकित सार, शिव सुख होवाने ॥१॥ साथें जीधां रे निरमल नीर, प्रजुने पखालवा रे ॥ शुद्ध कीधां रे प्रजुनां शरीर, जव दुःख टालवा रे ॥ ॥ २ ॥ घसी घसी रे केशर कपूर, नवे अंगें पूजियें ॥ हसी हसी रे आणंद पूर, शिव सुख लीजियें ॥३॥ एहवे आवी रे अमरनी नार, प्रजुजीने वीनवे ॥ साथें लावी रे फूलडानो हार, प्रजुने कंठें ठवे ॥ ४ ॥ आगल नाचे रे थइ थइ कार, सहु टोले मली ॥ दिल साचेरे करी शणगार, प्रणमे लली लली ॥ ५ ॥ हाथ जोडी रे प्रजुजीनी पास, जक्ति घणी करे ॥ मान मोडी रे गावे जास, प्रजु मनमां धरे ॥ ६ ॥ आलो आलो रे मुगतिनो वास, प्रजु करुणा करी ॥ टालो टालो रे ज

वनो पास, विनति चित्त धरी ॥ ७ ॥ सेनाराणीना नंदन देव, गुणरत्नाकरू ॥ एवो जाणी रे कीधी में सेव, जयो जयो जिनवरू ॥ ८ ॥ सोहे सोहे रे सूरत मकार, विधिपक्ष देहरे ॥ मोहे मोहे रे बहु नर नार, देखी नयणां ठरे ॥ ९ ॥ नामें नामें रे संभव नाथ, जिन रलियामणां ॥ पामे पामे रे सुख नित्य लाभ, लेहुं नित्य भामणां ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टापदगिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापद अरिहंत जी, माहारा वालाजी रे ॥ आदेशर अवधार, नमीयें नेहशुं ॥ मारा० ॥ दश हजार मुणिंदशुं ॥ मारा० ॥ वस्या शिव वधू सार ॥ नमी० ॥ १ ॥ भरतभूप भावें कस्या ॥ मारा० ॥ चिहुं मुख चैत्य उदार ॥ नमी० ॥ जिनवर चोवीशे जिहां ॥ मारा० ॥ थाप्या अति मनोहार ॥ नमी० ॥ ॥ २ ॥ वर्ण प्रमाणें विराजता ॥ मारा० ॥ लंछन नें अलंकार ॥ नमी० ॥ सम नासाग्र शोभता ॥ ॥ मारा० ॥ चिहुं दिशि चार प्रकार ॥ नमी० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मारा० ॥ नाटक करतां विचाल ॥ नमी० ॥ त्रूटी तांत तिहां कणे ॥ मारा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ नमी० ॥ ४ ॥ करी वजावी तिणे समे ॥ मारा० ॥ पण नवि तोड्युं ते तान ॥ नमी० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयुं ॥ मारा० ॥ अद्भुत ध्यान सुगान ॥ नमी० ॥ ५ ॥ निज लब्धें गौतम गुरु ॥ मारा० ॥ करवा आव्या ते यात्र ॥नमी०॥

जगचिंतामणि तिणे कस्यो ॥ मारा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ नमी० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटको ॥ मारा० ॥ तिण जव पामीजें सिद्धि ॥ नमी० ॥ निज लब्धें जिनवर नमी ॥ मारा० ॥ पामे शाश्वत ऋद्धि ॥ नमी० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहनां ॥ मारा० ॥ केतां करूं रे वखाण ॥ नमी० ॥ वीरें स्वयंमुख वरणव्यो ॥ मारा० ॥ नमता कोड कल्याण ॥ नमी० ॥ ८ ॥ इति अष्टापद स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशिदीस ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतमनामे गिरुअरि चडे, मनवंछितहेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ वंकडा, जस नामें नावे ढूकडा ॥ नूत प्रेत नवि मंम्हे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतमनामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतमनामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनवंछित कापड तंबोल ॥ घरशुं घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल नाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पोहोंचे वंछित कोड ॥ म

ह्यिल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगति मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें, श्री जिन शासन सार ॥ निश्चें श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्यां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुटमणि, सदगुरु जापित सार ॥ सो नविया मन शुद्धशुं, नित जपीएं नवकार ॥४॥ छंद हाटकी ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरेशर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिव नाम कुमरनें, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारे, पामे नवनो पार ॥ सो नवियां नत्तें चोखें चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वड शाखा शिंके बेसि, हेठल कुंम हुताश ॥ तस्करनें मंत्र समर्प्यो श्रावकें, ऊम्यो ते आकाश ॥ विधिरीत जप्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरां कारण राय महाबल, व्यंतर डुष्ट

विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्र
तिबोध ॥ नव लाख जपंतां थाए जिनवर, इस्यो छे
अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर
पासें, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते राजसिंह पृ
थिवीपति, पाम्यो परिगल रुद्ध ॥ ए मंत्रथकी अम
रापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥
संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाल ॥ दीठो
श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाल ॥ संभ
लाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार
॥ सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामी
प्रिय संयोग ॥ इण ध्यानें कष्ट टल्युं उंबरनुं, रक्त
पित्तनो रोग ॥ निश्चेंशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म
तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण भुजं
गम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रभावें
हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें
पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥
गयणांगण जाति राखी ग्रहिने, पाडी बाण प्रहार ॥
पद पंच सुणंतां पांडुपति वर, ते थइ कुंता नार ॥
ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, भव दुःख भंजण
हार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबलने संबल कादव काढ्यां,
शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देव
लोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति
वसुधातलें, विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥
आगें चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नव

कार तणी कोइ आदि न जाणे, इम नांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, समस्यां संपति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृतकर्म कठोर ॥ पुंमरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सद्गुरुने सन्मुख विधि समरंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिका रोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी रुद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवार्यां, सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सद्याय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित्त ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ ॥ १७ ॥ कलश छप्पय ॥ नित जपीयें नवकार, सारसंपति सुखदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य नणीजें ॥ श्री उवज्ञाय सुसाधु, पंच परमेष्ठि थुणीजें ॥ नवकार सार संसार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां, विविध रुद्धि वंछित लहे ॥ १८ ॥ इति नवकार छंद ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियें ए ॥ प्रनातें उठी मंगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजीयें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी नरतनी बेहेनडी ए ॥ घट घट

व्यापक अकूर रूपें, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥२॥ बाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें रूषज सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिजुवनमांहि, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी, शील वती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रति लाज्या, केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्र सेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नम वल्लजा ए ॥ जोबन वेशें कामनें जीत्यो, संयम लेइ देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी डुपदतनया वखाणीएं ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां, शियल महिमा तस जाणीएं ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंडिका ए ॥ शियल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशं बिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरजुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शियलें न काची, राची नही विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीय लथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवा थकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुजद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शियल अखंमित, शीवा शिवपदगामिनी ए ॥ जेहने नामें

निर्मल थइयें, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांडुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांडव माता दशे दशारनी,बेहिन पतिव्रता पदमिनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रतधारिणी, त्रिविधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीयें ए ॥ १४ ॥ निषिधा नगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पडतां शीलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्त्ती जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभा वती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें भांखी शास्त्रें साखी, उद यरतन भांखे मुदा ए ॥ वाहाणुं वातां जे नर भणशे, ते लेहेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति शोलसतीनो छंद ॥

॥ अथ चार मंगल ॥

॥ सिद्धार्थ भूपति शोहे क्षत्रियकुंडें, तस घेर त्रि शला कामिनी ए ॥ गजवर गामिनी पोढीय भामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जामिनी मध्ये शोभतां रे, सुपन देखे बाल ॥ मयगल वृष भने केसरी, कमला कुसुमनी माल ॥ २ ॥ इंडु दिन कर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सर जल निधि उत्तम, अमरविमान अनूप ॥ ३ ॥ रत्ननो अंबार उज्ज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मं गलकारी माहा, करत जग उद्योत ॥ ४ ॥ चउद सु पन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मं

गल पेहेलुं बोलीएं, श्री वीर जगदाधार ॥ ५ ॥ मगध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेसरू ए ॥ धणवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुनूति विप्र मनोहरु ए ॥ ६ ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी रे, पृथिवी नामें नार ॥ इंद्रनूति आदेय ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ ७ ॥ यज्ञकर्म तेणें आदर्यु, बहु विप्र ने समुदाय ॥ तिणे समे तिहां समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ ८ ॥ उपदेश तेहनो सांनली, लीधो संजम नार ॥ अगीयार गणधर थापीया, श्री वीरें तेणी वार ॥ ए ॥ इंद्रनूति गुरुनक्तें थयो, महा लब्धिनो नंमार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ १० ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरें, सकमाल नामें मंत्रीसरू ए ॥ लाबलदे तस नारी अनुपम, शीलवती बहुसुखकरू ए ॥ ११ ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शील वंतमां शिरोमणि, थूलिनद्र जग विख्यात ॥ १२ ॥ कर्मवशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षज बार ॥ नोग नली पेरें नोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ १३ ॥ शुद्ध संयम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासें रह्या निश्चल, मग्या नहीं लवलेश ॥ १४ ॥ शुद्ध शियल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीएं, श्री थूलिनद्र अणगार ॥ १५ ॥ हेम मणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजें फगे ए ॥ सुरपति निर्मित त्रण

गढ शोजित, मध्यें सिंहासनें जगमगे ए॥ १६ ॥ त्रुटक ॥ जगमगे जिन सिंहासनें ए, वाजित्र कोडा कोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बिहुं कर जोड ॥ १७ ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शोजे श्री जगवंत॥ १७ ॥ सुर नर किन्नर मानवी, बेठी ते पर्षदा बार ॥ उपदेश दे अरिहंत जी, धर्मना चार प्रकार ॥ १ए ॥ दान शील तप जावना रे, टाले सघलां कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्री जिनधर्म ॥ २० ॥ ए चार मंगल गावशे जे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि मंगल पामशे, उदयरत्न जांखे एम ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवनं लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे रुषज समोसस्या, जला गुण जस्या रे ॥ सीधा साधु अनंत ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ त्रण कल्याणिक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरो रे॥ जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अतिजलो,त्रिजुवन तिलो रे ॥ विमल वसहि वस्तुपाल ॥ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलीयामणो रे ॥ सीधा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सीधा श्री वासुपूज्य ॥ ती०॥ ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावा पुरी, रुद्धें जरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, डुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥

विकानेरज वंदीयें, चिरनंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंनणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजावरो, अमीफरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ तारंगे अजित जुहारियें, दुःख वारियें रे ॥ थराधें श्रीमहावीर ॥ ती०॥ नवा रे नगरनां देहरां, बावन जलां रे ॥ शा रायसी वर्द्धमानज राव्यां बिंब ॥ ती० ॥ ७ ॥ श्रीनाकुलाइ जादवो, गोडि स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमलें चार चार ॥ ती० ॥ ८ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम॥ ती०॥ए॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ आंखडीयें रे में आज शेत्रुंजो दीठो रे, सवा लाख टकानो दाहाडो रे, लागे मुने मीठो रे ॥ ए आंकणी ॥ सफल थयो रे महारा मननो उमाहो, वाहला मारा जवनो सांसो जांग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रजुजीने लाग्यो रे ॥ शेत्रुंजो दीठो रे ॥ १ ॥ मानव जवनो लाहो लीजें ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजें रे ॥ सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा दीजें रे ॥ शेत्रुं० ॥ २ ॥ दुधडे पखालीने केशरें घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीस

र पूज्या रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां, पाप में वासी धूज्या रे ॥ शेत्रुं० ॥ ३ ॥ श्री मुख सौधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीर जिणंद इम बोले रे ॥ त्रण्य भुवनमां तीरथ महोटुं, नहिं कोइ शेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ॥ ४ ॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल काढी, सूरज कुंडमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्धक्षेत्रें ॥ वा० ॥ साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ महोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ॥ ६ ॥ नाभिराया सुत नयणें जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठा रे ॥ उदय रतन कहे आज म्हारे पोतें, श्री आदीसर तूठा रे ॥ ॥ शेत्रुं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ देशी लालननी ॥

॥ सिद्धगिरि ध्यावो भविका, सिद्धगिरि ध्यावो ॥ घेर बेठां पण बहु फल पावो भविका, बहु फल पावो ॥ ए आंकणी ॥ नंदीसर जात्रायें जे फल होवे, तेथी बमणेरुं फल पुंडगिरि होवे ॥ भ० ॥ पुं० ॥ १ ॥ तिगणुं रुचकगिरि चोगणुं गजदंता, तेथी बमणेरुं फल जंबु महंता ॥ भ० ॥ जं० ॥ खटगणुं धातकी चैत्य जूहारे, छत्रीश गणेरुं फल पुस्कल विहारें ॥ भ० ॥ पु० ॥ ॥ २ ॥ तेथी तेरसगणुं फल मेरु चैत्य जूहारे, सहस गणेरुं फल समेत शिखरें ॥ भ० ॥ स० ॥ लाख गणे

रुं फल अंजन गिरि जूहारें, दश लाख गणेरुं फल अष्टापद गिरनारें ॥ ज० ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोडि गणेरुं फल श्री सिद्धाचल नेटे, जेम रे अनादिनां डुरित उमेटें ॥ ज० ॥ ऊ० ॥ जाव अनंतें अनंत फल पावे, ज्ञान विमल सूरि इम गुण गावे ॥ ज० ॥ इ० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री राणकपुर रलीयामणुं रे लाल ॥ श्री आ दीसर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, नीरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चउ विस मंमप चिहुं दिशें रे लाल, चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरुं रे लाल, समोवड नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपती रे लाल, मांमयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहार्यां जोयरां रे लाल, सूतां उठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुं रे लाल, मोहोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगावीयां रे लाल, धन धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतर वसही खांतशुं रे लाल, निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजां वली रे लाल, जोतां पातक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणी रे लाल, दूरें गयुं डुःख दंद ॥ म० ॥ ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोलने बोंतरे रे लाल, माग

शिर मास मझार ॥ म० ॥ राणकपुरें यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥
॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निजगुरु पाय ॥ आछे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्ध चक्र आधार, नवि उतरे नव पार ॥ आ० ॥ ते जणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समस्यां संकट उपशमे जी ॥ लहियें वंछित जोग, पामी सवि सं जोग ॥आ०॥ सुरनर आवी बहु नमे जी ॥२॥ कष्ट निवारे एह, रोगरहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणा सुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥ आ०.॥ आपे मंगलमालने जी ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥ ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार ॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गणणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मलपणे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सान्निध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें जणे जी ॥ ॥ ५ ॥ ए सेवो निशि दीस, कहीयें वीशवा वीश ॥ ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न, एहनां कीजें जत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेसर जक्ष,

होजो मुऊ परतक्ष ॥ आ० ॥ हुं किंकर बुं ताहरो जी ॥ पाम्यो तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करुं बुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मीविजय गुरु राय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संनवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांजलो रे, संनव अरज हमारी ॥ नवोनव हुं नम्यो रे, न लही सेवा तुमारी ॥ नरय निगोदमां रे, तिहां हुं बहु नव नमीयो ॥ तुम विना डुख सह्यां रे, अहोनिशि क्रोधें धमधमियो ॥ सा०॥ ॥ १ ॥ इंडियवश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सुसें ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशें ॥ व्रत चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तिहां में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाल्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे, में नवि संयम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परें रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचें रे, नीरस पिंम उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नर नव दोहिलो रे, पामी मोह वश पडियो ॥ परस्त्री देखिने रे, मुऊ मन तिहां जइ अडियो ॥ काम न को सर्यां रे, पापें पिंम में नरीउं ॥ सुध बुद्ध नवि रही रे, तेणें नवि आतम तरीउं ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे,

में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली तो नवि रही राखी ॥ जे जन अभिलखे रे, ते तो तेहथी नासे ॥ तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥सा० ॥ ५ ॥ धन्य धन्य ते नरा रे, एहनो मोह विछोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहनें धर्ममां जोडी ॥ अनक्ष्य ते में नख्यां रे, रात्रिनोजन कीधां ॥ व्रत ब नवि पालियां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत नव हुं नम्यो रे, नमतां सा हिब मलियो ॥ तुम विना कोण दीये रे, बोध रयण मुऊ बलियो ॥ संनव आपजो रे, चरण कमल तुम्ह सेवा ॥ नय एम वीनवे रे, सुणजो देवाधि देवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाल्हाजीनी वाटडी अमें जोतां रे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी रे, गौतम प्रमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही वीरजी जयकारी रे ॥ ए आंकणी ॥ अंतरंग रिपुने त्रासे रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लह्युं केवल नाण उन्नासें ॥ २ ॥ स० ॥ कटिलंकें वाद वदाय रे, पण जिनसाथें न घटाय रे, तेणें हरिलंछन प्रज्ञु पाय ॥ ३ ॥ स० ॥ सवि सुरवहू थेइथेइ कारा रे, जलपंकजनी परें न्यारा रे, तजी तृष्णा नोग विकारा ॥ ४ ॥ स० ॥ प्रज्ञुदेशना अमृत धारा रे, जिनधर्मे विषे रथकारा रे, जेणें तार्या मेघकुमारा ॥ ५ ॥ स० ॥ गौतमने

केवल आली रे, वय्या स्वातियें शिव वरमाली रे, करे उत्तम लोक दीवाली ॥ ६ ॥ स० ॥ अंतरंग अलब निवारी रे, शुन्न सज्जनने उपगारी रे, कहे वीर विज्ञु हितकारी ॥ ७ ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्ध नगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोन्ना रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥ सिद्ध जगत शिर शोन्नता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी लीलानी लेहेरमां, सुखिया छे शिव गाम ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ महानंद अमृतपद नमो, सिद्धि कैवल्य नाम ॥ अपुनर्न्नव ब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥ ॥ सि० ॥ २ ॥ संश्रेय निःश्रेय अक्षरा, डुःख सम स्तनीहाण ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष मुक्ति निर वाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद लह्युं, जोतां जगतना गव ॥ निज निजरूपें रे जूजूआं, वीत्यां कर्म ते आव ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु अवगाहना, नामें विकसे वदन्न ॥ श्री शुन्नवीरने वंदतां, रहियें सुखमां मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंन्न ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनि सरसति, प्रेमें प्रणमूं पाय ॥ १ ॥ त्रिन्नुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंन्नीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि प रणाम ॥ नविक जीवना हित नणी, पूछे गौतम

स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, जांखे श्री ज गवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी ला ख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिरावियें, पापस्थान अ ढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आ चार ॥ ६ ॥ शुजकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन आ ण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुजगति आराधन तणा, ए ले दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जिम पामो जवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आ चार ॥ एह तणा इह जव परजवना, आलोइयें अ तिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी ॥ वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु उ लवीयें नहिं गुरु विनयें, कालें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधां, जणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्राणी ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव परजव वलिय जवोजव, मिछाडुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि की

जें, नवि परमत अभिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिह रजो, फलसंदेह म राख रे ॥५॥प्राणी॥स०॥ मूढपणुं छंमो परशंसा, गुणवंतने आदरियें ॥ साहामीनें धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीयें रे ॥ ६ ॥ प्राणी ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्राणी ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खंड्युं जेह ॥ आ भव०॥मिच्छा०॥ ८॥प्राणी॥चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ए आंकणी॥पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय॥ साधुतणे धर्मे परमादें, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ ॥ ए ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोल्युं जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारे भेदें तप नवि कीधुं, छते योगें निज शक्तें ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं भगतें रे ॥ १२ ॥ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणि परें, विविध विराध्या जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा०॥ १३ ॥ ॥ प्राणी ॥ चा०॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अतिचार आलोइयें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीनें, पाप मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरु पसाय ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनसपति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण आरंभ, खेत्र जे खेडियां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टांकां नोंयरां ॥ मेडी माल चणावीया ए ॥ लींपण घुंपण काज, इणी परें परपरें ॥ पृथिवी काय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अपकाय ॥ ठोती धोती करी दूहव्यां ए ॥ नाठीगर कुंनार, लोह सोवनगरा ॥ नाडनुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ इणी परें कर्मादान, परें परें केलवां ॥ तेउ वाउ विराधिया ए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावि वनस्पति ॥ पान फूल फल चूंटीयां ए ॥ पोहोंक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ छुंद्यां छेद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीनें एरंम, घाणी घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुमांहि, पीली शेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंड्रिय जीव, हण्या हणावीया ॥ हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आनव परनव जेह, वलिय नवोनवें ॥ ते मुझ मिछामि डुक्कडुं ए ॥ ७ ॥ कृमी सरमीयां कीडा, गाम्रर गंमोला ॥ इयल पूरा अलसीयां ए ॥ वाला जलो चूडेल, विचलित रसतणा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बे इंड्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांच

ड कीडी कुंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहीयां घीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोडा धनेडीयां ए ॥ एम ते इंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर डांस, मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलिया वडा ए ॥ ढी कण विंछु तीड, नमर नमरीयो ॥ कोंता बग खड मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दू हव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पाशमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ १३॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे नवें जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोन नय हासथी जी, बोल्यां वचन अ सत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछामिदुक्कड आज ॥ तुम साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ मारूं काज रे ॥ जिनजी॥ ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तीर्यंचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विमंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी मम ता करी जी, नव नव मेली आथ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणीनोजन जे कस्यां जी, कीधां न क्ष्य अनक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप क स्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ वी

सारियां जी,वली मांग्यां पच्चरकाण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥जि०॥५॥मि०॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधन तणो जी. ए पहेलो अधिकार रे ॥जि०॥६॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संभारीयें ॥ सा० ॥ हियडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धें करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा०॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजें जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें ॥ सा० ॥ एह ज धर्मनो सार तो ॥ शिगवति आराधन तणो ॥सा०॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां न दीजें आल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥ सा० ॥ माया

मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावि यें ॥ सा० ॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिवगति आराधन तणी ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे निसुणो इहां आवीयाए ॥ ए देशी ॥

॥ जनम जरा मरणें करी ए, ए संसार असार तो ॥ कर्यां कर्म सहु अनुजवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध जगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ जव परजव जे कर्यां ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें ते निंदीयें ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तावियां ए, जे जांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घंटी हल हथीयार तो ॥ जव जव मेली मूकीयां ए, करता जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीनें पोषिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पछी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ जव परजव जे कर्यां ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कर्यां परिहार तो ॥ शिवग

ति आराधन तणो ए, ए छहो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल छही ॥

॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन वर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवझायनें, दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ नाव नलो मन आणीयें, चित्त आणी ठाम ॥ समता नावें नावीयें, ए आत मराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, नोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठार उपर ते लीपणुं, झांखर चित्राम ॥ध०॥८॥नाव नली परें नावीयें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ए॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करियें संलेषण सार ॥ अणसण आदरीयें, पच्चखी चार आहार ॥ ललुता सवि मूकी, छांमी ममता अंग ॥ ए आतम खेले, समता

ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीउ रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी पामीजें, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धना शालिन्नद्द, खंधो मेघकुमार ॥ अणसण आराधी, पाम्या नवनो पार । शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार । ३ ॥ दशमे अधिकारें, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाए, डुरगति दोष विकार ॥ सुपरें ए समरो, चउद पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां, जो पामे नवकार ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न को संसार ॥ इह नव ने परनवें, सुख संपति दातार ॥ ५ ॥ जुउ नीलने नीलडी, राजा राणी थाय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महा राय ॥ राणी रत्नवती बेहु, पाम्यां वे सुरनोग ॥ एक नवथी लेशे, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट थइ फुलमाल ॥ शिवकुमरें योगी, सोवन पुरुसो कीध ॥ इम एणे मंत्रें, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारें, वीर जिणेसर नांख्यो ॥ आराधन केरो, विधि जिणें चितमां राख्यो ॥ तिणें पाप पखाली, नव नय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो नवि नावचुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनीतलें तुमें अवतर्या ए, करवा अम उपकार ॥१॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥ में अपराध कर्या घणा ए, केहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणे आव्या भणी ए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो किम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज० ॥ कर्म अलूजण आकरां ए, जनम मरण जंजाल तो ॥ हुं छुं एहथी उभग्यो ए, छोडावो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठां दुख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्यो पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ भव भव विनय तुमारडो ए, भाव भगति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीयें ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थुणतां, अधिक मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव सुरिंद पटधर, तीर्थ जंगम इणि जगें ॥ तप गछपति श्री विजयप्रभ सूरि, सूरितेजें झगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय सुर गुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक विनयविजयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगण त्रीशें, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी विजय

कारण, कियो गुणअभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरजव आरा धन सिद्धि साधन, सुकृत लीलविलास ए ॥ निर्जरा हेतें तवन रचियुं,नामें पुण्य प्रकाश ए ॥५॥ इति श्री आराधना रूप पुण्य प्रकाशस्तवनं संपूर्ण ॥ श्लोक १२७

॥ अथ अष्टापद तीर्थ स्तवन ॥

॥ तीरथ अष्टापद नित नमीयें, जिहां जिनवर चोवीश जी ॥ मणिमय बिंब जराव्यां जरतें, ते वंदूं नित दीस जी ॥ ती० ॥ १ ॥ निजनिज देह प्रमाणें मूरति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अठ दश दोय इणि परें, जिनचोवीशे सोहे जी ॥ती०॥२॥ बत्रीश कोशनो पर्वत उंचो, आठ तिहां पावडीयो जी ॥ एकेकी चउकोश प्रमाणें, नवि जाये कोइ चडीयो जी ॥ ती०॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें, वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तवन त्यां कीधुं, पूगी मननी जगीश जी ॥ ती० ॥ ४ ॥ तद्भवमोक्षगामी जे मानव, ए तीरथने वांदे जी॥ जंघा विद्याचारण वांदे, तेतो लब्धिप्रसादें जी॥ ती०॥ ५॥ शाठ सहस सुत सगर चक्रीना, ए तीरथ सेवंता जी ॥ बारमा देवलोकें ते पोहोता, लेहेशे सुख अनंतां जी ॥ ती० ॥ ६ ॥ कंचनमय प्रासाद इहां छे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार छे आवश्यकसूत्रें, जो ज्यो दइ उपयोग जी ॥ ती० ॥ ७ ॥ जिहां आदीसर मुक्तें पोहोता, अविचल तीरथ एह

जी ॥ जसवंतसागर शिष्य पयंपे, जिनेंद्र वधते नेह जी ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति अष्टापद स्तवनं ॥

॥ अथ समवसरणनुं स्तवन ॥

॥ एक वार गोकुल आवजो गोविंदजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक वार वछ देश आवजो, जिणंद जी, एक वार वछदेश आवजो ॥ दरिसण नयन ठेराव जो ॥ जिणंद जी, एकवार वछ देश आवजो ॥ जयंतीने पाय नमाव जो ॥जि०॥एक०॥ वली समोसरण देखावजो ॥ जि०॥ एक० ॥ ए आंकणी ॥ समोवसरण शोभा जे दीठी, भुण भुण सांभरी आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ नूतन सुगंधी जल वरसावे, फूलना पगर भरावशे ॥ जि०॥ ॥ एक० ॥ १ ॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडा नी शोभा रचावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रूपानो गढने कनक कोशीशां, वच्चें रतन जडावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ २ ॥ रतनगढें मणिनां कोशीशां, झगमग ज्योति दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चारे डुवारें एंशी हजा रा, शिव सोपान चढावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ३ ॥ देव चार कर आयुध धारी, द्वारें खडा करे चाकरी ॥ जि०॥ एक० ॥ दूर पासथी एक समे वंदे, भरं तीने लघु ठोकरी ॥ जि० ॥ एक०॥ ४ ॥ सहस्स योजन ध्वज चार ते उंचा, तोरण चउ अठ वावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ मंगल आठने धूप घटाली, फूलमाल कर पूतली ॥ जि० ॥ एक० ॥ ५ ॥ आठ सुरी बीजे गढ द्वारें, रत्न गढें चउ देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ जाति

वैर ठंमी पशु पंखी, तुज पद कमलने सेवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ ६ ॥ पंचवरणमयी जल थल केरां, फूल अमर वरसावता ॥ जि० ॥ एक० ॥ परखदा सात ते ऊपर बेसे, मुनि नर नारी देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ ७ ॥ आवश्यक टीकायें पण उत्तर, थाये न कुसुम किलामणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ साधवी वैमानिकनी देवी, उनी सुणे दोय चूरणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ ८ ॥ बत्रीश धनुष अशोक ते उंचो, चामर छत्र धरावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चउमुख रयण सिंहासन बेसी, अमृत वयण सुणावजो ॥ जि०॥ एक०॥ ए ॥ धर्मचक्र नामंमल तेजें, मिथ्या तिमिर हरावजो॥ जि० ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जब अमें सुणीयें, तव देवछंदें सुहावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १० ॥ देवतासुरि कवि साचुं बोले, जिहां जाशो तिहां आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रंजादिक अपछरनी टोली, वंदी नमी गुण गावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ ११ ॥ अंतरयामी दूरें विचरो, मुऊचित्त लीनुं ज्ञानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ हृदयथकी जो दूरें जाउ, तो अमें कौतुक मानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ १२ ॥ सुलसादिक नव जिनपद दीधुं, अमशुं अंतर एवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वीतराग जो नाम धरावो, सहुने सरिखा तेवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १३ ॥ ज्ञाननजरथी वात विचारो, रागदशा अम रूअडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ सेवक रागें साहेब रीजो, धन धन त्रिशला मावडी ॥ जि० ॥ एक०

॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति मघला तूसे, पण अमें आमण दूमणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीशुनवीर हजूरें रहेतां, उब्रव रंग वधामणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ ॥ १५ ॥ इति श्री समवसरण स्तवनं ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवनं ॥ रुपैय्यो ते आलुं रोकडो, माहारा वाहालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥मनडुं ते माहारुं मोकले,महारा वाहालाजी रे ॥ ससिहर साथें संदेश, जइने कहेजो महारा वालाजी रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना नक्तने तारवा ॥ मा० ॥ एकवार आवोने आ देश ॥ जइ०॥ १ ॥ प्रजुजी वसो पुष्कलावती ॥ मा० ॥ महाविदेह खेत्र मफार ॥ जइ० ॥ पुरी राजे पुण्डरिगिणी ॥ मा० ॥ जिहां प्रजुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पडिबोहो बहु प्राणीने ॥ मा० ॥ तेहनो पामे कुण ताग ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाणे ऊमी मलुं ॥ मा० ॥ पण पोतें नही पांख ॥ जइ०॥ जगवंत तुम जोवा जणी ॥ मा० ॥ अलजो धरे ठे बेहु आंख ॥ जइ० ॥ ४ ॥ डुर्गम महोटा डूंगरा ॥ मा० ॥ नदी नालानो नही पार ॥ जइ० ॥ घांटीनी आंटी घणी ॥ मा० ॥ अटवी पंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोडी सोनैये काशीदो ॥ मा० ॥ करनारो नहीं कोय ॥ जइ० ॥ कागलीयो केम मोकलुं ॥ मा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ मा० ॥ लाख गमे अ

निलाष ॥ जइ० ॥ तमें लेजामां ते लह्यो ॥ मा० ॥ समय पूरे छे साख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूपना ॥ मा० ॥ जगमां तुमें छो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगें शुं जणाविये ॥ मा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ जइ० ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी वीनति ॥ मा० ॥ सखिहर कह्या संदेश ॥ जइ० ॥ मानी लेजो माहरी ॥ मा० ॥ वसतां दूर विदेश ॥ज०॥ए॥

॥ अथ श्री युगमधर जिन स्तवनं ॥

॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ श्रीयुगमंधरने केजो, के दधिसुत वीनतडी सुणजो रे॥श्रीयुग०॥ए आंकणी॥ काया पामी अति कूडी, पांख नही रे आवुं उडी,लब्धि नही कोये रूडी रे ॥ श्रीयुग० ॥ १ ॥ तुम सेवामांहि सुर कोडी, ते इहां आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्री युग० ॥ २ ॥ डुखम समयमां इणें जरतें, अतिशय नाणी नवि वरते, कहीयें कहो कोण सांजलते रे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां दरिसण नवि पामे, ए तो ऊगडाने ठामें रे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी परें डुख सहेवुं, प्रजु विना कोण आगल कहेवुं रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेल करी आपे, बेहुने तोल करी थापे, सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो थावे, केवल नाण जुगल पावे, तो सवि वात बनी आवे रे ॥ श्रीयुग०॥७॥

गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंमित जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिनस्तवनं ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ जइने रहेजो माह्यारा वालाजीरे, श्रीगिरनारने गोंख ॥ जइने० ॥ए आंकणी॥अमें पण तिहां आवशुं ॥माह्या०॥जिहारें पामीशुं जोख ॥ जइ०॥ १ ॥ जान ले इ जूने गढें ॥ माह्या०॥ आवी तोरण आप ॥ जइ०॥ पशुआं पेखी पाछा वल्या ॥ माह्या० ॥ जातां न दीधो जबाप ॥ज०॥ २॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ माह्या० ॥ जोतां नहीं मले जोड ॥ जइ० ॥ बोल्यां अणबोल्यां करो ॥ माह्या० ॥ ए वातें तमने खोड ॥ जइ० ॥ ३॥ हुं रागी तुं वेरागीउ ॥ माह्या० ॥ जगमां जाणे सहु कोय ॥ जइ० ॥ रागी तो लागी रहे ॥माह्या०॥ वेरागी रागी न होय ॥ जइ० ॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं ॥ माह्या० ॥ सघला मेहेली सवाद ॥ जइ० ॥ मोहनी याने जइ मली ॥ माह्या० ॥ महोटा साथें श्यो वाद ॥ जइ० ॥ ५॥ गढ तो एक गिरनार छे ॥ माह्या० ॥नर तो छे एक श्री नेम ॥ जइ० ॥ रमणी एक राजीमती ॥ माह्या० ॥ पूरो पाड्यो जेणें प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ माह्या० ॥ मानी लेजो माह्या राज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्तें मल्यां ॥ माह्या० ॥ सार्यां आतमकाज ॥ जइ० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जिम पामो निर्म ल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पछी किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधिने मनःपर्यव, केवल ज्ञान उदार रे ॥पंचमी० ॥२॥मति अठावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि छे असंख्य प्र कार रे ॥ दोय भेदें मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक उ दार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, ऐसो तेज आकाश रे ॥ केवल ज्ञान उद्योत भयो जब, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पंचमी०॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीवीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ भाव दया सागरप्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारो रे, हवे इण भरतमां ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वी०॥ ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ माता विहूणो बाल ज्युं रे, अ रहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे,आ कुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख

ऊपजे रे, ते विण केम रहेवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक नव समुद्रनो रे, नवअडवि सब्बवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम वाधे उत्साहो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार छे रे, अहो जिनमुद्रा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवनें रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो नवि जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारज मुनि रे, सहुने इणी परें सिद्ध ॥ नव नव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीध रे ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंभः ॥

॥ वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कयवासो ॥ पणमवि पभणि सुमामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मणु तणु वणय एकंत करवि, निसुणो भो भवियां ॥ जिम निवसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिभरह खित्त, खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणिय नरेस, रिउदल बल खंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां गुणगणसज्जा ॥ विप्प वसे वसुभूइ तछ, जसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंद भूइ, भूवलय प्पसिद्धो ॥ चउदह विद्या विविह रूव, नारीरस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहिं रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिणवि, पंकज्जल पाडिय ॥ तेजें तारांचंद सूर, आका

स नमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेल्हि उ निर धाडिय ॥ धीरम मेरु गंजीर सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण ऊंपे किंचिय ॥ एकाकी किल जीत इब, गुण मेल्हा संचिय ॥ अह्वा निश्चें पुव जम्म, जिणवर इण अं चिअ ॥ रंजा पउमा गवरी गंगा, रतिह्वा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आ गल रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र गात्र, हींमे परवरि उ ॥ करय निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इ ण उल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ ॥वस्तु॥ जंबूदीवह जंबूदीवह्नरह वासंमि, खोणीतल मंमणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, धण वरगुब्बर गा तिह्वां ॥ विप्प वसे वसुनूइ सुंदर, तसु नज्जा पुह्वी सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानि लउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ नाषा ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघपइठा जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देवनिकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिह्वां कीजें, जिण दीठे मि थ्यामति छीजें ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहासण बइठो, तत खिण मोह दिगंतें पइठो ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवछुंछुहि आकासें वाजी, धर्म नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिह्वां देवा, चोसठ इंड्ज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपें ते जिणवर

जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रस नर नरी वरसं ता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमा ण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें ऊलऊलकंता, गयण विमाणें रण रणकं ता ॥ पेखवि इंदनूइ मन चिंते, सुर आवे अम ज गन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गह गहता ॥ तो अनिमानें गोय म ऊंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले॥ मू आगल कोइ जाण नणीजें, मेरु अवर किम उप मा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु छंद ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुर महिय, पत्तना ह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवस रण बहु सुरक कारण ॥ जिणवर जग उद्योय करे, तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउ, हुउ सुजय जयकार ॥ १६ ॥ नाषा ॥ तो चढिउ घण माण गजें, इंदनूइ नूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संच रिउ, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन नूमि स मोसरण, पेखवी प्रथमारंन तो ॥ दह दिसि देखे वि बुधवधू, आवंती सुररंन तो ॥ १७ ॥ मणिमय तो रण दंम धजा, कोसीसें नव घाट तो ॥ वैर विवर्जि त जंतुगण, प्रातिहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंइ इंइाणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिं तवे ए, सेवंतां प्रजुपाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सम

वीर जिण, पेखवी रूप विशाल तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंदनुइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसाय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १ए ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, जगतें नामें सीस तो ॥ पंचसयासुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे. अगनि नुइ आवेइ तो ॥ नाम लेइ आजास करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणि अनुक्रमें गण हररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशे नु वन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहु उपवासें पा रणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु छंद॥ इंदनूइ इंदनूइ चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करि संच रिउ, समवसरण पुहतो तुरंतो ॥ इह संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सज्झाय मनें, गोयम जवह विरत्त ॥ दिख लेइ सिखा सहिय, ग णहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ नाषा ॥ आज हुउ सुविहा ण, आज पचेलिमां पुन्य नरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय जरो ॥ सिरिगोयम गणधार, पंचसया मुनि परवरिय ॥ नूमिय करय विहार, न वियां जन पडिबोह करे ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दिख, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजें

दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरुनत्ति, सामी गोयम उप
नीय ॥ अण चल केवल नाण, रागज राखे रंग नरें
॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल. वंदे चढि चउवीस जि
ण ॥ आतम लब्धि वसेण. चरमसरीरी सोइ मुनि ॥
इअ देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउ ॥
तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीगो आवतो ए ॥
॥ २५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि
ऊपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गा
जतो ए ॥ गिरुउ ए अनिमान, तापस जो मन चिं
तवे ए ॥ तो मुनि चढिउ वेग, आलंबवि दिनकर
किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस
धज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर नर
हेसर महिअ ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुंदिसि
संठिय जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम
गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव,
तिर्यक जूंनक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंमरिक, कंमरिक अ
ध्ययन नणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रति
बोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति
॥२८॥ खीर खंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगूठ ठवे ॥
गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुन
नाव, उज्जल नरिउ खीरमीसें ॥ साचा गुरुसंजोग,
कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २ए ॥ पंचसया जिण
नाह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण,
उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंती

घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु छंद ॥ इण अनुक्रमें इण अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय हरिय दुरिय जिणनाह वंदे ॥ जाणवि जगगुरु वयण तिह नाण अप्पाण निंदे ॥ चरम जिणेसर इम जणे. गोयम म करिस खेउ ॥ छेह जई आपण सही, होसुं तुह्मा बेउ ॥ ३१ ॥ जाषा ॥ सामिउ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए जरवासम्मि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर पावापुरिसुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखिउ ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए त्रिशला देवि, नंदन पहोतो परम पए ॥ चलतो ए देव आकास, पेखवि जाण्यो जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद जेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कन्हे हुं टालिउ ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालिउ ए ॥ अति जलुं ए कीधलुं सामि, जाणिउं केवल मागशे ए ॥ चिंतविउं ए बालक जेम, अहवा केडे लागशे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, जगतें जोलो जोलव्यो ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीत राग, नेह न जेणें लालिउ ए ॥ इण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालिउ ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए

जो ऊलट, रहेतो रागें साहिउ ए ॥ केवलु ए नाण उप्पन्न, गोयम सेहेजें उमाहिउ ए ॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, नवियण नव जिम निस्तरु ए ॥ ॥ ३६ ॥ वस्तु छंद ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पंचास, गिहिवासें संवसिय ॥ तीस वरिस संजम विनूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस तिहुअण नमंसिय ॥ रायगिरि नयरीहिं ठविअ वाण वइ वरिसाउ ॥ सामी गोयम गुण निलो होसे शिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ नाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल महके, जिम चंदन सुगंध निधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणया चल तेजें ऊलके ॥ तिम गोयम सोनागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रय णायर रयणों विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलि वनी ॥ ३ए ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरू महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरि वर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिन शासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी नाखा, जिम वनके तकी महमहे ए ॥ जिम नूमिपति नुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयमलब्धें गह

गहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउं आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, कामकुंभ सवि वश हुउं ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणव क्कर पहेलो पभणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणीजें, श्रीमती शोभा संभवो ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवझाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशांतर कांइ भमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, किउं कवित उपगार करो ॥ आदिहिं मंगल एह पभणीजें, परव महोछव पहिलो लीजें, ऋद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणें उयरें धरिया, धन पिता जिण कुल अवतरिया, धन सहगुरु जिण दिखिया ए ॥ विनयवंत विद्याभंडार, जस गुण कोइ न लभे पार, वड जिम साखा विस्तरो ए ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामीनो रास भणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, सयल संघ आणंद करो ॥ कुंकुम चंदन छडो देवरावो, माणक मोतीना चोक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणुं ए ॥ ४७ ॥ तिहां बेसी गुरु देसना देसे, भविक जीवनां काज सरीसे ॥ उदयवंत मुनि इम भणे ए ॥ गौतमस्वामी तणो ए रास, भणतां

सुणतां लील विलास ॥ सासय सुख निधि संपजे ए ॥ ४८ ॥ एह रास जे नणे नणावे, वर मयगल लच्छी घर आवे ॥ मनवंछित आशा फले ए ॥ ४९ ॥ इति श्री गौतमस्वामीनो रास संपूर्ण ॥ ५० ॥

अथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याकृत श्री वीश विहरमानजिन स्तवन प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम

श्री सीमंधरजिन स्तवनं

॥ इम्डर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुरकलवइ विजयें जयो रे, नयरी पुंमरीगिणि सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांस कुमार ॥ जिणंदराय धरजो धर्म सनेह ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोहोटा नाहना आंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दर्शन सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ ॥ जि० ॥ २ ॥ गाम कुगाम नवि लेखवे रे, जग वर संत जलधार ॥ कर दोइ कुसुमें वासीयें रे, छाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहु तणो रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुम्हें छो महाराज ॥ मुफशुं अंतर किम करो रे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि०

॥ ६ ॥ वृषजलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणी कंत ॥ वाचक जस इम वीनवे रे,जवजंजन जगवंत ॥ जिणंदराय धरजो धर्म सनेह ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ श्री युगमंधर साहिबा रे, तुमशुं अविहड रंग ॥ मनना मान्या ॥ चोलमजीठ तणी परें रे, ते तो अचल अजंग ॥ गुणना गेहा ॥ १ ॥ जविजन मन त्रांबूं करे रे, वेधक कंचन वान ॥ म० ॥ फरि त्रांबूं ते नवि होये रे, ते तुम नेह प्रमाण ॥ गु० ॥ २ ॥ एक उदक लव जिम जल्यो रे, अखय जलधिमां होय ॥ म० ॥ तिम तुमशुं गुण नेहलो रे, तुम सम जग नहिं कोय ॥गु० ॥ ३ ॥ तुमशुं मुज मन नेहलो रे, चंदन गंध समान ॥ म० ॥ मेल हुउं ए मूलगो रे, सहज स्वजाव निदान ॥ गु० ॥ ४ ॥ विप्र विजय विजयापुरी रे, मात सुतारा नंद ॥ म० ॥ गजलंछन प्रिय मंगला रे, राणी मन आणंद ॥ गु० ॥ ५ ॥ सुदृढ राय कुल दिनमणि रे,जयो जयो तुं जिनराज ॥ म० ॥ श्रीनय विजय विबुध तणो रे,शिष्यनें दियो शिवराज ॥गु०॥ ६॥

॥ अथ श्री बाहुजिन स्तवनं ॥

॥ नणदलनी देशी ॥ साहिब बाहुजिनेसर वीनवुं, वीनतडी अवधार हो ॥ साहिब जवजयथी हुं उजग्यो, हवे जव पार उतार हो ॥सा०॥ १ ॥सा०॥ तुम सरिखा मुज शिर छते, कर्म करे केम जोर

हो ॥ सा० ॥ भुजंग तणो जय तिहां नहीं, जिहां वन विचरे मोर हो ॥ सा० ॥ २ ॥ सा० ॥ जिहां रवि तेजें जल हले, तिहां किम रहे अंधकार हो ॥ ॥ सा० ॥ केशरी जिहां क्रीडा करे, तिहां नहिं गज नो प्रचार हो ॥ सा० ॥ ३ ॥ सा० ॥ तिम जो तुमें मुझ मन रमो, तो नासे डुरित संसार हो ॥ सा० ॥ वछविजय सुसिमा पुरी, राय सुग्रीव मल्हार हो ॥ ॥सा०॥ ४ ॥ सा० ॥ हरिण लंछन इम में स्तव्यो, मोहना राणीनो कंत हो ॥ सा० ॥ विजया रे नंदन मुझ दीयो,जस कहे सुख अनंत हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री सुबाहुजिन स्तवनं ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ स्वामी सुबाहु सुहंकरु, भूनंदानंदन प्यारो रे ॥ निसढ नरेसर कुलतिलो, किंपुरुषानो भरतारो रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥ कपि लंछन नलिनावती, विप्रविजय अयोध्यानाहो रे ॥ रंगें मिलिएं तेहशुं, एह मणुअ जनमनो लाहो रे ॥ स्वा०॥ २ ॥ ते दिन सवि एलें गया, जिहां प्रभु शुं गोठ न बांधी रे ॥ नक्ति दूतिकाएं मन हर्यु, पण वात कही छे आधी रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ अनुभव मित्त जो मोकलो, तो ते सघली वात जणावे रे ॥ पण तेह विण मुझ नवि सरे, कहो तो पुत्र विचार ते आवे रे ॥स्वा० ॥ ४ ॥ तेणे जइ वात सवे कही, प्रभु मल्या ते ध्यानने टाणे रे ॥ श्री नयविजय विबुध तणो, इम सेवक सुजस वखाणे रे॥स्वा०॥५॥इति॥

॥ अथ श्री सुजातजिन स्तवनं ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो महोरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥

॥ साचो स्वामी सुजात, पूरव अरध जयो री ॥ धातकी खंम मझार पुस्कलवइ विजयो री ॥ १ ॥ नयरी पुंमरीगिणिनाथ, देवसेन वंश तिलो री ॥ देव सेनानो पुत्र, लंछन जानु जलो री ॥ २ ॥ जयसेनानो कंत, तेहशुं प्रेम धस्यो री ॥ अवर न आणे दाय, तेणें वश चित्त कस्यो री ॥ ३ ॥ तुमें मत जाणो दूर, जइ परदेश रह्यो री ॥ ते मुऊ चित्त हजूर, गुण संकेत ग्रह्यो री ॥ ४ ॥ उगे जानु आकाश, सरवर कमल हस्यो री ॥ देखी चंद चकोर, पीवा अमिय धस्यो री ॥ ५ ॥ दूर थकी पण प्रेम, प्रजुशुं चित्त मिल्यो री ॥ श्री नयविजय सुशिष्य, कहे गुण हेज हिल्यो री ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री स्वयंप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ पारधीयानी देशी ॥ स्वामी स्वयंप्रज सुंदरु रे, मित्रनृपति कुल हंस रे ॥ गुण रसिया ॥ मात सुमंगला जनमीया रे, शशि लंछन सुप्रशंस रे ॥ मन वसिया ॥ १ ॥ वप्र विजय विजया पुरी रे, धातकी पूरव अर्द्ध रे ॥ गु० ॥ प्रियसेना प्रियपुण्यथी रे, तुऊ सेवा में लद्ध रे ॥ म० ॥ २ ॥ चाखवी समकित सूखडी रे, हेलवीयो हुं बाल रे ॥ गु० ॥ केवल रतन दिया विना रे, न तजुं चरण त्रिकाल रे ॥ म० ॥ ३ ॥ एकने ललचावी रहो रे, एकने आपो राज रे ॥ गु० ॥ ए तु

म करवो किम घटे रे, पंति नेद जिनराज रे॥
॥ म० ॥ ४ ॥ केड न ठांकुं ताहरी रे, आप्या विण
शिव सूख रे ॥ गु० ॥ नोजन विण नांजे नहीं रे,
नामणडे जिम नूख रे ॥ म० ॥ ५ ॥ आसंगाय
त जे हुशे रे, ते केहेशे सो वार रे ॥ गु० ॥ नोली
नगतें रीजशे रें, साहिब पण निरधार रे ॥ म० ॥
॥ ६ ॥ सवि जाणे थोडुं कहे रे, प्रनु तुं चतुर सुजा
ण रे ॥ गु० ॥ वाचक जस कहे दीजियें रे, वंछित
सुख निर्वाण रे ॥ म० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री रुषनानन जिन स्तवनं ॥

॥ बन्नो रे कुंअरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥

॥श्रीरुषनानन गुणनीलो,सोहे मृगपति लंछन पा
य हो ॥ जिणंद ॥ मोहे मन तुं जग तणां, नलि वीर
सेना तुज माय हो ॥ जिणंद ॥ १ ॥ श्री० ॥ वप्र वि
जय सुसीमा पुरी,खंम धातकी पूरव नाग हो ॥जि०॥
राणी जयावती नाहलो, कीरति नृपसुत वडनाग
हो ॥जि०॥२॥श्री०॥ हुं पूछुं कहो तुमें किणि परें,दीयो
नगतने मुगति संकेत हो ॥ जि० ॥ रुसो नहिं निं
दा कारणें, तुसो नहिं पूजिया हेत हो ॥ जि० ॥ ३
॥श्री०॥समकित विण फल को नवि लहे,ए ग्रंथें छे अव
दात हो ॥ जि० ॥ नोय शाबासी तुमने चढे, तुमें
कहेवाउ जगतात हो ॥ जि०॥४॥श्री०॥ हवे जाण्युं
मन वंछित दिये, चिंतामणिने सुरकुंन हो ॥ जि० ॥
अग्नि मिटावे शीतने,जे सेवे थइ थिर थंन हो ॥जि०॥

५॥श्री०॥ जिम ए वस्तु गुण स्वजावथी, तिम तुमथी मुक्ति उपाय हो ॥ जि० ॥ दायक नायक ऊपमा, जक्ति इम साची कहाय हो ॥जि०॥६॥श्री०॥ तप जप किरिया जे फल दिये, ते तुम गुण ध्यान निमित्त हो ॥ जि० ॥ श्री नयविजय विबुध तणो, सेवकने परम तुं मित्त हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतवीर्य जिन स्तवनं ॥

॥ नारायणानी देशी ॥ जिम मधुकर मन मालती रे, जिम कुमुदिनी चित्त चंद रे ॥ जिणंदराय ॥ जिम गजमन रेवा नदी रे, कमला मन गोविंद रे ॥जि० ॥ १ ॥ त्युं मेरे मन तुं वस्यो रे ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ चातक चित्त जिम मेहलो रे, जिम पंथी मन गेह रे ॥ जि० ॥ हंसा मन मानसरोवरु रे, तिम मुऊ तुऊशुं नेह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ जिम नंदन वन इंद्रने रे, सीताने वालो राम रे ॥ जि० ॥ जिम धर्मी मन संवरु रे, व्यापारी मन दाम रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनंतवीर्य गुण सागरु रे, धातकी खंम मऊार रे ॥ जि० ॥ पूर्व अर्ध नलिनावती रे, विजय अयोध्या धार रे ॥ ॥जि० ॥ ४ ॥ मेघराय मंगलावती रे, सुत विजयावती कंत रे ॥ जि० ॥ गज लंबन योगीसरु रे, जिम समरुं महामंत रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ चाहे चतुर चूडामणि रे, कविता अमृतनी केल रे ॥ जि० ॥ वाचक जस कहे सुख दीयो रे, मुऊ तुऊ गुण रंग रेल रे ॥जि०॥६

॥ अथ श्री सुरप्रभ जिन स्तवनं ॥

॥ रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ सुर प्रभ जिनवर धातकी, पच्छिम अरधें जयकार ॥ मेरे लाल ॥ पुष्क लवइ विजय सुहामणो, पुरी पुंमरीगिणी सिणगार ॥ मेरे० ॥ १ ॥ चतुर शिरोमणि साहिबो ॥ ए आंकणी ॥ नंदसेनानो नाहलो, हय लंछन विजय मल्हार ॥ मे० ॥ विजयवती कुखें रूपनो, त्रिभुवननो आधार ॥ मे०॥ च० ॥ २ ॥ अलवे जस साहामुं जुए, करुणाभर नयन विलास ॥ मे० ॥ ते पामे प्रभुता जग तणी, एहवो छे प्रभु सुख वास ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥ मुख मटके जग जन वश करे, लोयण लटके हरे चित्त ॥ मे० ॥ चारित्र चटके पातक हरे, अटके नहिं करतो हित ॥ मे० ॥ च० ॥ ४ ॥ उवयारी शिर सेहरो, गुणनो नवि आवे पार ॥मे०॥ श्री नयविजय सुशिष्यनें, होजो नित मंगल माल ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री विशाल जिन स्तवनं ॥

॥ लूहारीनी देशी ॥ धातकी खंमें हो के पच्छिम अरध भलो, विजया नयरी हो के वप्र ते विजयतिलो ॥ तिहां जिन विचरे हो के स्वामी विशाल सदा, नित नित वंदूं हो के विमला कंत मुदा ॥ १ ॥ नाग नरेसर हो के वंश उद्योत करु, भद्रानो जायो हो के प्रत्यक्ष देव तरु ॥ भानु लंछन हो के मलवा मन तरसे, तस गुण सुणियें हो के श्रवण अमिय वरसे ॥ २ ॥ आंखडी दीधी हो के जो मुज होय मनने, पांखडी दीधी हो के

अथवा जो तनने ॥ मनह मनोरथ हो के तो सवि तु रत फले,तुज मुख देखी हो के हरखने हेज मिले ॥३॥ आडा डुंगर हो के दरिया नदीय घणी, शकति न तेहवी हो के आवुं तुज्झ जणी ॥ तुज पाय सेवा हो के सुरवर कोडि करे, जो एक आवे हो के तो मुज दुःख हरे ॥ ४ ॥ अति घणुं राति हो के अगनि मजीठ स हे, घणशुं हणियें हो के दे[illegible] वियोग लहे ॥ पण गिरु आशुं हो के राग ते दुरित हरे, वाचक जस कहे हो के धरीयें चित्त खरें ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वज्रंधर जिन स्तवनं ॥

॥ देशी बिंदलीनी ॥ शंख लंछन वज्रंधर स्वामी, माता सरसती सुत शिवगामी हो, नावें नवि वंदो ॥ नरनाथ पदमरथ जायो, विजयावती चित्त सुहायो हो ॥ ना० ॥ १ ॥ खंम धातकी पछिम नागें, प्रनु धरम धुरंधर जागे हो ॥ ना० ॥ वच्छ विजयमां नय री सुसीमा, तिहां थापे धर्मनी सीमा हो ॥ ना० ॥ ॥ २ ॥ प्रनु मन अमें वसवुं जेह, स्वपने पण दुर्लन तेह हो ॥ ना० ॥ पण अम मन जो प्रनु वसशे, तो धर्मनी वेलि उल्लसशे हो ॥ना०॥ ३ ॥ स्वपने प्रमुखें निरखंतां, अमें पामुं सुख हरखंता हो ॥ ना० ॥ जेह स्वप्न रहित कह्या देवा, तेहथी अमें अधिक कहेवा हो ॥ ना० ॥ ४ ॥ मणि माणिक कनकनी कोडी, राणिम रूधि रमणी जोडी हो ॥ना०॥ प्रनु दर्शनना सुख आगें, कहो अधिकेरुं कोण मागे हो ॥ना०॥५॥

॥ प्रभु दूरथकी पण भेट्या, तेणे प्रेमें दुःख सवि मेट्यां हो ॥ ज्ञा० ॥ गुरु श्रीनयविजय सुशिष्य, प्रभुध्यानें रमे निस दीश हो ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रानन जिन स्तवनं ॥

॥ माहारी सहीरे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नलिनावती विजयें जयकारी, चंद्रानन उपकारी रे ॥ सुणो वीनती मोरी ॥ पश्चिम अरधें धातकी खंमें, नयरी अयोध्या मंझे रे ॥ सु० ॥ १ ॥ राणी लीलाव ती चित्त सुहायो, पदमावतीनो जायो रे ॥ सु० ॥ नृप वाल्मिककुलें तुं दीवो, वृषभ लंछन चिरंजीवो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ केवलज्ञान अनंत खजानो, नहिं तुझ जगमांहे छानो रे ॥ सु० ॥ तेहनो लव देतांशुं नासे, मनमांहि कांइ विमासे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ रयण एक दिये रयणें भरियो, जो गाजंतो दरीयो रे ॥ सु० ॥ तो तेहने कांइ हाणी न आवे, लोक ते संपत्ति पावे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अलि माचे परिमल लव पामी, पंक जवनें नहिं खामी रे ॥ सु० ॥ अंब लुंब कोडी नवि छीजे, एके पिक सुख दीजें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ चंद्र किरण विस्तारे छोबुं, नवि होय अमियमां ओछुं रे ॥ सु० ॥ आशाभर करे बहुत निहोरा, ते होये सुखित चकोरा रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ तेम जो गुणलव दियो तुमें हेजें, तो अमें दीपूं तेजें रे ॥ सु० ॥ वाचक जस कहे वंछित देशो, धर्मनेह निर्वहेशो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीचंद्रबाहुजिन स्तवनं ॥

॥ मन मोहना लाल ॥ ए देशी ॥ देवानंदन नरिंदनो रे ॥ जन रंजना लाल ॥ नंदन चंदन वाण रे ॥ दुख भंजना लाल ॥ राणी सुगंधा वालहो रे ॥ज०॥ कमल लंछन सुख खाण रे ॥ दु० ॥ १ ॥ पुस्कर दीव पुस्कलावइ रे ॥ज० ॥ विजय विजय जयकारी रे ॥ दु० ॥ चंद्रबाहु पुंडरीगिणी रे ॥ज० ॥ नगरीयें करे विहार रे ॥ दु० ॥ २ ॥ तस गुणगण गंगाजलें रे ॥ ज० ॥ मुझ मन पावन कीध रे ॥ दु० ॥ फरि ने मेलु किम हुवे रे ॥ ज० ॥ अकरण नियम प्रसिद्ध रे ॥ दु० ॥३॥ अंतरंग गुण गोठडी रे ॥ ज०॥ निश्चय समकित तेह रे ॥ दु० ॥ विरला कोइक जाणशे रे ॥ ज० ॥ तेतो आगम अछेह रे ॥ दु० ॥ ४ ॥ नागर जननी चातुरी रे ॥ ॥ज० ॥ पामर जाणे केम रे ॥ दु० ॥ तिम कुण जाणे सांइशुं रे ॥ ज० ॥ अम निश्चय नय प्रेम रे ॥ दु० ॥ ५ ॥ स्वाद सुधानो जाणतो रे ॥ ज० ॥ लालित होय एक दिन्न रे ॥ दु० ॥ पण अवसरें जो जे लहे रे ॥ ज० ॥ ते दिन माने धन्न रे ॥ दु० ॥ ६ ॥ श्रीनय विजय विबुद्ध तणो रे ॥ ज० ॥ सेवक कहे सुणो देव रे ॥ दु० ॥ चंद्रबाहु मुझ दीजियें रे ॥ ज० ॥ निज पय पंकज सेव रे ॥ दुख० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री भुजंगजिन स्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ भुजंग देव भावें भजो, राय महाबलनंद ॥ लाल रे ॥ म

हिमा कुखें हंसलो, कमल लंछन सुखकंद ॥ लाल रे ॥ प्रभु० ॥१॥ वप्र विजय विजया पुरी, करे विहार उह्रा ह ॥ लाल रे ॥ पूरव अरधें पुस्करें, गंधसेनानो नाह ॥ लाल रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ कागल लिखवो कारमो, आवे जो दुर्जन हाथ ॥ लाल रे ॥ अण मलवुं दुरं तरें, चित्त फिरे तुम साथ ॥ लाल रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ किसी इसारत कीजियें, तुमें जाणो छो जग नाव ला ल रे ॥ साहिब जाण अजाणनें, साहामुं करे प्रस्ताव ॥ लाल रे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ खिजमतमां खामी नहिं, मेल न मनमां कोय ॥ लाल रे ॥ करुणा पूरण लोयणें, साहामुं कांहि न जोय ॥ लाल रे ॥प्रभु०॥५॥ आसंगो मोहोटा तणो,कुंजर ग्रहेवो कान॥लाल रे॥ वाचकज स कहे वीनति, जक्ति वशें मुऊ मान ॥ लाल रे ॥ प्रभु०

॥ अथ श्री ईश्वर जिनस्तवनं ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ नृप ग जसेन जशोदा मात, नंदन ईश्वर गुण अवदात ॥ स्वामी सेवीयें ॥ पुस्करवर पूर्वारध कछ, विजय सु सीमा नयरी अछ ॥ स्वा० ॥ १ ॥ शशि लंछन प्रभु करे रे विहार, राणी जडावतीनो जरतार ॥ स्वा० ॥ जे पामे प्रभुनो दीदार, धन धन ते नरनो अवतार ॥ स्वा० ॥ २ ॥ धन ते तन जिन नमियें पाय, धन ते मन जे प्रभु गुण ध्याय ॥ स्वा० ॥ धन जे जिहां प्रभुना गुण गाय, धन ते वेला जब वंदन थाय ॥स्वा० ॥ ३ ॥ अण मिलवे उतकंठा जोर,मिलवे विरह तणो

नय सोर ॥ स्वा० ॥ अंतरंग मिलवेजी उछाय, शोक विरह जिम दूर पलाय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ तुं माता तुं बांधव मुज, तुंही पिता तुजशुं मुज गुज ॥ स्वा० ॥ श्रीनयविजय विबुधनो शिष्य, वाचक जस कहे पूरो जगीश ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीनमि प्रभुजिन स्तवनं ॥

॥ थारे माथे पंचरंगी पाग, सोनारो छो गलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ पुखरवर पूरव अरध दिवाजे राजे रे ॥ साहिबजी ॥ नलिनावती विजयें नयरी अयोध्या छाजे रे ॥ सा० ॥ प्रभु वीर नरेसर वंश दिणेसर ध्याइएं रे ॥ सा०॥ सेना सुत साचो गुणशुं जाचो गाइएं रे ॥ सा० ॥ १ ॥ मोहनी मन वल्लभ दर्शन दुर्लभ जास रे ॥ सा० ॥ रवि चरण उपासी किरण विलासी खास रे ॥ सा० ॥ नविजनमन रंजन भव भंजन भगवंत रे ॥ सा० ॥ नेमिप्रभु वंदूं पाप निकंदूं तंत रे ॥ सा० ॥ २ ॥ घर सुरतरु फलियो सुरमणि मलियो हाथ रे ॥ सा० ॥ करि करुणा पूरी अघ चूरी जग नाथ रे ॥ सा० ॥ अमिएं घन वूठा वली तूठा सवि देव रे ॥ सा० ॥ शिवगामी पामी जो में तुज पय सेव रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ गंगाजलें नाह्यो हुं उमाह्यो आज रे ॥ सा० ॥ गुरु संगति सारी मुज अवधारी लाज रे ॥ सा० ॥ मुह माग्या जाग्या पूर्व पुण्य अंकूर रे ॥ सा० ॥ मन लीनो

कीनो तुझ गुण प्रेम पडूर रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं दोलत दाता तुंहिज त्राता महाराज रे ॥ सा० ॥ न व सायर तारो सारो वंछित काज रे ॥ सा० ॥ दुख चूरण पूरण कीजें सयल जगीश रे ॥सा०॥ अरदास प्रकाशे श्रीनयविजय सुशिष्य रे ॥ सा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री वीरसेनजिन स्तवनं ॥

॥ ऋषजनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥ पछिम अ रध पुस्कर वरें, विजय पुस्कल वइ दीपें रे ॥ नयरी पुंमरीगिणी विहरता, प्रजु तेजें रवि जीपे रे ॥ श्री वीरसेन सुहंकरु ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जानुसेन जू मिपालनो, अंगज गजगति वंदो रे ॥ राजसेना मन वालहो, वृषन लंछन जिन चंदो रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ म शि विण जे लिखुं तुझ गुणें, अक्षर प्रमना चित्तें रे ॥ धोइएं तिम तिम ऊघडे, जगति जलें तेह नित्त रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति मनें सुख धरे, ऋषन कूटें ल खि नामो रे ॥ अधिकारें तुझ गुण तेहथी, प्रगट हु आ गाम गामो रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ निज गुण गुंथित तें करी, कीर्ति मोतिनी माला रे ॥ ते मुझ कंठें आरोप तां, दीसे जाक जमाला रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रगट हुए जिम जगतमां, शोजा सेवक केरी रे ॥ वाचक जस कहे तिम करो, साहिब प्रीति घणेरी रे ॥श्री०॥ ६ ॥इति

॥ अथ श्री महाजइजिन स्तवनं ॥

॥ लाबलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ देवरायनो नंद, माता उमा मनचंद ॥ आज हो राणी रे सूरी

कंताकंत सुहामणो जी ॥ १ ॥ पुस्कर पश्चिम अर्द्ध, विजय ते वप्र सुबद्ध ॥ आज हो नगरी रे विजयायें विहरे गुणनिलो जी ॥ २ ॥ माहाभद्र जिनराय, गय लंछन जस पाय ॥ आज हो सोहे रे मोहे मन लट काले लोयणें जी ॥ ३ ॥ तेहशुं मुझ अति प्रेम, पर सुर नमवा नेम ॥ आज हो रंजे रे दुख भंजे प्रभु मुझ ते गुणें जी ॥ ४ ॥ धर्मजोबन नवरंग, समकित पाम्यो चंग ॥ आज हो लाखिणी लाडी हवे मुक्तिने मेलशे जी ॥ ५ ॥ चरण धर्म अवदात, ते कन्यानो तात ॥ आज हो माहारा रे प्रभुजीने ते छे वश सदा जी ॥६॥ श्रीनयविजय सुशिष्य, जस कहे सुणो जगदीश ॥ आज हो ताहरो रे हुं सेवक देव करो दयाजी॥७॥

॥ अथ श्री देवजसाजिन स्तवनं ॥

॥ कुमरी रोवे अक्रंद करे ॥ ए देशी ॥ देवयशा जिन राजीयो ॥ मनमोहन मेरे ॥ पुस्कर दीप मझार ॥म०॥ पश्चिम अरध सोहामणो ॥म० ॥ वछ विजय संभार ॥ म० ॥ १ ॥ नयरी सुसीमा विचरता ॥ म० ॥ सर्वभूति कुलचंद ॥ म० ॥ शशि लंछन पदमावती ॥ म० ॥ वल्लभ गंगानंद ॥ म० ॥ २ ॥ कटि लीलायें केशरी ॥ म० ॥ ते हार्यो गयो रान ॥ म०॥ हार्यो हिमकर तुझ मुखें ॥ म० ॥ हजिय वले नहिं वान ॥ म० ॥ ३ ॥ तुझ लोचनथी लाजिया ॥ म० ॥ कमल गयां जल मांहि ॥ म० ॥ अहिपति पाताळें गयो ॥ म० ॥ जींत्यो ललित तुझ बांहि ॥ म० ॥४॥

जीत्यो दिनकर तेजशुं ॥ म० ॥ फिरतो रहे ते आकाश ॥ म० ॥ निंद न आवे तेहने ॥ म० ॥ जेह मन खेद अभ्यास ॥ म० ॥ ५ ॥ इम जीत्यो तुमें जगतने ॥ म० ॥ हरि लियो चित्त रतन्न ॥ म० ॥ बंधु कहावो जगतना ॥ म० ॥ ते किम होय उपमन्न ॥ ॥ म० ॥ ६ ॥ गति तुम्हें जाणो तुम तणी ॥ म० ॥ हुं सेवुं तुम्ह पाय ॥ म० ॥ शरण करे बलिया तणुं ॥ म० ॥ जस कहे तस सुख थाय ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अजित वीर्यजिन स्तवनं ॥

॥ ए छिन्नी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ राग धन्याश्री॥दीवपुस्कर वर पच्छिम अरधें,विजय नलिनावइ सोहे ॥ नयरि अयोध्या मंमन स्वस्तिक, लंछन जिन जगमोहे रे ॥ नविया अजितवीरिय जिन वंदो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ राजपाल कुल मुकुट नगीनो, मात कनीनिका जायो ॥ रत्नमाला राणीनो वल्लन, प्रत्यक्ष सुरमणि पायो रे ॥न०॥२॥ डुरिजनस्तुति करिजें हुउ दूषण, हुए तस शोषण ईहा ॥ एहवा साहिबना गुण गाइ, पवित्र करुं हुं जीहा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ प्रनु गुण गण गंगाजल नाही, कीयो करम मल दूर ॥ स्नातक पद जिन नगति लहियें, चिदानंद नर पूरें ॥ न० ॥ ४ ॥ जे संसर्ग अनेदारोपें, समापति मुनि माने ॥ ते जिनवर गुण थुणतां लहियें, ज्ञान ध्यान लयताने रे ॥ न० ॥ ५ ॥ स्पर्श ज्ञान इणि परें अनुनवतां, देखीजें निज रूप ॥ सकल जोग जीवन ते पामी,

निस्तरीयें नवकूप रे ॥ न० ॥ ६ ॥ शरण त्राण आ लंबन जिनजी, कोई नहीं तस तोले ॥ श्री नयविज य विबुध पय सेवक, वाचक जस इम बोले रे ॥ न०॥७॥

॥ अथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याय ॥
॥ कृत चोवीशजिन स्तुति प्रारंभः॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्री रुषभदेव जिन स्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणो ॥ ए देशी ॥ जगजीव न जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे ॥ मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनंद लाल रे ॥ जग० ॥ १ ॥ आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशि सम भाल लाल रे ॥ वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाल लाल रे ॥ जग० ॥ २ ॥ लक्षण अंगें विराजता, अडहिय सहस उदार लाल रे ॥ रेखा कर चरणादिकें, अभ्यंतर नहिं पार लाल रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लइ घडियुं अंग ला ल रे ॥ भाग्य किहांथकी आवियुं, अचरिज एह उत्तं ग लाल रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ गुण सघला अंगें कस्या, दूर कस्या सवि दोष लाल रे ॥ वाचक यशविजयें थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाल रे ॥ जग० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अजितजिन स्तवनं ॥

॥ निंदडी वेरण होइ रइ ॥ ए देशी ॥ अजित जि णंदशुं प्रीतडी, मुंज न गमे हो बीजानो संग के ॥ मा

लती फूलें मोहीयो, किम बेसे हो बावल तरु भृंग के ॥ अजित० ॥ १ ॥ गंगा जलमां जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के ॥ सरोवर जलधर जल विना, नवि चाहे हो जग चातक बाल के ॥ अ० ॥ २ ॥ कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरि हो पंजरी सहकार के ॥ उछां तरुवर नवि गमे, गिरुआशुं हो होये गुणनो प्यार के ॥ अ० ॥ ३ ॥ कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वली कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीत के ॥ गोरी गिरीश गिरिधर विना, नवि चाहे हो कमला निज चित्त के ॥ अ० ॥४॥ तिम प्रभुशुं मुझ मन रम्युं, बीजाशुं हो नवि आवे दाय के ॥ श्रीनयविजय विबुध तणो, वाचक जस हो नित नित गुण गाय के ॥अ०॥५॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥ संभव जिन वर वीनती, अवधारो गुण ग्याता रे ॥ खामी नहीं मुझ खिजमतें, कदीय होशो फल दाता रे ॥ संभव० ॥ १ ॥ कर जोडी उभो रहूं, रात दिवस तुम ध्यानो रे ॥ जो मनमां आणो नहीं, तो शुं कहियें छानो रे ॥ सं० ॥ २ ॥ खोट खजाने को नहीं, दीजें वंछित दानो रे ॥ करुणा नजर प्रभुजी तणी, वाधे सेवक वानो रे ॥ सं० ॥ ३ ॥ काल लबध नहिं मति गणो, भाव लबध तुम हाथें रे ॥ लडथडतुं पण गय बचुं, गाजे गयवर साथें रे ॥ सं० ॥ ४ ॥ दे

शो तो तुमही नखुं, बीजा तो नवि जाचूं रे ॥ वाचक यश कहे सांइखुं, फलशे ए मुफ साचूं रे ॥ सं० ॥५॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ सुणजो हो प्रभु० ॥ ए देशी ॥ दीठी हो प्रभु दीठी जग गुरु तुफ ॥ मूरति हो प्रभु, मूरति मोहन वेलडी जी ॥ मीठी हो प्रभु, मीठी ताहरी वाणी ॥ लागे हो प्रभु, लागे जेसी सेलडी जी ॥ १ ॥ जाणुं हो प्रभु, जाणुं जन्म कयत्थ ॥ जोउं हो प्रभु, जोउं तुम साथें मिल्योजी ॥ सुरमणि हो प्रभु, सुरमणि पाम्यो हत्थ ॥ आंगणे हो प्रभु, आंगणे मुफ सुरतरु फल्यो जी ॥ २ ॥ जाग्यां हो प्रभु, जाग्यां पुण्य अंकूर ॥ माग्या हो प्रभु, मुह माग्या पासा ढल्याजी ॥ वूठा हो प्रभु, वूठा अमि रस मेह ॥ नाठा हो प्रभु, नाठा अशुभ शुभ दिन व ल्याजी ॥ ३ ॥ भूख्यां हो प्रभु, भूख्यां मल्यां घृत पूर ॥ तरश्यां हो प्रभु, तरश्यां दिव्य उदक मिल्यां जी ॥ थाक्यां हो प्रभु, थाक्यां मिल्या सुख पाल ॥ चाहतां हो प्रभु, चाहतां सजन हेजें हल्या जी ॥ ४ ॥ दीवो हो प्रभु, दीवो निशाविन गेह ॥ साथी हो प्रभु, साथी थलें जलनौका मलि जी ॥ कलि जुगें हो प्रभु, कलि जुगें डुल्लहो मुफ ॥ दरिसन हो प्रभु, दरिसन लह्युं आशा फली जी ॥ ५ ॥ वाचक हो प्रभु, वाचक यश तुम दास ॥ वीनवे हो प्रभु, वीनवे अभिनंदन सुणो जी ॥ कहियें हो प्रभु, कहियें म देशो छेह ॥ देजो हो प्रभु, देजो सुख दरिसण तणो जी ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमति जिन स्तवनं ॥

॥ झांझरीया मुनिवरनी देशी ॥ सुमति नाथ गुणशुं मिलीजी, वाधे मुझ मन प्रीति । तेल बिंदु जिम वि स्तरे जी, जलमांहे भलि रीति ॥ सोभागी जिनशुं लागो अविहलरंग ॥ १ ॥ सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय ॥ परिमल कस्तूरी तणो जी, महि माहें महकाय ॥ सोभागी० ॥ २ ॥ आंगलियें नवि मेरु ढकायें, छाबडियें रवि तेज ॥ अंजलिमां जिम गंग न माहे, मुझ मन तिम प्रभु हेज ॥ सो० ॥ ३ ॥ हुवे छिपे नहिं अधर अरुण, जिम खातां पानसुरंग ॥ पीवत भर भर प्रभु गुणप्याला, तिम मुझ प्रेम अभंग ॥ सो० ॥ ४ ॥ ढांकी इक्षु पलालशुं जी, न रहे लहि विस्तार ॥ वाचक यश कहे प्रभु तणोजी, तिम मुझ प्रेम प्रकार ॥ सो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं ॥

॥ सहज सलूणा हो साधुजी ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभ प्रभु जिन जइ अलगा रह्या, जिहांथी नावे लेखोजी ॥ कागलने मशि तिहां नवि संपजे, न चले वाट विशेषो जी ॥ सुगुण सनेहा रे कदिय न वीसरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ इहांथी तिहां जइ कोइ आवे नही, जेह कहे संदेशो जी ॥ जेहनुं मिलवुं रे दोहिलुं तेहशुं, नेह ते आप किलेशो जी ॥सुगुण०॥२॥ वीतरागशुं रे राग ते एकपखो, कीजें कवण प्रकारो जी ॥ घोडो दोडे रे साहेब वाजमां, मन नाणें असवारो जी ॥

सु० ॥३॥ साची नक्ति रे नावन रस कह्यो, रस होय तिहां दोय रीजेजी ॥ होडा होडें रे बिहुं रसरीजथी, मनना मनोरथ सीझे जी ॥सु०॥४॥ पण गुणवंता रे गोठें गाजियें, मोहोटा ते विश्रामजी ॥ वाचक यश कहे एहज आशरे, सुख लहुं गामो गामजी ॥सु०॥५॥

॥ अथ श्रीसुपास जिन स्तवनं ॥

॥ लाठलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥ श्री सुपास जिन राज, तुं त्रिनुवन शिर ताज ॥ आज हो गजेरे ठकुराइ, प्रनु तुझ पद तणीजी ॥१॥ दिव्य ध्वनि सुर फूल, चामर ठत्र अमूल ॥ आज हो राजे रे नामंमल, गाजे डुंडुनि जी ॥ २ ॥ अतिशय सहजना चार, कर्म खप्याथी अग्यार ॥ आज हो कीधा रे उगणीशे, सुर गण नासुरें जी ॥ ३ ॥ वाणी गुण पांत्रीश, प्रातिहारज जगदीश ॥ आज हो राजे रे दीवाजे, ठाजे आठशुं जी ॥ ४ ॥ सिंहासन अशोक, बेठा मोहे लोक ॥ आज हो स्वामी रे शिवगामीरे, वाचक यश थुण्योजी ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रन जिन स्तवनं ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ चंद्रप्रन जिन साहेबा रे, तुमें ठो चतुर सुजाण ॥ मनना मान्या ॥ सेवा जाणो दासनी रे, देशो पद निरवाण ॥ मनना मान्या ॥ आवो आवोरे चतुर सुख नोगी, कीजें वात एकांत अनोगी, गुण गोठें प्रगटे प्रेम ॥ मनना मान्या ॥१॥ ए आंकणी ॥ उंबुं अधिकुं पण कहे रे, आसंगायत

जेह ॥ म० ॥ आपे फल जे अण कहे रे, गिरुउ सा हेब तेह ॥ म० ॥ २ ॥ दीन कह्या विण दानथी रे, दातानी वाधे माम ॥ म० ॥ जल दीये चातक खी जवी रे,मेघ हुआ तिणें श्याम ॥म०॥३॥ पीउ पीउ करी तुमने जपुं रे, हुं चातक तुमें मेह ॥ म० ॥ एक लहेरमां दुःख हरो रे, वाधे बमणो नेह ॥ म०॥॥४॥ मोडुं वहेलुं आपवुं रे,तो शी ढील कराय ॥म०॥ वाच क यश कहे जग धणी रे, तुम तूठे सुख थाय ॥म०॥५॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ए देशी॥

लघु पण हुं तुम मन नवि मावुं रे, जगगुरु तुमने दिलमां लावुं रे ॥ कुणनें ए दीजें शाबासी रे, कहो श्री सुविधि जिणंद विमासी रे ॥ १ ॥ ल० ॥ मुऊ मन अणुमांहें नक्ति ढे जाऊी रे, तेह दरीनो तुं ढे माजी रे ॥ योगी पण जे वात न जाणे रे, तेह अ चरिज कुणथी हुउ टाणे रे ॥ २ ॥ ल० ॥ अथवा थिरमांहि अथिरन मावे रे,मोहोटो गज दर्पणमां आवे रे ॥ जेहने ते जे बुद्धि प्रकाशी रे, तेहने दीजें ए शा बासी रे ॥ ३ ॥ ल० ॥ ऊर्ध्व मूल तरुअर अध शाखा रे, ढंद पुराणे एहवी ढे नाखा रे ॥ अचरिज वाले अ चरिज कीधुं रे, नक्तें सेवक कारज सीधुं रे ॥ ४ ॥ ल० ॥ लाड करी जे बालक बोले रे, मातपिता मन अमियने तोले रे ॥ श्री नयविजय विबुधनो शिशो रे, यश कहे इम जाणो जगदीशो रे ॥ ५ ॥ ल० ॥

॥ अथ श्री शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अलि अलिकें कदि आवेगो ॥ ए देशी ॥ श्री शीतल जिन भेटियें, करी चोखूं भक्तें चित्त हो ॥ ते हथी कहो बानुं किश्युं, जेहने सोंप्या तन मन वित्त हो ॥ श्री० ॥ १ ॥ दायक नामें छे घणा, पण तुं सायर ते कूप हो ॥ ते बहु खजुवा तग तगे, तुं दिन कर तेजसरूप हो ॥श्री०॥२॥ मोहोटो जाणी आ दस्यो, दालिद्र भांजो जगतात हो ॥ तुं करुणावंत शिरोमणि, हुं करुणा पात्र विख्यात हो ॥ श्री० ॥ ॥ ३ ॥ अंतरजामी सवि लहो, अम मननी जे छे वात हो॥ मा आगल मोसालना,श्या वरणववा अ वदात हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जाणो तो ताणो किश्युं, सेवा फल दीजें देव हो॥ वाचक यश कहे ढीलनी, ए न गमे मुझ मन टेव हो श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणिया ॥ ए देशी ॥ तुमें बहु मित्री रे साहेबा, मारे तो मन एक॥ तुम विण बीजो रे नवि गमे,ए मुझ मोहोटी रे टेक हो ॥ श्री श्रेयांस कृपा करो ॥ १ ॥ मन राखो रे तुमें सवि तणां, पण किहां एक मलि जाउ॥ ललचावो लख लोकने, शाथी सहेज न थाउ॥ श्री०॥ २ ॥ राग भरें जन मन रहो, पण तिहुं काल वैराग ॥ चित्त तुमारो रे समुद्रनो, कोय न पामे ताग ॥ श्री०॥३॥ एवा शुं चित्त मेलव्युं, केलव्युं पहेलां न कांइ॥ सेवक निपट अबूझ छे, निर्वे

हेशो तुमें सांइ ॥श्री०॥ ४ ॥ नीरागीशुं रे किम मले, पण मलवानो एकंत ॥ वाचक यश कहे मुफ मिल्यो, नक्तें कामण तंत ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ साहेबा मोतीडो हमारो ॥ ए देशी ॥ स्वामी तुमें कांइ कामण कीधुं, चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं ॥ साहेबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य ॥ ए आंकणी ॥ अमें पण तुमशुं कामण करशुं, नक्ति ग्रही मन घरमां धरशुं ॥ साहेबा० ॥ १ ॥ मन घरमां धरीया घरशोना, देखत नित्य रहेशो थिरथोना ॥ मन वैकुंठ अकुंठित नक्तें, योगी नांखे अनुनव युक्तें ॥ सा० ॥ २ ॥ क्लेशें वासित मन संसार, क्लेश रहित मन ते नवपार ॥ जो विशुद्ध मनघर तुमें आव्या, प्रनु तो अमें नव निधि क्रुद्धि पाव्या ॥ सा० ॥ ३ ॥ सात राज अलगा जइ बेठा, पण नगतें अम मनमां पेठा ॥ अलगाने वलगा जे रहेवुं, ते नाणा खड खड दुःख सहेवुं ॥ सा० ॥ ४ ॥ ध्यायक ध्येय ध्यान गुण एकें, नेद छेद करशुं हवे टेकें ॥ खीर नीर परें तुमशुं मलशुं, वाचक यश कहे हेजें हलशुं ॥ सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ नमो रे नमो श्री शेत्रुंजा गिरिवर ॥ ए देशी ॥

॥ सेवो नविया विमल जिणेसर, दुल्लहा सज्जन संगाजी ॥ एवा प्रनुनुं दरिसन लेवुं, ते आलसमांहे

गंगाजी ॥ सेवो० ॥ १ ॥ अवसर पामी आलस करशो, ते मूरखमां पेहेलोजी ॥ भूख्याने जेम घेवर देतां, हाथ न मांडे घेलोजी ॥ सेवो० ॥ २ ॥ भव अनंत मां दर्शन दीठुं, प्रभु एहवा देखाडेजी ॥ विकट ग्रंथ जे पोलि पोलियो, कर्म विवर उघाडेजी ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ तत्त्व प्रीति करि पाणी पाए, विमला लोके आंजी जी ॥ लोयण गुरु परमान्न दिए तव, भर्म नाखे सवि भांजी जी ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ भर्म भागो तव प्रभुशुं प्रेमें, वात करुं मन खोलीजी ॥ सरल तणे जे हइडे आवे, तेह जणावे बोलो जी ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ श्री नय विजय विबुध पय सेवक, वाचक यश कहे साचुंजी ॥ कोडि कपट जो कोइ दिखावे, तो प्रभु विण नहिं राचुंजी ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअनंत जिन स्तवनं ॥

॥ साहेलडियां ॥ ए देशी ॥ श्री अनंत जिनशुं करो ॥ साहेलडियां ॥ चोल मजीठनो रंग रे ॥ गुण वेलडियां ॥ साचो रंग ते धर्मनो ॥ साहेलडियां ॥ बीजो रंग पतंगरे ॥ गुण वेलडियां ॥ १ ॥ धर्म रंग जीरण नही ॥ सा० ॥ देह ते जीरण थाय रे ॥ गु० ॥ सोनुं ते विणसे नहिं ॥ सा० ॥ घाट घडामण जाय रे ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रांबुं जे रस वेधिउं ॥ सा० ॥ ते होय जाचुं हेम रे ॥ गु० ॥ फरि त्रांबूं ते नवि हुए ॥ सा० ॥ एहेवो जग गुरु प्रेम रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ उत्तम गुण अनुरागथी ॥ सा० ॥ लहियें उत्तम ठाम रे ॥ गु० ॥

उत्तम निज महिमा वधे ॥ सा० ॥ दीपे उत्तम धाम रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ उदक बिंदु सायर नल्यो ॥ सा० ॥ जिम होय अखय अनंग रे ॥ गु० ॥ वाचक यश कहे प्रजु गुणें ॥ सा० ॥ तिम मुऊ प्रेम प्रसंग रे ॥ गु० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ बेडले नारघणो ठे राज, वांता केम करो ठो ॥ए देशी॥

॥ थाशुं प्रेम बन्यो ठे राज, निरवहेशो तो लेखे ॥ में रागी थें ठो नीरागी, अण जुडते होये हांसी ॥ एक पखो जे नेह निवहिशो, तेहमां शी साबाशी ॥थां० ॥ १ ॥ नीरागी सेवे कांइ होवे, इम मनमां नवि आणुं ॥ फले अचेतन पण जिम सुरमणि, तिम तुम नक्ति प्रमाणुं ॥था०॥२॥ चंदन शीतलता उपजावे, अग्नि ते शीत मिटावे ॥ सेवकनां तिम दुख गमावे, प्रजु गुण प्रेम स्वनावें ॥ था० ॥ ३ ॥ व्यसन उदय जे जलधि अणु हरे, शशीनुं तेज संबंधें ॥ अणुसंबंधें कुमुद अणु हरे, शुद्ध स्वनाव प्रबंधे ॥था०॥ ४ ॥ देव अनेरा तुमथी ठोटा, थें जगमां अधिकेरा ॥ यश कहे धर्म जिनेश्वर थांशुं, दिल मान्या हे मेरा ॥ था०॥५॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ रह्यो रे आवास डुवार ॥ ए देशी ॥ धन दिन वेला धन घडि तेह, अचिरारो नंदन जिन जदि नेटशुंजी ॥ लहिशुं रे सुख देखी मुखचंद, विरह व्यथानां दुःख सवि मेटशुं जी ॥१॥ जाण्यो रे जेणें तुऊ

गुण लेश, बीजा रे रस तेहने मन नवि गमे जी ॥ चाख्यो रे जेणें अमिलवलेश, बाकश बुकश तस न रुचे किमे जी ॥ २ ॥ तुझ समकित रस स्वादनो जाण, पाप कुभक्तें बहु दिन सेवीयुं जी ॥ सेवे जो कर्मने जोगें तोहि,वांछे ते समकित अमृत धुरे लिख्युं जी ॥ ३ ॥ ताहरुं ध्यान ते समकित रूप, तेहज ज्ञान ने चारित्र तेहज छेजी ॥ तेहथी रे जाए सघलां पाप, ध्याता रे ध्येय स्वरूप होय पछें जी ॥ ॥ देखी रे अदभुत ताहरुं रूप, अचरिज भविक अरूपी पद वरे जी ॥ ताहरी गत तुं जाणे देव, स्मरण भजन ते वाचक यश करे जी ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ साहेलां हे ॥ ए देशी ॥ साहेलांहे ॥ कुंथु जिनेश्वर देव, रत्न दीपक अति दीपतो हो लाल ॥ सा० ॥ मुज मन मंदिरमांहि, आवे जो अरिबल झीपतो हो लाल ॥ १ ॥ सा० ॥ मिटे तो मोह अंधार, अनुभव तेजें झल हले हो लाल ॥ सा० ॥ धूम कषाय न रेख, चरण चित्रामण नवि चले हो लाल ॥ २ ॥ ॥सा०॥ पात्र करे नहिं हेठ, सूर्य तेजें नवि छिपे हो लाल ॥ सा० ॥ सर्व तेजनुं तेज, पहेलांथी वाधे पछें हो लाल ॥ ३ ॥ सा० ॥ जेह न मरुतने गम्य, चंचलता जे नवि लहे हो लाल ॥ सा० ॥ जेह सदा छे रम्य, पृष्ठ गुणें नवि कृश रहे हो लाल ॥ ४ ॥ सा०॥ पुद्गल तेल न खेप, तेह न शुद्ध दशा दहे हो लाल ॥

सा० ॥श्री नयविजय सुशिष्य, वाचक यश इणि परें कहे हो लाल ॥ ५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥ श्री अर जिन नवजलनो तारु, मुऊ मन लागे वारु रे ॥ मन मोहन स्वामी ॥ बांह ग्रही ए नविजन तारे, आणे शिवपुर आरे रे ॥ मन० ॥ १ ॥ तप जप मोह महा तोफाने, नाव न चाले माने रे ॥ मन० ॥ पण नवि नय मुऊ हाथो हाथें, तारे ते छे साथें रे ॥ मन० ॥ ॥ २ ॥ नगतने स्वर्ग स्वर्गथी अधिकुं, ज्ञानीने फल देइ रे ॥ मन० ॥ काया कष्ट विना फल लहियें, मनमां ध्यान धरेइ रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ जे उपाय बहु विधनी रचना, योग माया ते जाणो रे ॥ मन० ॥ शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय ध्यानें, शिव दिये प्रनु सपराणो रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ प्रनु पद वलग्या ते रह्या ताजा, अलगा अंग न साजा रे ॥ मन० ॥ वाचक यश कहे अवर न ध्याउं, ए प्रनुना गुण गाउं रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लिजिन स्तवनं ॥

॥ नानि रायांके बाग ॥ ए देशी ॥ तुऊ मुऊ रीजनी रीज, अटपट एह खरी री ॥ लटपट नावे काम, खटपट नांज परी री ॥ १ ॥ मल्लिनाथ तुऊ रीज, जन रीजें न हुए री ॥ दोय रीजण नो उपाय, साहामुं कांइ न जुए री ॥ २ ॥ डुराराध्य छे लोक, सहुने सम न श

रीरी ॥ एक ऊडवाए गाढ, एक जो बोले हसी री ॥
॥ ३ ॥ लोक लोकोत्तर वात, रीझवे दाय जुइरी ॥
तात चक्रधर पूज्य, चिंता एह हुइरी ॥ ४ ॥ रीझववो
एक सांइ, लोक ते वात करे री ॥ श्री नयविजय
सुशिष्य, एहिज चित्त धरे री ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनि सुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ पांमव पांचे वंदतां ॥ ए देशी ॥ मुनि सुव्रत
जिन वंदतां, अति उल्लसित तन मन थाय रे ॥ व
दन अनोपम निरखतां, माहारां जव जवनां डुख
जाय रे ॥ १ ॥ माहारां जव जवनां डुख जाय जग
तगुरु जागतो ॥ सुख कंद रे ॥ सुख कंद अमंद आ
णंद, परमगुरु जागतो ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ निशि
दिन सूतां जागतां, हइडाथी न रहे दूर रे ॥ जब
उपगार संजारियें, तव उपजे आनंद पूर रे ॥ त० ॥
ज० ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रजु उपकार गुणे जस्या, मन अ
वगुण एक न समाय रे ॥ गुण गुण अनुबंधी हुआ,
तेतो अक्षय जाव कहाय रे ॥ ते०॥ ज०॥ सु०॥ ३ ॥
अक्षय पद दीये प्रेम जे, प्रजुनुं ते अनुजव रूप रे ॥
अक्षर स्वर गोचर नही, ए तो अकल अमात्य अरूप
रे ॥ ए०॥ ज० ॥ सु० ॥ ४ ॥ अक्षर थोडा गुण घणा,
सज्जनना ते न लिखाय रे ॥ वाचक यश कहे प्रेमथी,
पण मनमांहे परखाय रे ॥ प० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥श्रीनमि जिननी सेवा करतां,अलिय विघन सविदूरें

नासे जी ॥ अष्ट महासिद्धि नव निधि लीला, आवे बहु महमूर पासें जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मयमत्ता अं गण गज गाजे, राजे तेजी तुखार ते चंगा जी ॥ बेटा बेटी बंधव जोडी, लहियें बहु अधिकार रंगा जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ वल्लन संगम रंग लहीजें, अण वाहला होय दूर सहेजें जी ॥ वांछा तणो विलंबन न दूजो, कारज सीझे नूरि सहेजें जी ॥श्री०॥३॥ चंद्र किरण उज्ज्वल यश उलसे, सूरज तुल्य प्रतापी दीपे जी ॥ जे प्रचु नक्ति करे नित्य विनयें, ते अरियण बहु प्र तापी झीपे जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मंगल माला लच्छी विशाला, बाला बहुले प्रेम रंगें जी ॥ श्रीनय विजय विबुध पय सेवक,कहे लहियें सुख प्रेम अंगें जी॥५॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ आटला दिन हुं जाणतो रे हां ॥ ए देशी ॥

तोरण आवी रथ फेरि गया रे हां, पशुआं देइ दोश ॥ मेरे वालमा ॥ नव नवनेह निवारियो रें हां, श्यो जोइ आव्या जोश ॥मे०॥१॥ चंद कलंकी जेहथी रें हां, रामने सीता वियोग ॥मे०॥ तेह कुरंगने वयणडे रे हां, पति आवें कुण लोग ॥ मे० ॥२॥ उतारी हुं चित्तथी रे हां, मुक्ति धूतारी हेत ॥ मे० ॥ सिद्ध अ नंतें नोगवी रे हां, तेहशुं कवण संकेत ॥ मे० ॥३॥ प्रीत करतां सोहिली रे हां, निरवहेतां जंजाल ॥मे०॥ जेहवो व्याल खेलाववो रे हां,जेहवी अगननी झाल ॥मे०॥ ४ ॥ जो विवाह अवसरें दिउ रे हां, हाथ उ

पर नवि हाथ ॥ मे० ॥ दीक्षा अवसर दीजियें रे हां, शिर उपर जगनाथ ॥ मे०॥ ५ ॥ इम वलवलती राजुल गइ रे हां, नेम कने व्रत लीध ॥ मे० ॥ वाचक यश कहे प्रणमियें रे हां, ए दंपती दोय सिद्ध ॥मे०॥६॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ देखी कामनी दोइ० ॥ ए देशी ॥ वामा नंदन जिनवर मुनिमांहें वडो रे, के मुनिमांहे वडो ॥ जिम सुरमांहि सोहे सुरपति परवडो रे के ॥ सुर०॥ जिम गिरमांहि सुराचल मृगमांहे केसरी रे ॥ मृग० ॥ जिम चंदन तरुमांहि सुनटमांहिं शूरअरि रे ॥ १ ॥ सु० ॥ नदीय मांहि जिम गंग अनंग सुरूपमां रे ॥ अनं० ॥ फूलमांहिं अरविंद नरत पति नूपमां रे ॥ नर० ॥ ऐरावण गजमांहिं गरुड खगमां यथा रे ॥ गरुड० ॥ तेजवंतमांहि नाण वखाणमांहिं जिन कथा रे ॥ व० ॥ २ ॥ मंत्रमांहि नवकार रत्नमांहि सुरमणि रे ॥ र०॥ सागरमांहि स्वयंनु रमण शिरोमणि रे ॥ रम० ॥ शुक्ल ध्यान जिम ध्यानमां अति निर्मल पणे रे ॥ अति०॥ श्रीनय विजय विबुध पय सेवक इम नणे रे ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान जिन स्तवनं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिनराया रे ॥ सुणता श्रवणें अमी जरे, माहारी निर्मल थायें काया रे ॥ गि० ॥ १ ॥ तुम गुण गण गंगा जलें, हुं जीली निर्मल थाउं रे ॥ अवर न

धंधो आदरुं, निशि दिन तोरा गुण गाउं रे ॥ गि० ॥
॥ २ ॥ झील्या जे गंगाजलें, ते छिल्लर जल नवि
पेसे रे ॥ जे मालती फूलें मोहीया, ते बावल जइ
नवि बेसे रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ इम अमें तुम गुण गो
ठशुं, रंगें राच्या ने वली माच्या रे ॥ ते केम परसुर
आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ॥गि० ॥४॥ तुं गति तुं
मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे ॥ वाचक
यश कहे माहरे, तुं जीवन जीव आधारो रे ॥ गि०॥
॥ ५ ॥ इति ॥ उपाध्याय श्री मद्यशोविजयजी कृत
चोवीश जिन स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ उपाध्याय श्री मानविजयजी कृत ॥
॥ चतुर्विंशति जिन स्तवनानि ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्रीऋषज देव जिन स्तवनं ॥

॥ राग प्रजाती ॥ ऋषजजिणंदा ऋषजजिणंदा, तुम
दरिसण हुवे परमाणंदा ॥ अह निशि चाउं तुम दीदा
रा, महिर करीने करजो प्यारा ॥ १ ॥ ऋ० ॥ आप
णनी पुंठे जे वलगा, किम सरे तेहनें करतां अलगा ॥
अलगा कीधा पण रहे वलगा, मोर पीछ परें न हुए
उलगा ॥ २ ॥ ऋ० ॥ तुम्ह पण अलगे थये किम
सरशे, नक्ति जलि आकर्षी लेशे ॥ गगनें उमे दूर पडाइ,
दोरबलें हाथे रहे आइ ॥३॥ऋ०॥ मुज मनडुं छे च
पल स्वजावें, तोहे अंतर मुहूर्त्त प्रस्तावें ॥ तूं तो समय

समय बदलाये, इम किम प्रीति निवाहो थाये ॥४॥ ऋ० ॥ ते माटे तूं साहिब माहारो, हुं बुं सेवक नव नव ताहारो ॥ एह संबंधमां म होजो खामी, वाचक मान कहे शिर नामी ॥ ५ ॥ ऋषन० ॥ इति॥ १ ॥

॥ अथ श्रीअजित जिन स्तवनं ॥

॥ आघा आम पधारो पूज्य० ॥ ए देशी ॥ अजित जिणेसर चरणनी सेवा, हेवायें हुं हलियो ॥ कहि एं अणचाख्यो पण अनुनव, रसनो टाणो मलियो ॥ १ ॥ प्रनुजा महिर करीने आज, काज हमारां सारो ॥ मुकाव्यो पण हुं नवि मूकुं, चूकुं ए नवि टाणो ॥ नक्ति नाव ऊठ्यो जे अंतर, ते किम रहे शरमा णो ॥ २ ॥ प्र० ॥ लोचन शांति सुधारस सुनंगा, मु ख मटकालुं प्रसन्न ॥ योगमुद्रानो लटको चटको, अतिशयनो अति धन्न ॥ ३ ॥ प्र० ॥ पिंम पदस्थ रू पस्थें लीनो, चरण कमल तुऊग्रहीयां ॥ नमर परें रसस्वाद चखावो, विरसो कां करो महीयां ॥ ४ ॥ प्र० ॥ बाल कालमां वार अनंती, सामग्रीयें नवि जा ग्यो ॥ यौवनकालें ते रस चाखण, तुं समरथ प्रनु मा ग्यो ॥५॥प्र०॥ तूं अनुनव रस देवा समरथ, हूं पण अरथी तेहनो ॥ चित्त वित्तने पात्र संबधें, अजर रह्यो हवे केहनो ॥ ६ ॥ प्र० ॥ प्रनुनी महेरें ते रस चा ख्यो, अंतरंग सुख पाम्यो ॥ मानविजय वाचक इम जंपे, हूउ मुऊ मन काम्यो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसंजव जिन स्तवनं ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो॥ ए देशी ॥ साहिब सांजलो वीनति,तूं गो चतुर सुजाण ॥ सनेही ॥ कीधि सुजाणने वीनती, प्रायें चढे ते प्रमाण ॥ स० ॥ १ ॥ संजव जिन अवधारीयें, महेर करी मेहेरबान ॥ स० ॥ जवजय जावठ जंजणो, जक्त वत्सल जगवान ॥ स० ॥ २ ॥ सं० ॥ तुं जाणे विणु वीनवे, तोहे में न रहाय ॥ स० ॥ अरथी होए उतावलो, कण वरसां सो थाय ॥ स० ॥ ३॥ सं० ॥ तूंतो मोटपमां रहे, विनव्यो पण विलंबाय ॥ स० ॥ एक धीरो एक आकुलो, इम किम कारज थाय ॥ स० ॥ ४ ॥ सं० ॥ मन मान्यानी वातडी, सघले दीसे नेट ॥ स०॥ एक अंतर पेशी रहे, एक न पामे जेट ॥ स० ॥ ५ ॥ सं० ॥ योग्य अयोग्य जे जोश्वा, ते अपूरणनुं काम ॥ स० ॥ खाइना जलने पण करे, गंगा जलनिज नाम ॥स० ॥ ६ ॥ सं०॥ काल गयो बहु वायदे, तेतो हवे न खमाय ॥ स० ॥ योगवाई ए फिरि फिरि, पामवि डुर्लज थाय ॥ स० ॥ ७ ॥ सं० ॥ जेद जाव मूकी परो, मुऊशुं रमो एक मेक ॥ स०॥ मान विजय वाचक तणी,ए वीनति जे बेक ॥स०॥८॥सं०॥

॥ अथ श्री अजिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ मोतीडानी देशी ॥ प्रजु मुऊ दरिसन मलियो अलवे, मन थयुं हवे हलवे हलवे ॥ साहिबा अजिनंदन देवा, मोहना अजिनंदन० ॥ पुण्योदय

एह मोहोटो माहारो, अणचिंत्यो थयो दरिसण ता
हारो ॥ १ ॥सा०॥ देखत देव हरी मन लीधुं, काम
णगारे कामण कीधुं ॥ सा०॥ मनडूं जाये नही
को पासें, रात दिवस रहे ताहरी आसें ॥ २ ॥
सा०॥ पहिलुं तो जाण्युं हतुं सोहिलूं,पण मोहोटाशुं
मिलवुं दोहिलूं ॥ सा० ॥ सोहिलूं जाणि मनडुं वल
गूं, थाये नही हवे कीधुं अलगूं ॥ ३ ॥ सा० ॥
रूप देखाडी तुं होय अरूपी, किम ग्रहिवाये अकलस
रूपी ॥ सा० ॥ ताहरी धात न जाणी जाये, कहो
मनडानी शी गति थाये ॥ ४ ॥ सा०॥ पहिलुं जाणी
पछे करे किरिया, ते परमारथ सुखना दरीया ॥ सा०॥
वस्तु अजाणे मन दोडावे, तेतो मूरख बहु पिछतावे
॥५॥ सा० ॥ ते माटे तूं रूपी अरूपी, शुद्ध बुद्धने
सिद्ध सरूपी ॥सा०॥ एह स्वरूप ग्रहीयुं जब तहारुं,
तव भ्रम रहित थयुं मन महारुं ॥६॥सा०॥ तुझ गुण
ग्यान ध्यानमां रहीयें, इम हिलवुं पण सुलभज क
हीयें ॥ सा० ॥ मानविजय वाचक प्रभु ध्यानें, अनु
भव रसमां हल्यो एकताने ॥ ७ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ थारा मोहोला उपर मे० ॥ ए देशी ॥ रूप अ
नुप निहालि, सुमति जिन ताहरुं ॥ हो लाल ॥ सु०॥
छंमी चपल स्वभाव, वख्युं मन माहरुं ॥ हो लाल ॥व०॥
रूपी सरूप न होत जो, जग तुझ दीसतूं ॥हो लाल ॥
जो०॥ तो कुण उपर मन्न, कहो अम हींसतूं ॥ हो

लाल ॥ क० ॥ १ ॥ हींस्या विण किम शुद्ध, स्वन्नावनें ज्ञता॥ हो लाल ॥स्व० ॥ इत्ता विण तुऊ न्नाव, प्र गट किम प्रीबता ॥ हो लाल ॥प्र०॥ प्रीबघा विणु कि म ध्यान, दिशामांहि लावता ॥ हो लाल॥दि०॥ लाव्या विण रस स्वाद, कहो किम पावता ॥हो लाल ॥क०॥ ॥ २ ॥ न्नक्ति विना नवि मुक्ति, हुइ कोइ न्नक्तने ॥ हो लाल ॥ हु० ॥ रूपी विना तो तेह, हुवे किम व्यक्तने ॥ हो लाल ॥ हु० ॥ न्हवण विलेपन माल, प्रदीपनें धू पणां ॥ हो लाल ॥प्र०॥ नव नव न्नूषण न्नाल, तिलक सिर खूंपणा ॥ हो लाल ॥ ति० ॥३ ॥ अम सत्य पु ण्यने योगें, तुमें रूपी थया ॥ हो लाल ॥ तु० ॥ अ मिय समाणी वाणी, धर्मनी कहो गया ॥ हो लाल ॥ ध० ॥ तेह आलंबने जीव, घणाये बूऊीया॥ हो लाल॥ घ० ॥ न्नावि न्नावने ज्ञानें, अमो पण रीजीया ॥ हो न्ना ल ॥अ०॥४॥ ते माटे तुऊ पिंम, घणा गुण कारणो ॥ हो लाल ॥ घ० ॥ सेव्यो ध्यायो हुवे, महान्नय वा रणो ॥ हो लाल ॥ म० ॥ शांतिविजय बुध शिष्य, कहे न्नविका जना ॥ हो लाल॥क०॥ प्रन्नुनुं पिंमस्थ ध्यान, करो थइ इकमना ॥ हो लाल ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रन्नजिन स्तवनं ॥

॥ वारि हुं गोडी पासनी ॥ ए देशी ॥ श्रीपदम प्रन्नना नामने, हुं जाउं बलिहार ॥ न्नविजन ॥ नाम जपंतां दीहा गमुं, न्नवन्नय न्नंजन हार ॥ न्न० ॥१॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ नाम सुणत मन उल्लसे, लो

चन विकसित होय ॥ न० ॥ रोमांचित हुवे देहडी, जाणे मिलियो सोय ॥ न० ॥ २ ॥ श्री० ॥ पंचम काले पामवुं, दुर्लज प्रजु दीदार ॥ न०॥ तोहे तेहना नामनो, छे मोहोटो आधार ॥ न० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ नाम ग्रहे आवी मिले, मन जिंतर जगवान ॥ न०॥ मंत्रबले जिम देवता, वहेलो कीधे आह्वान ॥ न० ॥ ॥ ४ ॥ श्री० ॥ ध्यान पदस्थ प्रजावथी, चाख्यो अनु जव स्वाद ॥ न० ॥ मानविजय वाचक कहे. मूको बीजो वाद ॥ न० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री सुपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥रंगीले आतमा॥ ए देशी॥ निरखी निरखि तुझ बिंबने, हरखित होय मुझ मन्न ॥ सुपास सोहामणा ॥ निर्वि कारता नयनमां, मुखडूं सदा सुप्रसन्न ॥ १ ॥ सु०॥ जाव अवस्था सांजरे, प्रातिहारजनी शोज ॥ सु०॥ कोडि गमे देवा सेवा, करता मूकी लोज ॥ २ ॥ सु० ॥ लोकालोकना सवि जावा, प्रतिजासे परतक्ष ॥ सु०॥ तोहे न राचे नवि रुसे, नवि अविरतिनो पक्ष ॥ ३ ॥ सु० ॥ हास्य न रति अरति नहीं, नहीं जय शोक दुगंछ ॥ सु० ॥ नहीं कंदर्प कदर्थना, नही अंत रायनो संच ॥ ४ ॥ सु० ॥ मोह मिथ्यात निद्रा गइ, नाठा दोष अढार ॥ सु०॥ चोत्रीश अतिशय राजता, मूलातिशय चार ॥ ५ ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें करी, देता जवि उपदेश ॥ सु० ॥ इम तुझ बिंबें ता हरो, जेदनो नहिं लवलेश ॥ ६ ॥ सु०॥ रूपथी प्रजु

गुण सांजरे, ध्यान रूपस्थ विचार ॥ सु० ॥ मानवि जय वाचक वदे, जिन प्रतिमा जयकार ॥ ७ ॥ सु० ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रज्ञ जिन स्तवनं ॥

॥ अलगी रेहेंने ॥ ए देशी ॥ तूंही साहिबारे मन मान्या ॥ तूं तो अकल स्वरूपी जगतमां, मनमां केणे न पायो ॥ शब्दें बोलावी उलखायो, शब्दातीत ठहरायो ॥ १ ॥ तूं० ॥ रूप निहाली परिचय कीनो, रूपमांहि नहिं आयो ॥ प्रातिहारज अतिशय अहि नाणे, शास्त्रमां बुधें न लखायो ॥२॥ तूं० ॥ शब्द न रूप न गंध न रस नहीं, फरस न वरण न वेद ॥ नहिं संज्ञा भेदन छेदन नहिं, हास्य नहिं नहीं खेद ॥ ३ ॥ तूं० ॥ सुख नहीं दुःख नहीं वली वांछा नहीं, नहीं रोग योग ने जोग ॥ नहीं गति नहीं स्थि ति नहीं रति अरति, नहीं तुऊ हरषनें शोग ॥ ४ ॥ तूं० ॥ पुण्य न पाप न बंधन देह न, जनम मरण नहीं व्रीडा ॥ राग न द्वेष न कलह न जय नहीं, नहीं संता प न क्रीडा ॥ ५ ॥ तूं० ॥ अलख अगोचर अज अ विनाशी, अविकारी निरुपाधि ॥ पूरण ब्रह्मचिदानंद साहिब, ध्याउं सहज समाधि ॥६॥तूं०॥ जे जे पूजा ते ते अंगें, तूं तो अंगथी दूरें ॥ ते माटे पूजा उपचा रिक, न घटे ध्यानने पूरें ॥ ७ ॥ तूं० ॥ चिदानंद घन केरी पूजा, निर्विकल्प उपयोग ॥ आतम परमा तमने अनेदें, नहीं कोइ जडनो जोग ॥ ८ ॥ तूं० ॥ रूपातीत ध्यानमां रहेतां, चंद्रप्रज्ञ जिनराय ॥ मान

विजय वाचक इम बोले, प्रभु सरिखाइ थाय ॥९॥ तूं०॥

॥ अथ श्रीसुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ राग सिंधुडो ॥ चित्रोडा राजा रे॥ ए देशी ॥ तुझ सेवा सारी रे, शिव सुखनी त्यारी रे॥ मुझ लागे प्यारी रे, पण न्यारी छे ताह्री प्रकृति सुविधिजिना रे ॥ १ ॥ हेजें नवि बोले रे, स्तवीयो नवि मोले रे ॥ हीयडुं नवि खोले रे, तुझ तोले त्रिणजगमां निःसंगी को नहीं रे ॥ २ ॥ न जूवे जोतानें रे, न रीझे श्रोतानें रे ॥ रहे मेलें पोताने रे, श्रोताने जोताने तोहे वालहो रे ॥ ३ ॥ नवि तूसे न रूसे रे, न वखाणे न दूसे रे ॥ नवि आपे न मूसे रे, नवि चूंसे न मंझे रे कोइने कदा रे ॥ ४॥ न जणा ए धात रे, ते ह्युं शी वात रे ॥ एह जाणुं कहेवात रे, रहिवात न तोहे तुझ विणु मानने रे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ मन रंग धरी० ए देशी ॥ तुझ मुख सनमुख निरखतां,मुझ लोचन अमीय ठरंतां हो ॥ शीतल जिनवरजी ॥ तेह्नी शीतलता व्यापे, किम रहेवायें कहो तपेंहो ॥ १ ॥ शी०॥ तुझ नाम सुण्युं जव कानें, हियडुं आवे तव शानें हो ॥ शी० ॥ मूरछायो माणस वाटें, जिम सज हुये अमृत छांटे हो ॥ २ ॥ शी० ॥ शुभगंधने तरतम योगें,आकुलता हुइ भोगें हो ॥शी०॥ तुझ अदभुत देह सुवासें,तेह मिटिगइ रहत उदासें हो ॥ ३ ॥ शी० ॥ तुझ गुण संस्तवने रसना, छांडे अन्य

लवनी तृषना हो ॥शी०॥ पूजायें तुज तनु फरसे, फरस त शीतल थइ उल्लसे हो ॥४॥शी० ॥ मननी चंचलता नागी, सवि ढंफी थयो तुज रागी हो ॥ शी० ॥ कवि मान कहे तुज संगें, शीतलता थइ अंगो अंगें हो॥५॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ देशी वांहाणनी ॥ राग मल्हार ॥ श्रीश्रेयांस जिणंद, घनाघन गहगह्यो रे ॥ घना० ॥ वृक्ष अशोक नी बायें, सुन्नर बाइ रह्यो रे ॥ स० ॥ नामंमलनी झलक, झबूके वीजली रे ॥ झ० ॥ उन्नत गढ तिग ई इ, धनुष शोना मली रे ॥ ध० ॥ १ ॥ देवडुंडुहिनो नाद, गुहिर गाजे घणुं रे ॥ गु० ॥ नाविक जननां नाटिक, मोर क्रीडा नणुं रे ॥ मो० ॥ चामर केरी हार, चलंती बगतति रे ॥ च०॥ देशना सरस सुधारस, वरसे जिनपति रे ॥व०॥ २ ॥ समकिती चातक वृंद, तृपति पामे तिहां रे ॥ तृ० ॥ सकल कषाय दवानल, शांत हुवे जिहां रे ॥ शां० ॥ जन चित्तवृत्ति सुनू मि, त्रेहाली थइ रही रे ॥ त्रे० ॥ तिणे रोमांच अं कूर, वती काया लही रे ॥ व० ॥ ३ ॥ श्रमण कृषी बल सज्ज, हुवे तव ऊजमी रे ॥ हु० ॥ गुणवंत जन मनक्षेत्र, समारे संजमी रे ॥ स० ॥ करता बीजा धा न, सुधान नीपावता रे ॥ सु० ॥ जेणें जगना लोक, रहे सवि जीवता रे ॥ र० ॥ ४ ॥ गणधर गिरितट सं ग, थइ सूत्र गुंथना रे ॥ थ० ॥ तेह नदी परवाहें, हुइ बहु पावना रे ॥ हु०॥ एहज मोहोटो आधार, विषम

कालें लह्यो रे ॥ वि० ॥ मानविजय उवझाय, कहे में सद्दह्यो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ सीता तो रूपें रूडी ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य तूं साहिब साचो, जेहवो हुवे हीरो जाचो ॥ सुंदर सो जागी ॥ जस होये विरोधी वाचो, तेहनी करे सेवा काचो हो ॥ सुं० ॥ १ ॥ अरति वात उपावे, वलि नाव बताने छिपावे हो ॥ सुं० ॥ कांइनुं कांइ बोले, परनें निंदा करी मोले हो ॥ सुं० ॥ २ ॥ इम चउ विह मिथ्या नांखी, तेह देवनी कुण नरे साखी हो ॥सुं०॥ प्राणीना मर्मना घाती, हइडामां मोटी काती हो ॥ सुं०॥ ३ ॥ गुण विण रह्या उंचे ठाणे, किम देव ठहराय प्रमाणें हो ॥ सुं०॥ प्रासाद शिखर रह्यो काग, किम पामे गरुड जस लाग हो ॥ सुं० ॥ ॥ ४ ॥ तुं तो वीतराग नीरीह, तुझ वचन यथारथ लीह हो ॥ सुं०॥ कहे मानविजय उवझाय, तुं साचो देव ठहराय हो ॥ सुं० ॥ ५ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ राग मल्हारनी देशी ॥ जिहो विमल जिनेसर सुंदरु, लाला विमल वदन तुझ दिठ ॥ जिहो विमल हुउ मुझ आतमा, लाला तेणें तुं अंतर पइठ ॥ १ ॥ जिनेसर तुं मुझ प्राण आधार ॥ जिहो सकल जंतु हितकार, जिनेसर तूं मुझ प्राण आधार ॥ ए आंकणी ॥ जिहो विमल रहे विमलें थलें, लाला समलें समल

रमेय ॥ जिहो मानसरें रमे हंसलो, लाला वायस खाइ जलेय ॥ जि० ॥ २ ॥ जिहो तिम मिथ्यात्वी चित्तमां, लाला तुझ किम होये आजास ॥ जिहो तिहां कुदेव रंगें रमे, लाला समकित मन तुझ वास ॥ जि० ॥ ३ ॥ जिहो हीरो कुंदनशुं जडे, लाला दूधने साकर योग ॥ जिहो पलटे योगें वस्तुनो, लाला न होये गुण आजोग ॥ जि० ॥ ४ ॥ जिहो विमल पुरुष रहेवा तणुं, लाला थानक विमल करेय ॥ जिहो गृहपतिने तिहां शी तृपा, लाला नाटक उचित ग्रहेय ॥ जि० ॥ ॥ ५ ॥ जिहो तिम तें मुझ मन निर्मलुं, लाला कीधुं करते रे वास ॥ जिहो पुष्टि शुद्धि नाटक ग्रही, लाला हूं सुखीयो थयो खास ॥ ६ ॥ जिहो विमले विमल मिली रह्या, लाला भेद भाव रह्यो नांहिं ॥ जिहो मानविजय उवझायने, लाला अनुभव सुख थयो त्यांहिं ॥ जि० ॥ ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ श्री अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ राग मारु ॥ देशी करे लडानी ॥

॥ ज्ञान अनंतूं ताहरे रे, दरिसन ताहरे अनंत ॥ सुख अनंतमय साहिबा रे, विरज पण उल्लस्युं अनंत ॥ १ ॥ अनंत जिन आपजो रे ॥ मुझ एह अनंता चार ॥ अ० ॥ मुझने नही अवरशुं प्यार ॥ अ० ॥ तुझने आपंतां शी वार ॥ अ० ॥ एह छे तुझ यशनो गार ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ आप खजीनो न खोलवो रे, नही मलवानी चिंत ॥ माहरे पोतें छे सवे

रे, पण विचे आवरणनी भिंत ॥ अ० ॥ २ ॥ तप जप किरिया मोघरें रे, भांजी पण भांगी न जाय ॥ एक तुझ आण लगे थकी रे, हेलामां परही थाय ॥ अ०॥३॥ मातजणी मरुदेवीनें रे, जिन ऋषभें छणमां दीध ॥ आप पियारुं विचारतां रे, इम किम वीतरागता सिद्ध ॥ अ० ॥ ४ ॥ तेमाटे तस अरथीया रे, तुझ प्रार्थता जे कोइ लोक ॥ तेहने आपो आपणी रे, तिहां न घटे कराववी टोक ॥ अ०॥ ५ ॥ तेहनें तेहनुं आपवुं रे, तिहां श्यो उपजे छे खेद ॥ प्रार्थना करतें ताहरे रे, प्रभुताइनो पण नही भेद ॥अ०॥६॥ पाम्या पामे पामशे रे,ज्ञानादिक जेह अनंत.॥ ते तुझ आणाथी सवे रे, कहे मानविजय उल्लसंत ॥ अ०॥७॥

॥ अथ श्री धर्म जिन.स्तवनं ॥

॥ मुखने मरकलडे ॥ ए दशी ॥ श्री धर्म जिणंद दयाल जी ॥ धरम तणो दाता ॥ सविजंतु तणो रखवाल जी ॥ धर्म तणो त्राता ॥ जस अमीय समाणी वाणी जी ॥ध०॥ जेह निसुणे भवि प्राणी जी ॥ध० ॥ १ ॥ तेहना चित्तनो मल जाय जी ॥ ध० ॥ जिम कतकफलें जल थाय जी ॥ ध० ॥ निर्मलता तेहज धर्म जी ॥ ध० ॥ कलुषाइ मिथ्यानो मर्म जी ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ निज धर्म तो सहज सभाव जी ॥ ध० ॥ तो हि तुझ निमित्त प्रभाव जी ॥ ध० ॥ वनराजी फूल न शक्ति जी ॥ ध० ॥ पण ऋतुराजें होइ व्यक्ति जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ कमलाकरें कमल विकास जी ॥ ध०॥

सौभ्नता लखमी वास जी ॥ ध० ॥ ते दिनकर करणी जोय जी ॥ ध० ॥ इम धर्मदायक तुं होय जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ ते माटे धर्मना रागी जी ॥ ध० ॥ तुझ पद सेवे बडभागी जी ॥ ध० ॥ कहे मान विजय उवझाय जी ॥ ध० ॥ निज अनुभव ज्ञान पसाय जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवनं ॥

॥ घरे आवो जी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥ श्री शांतिजिनेसर साहिबा, तुझ नाठे किम छूटाशे ॥ में लीधी केडज ताहरी, तेह प्रसन्न थये मूकाशे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुं वीतरागपणुं दाखवी, भोला जनने भूलावे ॥ जाणी में कीधी प्रतिगन्या, तेहथी कहो को ण भोलावे ॥श्री०॥ २ ॥ कोइ कोइ ने केडें मत पडो, केडें पड्यां आणे वाज ॥ नीरागी पण प्रभु खेंचीयो, भक्तें करी में सातराज ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मनमांहि आणी वासियो, हवे किम निसरवा देवाय ॥ जो भेदरहित मुझशुं मिले, तो पलकमांहि छूटाय ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कबजे आव्या किम छूटशो, कीधा विण क हेण कृपाल ॥ तोशुं हठवाद लेइ रह्या, कहे मान क रो खुशीयाल ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री कुंथु जिन स्तवनं ॥

॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥ कुंथु जिनेसर जाणजो रे, मुझ मननो अभिप्राय रे ॥ जिनेसर ॥ तुं आतम अलवेसरु हो लाल, रखे तुझ विरहो थाय

रे ॥ जि० ॥ १ ॥ तुझ विरहो किम वेठीयें हो लाल, तुझ विरहो दुःखदाय रे ॥ जि० ॥ तुझ विरहो न ख माय रे ॥ जि० ॥ खिण वरसां शो थाय रे ॥जि०॥ विरहो मोहोटी बलाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ए आंक णी ॥ ताहरी पासें आववुं रे, पहिलां भावे तुं दाय रे ॥ जि० ॥ आव्या पछी तो जायवुं हो लाल, तु झ गुण वसे न सुहाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ २ ॥ न मल्यानो धोखो नहीं रे, रस गुणनूं नहीं नाण रे ॥ जि० ॥ मलिया गुण कलिया पछें हो लाल, विछरत जाये प्राण रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ३ ॥ जातिअंधने दुः ख नही रे, न लहे नयननो स्वाद रे ॥ जि० ॥ नय ण सवाद लही करी हो लाल, हार्यां ने विखवाद रे॥ जि० ॥ कुं० ॥ ४ ॥ बीजे पण किहां नवि गमे रे, जिणे तुझ विरह वंचाय रे ॥ जि० ॥ मालति कुसुमें माल्हीयो हो लाल, मधुप करीरें न जाय रे ॥ जि०॥ कुं० ॥ ५ ॥ वनदव दाधां रूंखडां रे, पाल्हवे वली वरसात रे ॥ जि० ॥ तुझ विरहानलना बल्या हो लाल, काल अनंत गमात रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ६ ॥ ताढक रहे तुझ संगमें रे, आकुलता मिटि जाय रे ॥ जि० ॥ तुझ संगें सुखीयो सदा हो लाल, मान विजय उवझाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ७ ॥ इति॥१७॥

॥ अथ श्री अरजिन स्तवनं ॥

॥ उधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥ श्री अरना थ उपासना, शुभवासना मूल ॥ हरिहर देव आशास

ना कुण आवे ज्ञूल ॥ श्री० ॥ १ ॥ दासना चित्तनी कुवासना, उदधासना कीध ॥ देवाजासनी जासना, वीसारी दीध ॥ श्री० ॥ २ ॥ वली मिथ्या वासनतणावासनारा जेह ॥ तेह कुगुरुनी शासना, हृश्ये न धरेह ॥ श्री० ॥ ३ ॥ सांसारिक आशंसना, तुऊशुं न कराय ॥ चिंतामणि देणहारने, किम काच मगाय ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तिम कल्पित गह्ववासना, वासना प्रतिबंध ॥ मान कहे एक जिन तणो, साचो संबंध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ श्री मल्लि जिन स्तवनं ॥

॥ सासू पूछे हे वहू ॥ ए देशी ॥ महिमा मल्लि जिणंदनो, एकें जीन्नें कह्यो किम जाय ॥ योग धरे जिन्न योगशुं, चाला पण योगना देखाय ॥ म० ॥ १ ॥ वयणे समजावे सजा, मन समजावे अनुत्तर देव ॥ औदारिक काया प्रत्यें, देव समीपें करावे सेव ॥ म० ॥ २ ॥ जाषा पण सवि श्रोताने, निज निज जाषायें समजाय ॥ हरखे निज निज रीजमां, प्रज्ञु तो निरविकार कहाय ॥ म० ॥ ३ ॥ योग अवस्था जिनतणी, ज्ञाता हुये तिणे समजाय ॥ चतुरनी वात चतुर लहे, मूढ बिचारा देखी मुंजाय ॥ म० ॥ ४ ॥ मूरख जन पामे नहिं, प्रज्ञु गुणनो अनुजव रस स्वाद ॥ मानविजय उवजायने, ते रसस्वादें गयो विखवाद ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ इमर आंबा आंबली रें ॥ ए देशी ॥ मुनि सुव्र

त कीजें मया रे, मनमांहि धरी महेर ॥ महेर विहू
णा मानवी रे, कठिण जणायें कहेर ॥१ ॥ जिणेसर
तुं जगन्नायक देव ॥ तुझ जगहित करवा टेव ॥जि०॥
बीजा जूवे करता सेव ॥ जि० ॥तुं० ॥ए आंकणी ॥
अरहट खेत्रनी नूमिका रे, सींचे कृतारथ होय ॥ धा
राधर सघली धरा रे, उद्धरवा सज्जजोय ॥ २ ॥
जि० ॥ ते माटे अश्व कारें रे, आणी मनमां महेर ॥
आपें आव्या आफणी रे, बोधवा नरुयच सहेर ॥
॥ ३ ॥ जि० ॥ अण प्रारथता उद्धस्था रे, आपें करी
य उपाय ॥ प्रारथता रहे विलवता रे, ए कुण कहीयें
न्याय ॥ ४ ॥ जि० ॥ संबंध पण तुझ मुझ विचें रे,
स्वामी सेवक नाव ॥ मान कहे हवे महेरनो रे, न
रह्यो अजर प्रस्ताव ॥ ५ ॥ जि० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ श्री नमि जिन स्तवनं ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री न
मिनाथ जिणंदनें रे, चरण कमल लय लाय ॥ मूकी
आपणी चपलता रे, तुछ कुसुमें मत जाय रे ॥ १ ॥
सुण मनमधुकर माहरी वात॥ म कर फोकट विलुपात
रे ॥सु० ॥ ए आंकणी ॥ विषम काल वरषाकृतु रे, क्र
में क्रमें हुउ व्यतीत ॥ छेहलो पुग्गल परियट्टो रे, आ
व्यो शरद प्रतीत रे ॥ २ ॥ सु० ॥ ग्यानावरण वादल
फटे रे, ग्यान सूरज परकाश ॥ ध्यान सरोवर विक
शीयां रे, केवल लक्ष्मी वास रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ नामें
ललचावे कोइ रें, कोइक नव नव राग ॥ एहवी वास

ना नही बीजे रे, शुद्ध अनुजव सुपराग रे ॥ ४ ॥ जमत जमत कहावियें रे, मधुकरनो रसस्वाद ॥ मा नविजय मनने कहे रे, रस चाखो आल्हाद रे ॥ ५॥

॥ अथ श्री नेमिजिन स्तवनं ॥

॥ अब प्रजुशुं इतनी कहूं॥ ए देशी ॥ नेमिजिणं द निरंजणो, जइ मोहथलें जलकेली रे ॥ मोहना उद जटगोपी, एकलमल्लें नाख्या ठेली रे ॥ १ ॥ सामि सलूणा साहिबा॥ अतुलीबल तुं वडवीर रे ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ कोइक ताकी मूकती, अति तीखां कटा क्षनां बाण रे ॥ वेधक वयण बंधूक गोली, जे लागे जाये प्राण रे ॥ २ ॥ सा० ॥ अंगुली कटारी घोंचती, उल्लालति वेणी कृपाण रे ॥ सिंधो जालां उगामती, सिंगी जलजरे कोकबाण रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ फूलदडा गोला नाखे, जे सत्त्व गढें करे चोट रे ॥ कुचयु ग करि कुंजस्थलें, प्रहरती हृदयकपाट रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ शील सन्नाह उन्नत सत्त्वें, अरि शस्त्रना गोला न लागा रे ॥ सोर करी मिथ्या सवे, मोह सुजट दहो दीसे जागा रे ॥ ५ ॥ सा० ॥ तव नव जव योद्धो मं म्यो, सजी विवाह मंम्प कोट रे ॥ प्रजु पण तस स न मुख गयो, नीसाणें देतो चोट रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ चा करी मोहनी ठोडवी, राजुलने शिवपुर दीध रे ॥ आपे रैवत गिरि चढी, जीतर संयम गढ लीध रे ॥ ७ ॥ सा० ॥ श्रमणधरम योद्धा लडे, संवेग खड्ग धृति ढा ल रे ॥ जाल केश उखाडतो, शुज जावना गडगडे

नाल रे ॥ ८ ॥ सा० ॥ ध्यान धाराशर वर्षतो, हणो मोह थयो जगनाथ रे ॥ मानविजय वाचक वदे, में ग्रह्यो ताहरो साथ रे ॥ ए ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ देहु देहु नणद हठीली ॥ ए देशी ॥ श्री पासजी प्रगट प्रनावी, तुझ मूरति मुझ मन नावी रे ॥ मनमोहना जिनराया ॥ सुर नर किन्नर गुण गाया रे ॥ म० ॥ जे दिनथी मूरति दीठी, ते दिनथी आपद नीठी रे ॥ १ ॥ म० ॥ मुख मटकालुं सुप्रसन्न, देखत रीझे नविमन्न रे ॥ म० ॥ समतारस केरां कचोलां, नयणां दीठे रंगरोलां रे ॥ २ ॥ म० ॥ हाथें न धरे हथीयार, नही जपमालानो प्रचार रे ॥ म० ॥ उत्संगें न धरे वामा, जेहथी उपजे सवि कामा रे ॥ ॥ ३ ॥ म० ॥ न करे गीत नृत्यना चाला, एतो प्रत्यक्ष नटना ख्याला रे ॥ म० ॥ न वजावे आपें वाजां, न धरे वस्त्र जीरण साजां रे ॥ ४ ॥ म० ॥ इम मूरति तुझ निरुपाधि, वीतरागपणे करी साधी रे ॥ म० ॥ कहे मानविजय उवझाया, में अवलंब्या तुझ पाया रे ॥ ५ ॥ म० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ हेमराज जग जस जीत्यो ॥ ए देशी ॥ शासन नायक साहिब साचो, अतुली बल अरिहंत ॥ कर्म अरिबल सबल निवारी, मारीय मोह महंत ॥ ॥ १ ॥ महावीर जगमां जीत्यो जी ॥ हांजी जीत्यो

जीत्यो आप सहाय, हांजी जीत्यो जीत्यो ग्यान प साय, हांजी जीत्यो जीत्यो ध्यान दशाय, हांजी जीत्यो जीत्यो जग सुखदाय ॥ म० ॥ अनंतानुबंधी वड योद्धा, हणीया पहिली चोट ॥ मंत्री मिथ्यात पछे तिगरूपी, तव करी आगल दोट ॥ २ ॥ म० ॥ नांजि हेड आयुष तिग केरी, इग विगलिंदिय जाति ॥ एह मेवासि नांज्यो चिरकाली, नरकयुगल संघाति ॥ ३ ॥ म० ॥ थावर तिरि डुगफांसि कटावी, साहारण हणी धाडी ॥ थीणद्धीतिग मदिरा वयरी, आतप उद्योत उखाडी ॥ ४ ॥ म० ॥ अपच्चरकाणा अने पच्चरकाणा, हणीया योद्धा आठ ॥ वेद नपुंसक स्त्री सेनानी, प्रति बिंबित गया नाठ ॥ ५ ॥ म० ॥ हास्य रति अरति शोक डुगंछा, नय एह मोहखवास ॥ हणीया पुरुष वेद फोज दारा, पछे संजलनो नाश ॥ ६ ॥ म० ॥ निद्रा दोय मोह पटराणी, घरमांथी संहारी ॥ अंतराय दरिसणने ग्याना, वरणीय लडतां मारी ॥ ७ ॥ म० ॥ जय जय हुउ मोहज मुउ, हूउ तूं जगनाथ ॥ लोकालोक प्रकाश थयो तव, मोक्ष चलावे साथ ॥ ८ ॥ म० ॥ जीत्यो तिम जगतने जीतावे, मूकायो मूकावे ॥ तरण तारण सम रथ छे तूंही, मानविजय नित्य ध्यावे ॥ ए ॥ म० ॥

॥ इति महावीर जिन स्तवनम् समाप्तम् ॥ तत्समा प्तोयं उपाध्याय श्री मानविजयजी कृत चोवीशी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्री रामविजयजीकृत चोवीश जिन ॥
॥ स्तवन प्रारंभः ॥



॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्री ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ योग माया गरबे रमे जो ॥ ए देशी ॥ उलगडी आदिनाथनी जो, कांइ कीजियें मनने कोड जो ॥ होड करे कोण नाथनी जो, जेहना पाय नमे सुर कोड जो ॥ उल० ॥ १ ॥ वाहालो मरुदेवीनो लाडलो जो, राणी सुनंदाना हइयानो हार जो ॥ त्रण भुवननो नाहलो जो, महारा प्राण तणो आधार जो ॥ उल० ॥ २ ॥ वाहाले वीश पूरव लख भोगव्युं जो, रूडुं कुमरपणुं रंगरेल जो ॥ मनडुं मोह्युं रे जिन रूपशुं जो, जाणे जगमां मोहन वेल जो ॥ उल० ॥ ३ ॥ प्रभुनी पांचशें धनुषनी देहडी जो, लख पूरव त्रेशठराज जो ॥ लाख पूरव समता वरी जो, थया शिव सुंदरीवरराज जो ॥ उल० ॥ ४ ॥ एना नामथी नव निधि संपजे जो, वली अलिय विघन सवि जाय जो ॥ श्री सुमतिविजय कविराजनो जो, एम रामविजय गुण गाय जो ॥ उल०॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ सोना ते केरुं महारुं बेडलुं रेलो, रूपला इंढोणी

हाथ, मह्रारा वाह्लाजी रे ॥ हवे नही जाउं मही वेचवा रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ अजित जिनेसर साहिबा रेलो, वीनतडी अव धार ॥ मह्रारा वाह्लाजी रे ॥ हवे नही गेडुं तारी चाकरी रेलो ॥ तुं मनरंजन मह्रारो रेलो, दील डानो जाणणहार ॥ मह्रा० ॥ ह० ॥ १ ॥ लाख चो राशीहुं नम्या रेलो, काल अनंतो अनंत ॥ म० ॥ ते लग लीधी में ताहेरी रेलो, नांगी ठे नव तणी त्रांत ॥ म०॥ह०॥२॥ करि सुनजर हवे साहिबा रेलो, दास धरो दीलमांहि ॥ म० ॥ लाख गुण हीन पण ता हरो रेलो, सेवक हुं महाराज ॥म०॥ ह० ॥३॥ अव गुण गणतां माहरा रेलो, नही आवे प्रन्नु पार ॥ म० ॥ पण जिन. प्रवहणनी परें रेलो, तुमें गे तारण हार ॥म०॥ह०॥४॥ नयरी अजोध्यानो धणी रेलो, विजया उयरें सरहंस ॥ म० ॥ जितशत्रु रा यनो नंदनो रेलो, धन इक्ष्वाकुनो वंश ॥म०॥ह०॥ ॥ ५ ॥ धनु सय साढा चारनी रेलो, देहडी रंग स नूर ॥ म० ॥ बोहोंतेर पूरव लाखनुं रेलो, आयु अ धिक सुख पूर ॥म०॥ ह० ॥६॥ पंचम आरे तुं मल्यो रेलो, प्रगट्या ठे पुण्य निधान ॥ म०॥ सुमति सुगुरु पद सेवतां रेलो, राम अधिक तनुवान ॥म०॥ह०॥७॥

॥ अथ श्री संनव जिन स्तवनं ॥

॥ तुने गोकुल बोलावे कहान, गोविंद गोरी रे ॥ आलोने महीनां दाण, न करो चोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मने संभव जिनशुं प्रीत, अविहड लागी रे ॥ कांइ देखत प्रभु मुखचंद, भावठ भागी रे ॥ १ ॥ जिन सेनानंदन देव, दीलडे वसीया रे ॥ प्रभु चरण नमे कर जोड, अनुभव रसीया रे ॥ २ ॥ तोरी धनुसय चार प्रमाण, उंची काया रे ॥ मनमोहन कंचन वान, लागी तोरी माया रे ॥ ३ ॥ प्रभु राय जितारी नंद, नयणें दीठो रे ॥ सावत्थी पुर शणगार, लागे मुने मीठो रे ॥ ४ ॥ प्रभु ब्रह्मचारी भगवान, नाम सुणा वे रे ॥ पण मुक्तिवधू वशी मंत्र, पाठ भणावे रे ॥५॥ मुझ रढ लागी मनमांहे, तुझ गुण केरी रे ॥ नहीं तुझ मूरतिने तोल, सुरत भलेरी रे ॥ ६ ॥ जिन महेर करी भगवान, वान वधारो रे ॥ श्री सुमति विजय गुरु शिष्य, दिलमां धारो रे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ घम घम घमके घूघरा रे, घूघरे हीरनी दो रके घमके० ॥ ए देशी ॥ श्री अभिनंदन जिन स्वा मीने रे, सेवे सुर कुमरीनी कोड के ॥ प्रभुनी चाकरी रे ॥ मुख मटके मोही रही रे, उभी आगल बे कर जोड के ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ स्वर झीणे आलापती रे, गाती जिन गुण गीत रसाल के ॥ प्रभु० ॥ ताल मृदं ग वजावती रे, देती भमरी भमरी बाल के ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ घम घम घमके घूघरी रे, खलके कटिमेखल सार के ॥ प्रभु० ॥ नाटिक नव नव नाचती रे, बो ले प्रभु गुण गीत उच्चार के ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सुत सिद्धा

रथ मातनो रे, संवर नृपति कुल शणगार के ॥ प्र० ॥ धनु शत साडा त्रणनी रे, प्रभुजीनी दीपे देह अ पार के ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पूरव लाख पचासनुं रे, पाली आय लह्युं शुभ गण के ॥ प्र० ॥ नयरी अयोध्यानो राजीयो रे,दरिसण नाण रयण गुण खाण के ॥ प्र० ॥ ५ ॥ सेवो समरथ साहिबो रे, साचो शिवरमणीनो साथ के ॥ प्र० ॥ मुझ हीयडा मांहि वस्यो रे, वाहा लो तीन भुवननो नाथ के ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इणी परें जिन गुण गावतां रे, लहिएं अनुभव सुख रसाल के ॥ प्र० ॥ रामविजय प्रभु सेवतां रे, करतां नित नित मंगलमाल के ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ गरबो कोणेने कोराव्यो के, नंदजीना लाल रे॥ ए देशी ॥ पंचम सुमति जिनेसर सामी के ॥ सुण जिन राय रे ॥ तुमथी नवनिधि रुद्धि में पामी के॥ शिव सुख दाय रे ॥ तुं तो पावन परम नगीनो के ॥सु० ॥ अहनिश समता रसमां भीनो के ॥ सुरगुण गाय रे ॥ १ ॥ मंगला मावडीयें प्रभु जाया के ॥ सु०॥ छप्पन दिशि कुंमरी हुलराया के॥ हरख न माय रे ॥ ताहरुं मुख लखमीनो वीरो के ॥ सु० ॥ तुं तो मेघनृपति कुल हीरो के ॥ हरि नत पाय रे ॥ २ ॥ त्रणशें धनुषनी उंची काया के ॥ सु० ॥ चा लीश पूरव लाखनुं आयु के ॥ नागर राय रे ॥ तहा री सेव करे सुरसामी के ॥ सु० ॥ तुंतो शिव सुंदरी

सुखकामी के ॥ निर्मल काय रे ॥ ३ ॥ तुंतो भक्त वत्सल भय टाले के ॥ सु० ॥ तुं तो त्रण भुवन अजूआले के ॥ जिम दिनराय रे ॥ तुं तो मुनिजन मानस दीवो के ॥ सु० ॥ अविचल ध्रुवमंमल चिरंजीवो के ॥ जिम गिरिराय रे ॥ ४ ॥ प्रभुजीनी वाणी अमीरस मीठी के ॥ सु० ॥ जिनजीनी मोहन मूर्त्ति दीठी के ॥ अति सुख थाय रे ॥ श्री गुरु सुमतिविजय कविराया के ॥ सु० ॥ सेवक रामविजय गुण गाया के ॥ जयो जिन राय रे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभजिन स्तवनं ॥

फूंबखाडानी देशी ॥ श्री पद्मप्रभ जिन सेवियें रे, शिवसुंदरी भरतार ॥ कमल दल आंखडीयां ॥ मोहनशुं मन मोही रह्युं रे,रूप तणो नहिं पार ॥ भमुह धनु वांकडियां ॥ १ ॥ अरुण कमलसम देहडी रे, जगजीवन जिनराय॥वयण रस शेलडियां ॥ त्रीश पूरव लख आऊखुं रे,सारे वंछित काज ॥ मोहन सुग्वेलडियां ॥ २ ॥ सहियरो सवि टोलें थइ रे, शोभे सजी शणगार ॥ मिलि सखि शेरडियां ॥ गुण गाती घुमरी दीये रे, करी चूडी खलकार ॥ कमलमुख गोरडियां ॥३॥ मात सुसीमा उरें धस्यो रे, मुझ दिलडामांहे देव ॥ वस्यो दिनरातडियां ॥ कोसंबी नयरी तणो रे, नाथ नमो नित्यमेव ॥ सुणो सखि वातडीयां ॥ ४॥ धनुष अढीशय शोभिती रे,उंच पणे जगदीश ॥ नमो साहे

लडियां ॥ रामविजय प्रभु सेवतां रे, लहियें सयल जगीश ॥ वधे सुख वेलडियां ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ नायता रे तुमें चाल्या गढ आगरे रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ सेवजो रे सामी सुपास जिणेसरु रे ॥ लाल, पूजीयें धरी मन रंग रे लाल ॥ मोरे मन मान्यो साहेबो रे लाल, प्रेमथी रे प्रीति बनी जिन राजशुं रे ॥ लाल ॥ जेहवो चोलनो रंग रे लाल ॥ १ ॥ मोरे मन मान्यो साहेबो रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ धरजो रे धन पृथिवी राणी सती रे ॥ लाल ॥ जायो जेणें रतन्न रे लाल ॥ मोरे० ॥ दीपती रे दिसिकुमरी आवी तिहां रे ॥ लाल, करती कोडी जतन रे लाल ॥मो०॥ ॥ २ ॥ जोरथी रे जिनमुख निरखी नाचती रे ॥ लाल, हर्षती दीये आशीष रे लाल ॥ मो० ॥ चाहती रे चिरंजीवो तुं बालुडा रे ॥ लाल, त्रण भुवनना ईश रे लाल ॥ मो० ॥ ३ ॥ फावती रे फरती फूदडली दीये रे ॥ लाल, मदभर माती जेह रे लाल ॥मो०॥ नाथने रे नेह नयण भरी जोवती रे ॥ लाल, गुण गाती ससनेह रे लाल ॥ ४ ॥ आदरें रे एम हुलरावी बालने रे लाल, पोहोती ते निज गेह रे लाल ॥ मो० ॥ प्रेमशुं रे प्रभु वाधे मन मोहता रे ॥ लाल, दोयसें धनुषनी देह रे लाल ॥ मो० ॥ ५ ॥ रागथी रे राजकुमरी रलीयामणी रे ॥ लाल, परण्या

प्रभु सुविलास रे लाल ॥ मो० ॥ मानजो रे मोह तणे वशें माहरो रे लाल, नाथ रहे गृहवास रे ॥ लाल ॥ मो० ॥ ६ ॥ भावथी रे भोग तजी दीक्षा वरी रे ॥ लाल, वीश पूरव लख आय रे लाल ॥मो०॥ जागतो रें ज्योति सरूपी जगदीसरू रे ॥ लाल, रामविजय गुण गाय रे लाल ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ जिनजीनुं स्तवन ॥

॥ रायजी अमें तो हिंदुआणी के, राय गराशीया रे लो ॥ ए देशी ॥ जिनजी चंद्रप्रभ अवधारो के, नाथ नीहालजो रे लो ॥ के बमणी बिरुद गरीब नीवाजनी, वाचा पालजो रे लो ॥ १ ॥ हरखें हुं तुम शरणें आयो के, मुझने राखजो रे लो ॥ चोरटा चार चुगल जे भूंमा, ते दूरें नाखजो रे लो ॥ ॥ २ ॥ प्रभुजी पंचतणी परशंसा के, रूडी थापजो रे लो ॥ मोहन महेर करीने दरिसन, मुझने आपजो रे लो ॥ ३ ॥ तारक तुम पालव में झाल्यो के, हवे मुने तारजो रे लो ॥ कुतरी कुमति थइ छे केडें के, तेहने वारजो रे लो ॥ ४ ॥ सुंदरी सुमति सोहागण सारी के, प्यारी छे घणुं रे लो ॥ तातजी तेविण जीवें चउद, भुवन कर्युं आंगणुं रे लो ॥ ५ ॥ लख गुण लखमणा राणीना जाया के, मुझ मन आवजो रे लो ॥ अनुपम अनुभव अमृत मीठी के, सुखडी लावजो रे लो ॥ ६ ॥ दीपती दोढशो धनुष प्रमाण के, प्रभुजीनी देहडी रे लो ॥ देवनी दश पूरव

लखमान के, आयुष्य वेलडी रेलो ॥ ७ ॥ निर्गुण निरागी पण हुं रागी के, मनमांहे रह्यो रे लो ॥ शुभगुरु सुमतिविजय सुपसाय के, रामें सुख लह्यो रे लोल ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ सोवन लोटा जलें भर्या कुडाली दोरी ॥ शां शां दातण लेश रे, ल्योने राम ल्योने दोरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधि जिणेसर जागतो, जग मोहन सामी ॥ राय सुग्रीवनो नंद रे, वंदो लाल अंतरजामी ॥ १ ॥ भरीय कचोली कुमकुमें, मांहे मृगमद घोली ॥ पूजो प्रभु नव. अंग रे, रंगें लाल सहीयर टोली ॥ २ ॥ केशरनी आंगी रची, मांहे हीरा दीपे ॥ जोर बन्यो जिनराज रे, तेजें .लाल सूरज झीपे ॥ ३ ॥ मुकुट धर्यो शिर शोभतो, मणि रयण विराजे ॥ झलके कुंमल जोडी रे, हैयडे हार निर्मल छाजे ॥ ४ ॥ करी पूजा मन भावशुं, प्रभु हैयडे धरती ॥ धरती ठवती पाय रे, जोवे लाल जिनमुख फरती ॥ ५ ॥ काकंदी नयरी धणी, शत धनुषनी काया ॥ लाख पूरव दोय आय रे, नवमो लाल ए जिनराया ॥ ६ ॥ श्री सुमति विजय गुरुनामथी, नित्य मंगल माला ॥ रामविजय जयकार रे, जपतां लाल जिनगुण माला ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ पाटणनी पटोली रे, राजिंद लावजो रे लो ॥ ए देशी ॥ श्री भद्दिलपुरना वासी रे, साहेब माहेरा रे ॥

श्रवणे ने सुणिया रे, गुण बहु ताहेरा रे ॥ सुण मोरा मीठडा सिरि जगवंत, केवल कमलाना हो कंत, सेवकने निज चरणे रे राजिंद राखजो रे॥ १ ॥ साते ने वली राज रे, राजिंद अलगो वसे रे॥ तिहां किण ने आवणने रे, मनडुं उल्लसे रे ॥ सुण मोरा साहेब लाल गुलाल, सेवक नेह नयणे निहाल, नयणो नी लीला रे तारी तारशो रे ॥ २ ॥ श्री शीतल जिन मुझ मन, मंदिर आवजो रे ॥ शिवरमणीना रसीया रे, दिलमां लावजो रे ॥ प्रभुजी मोरा ताहरुं अकल सरूप, तुझथी अगम नहिं मनरूप जीवडलो लल चाणो रे, प्रभुजीनी सूरतें रे ॥३॥ नेवुं धनुष परिमाणें रे, नंदा मातनो रे ॥ श्रीवत्सलंछन रे, दृढरथ तातनो रे ॥ प्रभु मोरा अवधारो गुण गेह, जिनजी तुजशुं मुज मन नेह, नेहडलानी वातो रे, राजिंद दोहली रे ॥ ४ ॥ वीनतडी सांभलीने रे, साहामुं भालजो रे ॥ भव भवनां पातकडां रे, अलगां टालजो रे ॥ प्रभु मोरा तुमें छो गरीब नीवाज, श्री गुरु सुमति विजय कविराज, बालक सेवकने रे, लेखे आणजो रे ॥ ५ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ विजल वोलावा डुंगइ, कांइ उभी सेरी विच्च ॥
विजल वालमा ॥ ए देशी ॥

॥ तारक बिरुद सुणी करी, हुं आवी उभो दरबार ॥ श्रेयांस साहेबा ॥ प्रभु ताणो ताण नकी

जिएं ॥ मुज उतारो नवपार ॥१॥ श्रेयांस साहेबा ॥ कालादिक दूषण दाखतां, दातारपणुं केम थाय ॥ श्रे० ॥ जो विण अवलंबन तारीएं, तो जग सघलुं जश गाय ॥ श्रे० ॥२॥ श्रेयांस० ॥ बालकने समजाववा, कहेशो नोलामणे वा ॥ श्रेयांस०॥ पण हव लीधो मुकीश नही, विणतारे त्रिनुवन तात ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ श्रे० ॥ जो मन तारणनुं अछे, तो ढील तणुं शुं काम ॥ श्रे० ॥ चातक निरमुख दूषणे, थइ मेघ घटा जग श्याम ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ श्रे० ॥ तुज दरिसनथी ताहेरो, हुं कहेवाणो जगमांहे ॥ श्रे० ॥ ॥ हवे मुझ कोण लोपी शके, बलीयानी झाली बांह ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ श्रे० ॥ विष्णुकुमर वाले सरू, प्रनु सिंहपुरीनो राय ॥ श्रे० ॥ लाख चोराशी वरसनुं, प्रनु पाल्युं पूरण आय ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ श्रे० ॥ धनुष एंशी तनु शोनतुं, खडगी लंछन जगदीश ॥ श्रे० ॥ हरख धरीने वीनवे, श्री सुमतिविजय गुरु शिष्य ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ इति ॥ श्रेयांस स्तवनं

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ नंदना गोवालीया ॥ ए देशी ॥ श्री वासुपूज्य नरिंदना, नंदन जन नयणानंद ॥ श्री जिन वालहा ॥ प्रनु किम आवुं तुम ढलगें, मारे कूडो कुटुंबनो फंद ॥ १ ॥ श्री जिन सांनलो ॥ कुमति रमणी मोहनंदनी, मुज केड न मूके तेह ॥ श्री जि० ॥ मित्र मिल्यो ते लोनीउ, लागो तेहशुं बहुनेह ॥२ ॥ श्री जिन०॥

त्रेवीश मिल्या धूतारडा, तेहना वली नव नवा रंग ॥ श्री जिन० ॥ अह निश तेणे हुं नोलव्यो, न धर्यो प्रजु साथें रंग ॥ ३ ॥ श्री जिन० ॥ प्रजु दरशनें तरसे घणुं, जिन मुज मनडुं दिन रात ॥ श्री जिन० ॥ पण दश त्रण आमा रहे, जे नीच घणुं कमजात ॥ ४ ॥ श्री जिन० ॥ कूडो कलियुग आजनो, बहु गाफरीयो प्रवाह ॥ श्री० ॥ ताहरुं रूप न उलखे, नही शुद्ध धरमनी चाह ॥ ५ ॥ श्री० ॥ प्रजु दरशन विण जीवडा, करता दीसे व्यवहार ॥ श्री० ॥ तेणे जरमे जूला घणा, प्रजु दोहिलो लोकाचार ॥ ६ ॥ श्री जिन० ॥ वरस बहोंतेर लख आउखुं, गोरी सीतेर धनुष्य तनु सार ॥ श्री० ॥ श्री रामविजय करजोडीने, कहे उतारो जवपार ॥ ७ ॥ श्री जिन० ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ फूल वारीयां वारीयां शुं करो, फूल नोजन करता ॥ ॥ जाउ रे ॥ बारीयां फूलजी ॥ ए देशी ॥

॥ जिन विमलवदन रलीयामणुं, जाणे कनक कमलनो राय रे ॥ विमल जिणंदजी ॥ जिन अधर अमीरस नूमिनो, प्रतिबिंबित बिंब सुहाय रे ॥ १ ॥ विमल जिणंदजी ॥ जिन अनुपम रूपनी रेखमां, नवि आवे सुरना इंद रे ॥ विमल० ॥ जिन मुख टीको नीको बन्यो, मानुं उग्यो उज्ज्वल चंद रे ॥ २ ॥ विमल० ॥ जिन दाडिम कली जेम उपती, अति दीपे दंतनी उल रे ॥ विमल० ॥ ए अरुण अधर छबीथी

मल्या, मानुं मुक्ताफल समतोल रे ॥ ३ ॥ विमल० ॥ जिन अकल अरूपी रूप छे, पण सकल सरूपी जाण रे ॥ विमल० ॥ जिन अगणित गुणना दोरथी, मन मांकडुं बांध्युं ताण रे ॥ ४ ॥ विमल० ॥ जिन शिव सुखदायक सांजली, हुं हरख्यो हैडा मांहे रे ॥ विमल० ॥ जिन इकतारी तुज शुं करी, जिम चंदचकोरी चाहे रे ॥ ५ ॥ विमल० ॥ प्रजु एवडी विमासण शुं करो, नही खोट खजाने तुज रे ॥ विमल० ॥ जो नापो तो सहामुं जूउं, तो वंछित फलशे मुज रे ॥ ६ ॥ विमल० ॥ सुत कृतवर्मा श्यामा तणो, शाठ लाख धनुष तनु आय रे ॥ विमल० ॥ श्री सुमतिविजय कविरायनो, एम रामविजय गुण गाय रे ॥ विमल० ॥ ७ ॥ इति विमल० ॥

॥ अथ श्री अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ साबर मतीयें आव्या छे जरपूर जो ॥ ए देशी ॥

॥ सुजसा नंदन जगदानंदन नाथ जो, नेहें रे नव रंगें नित नित जेटीयें रेलो ॥ जेट्याथी शुं थाये मोरी सहीयो जो, जव जवनां पातिकडां अलगां मेटीयें रेलो ॥ १ ॥ सुंदर साडी पेहेरी चरणा चीर जो, आवोने चहुवटडे जिनगुण गाइयें रेलो ॥ जिन गुण गाये शुं थाय मोरी बहेनी जो, परजव रे सुरपदवी सुंदर पामीयें रेलो ॥ २ ॥ सहीयर टोली जोली परिगल जावें जो, गावे रे गुणवंती हैयडे गह गही रेलो ॥ जय जग नायक शिव सुखदायक देव

जो, लायक रे तुज सरिखो जगमां को नही रेलो ॥ ॥ ३ ॥ परम निरंजन निर्जित नय नगवंत जो, पावन रे परमातम श्रवणें सांजव्यो रेलो ॥ पामी हवे में तुऊ शासन परतीत जो, ध्यानें रे एकतानें प्रनु आवी मव्यो रेलो ॥ ४ ॥ उंचपणे पंचाश धनुषनुं मान जो, पाल्युं रे वली आयुष लाखज त्रीशनुं रे लो ॥ श्रीगुरु सुमति विजय कविराय पसायें जो, अहो निश रे दिल ध्यान वसे जगदीशनुं रेलो ॥५॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्म जिन स्तवनं ॥

॥ बाइ रे गरबडो ॥ ए देशी ॥ धर्म जिनेसर सेवीयें रे, नानु नरेशर नंद ॥ बाइ रे जिन वडो ॥ जिन ध्यानें डुःख वीसर्युं रे, हुं पामी परमानंद ॥ बा० ॥ ॥ १ ॥ रत्नजडित सिंहासनें रे, बेसे श्री नगवान ॥ बा० ॥ मुह आगल नाचे सुरी रे, इंइ करे गुण गान ॥ बा० ॥ २ ॥ प्रनु वरसे तिहां देशना रे, जिम आषाढो मेह ॥ बा०॥ ताप टले तननो परो रे, वाधे वमणो नेह ॥ बा० ॥ ३ ॥ अणवायां गयणे घुरे रे, वाजित्र कोडा कोड ॥ बा० ॥ ताथेइ नाचे किन्नरी रे, हीमे मोडामोड ॥ बा० ॥ ४ ॥ आयु वरष दश लाखनुं रे, धनु पण चालिश मान ॥ बा० ॥ रामविजय जिन नामथी रे, लहीयें नवे निधान ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवनं ॥

॥ सुंदर शांति जिणंदनी, बबि बाजे बे ॥ प्रनु गंगा

जल गंभीर, कीर्त्ति गाजे छे॥ गजपुर नयर सोहामणुं, घणुं दीपे छे॥ विश्वसेन नरिंदनो नंद, कंदर्प्प झीपे छे ॥ १ ॥ अचिरा मातायें उर धस्यो, मन रंजे छे॥ मृगलंछन कंचन वान, भावठ भंजे छे ॥ २ ॥ प्रभु लाख वरस चोथे भागें, व्रत लीधुं छे ॥ प्रभु पाम्या केवल ज्ञान, कारज सीधुं छे ॥ ३ ॥ धनुष चालीशनुं ईशनुं, तनु सोहे छे ॥ प्रभु देशना धुनि वरसंत, भवि पडिबोहे छे॥ ४ ॥ भक्तवत्सल प्रभुता भणी, जन तारे छे॥ बूडंतां भवजल मांहि, पार उतारे छे ॥५॥ श्री सुमति विजय गुरुनामथी, दुःख नासे छे ॥ कहे रामविजय जिन ध्यान, नवनिधि पासें छे ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ स्तवनं ॥

॥ देशी रसीयानाा गीतनी छे ॥ रसीया कुंथु जिनेसर केसर, भीनी देहडी रे लो ॥ मारा नाथजी रे लो ॥ रसीया मन वंछित वर पूरण, सुरतरु वेलडी रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया अंजन रहित निरंजन, नाम हइए धरो रे लो ॥ महारा०॥ रसीया जुगतें करी मन भगतें, प्रभु पूजा करो रे लो ॥१॥ महारा०॥ रसीया श्री नंदन आनंदन, चंदनथी सिरे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया ताप निवारण तारण, तरण तरीपरें रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया मनमोहन जग सोहन, कोइ नहि किस्यो रे लो ॥ महारा० ॥ रसिया कूडा कलियुग मांहे, अवर न को इस्यो रे लो ॥ महारा० ॥ २ ॥ रसीया गुण संभारी जाउं, बलिहारी नाथनें रे लो ॥ महारा०॥

रसीया कोण प्रसादें ढांके, शिवपुर साथनें रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया काच तणे कोण कारण, नाखे सुर मणि रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया कोण चाखे विष फल ने, मेवा अवगणी रे लो ॥ ३ ॥ महारा० ॥ रसीया सूर नृपति सुत गावो, चावो चिहुं दिशे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया वरस सहस पंचाणुं, जिन पुहवी वसे रे लो ॥ महारा०॥ रसीया त्रीश धनुष पण उपर, उंचपणे प्रभु रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया त्रण भुवन नो नाथ के, थइ बेठो विभु रे लो ॥ ४ ॥ महारा० ॥ रसीया अजलंछन गत लंछन, कंचनवान छे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया ऋद्धि पूरे दुःख चूरे, जेहने ध्या न छे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया बुध श्री सुमति विज य कवि, सेवक वीनवे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया राम कहे जिनशासन, नवि मूकुं हवे रे लो ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ सींचजो रे वाडीमांनी वेल, सींचजो कटारो केवडो ॥

॥ रे ॥ ए देशी ॥

॥ गायजो रे धरी उल्लास, अर जिनवर जगदीस रू रे ॥ मानजो रे एह महंत, महीयल मांहे वालेस रू रे ॥ १ ॥ ध्याइजो रे दृढ करी चित्त, मन वंछित फल पूरशे रे ॥ वारजो रे अवरनी सेव, एहिज शंका चूरशे रे ॥ २ ॥ सींचजो रे सुमतीनी वेल, जिन गुण ध्यान नीरें घणुं रे ॥ संपजे रे समकित फूल, के वल फल रलियामणुं रे ॥३॥ पुण्यथी रे देवी नंद, नय

एें निरख्यो नेहथी रे ॥ उपनो रे अति आनंद, दुःख अलगां थयां जेहथी रे ॥ ४ ॥ शोजती रे त्रीश धनु षनी काय, राय सुदर्शन वंशनो रे ॥ आउखुं रे जि नजीनुं सार, सहस चोराशी वरसनुं रे ॥ ५ ॥ जिन राजने रे करुं परणाम, काज सरे सवि आपणुं रे ॥ नावथी रे नक्ति प्रमाण, दरिसन फल पामे घणुं रे ॥ ६ ॥ सेवजो रे अरपद अरविंद, जो शिव सुख नी कामना रे ॥ राखजो रे प्रजु हृदय मोकार, राम वधे जग नामना रे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मह्लीनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ एक अंधारी रे रातडी ॥ ए देशी ॥ मिथिला नयरी रे अवतस्या, याने कुंन नरेशर नंद ॥ लंबन शोहे रे कलश तणुं, ने नील वरण सुखकंद ॥ १ ॥ मह्ली जिनेसर मन वस्यो ॥ ने उगणीशमो अरिहंत, कपट धर्मना रे कारणथी, प्रजु कुमरी रूप धरंत ॥ म० ॥ २ ॥ सहस पंचावन रे वरस सुणो, ने आ युतणुं परिमाण ॥ मात प्रजावती रे उर धस्यो, पण वीश धनुषतनु मान ॥ म० ॥ ३ ॥ सहस पंचावन रे साधवीयो, ने मुनि चालीस हजार ॥ समेतशिखरें रे मुगतें गया, नें त्रण जुवन आधार ॥ म० ॥ ४ ॥ अड नय टाली रे आपथकी, ने जेणे बांधी अवि हड प्रीत ॥ रामविजयना रे साहेबनी, ठे अविच ल एहज रीत ॥ म० ॥ ५ ॥ इति मह्लिजिन० ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ हरनी हमची रे ॥ ए देशी ॥ आवो रे आवो रे सखी देहरे जइएं, प्रभु दरिसन करी निरमल थइ एं ॥ गावो गावो रे हरख अपार, जिन गुण गरबो रे ॥ तुमें पेहेरो शोल शणगार ॥ जिन गुण गरबो रे ॥ मारे लाखेणो ए वार ॥ जिन० ॥ दोहेलो मानव अवतार ॥ जिन० ॥ १ ॥ पदमा देवी नंदन नीको छे, प्रभु राय सुमित्र कुल टीको छे ॥ नमो नमो रे एही ज नाथ ॥ जिन० ॥ फोगट शी करवी वात ॥ जिन०॥ कूडो लागे नेहनी लात ॥ जिन० ॥ २ ॥ कच्छप लंछन प्रभु पाया छे, जिन वीश धनुषनी काया छे ॥ त्रीश सहस वरसनुं आय ॥ जिन० ॥ मारे हइडे हरख न माय ॥ जिन०॥ एहनी सेवाथी सुख थाय ॥ जिन०॥ मारा दुःखडां दूरें जाय ॥ जिन० ॥ ३ ॥ प्रभु श्याम वर्ण विराजे छे, मुखडुं देखी विधु लाजे छे ॥ एने मोही मोही हरिनी नार ॥ जिन० ॥ जे करे लुंछणडां सार ॥ जिन० ॥ प्रभु नयण तणे मटकार ॥ जिन० ॥ तेथी लागो प्रेम अपार ॥ जिन० ॥ ४ ॥ प्रभु हृदय कमलनो वासी छे,शिवरमणी जेहनी दासी छे ॥ हुंतो तेह तणोछुं दास ॥ जिन० ॥ मारी पूरे मन डानी आश ॥ जिन० ॥ प्रभु अविचल लीलविलास ॥ जिन० ॥ रामविजय कहे उल्लास ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नमी जिन स्तवनं ॥
॥ दोशीडाने हाटें जाजो लाल, लाल कसुंबो ॥
॥ लींजे डे ॥ ए देशी ॥

॥ कांइ विजय नरेशर नंदन लाल, विप्रा सुत मन मोहे डे ॥ निलुत्पललंबन पाए लाल, सोवन वान तनु शोहे डे ॥ १ ॥ मिथिला नयरीनो वासी लाल, शिवपुरनो मेवासी डे ॥ मुनि वीशसहस जश पासें लाल. तेज कला सुविलासी डे ॥ २ ॥ प्रनु पंदर धनुष परिमाणे लाल, जगमां कीरति व्यापी डे॥ प्रनु जीवदयाने आणे लाल, सुमति लता जिणें थापी डे ॥ ३ ॥ नमीनाथ नमो गुण खाणी लाल, अक्षय वली अविनाशी डे ॥ तेणें वात सकल ए जाणी लाल, जेहने आशा दासी डे ॥४॥ श्री सुमति विजय गुरु नामें लाल, कीर्ति कमला वाधी डे ॥ कहे रामविजय जिन ध्यानें लाल, अविचल लीला लाधी डे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथ जिन स्तवनं ॥
॥ अमें तुमारा डोरुडां गुण जाणोडो के ना ॥
॥ ए देशी ॥

॥ राजुल कहे पिया नेमजी, गुण जानो डो के ना ॥ केम डोडी चाल्या निरधार, हे गुण मानो डो के ना ॥ पुरुष अनंते नोगवी ॥ गुण० ॥ पीयु शुं मोही रह्या तेणे नार, हे गुण० ॥ १ ॥ कोडी गमे जेहने चाहे ॥ गुण० ॥ श्यो ते नारीथी रंग ॥ हे गुण० ॥ पण जग उखाणो कह्यो ॥ गुण० ॥ होवे

सरिसा सरिसो संग ॥ हे गुण० ॥ २ ॥ हुंगुण वंती गोरडी ॥ गुण० ॥ ते निर्गुण निहेजी नार ॥ हे गुण० ॥ हुं सेवक तुं राउली रे ॥ गुण०॥ ते सामुं न जुवे लगार ॥ हे गुण० ॥ ३ ॥ जगमां ते गुण आगली ॥ गुण० ॥ जेणे वश कीधो नरतार ॥ हे गुण० ॥ मन वैरागें वालीयुं ॥ गुण० ॥ ले रा जुल संजम नार ॥ हे गुण० ॥ ४ ॥ बहेनीने मलवा नणी ॥ गुण० ॥ पीयु पेहेली तेह जाय ॥ हे गु ण० ॥ संग लइ ते नारने ॥ गुण० ॥ रही अनुजव शुं लयलाय ॥ हे गुण० ॥ ५ ॥ समुद्र विजय कुल चंदलो ॥ गुण० ॥ शिवादेवी मात मलार ॥ हे गु ण० ॥ वरस सहस एक आउखुं ॥ गुण० ॥ सोरी पुरनो सिणगार ॥ हे गुण० ॥ ६ ॥ देह धनुष दश दीपती ॥ गुण० ॥ प्रजु ब्रह्मचारी नगवंत ॥ हे गुण० ॥ राजु लवर मुने वालहो ॥ गुण० ॥ कहे रामविजय जयवंत ॥ हे गुण० ॥ ७ ॥ इति नेमिजिनस्तवनं ॥

॥ अथ श्री पारसनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ झटणीना गीतनी देशी ॥ सेवो नविजन जिन त्रेवीशमा, लंबन नाग विख्यात ॥ जलधर सुंदर प्रजुजीनी देहडी, वामा राणीनो जात ॥ सेवो नवि जन जिन त्रेवीशमा ॥ १ ॥ चिहुं दिशें घोरघटा घनशुं मल्यो, कमठें रच्यो जलधार ॥ मुशल धारें जल वरसे घणुं, जल थल न लहुंजी पार ॥ सेवो० ॥ २ ॥ वड हेठल वाहालो काउस्सग्ग रह्यो, मेरुतणी परें

धीर ॥ (ध्यान शुकल बीजुं पद ध्यावतो) ध्यान तणी धारा वाधे तिहां, चढियां उंचांजी नीर ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ अचल न चलियो प्रभुजी माहरो, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ समवसरण सुरकोडी मिल्या तिहां, वाज्यां जीत निशाण ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ नव कर ऊंच पणे प्रभु शोभता, अश्वसेन रायनो नंद ॥ प्रगट परता पूरण पासजी, दीठे होवे आनंद ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ एक शत वरसनुं आउखुं भोगवी, पाम्या अविचल रुद्ध ॥ श्रीसुमतिविजय गुरु नामथी, राम लहे वर सिद्ध ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

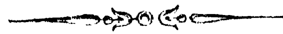
॥ अथ श्री महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ गरबी पूछे रे म्हारा गरबडा रे ॥ ए देशी ॥

॥ चरण नमी जिनराजनां रे, मागुं एक पसाय ॥ म्हारा लाखेणा स्वामी रे तुने वीनवुं रे ॥ महेर करो मारा नाथजी रे, दास धरो दिलमांहे ॥ म्हारा० ॥ १ ॥ पतित घणा तें उद्धर्या रे, बिरुद गरीब निवाज ॥ म्हारा० ॥ एक मुजने वीसारतां रे, शे नावे प्रभु लाज ॥ म्हारा० ॥ २ ॥ उत्तम जन घनसारीखा रे, नवि जोवे गाम कुगाम ॥ म्हारा० ॥ प्रभु सुनजरें करुणाथकी रे, लहीयें अविचल धाम ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥ सुत सिद्धारथ रायनो रे, त्रिशलानंदन वीर ॥ म्हारा० ॥ वरस बोहोंतेर आउखुं रे, कंचनवान शरीर ॥ म्हारा० ॥ ॥ ४ ॥ मुख देखी प्रभु ताहरुं रे, पाम्यो परमा

नंद ॥ महारा० ॥ हृदय कमलनो हंसलोरे, मुनिजन कैरव चंद ॥ महारा० ॥ ५ ॥ तुं समरथ शिर नाहलो रे, तो वाधे जशपूर ॥ महारा० ॥ जीत निशाननना नादथी रे, नाठा डुशमन दूर ॥ महारा० ॥ ६ ॥ श्री सुमति सुगुरु पद सेवना रे, कल्प तरुनी गंहे ॥ महारा० ॥ रामप्रजु जिन वीरजी रे, ठे अवलंबन बांहे ॥ महारा० ॥ ७ ॥ इति ॥ कलश ॥ एम जुवन जाषण डुरित नाशन, विमल शासन जिनवरू ॥ जव जीति चूरण आशपूरण, सुमति कारण शंकरू ॥ में थुण्यो जगनें विविध जुगतें, नगर महीराणे रही ॥ श्रीसुमति विजय गुरु चरण सानिधि, रामविजय जयश्री लही ॥ १ ॥ इति पंमित श्री रामविजय कृत चोवीशी संपूर्ण ॥

॥ अथ पंमित श्री मोहनविजयजीकृत चोवीसजिनस्तवनं प्रारंजः ॥



॥ तत्र प्रथम ॥ श्रीरुषजजिन स्तवनं ॥

त्रीजे जव वरथानक तप करी ॥ ए देशी ॥ बालपणे आपण ससनेही, रमता नव नव वेशें ॥ आज तुमें पाम्या प्रजुताइ, अमें संसार निवेशें हो प्रजुजीओलंजमे मत खीजो ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ जो तुम ध्यातां शिव सुख लहीयें, तो तुमने केइ ध्यावे ॥ पण जव स्थिति परिपाक

थया विण, कोइ न मुगति जावे हो ॥ २ ॥ प्र० ॥ सिद्ध निवास लहे नवि सिद्धि, तेमां शो पाड तुमा रो॥ तो उपगार तुमारो वहिएं अनव्य सिद्धने तारो हो ॥ ३ ॥ प्र० ॥ नाण रयण [illegible]मी एकंतें, थइ बेठा मेवासी ॥ ते मांहेलो एक अंश जो आपो,तें वातें शा बासी हो ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अक्षय पद देतां नवि जनने, संकीर्णता नवि थाय ॥ शिव पद देवा जो समरथ छो, तो जस लेतां शुं जाय हो ॥ ५ ॥ प्र० ॥ सेवा गुण रंज्यो नविजननें, जो तुमें करो वडनागी ॥ तो तुमें स्वामी केम कहावो, निरमम ने नीरागी हो ॥ ६ ॥ प्र० ॥ नाभिनंदन जनवंदन प्यारो, जग गुरु जग ज यकारी ॥ रूपविबुधनो मोहन पनणे, वृषन लंछन ब लिहारी हो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री रुषन जिन स्तवनं ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम तीर्थंकर सेवना,साहिबा उदित हृदय ससनें ह॥जिणंद मोरा हे ॥ प्रीत पुरातन सांनरे, साहिबा रोमांचित शुचिदेह ॥ जि० ॥१॥ आदिजिणंद जुहारीयें ॥ साहि बा रुषनजी०॥ ए आंकणी॥ अगम अलौकिक पंथडो, साहिबा कागल पण न लखाय ॥ जि० ॥ अंतरगत नी वातडी, साहिबा जण जणनें न कहाय ॥ जि० ॥ आदि० ॥ २ ॥ कोडि टकानी हो चाकरी, साहिबा प्रा पति विण न लहाय ॥ जि० ॥ मनडुंजी मलवाने उ महे, साहिबा किम करी मेलो थाय ॥ जि० ॥ आ०

॥ ३ ॥ दूरथकां पण साजनां, साहिबा सांजरे नव रंग रीत ॥जि०॥ पूरवपुण्यें पामियें, साहिबा परम पुरुषशुं प्रीत ॥ जि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ मत मत नय नय कल्पना, साहिबा इतरेतर परिमाण ॥ जि० ॥ रूप अगोचर नवि लहे, साहिबा विवदे मांहि अयाण ॥ जि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ सम दम शुद्ध स्वजावमां, साहिबा प्रजु तुम रूप अखंम ॥ जि० ॥ जगत वंदित संलीनता, साहिबा एहथी प्रगट प्रचंम ॥ जि० ॥ आ० ॥ ६ ॥ करुणा रस संजोगथी, साहिबा दीठो नवल दिदार ॥ जि० ॥ रूप विबुध कविराजनो, साहिबा मोहन जय जय कार ॥ जि० ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ कांबल रोपाणी लागणो ॥ ए देशी ॥

॥ उलग अजित जिणंदनी, माहारे मन मानी ॥ मालती मधुकरनी परें, बनी प्रीत अबानी ॥ १ ॥ वारी हुं जित शत्रु सुत तणा, मुखडाने मटके ॥ ए आंकणी ॥ अवर कोइ जाचूं नही, विण सामी सुरंगा ॥ चातक जिम जलधर विना, नवि सेवे गंगा ॥ २ ॥ वा० ॥ ए गुण प्रजु केम वीसरे, सुणी अन्य प्रशंसा ॥ ठीलर जल किणविध रति धरे, मानसरना हंसा ॥ ३ ॥ वा० ॥ शिव एक चंदकला थकी, लही ईश्वरताइ ॥ अनंत कलाधर में धर्यो, मुज अधिक पुण्याई ॥ ४ ॥ वा० ॥ तुं धन तुं मन तन तुंही, ससमेहा स्वामी ॥ मोहन कहे कवि

रूपनो, जिन अंतरजामी ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मोतिडानी देशी ॥

॥ अजित अजित जिन अंतर जामि, अरज करुं बुं प्रभु शिर नामि ॥ साहिबा ससनेही सुगुणनी, वा तडी कहुं केही ॥ आपण बालपणाना स्वदेशी, तो हवे किम थाउ बो विदेशी ॥ सा० ॥१॥ पुण्य अधिक तुमें हुआ जिणंदा, आदि अनादि अमें तो बंदा ॥ सा० ॥ जो प्रभु पाम्या बो प्रभुताइ, दास निवाजियें तो बे व डाइ॥सा०॥२॥ताहरे आज मणा बे शानी, तुंहिज ली लावंत तुं ज्ञानी ॥ सा० ॥ तुफविण अन्यने कां नथी ध्याता, तो जो तुं बे लोक विख्याता ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकने आदर एकने अनादर, इम किम घटे तुफने क रुणाकर ॥ सा०॥ दक्षिण वाम नयन बिहुं सरखी, कुण उंबी कुण अधिकी परखी ॥सा० ॥४॥ सामता मुफथी न राखो स्वामी, शी सेवकमां देखो बो खामी ॥सा०॥ जे न लहे सनमान स्वामिनो, तो तेहने कहे सहुको कमिनो ॥ सा० ॥ ५ ॥ रूपातीत जो मुफथी थाशो, ध्याशुं रूप करी किहां जाशो ॥ सा० ॥ जडपरमाणु अरूपी कहीयें, महत संजोगेंशुं, रूपी न थइयें ॥ सा० ॥ ६ ॥ धन जो उलगें किमपि न देवे, जो दिन मणि कनकाचल सेवे ॥ सा० ॥ एहवुं जाणीहुं तुफने सेवुं, ताहरे हाथ बे फलनुं देवुं ॥ सा० ॥ ७ ॥ तुफ पय पंकज मुफ मन वलगुं, जाये किहां बंमीने अ

लगुं ॥सा०॥ मधुकर मयगलमद पी राचे, पण शुने मुखें लालच नवि माचे ॥ सा० ॥७॥ तारक बिरुद कहावो ठो मोहोटा, तो मुऊथी किम थाउ ठो खोटा ॥ सा० ॥ रूपविबुधनो मोहन नांखे, अनुनव रंग आणंदशुं चाखे ॥ सा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संनव जिन स्तवनं ॥

॥ आघा आम पधारो पूज्य० ॥ ए देशी ॥

॥ समकितदाता समकित आपो, मन मागे थइ धीतुं ॥ ठति वस्तु देतां शुं शोचो, मीतुं जे सहुएं दीतुं ॥ १ ॥ प्यारा प्राण थकी ठो राज, संनव जिन वर मुऊने ॥ ए आंकणी ॥ इम जाणो जे आपें लहीएं, ते लाधुं शुं लेवुं ॥ पण परमारथ प्रीठी आपे, तेहज कहीयें देवुं ॥ प्या० ॥ २ ॥ अर्थी हुं तुं अर्थ समर्पक, इम मत करजो हांसुं ॥ प्रगट न हतुं तुमने पण पहिलां, ए हांसानुं पासुं ॥ प्या० ॥ ३ ॥ परम पुरुष तुमें प्रथम नजीने, पाम्या ए प्रनुताई, तिण रूपें तुमने इम नजीयें, तिणें तुम हाथ वडाइ ॥ प्या० ॥ ४ ॥ तुमे स्वामी हुं सेवा कामी, मुऊरे स्वामी निवाजे, नहि तो हव मांमी मागतां, किणविध सेवक लाजे ॥ प्या० ॥ ५ ॥ ज्योतें ज्योति मिले मत प्रीठो, कुण लहेशे कुण नजशे ॥ साची नक्ति ते हंसतणी परें, खीर नीरमय करशे ॥ प्या० ॥ ६ ॥ उलग कीधी जे लेखें आवी, चरण नेट प्रनु दीधी ॥ रूपविबुधिनो मोहन पनणे, रसना पावन कीधी ॥ प्या० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥
॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ अकल कला अविरुद्ध, ध्यान धरे प्रतिबुद्ध ॥ आछे लाल, अभिनंदन जिन वंदना जी ॥ रोमांचित थइ देह, प्रगट्यो पूरण नेह ॥ आ० ॥ चंद ज्युं वन अरवंदना जी ॥ १ ॥ एको खिण मन रंग, परम पुरुषनो संग ॥ आ० ॥ प्राप्ति होवे तो पामीयें जी॥ सुगुण सलूणी गोठ, जिम साकर भरी पोठ ॥ आ० ॥ विण दामे विवसाइयें जी ॥ २ ॥ स्वामी गुण मणि तुझ, निवसे मनडे मुझ ॥ आ० ॥ पण कहियें ख टके नहीं जी ॥ जिम रज नयणे विलग्ग, नीर झरे निर वग्ग ॥ आ० ॥ पण प्रतिबिंब रहे सासही जी ॥ ३ ॥ में जाच्या केइ लक्ष; तारक जोले प्रत्यक्ष ॥आ०॥ पण को साच नाव्यो वगें जी ॥ मुझ बहु मैत्री देख, प्रभु मत मूको उवेख ॥ आ० ॥ आतुर जन बहु ठलगे जी ॥ ४ ॥ जग जोतां जगनाथ, जिम तिम आव्या हाथ ॥ आ० ॥ पण रखे हवे कुमया करो जी ॥ बीजा स्वारथी देव, तुं परमारथ हेव ॥ आ० ॥ पा म्यो हवे हुं पटंतरो जी ॥ ५ ॥ तें तार्या केइ कोड, तो मुझथी शी होड ॥ आ० ॥ में एवडुं शुं अलेहणुं जी ॥ मुझ अरदास अनंत, भविनी छे भगवंत ॥ आ० ॥ जाणने शुं कहेवुं घणुं जी ॥ ६ ॥ सेवाफल द्यो आज, भुलवो कां माहाराज ॥ आ० ॥ भूख न भांगे भामणे जी ॥ रूपविबुध सुपसाय, मोहन ए

जिनराय ॥ आ० ॥ आंखे मन उमहे घणे जी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ वारी हुं उदयापुर तणे ॥ ए देशी ॥

॥ म्हारा प्रभुजीशुं बांधी प्रीतडी, ए तो जीवन ज गदाधार ॥ सनेही ॥ साचो ते साहिब सांभरे, खीण मांहे कोटिक वार ॥ सनेही ॥ १ ॥ वारी हुं सुमति जिणंदनी ॥ ए आंकणी ॥ प्रभु थोडाबोला ने गुण घणा, एतो काज अनंत करनार ॥ स० ॥ उलग जेहनी जेवडी, फल तेहवां तस देनार ॥ स० ॥ २ ॥ वा० ॥ प्रभु अति धीरो लाजें भर्यो, जिम सिं च्यो सुकृत घनसार ॥ स० ॥ एकज करुणालेहेरमां, सुनिवाजे करे निहाल ॥ स० ॥ ३ ॥ वा० ॥ प्रभुभव स्थिति पाकें भक्तने, प्रभु कहे ल्यो सुपसाय ॥ स० ॥ ऋतु विण कहो किम तरुवरें, फल पाकीने सुं दर थाय ॥ स० ॥ ४ ॥ वा० ॥ अति भूख्यो पण शुं करे, कांइ बेहु हाथे न जमाय ॥ स० ॥ दास त णी उतावलें, प्रभु किणविध रीझ्यो जाय ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ वा० ॥ प्रभु लखित होय तो लाभीयें, मन मान्यो माहाराज ॥ स० ॥ फल तो सेवाथी संपजे, विण खणण न भांजे खाज ॥ स० ॥ ६ ॥ वा० ॥ प्रभु वीसार्या नवि वीसरो, साहामुं अधिक होवे छे नेह ॥ स० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, मुझ वालो छे जिनवर एह ॥ सं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ पदमप्रभ तुम सेवना ॥ साहेबजी ॥ तेहज सम
कित बीज हो ॥ ससनेहा ॥ अरज सुणो एक मा
हरी ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ ए तो मेलो दोहिलो,
सा० ॥ जिम तेरशने त्रीज हो ॥ सा० ॥ १ ॥ अ० ॥
प्रभुविण अवर देवाथकी ॥ सा० ॥ किम मन पूगे
कोड हो ॥ स० ॥ उसतणे कणे किम हुवे, सा० ॥
मुक्ताफलनी दोड हो ॥ स० ॥ २ ॥ अ० ॥ दूर
थकी पण सांभरो, सा०॥ समयमें सो सो वार हो ॥
स० ॥ दर्शणीयानो उमाहलो, सा० ॥ पूरे तुं किर
तार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ अ० ॥ बंधाणुं मन भक्तिथी,
सा० ॥ ते अलगुं नवि थाय हो ॥ स० ॥ विमल
कमल मकरंद हे, सा० ॥ तजी मधुकर किम जाय
हो ॥ स० ॥ ४ ॥ अ० ॥ प्रभु सुपसायथी पामीयें,
सा० ॥ ज्ञानसदन गुणगेह हो ॥ स० ॥ मोहन
कहे कवि रूपनो, सा० ॥ निर्वहेशो साचो नेह हो ॥
स० ॥ ५ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवनं ॥

॥ ढोला मारु घडी एक करहो झुकाव हो ॥ ए देशी ॥

॥ परमरस भीनो माहारो, निपुण नगीनो माहरो
साहेबो, प्रभु मोरा पदम प्रभ प्राणाधार हो ॥ ए
आंकणी ॥ ज्योति रमा आलिंगीने ॥ प्र० ॥ अछक
छक्यो दिन रात हो, उलग पण नविं सांभले ॥ प्र०॥

तो शी दरिसण वात हो ॥ १ ॥ प० ॥ नी० ॥ प्र० ॥ निरञ्जय पद पाम्या पछी ॥ प्र० ॥ जाण्युं न होवे तेह हो ॥ तो नेह लागे आगले ॥ प्र० ॥ अलगा ते निसनेह हो ॥ २ ॥ प० ॥ नि० ॥प्र०॥ पद लेहतां तो लह्युं विभु ॥ प्र० ॥ पण निज द्रव्य कहाय हो ॥ अमें सुद्रव्य सुगुण घणुं ॥ प्र० ॥ सहि तो तिणे सम माय हो ॥ ३ ॥ प० ॥नि०॥ प्र०॥तिहां रह्यां करुणा नयणथी ॥ प्र० ॥ जोतां शुं ठबुं थाय हो ॥ जिहां तिहां जीत लावण्यता ॥ प्र० ॥ दोहली दीपक न्याय हो ॥ ४ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ जो प्रभुता अमें पामता ॥ प्र० ॥ केहवुं निपट न पडे एम हो, जो देशो तो जाणुं अमें ॥ प्र० ॥ दरिसण दरिद्रता केम हो ॥ ५ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ हाथे तो नावि शको ॥प्र०॥ न करो कोइनो विश्वास हो ॥ पण जो लहीयें जो भक्तिथी ॥प्र०॥ कहेजो तो शाबास हो ॥ ॥ ६ ॥ प० ॥ नि० ॥प्र०॥ कमल लंछन कीधी मया ॥ प्र० ॥ गुनह करी बगसीस हो ॥ रूपविबुधना मोहन तणी ॥ प्र० ॥ पूरजो सकल जगीस हो ॥ ७ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपास जिन स्तवनं ॥

॥ झीणा मारुजीनी करहलडी ॥ ए देशी ॥

॥ वाल्हामेह बपीयडा, अहिकुलनें मृगकुलने तिम वलि नादें वाह्या हो राज ॥ मधुकरने नवमल्लिका, तिम मुझने घणी वाहली सातमा जिननी सेवा हो

राज ॥ १ ॥ अन्य उछिक सुर छे घणा, पण मुऊ मनडुं तेहथी नावे एकण रागें हो राज ॥ राच्यो हुं रूपातीतथी, कारण मन मान्यानुं शुं कोइनुं इहां लागे हो राज ॥ २ ॥ मूलनी जक्तें रीजशे, नहि तो अव रनी रीतें क्यारें पण नवि खीजे हो राज ॥ उल गडी मोंघी थशे, कंबल जोवे जारी जिम जिम ज लथी जीजें हो राज ॥ ३ ॥ मनथी निवाजस नहि करे, जो कर ग्रहिने लीजें आवशे ते लेखें हो राज ॥ मोहोटानें कहेवुं किस्युं, पगदोडी अनुचरनी अंतर जामी देखे हो राज ॥ ४ ॥ एहथी शुं अधिकुं अछे, आवी मनडे वसीयो साहामो सुगुण सनेही हो रा ज ॥ जे वश आव्या आपणे, तेहने माग्युं देतां अ जर रहे कहो केही हो राज ॥५॥ अति परचे विरचे नही, नित नित नवलो नवलो प्रजुजी मुऊथी जासे हो राज ॥ ए प्रजुता ए निपुणता, परम पुरुष जे जेहवा तेहवा किहांथी कोइ पासें हो राज ॥६॥ जीनो परम महारसें, माहारो नाथ नगीनो तेहने कहो कुण निंदे हो राज ॥ समकित दृढता कारणें, रूपविबुधनो मोहनस्वामी सुपासने वंदे हो राज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ नंदसलूणा नंदना रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री शंकरचंद प्रजु रे लो, तुं ध्याता जगनो विजु रेलो ॥ तुं परब्रह्म तुं श्रीपति रे लो, तुं अविनाशी अ विगति रे लो ॥ १ ॥ समकित तत्त्व जगावीयो रे लो,

तिणे हुं उलगें आवियो रे लो ॥ तुमें पण मुझने म या करी रे लो, दीधी चरणनी चाकरी रे लो ॥ २ ॥ हुं सेवुं हरषें करी रे लो, ध्याउं तुमने दील धरी रे लो ॥ साहिब साहामुं नीहालजो रे लो, जव समुद्रथी तारजो रे लो ॥३॥ अगणित गुण गणवा तणी रे लो, मुझ मन होंश धरे घणी रे लो ॥ जिम नजने पाम्या पंखी रे लो, दाखे बालक करथी लखी रे लो ॥ ४ ॥ जो जिन तुं ठे पांशरो रे लो, करम तणो शो आशरो रे लो ॥ जो तुमें राखशो गोदमां रे लो, तो किम जाशुं निगोदमां रे लो ॥ ५ ॥ जब ताहरी करुणा थइ रे लो, कुमति कुगति दूरें गइ रे लो ॥ अध्यातम रवि उगीयो रेलो, पाप तिमिर किहां पूगीयो रे लो ॥ ॥६॥ तुझ मूरति माया जिसी रे लो, उर्वशी थइ उयरें वसी रे लो ॥ शुं जिनवाल्ल गंहडी रे लो, रखे प्रजु टालो एक घडी रे लो ॥ ७ ॥ ताहरी जक्ति जली बनी रे लो, जिम औषधि संजीविनी रे लो ॥ तन मन आणंद उपनो रे लो, कहे मोहन कवि रूपनो रे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुविधि जिनस्तवनं ॥

॥ मोतीडानी देशी ॥

॥अरज सुणो एक सुविधि जिणेसर, परम कृपानिधि तुमें परमेसर ॥ साहिबा सुग्यानी जोवो तो, वात ठे मान्यानी ॥ ए आंकणी ॥ कहेवाउ पंचम चरणना धारी, किम आदरी अश्वनी असवारी ॥ सा० ॥ १ ॥

गो त्यागी शिव वास वसो गो, दृढरथसुत रथें केम बेसो गो ॥ सा० ॥ आंगी प्रमुख परिग्रहमां जो पडशो, हरिहरादिकने किण विध नडशो ॥ २ ॥ सा० ॥ धुरथी सकल संसार निवार्‍यो, किम फरि देवद्व्यादिक धार्‍यो ॥ सा० ॥ तजी संयमनें थाशो गृहवासी, कुण आशातना तजशे चोराशी ॥सा०॥३॥ समकित मिथ्यामतिमें निरंतर, इम किम नांजशे प्रजुजी अंतर ॥ सा० ॥ लोक तो देखशे तेहवुं कहेशे, इम जिनता तुम किण विध रहेशे ॥ सा० ॥ ४ ॥ पण हवे शास्त्रगतें मति पोहोंची, तेहथी जोयुं में ऊंडुं आलोची ॥ सा० ॥ इम कीधे तुम प्रजुताइ न घटे, साहामो इम अनुजव गुण प्रगटे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ह्यगय यद्यपि तुं आरोपाए, तोपण सिद्धपणुं न लोपाए ॥ सा० ॥ जिम मुकुटादिक जूषण कहेवाए, पण कंचननी कंचनता न जाए ॥ सा० ॥ ६ ॥ नक्तनी करणीयें दोष न तुमने, अघटित केहवुं अजुक्त ते अमने ॥ सा० ॥ लोपाए नहि तुं कोईथी स्वामी, मोहनविजय कहे शिर नामी ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शितलजिन स्तवनं ॥

॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारूजी ॥ ए देशी॥

॥ शीतल जिनवर सेवना साहेबजी, शीतल जिम शशिबिंब हो ॥ ससनेही ॥ मूरत माहरे मन वसी ॥ सा०॥ शा पुरुषांशुं गोवडी ॥सा०॥ मोहोटो ते आला लूंब हो ॥स०॥१॥ क्षण एक मुजने न वीसरे ॥ सा० ॥

तुज गुण परम अनंत हो ॥ स०॥ देव अवरने शुं करुं ॥ सा०॥ नेट थइ नगवंत हो ॥स०॥२॥ तुमे गो मुकुट त्रिहुं लोकना ॥ सा० ॥ हुं तुम पगनी खेह हो॥स०॥ तुमे गो सघन रुतु मेहुला ॥ सा०॥ हुं पश्चिमदिशि त्रेह हो ॥ स० ॥ ३ ॥ नीरागी प्रजु रीऊवुं ॥ सा० ॥ ते गुण नहि मुऊमांहि हो ॥ स० ॥ गुरु गुरुता मा हामुं जूउ ॥ सा० ॥ गुरुता ते मूके नांहि हो ॥सु०॥ ४ ॥ मोहोटासेंती बरोबरी ॥ सा० ॥ सेवकें किणविध थाय हो ॥ स० ॥ आसंगो किम कीजियें ॥ सा० ॥ जिहां रह्या आलुंजाय हो ॥ स० ॥ ५ ॥ जगगुरु करुणा कीजियें ॥ सा० ॥ न लहो आचार विचार हो ॥ स० ॥ मुजनें जो राज निवाजशो ॥ सा० ॥ तो कुण वारणहार हो ॥ स० ॥६॥ .उलग अनुजव नाव थी ॥ सा० ॥ जाणो जाण सुजाण हो ॥ स० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो ॥ सा० ॥ जिनजी जीवन प्राण हो ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिनस्तवनं ॥

॥ कंकण मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥श्रेयांस जिन सुणो साहिबा रे, जिनजी दास तणी अरदास ॥ दिलडे वसी रह्यो ॥ दूर रह्यां जाणुं नहि रे, प्रजु तुं माहरे पास ॥ दि० ॥ १ ॥ हांरे मृगने ज्युं मधुर आलाप ॥ दि० ॥ मोरनें पिछकलाप ॥ दि०॥ दूर रह्या जाणुं नही रे, प्रजु तुं माहरे पास ॥ दि० ॥ जल थलमहियल जोवतां रे ॥ जि०॥ चिंतामणि चढयो

हाथ ॥ दि० ॥ उलपशी हवे म ह्रे रे ॥जि०॥ निर
ख्यो नयणें नाथ ॥ दि० ॥ २ ॥ चरणे तेहने विलं
बीयें रे ॥ जि० ॥ जेहथी सी काम ॥ दि० ॥ फो
कट शुं फेरो तिहां रे ॥ जि० ॥ पूछे नहि पण नाम
॥ दि० ॥ ३ ॥ कूडो कलियुग छोडिने रे ॥ जि०॥ आ
प रह्या एकंत ॥ दि० ॥ आपोपुं राखे घणा रे ॥
जि० ॥ पर राखे ते संत ॥ दि० ॥ ४ ॥ देव घणा
में देखिया रे ॥ जि० ॥ आमंबर पटराय ॥ दि० ॥
निगय नहि पण सोडथी रे ॥ जि० ॥ आघा पसा
रे पाय ॥ दि०॥५॥ सेवकने जो निवाजीयें रे॥ जि०
॥ तो तिहां शानें जाय ॥ दि० ॥ निपट नीरागी हो
वतां रे ॥ जि० ॥ स्वामिपणुं किम थाय ॥ दि० ॥
६ ॥ मेंतो तुफने आदर्यो रे ॥ जि०॥ नावें तुं जाण
म जाण ॥ दि० ॥ रूपविजय कविरायनो रे ॥ जि०॥
मोहनवचन प्रमाण ॥ दि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ चूनडी तो नींजे हो साहिबाजी प्रेमनी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजीशुं लागी हो पूरण प्रीतडी, जीवन प्रा
ण आधार ॥ गिरुआ जिनजी हो राज, साहिब सुण
जो हो माहरी वीनति ॥ दरिसण देंजो हो दिल नरी,
श्यामजी अहो जगगुरु शिरदार ॥ १ ॥ सा० ॥ चा
हीने दीजें हो चरणोनी चाकरी, द्यो अनुनव अम
साज ॥ गि० ॥ इम नवि कीजें हो साहिबाजी सां
नलो, कांइ सेवकने शिवराज ॥ २ ॥ गि० ॥ चूपशुं

छाना हो साहिबा न बेसीयें, कांइ शोना न लहेशो कोय ॥ गि० ॥ दास उद्धारो हो साहिबाजी आपणो, ज्युं होवे सुजस सवाय ॥ गि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ अरुण जो उगे हो साहिबाजी अंबरें, नासे तिमर अंधार ॥ गि० ॥ अवरदेव हो साहिबाजी किंकरा, मिलियो तुं देव मुनें सार ॥ गि० ॥ ४ ॥सा०॥ अवर न चाहुं हो साहिबाजी तुम छते, जिम चातक जलधार ॥ गि० ॥ खटपद लीनो हो साहिबाजी प्रेमशुं, तिम तुं हृदय मऊार ॥ गि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सात राजने हो साहिबाजी अंतें जइ वस्या, शुं कहियें तुम प्रीत ॥ गि० ॥ निपट नीरागी हो जिनवर तुं सही, ए तुम खोटी रीति ॥ गि० ॥ ६ ॥ सा० ॥ दिलनी जे वातां हो किणने दाखवुं, श्री वासुपूज्य जिनराय ॥ गि० ॥ खीण एक आवि हो पंमेंजी सांजलो, कांइ मोहन आवेजी दाय ॥ गि० ॥ ७ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ ते तरीया जाइ ते तरीया ॥ ए देशी ॥

॥ विमलजिणंद सुग्यान विनोदी, मुख छबिशशी अविहेलें जी ॥ सुरवर निरखी रूप अनुपम, हजीय निमेष न मेले जी ॥वि०॥१॥ विष्णु वराह थइ धर वसुधा, एहवुं कोइक केहे छे जी ॥ तो वराह लंछन मिशें प्रज्जुने, चरणे शरण रहे छे जी ॥२॥वि०॥ लीला अकल ललित पुरुषोत्तम, सिद्ध वधू रसलीनो जी ॥ वेधक स्वामीथी मलवुं सोहिलूं, जे कोइ टाले कीनो जी ॥

॥ ३ ॥ वि० ॥ प्रसन्न थइ जगनाथ पधास्या, मन मं
दिर मुज सुधस्यो जी ॥ हुं नटनवल विविध गति जाणुं,
खिण एक तो ल्यो मुजरो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥ चोरा
शी लख वेश हुं आणुं, कर्म प्रतीत प्रमाणे जी ॥ जो
अनुभव दान गमे तो, ना रुचे तो कहो मआणे
जी ॥ ५ ॥ वि० ॥ जे प्रभुभक्तिविमुख नर जगमें, ते
भ्रम भूल्यो भटके जी ॥ संगत तेह न विगत लहीयें,
पूजादिकथी जे चटके जी ॥ ६ ॥ वि० ॥ कीजें प्रसाद
उचित ठकुराइ, स्वामी अखय खजानो जी ॥ रूपवि
बुधनो मोहन पभणे, सेवक विनति मानोजी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथजिनस्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनति ॥ ए देशी ॥

॥अनंत जिणंदसुं वीनति, में तो कीधी हो त्रिकरण
थी आज के ॥ मिलता निज साहेबभणी, कुण आणे
हो मूरख मन लाज के ॥१॥ अ० ॥ मुखपंकजमनम
धुकरु, रह्यो लुब्धि हो गुणग्यानें लीण के ॥ हरि हर
आवल फूल ज्यों, ते देख्यां हो किम चित्त होवे प्रीण के
॥ २ ॥ अ० ॥ भव फरीयो दरीयो तस्यो, पण कोइ
हो अणुसरीयो न द्वीप के ॥ हवे मन प्रवहण माहरुं,
तुम पद भेटें हो में राख्युं ढीप के ॥ ३ ॥ अ० ॥ अं
तरजामी मिले थके, फले माहरुं हो सहि करीने भाग
के ॥ हवे वाही जावा तणी, नथी प्रभुजी हो कोइ इहां
लाग के ॥ ४ ॥ अ०॥ पालव ग्रही रढ लेयसुं, नही मे
लो हो ज्यारें तुमें मीट के ॥ आतम अंबरें जो थई, किम

उवटे हो करारी छीट के ॥ ५ ॥ आ० ॥ नायक न जरें निवाजीयें, हवे लाजीयें हो करता रस लूंट के ॥ अध्यातम पद आपतां, कांइ नही पडे हो खजाने खूट के ॥ ६ ॥ अ० ॥ जिम तुमें तख्या तिम तारजो, शुं बेसे हो तुमने कांइ दाम के ॥ नही तारो जो मुझने, तो किम तुम हो तारक कहेशो नाम के ॥ ७ ॥ अ०॥ हुं तो जिन रूपस्थथी, रहुं होइ त्हां हो अहोनिश अनुकूल के ॥ चरण तजी जइयें किहां, छे माहारी हो वातडलीनुं मूल के ॥ ८ ॥ अ० ॥ अष्टापद पदमा करे, अन्य तीरथ हो जाते जिम हेड के ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, विण उपशम हो नवि मूकुं केड के ॥ ॥ ए ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥

॥ अनंत जिणंद अवधारीयें, सेवकनी अरदास ॥ जिनजी ॥ अनंत अनंत गुण तुम तणा, सांभरे सा सो सास ॥ जि० ॥ १ ॥ सुरमणिसम तुम सेवना, पामी में पुण्य पमूर ॥ जि०॥ किम प्रमाद तणे वशें, मूकुं अधखिण दूर ॥ जि० ॥ २ ॥ जगति जुगति म नमें वस्यो, मनरंजन महाराज ॥ जि० ॥ सेवकनी तुमने अछे, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ३ ॥ मुह मीठा धीठा हीये, तेहवो नहि हूं दास ॥ जि०॥ साचो सेवक संभवी, कीजें ज्ञान प्रकाश ॥ जि० ॥ ४ ॥

जाणने शुं कहेवुं घणुं, एक वचनमें लाख ॥ जि० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, भक्ति मधुर जिम डाख ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति अनंतनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अनंतजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ वालम वेहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतडी अनंत जिनराजनी, दर्शन भावथी भावे रे ॥ पयडी बंधादि स्वभावथी, अनुभव परम रस आवे रे ॥ प्री० ॥ १ ॥ स्मृतिव्यतिरिक्त आस्वादमां, प्रगट चिद्रूप अतिरुद्ध रे ॥ सांख्य बोधादि संबोधथी, भिन्न प्रभुरूप अतिशुद्ध रे ॥ प्री०॥ २ ॥ विमुख सोपाधि अभ्यासथी, संमुख अनुपाधि अनुयोग रे ॥ लीनता साध्य छे सहजथी, भावठ परिपाक अभिभोग रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ सिद्धसंस्कार संसारमें, अभिमत ए किस्यो ख्याल रे ॥ भिन्न अभिन्न बिहुं किम घटे, केहेनो सेंथो केहेनी टाल रे ॥ प्रा० ॥४॥ भव्य ताख्या प्रभुने घणुं, हुं नवि सद्दहुं वाच रे ॥ तारे जो मुझ तृपातीतने, तारक बिरुद तो साच रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ दान अथ हरण हिंसा दया, जोगके भोग अभिराम रे ॥ इम किम तुमने संभवे, कीजियें जेम ते काम रे ॥ प्री० ॥ ६ ॥ अनंत पयथी उपपत्तिनो, असंख्य छे आत्मप्रदेश रे ॥ तेह रे स्वामीने संभव्यो, जाणवुं एह विशेष रे ॥ प्र०॥ ७ ॥ चतुरप्रतें तुज पद क्रिया, हुती होये बंध निबंध रे ॥ प्रकृति ध्रुवबंध लहे वक्रता, होय वली अनुगमखंध रे ॥ प्री० ॥ ८ ॥ सप्तनय

चारुनिरीक्षणें, उलरूयो परम जिनराज रे ॥ मोहन कहे कविरूपनो, सफल हुवां आज सवि काज रे ॥ प्री० ॥ ए ॥ इति अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री धर्म जिन स्तवनं ॥

॥ हांरे मारे जोबनीयांनो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे मारे धर्मजिणंदशुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवडलो ललचाणो जिनजीनी उलगें रेलो ॥ हांरे मुने थाशे कोइक समय प्रभुजी प्रसन्न जो, वातडली तव माहारी सवि थाशे नगें रे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुरिजननो भंभेरयो माहारो नाथ जो, उलतशे नही क्यारें कीधी चाकरी रे लो॥ हांरे माहारा स्वामी सरिखो कुण छे दुनीयांमांहि जो, जइयें रे जिम तेहने घर आशा करी रे लो ॥ २॥ हांरे जस सेवासेंती स्वारथ न होवे सिद्ध जो, गालो रे शी करवी तेहथी गोरडी रे लो ॥ हांरे कोइ जूठुं खाये ते मीगाइने माट जो, कोइ रे परमारथविण नही प्रीतडी रेलो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजामी जीवन प्राण आधार जो, वाह्यो रे न वि जाणे कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे माहारा लायक नायक भगत वत्सल भगवान जो, वारु रे गुणकेरो साहिब सायरो रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलगारे रह्याथी होय उसिंगलो रे लो ॥ हांरे कुण जाणे अंतर्गतनी विण महाराज जो, हेजें रे हसी बोलो छांडी आमलो

रे लो ॥५॥ हांरे तहारे मुखनें मटके अटक्यु माहारुं मन्न जो, आंखडली अणीयाली कामणगारीयुं रे लो ॥ हांरे मारे नयणां लंपट जो खिण खिण तुज्झ जो, रातां रे प्रभुरूपें न रहे वार्युं रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा तो पण जाणजो करीने हजूर जो, ताहारी रे बलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो ॥ हांरे कवि रूप विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआथी मन आणी उलट अति घणे रे लो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ इण सरवरीयारी पा० ॥ ए देशी ॥

शोलमा श्री जिनराज, उलग सुणो अम तणी ॥ ललना ॥ जगतथी एवडी केम, करो छो नोलामणी ॥ल०॥ चरणे विलग्यो जेह, आवीने थइ खगो ॥ ल० ॥ निपट तेहथी कोण, राखे रस अंतरो ॥ ल० ॥ १ ॥ में तुज्झ कारण स्वामी, उवेख्या सुर घणा ॥ ल० ॥ माहरी दिशाथी में तो, न राखी कांइ मणा ॥ ल० ॥ तो तुमें मुझथी केम, अपूठा थइ रहो ॥ ल०॥ चूक होवे जो कोय,सुखें मुखथी कहो ॥ल०॥२॥ तुझथी अवर न कोय, अधिक जगतीतलें ॥ ल० ॥ जेहथी चित्तनी वृत्ति, एकांगी जइ मले ॥ ल० ॥ दीजें दरिसन वार, घणी न लगावीएं ॥ ल० ॥ वातडली अति मीठीयें, किम विरमावीएं ॥ ल० ॥ ३ ॥ तुं जो जल तो हुं कमल, कमल तो हुं वासना ॥ ल० ॥ वासना तो हुं भमर, न मूकुं आसना ॥ ल० ॥ तुं छो

डे पण हुं केम, गोडीश तुऊ जणी ॥ ल० ॥ लो
त्तर कोइ प्रीति, आवी तुऊथी बनी ॥ ल०॥४॥ धु
थी शाने समकित, देइने जोलव्यो ॥ ल०॥ हवे किम
जाउं खोटे, दिलासे उलव्यो ॥ ल० ॥ जाणी खा
सो दास, विमासो गो किस्युं ॥ ल० ॥ अमें पण
खिजमतमांहि, के खोटा किम थशुं ॥ ल० ॥ ५ ॥
बीजी खोटी वातें, अमें राचुं नही ॥ ल० ॥ में तुम
आगल माहरा, मनवाली कही ॥ ल०॥ राखो पूरण
प्रीति, विमासो शुं नमें ॥ ल०॥ अवसर लही एकांत,
विनवीएं ठे अमें ॥ ल० ॥ ६ ॥ अंतरजामी स्वामी,
अचिरानंदना ॥ ल० ॥ शांतिकरण श्रीशांतिजी, मा
नजो वंदना ॥ ल० ॥ तुऊ स्तवनाथी तन मन, आ
णंद उपन्यो ॥ ल०॥ कहे मोहनमनरंग, सुपंमितरूप
नो ॥ ल० ॥ ७ ॥ इति शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ नंदसलूणा नंदनारे लो ॥ ए देशी ॥

॥ शांतिजिणंद सोहामणा रे जोजो, शोजता श्री
जिनराय ॥ मोरा साहिबा रे ॥ ठकुराइ त्रिहुलोकनी
रे जोजो, सेवे सुरनर पाय ॥ १ ॥ मो० ॥ शां० ॥
मुख शारदको चंदलो रे जोजो, हसत ललित निश
दीस ॥ मो० ॥ आंखडी अमीय कचोलडी रे जोजो,
पूरवो सकल जगीश ॥ मो० ॥ २ ॥ शां० ॥ आंगी
अनुपम हेमनी रे जोजो, ऊगमग विविध जडाव ॥
मो०॥ देखी मूरति सुंदरु रे जोजो, जजे अनिमिषता

नाव ॥ मो० ॥ ३ ॥ शां० ॥ छत्रत्रयशिर शोनतां रे जोजो, महिमानो अव ंस ॥ मो०॥ अजूआल्युं ती रथ आपणुं रे जोजो, विश्वसेननृपनो वंश ॥ मो० ॥ ॥ ४ ॥ शां० ॥ अकलकला जिनजी तणी रे जोजो, मनोहररूप अमीत ॥ मो० ॥ शांतलपुरवर शोनतुं रे जोजो, नगविचवत्सल नगवंत ॥ मो०॥५॥ शां० ॥ केवलनाण दीवाकरु रे जोजो, समकित गुणनंमार ॥ मो० ॥ पारेवुं ते उगारीयुं रे जोजो, एम अनेक उप गार ॥ मो० ॥ ६ ॥ शां० ॥ हूं बलिहारी ताहरी रे जोजो, जिन तुमें देवाधिदेव ॥ मो० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो रे जोजो, नवोनव देजो सेव ॥ मो० ॥ ॥ ७ ॥ शां० ॥ इति शांति जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ राग सारंग ॥ शांतिजिणंद महाराज ॥ जगत गुरु शांतिजिणंद महाराज ॥ अचिरानंदन नवि मन रंजन, गुणनिधि गरीब निवाज ॥ ज० ॥ १ ॥ गर्न थकी जिणे ईति निवारी, हर्षित सुरनर कोडी ॥ ज नम थये चोशठ इंद्रादिक, पद प्रणमे कर जोडी ॥ ज० ॥ २ ॥ मृगलंछन नविकतुषगंजन, कंचन वान शरीर ॥ पंचमनाणी पंचम चक्री, सोलशमो जिन धीर ॥ ज० ॥ ३ ॥ रत्नजडित नूषण अति सुंदर, आंगी अंग उदार ॥ अति उछरंग नगतिनौतन गति, उपशमरस दातार ॥ ज० ॥ ४ ॥ करुणा निधि नग वान कृपाकर, अनुनव उदित आवास ॥ रूपविबु

धनो मोहन पज्नणे, दीजें ज्ञान विलास ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ चंदनरी कटकी जली ॥ ए देशी ॥

॥ कुंथुजिणंद करुणा करो, जाणी पोतानो दास ॥ साहिबा मोरा ॥ शुं जाणी अलगा रह्या, जाणुं कोइ आवशे पास ॥ सा०॥ १ ॥ अजब रंगीला प्यारा, अकल अलक्ष न्यारा, परम ससनेही माहारी विनती ॥ ए आंकणी ॥ अंतरजामी वाहाला, जोवो मीट मिलाय ॥ सा०॥ खिण महसो खिणमां हसो, इम प्रीत निवाहो किम थाय ॥ सा० ॥ २ ॥ प० ॥ रूपी हुवो तो पालव ग्रहूं, अरूपीनें शुं कहेवाय ॥ सा० ॥ कान मांझया विना वारता, कहोने जी केम बकाय ॥ सा०॥ ॥ ३ ॥ प० ॥ देव घणा डुनीयामां अछे, पण दिल मेलो नवि थाय ॥ सा० ॥ जिण गामें जावुं नही, ते वाट कहो शुं पूछाय ॥ सा० ॥ ४ ॥ प० ॥ मुऊ मन अंतर मुहूर्त्तनो, में ग्रह्यो चपलता दाव ॥सा०॥ प्रीतिसमे तो जुउ कहो, ए शो स्वामी स्वजाव ॥ सा० ॥ ५ ॥ प० ॥ अंतरसोमलीयां पछें, नवि मलीयें प्रज्नु मूल ॥ सा० ॥ कुमया किम करवी घटे, जे थयो निज अनुकूल ॥ सा० ॥ ६ ॥ प० ॥ जागी हवे अनुजवदिशा, लागी प्रज्नुशुं प्रीति ॥ सा० ॥ रूपविजय कविरायनो, कहे मोहन रस रीति ॥ सा० ॥ ॥ ७ ॥ प० ॥ इति श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ जादवपति तोरण आव्या ॥ ए देशी ॥

॥ मुझ अरज सुणो मुझ प्यारा, साची जगतिथी किम रहो न्यारा रे ॥ सनेही मोरा ॥ कुंथुजिणंद करो करुणा ॥ १ ॥ हुं तो तुम दरिसणनो अर्थी, घटे किम करी शके करथी रे ॥ स० ॥ थइ गिरुआ एम जे विमासो, तेतो मुझने होये छे तमासो रे ॥ स० ॥ ॥ २ ॥ ललचाविनें जे कीजें, किम दासने चित्त पतीजें रे ॥ स० ॥ पद मोहोटे कहावो मोहोटा, जिणतिण वातें न हुउ खोटा रें ॥ स० ॥ ३ ॥ मुझ नाव महेलमें आवो, उपशमरस प्यालो चखावो रे ॥ स० ॥ सेवकनुं तो मन रीझे, जो सेवक कारज सीझे रे ॥ स० ॥ ४ ॥ मनमेलु थई मन मेलो, ग्रहे आवो मग अवहेलो रे ॥ स० ॥ तुमें जाणो छो ए करुं लीला, पण अर्थी सर्दहे करी शिला रे ॥ स० ॥ ५ ॥ प्रजुचरण सरोरुह लेहवुं, फल प्रापति लेहणूं लेवुं रे ॥ स० ॥ कवि रूपविबुध जयकारी, कहे मोहन जिन बलिहारी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति कुंथुजिन० ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ अरनाथ अविनाशी हो, सुविलासी खासी चाकरी ॥ कांइ चाहूं अमें निशदीस ॥ अंतरायने रागें हो अनुरागें किणपरें कीजीयें ॥ कांइ शुजजावें सुजगीश ॥ १ ॥ अ० ॥ सिद्ध स्वरूपी स्वामी हो, गुण

धामी अलख अगोचरु ॥ कांइ दीठ विण दीदार ॥ केम पतीजें कीजें हो किम लीजें फल सेवा तणुं ॥ कांइ दीसे न प्राण आधार ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानविनाकूं पेखे हो संखेपें सूत्रें सांजल्यो ॥ कांइ अथवा प्रतिमारूप ॥ सांगें जो संपेखुं हो प्रनु देखुं दिलनर लोयणें, कांइ तो मन मलूचे चूप ॥ ३ ॥ अ० ॥ जगनायक जिनराया हो मन नाया मुऊ आवी मल्या, कांइ महेर करी महाराज, सेवक तो ससनेही हो निसनेही प्रनु किम कीजियें ॥ कांइ इसडोइ वहीयें रे लाज ॥ ४ ॥ अ० ॥ नक्तिगुणें नरमावी हो समजावी प्रनुजीने नोलवी, कांइ राखुं हृदयमऊार ॥ तो कहेजो शाबासी हो प्रनु नासी जाणी सेवना. कांइ ए अमचो एक तार ॥ ५ ॥ अ० ॥ पाणी नीरने मेले हो किण खेले एकंत होइ रहूं, कांइ नहिरे मीलणनो जोग ॥ जो प्रनु देखुं नयणें हों कहि वयण समजावुं सहि, कांइ ते न मिले संजोग ॥ ६ ॥ अ० ॥ मनमेलु किम रीऊ हो शुं कीजें अंतर एवडो, कांइ निपट निहेजा नाथ ॥ सात राजने अंतें हो किण पाखे ते आवीनें मिलुं, कांइ विकट तुमारो जी साथ ॥ ७ ॥ अ० ॥ उलग ए अनुनवनी हो मुऊ मननी वातां सांनली, कांइ कीजें आज निवाज ॥ रूपविबुधनो मोहन हो मनमोहन सांनल वीनति, कांइ दीजें शिवपुरराज ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथस्तवनं ॥

॥ थारा मोहोला ऊपर मेह० ॥ ए देशी ॥

॥ सुणी सुगुरु उपदेश, ध्यायो दिलमें धरी ॥ हो लाल ॥ ध्या०॥ कीधी जगति अनंत, चवि चवि चातुरी ॥ हो लाल ॥ च० ॥ सेव्यो विशवावीश, उलट धरी उलग्यो ॥ हो लाल ॥ उ० ॥ दीठो नवि दीदार, कान कीणही लग्यो ॥ हो लाल ॥ का०॥ १ ॥ परमेसरशुं प्रीत, कहो किम कीजीयें ॥ हो लाल ॥ क० ॥ निमिष न मेले मीट, दोष किण दीजीयें ॥ हो लाल ॥ दो०॥ कोण करी तकसीर, सेवामां साहिबा ॥ हो लाल ॥ से०॥ कीजें न ठेकरवाद, जगत जरमायवा ॥ हो लाल ॥ ज० ॥ २ ॥ जाण्युं तमारुं जाण, पुरुष ना पारिखुं ॥ हो लाल ॥पु०॥ सुगुण नीगुणनो न्याय, करो शुं सारिखुं ॥ हो लाल ॥ क० ॥ दीधो दीलासो दीन, दयाल कहावशो ॥ हो लाल ॥ द० ॥ करुणारस जंमार, बिरुद किम पावशो ॥ हो० ॥ बि० ॥ ३ ॥ शुं निवस्या तुमें सिद्ध, सेवकने अवगुणी ॥ हो० ॥ से० ॥ राखो अविहड प्रीति, जावायो जोलामणी ॥ हो०॥ जा०॥ जो कोइ राखे राग, नीराग न राखीएं ॥ हो०॥ नी० ॥ गुण अवगुणनी वात, कही प्रजु जांखीएं ॥ हो० ॥ क० ॥ ४ ॥ अमचा दोष हजार, तिके मत जालजो ॥ हो० ॥ ति० ॥ तुमें ठो चतुर सुजाण, प्रीति गुण पालजो ॥ हो० ॥ प्री० ॥ मल्लिनाथ महाराज, म राखो आंतरो ॥ हो०॥

म० ॥ द्यो दरिसिण दिल धार, मिटे ज्यूं खांतरो ॥ हो० ॥ मि० ॥ ५ ॥ मनमंदिर महाराज, बिराजो दिल मली ॥ हो० ॥ बि० ॥ चंद्रातप जिम कमल, हृदय विकसे कली ॥ हो० ॥ हृ० ॥ कविरूपविबुधसुप साय, करो अमरंग रली ॥ हो० ॥ कहे मोहन कवि राय, सकल आशा फली ॥ हो० ॥ स०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिनस्तवनं ॥

॥ हो पीयु पंखीअडा ॥ ए देशी ॥

॥ हो प्रजु मुज प्यारा न्यारा थया केइ रीत जो, उलगूआने आलालुंबन माहरो रे लो ॥ हो० ॥ जक्तिवब्लल जगवंत जो, आय वस्यो मन मंदिर साहिब माहरो रे लो ॥ १ ॥ हो० ॥ खिण न विसारुं तुज जो, तंबोलीना पान तणी परें फेरतो रे लो ॥ हो० ॥ लागी मुने माया जोर जो, दिणयरवासी सुसाहिब तुमने हेरतो रे लो ॥ २ ॥ हो० ॥ तुं निसनेही जिनराय जो, एकपखी प्रीतलडी किण परें राखीयें रे लो ॥ हो० ॥ अंतर्गतनी महाराज जो, वातडली विण साहिब केहने दाखीयें रे लो ॥ ३ ॥ हो० ॥ अलख रूप थइ आप जो, जाइ वस्यो शिव मंदिरमांहे तुं जई रे लो ॥ हो० ॥ लाधो तुमारो जेद जो, सूत्र सिद्धांतें गतिमें साहिब तुम लइ रे लो ॥ ४ ॥ हो० ॥ जग जीवन जिनराय जो, मुनिसुव्रत जिन मुजरो मानजो माहरो रे लो ॥ हो० ॥ पय प्रणमी जिनराय जो, जय जवसरणो साहिब

स्वामी ताह्रो रे लो ॥ ५ ॥ हो० ॥ राखशुं हृदय मझार जो, आपोने शामलीया पदवी ताह्री रे लो ॥ हो० ॥ रूपविजयनो शिष्य जो, मोहनने मन लागी माया ताह्री रे लो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथजिनस्तवनं ॥

॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥

॥ आज नमिजिनराजने कहीयें, मीठे वचने प्रभु मन लहीयें रे ॥ सुखकारी साहेबजी ॥ प्रभु छे निपट निसनेही नगीना, अमें छुं सेवक आधीना रे ॥सु०॥ ॥ १ ॥ सूनजर करशो तो वरशो वडाई, सुकहिशो प्रभुने लडाइ रें ॥ सु० ॥ तुमें अमने करशो मोहोटो, कुण कहेशे प्रभु तुनें खोटो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ निःशंक थइ शुभवचन कहेशो, जगशोभा अधिकी लेहेशो रे ॥ सु० ॥ अमें तो रह्या छुं तुमने राची, रखे आप रहो मन खांची रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ अम्हें तो किस्युं अंतर नवि राखुं, जे होवे हृदय कही दाखुं रे ॥ सु० ॥ गुणियल आगल गुण कहेवाये, ज्यारें प्रीत प्रमाणें थाये रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ विषधर ईशहृदय लपटाणो, तेहवो अमने मिल्यो छे टाणो रे ॥ सु० ॥५॥ निरवहेशो जो प्रीत हमारी, कली कीरत थाशे तुमारी रे॥सु०॥ धूर्ताई चित्तडे नवि धरश्यो,कांइ अवलो विचार न करशो रे ॥ सु० ॥ जिम तिम जाणी सेवक जाणेजो, अवसर लही सुधि लहेजो रे ॥ सु० ॥६॥आसंगें कहीएं छे तुमने,प्रभु दीजें दिलासो अमनें

रे ॥ सु० ॥ मोहनविजय सदामन रंगें, चित्त लाग्युं प्रजुने संगें रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ जिनस्तवनं ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

॥कांइ रथ वालो हो राज.साह्यमुं नीहालो हो राज, प्रीति संजालो रे वाल्हा यडुकुलसेहरा ॥जीवन मीठा हो राज, मत होजो धीठा हो राज, दीठा अलजे रे वाहला निवहो नेहरा ॥ १ ॥ नव नव नका हो राज, तिहां शी लजा हो राज, तजत नका रे कांसें रणका वाजीया ॥ शिवादेवी जाया हो राज, मां मेलो माया हो राज,किमहिक पाया रे वाहला मधुकर रा जीया ॥ २ ॥ सुणी हरणीनां हो राज, वचन कामी नां हो राज, सही तो बीना रे वाहला आघा आ वतां ॥ कुरंग कहाणो हो राज,चूके न टाणो हो राज, जाणो वाहला रे देखी वर्ग वरंगनो ॥ ३ ॥ विण गुन्हे चटकी हो राज,गांमो मां ठटकीहोराज,कटकी न कीजें रे वाहला कीडीथी घणुं ॥ रोष निवारो हो राज,महेल पधारो हो राज, कांइ विचारो रे वाहला माबुं जीमणुं ॥ ४ ॥ एसी हांसी हो राज, होए विखासी हो राज,जुउ विमासी रे अतिही रोष न कीजियें ॥ आ चित्रशाली हो राज,सेज सुंआली हो राज,वात हेताली रे वाहला महारस पीजीयें ॥ ५ ॥ मुगतिवहिता हो राज, शाम वदीता हो राज, तजी परिणीता रे वाह

ला कां तुमें आदरो ॥ तुमने जे नावे हो राज, कुण समजावे हो राज, किम करी आवे रे ताण्यो कुंजर पाधरो ॥ ६ ॥ वचनें न नीनो हो राज, नेम नगीनो हो राज,परम खजीनो रे वाहला नाण अनूपनो ॥ व्रतशिरसामी हो राज, राजुल पामी हो राज, कहे हितकामी रे मोहन पंमित रूपनो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीयं श्रीनेमिनाथजिनस्तवनं ॥

॥ अंबरीयोनें गाजे हो नटियाणी वड चूए ॥ ए देशी ॥

॥ राजुल कहे रथवालो हो, नणदीरा वीरा हठ तजो, कांइ पालो पूरव प्रीत ॥ मूको किम विण गुनहे हो नणदीरा वीरा विलपतां, कांइ ए शी शीख्या रीत ॥रा०॥१॥ हुंतो तुम चरणारी हो, नणदीरा वीरा मोजडी, कांइ सांजलो आतमराम ॥ तो मुजने उवेखो हो नणदीरा वीरा शा वती, कांइ नही ए सुगुणनां काम ॥रा०॥२॥ पशुआने करी करुणा हो, नणदीरा वीरा मूकीया, कांइ में शो चोरी कीध ॥ पशुआंथी शुं हीणी हो, नणदीरा वीरा त्रेवडी, कांइ मुजनें विछोहो दीध ॥रा०॥३॥ एहवुं तुम मन खोटुं हो, नणदीरा वीरा जो हतुं, तो पाडी कां नेहने फंद ॥ उलजे ते नवि सुलजे हो, नणदीरा वीरा मनडुं, कांइ कोडि मिले जो इंद ॥ रा० ॥ ॥४॥ मुज उपर कांइ थाउ हो,नणदीरा वीरा निर्दयी, कांइ नजर न मेलो केम ॥ ठेलीजें नहि पाये हो, नणदीरा वीरा वलगती,कांइ नेह न गाले हेम ॥स०॥५॥ मेंतो कहो किण वातें हो, नणदीरा वीरा दूहव्या,

ते कांइ राखो बो रोष ॥ मह्मारे तो ह्शे तुमशुं हो, न णदीरा वीरा अलेहणुं, तो केह्ने दाखुं दोष ॥रा०॥ ॥ ६ ॥ तांत त्रूट्यानी परें हो, नणदीरा वीरा जो डीयें, कतुआगीनी जेम ॥ रेलाजें नहि पाये हो, न णदीरा वीरा वलगतां, कांइ नेह न चाले एम ॥ रा० ॥ ७ ॥ इम कहेती व्रन लेतो हो, नणदीरा वीरा ज इ चढी,कांइ शिवमह्मेले कीयो वास ॥ धन धन ते जग मांहे हो, नणदीरा वीरा प्रीतडी, कांइ मोह्न कहे शाबास ॥ रा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवनं ॥

॥ कानुडो वीण वजावे रे, कालिंदीने कांठे ॥ ए देशी ॥

॥ वामानंदन हो प्राणथकी बो प्यारा, नांही कीजें हो नयणथकी पण न्यारा ॥ए आंकणी॥ पुरिसा दाणी शामल वरणो, शुद्धसमकितने नासे ॥ शुद्धपुंज जिणें कीधो तेह्ने, उज्ज्वलवरण प्रकासे ॥ १ ॥ वा०॥ तुमचरणे विषधर पण निरविष, दंसणे थाए वीडो ॥ तो अम शुद्ध स्वन्नाव न हूवे, ए अमें ग्रह्यो निवीडो ॥ २ ॥ वा० ॥ कमठ राय मद किण गणतीमां, मोह् तणा मद जोतां ॥ ताह्री शक्ति अनंती आगल, केई तरि गया गोता ॥ ३ ॥ वा०॥ तें जिम तास्या तिम कुण तारे, कुण तारक कहूं एह्वो ॥ सायरमान ते सायर सरिखुं, तिम तुं पण तुं जेह्वो ॥ ४ ॥ वा०॥ किमपि न बेसे करुणा करते,पण मुझ प्राप्ति अनंती॥ जेम पडे कण कुंजर मुखथी, कीडी बहु धनवंती

॥ ५ ॥ वा० ॥ एक आवे एक मोजां पावे, एक करे उलगडी ॥ निजगुण अनुजव देवा आगल, पडखे नही तुं बे घडी ॥ ६ ॥ वा० ॥ जेहवी तुमथी माह री माया, तेहवी तुमें पण धरजो ॥ मोहन कहे क विरूपविबुधनो, परतक्ष करुणा करजो ॥ ७ ॥वा०॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामिस्तवनं ॥

॥ पछेवडानी देशी ॥

॥ डुर्लन जव लही दोहिलो रे,कहो तरीयें केण उ पाय रे॥प्रजुजी ने वीनवुं रे ॥ ए आंकणी॥ समकित साचुं साचवुं रे, ते करणी किम थाय रे ॥ प्र० ॥१॥ अशुजमोह जो मेटीयें रे, कांइ शुजप्रजुकने जाय रे ॥प्र०॥ नीरागें प्रजु ध्याइयें रे, कांइ तो पण रागें क हाय रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ नाम ध्याता जो ध्याइयें रे, कांइ प्रेम विना नवि तान रे ॥ प्र०॥ मोहविकार जि हां तिहां रे, कांइ किम तरीयें गुणधाम रे ॥ प्र० ॥३॥ मोहबंध जगबंधियो रे,कांइ बंध जिहां नही शोष रे ॥प्र०॥ कर्मबंध न कीजीयें रे, कर्मबंधन गये जो श रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तेहमां शो पाड चढावीयें रे, कां इ तुमें श्रीमहाराज रे ॥ प्र० ॥ विण करणी जो ता रशो रे, कांइ तो साचा श्रीजिनराज रे ॥ प्र० ॥५॥ प्रेममगननी जावना रे, कांइ जाव तिहां जववार रे ॥ प्र० ॥ जाव तिहां जगवंत छे रे, कांइ उलसे आतम सार रे ॥प्र०॥६॥ पूरणघट जीतर जस्यो रे, कांइ अ नुजव अनुहार रे ॥ प्र० ॥ आतमध्यानें उलखी रे,

कांइ तरशुं नवनो पार रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान तु झ वीनति रे, कांइ मानेजो निशदीस रे ॥ प्र० ॥ मोहन कहे मनमंदिरें रे, कांइ वसियो तुं विशवावी श रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति श्री मोहनविजजीकृत चोवीशी आदिकना स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं, कांइ प्रनु पाखे कृण एके मन न सुहाय जो ॥ ध्याननी ताली रे लागी नेहशुं, जलद घटा जिम शिवसुतवाहन दाय जो ॥ प्री० ॥ १ ॥ नेह घेलुं मन माहारुं रे प्रनु अलजे रहे, तन धन मन ए कारणथी प्रनु मुझ जो ॥ मारे तो आधार रे साहिब रावलो, अंतरगतनुं प्रनु आगल कहुं गुज्झ जो ॥ प्री० ॥२॥ साहेब ते साचो रे जगमां जाणीएं. सेवकनां जे सहेजें सधारे काज जो ॥ एहवे रे आचरणे किम करीने रहुं, बिरुद तुमारो ता रण तरण जिहाज जो ॥ प्री० ॥ ३ ॥ तारकता तुझ मांहे रे श्रवणें सांनली, ते नणी हुं आव्यो छुं दीन दयाल जो ॥ तुझ करुणानी लेहरे रे मुझ कारज सरे, शुं घणुं कहीएं जाण आगल कृपाल जो ॥ प्री० ॥४॥ करुणादिक कीधी रे सेवक उपरें, नव नय नावठ नांगी नक्ति प्रसन्न जो॥मन वंछित फलियां रे जिन आ लंबने,कर जोडीने मोहन कहे मनरंग जो ॥ प्री०॥५॥

॥ अथ गोमी पार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ राणीजीना देशमां रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्राणथकी प्यारो मुने रे ॥ साहेबा ॥ पुरुषादाणी पास ॥ प्रभुनें ओलगुं रे ॥ अंतरजामी आगलें रे ॥ साहेबा ॥ भनो करुं अ दास ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ मनमंदिर अंदर वस्यो रे ॥ साहेबा ॥ मुझरो ल्यो महाराज ॥ प्रभु० ॥ रहेशो जो टालो करी रे ॥ साहेबा ॥ तो केम सरशे काज ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भनां ओलगडी करुं रे ॥ साहेबा ॥ द्यो दरिसणनुं दान ॥ प्रभु० ॥ नीपट कां करीनें रह्या रे ॥ साहेबा ॥ आंखो आडा कान ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ इम नाठां केम छूटशो रे ॥ साहेबा ॥ दासथी दीनदयाल ॥ प्रभु० ॥ में पालव पकड्यो खरो रे ॥ साहेबा ॥ करुणावंत कृपाल ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ हुंतो रागी ताहेरो रे ॥ साहेबा ॥ नीरागी छे लोक ॥ प्रभु० ॥ हवे तुम अम मेलावडो रे ॥ साहेबा ॥ नाव नदी संयोग ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ अकलकला कांइ ताहरी रे ॥ साहेबा ॥ मुझथी तो न कलाय ॥ प्रभु० ॥ पूछुं हुं शीखवतां कला रे ॥ साहेबा ॥ मुझथी तो न शीखाय ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ तुं पण एक न वीसरे रे ॥ साहेबा ॥ थलपति प्राण आधार ॥ प्रभु० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो रे ॥ साहेबा ॥ आशरो इणे संसार ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ आदि जिन स्तवनं ॥ कुमरखडानी देशीमां ॥

॥आदीसर जगदीसरू रे,अवधारो अरदास॥मनोह र साहेबा ॥ साचो मनमेलो मल्यो रे, पलक न छो डुं पास ॥ मनो० ॥१॥ डुहव्यो पण खीजे नही रे, प्रनु तुं गिरिमा महंत ॥ मनो० ॥ नयनबे ण सहुको कहे रे, खंत सूरा अरिहंत ॥ मनो० ॥ २ ॥ नयन अंतर प्रनु ताहरे रे, अविगत खेल अनंत ॥ मनो०॥ ज्ञानीथी कांइ छानी नही रे, अनंतिमा नहितवंत ॥ मनो० ॥ ३ ॥ जाणपणुं तो जाणुं खरुं रे, अहो मरुदेवाजात ॥ मनो० ॥ दीजें समकित वा सना रे, शो वातें एक वात ॥ मनो० ॥ ४ ॥ डुर्जन नेट सुजन थइ रे, नमन नमत संसार ॥ मनो० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो रे, जिनतूं प्राण आधा र ॥ मनो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचासराजीनुं स्तवन ॥.

॥ छां जी छां जी छां जी बंदा छां जी, मेंतो खासी दाढीवाला ॥ बंदा० ॥ मेंतो अनुनवरस मतवाला ॥ बंदा० ॥ ए आंकणी ॥ चंद्रकिरणसम तुम गुण स्तवना, गंगा रंग तरंगा ॥ अम मन बाल मराल तिहां जीले, नलिनी नक्ति प्रसंगा ॥ बंदा०॥१॥ जागी शुद्ध दिशा नयो रागी, नागी नवनय नेड ॥ लागी लगन मगन नयो तोशुं, नाखी कुगति उखेड ॥ बंदा०॥२॥ ज्ञान अनंतुं शक्ति अनंती, लीला सहेज अनंती ॥ देजो मुझने एहवा तुमनें, राख्या हृदय एकंती ॥

बंदा० ॥ ३ ॥ परम मूरति कोइ प्रभुनी कहेशे, हियडे केम न समाणी ॥ जेम मुकुरमें कुंजर काया, तेम वली मणिमय माणी ॥ बंदा० ॥ ४ ॥ तुं घटप्रभृति पदार्थथी न्यारो, तो केम सहुनें प्यारो ॥ कोइक अकलकला तुम पासें, तुं जसवेली क्यारो ॥ बंदा० ॥ ॥ ५ ॥ कृपाकटाक्षनी कणिका ताहरी, निरखी हरख्यो हूं तो ॥ तुं अविनाशी ज्योतिविलासी, प्रगट जिहां तिहां तूंतो ॥ बंदा० ॥ ६ ॥ पंचासर श्रीपास प्रभाकर, ध्याताध्येयें ध्यायो ॥ रूपविबुधनी करुणायें स्वामी, मोहनविजयें गायो ॥ बंदा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम जिन स्तवनं ॥

॥ वींजा सेण मारु ॥ ए देशी ॥

॥यादवजी हो॥समुद्रविजय कुल सेहरो हो॥साहेबा माहारी वीनतडी अवधार॥ मीग सेण वारु ॥या०॥ विण अवगुण केम छांमिये हो. साहेबान वनव निरुपम नार ॥ मीग० ॥ १ ॥ या० ॥ तुमथी रूडां पारेवडां हो, साहेबा जोड न खंमे किवार ॥ मीग० ॥ या०॥ उलंभडे लाजो नही हो, साहेबा एहवा श्या निठुर विचार ॥ मीग० ॥ २ ॥ या० ॥ विषमा डूंगर सेववा हो ॥ साहेबा परिहरि सुंदरी सेज ॥ मीग० ॥ या० ॥ मोहोटा पण खोटा सही हो ॥ साहेबा निपट न तजीयें हेज ॥ मीग० ॥ ३ ॥ या० ॥ पावस ऋतुपरें तोरणें हो॥साहेबा आव्या करिय अभंग ॥ मीग० ॥ या० ॥ पण थया शारद मेहुला हो ॥

साहेबा ए श्या सूरिजन ढंग ॥ मीठा० ॥ ४ ॥ या० ॥ निसुण्या कहीयें प्रसंगमें हो ॥ साहेबा तुम सरिखा निसनेह॥मीठा०॥या०॥एम पद्मुआने कारणें हो ॥ साहेबा कोण गयो परिहरि गेह॥मीठा०॥५॥या०॥वीसरी गया तुमने खरा हो ॥ साहेबा पूरव विविध विनोद ॥ मीठा० ॥ या० ॥ आवो प्रीतम पातला हो ॥ साहेबा कहुं बुं बिठावी गोद ॥ मीठा० ॥ ६ ॥ या०॥ नेम पहेलां राजीमती हो ॥ साहेबा पोहोती मुगति दुवार ॥ मीठा० ॥ या० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो हो ॥ साहेबा शिवादेवी मात मलार ॥ मी० ॥ ७ ॥

॥ अथ ख्याल ॥

॥समज जा गुमानी हो दिलजानी॥हांरे तुं तो संव व जिनने भज ले, हांरे तुं तो क्रोध कषायनें तज ले ॥सम०॥१॥हांरे तुंतो फरि पदवी नवि पावे,हांरे तुझ मूरख कुन समजावे ॥ सम० ॥ २ ॥ हांरे मोहननो माणक बोले, नही कोइ जैनधरमने तोलें ॥ स०॥३॥

॥ अथ ख्याल ॥

॥ पासजिनंदा माता वामाजीके नंदा रे,तुम पर वारी जाउं खोल खोल रे ॥ हांरे दरवाजे टेडे खोल खोल रे, हम दरसन आये तोल तोल रे ॥ दर० ॥ ॥ १ ॥ पूजा करुंगी मेंतो धूप धरुंगी रे, फूल चडाउंगी बहु मोल मोल रे ॥ दर० ॥ २ ॥ तें मेरा ठाकर में तेरा चाकर, एकवार मोसुं बोल बोल रे ॥ दर०॥३॥ सुरतमंमण सुंदर मूरत, मुखडुं ते झाकम

ऊोल ऊोल रे ॥ दर० ॥ ४ ॥ रूप विबुधनो मोहन पजणे, रंग लागो चित चोल चोल रे ॥ दर० ॥ ५ ॥

॥ अथ शंखेश्वरस्तवनं ॥

॥ आंखडीयें में आज शेत्रुंजो दीठो रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रजु जगजीवन जगबंधु रे, सांइ सयाणो रे ॥ ताहारी मुड्रायें मन मान्युं रे, जूठ न जाणो रे ॥ ए आंकणी ॥ तुं परमातम तुं पुरुषोत्तम, वाला मारा तुं परब्रह्म सरूपी रे ॥ सिद्धसाधक सिद्धांत सनातन, तुं त्रय जावें प्ररूपी रे ॥ सांइ सयाणो रे ॥ ॥ १ ॥ ताहरी प्रजुता त्रिहुं जगमांहे ॥ वा० ॥ पण मुऊ प्रजुता महोटी रे ॥ तुऊ सरिखो महारे महा राजा, ताहरे नही कांइ खोटी रे ॥ सांइ० ॥ २ ॥ तुं निरड्व्य परमपद वासी ॥ वा० ॥ हुंतो ड्व्यनुं जोगी रे ॥ तुं निरगुण हूंतो गुणधारी ॥ हुं करमी तुं अजोगी रे ॥ सांइ० ॥ ३ ॥ तुंतो अरूपी हूंतो रूपी ॥ वा० ॥ हुं रागी तुं निरागी रे ॥ तुं निरविष हूंतो विषधारी, हूं संग्रही तुं त्यागी रे ॥ सांइ० ॥ ४ ॥ ताहरे राज नही कोइ एके ॥ वा० ॥ चउदराज बे माहरे रे ॥ माहरी लीला जोतां प्रजुजी, अधिकुं शुं बे ताहरे रे ॥ सांइ० ॥ ५ ॥ पण तुं महोटो हूंतो बोटो ॥ वा० ॥ फोकट फूले शुं थाय रे ॥ खमजो ए अपराध अमारो, जक्तिवशें कहेवाय रे ॥ सांइ० ॥ ॥ ६ ॥ श्री शंखेश्वर वामानंदन ॥ वा० ॥ उजा

उलग कीजें रे ॥ रूपविबुधनो मोहन पनणे. चरणनी सेवा दीजें रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ इति शंखेश्वर० ॥

॥ अथ गौतम प्रनातिस्तवनं ॥ प्रारंनः ॥

॥ राग प्रनाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात ऊठी नमो, गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्याता सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुनूति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम जेहनुं ॥ अनेदबुद्धें करी नविजन जे नजे, पूर्ण पोहोंचे सही नाग्य तेहनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एहज गौतमतणुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नहीं माहात्म्य केहेनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बल तेज ने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखंम प्रचंम प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ४ ॥ प्रणव आदें धरी माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम ध्याये ॥ कोडि मनका मना सफल वेगें फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधि ने व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर नांजे वली, गौतमनाम जपतां उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदें आप लब्धें जइ,पन्नरशें त्रण ने दिख दीधी॥ अठम पारणे तापस कारणें, क्षीरलब्धें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस पच्चास लगें गृहवासें वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां

लगें केवल नोगव्युं, नक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ७ ॥ महियल गौतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि रुद्धिने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस सौनाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ ए ॥ इति गौतम प्रनातिस्तवनं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ श्रीसिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जगजीवन अंतर जामी रे, एतो प्रणमुं हुं शिरनामी ॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करियें रे, करियें तो नवजल तरियें ॥ जात्री० ॥ ' ॥ श्रीरुषन्न जिनेश्वरराया रे, जिहां पूर्व नवाणुं. आया रे, प्रन्नु समवसर्या सुखदाया ॥ जात्री० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन्न वखाणुं रे, पांच कोडी पुंमरीक जाणुं रे, जे पाम्या पद निरवाणुं ॥ जात्री० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सातें रे, बे कोडी साधु संघातें रे, एतो पहोता पद लोकांतें ॥ जात्री० ॥४॥ काति पूनिमें कर्मने तोडी रे, जिहां सीधा मुनि दश कोडी रे, तेतो वंदो बे कर जोडी ॥ जात्री० ॥ ५ ॥ एम नरतेसरने पाटें रे, असंख्याता मुनि वाटें रे, पाम्या मुगतिरमणी ए वाटें॥जात्री०॥ ॥६॥दोय सहस मुनि परिवार रे,थावच्चा सुत सुखकार रे, सयपंच सेलंग अणगार ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली देवकीसुत सुजगीश रे, सीधा बहु यादववंश रे, ते प्रणमो रे मन हंस ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ पांच पांमव इणें गिरि आव्या रे, सिद्धा नव नारद रुषि राया

रे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥जात्री०॥ए॥ ए तीरथ महिमावंत रे, जिहां सीधा साधु अनंत रे, इम नांखे श्रीनगवंत ॥ जात्री० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि समो नहीं कोय रे,तीरथ सघला में जोय रे, जे फरस्यां पाप न होय ॥ जात्री० ॥ ११ ॥ (१) एकल आहारी (२) सचित्त परिहारी रे, (३) पदचारी ने (४) नूमि संथारी रे (५) शुद्ध समकित ने (६) ब्रह्म चारी ॥ जात्री० ॥ १२ ॥ एम बहरी जे नर पाले रे, बहुदान सुपात्रें आले रे, ते जनम मरण नय टाले ॥ जात्री० ॥१३॥ धन्य धन्य ते नरने नारी रे, नेटे विमलाचल एक वारी रे, जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जात्री० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद्रसूरि सुपसायें रे, जिनहर्ष होय उब्रायें रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥ इति विमलाचल० ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीनुं पालणुं प्रारंनः ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रतन जाइउं, चोशठ इंद्रनां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञानें जोइ धायो श्री जिन वीरने, आवे क्षत्रियकुंम नयर मझार ॥ माता० ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी माता कने, अवसर्पिणी निद्रा दीए सार ॥ एम मेरुशिखरें जिनने लावे नक्तिशुं, हरि पंच रूप करी मनोहार ॥ माता० ॥ २ ॥ एम असंख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रभुने उब्रव मंमाणे लइ जाय ॥ पांमुक वन शिलायें जिनने लावे नक्तिशुं, हरि उबंगें थापे इंद्र घणुं उब्राय ॥ माता०

॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशें करी, वीरनो सनात्र महोत्सव करे सार ॥ अनुक्रमें वीर कुमरने लावे जननी मंदिरें, दासी प्रियंवदा जई तेणी वार ॥ माता० ॥ ४ ॥ राजा सिद्धारथने दीधी वधामणी, दासीने दान अने बहु मान दिए मनोहार ॥ क्षत्रिय कुंमगांहे उछव मंमावियो, प्रजा लोकने हरष अपार ॥माता०॥५॥ घर घर श्रीफल तोरण त्राटज बांधियां, गोरी गावे मंगल गीत रसाल ॥ राजा सिद्धारथें जनम महोत्सव कस्यो, माता त्रिशला थई उजमाल ॥ माता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पारणे ॥ ए आंकणी ॥ फूले लाडकडा प्रभुजी आनंद नेर ॥ हरखी निरखिने इंद्राणीयो जाए वारणें, आज आनंद श्रीवीरकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुखडा उपर वारुं कोटी चंद्रमा, पंकज लोचन सुंदर विशाल कपोल ॥ शुकचंचू सरिखी दीसे निर्मल नासिका, कोमल अधर अरुण रंगरोल ॥ माता० ॥ ८ ॥ ओषधि सोवनमढी रे शोने हालरे, नाजुक आनरण सघलां कंचन मोतीहार ॥ कर अंगुठो धावे वीरकुमर हर्षे करी, कांइ बोलावतां करे किलकार ॥ माता० ॥ ९ ॥ वीरने लिलाडें कीधो वे कुंकुम चांदलो, शोने जडित मर्कत मणिमां दीसे लाल ॥ त्रिशलायें जुगतें आंजी अणियाली बेहु आंखडी, सुंदर कस्तूरीनुं टबकुं कीधुं गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कंचन शोले जातनां रत्नें जडियुं पालणुं, फुलावती वेला थाए

घूघरनो घमकार ॥ त्रिशला विविध वचनें हरखी गा
ये हालरुं, खेंचे फूमतिआली कंचन दोरी सार ॥ मा
ता० ॥ ११ ॥ मारो लाडकवायो सरखा संगें रमवा
जशे, मनोहर सुखडली हुं आपिश एहने हाथ ॥
नोजन वेला रम ऊम रम ऊम करतो आवशे, हुं तो
धाइने नीडावीश हृदया साथ ॥ माता० ॥ १२ ॥
हंस कारंमव कोकिल पोपट पारेवडां, मांही बप्पैया
ने सारस चकोर ॥ मेनां मोर मेल्यां बे रमकडां
रमवा तणां, घम घम घुघरा वजावे त्रिशला कि
शोर ॥ माता० ॥ १३ ॥ मारो वीरकुमर निशालें न
णवा जायशे, साथें सज्जन कुटुंब परिवार ॥ हाथी
रथ घोडा पालायें नलुं शोनतुं, करी निशालगरणुं
अति मनोहार ॥ माता० ॥ १४ ॥ मारा वीर समा
णी कन्या सारी लावशुं, मारा कुमरने परणावीश
मोहोटे घेर ॥ मारो लाडकडो वर राजा घोडे बेसशे,
मारो वीर करशे सदाय लीला लहेर ॥ माता० ॥
॥ १५ ॥ माता त्रिशला गावे वीर कुमरनुं हालरुं, मा
रो नंदन जीवजो कोडी वरीस ॥ ए तो राजराजेसर
थाशे नलो दीपतो, मारा मनना मनोरथ पूरशे जगी
श ॥ माता० ॥ १६ ॥ धन्य धन्य क्षत्रीकुंम गाम म
नोहरु, जिहां वीरकुमरनो जनम गवाय ॥ राजा सि
धारथना कुलमांहे दिनमणि, धन्य धन्य त्रिशला राणी
जेहनी माय ॥ माता० ॥ १७ ॥ एम सहीयर टोली
नोली गावे हालरुं, थाशे मनना मनोरथ तेहने घेर ॥

अनुक्रमें महोदय पदवी रूपविजय पद पामशे, गाए अमिय विजय कहे थाशे लीला लहेर ॥माता०॥१८॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरियुं प्रारंभः ॥

॥ माता त्रिशला फुलावे पुत्र पालणे, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपाने वली रत्नें जडियुं पालणुं, रेशम दोरी घूघरी वागे छुम छुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीशें अंतरें, होशे चोवीशमो तीर्थंकर जितपरिमाण ॥ केशी स्वामी मुख थी एवी वाणी सांभली, साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण ॥हा०॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्री के जिनराज, वीता बारे चक्री नहिं हवे चक्री राज, जिनजी पास प्रभुना श्री केशी गण धार, तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिन राज, मारी कूखें आव्या तारण तरण जहाज, मारी कूखें आव्या त्रण्य भुवन शिरताज, मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुजने दोहोलो उपन्यो जे बेसुं गज अंबाडीयें, सिंहासनपर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ सहु लक्षण मुजने नंदन ताहारा तेजनां, ते दिन संभारुं ने आनंद अंग न माय ॥हा०॥४॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारने आठ छे, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघें लंछन सिंह बिराजतो, में पहेले सुपनें दीठो विशवा वीश ॥

हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देयर छो सुकुमाल ॥ हसशे भो जाइयो कही दीयर माहारा लाडका, हसशे रमशे ने वली चूंटी खणशे गाल, हसशें रमशे ने वली ठुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा रा जाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचशें मामीना भाणेज छो, नंदन मामलीयाना भाणेजा सुकुमाल ॥ हसशे हाथे उछाली कहीने नाहाना भाणेजा, आंख्यो आंजी ने वली टबकुं करशे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रत ने जडीयां झालर मोती कशबी कोर ॥ नीलां पीलां ने वली रातां सरवे जातिनां, पहेरावशे मामी माहारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सूखड ली सहु लावशे, नंदन गजुवे भरशे लाडु मोतीचूर ॥ नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने बेन तमारी नंद ॥ ते पण गुंजे भरवा लाखणसाई लावशे, तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावशे लाख टकानो घूघरो, वली झूडा मेनां पोपट ने गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीतरने वली मोर जी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीया, नंदन तमने

अमने केलीघरनी मांहे ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंमलें, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरुगिरि पर सुरपतियें नवरावया, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ॥ मुखडा उपर वारुं कोटि कोटि चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा०॥ १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशालें पण मूकशुं, गजपर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज ॥ पसली जरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सुखडली लेशुं नीशालीयाने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशो ने परणावशुं, वहूवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणुंने पधरावशुं, वरवहु पोंखी लेशुं जोइ जोइने देदार ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीअर सासर माहारा बेहु पख नंदन ऊजला, महारी कूखें आव्या तात पनोता·नंद ॥ महारे आंगण वूठा अमृत दूधें मेहुला, महारे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ॥ बीलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिजोजननी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ पुण्यसंजोगें नरजव लाधो, साधो आतम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, एम जांखे जिनराज रे ॥ प्राणी रात्रीजोजन वारो ॥ आगम

वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे ॥ प्राणी ॥ रात्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनंत्य बावी शमां रयणीजोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें कारण रातें मत जमजो, जो हुवे हइडे शान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुध ने जोजन, एटलां रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नीतिवचन न मजीजें रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें, टाले जोजन टाणो ॥ तुमें तो मानवी नाम धरावो, केम संतोष न आणो रे ॥प्रा०॥४॥ माखी जू कीडी कोलीआवडो, जोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥प्रा०॥५॥ लखुं जव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपाव्युं ॥ एक तलाव फोडंतां तेटलुं, दूषण सुगुरु बताव्युं रे ॥ प्रा० ॥६॥ ॥ एकलोत्तर जव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर जव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ एक शो चुम्मालीश जव लगें कीधा, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एकशो एकावन जव लगें दीधां, कूडां कलंक अपार ॥ तेवुं रे एक शीयल खंमयामां, दोष कह्यो निरधार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एक शो नवाणुं जव लगें खंमया, शीयल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रि जमवामां, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रिजोजन मां दोष घणा छें, कहेतां नावे पार ॥ केवली कहेतां

पार न पावे, पूरव कोडी मझार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ एवुं जाणीने उत्तम प्राणी, नित चौविहार करीजें ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाज एणें विधें लीजें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाळे नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ निंदावारकसज्झाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महापाप रे ॥ वैर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतो न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बळंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बळती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु जर्या रे, केहनां नळियां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ॥ ४ ॥ गुण ग्रहेजो सहु को तणा रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निंदा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहामणी ॥ प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी

साथें प्रीत पियुडा, कह्यो किण परें कीजीयें ॥ रुंघ वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥ काठडी बूटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीयें ॥ कुल विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥ ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पेहेलां बीहीजीयें ॥ रखे कोइ जाणे रे, मनशुं भूर्जीयें ॥ उथलो ॥ भूजीयें मनशुं फूरीयें पण, जोग मलवो छे नही ॥ रात दिन विलपंतां जाये, अवटाई मरवुं सही ॥ निज नारीथी संतोष न वल्यो, परनारीथी कह्यो शुं हशे ॥ जो नरे जाणे तृप्ति न वली, तो एठ चाटे शुं हशे ॥ २ ॥ ॥ चाल ॥ मृगतृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उथलो ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश माखणनो वली ॥ बूडतां बाचक जरीया केणें, ते तस्या वात न सांजली ॥ तेम नार रमतां परतणी, संतोष न वल्यो एक घडी ॥ चित चटपटी उच्चाट थाये, नयणें नावे निद्रडी ॥ ३ ॥ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे, रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्रीसंगनो ॥ उथलो ॥ परनारी साथें प्रेम पियुडा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रूडो, पछी नही रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह मांमे, छांमे तेहशुं वातडी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारी साथें प्रीतडी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमें रे, राचे सापिणी ॥ उथलो ॥ सापिणी सरखी वेण निरखी, रखे

शियलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके, देव दानवने छले ॥ मनमांहे काली अति रसाली, वाणि मीठी शेलडी ॥ सांजली जोला रखे जूलो, जाणजो विषवेलडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मलवा तणो ॥ उथलो ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहिलुं ॥ क्षण मेडियें क्षण शेरीयें, जमतां न लागे सोहिलुं ॥ उच्चासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन जमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाऊे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जायें कलामी रे, मनशुं कल मले ॥ उन्मत्त थइनें रे, अलल पलल लवे ॥ उथलो ॥ लवे अलल पलल जाणो, मोहघेलो मन रडे ॥ महाम दन वेदन कठिन जाणी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए दश अवस्था काम केरी, कंत कायाने दहे ॥ एम चित्त जाणी तजे राणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ परनारीना रे, पराजव सांजलो ॥ कंता कीजें रे, जाव ते निर्मलो ॥ उथलो ॥ निर्मलें जावें नाह समजो, परवधूरस परिहरो ॥ चांपीयो कीचक जीमसेनें, शिला हेठल सांजरो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक, रडवड्यां ग्रंथें कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःखपुंज पा म्यो, अपजश जगमांहे लह्या ॥ ८ ॥ चाल ॥ शिय ल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आजरणें रे, जग मन मोहीयें ॥ उथलो ॥ मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमिय थइ संचरे ॥ केसरी सिंह शियाल

थाये, अनल अति शीतल करे ॥ साप थाए फूल माला, लछी घर पाणी नरे ॥ परनारी परिहरी शियल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाय लागीने रे, मधुर वयणें स्तवुं ॥ उथलो ॥ वयण म्हारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोहोटा, नरकें थइयें दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारी जे जग, शियल पाले कुलतिलो, ते पामशे यश जगत मांही, कुमुदचंद सम ऊजलो ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शियलविषे नारीने शीखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शीखामण खरी ॥ समजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उथलो ॥ सुंदरी सहेजें हृदय हेजें, पर सेजें नवि वेसीयें ॥ चित्तथकी चूकी लाज मूकी, पर मंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींमती नार निर्लज, शास्त्रें पण तजवी कही ॥ जेम प्रेत दृष्टें पडयुं जोजन, जमवुं ते जुगतुं नही ॥ १ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ उथलो ॥ गुह्य घरनुं परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे विपरीत जासे, तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा अने अगोचर, एकलां नवि जाइयें ॥ सहसातकारें काम करतां, सहेजें शियल गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट नरशुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे, आघुं ऊढीयें ॥ उथलो ॥ आघुं ते ऊढी वात करतां,

घणुंज रूडा शोजीयें ॥ सासू अने माना जण्या विण, पलक पास न थोजीयें ॥ सुख दुख सरज्युं पामीयें पण, कुलाचार न मूकीयें ॥ परवश वसतां प्राण तजतां, शियलथी नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ हाथो हाथे रे, तालि न लीजीयें ॥ उथलो ॥ ताली न लीजें नजर न दीजें, चंचल चाल न चालीयें ॥ एक विषय बुद्धें वस्तु केहनी, हाथे पण नवि झालीयें ॥ कोटि कंदर्प रूप सुंदर, पुरुष पेखी न मोहियें ॥ तृणखलां तोले गणी तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पियारो रे, वलि न वखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ उथलो ॥ जाणीयें पियु विण पुरुष सघला, सहोदर समोवडे ॥ पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडें ॥ कुरूप कुष्टी कूबडो ने, दुष्ट दुर्बल निर्गुणो ॥ भरतार पामी भामिनी ते, इंद्रथी अधिको गुणो ॥ ५ ॥ चाल ॥ अमर कुमारें रे, तजी सुरसुंदरी ॥ पवनंजयें रे, अंजना परिहरी ॥ उथलो ॥ परिहरि सीता रामें वनमां, नले दमयंती वली ॥ महासती माथे कष्ट पड्यां पण,शियलथी ते नवि चली ॥ कसोटीनी परें कसीय जोतां, कंतशुं विहडे नही ॥ तन मन वचनें शियल राखे, सती ते जाणो सही ॥६॥ ॥चाल॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुल थइने रे, मन न बगाडीयें ॥ उथलो ॥ मन न बगाडीयें पर पुरुषनुं, जोग जोतां नवि मले ॥ कलंक माथे चढे

कूडां, सगां सहु दूरें टले ॥ अणसरज्यो उच्चाट था ये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इह लोक पामे आप दा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने ईज त खोइ ॥ उथलो ॥ ईजत खोइ देख अन्नया, [illegible] सु दर्शन नवि चल्यो ॥ नरतार आगल पडी [illegible], अ पवाद सघले उच्छल्यो ॥ कामनी बुध्दें कामिन[illegible], वं कचूल वाह्यो घणुं ॥ पण शियलथी चूकी नहीं, दृ ष्टांत एम केतां नणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शियल प्रनावें रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिनुवनमांहे रे, जे थई ठती ॥ उथलो ॥ ठती थइने शियल राख्युं, कल्पना की धी नही ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां [illegible] रही ॥ विविध रत्नें जडित नूषण, रूपसुंदरी किन्नरी ॥ एक शियल विण शोन्ने नही. ते सत्य गणजो सुं दरी ॥ ए ॥ चाल ॥ शियल प्रनावें रे, सहु सेवा क रे ॥ नवे वाडें रे, जेह निर्मल धरे ॥ उथलो ॥ धरे निर्मल शियल उज्जल, तास कीर्ति झलहले ॥ मन कामना सवि सिद्धि पामे, अष्ट नय दूरें टले ॥ धन्य धन्य ते जाणो धरा, जे शियल चोखुं आदरे, आनं दना ते उंघ पामे, उदय महाजस विस्तरे ॥ १० ॥

॥ अथ क्रोधनी सज्झाय ॥

॥ कडुवां फल ठे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ री शतणो रस जाणीयें, हालाहल तोलें ॥ ग० ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध स

हित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्य ने क्रोधथकी थयो, चंमकोशियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठे जे घरथकी, पहेलुं ते घर बाले ॥ जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेंनुं प्रजाले ॥ क० ॥४॥ क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो प्राणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साई ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाई ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ माननी सज्झाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥मुक्ति विना सुख शाश्वतां, केम लहियें युक्ति रे ॥ रे० ॥२॥ विनय वडो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे॥ गर्वे गुण जाये गली, चित्त जूउ विचारी रे ॥ रे ० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो रावणें, ते तो रामें मार्यो रे ॥ डुर्योधन गरवें करी, अंतें सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ शूकां लाकडां सारिखो, डुखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशोटो रे ॥ रे० ॥५

॥ अथ मायानी सज्झाय ॥

॥ समकितनुं बीज जाणीयें जी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामां समकित वसे जी, कूडामां मिथ्यात रे ॥ प्राणी ॥ मकरो माया लगार ॥ १ ॥ ए

आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूड कपटनो रे कोट ॥ जीनें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मेल न छांमे मन तणो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं मांमे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मन नवि मूके आमलो जी, ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं राख्यो रे नेद ॥ मल्ली जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्रीवेद रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजलो जी, मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्तिपुरी जावा तणो जी, ए मारग ले शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति मायानी सज्झाय ॥

॥ अथ लोननी सज्झाय ॥

॥ तुमें लक्षण जो जो लोननां रे, लोनें जन पामे क्षोनना रे ॥ लोनें माह्या मन मोल्या करे रे, लोनें डुर्घट पंथें संचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोन तेहनां लेउं नामणां रे, वली पाय नमीने करुं खामणां रे ॥ लोनें मर्यादा न रहे केहनी रे, तुमें संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोनें घर मेहली रणमां मरे रे, लोनें ऊंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोनें पाप नणी पगलां नरे रे, लोनें अकारज करतां न उसरे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोनें मनडुं न रहे निर्मलुं रे, लोनें सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोनें न रहे प्रीति ने पावतुं रे, लोनें धन मेले बहु एकतुं रे ॥तु०॥

॥ ४ ॥ लोनें पुत्र प्रत्यें पिता हणे रे, लोनें हत्या पातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोनें करी रे, उपर मणिधर थाये ते मरी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोजनो थोज दिसे नहीं रे, एवुं सूत्र सिद्धांतें कह्युं सही रे ॥ लोनें चक्री सजूम नामें हुउ रे, ते तो समुद्रमांहे मूबी मुवो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोजनने ढंमजो रे, एक धर्मशुं ममता मंमजो रे ॥ कवि उदयरत्न जांखे मुदा रे, वंदूं लोज तजे तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति लोजनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सद्याय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं उठे परजात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जिम पामे जव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म ॥ कवण अमारो ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चरकाण, सूधी पाले जिननी आण ॥ जणजे गुणजे स्तवन सद्याय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चीतारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवंतां सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव, द्रव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पूजा करतां लान अपार, प्रजु जी महोटा मुक्ति दातार ॥ जे उबापे जिनवर देव, तेहने नव मंमकनी टेव ॥ ६ ॥ पोशालें गुरु वंदजे

जाय, सुणजे वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सू
झंतो आहार,साधुने देजे सुविचार ॥७॥ साहामिवत्स
ल करजे घणुं,सगपण मोहोटुं सहामीतणुं ॥ दुःखीया
हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुविशेष ॥ ८ ॥
घर अनुसारें देजे दान, मोहोटाशुं म करे अभिमा
न ॥ गुरुने मुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके
घडी ॥ ए ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिका
नो परिहार ॥ म भरजे केनी कूडी साख, कूडा ज
नशुं कथन म भाख ॥ १० ॥ अनंतकाय कह्या बत्री
श, अभक्ष्य बावीशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि
कीजें किमे, काचां कूणां फल मत जिमे ॥ ११ ॥ रा
त्रीभोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ सा
जी साबू लोह ने गली, मधु धावडी मत वेचो वली
॥ १२ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां
कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल
पीतां दोष अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीनां करजें यत्न,
पातक छंमी करजे पुण्य ॥ छाणां इंधण चूलो जोय,
वावरजे जिम पाप न होय ॥ १४ ॥ घृतनी परें वा
वरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ बारे व्रत
सूधां पालजे, अतीचार सघला टालजे ॥ १५ ॥ क
ह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ मा
थे म लेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेल म भरजे पिंम
॥ १६ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारी
ने भाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंभ, पालो

शीयल तजो मन दंन ॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं, उघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खर चो वित्त, पर उपगार करो शुन्नचित्त ॥ १८ ॥ दिव स चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परि हार ॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम नांजे सघ ला संताप ॥ १ए ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जि नवर चरण शरण नवनवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ २० ॥ करे म नोरथ मन एहवा, तीरथ शेत्रुंजे जायवा ॥ समेत शिखर आबू गिरनार, नेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २१ ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी थाये न वनो ठेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा बूटे आमला ॥ २२ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनु क्रमें पामे शिवपुर ठाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससने ह, करणी डुःखहरणी ठे एह ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ श्रीनेम राजुलनी सञाय ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उमे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ पियुजो पियुजी रे नाम, जपुं दिन रातियां ॥ पियुजी चाल्या परदेश, तपे मोरी ठातीयां ॥ पग प ग जोती वाट, वालेसर कब मिले ॥ नीर विठोयां मीन, के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज, साहिब विण नवि गमे ॥ जिहां रे वालेसर नेम, तिहां मारुं मन नमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोही पासें वसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन उल्लसे

॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे देह, दीपक मनमें नही ॥ वाहाला माणस नो विजोग, म होजो केहने ॥ साले रे साल समान, हइयामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड, जोबन वय अति दहे ॥ जेनो पियु परदेश, ते माणस दुःख सहे ॥ फुरि फुरि पंजर कीध, काया कमलज जिसी ॥ हजिय न आव्यो नेम, मलि न नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहशुं राग, टाल्यो ते नवि टले ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसें मले ॥ आंबा केरो स्वाद, लिंबू ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नीर, ते छिल्लर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल, धतूरे किम रमे ॥ जेहने घृतशुं प्रेम ते, तेलें किम जिमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह ते, अवर ने शुं करे ॥ नवजोबन तजी नेम, वैरागी थइ फरे ॥ ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान, पहोती सहसावने ॥ जइ वांद्या प्रभु नेम, संजम लेइ एक मनें ॥ पाम्यां केवल ज्ञान के, पहोती मननी रली ॥ रूपविजय प्रभु नेम, नेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ निद्रडीनी सिझाय प्रारंभः ॥

॥ निद्रडी वेरण हुइ रही, किम कीजें हो सा पुरुष निदान के ॥ चोर फरे चिहुं पासथी, किम सूता हो कांइ दिन ने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे सुणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमाद के ॥ जरा आवे यौवन गले, किम सूता हो कांइ कवण

सवाद के ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा, निद्रा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो अ नंत काल तिहां रहे, इम बगडे हो कांइ धरमनो मो द के ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यमरा जा हो कांइ सबल करूर के ॥ निजसेन्या लइ चिहुं दिशें, किम जागता हो नर कहीयें शूर के ॥ नि० ॥ ॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नही, छेतराये हो नर सूतो नेट के ॥ सूतारिणी पामी जण्या, किम कीजें हो शा पुरुषनी नेट के ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्रीवीरें इम नाखीयुं, पंखी नारंभ हो न करे परमाद के ॥ तेह तणीपरें विचरजो, परिहरजो हो गोयम परमाद के ॥ नि० ॥ ६ ॥ वीर वचन इम सांनली, परिहरियो हो गोयमें परमाद के ॥ लीला सुख लाधां घणां, थि र रहियो हो जगमां जसवाद के ॥ नि० ॥ ७ ॥ निंद निंदडी मंत आणजो, सुइ रहेजो हो सहुको सा वधान के ॥ ध्यान धरम हिये धारजो, इम नाखे हो मुनि कनकनिदान के ॥ नि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ तुमें पीतांबर पहेर्यां जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रने वंदोजी, मनोहर मनगमता ॥ जे अविचल सुखनो कंदोजी ॥ मनो० ॥ मास आ शोयें मधुरें सोहावे जी ॥ मनो० ॥ नवि आदरो तमें नले नावें जी ॥ मनो० ॥ १ ॥ नव आंबिल तप कीजें जी ॥ म० ॥ तो अविचल सुखडां लीजें जी ॥

॥ म० ॥ शुद्धि सातमथी तमें मांफो जी ॥ मनो० ॥ घरनां आरंभ सवि छांफो जी ॥ म० ॥ २ ॥ पहेले पदें अरिहंत सेवो जी ॥ म० ॥ आपे मुक्तिनो मेवो जी ॥ म० ॥ बीजे पदें सिद्ध सोहावे जी ॥ मनो०॥ मनशुद्धें पूजो नले नावें जी ॥ म० ॥ ३ ॥ आचार्य त्रीजे पदें नमो जी ॥ म०॥ तमें क्रोध कषायने दमो जी ॥ म० ॥ उवज्झाय ते चोथा वंदो जी ॥ मनो०॥ साधु पांचमे देखी आणंदो जी ॥ म० ॥ ४ ॥ छठे दरिसन पद जाणो जी ॥ म० ॥ श्रीज्ञानने सातमे वखाणो जी ॥ म० ॥ चारित्र पद आठमे सोहे जी ॥ म० ॥ वली नवमे तप मन मोहे जी ॥ मनो० ॥ ॥ ५ ॥ रस गारव आंबिल कीजें जी ॥ म० ॥ तो मुक्ति तणां फल लीजें जी ॥ म० ॥ संवत्सर युगषट मासें जी ॥ म० ॥ तप कीजे मनने उल्लासें जी ॥ ॥ म० ॥ ६ ॥ ए तो मयणा नें श्रीपाल जी ॥ म० ॥ तप कीधुं थइ उजमाल जी ॥ म० ॥ तेनो कोढ श रीरनो टाल्यो जी ॥ म० ॥ जगमां जस वास प्रगटा यो जी ॥ म० ॥ ७ ॥ पंचम काले तुमें जाणो जी ॥ ॥ म० ॥ परगट परतो परमाणो जी ॥ म० ॥ एनुं गणणुं तेर हजार जी ॥ म० ॥ तमें धारो हृदय म झार जी ॥ म० ॥ ८ ॥ नरनारी ए पद ध्यावे जी ॥ ॥ मनो० ॥ तेतो संपद सघली पावे जी ॥ मनो० ॥ मुनि रत्नसुंदर सुपसाय जी ॥ म० ॥ सेवक मोहन गुण गाय जी ॥ मनो० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप छंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि, हुं गाउं त्रिभुवनको स्वामी ॥ शांति शांति जपे सब कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अभिराम ॥ शांति जपी पर देश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी, शांतिजी नाम दियो हितकारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, रुधि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाइ, ता नरकूं क्या आरति थाइ ॥ जो कछु वंछे सोई पूरे, दारिद् दुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्युं नवि जाय, कहेतां मोमन अचरिज थाय ॥ ५ ॥ मार दीए सबहीं हथियारा, जीत्यां मोह तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवशुं रंग राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहिजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ रुद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम नायक, पण सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भये जगनायक, नाम अतिथि सवि सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव अरिहंत भणीजें ॥ सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी माहापद दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गंभीरा, दूषण एक

न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रजु एकण गामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन जी सब देखे, पण सुपनांतर कबहुं न पेखे ॥ रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवछुं लय लाई ॥ लोज विना गुणराशि ग्रहीजें, जिरकु जये त्रिगडो सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अजयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजें, करम सबें को मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लछी घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावे, न काहूकूं शीश नमावे ॥ अकिंचनको बिरुद धरावे, पण सोवनपद पंकज गावे ॥ १५ ॥ राग नहीं पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥ तजी आरंज निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अदजुत कहियें, तोरा गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रजु समरथ साहेब मेरा, हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तूं रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथी तुं रे दयाल ॥ तुं शरणागत राखणधीरा, तुं प्रजु तारक छो वड वीरा ॥ १८ ॥ तुंहि समोवड जागज पायो, तो मेरो काज चड्यो रे सवायो ॥ कर जोडी प्रजु विनवूं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ ॥ जनम

मरणना दोष निवारो, नव सागरथी पार उतारो ॥ श्री दक्षिणाउरमंमण सोहे, तिहां श्री शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन नाया ॥ नरनारी जे चित्तें गावे, ते मनोवंछित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथजीनुं चोढालीयुं प्रारंनः॥

॥ पासजिणंद प्रसिद्ध सिद्ध, गोडीपुरमंमण ॥ महिमामंदिर मोह मयण, मिथ्यात विहंमण ॥ एकल मल्ल अनेक रूप, अगणित गुण आगर ॥ त्रिनुवन बंधव धवलधिंग, करुणा रस सागर ॥ १ ॥ जिन तुम अजब सरूप सकल, कल अकल अगोचर ॥ न लहे अलहे उतपति थगित, थिति नटके जो चर ॥ वृद्ध वचन जीरण लिखित, अनुसारें जाणी ॥ थुणशुं स्वामीनिरीह पणें, सुणजो नवि प्राणी ॥ २ ॥ विधिपक्ष गच्छ महेंद सूरि, गच्छेश निर्देशें ॥ शाखाचारज अनयसिंह, सूरि उपदेशें ॥ गोत्र मीठडीया उसवंश, पाटणपुरवासी ॥ शाह मेघो जेणें सात धात, जिण धर्में वासी ॥ ३ ॥ चौद बत्रीशें फागणशुदि, बीजने नृगुवारें ॥ खेता नोडी तात मात, निज सुकृत सारे ॥ तेणें पइठो पास बिंब, लेहवा नरनव फल ॥ चउविह संघ हजूर हरखें, खरची धन परिगल ॥४॥ नक्ति युक्ति अति थकित चित्त, नित्य निर्मल

सारी ॥ पण पसताले तुरक नयें, प्रतिमा भंमारी ॥ मलक महाबल हुसन खान, कीधो उतारो ॥ पांशठे तेणें गाम जोर, गुजराती वारो ॥ ५ ॥ तरल तुरंग किशोर असुर, करता हय हणता ॥ केइ एराकी उछलंत, खुरीयें भूंइ खणता ॥ बांधण त्यांहि घोडार मांहि, खीली खोसंतां ॥ प्रगट थया तिहां पास बिंब, सुख दायक संता ॥ ६ ॥ खिजमत गार नफर फजर, नजरें गुजरावे ॥ होइ खुशाल निहाल मलक, या कोण कहेलावे ॥ बान पडिल कोइ वणिक सुता, तसु हुरम नणे इम ॥ कीजें इसकूं दंमवत, सदा ताजिम दाजिम ॥ ७ ॥ यह मजबूत बहुत कौत, हे भूत हिंडुका ॥ धरियें इस शिर जाफरान, सिंदलका भूका ॥ इणी परें रहेतां तेणे. गामें, वोहोल्या दिन केइ ॥ सिंतेरे जे वात हुइ, सुणजो मन देइ ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चूनडीनी देशीमां ॥

॥ इणे अवसरें पुर पारकरें, राणो खेंगार राजान रे ॥ तेहने दरबारें दीपतो, संघवी काजल परधान रे ॥ इणे० ॥ १ ॥ तस बन्हेवी निज कुलतिलो, देवाणंद शा बेदयाल रे ॥ मेघो खेताउत पाटणे, व्यापार करे धूताल रे ॥ इणे० ॥ २ ॥ सुपनंतर सुर कहे शाहने, छे म्लेछ महोल जिनबिंब रे ॥ तस दाम सवासो देइने, लेजो म करजो विलंब रे ॥ इणे० ॥ ३ ॥ प्रतिमा लेइ आवे गुरु कन्हे, जोइ कहे श्रीमेरुतुंग रे ॥ तुम देशों ए अति अतिशयी, तीरथ थाशे उत्तंग रे

॥इणे०॥४॥ करियाणुं लइ पोहोंचे घरें,मूरति राखे रू मांहे रे ॥ पंथें कोइ न गणे पोठीआ, वाध्यो घणो मोह उबाहें रे ॥ इणे० ॥ ५ ॥ समजावे नामुं शे ठने, जंपे देजो मुक रास रे ॥ मांमो ए नामें मद्दारे, प्रतिमा रहेशे अम पास रे ॥ इण० ॥ ६ ॥ मेघो कहे लेखो राखशुं, पण ते सबलो तिण ठाम रे ॥ गाडुं नरी चाले थल दिशें, वासो वसे गोडी गाम रे ॥ इणे० ॥ ७ ॥ सुहणे सुर कहे गहुंली जिहां, मांमो प्रासाद मंमाण रे ॥ नाणुं तिहां धन श्रीफल तलें, मीठुं जल पाहाणनी खाण रे ॥ इणे० ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ निंदडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ हांजी उदयपाल ठाकुर तिहां, जोरावर हो खे तशी लूंणोत के ॥ इहां रहो निरनय शाहजी, आद रशुं हो कहे देइ महोत के ॥ धन धन गोडी जग ध णी, पोहकी पाले हो प्राजो जस पीठ के ॥ धन० ॥१॥ ए आंकणी ॥ आवे शिलाट देशांतरी, यक्ष प्रेर्यो हो करे प्रथम तैयार के ॥ नूमि करुं प्रनु बेसवा, रहे चिहुं दिशि हो लशकर हुशीयार के ॥ धन० ॥ २ ॥ पुरवती बंधावी पीठिका, वर दिवसें हो जाणे अहि नाण के ॥ सखर गंनारो शिखरशुं, मध्य मंमप हो सवि मोक्ष मंमाण के ॥ धन० ॥ ३ ॥ पबासणें बेठा पासजी, नरेंद्र करी हो पूजे नलें नाव के ॥ सजल मधुरजल लहकती, वरदायी हो बंधावी वाव्य के ॥ धन० ॥ ४ ॥ एहवे चउद चोराणुयें; आयुयोगें हो

कर्यो मेघें काल के ॥ जाणेजो आणी घरे, काजलशा हो करे चैत्यनी चाल के ॥ धन० ॥ ५ ॥ रंग मंमप रचना बनी, अति ऊंचा हो थंज गामोगाम के ॥ कोर्मे करावे कोरणी, वित्त वावरी हो थिर कीधुं बे नाम के ॥ धन० ॥ ६ ॥ वली रे महाजनना सहा यथुं, मेघना हो सुत चन्नवे काम के ॥ मुख्य मंमप शुज मांमणी, करी जिनहर हो बो बंध अजिराम के ॥ धन० ॥ ७ ॥ चोवीशवट्टो पंचाणुए, तेणें थाप्यो हो आगल रही जेह के ॥ चोवीश गोत्रनी देहरी, महा जननी हो फरती बे तेह के ॥ धन० ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ इणी परें वर्त्ते बेहुने रें, मांहो मांहे विवाद ॥ गिरुउ घोडी ॥ घोडी गाजेजी जिणंद, तेजें दीपे जी दिणंद, जग महिमा अगम अपार ॥ गिरु० ॥ ए आंकणी ॥ पण सरखा राखे प्रज्ञु रे, वधवा न दीए विषवाद ॥ गिरु० ॥ १ ॥ बनेवी महोटो हशे रे, ए बे पूजक प्राय ॥ गिरु० ॥ मेघानां संतत हजी रे, ते णें गोठी कहेवाय ॥ गिरु० ॥ २ ॥ शिखर दंम वडी ध्व जा रे, चढतां करे रे कलेश ॥ गिरु० ॥ आज लगें बे एहने रे, इम बहु वचन विशेष ॥ गिरु० ॥ ३ ॥ अंगुली बांधी एकठी रे, पूजन लीजें कदाप ॥ गिरु० ॥ ठाकुर ले नही मूंमकुं रे, ए बिहुनुं अद्याप ॥ गिरु० ॥ ॥ ४ ॥ उदयवंत अति ऊजला रे, विधिपक्ष श्रावक बेह ॥ गिरु० ॥ तेखदार दिल दोलती रे, प्रज्ञुजीशुं

पूरण सनेह ॥ गिरु० ॥ ५ ॥ समकेतधारी जागतो रे, धिंग धवल धर धीर ॥ गिरु० ॥ साह्य करी आगल रह्यो रे, खगधर खेतलवीर ॥गिरु०॥६॥ अधिकुं उ बुं जे कह्युं रे, ते खमजो महाराज ॥ गिरु० ॥ ठेकाणा बंध पण खरी रे, वात छे गरिब निवाज ॥ गिरु० ॥ ॥ ७ ॥ पहेलां तवन जण्यां घणां रे, तिहां जाजा संवाद ॥ गिरु० ॥ सज्जन साचा सद्दहजो रे, श्यो रे जूठामां सवाद ॥ गिरु० ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग धन्याश्री अथवा अशावरी ॥

॥जयो जयो गोडीपास जिनेसर,जक्तवत्सल जगवान रे ॥ देवल बार ने बीजी रे प्रतिमा, विषमा थल विच थान रे ॥ जयो० ॥ १ ॥ आयुध धारी नीले घोडे, आप थई असुवार रे ॥ किहां रे बालक अवधूत जुयंगम, देखाडे दीदार रे ॥ जयो० ॥ २ ॥ आवे संघ अनेक विदेशी, निरुपम महिमा माट रे ॥ चोर चरडनुं कांही न चाले, विघ्न निवारे वाट रे ॥ जयो० ॥ ३ ॥ जंगल जूला रात्रे जात्रु, ततक्षण लेता नाम रे ॥ देवी रे धरी मार्ग देखाडे, मूके चिंतित गाम रे ॥ जयो० ॥ ४ ॥ दरिया विचमांहे वाहाण फोलंता, समरंता दीये साद रे ॥ सयल असुर सुर नरवर सेवे, नवि लोपे मरजाद रे ॥ जयो० ॥ ५ ॥ ॥ विषहर वेरी व्याधि वैश्वानर, जय जांजे हरि ज्रांत रे ॥ प्रायें केहने अधिक न राखे, पंच दिवस उपरांत रे ॥ जयो० ॥ ६ ॥ आ जवें वंछित सकल होवे पण, क

मैं निबिडबंध कोय रे ॥ ध्यान शुद्धें समकित निर्मल ता, स्वर्ग मुगति फल होय रे ॥ जयो० ॥ ७ ॥ द्रव्य नाव विधि पूजो प्रणमो, नाम जपो नर नार रे ॥ स्तव न नणो मद मत्सर मूकी, उतपति साची मन धार रे ॥ जयो० ॥ ८ ॥ कलश ॥ इम थुण्यो गोडीपास स्वामी, हुकुम पामी जेहनो ॥ विशदिशें पसरतो अ रति हरतो, प्रगट परचो जेहनो ॥ श्री अमरसागर सूरि अंचल, गछपतिराज पसाउलें ॥ पय नमी लखमीचं द्रवाचक, शिष्य लावण्य इम नणे ॥ ए ॥ इति श्री गोडीपारसनाथजीनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ पारसनाथनो छंद प्रारंनः ॥

॥ आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्र शुं प्रेम धरो ॥ तमें देश देशांतर कांइ दोडो, नित्य पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ १ ॥ मनोवंछित संघलां काज सरे, शिर उपर चामर छत्र धरे ॥ कलमल चाले आगल घोडो, नित्य पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ २ ॥ नूतने प्रेत पिशाच वली, सायणी ने डायणी जाय ट ली ॥ छल छिद्र न कोइ लागे जूडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ एकांतर ताव सीयो दाह, उषध विण जाये खणमांह ॥ नवि दुःखे माथुं पग गूडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमा ला गडगुंबड सबला, तस उदर रोग टले सघला ॥ पीडा न करे फिन गल फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जा गतो तीर्थंकर पास बहू, एम जाणे सघलो जगत सहू ॥ ततक्षण अशुन कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥

पास वणारसि पुरि नगरी, तिहां उदयो जिनवर उदय करी ॥ समयसुंदर कहे कर जोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञानपच्चीशी प्रारंभः ॥

॥ सुर नर तिरि जग योनिमें, नरक निगोद भमंत ॥ महामोहकी निंदमें, सोवे काल अनंत ॥ १ ॥ जैसें ज्वरके जोरसें, भोजनकी रुचि जाय ॥ तैसें कुकर्मके उदय, धर्मबचन न सुहाय ॥ २ ॥ लगे भूख ज्वरके गये, रुचिशुं लेत आहार ॥ अशुभहीन शुभके जगे, सो जाने धर्म बिचार ॥ ३ ॥ जैसें पवन झकोलथें, जलमें उठे तरंग ॥ त्युं मनसा चंचल भये, परिग्रहके परसंग ॥ ४ ॥ जिहां पवन नहि संचरे, तिहां नही जलकल्लोल ॥ त्युं सब परिग्रह त्यागथें, मनसा होय अमोल ॥ ५ ॥ ज्युं काहु विषधर मसे, रुचिशुं निंब चबाय ॥ त्युं तुम ममताशुं मढे, मगम विषय सुख थाय ॥ ६ ॥ निंबरस फरसे नही, निर्विषतनु जब होय ॥ मोह घटे ममता मिटे, विषय न वंछे कोय ॥ ७ ॥ ज्यूं सछिद्र नौका चढे, बूडे अंध अदेख ॥ त्युं तुम भवजलमें पडे, बिनु विवेक धरी भेख ॥ ८ ॥ जिहां अखंमित गुण लगें, खेवट शुद्ध विचार ॥ आतमरुचि नौका चढे, पावही भवजल पार ॥ ९ ॥ ज्युं अंकुश माने नही, महा मतंग गजराज ॥ त्युं मन तृष्णामें फिरे, गिने न काज अकाज ॥ १० ॥ ज्युं नर दाय उपाय करि, गही आने गजराज ॥ त्युं मन या वश करनकूं, नि

मेल ग्यान समाज ॥ ११ ॥ तिमिर रोगसें नयन ज्युं, लखे उरकी उर ॥ त्युं मन संशयमें परे, मिथ्या मतकी दोर ॥ १२ ॥ ज्युं औषध अंजन कीए, तिमिर रोग मिट जाय ॥ त्युं सदगुरु उपदेशथें, संशय वेग पलाय ॥ १३ ॥ जैसें सब जाडु जरे, धारामतिकी आग ॥ त्युं मायामें तुम पडे, कहां जाउगे जाग ॥ १४ ॥ द्वैपायनसों ते बचे, जे तपसी निर्ग्रंथ ॥ तजी माया समता ग्रही, एह मुगतको पंथ ॥ १५ ॥ ज्युं कुधातुके नेटशुं, घटबध कंचन कंत ॥ पाप पुण्य करतो नवें, मूढमति बहु नंत ॥ १६ ॥ कंचन निज गुण नही तजे, वान हीन नही होत ॥ घट घट अंतर आतमा, सहज स्वनाव उद्योत ॥ १७ ॥ पना पीठ पक्काइयें, शुद्ध कनक ज्युं होय ॥ त्युं परगट परमातमा, पुण्य पाप मल धोय ॥ १८ ॥ पर्व राहुके गहनसें, सूरसोमछवि छीन ॥ संगत पाइ कुसाधुकी, सज्जन होत मलीन ॥ १९ ॥ निंबादिक चंदन करे, मलयाचलकी बास ॥ डुर्जन थें सज्जन नये, रहत साधुके पास ॥ २० ॥ जैसें तलाव सदा नरे, जल आवत चिहुं उर ॥ तैसें आश्रव द्वारथें, करम बंधको जोर ॥ २१ ॥ ज्युं जल आवत मूदीयें, सूके सरवर पान॥ तैसें संवरके कीये, करम निरजरा जान ॥ २२॥ ज्युं बूटी संयोगथें, पारा मूर्छित होय ॥ त्युं पुजलशुं तुम मिले, आतमशक्ति समोय ॥ २३ ॥ मेल खटाइ मांजीयें, पारा परगट रूप ॥ शुकल ध्यान अन्यास

थें, दर्शन ज्ञान अनूप ॥ २४ ॥ कहे उपदेश बनार सी, चेतन अब कछु चेत ॥ आप बुजावत आपकूं, उदय करनके हेत ॥ २५ ॥ इति ज्ञानपच्चीशी ॥

॥ अथ अरणिक मुनिनी सज्झाय ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाजे शीशो जी ॥ पाय अणवाणे रे वेलू परजले, तनु सुकुमाल मुनीशो जी ॥ अरणि० ॥ १ ॥ मुख करमाणुं रे मालती फूल ज्युं, उभो गोंखनी हेठे जी ॥ खरेरे ब पोरें रे दीठो एकलो, मोही माननी दीठे जी ॥ अरणि० ॥ २ ॥ वयण रंगीली रे नयणें वेधियो, रुषि थंभ्यो तेणें ठामो जी ॥ दासीने कहे जारे उतावली, ए रुषि तेडी आणो जी ॥ अरणि० ॥ ३ ॥ पावन कीजें रे रुषि घर आगणुं, वोहोरो मोदक सारो जी ॥ नवयौवनरस काया कां दहो, सफल करो संसारो जी ॥ अरणि० ॥ ४ ॥ चंद्रावदनी रे चारित्र चूकव्युं, सुख विलसे दिन रातो जी ॥ बेठो गोंखें रे रमतो सोंगठे, तव दीठी निज मातो जी ॥ अरणि० ॥ ५ ॥ अरणिक अरणिक करती मा फिरे, गलियें गलियें तिवारो जी ॥ कहो केणें दीठो रे म्हारो अरणीलो, पूछे लोक हजारो जी ॥ अरणि० ॥ ६ ॥ उतर्यो तिहांथी रे जननी पाय पड्यो, मनशुं लाज्यो अपारो जी ॥ वत्स तुज न घटे रे चारित्र चूकवुं, जेहथी शिवसुख सारो जी ॥ अरणि० ॥ ७ ॥ एम समजावी रे पाछो वालीयो, आण्यो गुरुनें पासो जी ॥ सद्

गुरु दीए रे शीख नली पर, वैरागें मन नास्यो जी ॥ अरणि० ॥ ८ ॥ अग्नि धखंती रे शिला ऊपरें, अरणिकें अणसण कीधो जी । रूपविजय कहे धन्य ते मुनिवरू, जिणें मनवंछित लीधो जी ॥ अ० ॥ ए ॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल मानवदेवगनं ॥ जिनशासन मंमन स्वामि जयो, तुम दरिसन देखी आनंद थयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलं वरजानुनिजं, नव हस्तशरीर हरितप्रतिजं ॥ धरणिंद सुसेवित पादयुगं, नर जासुरकांति सदा सुजगं ॥ २ ॥ निज रूपविनिर्जित रंजपतिं, वदनोद्युति शारद सोमततिं ॥ नयनांबुज दीप्ति विशालतरा, तिल कुसुम सन्निज नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद समान सदा, दशनावलि अनार कली सुखदा ॥ अधरारुण विद्रुम रंगघनं, जय शंखपुराभिध पार्श्व जिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें कुंमल रवि शशि ऊीपे ॥ तुम महिमा महि मंमल गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुऊ सेवे चोशठ इंद सदा, तुऊ नामें नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥ जे सेवे तुऊने जाव घणे, नवनिधि थाये घर तेह तणे ॥ अडवडियां तुं आधार कह्यो, समरथ साहिब में आज लह्यो ॥ ७ ॥ डुखीयाने सुखडां तुं दाखे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुऊ नामें संकट

विकट टले, वींछडीयां वालां आवि मले ॥ ८ ॥ नट विट लंपट दूरें नासे, तुझ नामें चोर चरड त्रासे ॥ रण राउल जय तुझ नाम थकी, सघले आगल तुझ सेवथकी ॥ ए ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा, करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बंधन नय सघलां जाये, जे एक मनां तुजने ध्याये ॥ १० ॥ भूत प्रेत पिशाच छली न शके, जगदीश तवाभिध जाप थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद चूरे ॥ ११ ॥ मायणी सायणी जाए हटकी, भगवंत थाय तुझ भजनथकी ॥ कपटी तुझ नाम लीया कंपे, दुर्जन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मछराला मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ दुर्मुख दुष्टादिक तुंही दमे, तुझ जापे महोटा म्लेछ नमे ॥ १३ ॥ तुझ नामें माने नृप सबला, तुज जश उज्ज्वल जेम चंद्रकला ॥ तुझ नामें पामे ऋद्धि घणी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिंतामणि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुझ नामें ॥ जन पद ठकुराई तुं आपे, दुर्जन जननां दारिद्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूठो कोठार भंमार भरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, तें सहु महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि माणक मोती रत्न जड्या, सोवन भूषण बहु सुघड घडया ॥ वली पेहेरण नवरंग वेश घणा, तुम नामें नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुद्ध नवि ताकि सके, वली चा

ड चुगल मनथी चमके ॥ ब्ल बिड् कदा केहनो न लगे, जिनराज सदा तुझ ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पासेंमी पण को नवि फर के ॥ लूंटादिक सहु नासी जाए, मारग तुझ जपतां जय थाए ॥ १९ ॥ जड मूरख जे मति हीन वली, अज्ञान तिमिर तसु जाय टली ॥ तुझ समरणथी माह्या थाये, पंडित पद पामी पूजाये ॥ २० ॥ ख स खांशि खयन पीडा नासे, दुर्बल मुख दीनपणुं त्रासे ॥ गड गुंबड कुष्ठ जिके सबलां, तुज ध्यानें रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूगा बहिरा य जिके, तुझ ध्यानें गतदुख थाय तिके ॥ तनु कांति कला सुविशेष वधे, तुज समरणशुं नवनिधि सधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण बंध सया, जल जलण जलोद र अष्ट नया ॥ रांगण पमुहा सबि जाय टली, तुज ना में पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां दुष्ट दमो ॥ चिंतामणि मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रि करण शुद्धें जे आराधे, तस जश कीर्ति जगमां वा धे ॥ वली कामित काम सवे साधे, समहित चिंता मणि तुझ लाधे ॥ २५ ॥ मद मत्सर मनथी दूर त जे, नगवंत नली परें जेह नजे ॥ तसघर कमला कल्लो ल करे, वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥ २६ ॥ नय वारक तारक तुं त्राता, सज्जन मन गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी, शिवदायक

नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तुं म्हारो, निशिवासर नाम जपुं ताहारो ॥ सेवकछुं पर म कृपा करजो, वालेसर वंछित फल देजो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा तुं जयकारी, तुज मूर्त्ति अति मोहन गारी ॥ गुर्जर जनपदमांहे राजे, त्रिभुवन ठकुराई तुझ छाजे ॥ २९ इम भाव भले जिनवर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि मुनि शशि संवछर रंगें, जयदेवसूरमां सुख संगें ॥ ३० ॥ जय शंखपुराधिप पार्श्व प्रभो, सकलार्थ समीहित देहि विभो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा, तप लब्धि रुचि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इत्थं स्तुतः सकलकामितसिद्धिदाता, यक्षाधिराजनतशंखपुराधि राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्षरुचिपंकजसुप्रसादात्, शिष्येण लब्धरुचिनेति मुदा प्रसन्नः ॥ ३२ ॥ इति पार्श्व० ॥

॥ अथ मेघ कुमारनी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ धारणी मनावे रे मेघकुमारने रे, तुं मुझ एकज पुत्त ॥ तुझ विण सुनां रे मंदिर मालियां रे, राखो राखो घर तणां सूत ॥ धारणी० ॥ १ ॥ तुझने परणावुं रे आठ कुमारिका रे, सुंदर अति सुकुमाल ॥ मलपति चाले रे वन जेम हाथणी रे, नयण वयण सुविशाल ॥ धारणी० ॥ २ ॥ मुझ मन आशा रे पुत्र हती घणी रे, रमाडीश वहूनां रे बाल ॥ दैव अटारो रे देखी नवि शक्यो रे, उपायो एह जंजाल ॥ धारणी० ॥ ३ ॥ धणकण कंचन रे ऋद्धि

घणी अछे रे, जोगवो जोग संसार ॥ छती रूद्धि विलसो रे जाया घर आपणे रे, पछें लेजो संयम जार ॥ धारणी० ॥ ४ ॥ मेघकुमारें रे माता प्रत्यें बूझवी रे, दीक्षा लीधी वीरजीनी पास ॥ प्रीतिविमल रे इणि परें उच्चरे रे, पोहोती महारा मनडानी आश ॥ धारणी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामी स्तवनं ॥

॥ प्रजुजी वीरजिणंदने वंदियें, चोवीशमा जिन राय हो ॥ त्रिशलाना जाया ॥ प्रजुजीने नामें त नव निधि संपजे, जवडुख सवि मिटि जाय हो ॥ त्रिशलाना जाया ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रजुजी कंचन वान कर सातनुं, जग तातनुं एटलुं मान हो ॥ त्रि०॥ प्रजुजी मृगपति लंछन गाजतो, जांजतो मदगज मान हो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ प्रजुजी सिद्धारथ जगवंत जो, सिद्धारथ कुल चंद हो ॥ त्रि० ॥ प्रजुजी जक्तवत्सल जव डुःखहरु, सुरतरु सम सुखकंद हो ॥ त्रि० ॥ ॥ ३ ॥ प्रजुजी गंधार बंदर गुणनिलो, जगतिलो जिहां जगदीस हो ॥ त्रि० ॥ प्रजुजीनुं दर्शण देखिने चित्त वस्युं, सस्युं मुझ वंछित ईश हो ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ प्रजुजी शिवनगरीनो राजीयो, जगतारण जिन देव हो ॥ त्रि० ॥ प्रजुजी रंगविजयने आपजो, जवोजव तुम पाये सेव हो ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ नेमनाथ स्तवनं ॥

॥ नेम जिणंद जुहारीयें, उज्ज्वल गढ गिरनारो

जी ॥ बलवंत जिन बावीशमो, नलें नेट्यो नगवंतो जी ॥ नेम० ॥ १ ॥ श्यामलवर्ण सोहामणो, मुख सोहे पूनमचंदो जी ॥ यादववंशी जग जयो, जेहने सेवे सुर नर इंदो जी ॥ नेम० ॥ २ ॥ पशुत्र्य देखी पाछा वल्या, दिल दया बहु आणी जी ॥ काल वि षय कंपी करी, तजी राजिमती राणी जी ॥ नेम०॥ ॥ ३ ॥ समुद्रविजयसुत सुखकरु, माता शिवादेवी मलारो जी ॥ दान संवत्सरी देई करी, पोहोता गढ गिरनारो जी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ चोपन दिन चोखे चितें, प्रभु मौनपणें तप कीधो जी ॥ कर्म खपावी केवल लही, जगमां बहु जश लीधो जी ॥ नेम० ॥ ॥ ५ ॥ समवसरण सुरपति रच्यो, आणी मन आणंदो जी ॥ त्रिगडो तेजें कगमगे, तिहां नाटक नव नव छंदो जी ॥ नेम०॥ ६ ॥ योजन जूमि जगतगुरू, उचरे अ मृत वाणी जी ॥ नवोदधिशोषण नयहरु, जेहना गुण गावे इंद्राणी जी ॥ नेम०॥ ७ ॥ इम महीमंकल विचरता, अनेक जीव उद्धाख्या जी ॥ पोहोता बहु प रिवारशुं, मुक्ति मोहोल पधाख्या जी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ विघ्नहरण नित वंदियें, राणी राजिमती जरतारो जी ॥ दुःख दारिद्र दूरें हरे, उतारे नवपारो जी ॥ नेम० ॥ ए ॥ संवत सत्तर अग्यारोत्तरें, आशो बीज अजुआली जी ॥ कहे जिनदास यात्रा करी, नेम हसी दीयो ताली जी ॥ नेम०॥१०॥ इति श्रीनेमिनाथ० ॥

॥ अथ केसरियाजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर रुषन जिणंदा, नाजिराया मरुदेवीको नंदा ॥ सो श्यामला गुणवंता ॥ लाख चोराशी पूरवनुं रे आय, धनुष पांचशो सोवनमय काय ॥ सो० ॥ १ ॥ जुगला रे धर्म निवारण स्वामी, नगर धूलेवे वसे घननामी ॥ सो० ॥ रखतें रे वेगा केसरीयोजी सोहे, दरिसण देखीने मनडुं मोहे ॥ सो० ॥ २ ॥ मुखडुं रे सोहे पूनमकेरो चंदा, सुर नर मुनिवर सेवे वृंदा ॥ सो० ॥ मुंकुट कुंमल शिर छत्र बिराजे, ठकुराई केसरीयाने ठाजे ॥ सो० ॥ ३ ॥ देश देशना संघज आवे, वस्तु अमूलक नेटणुं लावे ॥ सो० ॥ पूजा जणावे ने अंगी रचावे, केसरकेरा कीचं मचावे ॥ सो० ॥ ४ ॥ अगरबत्तीना धूप करावे, फूलडां केरा मुकुट जरावे ॥ सो० ॥ नाटक नाचे ने जावना जावे, हरखें केसरीयाना गुण गावे ॥ सो० ॥ ५ ॥ जिहाज तारे वालो बेडीयो कापे, मुह माग्यां वंछित फल आपे ॥ सो० ॥ रोग सोग जय दूर निवारे, जव सायरथी पार उतारे ॥ सो० ॥ ६ ॥ जे कोई गाशे ने जे सांजलशे, तेहना मनना मनोरथ फलशे ॥ सो० ॥ कपूर कहे तमें प्रत्यक्ष देवा, जवोजव मागुं हूं तुम पय सेवा ॥ सो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जीडजंजनपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ शामाटे साहिब सामुं न जूवो, हुं तो रह्यो छुं तुम गुण हेरी ॥ प्रजुजी रे ॥ बीजा रे साथें बोल न

बोलुं, मुने न गमे वात अनेरी ॥ प्रभुजी रे ॥ शा० ॥
॥ १ ॥ जोरे पोतानो करीने रे जाणो, तो मुझ स
मकित वासो ॥ प्रभुजी रे ॥ भलो भूंभो पण भक्त
छुं ताहारो, एवुं जाणीनें देउ दिलासो ॥ प्रभुजी रे
॥ शा० ॥ २ ॥ छेल छबीलो ए देव छोगालो, अलवे
सर अंतरजामी ॥ प्रभुजी रे ॥ हृदयनो वासी प्रभु
मुझने मलियो, तेहने नित्य नमुं शिर नामी ॥ प्रभु
जीरे ॥ शा० ॥ ३॥ हजूर सेवानी रे होंश हैयामां,
हुंतो राखुं छुं गुणरागी ॥ प्रभुजी रे ॥ भीडभंजन
प्रभु भक्तिने जोरें,जालम वासना जागी ॥ प्रभुजी रे
॥ शा० ॥४॥ आप स्वरूप देखाडो ने आछो,पडदो खो
लीने पाछो ॥ प्रभुजी रे ॥ प्रेमउदय पद पगथीये चढ
तां, तिहां न रह्यो लाजनो लाछो ॥ प्रभुजी रे॥शा०॥५॥

॥ अथ नेमप्रभुनुं चोमासुं ॥

॥ माह्रा सम जाउ मां रे वाला, लालच लागी तु
मशुं लाला, लालच लागी नेम लटकाला ॥ लालच
लागी केशरीया वाला ॥ मा० ॥ श्रावण वरसे रे
स्वामी, मेली म जाशो अंतरजामी ॥ मा० ॥ १ ॥
माथे मेहुला रे वरसे, एणी ऋतु प्रीतम किम पर व
रसे ॥ भाद्रवडो रे भडाभड गाजे, नदीयें नीर खडा
खड वाजे ॥ मा० ॥ २ ॥ धरती सोहियें रे नीला व
रणी, साहिबा संजम लेजो परणी ॥ आसोयें आश
घणेरी अमने, जीवन जावुं न घटे तुमने ॥ मा० ॥
॥ ३ ॥ आभूषण पेरीने परवरजो, सगुणा साहिबा रंग

नर रमजो ॥ कार्तिकें कंतजी कां मूको हो, चतुर थ ईने शुं चूको हो ॥ मा० ॥ ४॥ जेठजीनें शोजशें रे राणी, तुमथी एक नहि निर्वाणी ॥ रूपचंद गाएछे रे चोमासुं, नेमजीशुं मलवानुं दिल छे साचुं ॥ मा० ॥ ॥ ५ ॥ इति श्री चतुर्मासो संपूर्ण ॥

॥ अथ दान, शील, तप अने नावनुं प्रनातियुं ॥

॥ रे जीव जैन धर्म कीजीयें, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप नावना, जगमां एटलुं सार ॥ रे जी० ॥ १ ॥ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीसर सुखकार ॥ शेलडी रस वोरावियो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे जी० ॥ २ ॥ चंपापोल उघाडवा, चालणीयें काढयां नीर ॥ सतीय सुनद्रा जश थयो, शियलें सुर नर धीर ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ तप करि काया शोषवी, सरस नीरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे जी० ॥४॥ अनित्य नावना नावतां, धरतां निर्मल ध्यान ॥ नरत आरीसा नुवनमां, पाम्या केवल ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छाया ॥ समय सुंदर कहे सेवतां, वंछित फल पाया ॥ रे जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन गीत ॥

॥ माहारी वीर प्रनुजीने वंदना रे, एनी वंदना ते पापनिकंदना रे ॥ मा० ॥ हांरे हुंतो कलश नरुं ते गंगानीरना रे, हुं तो नवण करुं महावीरनां रे ॥ ॥ मा० ॥ १ ॥ हुंतो प्याला नरुं केसर घोलना रे,

मांहे मृगमद जेवुं बहु मूलना रे ॥ मा० ॥ २ ॥ हुं तो तिलक करुं नवे अंगनां रे. हुंतो फूल चढावुं पंचरंग नां रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ हुं तो पूजा करीनें थाउं पाव ना रे, हुं तो जावूं ते आगल जावना रे ॥मा०॥४॥ एवा जाव जला मुंदरा शोहेरना रे, तिहां वीर बिराजे जय जय कारना रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तिहां संघ सदा आनंद ना रे, तिहां करे कल्याण नित्य वंदना रे ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनस्तवनं ॥

॥ घरे आवोने नेम वरणागिया रे, घरे आवोने श्याम वरणागिया रे ॥ ए आंकणी ॥ शुं कहीयें ते मोहोटा जूपने रे, हुं तो मोही बुं तमारा रूपने रे ॥ ॥ घ० ॥ १ ॥ वालाना मुखनां ते मीगं वेण बे रे, वालानी आंखडलीमां चेन बे रे ॥ घ० ॥ २ ॥ वालो चित्ततणो ते चोर बे रे, मारा कालजडानी कोर बे रे ॥ घ० ॥ ३ ॥ वाहाले पशु उपर करुणा करी रे, वाहाले जीवदया मनमां धरी रे ॥ घ० ॥ ४ ॥ वाहाला तोरणथी पाबा वल्या रे, वाहाला गढगिरनारे जइ चढया रे ॥ घ० ॥ ५ ॥ वाहाला गढ गिरनारना घाटमां रे, मुनें नेमजी मल्या बे वाटमां रे ॥ घ० ॥ ॥ ६ ॥ एहवा रूपचंद रंगें मल्या रे, माहारा मनना मनोरथ सवि फल्या रे ॥ घ० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ घृतकल्लोल पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना तमें जोगी ॥ पास जिनेसर अति अलवेसर, संसार सुखना

त्यागी ॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना तमें नो गी ॥ एआंकणी॥१॥ वंछित पूरण चिंता चूरण, मन शु ६ समरे लोगी ॥ राग द्वेष टाली कर्मने गाली, शिव पंथें थया योगी ॥ हो० ॥ २ ॥ नविजन नावें यात्रा आवे,प्रणमे लली पाय लागी ॥ नवि पर मेहेरें करुणा लेहेरें, नाग्य दशा जस जागी ॥ हो० ॥ ३ ॥ गुघरी गामें वसे शुन्न गामें तस चरणांबुज रागी ॥ मेघ लान्न कहे प्रन्नु घृत कल्लोलजीने, नामें नवनिधि जागी ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रन्नाति स्तवनं ॥

॥ राग रामकली ॥ अजब ज्योति मेरे जिनकी, तुम देखो माई ॥ अजब ज्योति० ॥ ए टेक ॥ कोडी सूरज जब एकठा कीजें, होड न आवे मेरे जिनकी ॥ तुम दे० ॥ १ ॥ झगमग ज्योति झलामल झलके, काया नील वरणकी ॥ तुम दे० ॥२॥ हीर विजय प्रन्नु पास शंखेश्वर, आशा पूरो मेरे मनकी ॥ तुम दे०॥३॥

॥ अथ प्रन्नाति स्तवनं ॥

॥ राग वेलावल ॥ जब तुम नाथ निरंजना, तब में नक्त तुमारो ॥ कल्पवृक्ष जब तुम नए, युगला धर्म हमारो ॥ जब तु० ॥ १ ॥ जब तुम सायर साहि बा, तब हुं सरिता समाना ॥ तुं दाता हुं याचका, बोले बिरुदिवाना ॥ जब तु० ॥ २ ॥ तुं तीरथ महिमा वडो, तब हुं यात्रा हो आयो ॥ तुं हीरो मेरे कर चड्यो, तो हूं झवेरी कहायो ॥ जब तु० ॥ ३ ॥ जब

तुं तखत त्रिभुवन तणो, हुं टंकशाली रूपैया ॥ दीया छाप रूपचंदशिरें, गया शिक्का लहिया ॥ जब० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रभाति स्तवनं ॥

॥ राग वेलावल ॥ हम लोक निरंजन लालके, उ रनके नांही ॥ देश वसुं मेरे नाथके, भक्ति नगरी मांही ॥ हम० ॥ १ ॥ बनज करुं प्रभु नामको, जि तनो मुख आवे ॥ सबही नाम सोदा करूं, पाछो फेर न आवे ॥ हम० ॥ २ ॥ निशिदिन नाम सोदा करे, साचो सो व्यापारी ॥ हृदय कमल मंजूषमें, राखे गुण धारी ॥ हम० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे राम कूं, बनज दूजो न भावे ॥ नाथ निरंजन नामके, ह रखें गुण गावे ॥ हम० ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ वीरजीन चउद सुपननुं स्तवनं ॥

॥ राय रे सीधारथ घर पटराणी, नामें त्रिशला सु लक्षणी ए ॥ राज भुवनमांहे पलंगें पोढंतां, चउद सु पन राणीयें लह्या ए ॥ १ ॥ पहेले रे सुपनमें गयवर दीठो, बीजे वृषभ सोहामणो ए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्ष णो दीठो, चोथे लखमी देवता ए ॥ २ ॥ पांचमे पां च वरणनी माला, छठे चंद्र अमिय झरे ए ॥ सातमे सूरज आठमे ध्वजा, नवमे कलश अमिय भर्यो ए ॥ ३ ॥ पद्मसरोवर दशमे दीठो, क्षीर समुद्र दीठो अग्यार मे ए ॥ देवविमान ते बारमे दीठुं, रणझण घंटा वाज तां ए ॥ ४ ॥ रतननो राशि ते तेरमे दीठो, अग्निशिखा दीठी चउदमे ए ॥ चउद सुपन लइ राणीजी जाग्यां,

राय समोवड पोहोतलां ए ॥५॥ सुणो रे स्वामी मेंतो सुहणलां लाधां, पाछली रात रलीयामणी ए ॥ रायरे सिद्धारथ पंडित तेडया, कहो रे पंडित फल एहनुं ए ॥ ६ ॥ अम कुल मंडण तुम कुलदीवो, धन रे म हावीर स्वामी अवतर्या ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे, आनंद रंग वधामणां ए ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीतलनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ माहारे शीतल जिनशुं लागी पूरण प्रीत जो. सा हिबजीनी सेवा भवदुख भांजशे रे जो ॥ हांरे जिन प्रतिमा जिनवर सरखी दिलमां जोय जो, भक्ति कर तां प्रभुजी खूब निवाजशे रे जो ॥ १ ॥ जेणे जोतां लाधो रत्नचिंतामणि हाथ जो, तेहने रे मूकीने कुण ग्रहे काचनें रे जो ॥ जेणे मनशुं कीधां जूठानां प चरकाण जो, ते नर बोले सो वातें पण साचने रे जो ॥ २ ॥ जे पाम्या परिगल प्रीतें अमृत पान जो, खारुं जल ते पीवा कहो कुण मन करे रे जो ॥ जे घरमां बेठां पाम्यां लखमी जोर जो, धनने काजें दे श देशांतर कोण फरे रे जो ॥ ३ ॥ जेणें सेव्या पूर ण चित्तें अरिहंत देव जो, तेहना रे मनमांहे केम बीजा गमे रे जो ॥ ए तो दोष रहित निकलंकी गुण भंडार जो, मनडुं रे अमारुं प्रभु साथें रमे रे जो ॥ ४ ॥ मुने मलिया पूरण भाग्यें शीतल नाथ जो, देखीने हूं हरख्यो तन मन रंजियो रे जो ॥ एतो दो लतदायी प्रभुजीनो देदार जो, में तो जोतां प्रभुने क

मेदल गंजीयो रे जो ॥ ५ ॥ श्रीविधिपक्षें देहरे मुंदरा नयर मझार जो, आंगी रे नवरंगी शिखर सोहा मणी रे जो ॥ ए तो तेजें दीपे झग मग ज्योति विशाल जो, सोहें रे मनमोहे मूर्ति रलियामणी रे जो ॥ ६ ॥ श्रीसत्तरएकाशीएं रूअडो नाद्रव मास जो, स्तवन रच्युं ए प्रेमें पर्व पजूसणे रे जो ॥ श्रीसहज सुंदर शिष्य बोले एणी परें वाणी जो, नावें रे नित्य लाल कहे हरषे घणे रे जो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनं ॥

॥ वाला सुमति जिणेसर सेवीएं रे, वाला सुमति तणा.गे दातार रे ॥ वाजां रे वाजे धर्मनां रे ॥ वाला मेघराया सुत सुंदरू रे, वाला मंगला मात मल्हार रे ॥ वाजां रे.वाजे धर्मनां रे ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ वाला मंगलवेल वधारवा रे, वाला उमह्यो छे ए जलधार रे ॥ वा० ॥ वाला रूप अनोपम जिनतणुं रे, वाला मनमोहन सुखकार रे ॥ वा० ॥ २ ॥ वाला सोवन वान शरीरनो रे, वाला इक्ष्वाकुवंश वधार रे ॥ वा० ॥ वाला देई प्रजुदान संवछरी रे, वाला लीधो छे संजमजार रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ वाला आठ करम अरि जीतिने रे, वाला पोहोता छे मुक्तिमझार रे ॥ वा० ॥ वाला पूरव लाख चालीशनुं रे. वाला जीवित जेहनुं सार रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला माणक मुनिमन रंगशुं रे, वाला चाहे छे सुमति देदार रे ॥ वा० ॥ वाला एहवा प्रजु गुण गायवा

रे, वाला उपजे हर्ष अपार रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनं ॥

॥ नारे प्रभु नही मानुं ॥ नही मानुं रे अवरनी आण ॥ नारे प्र० ॥ म्हारे ताहारुं वचन प्रमाण ॥ नारे प्रभु० ॥ ए आंकणी ॥ हरिहरादिक देव अनेरा, ते दीठा जगमांय रे ॥ भामिनी भरम भृकुटीयें भूल्या, ते मुजने न सुहाय ॥ नारे० ॥ १ ॥ केइक रागीने केइक द्वेषी, केइक लोभी देव रे ॥ केइक मद माया मां भरिया, केम करीएं तसु सेव ॥ नारे० ॥ २ ॥ मुद्रा पण तेमां नवि दीसे प्रभु, तुजमांहेली तिल मात रे ॥ ते देखी दिलडुं नवि रीझे, शी करवी तेह्नी वात ॥ नारे० ॥ ३ ॥ तुं गति तुं मति तुं मुझ प्रीतम, जीव जीवन आधार रे ॥ रात दिवस स्वपनांतर तुंही, तुं माहारे निरधार ॥ नारे० ॥ ४ ॥ अवगुण सहु उवेखीने प्रभु, सेवक करीने निहाल रे ॥ जग बंधव ए विनती मोरी, माहारां सवि दुःख दूरें टाल ॥ नारे० ॥ ५ ॥ चोवीशमा प्रभु त्रिभुवन स्वामी, सिद्धारथना नंद रे ॥ त्रिशलाजीना न्हानडीया प्रभु, तुम दीठे अति आणंद ॥ नारे० ॥ ६ ॥ सुमति विजय कवि रायनो रे, रामविजय कर जोड रे ॥ उपगारी अरिहंतजी, माहारा भव भवना बंध छोड ॥ नारे० ॥ ७ ॥

॥ अथ रुषभ देवजीनो बारमासो ॥

॥ प्रथम जिणंद प्रणमुं पाया, जननी मरुदेवी जाया ॥ रुषभजी धूलेवा नगर राया, जगत गुरु

जिनवरने भजीएं ॥ विषय कषाय कपट तजीएं ॥ ज
गत० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कार्तिकें केसरीयो मलशे,
जनम जनमनां दुःख टलशे, माह्वारा मन वंछित
फलशे ॥जग०॥२॥ मागशिरे मन मोह्युं माह्वारुं,के तुरत
दरिसण थयुं ताह्वारुं, ताह्वरी सूरत पर वारु वारु ॥ ज
ग० ॥ ३ ॥ पोषें प्रीतडली पालो, त्रण भुवनमांहे
अजुआलो, तुमे छो दीन तणा दयालो ॥ जग०॥४॥
माह्वा शुदि पंचमी दिन आवे, मोरली सहुको बंधावे,
गुणी जन राग वसंत गावे ॥ जग० ॥५॥ फागुणे फा
ग खेलूं तुमशुं, केसर कस्तूरीयें रमशुं, विलेपन
करी सदा नमशुं ॥ जग० ॥ ६ ॥ चैत्रें चित्त लागुं चर
णे, फूल गुलाल मुगट भरणे, सेवा तारण ने तरणे ॥
जग० ॥ ७ ॥ वैशाखें फूली वनराई, त्रीजनी आखा
त्रीज आई, केशरीआशुं साची सगाई ॥ जग० ॥
८ ॥ जेठें जिन पासें आवुं, के शीतल जल लई न्हवरा
वुं, पंखो करतां पुण्य पावुं ॥ जग० ॥ ए ॥ आषाढें मे
घ घणा गाजे, ढोल मृदंग तिहां वाजे, एणे दरबारें
सदा छाजे ॥ जग० ॥१०॥ श्रावण वरसे अति सारो,
बपैया मोर दादुर प्यारो, गुणीयल गाये भली सारो
॥ जग० ॥ ११ ॥ श्रावणे सरवडियां वरसे, बपैया
मोर दादुर पीसे, गुणिजन राग मल्हार गाशे ॥
जग० ॥१२॥ भाद्रवे भविक करो भगति, परव पजू
सण करो जुगति,पूजा भणावो भलि युगति ॥ जग० ॥
॥१३॥ आशोयें पूरीजें आशा, घर घर दीपक बहु था

शा, हरषें गाये रुषनदासा ॥ जग० ॥ १४ ॥ बारे मास करुं सेवा, रुषनदेव मागुं मेवा, देजो दीनतणा देवा ॥ जग० ॥ १५ ॥ इति बारमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीएं शेत्रुंजा गिरि, जात्रा नवाणुं करीएं ॥ सहस कोडि नव पातक तूटे, शेत्रुंजा सामो मग नरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ पूरव नवाणुं वार ॥ शे० ॥ जा० ॥ रुषन जिणंद समोसरीएं, पुंमगिरि ॥ जा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुंमरीक पद जपी मन हरखे, अध्यवसाय शुन धरीयें ॥ शे० ॥ जा० ॥ सात बठ दोय अठम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीयें ॥ शे० ॥ जा० ॥ २ ॥ पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीएं, पाप पमल परिहरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ नूमि संथारो नारी तणो संग, दूरथकी परिहरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथें पद चरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ कलिकालें ए तीरथ मोहोटुं, प्रवहण जेम नर दरीए ॥ शे० ॥ जा० ॥ ४ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे नव तरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ मालणनुं गीत प्रारंनः ॥

॥ संघ पूढे फूल वाडीयें, मालण कवण सो मागेनां फूल ॥ कवण सुगंधा जाणीएं, मालण कवण सो फूलनुं मूल ॥ तुं ढे मालण कोण राजनी ॥ १ ॥ चंपक केतकी केवडो, मालण सेवंत्री ने जासूल ॥ मा

लती मलकंतो मोघरो, मालण जाई अशोक अ मूल ॥ तुं छे माल० ॥ २ ॥ कवणें रे चंपो वावीयो, मालण कवणें गुंथ्यां एनां फूल ॥ कवण मला रें लइ मूलव्यां, मालण केणें चढाव्यां अमूल ॥ साची मालण जिनराजनी ॥ ए आंकणी ॥ ३ ॥ मालियें चंपो वावीयो, मालण चतुरें गुंथ्यां एनां फूल ॥ नविक मलारें लइ मूलव्यां, मालण प्रनुने चडाव्यां अमूल ॥ सा० ॥४॥ कहे रे मालण सुणो नविजनो, एणी वाडीएं छे बहु फूल ॥ सरस सुगंधां जाणीएं, तेहमां चंपक कली छे अमूल ॥ सा० ॥ ५ ॥ शेत्रुंजा गिरिवर नेटवा, मालण आव्यो छे कछनो संघ ॥ देशावडी श्रावक वसे, तेहमां संघमुखी मानसिंघ ॥ सा० ॥ ६ ॥ नरनव दोहिलो पामीने, मालण पूजवा आदि जिणंद ॥ सफल जनम करी सुलहो, मालण लेशो परमानंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ सत्तरनेद सुविधें करी, मालण साहामिवत्सल सोनाय ॥ सौनाग चंद सुगुरु लही, मालण स्वरूपचंद गुण गाय ॥ सा०॥८॥

॥ अथमहावीरजिनस्तवनं ॥

॥ वीर कुमरनी वातडी,केने कहियें ॥ हांरे केने कहियें रे केने कहियें ॥ नवि मंदिर बेसी रहियें, हांरे सुकुमार शरीर ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बालपणाथी लाडको नृप नाव्यो, हांरे मली चोशठ इंडें मल्हाव्यो ॥ इंडाणी मली हुलराव्यो, हांरे गयो रमवा काज ॥ वी० ॥२॥ छोरु उगं उलां लोकनां केम र

हियें, हांरे एनी मावडीने शुं कहियें ॥ कहियें तो अ देखावां थइयें, हांरे नाशि आव्यां बाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ आमलकी क्रीडा वशें वींटाणो, हांरे मोटो जोरिंग रो पें जराणो ॥ वीरें हाथे झालीने ताण्यो, हांरे काढी नाख्यो दूर ॥ वी० ॥४॥ रूप पिशाचनुं देवता करी चलियो, हांरे मुऊ पुत्रने लेइ उछलियो ॥ वीर मुष्टि प्रहारें वलियो, हांरे पांजलीयें एम ॥ वी० ॥ ५ ॥ त्रिशला माता मोजमां एम कहेती, हांरे सखीयोने उलंजा देती ॥ क्षणक्षण प्रजु नाभज लेती, हांरे तेडावे बाल ॥ वी० ॥ ६ ॥ वाट जोवंतां वीरजी घरे आव्या, हांरे माता त्रिशलाएं नवराव्या ॥ खोले बेसारि हुलराव्या, हांरे आंलिंगन देत ॥ वी० ॥ ७ ॥ यौवन वय प्रजु पामतां परणावे, हांरे पछी संजमशुं दील लावे ॥ उपसर्गनी फोज हठावे, हांरे लीधुं केवल नाण ॥ वी० ८ ॥ कर्म सूडन तप जांखियुं जिनराजें, हांरे त्रण लोकनी ठकुराई छाजे ॥ फूल पूजा कही शिव काजें, हांरे जविने उपगार ॥ वी० ॥ ए ॥ शाता अशाता वेदनी क्षय कीधुं, हांरे आपें अक्षय पद लीधुं ॥ शुजवीरनुं कारज सीधुं, हांरे जांगे सादि अनंत ॥ वी० १० ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीयें अमें आज शत्रुंजो दीठो रे ॥ ए देशी ॥ सुणजो साजन संत, पजूसण आव्यां रे ॥ तुमें पुण्य करो पुण्यवंत, जविक मन जाव्यां रे ॥ वीर जिणे

सर अतिअलवेशर ॥ वाला मारा॥ परमेश्वर एम बोले रे ॥ पर्वमांहे पजूसण मोहोटां, अवर न आवे तोलें रे ॥पजू०॥तुमें०॥न०॥१॥ चौपगमांहे जेम केशरी मोहोटो ॥वा०॥ खगमां गरुड ते कहियें रे॥नदीमांहे जेम गंगा मोहोटी,नगमां मेरु लहियें रे ॥पजू०॥तु०॥न० ॥२॥ नूपतिमां नरतेसर नांख्यो ॥वा०॥ देवमांहे सुरेंद्र रे॥ तीरथमां शेत्रुंजो दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे॥ पजू० ॥तु० ॥न०॥३॥ दसरा दीवालीने होली ॥ वा० ॥ अखात्रीज दीवासो रे॥ बलेव प्रमुख बहुला छे बीजा, पण ए मुक्तिनो वासो रे ॥पजू०॥तु०॥न०॥४॥ ते माटे अमार पलावो॥ वा० ॥ अठाइ महोछव कीजें रे॥ अठम तप अधिकांइयें करीने, नरनव लाहो लीजें रे ॥पजू०॥तु०॥न० ५॥ ढोल ददामा नेरी नफेरी ॥वा०॥ कल्पसूत्रने जगावो रे ॥ झांझरना झमकार करीने, गोरीनी टोली.मली आवो रे ॥पजू० ॥ तु०॥ न० ॥६॥ सोनारूपाने फूलडे वधावो ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने पूजो रे ॥ नव वखाण विधियें सांनलतां, पापमेवासी धूजो रे ॥पजू०॥७॥ तु० ॥ न० ॥ ए अठाइनो मेहोत्सव करतां ॥ वा० ॥ बहु जिन जगउद्धर्या रे ॥ विबुध विनीत वर सेवक एहथी,नवनिधि ऋद्धि सिद्धि वर्या रे ॥ पजू० ॥ तु० ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ घृतकल्लोल पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ घृतकल्लोल प्रनु पासजिणंद, अश्वसेनरायाकुल उपना दिणंद ॥ मोरा पासजी हो लाल, प्रनुमुख

देखी मारो मन हीसे राज ॥ ए आंकणी ॥ माता वामादेवि जायो पुत्र रतन, जेणें नाग नागणीना कीधां हे जतन ॥ मोरा० ॥ प्रनु० ॥ १ ॥ कमठनो मद गाल्यो वाले कीधां रूडां काज, कलिकालमांहे जेनो परतो हे आज ॥ मो० ॥ मारग नूलाने वालो आपे हे साद, वली आपे संपदाने टाले विषवाद ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ २ ॥ बेडीयो कापेने वालो तारे हे जिहा ज, समस्यां आपे वालो वंछित काज ॥ मो० ॥ देशी विदेशी आवे संघ अनेक, सुथरीमां वास कीधो राखी वाले टेक ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ ३ ॥ मोणसी अंचल जीनुं जात्रानुं मन्न. संघ लइने आव्या सुथरी प्रसन्न ॥ मो० ॥ संवत अढार बेआसीयें जाण, फागुण वदि चोथे गायो गुणखाण ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ ४ ॥ नेट्या श्री घृत कल्लोल जिनराज, पूजा सत्तर नेदी करे शुन काज ॥ मो० ॥ मेघ शेखर गुरुना सुपसाय, शिष्य गुलाब शेखर गुण गाय ॥ मो० ॥ प्रनु० ॥ इति ॥

॥ अथ रूषनजिन स्तवनं ॥

॥ आज उजम हे रे अधिको, जोवा दरिसण आदीसरको ॥ ते मुने लागे रे मीठुं, प्रनुजीनुं ज्यारें दरिसण दीठुं ॥ आज० ॥ केशर चंदन रे लीजें, घसी करी जिनजीनी पूजा कीजें ॥ आज० ॥ १ ॥ पूजानां फल हे रे रूडां, तेहथी आठ कर्म खपे कूडां ॥ नावें नावना रे नावो, वली प्रनुना गुण रंगें गावो ॥ आज० ॥ २ ॥ आजूनी आंगीनो रे लटको,

माह्यारा प्रजुजीना मुखनो मटको ॥ मटकें मोह्या रे इं दा, वदन कमल जाणे पूनम चंदा ॥ आज० ॥ ३ ॥ मिठडी मूरति रे तारी, ते घणुं मुजने लागे छे प्यारी ॥ नाजिराया नंदन रे नीको, माह्यारा प्रजुजीनो सबलो टीको ॥ आज० ॥ ४ ॥ विवेक विजयनो रे शिष्य, ह्र्षें हुं प्रणमुं निश दीस ॥ पूर्वे पुण्यें रे पामी, जेट्यो छुं मोरा अंतरजामी ॥ आज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लय लागी रे लय लागी रे, गोडी पासजिणंदशुं लय लागी ॥ आतम रूपीने अकल सरूपी, लोकालोक प्रकाशी रे ॥ गो० ॥१॥ चोशठ इंद्र करे तोरी सेवा, इंद्राणी ललि ललि पाय लागी रे ॥गो०॥२॥ ज्ञानविम लसूरी इणी परें बोले, प्रजुआवागमण निवारी रे ॥३॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें, नाम जपूं पल पल में ह्रो ॥ प्रजुजी ॥ तुं० ॥ शांतिजिणेसर साह्येब साचो, शांतिकरण एक पलमें ह्रो ॥ प्रजुजी ॥ तुं० ॥१॥ निर्मल ज्योति वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बादलमें ह्रो ॥ प्रजुजी ॥तुं०॥ मेरो तो मन प्रजु तुमसें लीनो, मीन वसत जिम जलमें ह्रो ॥ प्रजुजी ॥ तुं० ॥ २ ॥ जव जव जमतां में दरिसण पायो, आशा पूरो एक पलमें ह्रो ॥ प्रजुजी ॥ तुं० ॥ जिनरंग कहे प्रजु शांतिजिणेसर, देख्यो ज्युं देव सकलमें ह्रो ॥ प्रजुजी ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं ॥

॥ प्रभुजी रे प्रभुजी नाम जपुं मन माहरे, पण सेवकनी चित्त नही को ताहरे ॥ नीरागी जिनराज निरागीशुं मले, तुमसेंती एक वार थाये भवदुख टले ॥ १ ॥ रूपरहित जिनराज कहो किहां देखी एं, विण देखे दोय नेत्र सफल केम लेखिएं ॥ जेहने रे नेत्र हजार ते नर पण ताहरो, देखे नही देदार किस्यो बल माहरो ॥ २ ॥ पंचम ज्ञान प्रकाश शुद्ध होय जेहने, अरिगंजन अरिहंत प्रगट छे तेहने ॥ तेहनो तो लव लेश नही को इण समे, एहवो को न उपाय जे जिन तुमथी मले ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म तणे वश हूं पड्यो, जग गुरु ताहरो धर्म महा रे कर नवि चड्यो ॥ आपणपे.अहंकार तणे वश वाहियो, तेणे करी तुम दरिसण, उदय नवि आवियो ॥४॥ तरण तारण जिहाज समो जिनजी मल्यो,भागी मननी भ्रांति सहु संशय टल्यो ॥ क्रिया दुक्कर कार न थाए आजनें, सद्गति लहीएं ताम प्रसादें राजने ॥ ५ ॥ अमची विनति एह तमें अवधारजो, कठिन ते आठे कर्मने दूरें वारजो ॥ वीनति वाचक भक्ति सागरनी जाणवी, तिम करो त्रिभुवन स्वामी, सेवा तारी पामवी ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषभजिन स्तवनं ॥

॥ मोसें नेह धरी महाराज आज राजराज दर्श दीजीए, दर्श दीजीएं रे भव दुख छीजीएं ॥ मो० ॥

ए टेक ॥ रे तुम ज्ञानी जगत तात त्रात तुम सरन री जीएं, शरन रीजीएं तो नव डुख डीजीएं ॥ मो० ॥ १ ॥ नरप नाभिजीके नंद चाहत इंद चंद विंद, जयो जयो जिणंद नित्य वंद कीजीएं ॥ मो० ॥ २ ॥ तुम धूलेवा नाथ मोक्ष साथ अचल आदिब्रह्म, ग्र ही हाथ प्रजु रतनको उद्धार कीजीएं ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ जाग जाग रयण गई, जोर जयो प्यारे ॥ पंच कूं प्रपंच कर, वशकर यारे ॥ जाग जाग रयण गइ, जोर जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृषानामें मी न मरे, जोगमें मत्तंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयन मे पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें जमर मरे, नासा रस लेतां ॥ एक एक इंडीसंग, मरे जिउ केता ॥ जा० ॥ ३ ॥ पंचके पड्यो तुं फंद, क्युं कर वश आवे ॥ मार तुं मन इछा जूत, ज्युं निरंजन पावे ॥ जा० ॥ ४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ तुं हि नाथ हमारो रे ॥ जिनपति ॥ तूंहि नाथ हमा रो ॥ योग क्षेमंकर जविक सकलके, सेवक हैयामांहे धारो रे ॥ जि० ॥ तूं० ॥ १ ॥ ए टेक ॥ जो गुन पाए नही सो मिलावत ॥ पाए गुनकूं सुधारो ॥ अनजि राम कलिमल करो दूरें, अब मोहे पार उतारो रे ॥ जि० ॥ तूं०॥ २ ॥ त्रिजुवन नाथ सार करो मोरी, करुणा नजर निहालो ॥ पास चिंतामण जानुचंदकी,

एहि विनति अवधारो रे ॥ जि० ॥ तूं हि० ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल वंदोरे नर नारी, हांरे नरनारी हो नर नारी, सिद्धाचल वंदो रे नर नारी ॥ नाभिराया मरु देवा नंदन, ऋषभदेव सुखकारी ॥ सि० ॥ १ ॥ पुंमरिक पमुहा मुनिवर सीधा, आत्मतत्त्व विचारी ॥ सि० ॥ २ ॥ शिवसुखकारण भवदुख वारण, त्रिभुवन जग हितकारी ॥ सि० ॥ ३ ॥ समकित शुद्ध करण ए तीरथ, मोह मिथ्यात निवारी ॥ सि० ॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु केवल धारी, भक्ति करुं एक तारी ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ भमरो भमेरे रंग मोहोलमांरे ॥ ए देशी ॥ आज सफल दिन माहरो रे, वांद्यां श्री धूलेवा राय रे ॥ केशरीयोजी भेटियो रे ॥ मेवाड वागड विच्चें शोभतो रे, बावन जिनालो प्रासाद रे ॥ के० ॥ १ ॥ मेरु सम उत्तंग देहरो रे, कोरणी अतिहि श्रीकार रे ॥ के० ॥ थंभे थंभे शोभे पूतली रे, जाणीयें देव विमान रे ॥ के० ॥ २ ॥ सुवर्णनो दंम कलश अछे रे, रूप्प कपाट जोडि दोय रे ॥ के० ॥ रत्नें जडित सुवर्ण अंगिका रे, तेजें झलामल भाण रे ॥ के० ॥ ॥३॥ प्रभुजीनी मूरति मोहनी रे, तृप्ति न पामे नयण रे ॥ के० ॥ महिमावंत मोहोटा तुमें रे, जग सहु नमे जस, पाय रे ॥ के० ॥ ४ ॥ नित पूजे प्रभु भाव

शुं रे, वंछित फल लहे ताम रे ॥ के० ॥ आशा धरी ने हुं आवीयो रे, द्यो दरिसण महाराज रे ॥ के० ॥ ५ ॥ देशावरी संघ आवे घणा रे, यात्रा करण नितमेव रे ॥ के० ॥ केशरना कीच मची रह्या रे, नित होए मंगलमाल रे ॥ के० ॥ ६ ॥ गोमुख यक्ष चक्केसरी रे, शासन देवता एह रे ॥ के० ॥ कलियुगमां साचो धणी रे, परता पूरणहार रे ॥ के० ॥ ७ ॥ शेठ नरसिंहनाथाना संघमां रे, वर्त्ते छे जयजयकार रे ॥ के० ॥ संवत उगणीश बारोत्तरे रे, वैशाख वदि बीज सार रे ॥ के० ॥ ८ ॥ तिणे दिन प्रभुजीने वांदिया रे, संघ सर्वे गहघट रे ॥ के० ॥ पूजा साहामिवछल नित प्रतें रे, खरचीने लाहो लीध रे ॥ के० ॥ ए ॥ आठ दिवस करी जातरा रे, संघ सहू हर्षेण रे ॥ के० ॥ सौभाग्येंडुशिष्य देवचंद्रने रे, यात्रा थई सुखकार रे ॥ के० ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ में नही जाण्यो नाथजी, मोसुं दूर पगाया ॥ पीछेसें वर्द्धमान जी, शिवमेहेल सधाया ॥ में० ॥ ॥ १ ॥ वचन तुमारो मानकें, में दीक्षा लीनी ॥ लोक लाज सब त्यागके, घर घर भिक्षा कीनी ॥ में० ॥ २ ॥ दरस तुमारो देखतो, रहेतो रंग रातो ॥ वचन तुमारो शिर धरी, गुण तोरा गातो ॥ में० ॥ ३ ॥ जिहां जिहां संशय उपजे, तो शुं पूछी लीजें ॥ ज्ञान सुधारसकी कथा, कहो कोणशुं कीजें ॥ में० ॥ ४ ॥

सही सही तूं वीतराग हे, नही रागकी रेखा ॥ शत्रु मित्र ते रे सम जए, सो में नजरें देखा ॥ में० ॥ ॥ ५ ॥ शुकलध्यान श्रेणें चढया, गुरु गौतम राया ॥ अनित्य जावना जावतां, केवल पद पाया ॥में० ॥ ६ ॥ पूरन ब्रह्म प्रगट जया, नवि जाये छिपाया ॥ रूपचंद जक्ते करी, चरणे शिर लाया ॥ में० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीवृद्धचैत्यवंदन प्रारंजः ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ केवलनाणी श्रीनिरवाणी, सागर महाजस विमल ते जाणी ॥ सर्वानुजूति श्रीधर गुण खाणी, दत्त दामोदर वंदूं प्राणी ॥ १ ॥ सुतेज स्वामी मुनिसुव्रत जाणी, सुमतिने शिवगति पंचम नाणी ॥ अस्तांग नेमीसर अनिल ते जाणी, यशोधर सेवो मनमांहि आणी ॥ २ ॥ कृतारथ जपतां नवि होय हाणी, धर्मीसर पाम्या शिवपुर राणी ॥ शुद्धमति शिवकर स्यंदन गाणी, संप्रतिना गुण गाए इंद्राणी ॥ ३ ॥ वाचक मूला कहे जगते जाणी, तवन जणो जिम थाउ नाणी ॥ ए चोवीशी नित नित गाणी, मुक्ति तणां सुख जिम ल्यो ताणी ॥ ४ ॥ ढाल बीजी ॥ आदें अजितज रे, संजव अजिनंदन जणुं ॥ श्री सुमतिज रे, पद्मप्रजजीना गुण थुणुं ॥ श्री सुपारस रे, चंद्रप्रज जग जाणीयें ॥ सुविधि शीतल रे, श्रेयांस ह रखें वखाणीयें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ वखाणीयें श्री वासपूज्य, विमल अनंत धर्म शांति ए ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रत, नमि नेम ध्याउं चित्त ए ॥ सूर धीर पार्श्व

वीर, वर्त्तमानें जिनवरा ॥ कर जोडी वाचक नणे मूला, स्वामी सेवक सुखकरा ॥ २ ॥ ढाल त्रीजी ॥ पद्मनाज सूरदेव, सुपार्श्व स्वयंप्रज होइ ॥ सर्वानुजूति देवसुत, उदय पेढालज जोइ ॥ १ ॥ पोटिल सत्की र्त्ति, मुनिसुव्रत अमम निःकषाय ॥ निपुलायक निर्म म, चित्रगुप्ति वंदूं पाय ॥ २ ॥ समाधि सुसंवर, यशो धर विजय मल्ली देव ॥ अनंत वीरज जड्कृत, तेहनी कीजें सेव ॥ ३ ॥ अनागत जिनवर, होशे तेहनां ना म ॥ नणे वाचक मूला, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥ ॥ ढाल चोथी ॥ महाविदेह पंच मफार, प्रत्येकें जि न चार ॥ सीमंधर जुगमंधर, बाहु सुबाहु अ सुखक र ॥ १ ॥ सुजात स्वयंप्रज स्वामी, उसनानन ले हुं ना मी ॥ अनंतवीरज देव, सूरप्रज्ञ करुं अ सेव ॥ २ ॥ विशाल वज्रंधर साहु, चंड्रानन चंड्बाहु ॥ जुजंग ई श्वर गाउं; नेमी प्रज्ञु चित्त ए लाउं ॥ ३ ॥ वीरसेन महाजड् वंदूं, देव जसा दीठे आनंदूं ॥ अजितवीरि य वंदन, शाश्वता रुषजाचंड्रानन ॥ ४ ॥ वर्द्धमान वारिषेण ईश, ए हुआ जिनचोवीश ॥ एवा उन्नु ए जिनवर, वाचक मूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥ ढाल पां चमी ॥ हवे पायालें लोक मच, जिहां असुर कुमार ॥ लाख चोशठ जिनजुवन अछे, तिहां करुं जूहार ॥ ॥ १ ॥ नागकुमारमांहि कह्या, तिहां लाख चोराशी ॥ एता जिनहर तिहां नमुं, थाउं समकितवासी ॥ ॥ २ ॥ सोवन कुमार मच लाख, बहुंतेर प्रासाद ॥

छन्नुं लाख वायुमत्र, सुणियें सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकुमार दिशाकुमार, वली उदधिकुमार ॥ विद्युत स्तनितकुमार अने, वली अग्निकुमार ॥४॥ए छए स्थानक जाणियें, प्रत्येकें जिनहर ॥ छहुंतेर छहुंतेर लाख तिहां, नवि अण जिनसुखकर ॥ ५ ॥ एवंकारें सवि मली, बहुतेर तिहां लाख ॥ सात कोडि जिनहर नमुं, श्री जिनवर नांख ॥ ६ ॥ लाख सात निव्यासी कोडी, अने तेरशें कोडी ॥ जिन पडिमा श्रीजिन तणी, वंदूं बे कर जोडी ॥ ७ ॥ असंख्या व्यंतर जोइशी, असंख्या जिनहर ॥ असंख्य पडिमा जिन तणी, नमिय नहिं डुर्गति मर ॥ ८ ॥ वाचकमूला कहे देव, देउ सुमति सदा मुऊ ॥ जिनवचनें हुं लीन थइ, गाउं जिनजी तुऊ ॥ ए ॥ ढाल छठी ॥ सोहम ईशान सनतकुमार ए, माहिंद बंनरे लांतक सार ए॥त्रुटक ॥ सार शुक्र अने सहसारह, आनत प्राणत आरण ॥ अचुत नवग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच अनुत्तर तार ण ॥ अनुक्रमें प्रासाद कहीयें, लाख सहस शत संखया ॥ बत्तीस अठावीस बारह, अठ चउ लख अकया ॥१॥ चाल ॥ पन्नास चालीश छ सहस जिनहरा, दोदो दोढज दोढज सतवरा ॥ त्रुटक ॥ वरा सत्तवर इग्यारोत्तर, सत्तोत्तर शो जाणीयें ॥ एकशो ऊपर पंच अनुत्तर, अनुक्रमें वखाणीयें ॥ सवे मलि जिनहर जिनहर, लाख चोराशी साख ए ॥ सहस सत्ताणुं आगला, तिहां वीश ने त्रण दाख ए ॥२॥ चा

ल ॥ एक सो कोडी रे, बावन कोडी ए ॥ लाख चोरा णुं रे, संख्या जोडीएं ॥ त्रुटक ॥ जोडीएं चोशठ स हस एकशो, चालीशें तिहां आगली ॥ जिनप्रासाद एकसो असिअ लेखें, वंदूं प्रतिमा उजली ॥ चैत्यसं ख्या ऊर्ध्व लोकें, वीर वचनविख्यात ए ॥ वाचक मू ला कहे नणजो, स्तवन ए परनात ए ॥ ३ ॥
॥ ढाल सातमी ॥ वेयढगिरि सितिर सय जिनहर, वृषधरना तिहां त्रीश जी ॥ कुरुडुमनां दश जिनहर बोल्या, गजदंतें तिहां वीशजी ॥ १ ॥ असिअ ते जिनहर कुरुडुम परिधें, असिअ वखारे जाणुं जी ॥ मेरुतणा पंचाशी जिनहर, इखुकारें चार वखाणुं जी ॥ २ ॥ मानुषोत्तर पर्वत तिहां चारज, नंदीसरना वी श जी ॥ कुंमल रुचक तिहां चार चार जिनहर. ऋष नादिक तिहां ईश जी ॥ ३ ॥ पंचसया इग्यारें अ धिका, जिनहर तिर्छे लोकें जी ॥ पडिमा एकशठ स हस चारसें, बोली सघले थोकें जी ॥ ४ ॥ अधो ऊर्ध्वने तिर्छे लोकें, सवे मली कोडी आठें जी ॥ ला ख उप्पन्न ने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश पाठें जी ॥ ५ ॥ जिन पडिमा पन्नरसें कोडी, बेंतालीश वली कोडी जी ॥ लाख पंचावन सहस पणविस, प णसय चालीश जोडी जी ॥ ६ ॥ एतां तवन नणे जे नावें, प्रह उगमते सूरें जी ॥ वाचकमूला कहे गुण गातां, डुर्गति नासे दूरें जी ॥ ७ ॥ ढाल आठ मी ॥ अष्ठावय समेत शिखरगिरि ॥ साजनजिअ ॥

रेवत गिरि सित्तुंज ॥ गजपद धम्म चक्क कहुं ॥ सा०॥ वैभारगिरि उत्तंग ॥ १ ॥ रावते कुंजरावते ॥ सा० ॥ तिहुंअणगिरि ग्वालेर ॥ काशी अवंती जाणीयें ॥ सा० ॥ नागोर जेसलमेर ॥ २ ॥ सोरिपुर हथ्थिणाउ रें ॥ सा० ॥ अवल ईरावण पास ॥ पीरोज पुरें नू अड भलो ॥ सा० ॥ फलोधि पूरे आश ॥ ३ ॥ वि कानेरने मेडते ॥ सा० ॥ सीरोही आबू शृंग ॥ राण ग पुरने सादडी ॥ सा० ॥ वरकाणे मनरंग ॥ ४ ॥ भिन्नमालने कोटडे ॥ सा० ॥ वाहडमेर मोझार ॥ रायधणपुर रलियामणुं ॥ सा० ॥ शांतिनाथ दयोइ जूहार ॥ ५ ॥ साचोर जालोर राडद्रें ॥ सा० ॥ गो डीपुरवर पास ॥ पाटण अमदावाद वली ॥ सा० ॥ संखेसर दीजें वास ॥६॥ अमी झरे नवपल्लवे ॥ सा० ॥ नवखंभ थलाइं ठाम ॥ तारंगे बुरहानपुरें ॥ सा० ॥ वंदूं माणक शाम ॥ ७ ॥ खंभायतने तारापुरें ॥ सा० ॥ मातर ने गंधार ॥ लोभण चिंतामणि व रुं ॥ सा० ॥ सूरत मभोई जूहार ॥ ८ ॥ देवक पा टण देवगिरि ॥ सा० ॥ नवे नगर वंदी जोय ॥ दीवा दिक सवि बंदरे ॥ सा० ॥ अंतरिक सिरिपुर होय ॥ ॥ ए ॥ वडनगरने डुंगरपुरें ॥ सा० ॥ इडर मालव दे श ॥ कल्याणक जिहां जिन तणुं ॥ सा० ॥ मन सूधे प्रणमेश ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ सा० ॥ जि न मूरति जिहां होय ॥ वाचकमूला कहे मुझ ॥ सा० ॥ वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥ कलश ॥ थुणुए जिन

वर ठवुए जिनवर, अधो ऊर्ध्वने लोक तीर्थं जाणुं ए ॥ सासय असासय जैनपडिमा, ते सवे वखाणुं ए ॥ गछविधिपक्ष पूज्य परगट, श्री धर्ममूर्त्ति सूरिंद ए ॥ वाचकमूला कहे नणतां, ऋद्धि वृद्धि आणंद ए ॥ १ ॥ इति वृद्धचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ सम्यक्त्वना सडशठ बोलनी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सुकृतवल्लिकादंबिनी, समरी सरसति मात ॥ समकित सडशठ बोलनी, कहिशुं मधुरी वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरुतणो, पच्चवयार न थाय ॥ नव कोडाकोडें करी, करतां सर्व उपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दिये, समकित विण शिवशर्म ॥ तेमाटे समकित वडूं, जाणो प्रवचन मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुण ठाण ॥ ते निश्चय समकित कह्यो, तेहनां ए अहिठाण ॥ ४ ॥ ढाल ॥ देइ देइ दरिसण आपणुं ॥ ए देशी ॥ चउ सद्दहणा तिलिंग ठे, दशविध विनय विचारो रे ॥ त्रण शुद्धि पण दूषण, आठ प्रनाविक धारो रे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ प्रनाविक अड पंच नूषण, पंच लक्षण जाणियें ॥ षट जयण षट आगार नावन, ठविहा मन आणियें ॥ षट ठाण समकित तणा सडसठ, नेद एह उदार ए ॥ एहनुं तत्त्व विचार करतां, लहीजें नवपार ए ॥६॥ ढाल ॥ चउविह सद्दहणा तिहां, जीवादिक परमठो रे ॥ प्रवचनमां जे नांखिया, लीजे तेहनो अठो रे ॥ ७ ॥

॥ त्रुटक ॥ तेहनो अर्थ विचार करियें, प्रथम सद्दह णा खरी ॥ बीजी सद्दहणा तेहना जे, जाण मुनि गुण जवहरी ॥ संवेग रंग तरंग जीले, मार्ग शुद्ध कहे बुधा, तेहनी सेवा कीजियें जिम, पीजियें समता सुधा ॥ ८ ॥ ढाल ॥ समकेत जेणे ग्रही वमियुं, निन्हव न अहाछंदा रे ॥ पासत्था ने कुशीलिया, वेष विडंबक मंदा रे ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ मंदा अनाणी दूर छंमो, त्रीजी सद्दहणा ग्रही ॥ परदर्शनीनो संग तजियें, चोथी सद्दहणा कही ॥ हीणातणो जे संग न तजे, तेहनो गुण नवि रहे ॥ ज्यूं जलधि जलमां जल्यूं गंगा, नीर लूणपणूं लहे ॥ १० ॥ ढाल ॥ कपूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ त्रण लिंग समकित तणां रे, पहिलो श्रुत अनिलाष ॥ जेहथी श्रोता रस लहे रे, जेहवी साकर डाख रे ॥ प्राणी धरियें समकित रंग, जिम लहियें सुख अनंग रे ॥प्राणी ध० ॥ ए टेक ॥११॥ तरुण सुखी स्त्री परिवस्यो रे, चतुर सुणे सुरगीत ॥ तेहथी रागें अति घणो रे, धर्म सुण्यानी रीत रे ॥ प्राणी० ॥१२॥ नूख्यो अटवी ऊतस्यो रे, जिम द्विज गेवर चंग ॥ इछे तिम जे धर्मने रे, तेहिज बीजुं लिंग रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ वैयावच्च गुरु देवनूं रे, त्रीजुं लिंग उदार ॥ विद्या साधक तणि परें रे, आलस नविय लगार रे ॥ प्राणी० ॥ ॥ १४ ॥ ढाल ॥ प्रथम गोवालातणे नवेंजी ॥ ए देशी॥ ॥ अरिहंत ते जिन विचरता जी, कर्म खपी हुआ

सिद्ध ॥ चेइय जिण पडिमा कही जी, सूत्र सिद्धांत प्रसिद्ध ॥ चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिम लहियें समकित सार ॥ चतुर० ॥ १५ ॥ धर्म खिमादिक नांखिउं जी, साधु तेहना रे गेह ॥ आचारय आचारना जी, दायक नायक जेह ॥ चतुर० ॥ १६ ॥ उपाध्याय ते शिष्यने जी, सूत्र नणावणहार ॥ प्रवचन संघ वखाणियें जी. दरिसण समकित सार ॥ चतुर० ॥ १७ ॥ नक्ति बाह्य प्रतिपत्तिथी जी, हृदय प्रेम बहुमान ॥ गुण थुति अवगुण ढांकवा जी, आशातननी हाण ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ पांच नेद ए दश तणो जी, विनय करे अनुकूल ॥ सीचे तेह सुधारसें जी, धर्म वृक्षनूं मूल ॥ चतुर० ॥ १९ ॥ ढाल ॥ धोबीडा तूं धोये मननूं धोतीयूं रे ॥ ए देशी ॥ त्रण शुद्धि समकित तणी रे, तिहां पहेली मन शुद्धि रे ॥ श्रीजिननें जिनमत विना रे, जूठ सकल ए बुद्धि रे ॥ चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए टेक ॥ २० ॥ जिन नगतें जे नवि थयुं रे, ते बीजाथी नवि थाय रे ॥ एवुं जे मुख नांखियें रे, ते वचन शुद्धि कहेवाय रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ छेद्यो नेद्यो वेदना रे, जे सहतो अनेक प्रकार रे ॥ जिण विण पर सुर नवि नमे रे, तेहनी काया शुद्ध उदार रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥ ॥ ढाल ॥ मुनि जन मारगनी ॥ ए देशी ॥ समकित दूषण परिहरो, तेमां पहिली छे शंका रे ॥ ते जिनवचनमां मत करो ॥ जेहने सम नृप रंका रे ॥ समकित

दूषण परि हरो ॥ ए टेक ॥ २३ ॥ कंखा कुमतनी वांछना, बीजुं दूषण तजियें ॥ पामी सुरतरु परगडो, किम बाउल नजियें ॥ समकित० ॥ २४ ॥ संशय धर्मना फल तणो, वितिगिछा नामें ॥ त्रीजूं दूषण परिहरो, निज शुन परिणामें ॥ समकित० ॥ २५ ॥ मिथ्यामति गुण वर्णनो, टालो चोथो दोष ॥ उन्मार्गी थुणतां हुवे, उनमारग पोष ॥ समकित० ॥ २६ ॥ पांचमो दोष मिथ्यामति, परिचय नवि कीजें ॥ इम शुन मति अरविंदनी, नली वासना लीजें ॥ समकित० ॥ २७ ॥ ढाल ॥ जोलीडा हंसा रे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥ आठ प्रनाविक प्रवचनना कह्यां, पावयणी धुर जाण ॥ वर्तमान श्रुतना जे अर्थनो, पार लहे गुण खाण ॥ धन धन शासन मंमन मुनिवरा ॥ ए टेक ॥ २८ ॥ धर्मकथी ते बीजो जाणीयें, नंदिखेण परि जेह ॥ निज उपदेशे रे रंजे लोकने, नंजे हृदय संदेह ॥ धन धन० ॥ २९ ॥ वादी त्रीजो रे तर्क निपुण नण्यो, मल्लवादि परि जेह ॥ राज द्वारें रे जयकमला वरे, गाजंतो जिम मेह ॥ धन धन० ॥ ३० ॥ नद्रबाहु परें जेह निमित्त कहे, परमत जिपण काज ॥ तेह निमित्ती रे चोथो जाणीयें, श्री जिनशासन राज ॥ धन धन० ॥ ३१ ॥ तप गुण उपर रोपे धर्मने, गोपे नवि जिन आण ॥ आश्रव लोपे रे नवि कोपे कदा, पंचम तपसी जाण ॥ धनधन० ॥ ॥ ३२ ॥ छठो विद्यारे मंत्र तणो बली, जिम श्रीवयर मुणिं

द ॥ सिद्ध सातमो रे अंजन योगथी, जिम कालिक मुनि चंद ॥ धन धन० ॥ ३३ ॥ काव्य सुधारस मधुर अ रथ नख्या, धर्म हेतु करे जेह ॥ सिद्धसेनपरें नरपति रीऊवे, अठम वर कवि तेह ॥ धन धन० ॥ ३४॥ ज व नवि होवे प्रनाविक एहवा, तव विधि पूर्व अने क ॥ जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रनाविक बेक ॥ धन धन० ॥ ३५ ॥ ढाल ॥ सतीय सुनडानी देशी ॥ सोहे समकित जेहथी, सखि जिम आनर णे देह ॥ नूषण पांच ते मन वस्यां, सखी मन व स्यां, तेहमां नही संदेह ॥ मुऊ समकित रंग अचल होयो ॥ ए टेक ॥ ३६ ॥ पहिलुं कुशलपणुं तिहां, स खी वंदन नें पच्चखाण ॥ किरियानो विधि अति घ णो, सखी आचरे तेह सुजाण ॥ मुऊ० ॥ ३७ ॥ बी जूं तीरथ सेवना, सखी तीरथ तारे जेह ॥ ते गीता रथ मुनिवरा, सखी तेहशुं कीजें नेह ॥ मुऊ० ॥ ३८ ॥ नक्ति करे गुरुदेवनी, सखी त्रीजुं नूषण होय ॥ किणहि चलाव्यो नवि चले, सखि चोथुं नूषण जो य ॥ मुऊ० ॥ ३९ ॥ जिनशासन अनुमोदना, सखी जेहथी बहुजन हुंत ॥ कीजें तेह प्रनावना, सखी पांच नूषणनी खंत ॥ मुऊ० ॥ ४० ॥ ढाल ॥ इम नवि कीजें हो ॥ ए देशी ॥ लक्षण पांच कह्यां सम कित तणां, धुर उपशम अनुकूल ॥ सुगुण नर ॥ अ पराधीशुं पण नवि चित्तथकी, चिंतवियें प्रतिकूल ॥ सुगुण नर॥ श्रीजिननाषित वचन विचारियें ॥ ए टेक

॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवे, वंछे शिवसुख एक ॥ सु० ॥ बीजूं लक्षण ते अंगीकरे, सार संवेगशुंटेक ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४२ ॥ नारक चारक समजव ऊजग्यो, तारक जाणिने धर्म ॥ सु० ॥ चाहे निकलवुं निर्वेद ते, त्रीजुं लक्षण मर्म ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४३ ॥ द्रव्यथकी दुःखियानी जे दया, धर्महीणानी जाव ॥ सु० ॥ चोथुं लक्षण अनुकंपा कही, निज शकतें मन ल्याव ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४४ ॥ जे जिन जांख्युं ते नहि अन्यथा, एहवो जे दृढ रंग ॥ सु० ॥ ते आस्तिकता लक्षण पांचमुं, करे कुमति नो ए जंग ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४५ ॥ ढाल ॥ जिन जिन प्रति वंदन दिसे ॥ ए देशी ॥ परतीर्थी परना सुर तेणे, चैत्य ग्रह्यां वलि जेह ॥ वंदन प्रमुख तिहां नवि करवुं, ते जयणा षट जेय रे॥ जविका समकित यतना कीजें ॥ ए टेक ॥ ४६ ॥ वंदन ते कर जोडन कहियें, नमन ते शीश नमाडे ॥ दान इष्ट अन्नादिक देवुं, गौरव जगत्ति देखाडे रे ॥ जविका० ॥ ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहियें, वारवार जे दान ॥ दोष कुपात्रें पात्रमतियें, नहि अनुकंपा मान रे ॥ जविका० ॥ ४८ ॥ अणबोलावे जेह जांखवुं, ते कहियें आलाप ॥ वारंवार आलाप जे करवो, ते कहियें संलाप रे ॥ जविका० ॥ ४९ ॥ ए जयणाथी समकित दीपे, वलि दीपे व्यवहार ॥ एमां पण कारणथी जयणा, तेना अनेक प्रकार रे ॥ जविका० ॥ ५० ॥ ढा

ल ॥ ललनानी देशी ॥ शुद्ध धरमथी नवि चले,अति दृढ गुण आधार ॥ ललना ॥ तो पण जे नवि तेह्वा, तेह्ने एह आगार ॥ ललना ॥ ५१ ॥ बोल्युं तेह्वुं पालियें, दंतिदंत सम बोल ॥ ललना ॥ सज्जनना डुर्जन तणा, कब्रप कोटने तोल ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अनियो ग ॥ ललना ॥ तेह्थी कार्तिकनी परें, नहि मिथ्या त संयोग ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५३ ॥ मेलो जननो घण कह्यो, बल चोरादिक जाण ॥ ललना ॥ खेत्र पालादिक देवता, तातादिक गुरु गण ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५४ ॥ वृत्ति डुर्लन आजीविका, ते नीखण कंतार ॥ ललना ॥ ते हेतें दूषण नही, करतां अ न्य आचार ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५५ ॥ ढाल ॥ रा ग मल्हार ॥ नावीजें रे समकित जेह्थी रूयडूं, ते नावना रे नावो मन करि परवडूं ॥ जो समकित रे ताजुं साजुं मूल रे, तो व्रततरु रे दीये शिवपद अ नुकूल रे ॥ ५६ ॥ त्रुटक ॥ अनुकूल मूल रसाल समकित, तेह विण मति अंध रे ॥ जे करे किरिया गर्व नरिया, तेह जूठो धंध रे ॥ ए प्रथम नावना गु णो रुअडी, सुणो बीजी नावना ॥ बारएूं समकि त धर्मपुरनुं, एह्वी ते पावना ॥ ५७ ॥ ढाल ॥ त्री जी नावना रे समकित पीठ जो दृढ सही,तो मोहो टो रे धर्म प्रासाद मगे नही ॥ पाइयें खोटे रे मोहोटुं मंमाण न शोनीयें, तेह कारण रे समकितशुं चित्त

थोजीयें ॥ ५७ ॥ त्रुटक ॥ थोनियें चित्त नित एम जावी, चोथी जावना जावियें ॥ समकित निधान स मस्त गुणनुं, एहवुं मन लावियें ॥ तेह विण बूटा र त्न सरिखा, मूल उत्तर गुण सवे ॥ किम रहे ताके जेह हरवा, चोर जोर जवे जवे ॥ ५ए ॥ ढाल ॥ जा वो पंचमी रे जावना शम दम सार रे, पृथिवी परें रे स मकित तसु आधार रे ॥ उठी जावना रे जाजन सम कित जो मले, श्रुत शीलनो रे तो रस तेहमां नवि ढ ले ॥ ६० ॥ त्रुटक ॥ नवि ढले समकित जावना रस, अमि य सम संवर तणो ॥ षट जावना ए कही एहमां, करो आदर अति घणो ॥ इम जावतां परमार्थ जलनिधि, होय नितु ऊकजोल ए ॥ घन पवन पुण्य प्रमांण प्रगटे, चिदानंद कल्लोल ए ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जे मुनिवेष शके नवि बंमी ॥ ए देशी ॥ उरे जिहां समकित ते था नक, तेहना षट विध कहियें रे ॥ तिहां पहेलुं था नक ठे चेतन, लक्षण आतम लहियें रे ॥ खीर नीर परें पुजलमिश्रित, पण एहथी ठे अलगो रे ॥ अनुजव हंस चंच जो लागे, तो नवि दीसे वलगो रे ॥ ६२ ॥ बीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुजूत संजारे रे ॥ बालकने स्तनपान वासना, पूरव जव अ नुसारें रे ॥ देव मनुज नरकादिक तेहना, ठे अनि त पर्याय रे ॥ ड्रव्यथकी अविचलित अखंमित, निज गुण आतमराय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजुं थानक चेतन कर्त्ता, कर्म तणे ठे योगें रे ॥ कुंजकार जिम कुंज त

णो जे, दंभादिक संयोगें रे ॥ निश्चयथी निज गुण नो कर्त्ता, अनुपचरित व्यवहारें रे ॥ द्रव्यकर्मनो नग रादिकनो, ते उपचार प्रकारें रे ॥ ६४ ॥ चोथुं थानक छे ते नोक्ता, पुण्य पाप फल केरो रे ॥ व्यवहारें निश्चय नय दृष्टें, भुंजे निज गुण नेरो रे ॥ पंचम थानक छे परम पद, अचल अनंत सुख वासो रे ॥ आधि व्याधि तन मनथी लहियें, तसु अनावें सुख खासो रे ॥ ६५ ॥ छठुं थानक मोक्ष तणुं छे, संयम ज्ञान उपायो रे ॥ जो सहिजें लहियें तो सघले, कारण निःफल थायो रे ॥ कहे ज्ञान नय ज्ञानज साचुं, ते विण जूठी किरिया रे ॥ न लहे रूपूं रूपूं जाणी, शीप नणी जे फरिया रे ॥ ६६ ॥ कहे किरियानय किरिया विण जे, ज्ञान तेह शुं करशे रे ॥ जल पेसी कर पद न हलावे, तारू ते किम तरशे रे ॥ दूषण नूषण छे इहां बहुलां, नय एकेकने वादें रे ॥ सिद्धांती ते बेहु नय साधे, ज्ञानवंत अप्रमादें रे ॥ ६७ ॥ एणि परें सडशठ बोल विचारी, जे समकित आराहे रे ॥ राग द्वेष टाली मन वाली, ते सम सुख अवगाहे रे ॥ जेहनुं मन समकितमां निश्चल, कोइ नही तस तोले रे ॥ श्री नय विजय विबुध पय सेवक, वाचक जस इम बोले रे ॥ ६८ ॥ इति श्रीसम्यक्त्वना सडशठ बोलनी सद्याय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिन स्तवन प्रारंजः ॥

॥ लागो लागो रे प्रभुशुं नेह, वसीयो हइडामां ॥ म्हारो साहिबो अतिहि सनेह ॥ वसी० ॥ दर्शन

प्रभुजीनुं देखतां रे, जोतां मुखनी ज्योति रे ॥ दुरित पमल दूरें कर्यां रे वारी, प्रगट्यो ज्ञान उद्योत ॥ ॥ वसी० ॥ १ ॥ सूरत मनडामां वसी रे, कागल जिम चित्राम रे ॥ रात दिवस सुतां जागतां रे हुंतो, नित समरुं प्रभुनाम ॥ वसी० ॥ २ ॥ जेहना मन मां जे वस्या रे, तेहने तेहशुं नेह रे ॥ मधुकरने मन मालती रे जिम, मोर तणे मन मेह ॥ वसी० ॥ ॥ ३ ॥ देव अवर देखी घणा रे, किहां न माने मन्न रे ॥ प्रभुगुण सांकलें सांकल्यो रे तेतो, आलोचे नही अन्न ॥ वसी० ॥ ४ ॥ साहेब सुविधि जिणंदनी रे हुं, चाहुं नवोनव सेव रे ॥ हंसरतन कहे माहरे रे कांइ, लागी एहज टेव ॥ वसी०॥ ५॥इति॥

॥ अथ केशरियाजीनुं स्तवन ॥

॥ केशरीयासें लाग्युं मारुं ध्यान रे, बीजुं मुने कांइ न गमे रे ॥ के० ॥ नाभिनूप मरुदेवीको-नंदन, तुम पर जीया खुरबान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ १ ॥ धनुष पांचशें मान मनोहर, काया कंचनवान रे ॥ ॥ बीजुं० ॥ के० ॥ २ ॥ जुगला रे धर्म निवारण साहिब, राजेश्वर राजान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ ॥ ३ ॥ रुषभदासकी आशा पूरजो, सेवक अपना जान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमल्लीनाथजिन स्तवनं ॥

॥ चित्त को न गमे रे चित्त को न गमे, मल्लिनाथ विना चित्त को न गमे ॥ माता प्रभावती राणीको जायो,

कुंन नृपतिसुत काम दमे ॥ म०॥ १॥ कामकुंन जिम का मित पूरे, कुंनलंठन जिन सहुने गमे ॥ म०॥ २॥ मिथि ला नयरीमें जन्म प्रजुको, दरिसन खो फुःख शमे म०॥ ॥३॥ घेवर नोजन सरसा पिरसे, बाकस बूकस कोन जमे ॥ म० ॥ ४ ॥ नीलवरण प्रजु कांति अंगें, मरक तमणि ठबी दूर नमे ॥ म० ॥ ५ ॥ न्यायसागर प्रजु नक्तनो स्वामी, हरि हर ब्रह्मा कोन नमे ॥ म०॥ ६ ॥

॥ अथ अयवंती पार्श्व स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ पंथीडा पंथ चलेंगो, प्रजु नज ले दिन चार ॥ ॥ पंथी०॥ क्या ले आया क्या ले जासी, पाप पुण्य दोनुं लार. ॥ पंथी०॥ १ ॥ बालपनो तें तो खेल गमा यो, यौवन माया जाल॥पंथी०॥बूढापो आयो धर्म न पायो, पीठे करत पुकार ॥ पंथी०॥२॥ फूठी माया फू ठी काया, फूठो सब परिवार ॥ पंथी० ॥दया मया कर पास अवंती, अब तेरो आधार ॥ पंथी० ॥३॥ इति ॥

॥ अथ बलिनइमुनिनी सद्याय ॥

॥ शा माटे बंधव मुखथी न बोलो, आंसुडे आ नन धोतां मुरारी रे ॥ पुण्यजोगें दडियो एक पाणी, जड्यो ठे जंगल जोतां मुरारी रे ॥ शा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ त्रिकम रीश चढी ठे तुऊने, वनमां हे वनमाली मुरारी रे ॥ वडीरे वारनो मनावुं हुं वाला, तुं तो वचन न बोले फरी वाली मुरारी रे ॥ शा० ॥ २ ॥ नगरी रे दाधी ने शुद्ध न लाधी, मह्यारी वाणी निसुण वाला मुरारी रे ॥ आ वेलामां लीधो

अबोलो, कानजी कां थया काला मुरारी रे ॥ शा० ॥ ३ ॥ शी शी वात कहुं शामलीया, विठ्ठल जी आ वेला मुरारी रे ॥ शाने काजें मुजने संतापे, हरि हसी बोलोने हेला मुरारी रे ॥ शा० ॥ ४ ॥ प्राण मह्मारां जाशे पाणी विण, अध घडीने अण बोले मुरारी रे ॥ आरति सघली जाये अलगी, बांधव जो तुं बोले मुरारी रे ॥ शा० ॥ ५ ॥ षटमास लगें पाल्यो हबीलो, हैया उपर अति हितें मुरारी रे ॥ सिंधु तटें सुरने संकेतें, हरि दहन करम शुभरीतें मुरारी रे ॥ शा०॥ ॥ ६ ॥ संयम लइ गयो सुरलोकें, कवि उदयरतन इम बोले मुरारी रे ॥ संसारमांहि बलदेव मुनिने, कोइ नव आवे तोले मुरारी रे ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी शांतिजिणंदने भेटीयें, शांतिरसनो दातार हो ॥ अचिराना जाया ॥ प्रभुजी शांति जलधर उनह्यो, वरसे नवि वित्त धार हो ॥ अचिरा० ॥ ॥ प्रभुजी०॥१॥ प्रभुजी गजपुर नयर दीपावीयुं, प्रगट्यो ज्ञानदिणंद हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी कर्म दल मल चूरवा, समेतगिरि दीपे जिणंद हो ॥ अ० ॥ ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभुजी कर्म कलंक निराकरी, सिद्ध थया निज भाव हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी प्रगटावी निज रूपने, अचरिज रूपाभाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥

॥ ३ ॥ प्रनुजी सादि अनंतें थिर रह्या, एक तिहां अछे अनेक हो ॥ अ० ॥ प्रनुजी लोकांतें आदि अलोकने, एहवो तिहां विवेक हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ॥ ४ ॥ प्रनुजी तिहां अपूर्व आनंद लहे, वचन अगोचर जेह हो ॥ अ० ॥ प्रनुजी सिद्ध स्वरूपनी वानगी, शुद्ध श्रद्धाने जाणो तेह हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ॥ ५ ॥ प्रनुजी दर्शन लही जिन देवनुं, नावो एहिज नाव हो ॥ अ० ॥ प्रनुजी एहिज नाव अनुसरी, नवजल तरवा नाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रनुजी एहिज ध्यानें नित रही, चाहीयें शिव सुख राज हो ॥ अ० ॥ प्रनुजी श्रीजय जिनवर ध्यानथी, नायक अनुनव काज हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनं ॥ गिरूवा रे ॥ गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ वंदो महावीर जिनेसर राया, माता त्रिशला राणीना जाया रे ॥ हरिलंबन कंचन वर काया, अमर वधू हुलराया रे ॥ वंदो० ॥ १ ॥ बालपणे सुरगिरि मोलाया, अहि वेताल हराया रे ॥ इंड कहे व्याकरण निपाया, पंमित विस्मय पाया रे ॥ वंदो० ॥ २ ॥ क्षायिक रुद्धि अनंती पाया, अतिशय अधिक सुहाया रे ॥ चार रूप करि धर्म बताया, चउविह सुर गुण गाया रे ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ त्रीश वरस गृहवासें रहिया, संयमशुं दिल लाया रे ॥ बार वरस तपि कर्म खपाया, केवलनाण उपाया रे ॥ वंदो०

॥ ४ ॥ तीन भुवनमें आण मनाया, दश दोष छत्र धराया रे ॥ रूप कनक मणि गढ विरचाया, निरग्रंथ नाम धराया रे ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ रयण सिंहासण वेसण ठाया, डुंडुनि नाद बजाया रे ॥ दानव मानव दो सुख पाया, भक्तें शीश नमाया रे ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ प्रभु गुण गण गंगाजल नाह्या, पावन तेह नी काया रे ॥ पंमित खिमाविजय सुपसाया, सेवक जिन गुण गाया रे ॥ वंदो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पुरुषने परस्त्रीत्यागआश्रयी शीखामण ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परनारीशुं प्रीति कबू नव कीजियें ॥ए आंकणी॥ हांरे जेणें परनारीशुं प्रीति करी, तेने हैडे रुंधण थाय घणी, जेणें कुल मरजादा कांइ न गणी ॥ सु० ॥ १ ॥ तारी लाज जाशे नात जातमां, तुं तो हलुउ पडीश सहु साथमां, ए धुंआडो न आवे हाथमां ॥ सु० ॥ २ ॥ हांरे सांज पडे रवि आथमे, ताहारो जीव भमरानी परें भमे, तुने घरनो धंधों कांइ न गमे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हांरे तुं जइने मलीश दूतीने, ताहारुं धन लेशे सर्वे धूतीने, पछे रहीश हैडुं कूटीने ॥ सु० ॥ ४ ॥ तुंतो बेठो मूछो मरडीने, ताहारुं कालजुं खाशे करडीने, तारुं मांस लेशे उजरडीने ॥ सु० ॥ ५ ॥ हांरे तुने प्रेमना प्याला पाइने, ताहारां वसतर लेशे वाइने, तुने करशे खोखुं खाइने ॥ सु० ॥ ६ ॥ हांरे तुंतो परमंदिरमां पेसीने, तिहां पारकी सेजें वेसीने, तें भोग कस्या घणुं हेंसीने ॥

सु० ॥ ७ ॥ हांरे जेम भुयंगथकी मरता रेहवुं, तेम परनारीनें परिहरवुं, हांरे नवसायर फेरो नवि फर वुं ॥ सु० ॥ ७ ॥ वाला परणी नारीथी प्रीत सारी, ए माथुं वढावे परनारी, तुमें निश्चें जाणजो निरधा री ॥ सु० ॥ ए ॥ ए सद्गुरु कहे ते साचुं छे, ता हारी कायानुं सरवे काचुं छे, एक नाम प्रभुनुं साचुं छे ॥ सु० ॥ १० ॥ इति शिखामणसञ्चाय संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तवनं ॥

॥ आज म्हारे आनंद थयो, प्रेमनां वादल वर श्यां दहाडो सफल थयो ॥ ए आंकणी ॥ सुणो साहेली, वीर जिनेसर जनम्या धन्य दिन आजनो ॥ आज० ॥ १ ॥ तमें सिद्धारथ कुलें आया, तमें त्रि शला माताना जाया, छपन्न दिगकुमरीयें हुलराया ॥ आज० ॥ २ ॥ चोशठ इंद्र मली आवे, मेरुशिखर प्रभुने लावें, ए तो सुगंधिजलें करी नवरावे ॥ आज० ॥ ३ ॥ सखी आज म्हारे घेर दीवाली, म्हारा प्र भुजी आव्या पोतें चाली, मेंतो उसावी छेव ने सुंहा ली ॥ आज० ॥ ४ ॥ सखी टोली मली मंगल गा वे, ए तो रत्नत्रयीनां सुख पावे ॥ ए तो बार वर्ष भा वना भावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इम कर जोडी सेवक गावे, ए तो अक्षय पदवीने पावे, शुभ वीर प्रभुजीने परभावें ॥ आज० ॥ ६ ॥ इति श्री महावीरस्तवनं ॥

॥ अथ मनशिक्षानुं पद ॥ कल्याण रागमां ॥

॥ रे मन लोभी तारो कोण पतियारो ॥ रे मन० ॥

आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ छिनमें और पलकमें दूजो, घडी घडी दिलसें न्यारो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ चंचल मन व रज्यो नहि माने, प्रभु नव पार उतारो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

॥ अथ वर्द्धमानजिन स्तवनं ॥ राग वेलावल ॥

॥ रे मन क्युं जिन नाम विसास्यो ॥क्युं०॥ रे म न०॥ विषय विकार महानंद धास्यो, जनम जुआ ज्युं हास्यो ॥ रे मन०॥१॥ जिने तोकुं नरदेही दीनी, गर्भ की आंच उद्धास्यो ॥ ता प्रभुजीकूं तें शठ मूरख, एक घडी न संभास्यो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ नहिं कछु दान शियल तप पूजा, नहिं जिन नाम उच्चास्यो ॥ जैनधर्म चिंतामणि सरिखो काच जाण कर मास्यो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ करू ले सुकृत. दया उद्धर ले, जो नव चाहत सुधास्यो ॥ हरखचंद वर्द्धमान जिनेसर, अवसर मांहे न संभास्यो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ठुमरीमां ॥

॥ सहसफणा रे मोरा साहिबा, तेरी सामरी सूर तपर वारी जाउं रे ॥ तेरी मधुरी मूरत परवारी जा उं रे ॥ सहस० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तन मन लगन लगी एक तोशुं, मेंतो देव अवर नहिं ध्याउं रे ॥ सह स० ॥ २ ॥ सफल नइ आज घडीअ हमेरी, मेंतो देखी दरस सुख पाउं रे ॥ सहस० ॥ ३ ॥ वदन कमल छबी देखत सुंदर, मेंतो रोम रोम उलसाउं रे ॥ सहस० ॥४॥ तुम गुणको कछू पार न आवे, उपमा क्या में ब

ताउं रे ॥ सहस० ॥५॥ कीर्त्तिसागर कहे जव जव तोरी, मोज महिर नित पाउं रे ॥ सहस० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ समेतशिखरस्तवनं ॥

॥ चालो चालो शिखरगिरि जइयें रे ॥ चा० ॥ वीश जिणंद मुगतें गया ॥ चा० ॥ ए आंकणी ॥ पालगंजमें सफल बोलाइ, मधुबनमें जइ रहियें रे ॥ वीश जिणंद० ॥१॥ आठ मंदिर है श्वेतांबरका, तीन दिगम्बरी लहियें रे॥वी०॥ सीतानालें निर्मल थइनें, केशर प्याला ग्रहीयें रे ॥ वी० ॥ २ ॥ विषम पाहाड की कुंज गलनमें, शीतलता बहु लहियें रे ॥ वी० ॥ पश्चिम आठ पूर्वदिशि बारे,वीश टुंक जिन पद लहियें रे॥ वी० ॥३॥ शामलीया पारसको मंदिर, बिच शिखरपर सोहियें रे ॥ वी०॥ वीश टूंके जिन पूजन करकें, नरजव लाहो लहियें रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ उगणीशें इगीयारा माहावदि, एकादशी विधु कहीयें रे ॥ वी० ॥ संघ सहित यात्रा जइ सफली, विनय नमत गुण गहियें रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति शिखरजीनी ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजयस्तवनं ॥ घोलनी देशीमां ॥

॥ शत्रुंजे जइयें ने पावन थइयें, यात्रा नवाणुं करियें रे ॥ चालो शेत्रुंजे जइयें ॥ ए आंकणी ॥ डूंगर चडतां ने हरखज धरतां,जइने गंजारामां रहियें रे ॥ चालो० ॥१॥ सूरज कुंममां देह पखाली, नाइने निर्मल थइयें रे ॥ चालो० ॥ जीमज कुंममां कलशज जरियें, सोनानी शिरियें वधावो रे॥ चालो० ॥ २ ॥ पाना

मंगावोने अंगी रचावो, घणो अबिर चडावो रे ॥चा लो० ॥ फूल मगावोने हार गुंथावो, प्रभुजीने कंठे चढावो रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ सुखड केशर चंदन घसावो, नवे अंगें पूजा करावो रे ॥ चा० ॥ अगरउखेवो ने भावना भावो, नीचुं नीचुं शीश नमावो रे ॥ चा लो० ॥ ४ ॥ बेगा सिंहासण हुकुम चलावे, उपर छत्र धरावे रे ॥चालो०॥ खिमाविजय मुनि गुरु सुप साया, रुषभ तणा गुण गाया रे ॥ चा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ चालो सखी सिद्धाचल जइयें, चालो सखी वि मला चल जइयें ॥ के गिरिवर देखी सुख लइयें, के पा लिताणे जइ रहियें ॥चालो०॥१ ॥ के ए गिरि यात्रायें जे आवे, के भव त्रीजे सिद्धि जावे, के अजरामर पदवी पावे ॥ चालो० ॥ २ ॥ के यात्रा नवाणुं करियें, के नवकार लाख खरा गणियें, के भवसागर सहेजें तरियें ॥ चालो० ॥ ३ ॥ के छठ अठम काया कसि यें, के मोहराजा सामे धसियें, के वेगें शिवपुरमां वसियें ॥ चालो० ॥ ४ ॥ के सर्व तीरथनो ए रा जा, के सूरज कुंममां जल ताजां, के रोगीया नर होय ते साजा ॥ चालो० ॥ ५ ॥ के केशर चंदन घशी घोली, के कस्तूरी बरास भेली, के पूजो सर्व मली टोली ॥ चालो० ॥ ६ ॥ के पूजीने भावना भावो, के केवलज्ञान युगल पावो, के जो होये शिव पुरमां जावो ॥ चालो० ॥ ७ ॥ के अढार अठोत्तेरा

वरसें, के महावदि पंचमीने दिवसें, के नेट्या श्रीआ दीसर उलटें ॥ चालो० ॥ ८ ॥ के एह उत्तम पदनी सेवा, के देजो मुने देवाधिदेवा, के शिवरूपी लखमीने सुख मेवा ॥ चालो० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ पद राग कल्याण ॥

॥ मोहे कैसे तारोगे दीन दयाल ॥ मोहे० ॥ तारो तो पिया नित तुम तारे, बिन तरवेकूं लीयो संभाल ॥ मोहे० ॥ १ ॥ कंचनको कहा कंचन करवो, मलिन कंचन परजाल ॥ मोहे० ॥ कामक्रोध मद लपट रह्यो नित, महा मोहजंजाल ॥ मोहे० ॥ २ ॥ मोय पापीकूं पावन करवो, बहोत कठीन कृपाल ॥ मोहे० ॥ मल्लिनाथ प्रभु मोहनी मूरति, रूपचंद गुण माल, करत निहाल ॥ मोहे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ रूषभ स्तवनं ॥ राग बिलास चरचरीमां ॥

॥ जाग जाग मुकुटमणि, नाभिनृपनंदा ॥जा० ॥ ए आंकणी॥द्वार ठाढे नर अमर सेवा करे,उच्चरे मुख जै जै जै जै नंदा ॥ जा० ॥ १ ॥ कमलदल मुकुल मांहि, मधुप रणझण करता, पिबत प्रीति धर सरस मकरंदा ॥ जा० ॥ २ ॥ तिमिरहर सुख करण प्रगट्यो, तरण मागध मधुर धुनी, पढत गुणछंदा ॥ जा० ॥ ३ ॥ जायो मात मरुदेवी अलिअत तुम भावना, खेले उछंग ज्युं होत आनंदा ॥ जा० ॥ ४ ॥ विमलगिरि मंडन दुःखविहंडन, कवि महिमराज के काटि दुःखफंदा ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नव कारज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधर मां जल जाणुं ॥ पंखीमांहि जिम उत्तम हंस, कुल मांहि जिम रुषभनो वंश, नाभि तणो जे अंश ॥ क्ष मावंतमांहि जिम अरिहंता, तपशूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्म प्रभ सुख कंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि, शीतल श्रे यांस सेवो बहुबुद्धि, वासुपूज्य मति शुद्धि ॥ विम ल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनि सुव्रत शुद्ध पंथि ॥ नमी पासने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथें बोले, स्वामी शत्रुंजय गिरि कोण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषभ कहे सुणो भरत राय, छहरी पालता जे नर जाय, पातक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इणगिरि आवे, भव त्रीजे ते सिद्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहि आण्यो, सुणतां सुख उर आण्यो ॥३॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरति ठावे ॥ नाभिराया मरु देवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बे हिन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुख ने चक्के

सरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ ऊपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरि प्रणमी पाया, ऋषभदास गुण गाया ॥ ४ ॥

॥ अथ सिद्धगिरिराज स्तवनं ॥

॥ गिरिराजकुं सदा मेरी वंदना, जिनको दर्शन दूर्लभ देखी, कीधी कर्म निकंदना रे ॥ गिरि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ विषय कषाय ताप उपशमीयो, जिम मले बावन चंदना रे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ धन धन ते दिन कबही रे होशे, थाशे तुम मुख दर्शना रे ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ तिहां विशाल भाव पण होवे, जिहां तुज पदकज फरसना रे ॥ गिरि० ॥ ४ ॥ वली वली दरिसन वेहेलुं लहीयें, एह विरह नित भावना रे ॥ गिरि० ॥ ५ ॥ चित्त मांहेथी कबहू न विसारूं, तुम गुण गणनी ध्यावना रे ॥ गिरि० ॥ ६ ॥ भव भव एहिज चित्तमां चाहुं, मेरे-ओर नही विचारणा रे ॥ गिरि० ॥ ७ ॥ चित्त रमे दिन मावतनी परें, बहोरी न होय उत्तारणा रे ॥ गिरि० ॥ ८ ॥ ज्ञानविमल प्रभु पूरण कृपाथी, सुश्रेणिक बोध सुवासना रे ॥ गिरि० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणरागनुं पद ॥

॥ ओरनसुं रंग न्यारा न्यारा, तुमशुं रंग करारी हे ॥ तुं मनमोहन नाथ हमारा, अब तो प्रीति तुमारी हे ॥ ओ० ॥ १ ॥ योगी होय के कान फडाये, मोटी मुद्रा मारी हे ॥ गोरख कहे तृष्णा नहिं मारी, घर घर भमत भिखारी हे ॥ ओ० ॥ २ ॥ जंगम आवे

नाद बजावे, आछे तान मिलावे हे ॥ सबका राम स
रिखा नही बूझ्या, काहेकूं भेख लजावे हे ॥ उ०॥३॥
जती हुआ इंद्री नहिं जीती, पंचभूत नहिं लीना हे ॥
जीव अजीवकूं बूझ्या नांही, भेख लेहीकें हीना
हे ॥ उ० ॥ ४ ॥ वेद पढ्या ब्राह्मण कहलावे, ब्र
ह्मदशा नहिं पाया हे ॥ आत्मतत्त्वको अर्थ न जा
न्यो, फोकट जन्म गुमाया हे ॥ उ० ॥ ५ ॥ जंगल
जाये भस्म चढाये, जटा वधारी केशा हे ॥ परभव
की आशा नहिं मारी, फिरि जैसा का तैसा हे ॥ उ०
॥ ६ ॥ काजी किताब खोल कर बैठा, क्या किताब
में देख्या हे ॥ बकरीके गले छूरी चलावे, क्या देवें
गा लेखा हे ॥ उ० ॥ ७ ॥ जिने कंचनका महेल ब
नाया, उनकुं पीतल कैसा हे ॥ झाख्या गलेमें हार हीरे
का, सब जुग काच सरीसा हे ॥ उ०॥८॥ रूपचंद रंग
मगन भया हे, नाथनिरंजन प्यारा है ॥ जन्म मरनका
डर नहिं याकूं, चरण शरण तीहारा है ॥ उ० ॥९॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ विवेकी विमलाचल वसीयें, तप जप करी का
या कसीयें, खोटी मायाथी खसीयें ॥ वि० ॥ वसी
उनमारगथी खसीयें ॥ वि० ॥ १ ॥ माया मोहनी
यें मोह्यो, कोण राखे रणमां रोयो ॥ आ नरभव ए
लें खोयो ॥ वि० ॥ २ ॥ बाललीलायें हुलरायो,
जोवन युवतीयें गायो, तोहे तृप्ति नवि पायो ॥
वि० ॥ ३ ॥ रमणी गीत विषय राच्यो, मोहनी

मदिरायें माच्यो, नव नव वेश करी नाच्यो ॥ वि० ॥ ४ ॥ आगमवाणी समी आशी, नवजलधि मांहि वासी, रोहित मत्स्य समो थाशी ॥ वि० ॥ ५ ॥ मोहनी जालने संहारे, आप कुटुंब सकल तारे, वरण वीयें ते संसारें ॥ वि० ॥ ६ ॥ संसारें कूडी माया, पंथशिरें पंथी आया ॥ मृग तृष्णा जलने धाया ॥ वि० ॥ ७ ॥ नवदव ताप लही आया, पांमव परिकर मुनिराया, शीतल सिद्धाचल गाया ॥ वि० ॥ ८ ॥ गुरु उपदेश सुणी नावें, संघ देशो देश थी आवे, गिरिवर देखी गुण गावे ॥ वि० ॥ ९ ॥ संवत अढार चोराशीयें, माघ उज्ज्वल एकादशीयें, वांद्या प्रनुजी विमल वसीयें ॥ वि० ॥ १० ॥ जात्रा नवाणुं अमें करीयें, नव नव पातिकडां हरियें, तीर्थ विना कहो किम तरीयें ॥ वि० ॥ ११ ॥ हंस मयूरा इणे ठांमें, चकवा शुक पिक परिणामें, दर्शने देवगति पामे ॥ वि० ॥ १२ ॥ शेत्रुंजी नदियें नाइ, कष्टें सुर सानिधदायी, पणसय चाप गुहा गाइ ॥ ॥ वि० ॥ १३ ॥ रयणमय पडिमा पूजे, तेनां पातिकडां धूजे, ते नर सीझे नवे त्रीजे ॥ वि० ॥ १४ ॥ सासय गिरि रायण पगलां, चउमुख आदें चैत्य नलां, श्रीशुन वीर नमे सघलां ॥ वि० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ पद राग पंजाबी ॥

॥ खतरा दूर करनां दूर करनां, एक ध्यान साहेबका धरनां ॥ खतरा० ॥ १ ॥ जब लग आतम निर्मल करनां,

तब लग जिन अनुसरनां ॥ खतरा० ॥ २ ॥ धन कण कंचनकूं क्या करनां, आखर एक दिन मरनां ॥ खतरा० ॥ ३ ॥ मोह मिथ्यात माहा मद हरनां, सुमति गुपति चित्त धरनां ॥ खतरा० ॥ ४ ॥ संवर जाव सदा मन धरनां, आतम दुर्गति हरनां ॥ खतरा० ॥ ॥ ५ ॥ ग्यान उद्योत प्रनु पाये परनां, शिव सुखकूं अनुसरनां ॥ खतरा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रनातियुं ॥

॥ वाणी हे विशाल, तेरी अगम अगोचरी ॥ दशमे द्वार ऐसे, ॐकारध्वनि उच्चरी ॥ वा० ॥ १ ॥ शब्द एक अनेक अर्थ, बूझत हे अक्षरी ॥ चउदराज लोकमांहि, धौरधार विस्तरी ॥ वा० ॥ २ ॥ नगर मध्यें नदी वहे, नरी लीयो जल गगरी ॥ मत मतांतर ऐसे नये, एक अंग अनुसरी ॥ वा० ॥ ३ ॥ बीज तैसो वृक्ष नयो, बरखा बरखत जुरी ॥ रूपचंद आतम बुद्धि, तैमी समजण परी ॥ वा० ॥ ४ ॥

॥ अथ शत्रुंजय पद ॥

॥ में नेट्या नाजिकुमार, अखीआं सफल नइ ॥ में नेट्या० ॥ नेंना सफल नइ ॥ में नेट्या० ॥ ए आंकणी ॥ तीरथ जगमां छे घणां रे, तेहमां ए छे सार ॥ शेत्रुंजा सम तीरथ नही रे, तुरत तरत नवपार ॥ अखीयां० ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवारिया रे, तीन जुवन तुं सार ॥ सोवन वरणी देह छे रे, वृषन लांछन मनोहार ॥ अखीयां० ॥ २ ॥ सोरठ मंमण तुं

प्रज्ञु रे, सकल करम करे दूर ॥ केवल लखमी पाम
वा रे, वंबित लीला पूर ॥ अखीयां० ॥ ३ ॥ गिरि
वर फरस्यो जावशुं रे, सफल कीयो अवतार ॥ श्री
जिनहरख पसायथी रे, संघ सदा सुखकार ॥ अ
खीयां० ॥ ४ ॥ घणा दिवसनी चाह हती रे, देख
न प्रज्ञु दीदार ॥ रत्नसुंदर पाठक कहे रे, अविचल
लील अपार ॥ अखीयां० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांतिकरण प्रज्ञु शांतिजिनेश्वर, शांतिकरण इ
न कुलमें हो जिनजी, तुं मेरे मनमें, तुं मेरे दिलमें ॥
ध्यान धरुं पलपलमें हो जिनजी ॥ तुं० ॥ १ ॥
तुं० ॥ निर्मल ज्योति वदनपर शोजत, निकस्यो ज्युं
चंद बादलमें ॥ हो जि०॥तुं०॥ जिनरंग कहे प्रज्ञु शांति
जिनेश्वर, देख्योज्युं देव खलकमें हो ॥ जिन०॥तुं०॥२॥

॥ अथ श्रीसमेतशिखरनुं स्तवन ॥

॥ शिखरजीकी जात्रा क्युं न करे ॥ जाके बंधे
करमकी रेख ॥शिखर० ॥ १ ॥ पालगंजमें सफल हो
त हे, मधुवन पाप टरे ॥ सीतानाल अनोपम सोहे,
निर्मल नीर जरे ॥ शिखर०॥ २ ॥ वीश टुक पर वी
श जिनेसर, मुनिजन ध्यान धरे ॥ कर्म खपावी मु
गतिकुं पोहोंचे,शिव रमणीकूं वरे ॥ शिखर० ॥ ३ ॥
इंद्रादिक सुर नृत्य करत हे, नाना जाव धरे ॥ इंद्रा
णी मिली मंगल गावे, मोतीना थाल जरे ॥ शिख
र० ॥ ४ ॥ मन वच तन करी प्रज्ञुजीकूं ध्यावे, डुर्ग

ति दूर हरे ॥ लक्ष्मी रेन जो जात्रा करियें, ताके काज सरे ॥ शिखर० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ तुमहीं जाके अब खेलावो, राउके रीत चलावो रे ॥ तु० ॥ हम जोगीसर जे तप साधे, ते तुम नेद न जानो रे ॥ तु० ॥१॥ सुण रे कमठ तुं महा तप साधे, तपको नेद न जान्यो रे ॥ तन तापे मन तापे नांहीं, कहा तापे अज्ञानो रे ॥तु०॥२॥ पन्नग काहे कूं अग्नि जलावे, हित चित्त दया न आवे रे ॥ पासप्रनु नवकार सुणावे, धरणीधर पद पावे रे ॥तु०॥३॥

॥ अथ स्तवनं ॥ राग कल्याण ॥

॥ ऐसे शेहेर बिच कोन दिवान हे रे ॥ ऐसे०॥ ॥ पानीके कोट पवनके कंगरे, दश दरवाजेको मंमान हे रे ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ इसनगरीमें त्रेवीश तस्कर, नगरीकूं करत हेरान हे रे ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजापोकार सुनी तब जाग्यो, चेतन राय सुजान हे रे ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ नाथ निरंजन नक्ति तेरी, हाथमें ज्ञान कबान हे रे ॥ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे तेहने वारो, पेलो डुशमन मान गुमान हे रे ॥ ऐसे० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन आमलक्रीडानुं स्तवन ॥

॥ राग प्रनाती ॥ तथा वेलावल ॥ आदि अंत जानुं नही, तुम हो अविनाशी ॥ रामत आमली पीपली, खेल करे विलासी ॥ आदि० ॥ १ ॥ इंद्र सनामें बेठकें, मुख युं जस बोले ॥ तीन नुवनमें को नही,

प्रभु धीरज तोले ॥ आदि० ॥ २ ॥ वात न मानत देव एक,सर्प को वेश बनावे ॥ प्रभु पकरकें मार दे, चित्त नांहीं मरावे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ बालक होइ प्रभुशुं रमे, हास्यो खंध चढावे ॥ बीभत्स होइकें बढयो, गगनें लेइ जावे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ हसत दयालु देख कें, मुख युं जस कहावे ॥ धन्य धन्य महा वीरजी, रूपचंद मन भावे ॥ आदि० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ऋषभजिन स्तवनं ॥ राग भैरव ॥

॥ उठत प्रभात नाम, जिनजीको गाइयें ॥उठ० ॥ नाभिजीके नंदके, चरण चित्त लाइयें ॥ उ० ॥ १ ॥ आनंदके कंद, जाकुं पूजत सुरिंद वृंद, एसो जिनरा ज छोड, उरकुं न ध्याइयें ॥ उठ० ॥ २ ॥ जनम अयोध्या ठाम, मात मरूदेवा नाम, लंछन वृषभ जाके, चरण सोहाइयें ॥ उठ० ॥ ३ ॥ पांचशें धनु षमान, दीपत कनक वान, चोराशी पूरव लाख, आ यु स्थिति पाइयें ॥ उठ० ॥ ४ ॥ आदिनाथ आदि देव, सुर नरहि सारे सेव, देवनको देव प्रभु, शुभ सु ख दाइयें ॥ उठ० ॥ ५ ॥ प्रभुको पादारविंद, पूजत हरखचंद, मेटो दुःखदंद सुख संपद बढाइयें ॥ ६ ॥

॥ अथ पद ॥ राग विभास ॥

॥ प्रभुजीको दरिसन पायोरी, आज में ॥ प्रभु० ॥ वंछित पूरण पास चिंतामणि, देखत दुरित गमायो री ॥ आज में० ॥ १ ॥ मोहनी मूरत महिमा साग र, तीरथ सब जग छायो री ॥ आ० ॥ भानचंद प्रभु

सकल संघकूं, जय जयकार कहायो री ॥ श्रा० ॥ ३॥

॥ अथ पार्श्वनाथ गीतं ॥ राग काफी ॥

॥ को न गमे चित्त को न गमे, प्रभु पासजी विना चित्त को न गमे ॥ परम निरंजन देवने मूकी, दूषण सहितने कोण गमे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सुंदर खटरस भोजन छांमी, कुत्सित अशनने कोण जमे ॥ ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ जे तुऊ आण विहूणा मानव, मोह नृपतिने केम दमे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ जे तुऊ पद पंकजनें न सेवे, तेह अनंत संसार भमे ॥ प्रभु० ॥ ॥ ४ ॥ जे तुऊ पूजे भाव धरी तस, भव भव संचित डुरित शमे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ करुणा सागर तुऊ विण दूजो, मुऊ अपराधने कोण खमे ॥ प्रभु० ॥ ॥ ६ ॥ ध्याने ध्यावे जे कोइ तुऊने, अमृत पदमां ते रंगें रमे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ नां करीयें रे नेडो नां करीयें, निगुणाशुं रे नेडो नां करियें ॥ अमें रोइ रोइ आंखडीमां नीर भरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ प्रेम निरवहि वाल्हा प्रेमी जननो, अविचार्युं नवि मग भरीयें जी ॥ ॥ निगुणा० ॥ १ ॥ जादव जान सजीने यडुपति, तोरण आवीने केम फरियें जी ॥ निगुणा० ॥ २ ॥ संयम नारी वाल्हे कीधी प्यारी, राजुल मूकी भर दरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ३ ॥ अम अबलानी सा हामुं निरखो, विरह जलधिथी केम तरीयें जी ॥

॥ निगुणा० ॥ ४ ॥ यौवन वय केम करी निर्गमियें, लोकलाजथी घणुं करियें जी ॥ निगुणा० ॥ ५ ॥ दिलरंजन प्रभु दीलमां धरीयें, निशदिन अवटाई मरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ६ ॥ चतुर थइ अवसर शुं चूको, अमृतसुख रंगें वरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ७ ॥

॥ अथ धर्मजिननुं स्तवन ॥

॥ इम करीयें रें नेहो इम करीयें रे, सुगुणाशुं नेहो इम करीयें ॥ हांरे चित्त अटक्युं प्रभुनी चाकरीयें, जिम भवसायर सुखथी तरियें रे ॥ जिनजीशुं नेहो इम करीयें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकने मूकी बेने खंभी, त्रणनो संग ते परिहरियें रे ॥ सु० ॥ चार जणा शिर चोट करीने, पांचनी सेवा अनुसरीयें रे ॥ सु० ॥ २ ॥ छ सतं अठ नव दशने ठंभी, एकादश दिलमां धरीयें रे ॥ सु० ॥ बारनो आदर करीयें अहोनिश, तेरथी मनमां घणुं करियें रे ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ पांच आठ नव दश तेरने, बांधी नाखीयें भर दरीयें रे ॥ सु० ॥ सत्यावीशनो संग करीने, पच्चवीशनी प्रीतें ठरीयें रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ बत्रीश तेत्रीश चोराशी भंगणीश, टाली चारथी नवि फरीएं रे ॥ ॥ सु० ॥ सुडतालीशथी दूरें रहीयें, एकावन मनमां भरीयें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ वीशने सेवी बावीश बांधी, त्रेवीशथी निशदिन लरीयें रे ॥ सु० ॥ धर्म प्रभुशुं स्नेह करंतां, अमृत सुख रंगें वरीयें रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

॥ अथ मन भमरानी वैराग्य सद्याय ॥

॥ भूलो मन भमरा कांइ भमे, भमे दिवसने रात ॥ मायानो बांध्यो प्राणीयो भमे परिमल जात । भू० ॥ ॥ १ ॥ कुंभ काचो काया कारमी, तेहनां करो रे जतन्न ॥ विणसंतां वार लागे नहीं, निर्मल राखो रे मन्न ॥ भू० ॥ २ ॥ कोनां छोरू कोनां वाछरू, कोनां माय ने बाप ॥ प्राणी जावुं छे एकलुं, साथें पुण्य ने पाप ॥ भू० ॥ ३ ॥ अशा ते डुंगर जेवडी, मरवुं पगलां रे हेठ ॥ धन संची संची कां मरो, करवी देवनी वेठ ॥ भू० ॥ ४ ॥ धंधो करी धन जोडीयुं, लाखा उपर क्रोड ॥ मरणनी वेला मानवी, लीयो कणदोरो छोड ॥ भू० ॥ ५ ॥ मूरख कहे धन माहरुं, धोखें धान्य न खाय ॥ वस्त्र विना जइ पोढशे, लखपति लाकडा मांय ॥ भू० ॥ ६ ॥ भवसागर दुःख जल भर्यो, तरवो छे रे तेह ॥ विचमां भय सबलो अछे, कर्म वायने मेह ॥ भू० ॥ ७ ॥ लखपति छत्र पति सब गये, गये लाख बे लाख ॥ गर्व करी गोखें बेसतां, भये जली बली राख ॥ भू० ॥ ८ ॥ धमण धूखंती रे रहि गई, बुज गइ लाल अंगार ॥ एरणको छबको मिट्यो, उठ चल्यो रे लुहार ॥ भू० ॥ ए ॥ ऊवट मारग नदी चालतां, जावुं पहेले रे पार ॥ आगल नहि हट वाणीयो, संबल लेजो रे सार ॥ ॥ भू० ॥ १० ॥ परदेशी परदेशमें, कोणशुं करो रे सनेह ॥ आया कागल उठ चल्या, न गणे आंधी ने

मेह ॥ जू० ॥ ११ ॥ केइ चाल्या रे केइ चालशे, केइ चालण हार ॥ केइ बेग बूढा बापडा, जाए नरक मझार ॥ जू० ॥ १२ ॥ जिण घर नोबत वाजती, हुता छत्रीशे राग ॥ ते मंदिर खाली पड्यां, बेठण लागा छे काग ॥ जू० ॥ १३ ॥ जमरो आव्यो रे कम लमां, लेवा कमलनुं फूल ॥ कमलनी वांछायें मांहे रह्यो, जेम आथमते सूर ॥ जू० ॥ १४ ॥ महमद कहे वस्तु वोरियें, जे कोइ आवे रे साथ ॥ आपणो लाज उगारीयें, लेखुं साहिब हाथ ॥ जू० ॥ १५ ॥

॥ अथ अरिहंत स्तुति प्रारंजः ॥

॥ श्री अरिहंत नमीजें. चतुरनर ! श्री अरिहंत नमीजें ॥ ए आंकणी ॥ बारस गुणशोजित जगमो हित, सुर नर नमित कहीजें ॥ अतिशय चार प्रथ म वली आठे, प्रातिहार जस लहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ १॥ चार सहज एकादश खायिक, उगणी श दैव्य ग्रहीजें ॥ उत्तर अतिशय चोत्रीश पांत्रीश, वाणी समीप रहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ २ ॥ तीर्थंक र पद जोगी सयोगी, गुणगणे प्रणमीजें ॥ जावस्व रूप रमण अनिलाष्यो, तेहनी आण वहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इत्यर्हतां स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ अतींद्रिय स्वरूपसिद्धस्तुति प्रारंजः ॥

॥ परमेष्ठी आराधी सुगुणिजन ! परमेष्ठी आरा धी ॥ शिव अविचल अरु जानत पदवी, अक्षय अ व्याबाधी ॥ अपुनर्जव सिद्धि गति सुख पूरण, गण

संपत्ति अबाधी ॥ सुगु० ॥ पर० ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान वीरिय सुख संपद, अनंत चतुष्ट निरुपाधि ॥ तस नावादि निखेप नजनथी, थाए स्वरूप समाधि ॥ सुगु०॥ पर०॥२॥ इत्यतींद्रिय स्वरूपस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ आचार्योपाध्यायाऽनगाराणां ॥

॥ युगपत्स्तुति प्रारंभः ॥

॥ आचारिज पदसेवा, चहत मन! आचारिज पदसेवा ॥ सुरपति सेवित त्रिपदी अभ्यासें, शीश धरे वासखेवा ॥ तीर्थंकर देवनंद विराजित गणधर देशना देवा ॥ च० ॥ आ० ॥ १ ॥ अंग द्वादश चउदश पूरव, मुहूर्त्तमांहे करेवा ॥ उपगारी उवझाय मुनिने, अंग उपांग धरेवा ॥ च० ॥ आ० ॥ २ ॥ निजगुण अधिक उपासक चारो, सिद्धि अनीह कहेवा ॥ नाव स्वरूपचंद जिम उल्लसे, सिद्धिरमण सुख मेवा ॥ च० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आतमगुण स्तवन प्रारंभः ॥

॥ आतमगुण अभिलाख्यो, अनुनवी! आतमगुण अभिलाख्यो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तपोगुण, वीरज उपयोग दाख्यो ॥ पुज्जल गंधादिकथी अलगो, श्री जिनराजें नांख्यो ॥ अनुनवी० ॥ आ० ॥ १ ॥ तेहनुं लक्षण मूलचेतनता, पुज्जल जड गुण आख्यो ॥ जिनमत शुद्धस्वरूप उल्लासें, स्वगुण रमण रस चाख्यो ॥ अनुनवी० ॥ आ०॥२॥इत्यात्मगुणस्तुतिः ॥

॥ अथ सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंनः ॥
॥ रातडीआ रमीने रे किहां थकी आविया ॥
॥ रे ॥ ए देशी छे ॥

॥मुऊ मन नमरो प्रनुगुण फूलडे रे ॥ रमण करे दिनरात रे ॥ सुणजो स्वामि सुपास सोहामणा रे ॥ कर जोडी कहुं वात रे ॥ १ ॥ मनडुं ते चाहे रे, प्रनु मलवा नणी रे, पण दीसे छे अंतराय रे ॥ जीव प्रमादी रे कर्म तणे वशें रे, ते केम मलवुं थाय रे ॥ म० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीवा योनिमां रे, नव अटवी गति चार रे ॥ काल अनादि अनंत नमतां थकां रे, किमही न आवे पार रे ॥ म० ॥ ३ ॥ मारग बतावो रे साहेब माहेरा रे, जेम आवुं तुम पाय रे ॥ लाज वधारो रे सेवक जाणीने रे, द्यो दरिसण जिनराय रे ॥ म०॥ ४ ॥ मूर्ति ताहारी रूपें रूअडी रे; अनुनवपद दातार रे ॥ नित्यलान प्रनु शुं प्रेमें वीनवे रे, तुमथी लहुं सुखसार रे ॥ म०॥ ५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥
॥ रायजी अमें तो हिंडुवाणी के, राज गराशी ॥
॥ या रे लो के ॥ ए देशी छे ॥

॥ जिनजी गोडीमंमण पास के, विनति सांनलो रे लो ॥ जिनजी अरज करुं सुविलास के, मूकी आमलो रे लो ॥ जिनजी तुम दर्शनने काज के, जीवडो टलवले रे लो ॥ जिनजी महेर करो माहाराज के, आशा सवि फले रे लो ॥ १ ॥ जिनजी मननमरो

लळचाय के, प्रजुनी उलगें रे लो॥ जिनजी जेम ते म मेलो थाय के, ते करजो वगें रे लो॥ जिनजी दूरथ कां पण नेह कें, साचो मानजो रे लो॥ जिनजी तुम थी लहुं गुणगेह के, अमृत पानजो रे लो॥२॥ जिनजी प्रजुशुं बांध्यो प्रेम के, ते केम वीसरे रे लो॥ जिनजी बीजे जावा नियम के, प्रजुथी दिल वरे रे लो॥ जिनजी जोतां ताहारुं रूप के, अनुजव सांज रे रे लो॥ जिनजी ताहरी ज्योति अनूप के, चिंता दुःख हरे रे लो॥३॥ जिनजी एहुं जोजन खाय, मिठाइनी लालचें रे लो॥ जिनजी आतमने हित थाय के, प्रजु ना गुण रुचे रे लो॥ जिनजी कर्म तणां बल जोर के, तेहथी तारियें रे लो॥ जिनजी समकेतना जे चो र के, तेहने वारियें रे लो॥४॥ जिनजी निज सेव क जाणीने, मुक्ति बतावीयें रे लो॥ जिनजी करुणा रस आणीने, मनमां लावीयें रे लो॥ जिनजी वाच क सहज सुंदरनो, सेवक एम कहे रे लो॥ जिनजी पंमित श्रीनित्यलाज के, प्रजुथी सुख लहे रे॥५॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिनस्तवनं ॥

॥ रंगीले आतमा॥ ए देशी॥ सहेर बडा संसा रका, दरवाजे जसु चार॥ रंगिले आतमा॥ चोराशी लख घर वसे, अति महोटे विस्तार॥ रं०॥१॥ घरघरमें नाटक बने, मोह नचावण हार॥ रं०॥ वेश बने केई जांतके, देखत देखनहार॥ रं०॥ ॥२॥ चउद राजके चोकमें, नाटक विविध प्रकार॥

रं० ॥ नमरी देइ देइ करती थेई, फिर फिर ए अधि कार ॥ रं० ॥ ३ ॥ नाचत नाद अनादिको, हुं नाच्यो निरधार ॥ रं० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो, आनंदके आधार ॥ रंगी० ॥ ४ ॥ इति श्रेयांसजिन स्तवनं ॥

॥ अथ उपदेश पद ॥

॥ में हुं मुसाफर आया हो प्यारा, नहिं कोइ मेरा ॥ नहिं० ॥ जनम हुवा तब अपना कहावे, नहिं रहेणेंका मेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ १ ॥ स ज्जन कुटुंब सब अपना कहावे, ज्युं तीरथका मेला हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ २ ॥ धन कंचन कबु स्थिर नहिं रेणां, ज्युं वादलका घेरा हो प्यारा ॥नहिं० ॥ ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे प्रेमकी बातां, ज्युं घानीका फेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रनाती रागमां पद ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घडि घडिनां घडियालां वागे, तोय न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फे लावी फजेती रे ॥ आवी अवधें उनशे जाशे, लख पतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २॥ माले बेगो मोज करे छे, खांतें जूवे खेती रे ॥ जमरो नमरो ताणी लेशे, गोफण गोलासेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जम राजाने शरणे जावुं, जोरालो कोइ जेहथी रे ॥ दुनियां दूजो दीसे नांहिं, आखर तरशो तेहथी रे ॥ जो०॥ ४ ॥ दां त पड्याने मोसो थयो, काज न सर्युं कहेथी रे ॥ उदय

रत्न कहे आपें समजो, कहियें वातो केती रे ॥ज०॥५॥

॥ अथ शांतिनाथ स्तवन प्रारंजः ॥

॥ शांति जिणंद सुखकारी, सकलजन ! शांति जिणंद सुखकारी ॥ स्वस्तिश्री ऋद्धि वृद्धि जयंकर, मंगलाभ्युदयविहारी ॥ स० ॥ शां० ॥ १ ॥ सुरपूजित गढ तीन मनोहर, प्रातिहारज सहचारी ॥ वृक्ष अशोक परम मुददाता, कुसुमवृष्टि वरधारी ॥ स० ॥ ॥ शां० ॥ २ ॥ दिव्यध्वनि चउविध वाजित्रसुर, यो जनमान उदारी ॥ चिहुं दिशि चमर छत्र त्रिहु शोजित, सिंहासन पदसारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ३ ॥ जामंमल रवि कोटि विजंता, डुंडुजिध्वनि बलिहारी ॥ ऐसी सजामें श्री जिनसेवा, स्वरूपचंद मन प्यारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ४ ॥ इति श्री शांतिनाथ स्तवनम् ॥

॥ अथ सीमंधर स्तवन प्रारंजः ॥

॥ चित्तडुं संदेशो मोकले, महारा वाल्हा जीरे ॥ मनडा साथें रे नेह, जइने कहेजो महारा स्वामी जीरे ॥ सीमंधर नित्य हुं जपुं, महारा स्वामी जीरे ॥ जेम बापईयो रे मेह ॥ ज० ॥ म० ॥ १ ॥ दूर देशांतर जइ रह्या ॥ म० ॥ माया लगाडीने हेव ॥ ॥ ज० ॥ म० ॥ पांखडी जो महारे होवे ॥ म० ॥ कन्नी आवुं ततखेव ॥ ज० ॥ म० ॥ २ ॥ प्रीत ते अधिकी होइ गई ॥ म० ॥ हवे केम छांमी रे जाय ॥ ज० ॥ म० ॥ उत्तम जनशुं प्रीतडी ॥ म० ॥ कदीय न उंछी रे थाय ॥ ज० ॥ म० ॥ ३ ॥ निःस्नेही

तुम सारिखा ॥म०॥ मेंतो कोई न दीठ ॥ज०॥म०॥ हइडामां चाहे नहिं ॥ म० ॥ मोढे बोले ते मीठ ॥ ज० ॥ म० ॥ ४ ॥ आशा तो तुम उपरें ॥ म० ॥ मेरु समान में कीध ॥ ज० ॥ म० ॥ जो हुए एक कृपा करो ॥ म० ॥ तो सहु होवे रें सिद्ध ॥ ज० ॥ ॥ म० ॥ ५ ॥ जे अक्षय सुख शाश्वतां ॥ म० ॥ जे सहु चाहे रे लोक ॥ ज० ॥ म० ॥ नहिं आपो माग्युं थकुं ॥ म० ॥ जाणपणुं सहु फोक ॥ ज० ॥ ॥ म० ॥ ६ ॥ घणुं शुं कहियें जाणने ॥ म० ॥ देजो स्वामीरे सेव ॥ ज० ॥ म० ॥ कवि ते रूप प सायथी ॥ म०॥ ऋद्धि कहे नित्यमेव ॥ ज०॥ म०॥ ७॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति जिणंद भजो सदा, भवियण बहु भावें ॥ जगत शिरोमणि जेहना, गुण ज्ञानी गावे ॥ शां० ॥ ॥ १ ॥ दूषण कांई न देखियें, मूरती अतिसारी ॥ मोहनगारी मुझ मनें, प्रभु लागे प्यारी ॥ शां० ॥ ॥ २ ॥ गर्भथकां पण गजपुरें, करुणा जिणे कीधी ॥ जनम समय त्रण जगतमें, दील शाता दीधी ॥ शां० ॥ ॥ ३ ॥ नाम जपे मुख निरखीनें, होए खुशियाली ॥ मंगलमाला मंदिरें, दिन दिन दीवाली ॥ शां०॥ ४ ॥ समकितधारी समझीनें, साचे दिल सेवे ॥ कहे ला वण्य कृपा करी, बहु दोलत घर देवे ॥ शां० ॥ ५ ॥

॥ अथ बालचंद बत्रीशी प्रारंभः ॥

॥ कवित ॥ अजर अमर पद परमेसरकों ध्याइ

यें ॥ सकल पातिक दूर विमल केवल धर, जाको वासो शिवपुर तासुं लय लाइयें ॥ नाद बिंद रूप रंग पाणि पाद उत्तमंग, आदि अंत मध्यलंग जाकूं नाहिं पाइयें ॥ संग्रेण संगाण जाण, नहिं कोई अनु मान, ताहींको करत ध्यान शिवपुर जाइयें ॥ लणे मुनि बालचंद सुनो हो लविक वृंद, अजर अमर पद परमेसरकों ध्याइयें ॥ १ ॥ एक अरिहंत देव देव करि जानियें ॥ जाकों क्रोध नाहिं मूर मान माया लोल दूर, कर्म किये चकचूर जिने मोह नाशियें ॥ जाकों नमे इंद चंद सुरनर मुनि वृंद, अनंत गुणहिं जि णंद त्रिलुवन मानियें ॥ जाकों हे अनंत ज्ञान देत हे सुगति दान, अहोनिश ताको ध्यान मनमांहि आ नियें ॥ लणे मुनि० ॥ एक० ॥ २ ॥ तरन तारन गुरु तारे लव पार ए ॥ पांचे इंडी संवरत नव विधि ब्रह्मव्रत, धरत तजत नित क्रोधादिक चा र ए ॥ महाव्रत पंच धार पाले हे पंच आचा र, सुमति गूपति सार, माता जयकार ए ॥ एसे गुने गुरु होय खट काय पाले जोय, गोतम उप म सोय सुगति दातार ए ॥ लणे० ॥ तरन० ॥ ३ ॥ जग एक जीव दया धर्म सुख दाइए ॥ धर्महिंतें ऋद्धि वृद्धि धर्महितें नवनिद्धि, धर्मतें सकल सिद्धि बहु जीव पाइएं ॥ धर्महितें देव लोक धर्महिंतें सब थोक, यह लोक परलोक धर महो सखाइएं ॥ ताकूं नमे सुरवर नरवर बहू पर,

धर्महिंसुं जेण नर एक लय लाइएं ॥ नणे० ॥ जग०॥ ४ ॥ उठ उठ धर्म कर सोवे मूढ कहा रे ॥ डुस्तर सागर तर कोइ तट पाय कर, सोवे तिहां निंद नर फिरि आवे उहां रे ॥ संसार सागरमांहिं जाको आदि अंत नांहिं, भ्रमत भ्रम ताहिं पुदगल जिहां रे ॥ कांगो हे मानव नव नीठ मूढ पायो अब, सोवे मति खीन लव चेत चेत इहां रे ॥ नणे० ॥ उठ० ॥ ५ ॥ सुरतरु काट कर आक वावे तेह रे ॥ चिंतामणि पाय कर मूढ ताकुं परहर, काच ग्रहे रंगनर तासों करे नह रे ॥ गजपति वेच कर सो तो मूढ लेत खर, पावे नहिं फेर फेर मुह परें खेह रे ॥ महामूढ होत सोथं काम नोग रक्त होय, हारे हे रतन जोय मनुष्यको देह रे ॥ नणे० ॥ सुरतरु० ॥ ६ ॥ उत्तमको संग कर नीच संग टालकें ॥ देखो हो सागर संग खारी-होत महा गंग, निंब ज्युं चंदन संग चंदन ज्युं नालकें ॥ जातें खीर होत नीर ताकुं मिले जसु वीर, सोनी बेठ जात खीर निजगुण गालकें ॥ पात्र बिन तारे वार टाले रक्तको विकार, तुंब नेद नये चार निन्न संग चालकें ॥ नणे० ॥ उत्तमको० ॥ ७ ॥ घडी घडी मूढ तेरो आयुजल जाइयें ॥ कारमो कुटंब एह, काहेकुं करत नेह, हारे हे मनुष्यदेह फेर कहां पाइयें ॥ माय ताय घर बार बेटा बहू परीवार, आवे नहिं तोरी लार, जासों मन लाइयें ॥ एक मेरी सीख सुन धर्म कर एक मन मानव नव रतन काये

कों गमाइयें ॥ नणे० ॥ घडी० ॥ ७ ॥ उनमत कह्ा नयो करे क्युं न ग्यान रे ॥ उपनो तुं गर्न्नवास बसियो सवा नवमास, नर्ककी उपम जास डुःख अ हिगाण रे ॥ उंठ कोडी सोइ होम चांपे कोइ रोम रोम, आठ गुणो प्रतिलोम गर्न्न डुःख जाण रे ॥ अ ब तुं जनम पाय संसारको लागो वाय, फेर रह्यो क्यों लुनाय तुं तो हे अग्यान रे ॥ नणे० ॥ उन मत० ॥ ए ॥ जरा कूर जब लगें तब लगे जग रे॥ जरा जब आय लग लाल पर्फ मुख मग, दंत गये सबे नग मग मग पग रे ॥ जरा आइ गइ बुद्धि रही नही कछु शुद्धि, रोग लगे वीध वीध जरा पडो धीग रे ॥ कह्यो कोइ माने नाहिं डुःख धरे मनमांहि, यौ वनको दीस जाहि उठी धर्म लग रे ॥ नणे० ॥ जरा० ॥१०॥यमको विसास नांहिं मूढ तुं संनाल रे ॥ काइ नू लो देख नाल चेते क्यों न प्रानी लाल, गहेगो डुर्ज न काल बालही गोपाल रे ॥ सरग पाताल जाय औषध नेषध खाय, करे बहूही उपाय तोही ग्रहे काल रे ॥ घटत घटत जात पल घडी दिनरात, आ उखो गलत न्रात करत जंजाल रे ॥ नणे० ॥ यम० ॥ ११ ॥ संसार असार तामें सार एक धर्म रे ॥ सं सार असार एह दीसत प्रनात जेह, सांज समे नां हीं तेह कांहिं पड्यो नर्मरे॥ मेरो मेरो कांहिं करे सगो नांहिं कोइ तेरे, जीवही एकीलो फिरे नुंजे नीज कर्म रे ॥ संसारसागर घोर नम्यो जीव ठोर ठोर, कोइ

होत एक ठोर कबु नांहिं शर्म रे ॥ नणे० ॥ संसार० ॥१२॥ आपसम राखो प्राणीहिंसा दूर टालकें॥ हिंसा है अनर्थखान हिंसा तिहां पाप जान, जीव हिंसा छोड प्रान राग द्वेष टालकें ॥ हिंसाहीतें रोग शोग खान पान हीन नोग, बहु इःख सहे लोग हिंसा हितें नालकें ॥ सुनूम चक्रवर्त्त देखो जमदग्नि पूत, सातमी नरग पत्त हिंसा पंथ चालकें ॥ नणे० ॥ आपसम० ॥ १३ ॥ अन्ने दान खट काय जीवनकूं दीजीयें ॥ अन्नेदान बडो धर्म टाले है इःकृत कर्म, ओर है मिथ्यात नर्म काहेकुंज कीजियें ॥ शरणें राख्यो पारापति मेघरथ नरपति, सिंचानेकुं कहे त्रत्ति मेरो मांस लीजियें ॥ अन्नेदान दियो तिन्न चक्रवर्त्ति हुवो जिन्न, शांति नाथ दिन्नदिन्न त्रिजुवन पूजियें ॥ नणे० ॥ अन्ने० ॥ १४ ॥ काहेकों बोलत है तुं जूठ निराताल रे ॥ जूठ नांखे महाडुष्ट पापहीकों करे पुष्ट, लोक सहू करे खष्ट तुंतो है लबाड रे ॥ जूठा बोलो कहे लोय माने न वचन कोय, तिरियंच होत सोय आगम संनाल रे ॥ देखो राजा वसुनोल मीसर वचन बोल, सातमी नरक घोर गयो करी काल रे ॥ नणे० ॥ काहेकों० ॥ १५ ॥ विमल वचन सत्य सहू सुखकार है ॥ विमल वचन नष्म सुखदायी सहु जन्न, जिनकी सुनत कन्न अमृतकी धार है ॥ सिद्ध जे साधक नर ताकी विद्या सिद्ध कर, सुसेवित मुनिवर सत्य जग सार है ॥ सत्यतें पावक जल महो

दधि होत थल, दुष्ट विष विषधर (अमृत अपार है) सबहींकी खार है ॥ जणे० ॥ विमल० ॥ १६ ॥ चोरी करो कोइ मन चोरीतें विनाश रे ॥ चोरीतें ले राजा दंम मार करे शन खंग, गधे चाडे शिर मुंम फेरवत तास रे ॥ मार मार करे जन आरत करत मन्न, राजा जाणे ततखिन्न देत गलफास रे ॥ देखो हो अनंग सेन चोरी बंध पायो जेन, कुटुंबसहित तेन कियो नरकावास रे ॥ जणे० ॥ चोरी० ॥ १७ ॥ पाइयें अमरपद दत्तव्रत पालतें ॥ देखो ज्युं अंबड सीस संख्या वीस पांतरीन, जेठ मास एक दीस पंथ शिर चालतें ॥ तृषा लागी परिवल पियो नांहिं गंग जल, व्रत पाल्यो निरमल दूषणके टालतें ॥ सत मय काल कर हुआ महर्द्धिक सुर सुख लाचे इनपर आगम संभालतें ॥ जणे० ॥ पाइयें० ॥ १८ ॥ म म कर म म कर परनारी संग रे ॥ परनारी देख कर कटाक्ष नयन नर, आपद पावत नर दीप ज्युं पतंग रे ॥ खिणमात होत सुख देखे नव सत दुःख, करत विषम त्रिष मूरतिको नंग रे ॥ फिट फिट करे लोय अजस कीरति होय, रमणि कारण जोय होत मोहोटा जंग रे ॥ जणे० ॥ म म कर० ॥ १९ ॥ शील व्रत पालो जिम शिवपूर जाइयें ॥ शीलहींतें नमे देव सुरनर सारे सेव, शीलवंत नित्यमेव देवहीज्यूं ध्याइयें ॥ देखो हो सुदरशन शील पाल्यो एक मन, शीलहीतें त्रिभुवन जस गुण गाइयें ॥ शीलतें संकट टले संपतकुं

आय मिले, मांहे समकित भले तोउ कहा पाइयें ॥ भणे० ॥ शीलव्रत० ॥ २० ॥ अति घणो परिग्रह दुःखहींको हेत रे॥ कोइ नर नरपति चलत परतगति, परिग्रह देख मति साथ नांहि लेत रे ॥ देखो क्युं न ब्रह्मदत्त सयंभूम चक्रवर्त्त, सातमी नरक पत्त सूत्र साखी देत रे ॥ खात पीत भाइ बंध पाप चडे तोरे खंध, कांइ मूढ होत अंध हिये कछु चेत रे॥भणे०॥ अति० ॥२१॥ संतोष करत जीव नित्य सुख पाइयें ॥ संतोष करत नर दुःखको सागर तर, परम आनंद घर ततक्षण पाइयें ॥ देखो हो कपिल मुन संतोष करत जिन, पायो हे केवल धन धन्य गुण गाइयें ॥ जिनवर गणधर गणिवर मुनिवर, परम संतोष कर शिवपुर जाइयें ॥ भणे० ॥ संतोष० ॥ २२ ॥ क्रोध हे अनर्थ मूल क्रोध दूर छोड रे ॥ क्रोधहीतें नरक जाय वाघ सिंघ सर्प थाय, क्रोधहीतें भरम लाय भव कोडाकोड रे ॥ क्रोधहीतें प्रीत जाय क्रोधहीतें विष खाय, क्रोध बहू दुःखदाय जीव आणे खोड रे ॥ क्रोधकी उपनी झाल जूउ तुमें ततकाल, करी नाखो आल माल पीछा मन मोड रे ॥ भणे० ॥क्रोध०॥२३॥ क्षमा करो भरपूर मम करो रीश रे ॥ क्षमाहींते वेर जाय दुषमन लागे पाय, त्रिभुवन जस थाय सही विश्वावीश रे ॥ देखो गजसुकुमाल क्षमा करी क्रोध मार, संसारको पायो पार वंदो निश दीस रे ॥ राय परदेशी धन्न क्षमा करि एक मन्न, देवलोक पायो तिन्न

पूरी हे जगीश रे ॥ नणे० ॥ क्रमा० ॥ २४ ॥ काहेकुं करत हे तुं मूढ अहंकार रे ॥ लक्ष्मी तो नांही थिर आत जात फिर फिर, यौवनभी जात खीर तुं तो हे गमार रे ॥ जाहिंको करत गर्व सोय बिणस जात स र्वे, पावे नांहि उहि सर्व सो तो वार वार रे ॥ राव हीतें रंक होय रंकहीतें राव जोय, थिर रह्यो नांहिं कोय अथिर संसार रे ॥ नणे० ॥काहेकुं० ॥ २५ ॥ म म कर मूढ माया कूडही कपट्ट रे ॥ मायातें नरक घोर मायाहीतें होत ढोर, मायाहीतें पावे जोर दुःख हींको थट्ट रे ॥ जो करत परद्रोह मंमत कपट मह, आपकुं शोषण खोह कांइ होत जट्ट रे ॥ हियां सुं चेत नर मोहमाया परिहर, संसार सागर तर पायो हे तट्ट रे ॥ नणे० ॥ म म कर० ॥ २६ ॥ सुख होत लोन वश करत करत रे ॥ लोनहितें रातदिन्न चिंतें मेलुं मेलुं धन्न, दुःख होत लोन मन धरत धरत रे ॥ जोरे धन्न रल रल आयु घटे पल पल, जात ज्युं अं जल जल झरत झरत रे ॥ सुनूम प्रमुख नूप करत जे दोर धूप, गेड गये लोन कूप नरत नरत रे ॥ नणे० ॥ सुख होत० ॥ २७ ॥ काहेकुं करत लोन देत क्युं न दान रे ॥ दान शिव सुखदाय दानथें दा रिद्र जाय, घरें नवनिधि थाय माने राय रान रे ॥ दान देवो चित्त लाय दानें धन वृद्धि थाय, जेसें वा डी कूप पाय होत वृद्धिमान रे ॥ देखो हो सुमुख जिन प्रतिलाभ्यो महामुन, कुमर सुबाहू तिन रू

पको निधान रे ॥ नणे० ॥ काहेकुं० ॥ २७ ॥ बडो व्रत व्रतमांहे शीलव्रत जान रे ॥ सागर आगर मांहिं स्वयंबु उदधि मांहि, वडो दान दान मांहि अजय ज्युं दान रे ॥ चंड ग्रहगणमांहि, ब्रह्मलोक कल्प मांहि, बडो ज्ञान ज्ञान मांहि केवल ज्युं ज्ञान रे ॥ अरिहंत मुनि मांहे मनोरम गिरिमांहे, बडो ध्यान ध्यानमांहे सुकल ज्युं ध्यान रे ॥ नणे० ॥ बडो० ॥ २ए ॥ नवकोटि कृतकर्म तपहीतें टालियें ॥ तपतें वांबित फल होत जीव निरमल, तप रूप दावानल कर्म वन बालियें ॥ देखो धनो अणगार डुक्कर तपको कार बोडकें बतीस नार जिनव्रत पालियें ॥ सागर तेत्रीश वर हूउ अणुत्तर सुर, जाके गुणरूप जल आतम पखालियें ॥ नणे० ॥ नवकोटि०॥३०॥ नावहीतें होत सिद्ध नावहीं प्रधान रे ॥ बहू विधें व्रत लीध तप कीध दान दीध, नाव विना नांहिं सिद्ध होत फल हान रे ॥ सुन नाव नावे जेह नव निधि तरे तेह, पायो ज्युं मुगति गेह नरत राजान रे ॥ मरुदेवी मात धन डुक्करह तप बिन, शिव पद पायो जिन ध्याई शुन ध्यान रे ॥ नणे० ॥ नावही० ॥ ३१ ॥ धर्म हे मंगल मूल धर्महीकुं सेव रे ॥ धर्म हे कलप वृक्ष देखो जातें परतक्ष, नोगवेहे लोक लक्ष सौख्य नित्यमेव रे ॥ धर्मके उत्तम फल जाति कुल रूप बल, विकट संकट टल जाते ततखेव रे ॥ धर्महीं डुष्कृत दहे इंडादिक पद लहे, धर्मे शिव सुख

कहे अरिहंत देवरे ॥ नणे० ॥ धर्म० ॥३१॥ महानंद सुख कंद रूपचंद जानियें ॥ श्रीयरूपजीवगणि कुं अर श्रीमह्न मुनि, रतनसीस जस धनी त्रिजुवन मानियें ॥ विमल शासन जास मुनि श्रीय गंगदास, हस्त दीक्षित तास बत्रिशी बखानियें ॥ बाण वसु रस चंद (१६८५) दीवाली मंगल वृंद, अहम्मदावाद इंद रंग मन आनियें ॥ नणे मुनि बालचंद सुनो हो नविक वृंद, महानंद सुखकंद रूपचंद जानियें ॥३३॥ इति श्री बालचंद बत्रशी संपूर्णा ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ चउमासी पारणुं आवे. करि वीनति निज घर जावे ॥ प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकूल जरी पथ रावे रे ॥ महावीर प्रज्जु घरें आवे ,जीरण शेठजी ना वना नावे रे ॥ महा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उन्नी शेरीयें जल छटकावे, जाई केतकी फूल बिछावे ॥ निजघर तोरण बंधावे, मेवा मिठाइ थाल नरावे रे ॥ महा० ॥ २ ॥ अरिहाने दानज दीजें, देतां जे देखीने रीफें ॥ षटमासी रोग हरीजें, सीफे दायक नव त्रीजे रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ जिनवरनी सनमुख जाउं, मुफ मंदिरीयें पधरावुं ॥ पारणुं नली नांतें करावुं, युगतें जिनपूजा रचावुं रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ पठी प्रज्जुने वोलावा जइशुं, कर जोडीने सनमुख रहिशुं ॥ नमी वंदीने पावन थइशुं, विरति अति रंगें व

हीशुं रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ दया दान क्षमा शील धर शुं, उपदेश सज्जनने करशुं ॥ सत्यज्ञानदिशा अनु सरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे ॥ महा० ॥ ६ ॥ एम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारें चढंता ॥ श्रा वकनी सीमें ठरंता, देवडुंडुभि नाद सुणंता रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ करी आयु पूरण शुभभावें, सुरलोकें अच्युतें जावे ॥ शाता वेदनी सुख पावे, शुभ वीर व चन रस गावे रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिनस्तवनं ॥

॥ जयो जयो नायक जग गुरु रे, आदीसर जिन राय ॥ तुझ मुख देखी साहेबा, मुझ आनंद अंग न माय ॥ ऋषभदेव तुं मोरो महाराज, ताहरुं द र्शन दीठुं में आज, प्रभु मुझ सीधां वंछित काज ॥ ऋ० ॥ १ ॥ आंखडी कमलनी पांखडी रे, जाणीयें अमीरसकंद ॥ दिन दिन मुखडुं दीपतुं जाणे, न यन चकोरा चंद ॥ ऋ० ॥ २ ॥ मूरति जिनजीनी मोहनी रे, साची मोहन वेल ॥ मनना मनोरथ पू रती जाणे, कल्पतरूनी वेल ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ एकण जीभें ताहेरा रे, गुण कहेतां न कहेवाय ॥ जिम गंगा रज कण तणी कहो, केणी परें संख्या थाय ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ शेत्रुंजा गिरिनो राजियो रे, नाभिराया कुल चंद ॥ केसरविमल एम वीनवे प्रभु, द्यो दर्शन सु खकंद ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ इति ऋषभजिन स्तवनं ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवनं ॥

॥ धन धन खेत्र माहाविदेह जी, धन्य पुंमरिगि
णी गाम ॥ धन्य तिहांनां मानवी जी, नित उठी करे
रे प्रणाम ॥ सीमंधर स्वामी कइयें रे हुं महाविदेह
आवीश, जयवंता जिनवर कइयें रे हुं तुमने वांदिश
॥ १ ॥ चांदलीया संदेशडो जी, केहेजो सीमंधर स्वाम ॥
नरत क्षेत्रनां मानवी जी, नित उठी करे रे प्रणा
म ॥ सी० ॥ २ ॥ समवसरण देवें रच्युं तिहां, चो
शठ इंद नरेश ॥ सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर
छत्र धरेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहूंली जी,
मोतीना चोक पूरेश ॥ रली रली लीये लूंछणां जी,
जिनवर दीये उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एहवे समे में
सांनल्युं जी, हवे करवां पच्चरकाण ॥ पोथी ठवणी
तिहां कणे जी, अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥
रायने वाहाला घोडलां जी, वेपारीने वाहाला छे दाम ॥
अमने वाहाला सीमंधर स्वामी, जिम सीताने श्रीरा
म ॥ सी० ॥ ६ ॥ नही मागुं प्रनु राज ऋद्धि जी,
नही मागुं गरथ नंमार ॥ हुं मागुं प्रनु एटलुं जी,
तुम पासें अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ दैव न दीधी पांख
डी जी, केम करी आवुं रे हजूर ॥ मुजरो माहारो
मानजो जी, प्रह ऊगमते सूर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समय
सुंदरनी वीनति जी, मानजो वारंवार ॥ बे कर जोडी
वीनवुं जी, वीनतडी अवधार ॥ सी० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ प्रभाति रागमां ॥

॥ वहालाजी वाह्यां रे प्रभु, वहालाजी वाह्यां ॥ जू ठने जागो रे प्रभु, वहालाजी वाह्यां ॥ माता वामा देवी एम, बोले रे वाणी ॥ तमारुं मुख जोवा आ व्यां, इंद्र इंद्राणी ॥ वहालाजी० ॥ १ ॥ तान मान पंच शब्द, वाजां रे वाजे ॥ गीत गायन थातां प्रभु, अंबर गाजे ॥ व० ॥ २ ॥ देव गाये ने छारें भ्भा, बिरुद बोले ॥ कोई अमारा प्रभुजीने, नावे रे तोले ॥ व० ॥ ३ ॥ माताजीनां वचन सुणी, पास कुमर जा ग्या ॥ भविक जीवनां वंछित फल्यां, मुहनां मांग्यां ॥ व० ॥ ४ ॥ प्रभु मुख जोयाना रंग, कह्या न जाये ॥ देखंतां रे नयणे उलट, अंग न माये ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ नित्यलाभ कहे स्वामी, अंतरजामी ॥ भलें रे में भेट्यो आज, गोडीचो स्वामी ॥ व० ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ वीरजिणेसर साहिब मेरा, पार न लहुं तेरा ॥ म हेर करी टालो महाराजजी, जनम मरणना फेरा हो ॥ जिनजी अब हुं शरणें आयो ॥ १ ॥ गर्भावास तणां दुःख मोहोटां, उंधे मस्तक रहियो ॥ मल मूतर मांहे लपटाणो, एहवो दुःख में सहियो हो ॥ जि० ॥ ॥ २ ॥ नरक निगोदमां उपनो ने चवियो, सूक्ष्म बादर थइयो ॥ वेहेंचाणो सुइने अग्रभागें, मान तिहां किहां रहियो हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ नरकतणी वेदना अति उ छसी, सही ते जीवें बहू ॥ परमाधामीनें वश पडी

यो, ते जाणो तमें सहू हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ तिर्यंच तणा भव कीधा घणेरा, विवेक नहींय लगार ॥ निशि दिननो व्यवहार न जाण्यो, केम उतराये पार हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव तणी गति पुण्यें हुं पाम्यो, विषयारसमां भीनो ॥ व्रत पच्चरकाण उदय नवि आव्यां, तान मानमांहे लीनो हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ मनुष्य जनम ने धर्मसामग्री, पाम्यो तुं बहु पुण्यें ॥ राग द्वेष मांहे बहु भलियो, न टली ममता बुद्धि हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ एक कंचन ने बीजी कामिनी, तेहशुं मनडुं बाधुं ॥ तेना भोग लेवाने हुं शूरो, केम करी जिनधर्म साधुं हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ मननी दोड कीधी अति जाझी, हुं उउं कोक जड जेहवो ॥ कलि काले कल्प में जन्म गमायो, पुनरपि पुनरपि तेहवो हो ॥ जि० ॥ ए ॥ गुरु उपदेशमां हुं नथी भीनो, नावि सहहणा स्वामी ॥ हवे वडाइ जोईयें तमारी, खिजमतमांहि छे खामी हो ॥ जि० ॥ १० ॥ चार गतिमां हे रड वडीयो, तोए न सीधां काज ॥ रूपचन्द कहे तारो सेवकने, बांहे ग्रह्यानी लाज हो ॥ जि० ॥ ११ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन प्रभाति स्तवनं ॥

॥ मेरे ए प्रभु चाइयें, निन उठी दरिसण पाउं ॥ चरणकमल सेवा करुं, चरणे चित्त लाउं ॥ मेरे ए प्र० ॥ १ ॥ मन पंकजके महेलमें, प्रभु पास बेसाउं ॥ निपट नजिक में हुइ रहुं, मेरो जीव रमाउं ॥ ॥ मे० ॥ २ ॥ अंतरजामी एक तुं, अंतरिक गुण

गाउं ॥ आनंद कहे प्रन्नु पासजी, कबु उर न चाहुं ॥ (में तो अवर न ध्याउं) ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ ए तो सकल तीरथनो राय,मोहोटो गिरिवर कहे वाय ॥ एहनी जात्रा पुण्यें थाय ॥ मनोहर मित्र ए गिरि सेवो, डुनियामां देव नही एवो ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुर नर विद्याधर आवे, एतो जात्रा करे मन नावें ॥ हांरे एहनुं समकित निरमल थावे ॥ म० ॥ २ ॥ सोनाने रूपानां फूल, मोती माणक रत्न अमूल ॥ गिरि वधावो बहु मूल ॥ म० ॥ ३ ॥ केसर सूखड ने कपूर, गिरि पूजे ऊगमते सूर ॥ तेनां कर्म थाये चकचूर ॥ म० ॥ ४ ॥ सूरज कुंममां जे नाये, नवोनवनां पीतक जाये ॥ एनी देही कनक मय थाये. ॥ म० ॥ ५ ॥ मेंतो पूज्या श्रीरूषन्न जिणंदा, मुऊ हइडे अतिही आणंदा ॥ मुख सोहे पून मकेरो चंदा ॥ म० ॥ ६ ॥ मन जाणीने लान्न अनंत, आव्या त्रेवीशे नगवंत ॥ कीधो सकल कर्मनो अंत ॥ म० ॥ ७ ॥ शेत्रुंजो जे नयणें निहाले, नरक तिर्यंच गति निवारे ॥ तेनो शिवरमणी कर काले ॥ म० ॥ ८ ॥ संघवी ताराचंदनो संघ, नूषणदास मल्या मनरंग ॥ एतो जात्रा करे सर्व संघ ॥ म० ॥ ॥ ए ॥ श्रीविधिपक्ष गछपति राया, उदयसागर सूरि सुपसाया ॥ शिष्य तिलकचंदें गुण गाया ॥ म० ॥ १० ॥

॥ पार्श्वजिन स्तवन कच्छी भाषामां ॥

॥ सुघड पास प्रभु रे, दरिसण वेलडोनी दिङ्क ॥ दरिसण तोजो लाख टकनजो, लाख टकनजो लाख ट कनजो रे, कामणगारा तोजा नेण ॥ सु० ॥ सांह्री असांजो तुं अंइयें तुं अंइयें तुं अंइयें रे, मिठडा ल गेंता तोजा वेण ॥ सु० ॥ द० ॥ १ ॥ अंघाथकी असीं आविया आविया आविया रे, सफल जनम थेयो अङ्क ॥ सु० ॥ द० ॥ मेहेर कज जजी मुंमथे मुंमथे मुंमथे रे, बांहे ग्रहेजी लङ्क ॥ सु० ॥ द० ॥ ॥ २ ॥ दिल लगो मुंजो तोमथे तोमथे तोमथे रे, थेउ से वेंधो कींह ॥ सु० ॥ द० ॥ सजोदी तोके सं भारीयां संभारीयां संभारीयां रे, मींह बापीयडा जींह ॥ सु० ॥ द० ॥ ३ ॥ जगमे देव दग जजा दग जजा दग जजा रे, तेंमें तुं वडो पीर ॥ सु० ॥ द० ॥ असीं वामाजीजे नंदके नंदके नंदके रे, दरिसणें थे यासुं खलो खीर ॥ सु० ॥ द० ॥ ४ ॥ घोरङी वं ङा तोजे नामथा नामथा नामथा रे, मुगतीजो दा तार ॥ सु० ॥ द० ॥ थरजो ठाकुर भेटेयो भेटेयो भेटेयो रे, नित्य लाभजो आधार ॥ सु० ॥ द० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तवनं ॥

॥ शीतल जिनवर सांभलो रे, गुणनिधि गरीब निवाज ॥ देखी दरीसण ताहेरुं रे, सफल थयो दि न आज ॥ शी० ॥ १ ॥ सूरत ताहारी सोहामणी रे, लाल अमूलक नंग ॥ जाणीयें कल्पद्रुम सारखो रे,

कीधी प्रीति अनंग ॥ शी० ॥ २ ॥ हेजाले नयणें करा रे, मलजो मुजने स्वाम ॥ अंतरजामी बो माहरा रे, नवडुःख नंजण गाम ॥ शी० ॥ ३ ॥ साचो साजन तुं मिल्यो रे, प्रीति कीधी परमाण ॥ हियडे नींतर तुं वस्यो रे, नावें जाण म जाण ॥ शी० ॥ ॥ ४ ॥ धरणीतलमां जोवतां रे, अवर मिल्या मुज लाख ॥ पण ते हुं नहीं आदरुं रे, श्रीपरमेसर साख ॥ शी० ॥ ५ ॥ सीताने मन रामजी रे, राधाने मन कान ॥ नमरो मालति फूलडे रे, तिम प्रजुशुं मुज तान ॥ शी० ॥ ६ ॥ रोहिणीने मन चंदलो रे, जिम मोरामन मेह ॥ इंडाणीने मन इंदलो रे, तिम प्रजुशुं मुज नेह ॥ शी० ॥ ७ ॥ अमने तमोरो बे आशरो रे, नहि कोइ बीजाशुं वाद ॥ साचो सेवक जाणशो रे, तो सवि पूरशो लाफ ॥ शी० ॥ ८ ॥ अचलगबने..देहरे रे, मुदरा नगर मजार ॥ महिमावंत मया करो रे, नवडुख नंजणहार ॥ शी० ॥ ॥ ए ॥ सानिधकारी बो साहेबा रे, प्रणम्यां पातक जाय ॥ सहज सुंदर गुरु रायनो रे, नित्य लान प्रजु गुण गाय ॥ शी० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ प्रजातें उठीने माता मुखडुं जोवे ॥ ए देशी ॥

॥ आवी रूडी नगति में, पहेलां न जाणी ॥ पहेलां न जाणी रे प्रजु, पहेलां न जाणी ॥ संसारनी मायामां में, वलोव्युं पाणी ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥

कल्पतरुनां फल लावीनें, जे जिनवर पूजे ॥ काल अनादि कर्म ते संचित, सत्ताथी धूजे ॥ आ० ॥ १ ॥ स्थावर तिरि निरयालय छुग, इगविगला लीजें ॥ साधारण नवमे गुणठाणे, धुरलागें छीजे ॥ आ० ॥ २ ॥ केवल पामीने शिवगति पामी, शैलेशी ठाणे ॥ चरम समय दोयमांहे स्वामी, अंतिम गुणठाणे ॥ ॥ आ० ॥ ३ ॥ बाकी नाम करमनी पयडी, सघली तिहां जावे ॥ अजर अमर निकलंक स्वरूपें, निःकर्मा थावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जे सिद्ध केरी पडिमा पूजे, ते सिद्धमयी होवे ॥ नाई धोई निरमल चित्तें, आरीसो जोवे ॥ आ० ॥ ५ ॥ कर्मसूदण तप केरी पूजा, फल ते नर पावे ॥ श्रीशुन वीर स्वरूप विलोकी, शिववहु घर आवे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ पासजिणंद सदाशिव गामी, वालोजी अंतर जामी रे ॥ जगजीवन जिनजी ॥ मुहूरत ताहारी मोहनगारी, नवियणने हितकारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥ वामा रे नंदन सांजलो स्वामी, अरज करुं शिर नामी रे ॥ ज० ॥ देव घणा में तो नयणें रे दीठा, तुमें घणुं लागो छो मीठा रे ॥ ज० ॥ २ ॥ में तो मनमां तुंहीज ध्यायो, रत्नचिंतामणि पायो रे ॥ ज० ॥ रात दिवस मुज मनमांहे वसियो, हुं छुं तुम गुण रसियो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ महेर करीने साहेबा नजरें निहालो, तमें छो परम कृपालो रे ॥ ज० ॥ गोडी रे

गाममां तुंहीज सोहियें, सुर नरनां मन मोहियें रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ बे कर जोडीने प्रभु पाये लागुं, नित नित दरिसण मागुं रे ॥ ज० ॥ देव नही कोय ताहारी तोलें, नितलाभ एणि परें बोले रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिनस्तवनं ॥

॥ महावीर स्वामी मुगतें पोहोता, गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन दीवाली धन अमावास्या, वीरतणुं निर्वाण ॥ प्रभुमुख जोवाने, महारे दीवाली थई आज ॥ प्र० ॥ मोहि मोहि रे मीठडा लाल, जिन मुख जोवाने ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चारित्र पाली निरमलुं ने, टाली विषय कषाय रे ॥ एवा मुनिनें वांदीयें तो, ऊतारे भवपार ॥ प्र० ॥ म० ॥ २ ॥ बाकुला वहोख्या वीरजी ने,तारी चंदनबाला रे ॥ केवल लहीने मुक्तें पोहोता, पाम्या भवनो पार ॥ प्र० ॥ म० ॥ ३ ॥ एवा देवनें वांदीयें, जे पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समोसरणें दइ देशना, प्रभु तार्यां नर ने नार ॥ प्र० ॥ म० ॥ ४ ॥ चोवीशमो जिन जिनेसरु ने,मुक्ति तणो दातार रे ॥ कर जोडी कवियण इम भणे, मारो भव नो फेरो टाल ॥ प्र० ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानशीयलतप अने भावनुं चोढालियुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी, पामी सुगुरुप्रसाद ॥ दान शियल तप भावना, बोलिश बहु संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसर्या,राजगृही उद्यान ॥

समवसरण देवें रच्युं, बेग श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ बेठी बारे परखदा, सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रज्ञु हुं वडो, मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमें, कुण बे मुऊ समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरें, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहोर दातारनुं, लीये सहु कोइ नाम ॥ दीधारी देउल चढे, सीऊे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरने पारणे, कुण करशे मुऊ होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी, साडी बारह कोड ॥ ६ ॥ हुं जग सघलुं वश करुं, मुऊ मोहोटी बे वात ॥ कुण कुण दानथकी तस्या, ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ललनानी देशी ॥

॥ धन सारथवाह साधुने, दीधुं घृतनुं दान ॥ ललना ॥ तीर्थंकर पद में दीयुं, तिणे मुऊने अजिमान ॥ ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडुं, मुऊ सरिखुं नही कोय ॥ ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दानें दोलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नामें गाथापति, पडिलाभ्यो अणगार ॥ ललना ॥ कुमर सुबाहु सुख लह्युं, तेतो मुऊ उपगार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं, देतो वोहोरी आण ॥ ललना ॥ जरत थयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ॥ ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ मास खमणने पारणे, पडिलाभ्यो ऋषिराय ॥ ललना ॥ शालिजद्र सुख जोगवे, दान तणे सुपसाय ॥

ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या अडदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणां फल देख ॥ ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेसर पारणें, श्री श्रेयांस कुमार ॥ ललना ॥ से लडीरस वोहोराविया, पाम्यो जवनो पार ॥ललना॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला, पडिलाम्या महा वीर ॥ ललना ॥ पंचदिव्य प्रगट थयां, सुंदररूप शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव पारेवडुं, शरणे राख्युं सूर ॥ ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्ति प णे, प्रगट्यो पुण्यपमूर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ए ॥ गजजवें शशलो राखियो, करुणा कीधी सार ॥ लल ना ॥ श्रेणिकने घरे अवतर्यो, अंगज मेघ कुमार ॥ ललना ॥ दा० ॥ १० ॥ एम अनेक में उद्धर्या, कहे तां नावे पार ॥ ललना ॥ समयसुंदर प्रजु वीरजी, मुज पहेलो अधिकार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शियल कहे सुण दान तुं, किस्यो करे अहंकार ॥ आमंबर आठे पहोर, याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अं तराय वलि ताहरे, जोग करम संसार ॥ जिनवर कर नीचा करे, तुजने पड्यो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान तुं, मुज पूठें सहु कोय ॥ चाकर चाले आगले, तो शुं राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं, नवुं निपावे कोय ॥ सोवन कोडी दान दिये, शियल समुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शियलें संकट सवि

टले, शियलें सुजस सोनाग ॥ शियलें सुर सानिध करे, शियल वडो वैराग ॥ ५ ॥ शियलें सर्प न आनडे, शियलें शीतल आग ॥ शीलें अरि करी केशरी, नय जाये सवि नाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना नयथकी, में ढोडाव्या अनेक ॥ नाम कहुं हवे तेहनां, सांन लजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जुहारीयें ॥ ए देशी ॥

॥ शियल कहे जग हुं वडो, मुऊ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावे लोकने, में दान तणी वात दी ठी रे ॥ शि० ॥ १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वली विरति नही पण कांइ रे ॥ ते नारद में सीऊव्यो, मुऊ जुउ ए अधिकाइ रे ॥ शि० ॥ २ ॥ बांहे पहेस्या बेर खा, शंखराजायें दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ क लावती, ते में नवपल्लव कीधो रे ॥ शि० ॥३॥ रावण घर सीता रही, तो रामचंदें घर आणी रे ॥ सीतानुं कलंक उतारीयुं, में पावक कीधो पाणी रे ॥ शि० ॥ ॥ ४ ॥ चंपा बार उघाडवा, वली चारणीयें काढीयुं नीरो रे ॥ सतीय सुनद्रा जस थयो, में तस कीधी नीरो रे ॥ शि० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांमीयो, राणी अनयायें दूषण दाख्यो रे ॥ शूली सिंहासण में की यो, में शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शि० ॥ ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, आवतां अरिदल थंन्यो रे ॥ तिहां पण सानिध में करी, वली धरम कारज आरंन्यो रे ॥ शि० ॥ ७ ॥ पहेरण चीर प्रगट कीयां, में अ

छोत्तरशो वारो रे ॥ पांमवनारी द्रौपदी, में राखी मा म उदारो रे ॥ शि० ॥ ७ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, व ली शीलवंती दमयंती रे ॥ चेडानी साते सुता, राजि मती सुंदरी कुंती रे ॥ शि० ॥ ए ॥ इत्यादिक में उ द्धर्यां, नर नारीनां वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रन्नु वीर जी, पहेलो मुफ आणंदो रे ॥ शि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तप बोल्युं त्रटकी करी, दानने तुं अवहील ॥ पण मुफ आगल तुं किस्युं, सांजल रे तुं शील ॥ १ ॥ सरसां नोजन तें तज्यां, न गमे मीठा नाद ॥ देह तणी शोजा तजी, तुफमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारीथकी मरतो रहे, कायर किश्युं वखाण ॥ कू ड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुफ आदरे, ठंमी सहु संसार ॥ आप ए क तुं नांजतो, बीजा नांजे चार ॥ ४ ॥ करम निका चित त्रोडवा, नांजुं नव नय नीम ॥ अरिहंत मुफ ने आदरे, वरस ठमासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदी सर ऊपरें, मुफ लब्धें मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे शाश्वतां, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोहोटा जोय ण लाखना, लघु कंथु आकार ॥ हय गय रथ पायक तणां, रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुफ कर फरसे उ पशमे, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठाविश ऊपजे, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे में ताख्या ते कहुं, सु

एजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पामशो, देशो मुज शाबास ॥ ए ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥

॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कीधी चार हो ॥ सुंदर ॥ ते पण तिण जव उद्धर्यो, मूक्यो मुक्ति म ज्ञार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरिखुं जग को नही, तप करे कर्मनुं सूड हो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति दोहिलुं, तपमां नही को कूड हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ॥ २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघो र हो ॥ सुंदर ॥ अर्जुनमाली में उद्धर्यो, छेद्यां कर्म कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ३ ॥ नंदीषेणने में कि यो, स्त्रीवल्लन वसुदेव हो ॥ सुंदर ॥ बहुंतेर सहस अंतेउरी, सुख जोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंमाल हो ॥ सुंदर ॥ सुर नर कोडी सेवा करे, ते में कीधी चाल हो ॥ सुंदर ॥ तप०॥ ५ ॥ विष्णुकुमर लब्धें कीयुं, लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे का रणें, ए मुज शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीश हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रति बूजव्या, तेणें मुज अ धिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सह स अणगारमां, श्रीधनु अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुज अधिकार हो ॥ सुंद र ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलें, डुक्कर कार

कहेय हो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नेमी प्रशंसीयो, मुज म
हिमा सवि तेह हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ए ॥ नंदीषेण
वोहोरण गयो, गणिकायें कीधी हास हो ॥ सुंदर ॥
वृष्टि करी सोवन तणी, में तसु पूरी आस हो ॥
सुंदर ॥ तप० ॥ १० ॥ एम बलनद्र प्रमुख बहु,
तास्या तपसी जीव हो ॥ सुंदर ॥ समयसुंदर प्रजु वीर
जी, पहेलो मुज प्रस्ताव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाव कहे तप तुं किश्युं, ठेडचुं करे कषाय ॥
पूर्व कोडि जो तप तपे, क्षणमां खेरु थाय ॥ १ ॥
खंधक आचारज प्रतें, तें बाल्यो सवि देश ॥ अशुन
नियाणुं तुं करे, क्षमा नही लव लेश ॥ २ ॥ द्वैपा
यन ऋषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्ननेसाहि ॥ ते तप क्रोध
करी तिहां, दीधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शियल त
प सांजलो, म करो फूठ गुमान ॥ लोक सहुको साख
दे, धर्में नाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठो त्रणे,
द्ये व्याकरण ते साख ॥ काम सरे नहि कोइनुं, नाव
नणे मुं पाख ॥५॥ रस विण कनक न नीपजे, जल वि
ण तरुअर वृद्धि ॥ रसवति रस नहि लवण विण,
तिम मुज विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र जंत्र मणि औ
षधि, देव धर्म गुरु सेव ॥ नाव विना ते सवि वृथा,
नाव फले नितमेव ॥ ७ ॥ दान शियल तप जे तुमें,
निज निज कह्यां वृतंत ॥ तिहां जो नाव न हुंत तो,
कोइ सिद्धि नवि हुंत ॥ ८ ॥ नाव कहे में एकले,

ताख्यां बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांजलो, नाम कहुं निर्धार ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ कानननमांहे काउस्सग्ग रह्यो रे, प्रश्नचंद रुषि राय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततक्षण करम खपा य ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, जाव वडो संसार ॥ एतो बीजो मुझ परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहोंचाडुं जवपार ॥ सो० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ वंश उपर चढी खेलतो रे, एला पुत्र अपार ॥ केवल ज्ञानी में कीयो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ जूख तृषा खमे अति घणी रे, करतो क्रूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करे रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लाजथी लोज वाधे घणो रे, आण्यो म न वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते ए मुझने सोजाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अन्निका सुत गछनो धणी रे, क्षीणजंघा बलि जाण ॥ कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरशें ताप स जणी रे, दीधी गौतमें दिरक ॥ ततक्षण कीधा केवली रे, जो मुझ मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पा लक पापीयें पीलिया रे, खंधक सूरिना शिष्य ॥ ज नम मरणथी ढोडव्या रे, आपे मुझ आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंड रुड्ने चालतां रे, दीधो दंम प्रहार ॥ नव दीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पण तिणि वार ॥ सो० ॥ ए ॥ धन रथकारक साधुने रे, पडिलाज्यो

उद्गास ॥ मृगलो नावना नावतो रे, पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीने में दीयुं रे, निर्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरें रे, देखी पुत्रनी रुद्धि ॥ मुऊने मनमांहे ध्यो रे, ततक्षण पामी सिद्धि ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर वंदण चाल्यो मारगें रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्डुरनामें देवता रे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥१३॥ प्रनुपाय पूजन नीसरी रे, डुर्गला नामें नार ॥ कालधर्म वचमां करी रे, पोहोती स्वर्ग मऊार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोना कारमी रें, रूप किस्यो अनिमान ॥ नरत आरीसा नुवनमां रे, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढनूति कलानिलो रे, प्रगट्यो नरत सरूप ॥ नाटक करतां पामीयो रे,केवलज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षा दिन काउस्सग्ग रह्यो रे, गजसुकमार मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियो रे, सिद्धि गयो शुन जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांनली पृथिवी चंद ॥पोतें केवल पामीयो रे, सेव करे सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेक में उद्धर्या रे, मूक्या शिवपुर वास ॥ समयसुंदर प्रनु वीरजी रे, मुऊने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥ वीर कहे तुमे सांनलो, दान शियल तप नाव ॥ निंदा छे अति पापिणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां, पापें पिंम नराय ॥ वेढ राढ

वाधे घणी, डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरखो पापियो, जूंमो कोइ न दीठ ॥ वलि चंमालसमो कह्यो, निंदक मूरख अदिठ ॥३॥ आप प्रशंसा आपणी, करतो इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को कहेनी म करो तुमें, निंदा ने अहं कार ॥ आप आपणे गामें रहो, सहुको जलो सं सार ॥ ५ ॥ तो पण अधिको जाव छे, एकाकी समर ब ॥ दान शियल तप त्रणे जलां, पण जाव विना अकयब ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां, अधिको आ णी रेख ॥ रजमांही तज काढतां, अधिको जाव विशे ष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण जणी, चारे सरिख गणंत ॥ चारे करी मुख आपणां, चउविध धर्म जणंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीरजिणेसर एम जणे रे, बेठी परखदा बार ॥ धर्म करो तुमें प्राणीया रे, जिम पामो जव पार रे ॥ धर्म हैये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्तिसुख कारो रे ॥धर्म०॥ए आंकणी॥ धर्म थकी धन संपजे रे, धर्मथकी सुख होय ॥ धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नही कोय रे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ डुर्गति पडतां प्राणीया रे, राखे श्री जिनधर्म ॥ कुटुंब सहूको कारि मुं रे, मत जूलो जवि जर्म रे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखीयां हूआ रे, वली होशे छे जेह ॥ ते जिन वरना धर्मथी रे, मत कोइ करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥

॥ ४ ॥ सोलशें ग्रासठसमे रे, सांगानेर मझार ॥ पद्म प्रभु सुपसाउले रे, एह जण्यो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ॥५॥ सोहम सामी परंपरा रे, खरतर गब्र कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगडो रे, श्री जिनचंद सूरिंद रे ॥ ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे, विनय वंत जसवंत ॥ आचारिज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शिष्य ॥ समयसुंदर वाचक जणे रे, संघ सदा सुजगीश रे ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ दान शियल तप जावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां जावशुं रे, रूध्दि समृध्दि सुप्रसादो रे ॥ धर्म० ॥ ए ॥ इति दानशियल तप जावनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां स्तवन ॥

॥ कहा रे अज्ञानी जीवकूं, गुरु ज्ञान बतावे॥कबहुं न विषधर विष तजे, कहा दूध पिलावे ॥ कहा० ॥ ॥ १ ॥ ऊखर ईख न नीपजे, कहा बोवन जावे ॥ रासज गार न गांऊहीं, कहा गंग जिलावे ॥ क० ॥ २ ॥ काली ऊन कुमाणसां, रंग दूजो न आवे ॥ श्रीजिन राज कहुं कहा, वाको सहज न जावे ॥ क० ॥ ३ ॥

॥ अथ सुविधिजिनस्तवनं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब, साहेब मुजरा मेरा रे ॥ साहेब सुविधि जिनेसर प्यारा, चरण पखालुं प्रजु तेरा रे ॥ मु० ॥१॥ केशर चंदन चरचुं अंगें, फूल चडावुं सेरा रे ॥ घंट वजावुं ने अगर उखेवुं, करुं

प्रदक्षिण फेरा रे ॥ मु० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजां वज डावुं, नृत्य करुं अधिकेरां रे ॥ रूपचंद गुण गावत हर्खित, दास निरंजन तेरा रे ॥मु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रभाती रागमां स्तवन ॥

॥ प्रभु तोरी ठकुराइकूं, गढ तीन बिराजे ॥ रतन रचित मानुं देहकी, दूती मंझल ठाजे ॥ प्र० ॥ १ ॥ झलकत डुहुं दिशि तेजमें, बिच कंचन कोटा ॥ तेरे प्रबल प्रतापका, मानुं मंझल महोटा ॥ प्र० ॥ २ ॥ अतिउज्ज्वल रूपें बन्या, तीजा गढ तेरा ॥ तीन भुवनमें विस्तस्था, जस सुजस घणेरा ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंद जिनंदकी, कहा कहुं रे वडाई ॥ आनंद वदत लघु बुद्धिपें, ठबी बरनी न जाई ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥ प्रभाती रागमां ॥

॥ तुम विना कौन मेरी,शुद्ध लेनहार हे ॥ तुम०॥ निशिदिन ध्यान धरुं, कीजे क्युं अवार हे॥ पारसनाथ साहेबजीको, नाम साचो सार हे ॥ तु० ॥ १ ॥ प्रात ताही सेवा करुं, पुष्फनके हार हे ॥ अगर सुवास वास, खेवत सवार हे ॥ तु० ॥ २ ॥ झरपत हुं सेवा करुं, भूल चूक माफ हे ॥ मेंतो हुं अजान प्रभु, आपही सफार हे ॥ तु० ॥ ३ ॥ मेरे तो प्रभु एक तूंक, सेवक हजार हे ॥ अश्वसेन नंदनजीशुं, मेरो पूरण प्यार हे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ आदिजिनस्तवनं ॥

॥ अंग उमाहो मुझने अतिघणो, अलबेला जिनवर

ज़ी ॥ नेटवा रुषन्न जिणंद, मारा वहाला श्रीजिनवर जी ॥ १ ॥ पालीताणुं नगर सोहामणुं ॥ अ०॥ रूडी ललिता सरनी पाल ॥मा०॥ जिहां रे आंबा वडला घणा ॥ अ०॥ फूकी रइ चंपा केरी माल ॥ मा० ॥ २ ॥ धन ते पंखी रे पारेवडां ॥अ०॥शेत्रुंजे वसी रह्या मोर ॥ मा० ॥ उमाहो करीने जे घरें रह्या ॥ अ० ॥ ते माणस नही ढोर ॥ मा०॥३॥ शेत्रुंजा मारग चालतां, ॥ अ०॥ उमे ने फीणी फीणी खेह ॥ मा०॥ मेलां थाशे रे महारां कापडां ॥ अ०॥ निर्मल थाशे मारी देह ॥ ॥ मा० ॥ ४ ॥ ऊंचुं देहेरुं रे आदिनाथनुं ॥ अ० ॥ आगल चोक विशाल ॥ मा० ॥ जिहां मेले मेले घणा मानवी ॥ अ० ॥ गावे प्रनुगुणमाल ॥ मा० ॥ ॥ ५ ॥ केशर घसी नर्या वाटका ॥ अ० ॥ पूजवा आदिजिणंद ॥ मा० ॥ फूलडानो हार कंठें सोहियें ॥ अ० ॥ दीवडानी ज्योति अखंम ॥ मा० ॥ ६ ॥ गिरिवर दीठे माहरे ॥अ० ॥ दिलमां उपजे आणंद ॥ मा० ॥ नेटवानो रे मुफने कोम घणो ॥ अ० ॥ प्रेम घणो जिनचंद ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सामायिकलान सज्झाय ॥

॥ कर पडिक्कमणुं नावशुं, दोय घडी शुनध्यान ॥ लाल रे ॥ परनव जातां जीवने, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्रीमुख वीर इम उचरे, श्रेणिक रायप्रतें जाण ॥ ला० ॥ लाख खांमी सोना तणी, दीये दिन प्रत्यें दान ॥ लाल रे ॥

क० ॥ २ ॥ लाख वरस लगें ते वली, एम दीये इव्य अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोलें, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविसत्थो, नमुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संभारो रे आपणां, ते भवकर्म निवार ॥ लाल रे ॥ कर० ॥ ॥ ४ ॥ कर काउस्सग्ग शुभ ध्यानथी, पच्चख्काण सूधुं विचार ॥ लाल रे ॥ दोय सज्झायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ कर०॥ ५ ॥ श्रीसामायिक प्रसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ लाल रे ॥ धर्मसिंह मुनि एम भणे, ए छे मुक्ति निदान ॥ लाल रे ॥ क०॥६॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ कृपा करो ने गोडी पास जिनेसर, तुम साहिब अंतरजामी ॥ कृ० ॥ ऊंचे ऊंचे गिरिपर प्रभुजी बिराजे, आस पास ग्यानी ध्यानी ॥ कृ० ॥ १ ॥ नील वरण प्रभु अंगीयां बिराजे, सूरतकी जाउं बलिहारी ॥ कृ० ॥ बांहे बाजुबंध बेहिरखा बिराजे, कुंभलकी छबि है न्यारी ॥ कृ० ॥ २ ॥ ढूंढत ढूंढत प्रभुजीकु पायो, पूरण पदवी अब आई ॥कृ०॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कृ० ॥ ३ ॥

॥ अथ समेतशिखरगिरिस्तवनम् ॥

॥ तुंही नमो नमो समेतशिखर गिरि, आदीश्वर अष्टापद सिद्धा, वासुपूज्य चंपापुरी ॥ तुं०॥ नेम गया गिरनारें मुक्तें, वीर पावन पावापुरी ॥ तुं० ॥ १ ॥ वीशे टूंके वीश जिनेसर, सिद्धा अणसण आदरी ॥

॥ तुं० ॥ ज्योतिस्वरूपें हुआ जगदीश्वर, अष्ट कर्म नो क्षय करी ॥ तुं० ॥ २ ॥ पश्चिम दिशि शत्रुंजो तीरथ, पूरव समेत शिखर गिरि ॥ तुं० ॥ मोक्ष नगरना दोये दरवाजा, भविक जीव रह्या संचरी ॥ ॥ तुं० ॥ ३ ॥ जगव्यापक जे अक्षर साहेब, पाप संताप काटन गिरि ॥ तुं०॥ मोहोटुं तीरथ मोहोटो महिमा, गुण गावत सुरासुरी ॥ तुं० ॥ ४ ॥ विषम पाहाड उजाडमें चिहुं दिशि, चोर चरड रह्या संचरी ॥ तुं० ॥ भयंकर डूंगर भूमि डरावण, देखत डूंगर थरहरी ॥ तुं० ॥ ५ ॥ संवत सत्तरशें चुम्माले, चैत्र शुदि चोथें धरी ॥ तुं० ॥ कहे जिनहर्ष वीशे टूकें, भावशुं चैत्यवंदन करी ॥ तुं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अभिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ अभिनंदन नाथ जुहारुं जी॥तीरथना रसिया ॥ प्रभु आवतां पाप निवारुं जी ॥ मुझ हइडे वसिया ॥ १ ॥ प्रभु आगल पाप प्रकाशुं जी ॥ ती० ॥ प्रभु पुण्यथी पाम्या आ शुं जी ॥ मु० ॥ २ ॥ में तो रसमां बहुरस भेल्यो जी ॥ ती० ॥ आरंभ करी परिग्रह मेल्यो जी ॥ मु० ॥ ३ ॥ में तो क्रोधशुं मधु रस पीधा जी ॥ ती० ॥ रागद्वेष करी कूडां आल दीधां जी ॥मु०॥४॥ में तो कूड कपट घणां कीधां जी ॥ ती० ॥ में तो लोभशुं परधन लीधां जी ॥ मु० ॥ ५ ॥ हुं तो परनारीशुं रंगें रम्यो जी ॥ ती० ॥ व्रत भांगीने रातें जम्यो जी ॥ मु० ॥ ६ ॥ ज्यारें लेशे प्र

ज्ञुजी नेखुं जी ॥ ती० ॥ पग मांझयानी जग्या न देखुं जी ॥ मु० ॥ ७ ॥ प्रज्ञु दीठी अणदीठी करजो जी ॥ ती० ॥ मारी वीनतडी चित धरजो जी ॥ मु० ॥ ॥ ७ ॥ एवी ऋषज्ञदासनी वाणी जी ॥ ती० ॥ स्तव न जोडयुं ठे अमृत वाणी जी ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति तारक श्रीजिनदेव, दासनो दास ठुं ताह्रो ॥ जगपति तारक तुं किरतार, मन मोह्न प्रज्ञु माह्रो ॥ १ ॥ जगपति ताह्रारे तो जक्त अनेक, माह्रारे तो एकज तुं धणी ॥ जगपति वीरामां तुं मह्रावीर, सूरत ताह्रारी सोह्रामणी ॥ २ ॥ जगपति त्रिशला राणीनो तुं तन, गंधार बंदर गाजीयो ॥ जगपति सिद्धारथ कुल शणगार, राज राजेसर राजीयो ॥ ३ ॥ जगपति जगतांनी जांगे ठे जीड, जीड पडे रे प्रज्ञु पारिखे ॥ जगपति तुंह्री प्रज्ञु अगम अपार, समज्यो न जाये मुझ सारिखे ॥ ४ ॥ जगपति उदय नमे कर जोड, सत्तर नेव्याशी समे कियो ॥ जगपति खंजायत जंबूसर संघ, जगवंत जावशुं जेटियो ॥ ५ ॥

॥ अथ राणकपुरनुं स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति जयो जयो ऋषज्ञ जिणंद, धरणासाह्रे धन खरचीयो ॥ जगपति प्रौढ कराव्यो प्रासाद, उलट जर सुर नर अरचियो ॥ १ ॥ जगपति आजशुं मांझे वाद, सोवन कलशें झल ह्ले ॥ जगपति चोबारो चोशाल, पेखंतां पातक गले ॥ २ ॥ जगपति अति

सुंदर उद्दाम, नलिनी गुल्म विमान श्यो ॥ जगपति उत्तम पुण्य अंबार, निरुपम धनद निधान श्यो ॥३॥ जगपति उंलें उंलें थंन्न,कीधी अनुपम कोरणी ॥ जग पति करती नाटारंन्न, पूतलीयो चित्त चोरणी ॥ ४ ॥ जगपति नान्निनरेसर नंद, राणकपुरनो राजीयो ॥ जगपति सहु राया शिरदार, जगमांहे जस गाजीयो ॥ ५ ॥ जगपति देव तुं दीनदयाल, नक्तवत्सल नलें नेटीयो ॥ जगपति देखतां तुऊ देदार, मोह त णो मद मेटीयो ॥ ६ ॥ जगपति उदयरतन उवऊा य, संवत सत्तर त्राणुं समे ॥ जगपति फागणवदि प डवे दिन्न, सादडी संघ सहित नमे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शियल विषे शीखामणनी सद्याय ॥

॥ प्रन्नु साथें जो प्रीत वंगे तो, नारीसंग निवा रो रे ॥ कपटनी पेटी कामणगारी, निश्चय नरक डुवारो रे ॥ १ ॥ एहनी गति एहिज जाणे, रखे कोइ संदेह आणे रे ॥ ए० ॥ ए आंकणी ॥ अबला एवुं नाम धरावे, सबलाने समजावे रे ॥ हरि हर ब्र ह्म पुरंदर सरिखा, ते पण दास कहावे रे ॥ ए०॥२॥ एक नरने आंखें समजावे, बीजाशुं बोले करारी रे ॥ त्रीजाशुं कर्म करे तक जोई, चोथो धरे चित्त मऊा री रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ व्यसन विलुद्धि न जुवे विमासी, घटता घटती वातें रे ॥ मूंऊ परदेशीनी परें जोइ, मलजो एह संघातें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ जांघ चिरीने मांस खवाडयुं, तो पण न थइ तेहनी रे ॥ मोहनी

मीठी दीलनी जूठी, कामिनी न होये केहनी रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ पगले पगले मन ललचावे, श्वासोश्वा सथी जूदी रे ॥ गरज देखीने घहेली थाये, काज स रे जाये कूदी रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ करणी एहनी कली न जाये, नयण तणी गति न्यारी रे ॥ गावुं एहनुं जेणें गायुं, तेणें निज सजति हारी रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ लाख नांते ललचावे लंपट, विरुइ ने विषनी क्यारी रे ॥ एहना पासमां जे नर पडिया, ते हाख्या जमवारी रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ कोडि जतन करी कोइ राखे, मान नी महोल मझारी रे ॥ तो पण तेहने सूतां वेचे, धडे न रहे धूतारी रे ॥ ए० ॥ ए॥ जो लागी तो सर्व स्व लूंटे, रूठी राक्षसी तोले रे ॥ एम जाणीने अल गा रहेजो, उदयरतन इम बोले रे ॥ ए० ॥ १० ॥

॥ अथ संजवजिनस्तवन ॥

॥ मोहन तारा मुखडाने मटके ॥ मोहन० ॥ ए आंकणी ॥ नयण रसालां ने वयण सुखालां, चि तडुं लीधुं चटके ॥ मोह० ॥ प्रजुजी केरी जक्ति क रंतां, कर्मनी कस तटके ॥ मोह० ॥ १ ॥ मुझ मन लोजी जमर तणी परें, जिनगुण कमलें अटके ॥ मो ह०॥ रत्नचिंतामणि मूकीने राचे, कहो कोण काचतणे कटके ॥ मोह० ॥२॥ ए जिन थुणतां क्रोधादिक सहु, आस पासथी पटके ॥मोह०॥ केवलनाणी बहु सुख दानी, कुमतिकूं दूर पटके ॥ मोह० ॥ ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां नाणे, तेतो जूल्या जटके ॥मोह०॥ जाव

नक्तिशुं उलग करतां, वंछित सुखडें सटके ॥ मोह० ॥ ४ ॥ मूरत संनव जिनेश्वर केरी, जोता हैयडुं ह टके ॥ मोह० ॥ नित्यलान्न कहे ए जिन साचो, गु ण गाउं हुं लटके ॥ मोह० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानविषे स्वाध्याय ॥

॥ चोत्रीश अतिशयवंत, समवसरणें हो बेसी ज गगुरु ॥ उपदिशे अरिहंत, दान तणा गुण हो पहेले सुख करु ॥ १ ॥ दान दोलत दातार, दानें नांजे हो नवनो आमलो ॥ दानना पांच प्रकार, उलट आणी हो नवियण सांनलो ॥ २ ॥ पहेलुं अनय सुदान, दया हेतें हो निज तनु दीजीयें ॥ जेम मेघरथ रा जन्न, जीव सहुने हो निर्नय कीजीयें ॥३॥ बीजुं दान सुपात्र, तृण मणि कंचण हो अदत्त जे परिहरे ॥ निर्मल व्रत गुणगात्र, सत्तर नेदें हो संयम जे धरे ॥ ॥ ४ ॥ आहारादिक सुविचार, तेहने दीजें हो हाजर जे होवे ॥ जिम शालिनइ कुमार, सुपात्र दानें हो महा सुख नोगवे ॥ ५ ॥ अनुकंपादान विशेष, त्रीजुं देतां हो पात्र न जोइयें ॥ अन्ननो अर्थी देखी, तेहने आपी हो पुण्यवंत होइयें ॥ ६ ॥ धन पामी ससनेह, कारण पांखे हो नात जे पोषीयें ॥ उचित चोथुं ए स्वजन, कुटुंब सहेजें हो जे संतोषीयें ॥ ७ ॥ पांचमुं कीर्त्तिदान, जाचक जनने हो जे कांइ आपीयें ॥ तेणें वाधे जस वान, जगमां सघले हो नलपण थापीयें ॥ ८ ॥ पामे चिंतवित पात्र, जेहथी प्राण

हो निर्मल सुख लहे ॥ दान देतां क्षण मात्र, विलंब न कीजें हो उदयरतन कहे ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो ॥ ए देशी ॥

॥ शियल समुं व्रत को नही, श्रीजिनवर नाखे रे ॥ सुख आपे जे शाश्वतां, डुर्गति पडता राखे रे ॥ शी० ॥ ॥ १ ॥ व्रत पच्चरकाण विना जुउ, नव नारद जेह रे ॥ एकल शियल तणे बलें गया मुक्तें तेह रे ॥ शि० ॥ २ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ढे सुखदायी रे ॥ शियल विना व्रत जाणजो, कुशका सम नाइ रे ॥ शि० ॥ ३ ॥ तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कुमान रे ॥ शियल विना व्रत एहवुं, कहे वीर नगवान रे ॥ शि० ॥ ४ ॥ नव वाडें करी निर्मलुं, पहेलुं शीलज धरजो रे ॥ उदयरत्न कहे ते पढी, व्रतनो खप करजो रे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ अथ तपःस्वाध्याय ॥

॥ ईमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कीधां कर्म निकंदवा रे, लेवा मुक्ति निदान ॥ हत्या पातक बूटवा रे, नही कोइ तप समान ॥ नविक जन, तप सरिखुं नही कोय ॥ १ ॥ उत्तम तपना योगथी रे, सुर नर सेवे पाय ॥ लब्धि अठावीश ऊपजे रे, मनवंढित फल थाय ॥ नवि० ॥ ॥ तप० ॥ २ ॥ तीर्थंकर पद पामीयें रे, नासे सघला रोग ॥ रूप लीला सुख साहेबी रे, लहीयें तप संयोग ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ३ ॥ अष्ट करमना उघने

रे, तप टाळे ततकाळ ॥ अवसर लहीने तेहनो रे, खप करजो उजमाळ ॥ जवि०॥ तप०॥ ४ ॥ ते शुं छे संसारमां रे, तपथी न होवे जेह ॥ मनमां जे जे कामियें रे, सफळ फळे सही तेह ॥ जवि० ॥ तप० ॥ ॥ ५ ॥ बाह्य अभ्यंतर जे कह्या रे, तपना बार प्रकार ॥ होजो तेहनी चाळमां रे, जिम धन्नो अणगार ॥ ॥ जवि० ॥ तप० ॥ ६ ॥ उदयरतन कहे तपथकी रे, वाधे सुजस सनूर ॥ स्वर्ग होये घर आंगणुं रे, दुर्गति नासे दूर ॥ जवि० ॥ तप० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जाव स्वाध्याय ॥

॥ धन धन ते दिन माहरो ॥ ए देशी ॥

॥ रे जवि जाव हृदय धरो, जे छे धर्मनो धोरी ॥ एकलमल्ल अखंम जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे जवि० ॥ १ ॥ दान शियल तप त्रण ए, पातक मल धोवे ॥ जाव जो चोथो नवि मळे, तो ते निष्फळ होवे ॥ रे जवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षटदर्शन जांखे ॥ जाव विना जव संतति, पडतां कोण राखे ॥ ॥ रे जवि० ॥ ३ ॥ तारक रूप ए विश्वमां, ऊंपे जग जाण ॥ जरतादिक शुज जावथी, पाम्या पद निरवाण ॥ रे जवि० ॥ ४ ॥ औषध आय उपाय जे, मंत्र यंत्र ने मूळी ॥ जावें सिद्ध होवे सदा, जावविण सहु धूळी ॥ रे जवि० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे जावथी, कोण कोण नर तरिया ॥ शोधी जो जो सूत्रमां, सज्ञान गुणदरिया ॥ रे जवि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ दान शील तप नाव स्वाध्याय ॥

॥ श्रीमहावीरें नांखीया, सखी दानना चार प्रकार रे ॥ दान शीयल तप नावना, सखि पंचम गतिदातार रे ॥ श्रीमहावीरें० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें, सखि दानें कोड कल्याणो रे ॥ दान सुपात्र प्रनावथी, सखि कयवन्नो शालिनइ जाणो रे॥श्रीमहा० ॥ २ ॥ शियलें संकट सवि टले, सखि शीलें वंछित सिद्ध रे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखि शील सती परसिद्ध रे ॥ श्रीमहा० ॥ ३ ॥ तप तपो नवि नाव शुं, तपें निर्मल तन्न रे ॥ वर्षोपवासी रुषनजी, सखि धन्नादिक धन धन्न रे ॥ श्रीमहा० ॥ ४ ॥ नरतादिक शुन नावथी, सखि पाम्या पंचम गाम रे ॥ उदय रतनमुनि तेहने, सखि नित्य करे प्रणाम रे ॥ ॥ श्रीमहा० ॥ ५ ॥ इति नावस्वाध्याय ॥

॥ अथ शंखेश्वर पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ नांजी नांजी नांजी ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ तें मुऊ मोह महामद पायो, तेणें हुं थयो मतवालो ॥ तृष्णा तरुणी आणी मिलावी, वच्चमां करीअ दलालो ॥ अलगी रहेने, रहेने रहेने रहेने ॥ अलगी० ॥ हांरे कांइ कुमति पडी ठे केडें ॥ अलगी०॥ तुऊ दूतीने कोणज तेडे ॥ अलगी० ॥ १ ॥ कर्म नटावो तुं तेडी आवी, तेणें पण मांमी बाजी ॥ मिथ्या गीत तणे जणकारें, मुऊने कीधो राजी ॥ अ० ॥ २ ॥ नरक निगोद तणा मंदिरमें, पातक पलंग बिछायो ॥ मुऊने

जोलवी तिहां बेसाड्यो, पण सुमतें समजायो ॥ अ० ॥ ३ ॥ जब में मदिरा गाक निवारी, समकित सुखडी चाखी ॥ उपशम रस सुधारस पीयो, चित्त चेतनने दाखी ॥ अ० ॥ ४ ॥ श्रीशंखेश्वर चरण सरोरुह्, लागी ध्याननी ताली ॥ रूपविबुधनो मोहन पनणे, जिनमत स्तुति लटकाली ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवनं ॥ कच्छी नषामां ॥

॥ अच्चो असीं गम्हण वेंधा, वम्फे पेर पोंधा ॥ केशर जो घोर घोरिंधा, वम्ही वम्ही पूजा कंधा ॥ अच्चो० ॥ १ ॥ दीवबंदिरमें दिठो साहेब, सच्चो सुबुद्धि देव ॥ नांइयां अह्ना पाणजो अना, जक्की कज्जा सेव ॥ अ०॥ २॥ को चे अह्ना को चे कंथड, को चे जे सर पीर ॥ को चे पठो को चे दावल, को चे बावो धीर ॥ अ० ॥ ३ ॥ एडा देव में दिठा जज्जा, विठा गामो गाम ॥ मूंके साहेब तुंहीज गम्यो, आशाजो विसराम ॥ अ० ॥ ४ ॥ सर्ग मृत्यु पातालमें एडो, बेउ नांए कोए नाथ ॥ मिणी माडुयेंजी आस्या पूरे, सच्चो सिद्धजो साथ ॥ अ० ॥ ५ ॥ तोजी अंगी चंगी दिठी, सोवनमें नरपूर ॥ मत्रे मोड ऊलामल दीपे, नरकें उगिउ सूर ॥ अ० ॥ ६ ॥ तोजे देवलमें दीआ जज्जा, जज्जा फूलेंजा ढग्ग ॥ तोजो देवल दिठे नांयो, हेडो हुंधो सग्ग ॥ अ०॥ ७ ॥ मुंजी आस्या पूरजहाणे, सच्चा सुविधिबुधिनाथ॥ जिनविजय चे साहेब मुंजा, तुंही तुंही जगनाथ ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवनं ॥ राग प्रभाती ॥

॥ आजको लाहो लीजीयें, काल केणें रे दीठी ॥ रह ण न पावे पाघडी, जब आवे चीठी ॥ आ० ॥ १ ॥ मनसा वाचा कर्मणा, आलस सब छंडी ॥ ध्यान धरुं अरिहंतनुं, स्थानक शिर मंडी ॥ आ० ॥ २ ॥ विनय मूल जे पालीयें, श्रीजिनवर धर्म ॥ भावें शुद्ध आरा धतां, छूटे निजकृत कर्म ॥ आ० ॥ ३ ॥ दान शि यल तप भावना, ए चार प्रकार ॥ दया शुद्ध आरा धीयें, पामीयें भवपार ॥ आ० ॥ ४ ॥ धर्मनो म र्म ए जाणजो,राग द्वेष ने वारो ॥ केवल ज्ञान निपा इने, देवचंद्र पद सारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रभातीरागमां स्तवन ॥

॥ में परदेशी दूरका, प्रभु दरिसणकूं आया ॥ लाख चोराशी देश फस्या, तेरा दरिसन पाया ॥ में०॥ ॥ १ ॥ सूक्ष्म बादर निगोदमां, वनसपति बसाया ॥ अप तेउ वाउ कायमां, काल अनंत गमाया ॥ में० ॥ २ ॥ स्वर्ग नरक तिर्यंचमें, केता जन्म गमा या ॥ मनुष्य अनारय में भम्या, तिहां नही दरिसन पाया ॥ में० ॥ ३ ॥ तेरो मेरे दरसण अब भयो, पू रण पुण्य पसाया ॥ रूपचंद कहे भाग्य खुले, निरंज न गुण गाया ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथस्तवन ॥ कच्छीभाषामां ॥

॥ असां आंउं नेहडो कंधी, गोडीचे पेर वेंधी ॥ केसरजो घोर घोरींधी, विंकि आंउं पूजा कंधी ॥ इन

वामाजीजो नीगरो एडो, बेयो नाए जुगमें तेडो ॥ अमां० ॥ १ ॥ सरग मरत पातालजा माडु, जज्ञा सेवी पाय ॥ कामणगारो पासजी आयल, मुफे दिलमें नाय ॥ अमां० ॥ २ ॥ सर्पि सर्पा जेरे बरंधा, दिनो जे नवकार ॥ पासजीजो नालो गिनी हुआ, इंद्र इंद्राणी सार ॥ अमां० ॥ ३ ॥ बेआ देव दिठा जज्ञा, देव न केडे कम्म ॥ तुं निरागी गति निवारण, अठ कर्मेंजो दम्म ॥ अमां० ॥ ४ ॥ जेमां विंफा ते मां ईनके नजियां, जगमें वमो पीर ॥ जेहर्षजो सांमी मल्यो, खीछ्नी हुआ खीर ॥ अमां० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ चालो चालो सिद्धाचल जईयें रे, रुषनदेव सुखकारीयां ॥ चालो चालो सिद्धा० ॥ ए आंकणी ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, हांरे एतो जुगला धर्म निवारियां रे ॥ रु० ॥ १ ॥ आदिजिन नेट्यां सवि डुःख मेट्यां, हांरे में तो पाप करम सब टालियां रे ॥ रु० ॥ २ ॥ रायण रूख समोसस्या स्वामी, हांरे एतो देखी नविक मन मोह्यां रे ॥ रु० ॥ ३ ॥ केशर घोली नरी रे कचोली, हांरे मेंतो विधिशुं अंगियां रचावियां रे ॥ रु०॥४॥ कर जोडी दलिचंद गुण गावे, हांरे में तो नवोनव शरण तुमारियां रे ॥ रु० ॥ ५ ॥

॥ अथ अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ चित्त लागो अनंतजिन चरननसें, चरननसें जिन चरननसें ॥ चि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनंत

नाथजिको दरिसन करकें, मग्न नयो हम मनननसें ॥ चि० ॥ २ ॥ प्रन्नु दरिस्ननसें पाप कटत हे, तिमिर कटे जैसें अरुननसें ॥ चि० ॥ ३ ॥ आस करी दास सरणें आयो, खेतचंद पाये परननसें ॥ चि० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ रागकाफी ॥

॥ आज रे में मुख देख्यो गोडी पारसको, मेरो सफल नयो दिन आज ॥ नला जी मेरो सफल नयो० ॥ ए आंकणी ॥ अश्वसेन राजाजीको नंदन, माता वामाजीको लाल ॥ आ० ॥ १ ॥ कमठ हगवत नागकूं तारन, संनलाव्यो नवकार ॥ आ० ॥ २ ॥ नवोनव नटकत शरणे हुं आयो, अब तो राखोजी मोरी लाज ॥ आ० ॥ ३ ॥ उर देवकूं बोंहोत में ध्याया, किनसें न सख्यो मेरो काज ॥ आ० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, उतारो नवपार ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ अथ ऋषनजिनस्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ घणुं मोघुं नाम वे रे, मारे तो केसरीया वालानुं घणुं मोघुं नाम वे ॥ ए आंकणी ॥ कोई सेवे ब्रह्मा वाला कोई सेवे शंकर, कोईने विष्णु कोईने राम वे रे ॥ मारे तो० ॥ १ ॥ काल कंटक करूर नय टालण, सबल ए शरणानुं गाम वे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ मूलचंद कहे प्रन्नु जे जगतारण, धुलेवा मंमण मोहोटुं धाम वे रे ॥ मा० ॥ ३ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ प्रगट्या ते पूरण अविनाशी, जीरे काम क्रोध

सर्वे गया नासी ॥ सुखदायकना गे स्वामी, जीरे पल पल रूपी प्रजु अंतरजामी ॥ १ ॥ कच्छदेश पश्चिम धाम, जीरे पावन कीधां गे सुथरी गाम ॥ धन धन नाग्य उदय कीधां, जीरे पार्श्व प्रजुजीयें दर्शन दीधां ॥ २ ॥ घृतकल्लोल प्रजु परताधारी, जीरे देरुं चणाव्युं अति नारी ॥ देश परदेशना संघ आवे, जीरे पूजा रचावे प्रजुजीनी नावें ॥ ३ ॥ आंगी रचावे उर धरी माला, जीरे रत्न करे गे रूडा ऊणकारा ॥ मुकुट कुंमल शिर बत्रधारी, जीरे चंड्कला शुन दृष्टि तारी ॥ ४ ॥ नावी नावनाने प्रजु पूजो, जीरे नाथ विना देव नही दूजो ॥ प्रजु पूजेथी नवजल तरियें, जीरे नाम लेतां नव निधि वरियें ॥५॥ अढार बयाशी चैतर मास, जीरे पूनमें प्रजुजी पूज्या पास ॥ प्रेमचंद गुरु ज्ञानी नावें, जीरे घृतकल्लोलजीना गुण गावे ॥६॥

॥ अथ चंड्प्रनजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ चंदा प्रजुजीसें लाल रे, मोरी लागी लगनवा ॥ चंदा प्रजुजीसें० ॥ ए आंकणी ॥ लागी लगनवा बोडी न बूटे, जब लगें घटमें सास रे ॥ मोरी० ॥ १ ॥ दान शियल तप नावना नावो, जैन धर्म प्रतिपाल रे ॥ मोरी० ॥ २ ॥ हाथ जोड कर अरज करत हे, वंदत शेठ खुशाल रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषजजिनस्तवनं ॥

॥ केशरिया वाला, जो लज्जा राखशो तो रेहेशे ॥ ॥ ए आंकणी ॥ साहेब कलिजुग केरा कूड कपटमें,

साच नही जवलेशे ॥ केश० ॥१॥ जूग बोला कोण धारशे, गिरुआना गुण गाशे ॥ केश० ॥ २ ॥ साहेब तमे हमारे हमें तमारे, प्रीत सदा निर्वेहेशे ॥ के० ॥ ॥ ३ ॥ आसंघातें देह हशे तो, फरि फरिने केशे ॥ के० ॥ ४ ॥ साहेब ठेल ठोगाला देवदयाला, धुलेवा धणीने ध्याशे ॥ के०॥ ५॥ रुषजदासनी आशा फलशे, जवजवनां दुःख टलशे ॥ केश० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशक सवाद ॥

॥ हक मरनां हक जानां यारो, मत को करो गुमाना ॥ ह०॥ ए आंकणी ॥ उढण माटी पेरण माटी, माटीका सराना ॥ वसतीमेंसें बार निकाला, जंगल किया ठिकाना ॥ ह० ॥ १ ॥ हाथी चडते घोडे चडते, उर आगें नीसाना ॥ नीली पीली बेरख चलती, उत्तर किया पयाना ॥ ह० ॥ २ ॥ नरपति हो के तखत पर बेठे, जरिया जारि खजाना ॥ सांझ सकारे मुजरा लेते, ऊपर हाथ बेकाना ॥ ह० ॥ ३ ॥ पोथी पढ पढ हिंदू जूले, मुसलमान कूराना ॥ रूपचंद कहे अरे जाई संतो, हरदम प्रजु गुण गानां ॥ ह० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ हांरे लाल राम पूरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे लाल चतुरशिरोमणि चौदमा, जिनपति नाम अनंत मेरे लाल ॥ गुण अनंत प्रगट कस्या, कस्यो विजावनो अंत ॥ मेरे लाल ॥ चतुर शिरोमणी चित्त धरो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हांरे लाल चार

अनंता जेहना, आतम गुण अभिराम ॥ मे० ॥ ज्ञान दर्शन सुख वीर्यता, कर्मे रुंध्यां गाम ॥ मे० ॥ ॥ च० ॥ २ ॥ हांरे लाल चतुर धरो निज चित्तमां, ए जिनवरनुं ध्यान ॥ मे० ॥ अर्थी अर्थनिवासने, सेवे धरी बहु मान ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥ हांरे लाल ज्ञानावरणी क्षय करी, लह्युं अनंतुं ज्ञान ॥ मे० ॥ दर्शनावरण निवारतां, दर्शन अनंत विधान ॥ मे०॥ ॥ च० ॥ ४ ॥ हांरे लाल वेदनीय विगमे थयुं, सुख अनंत विस्तार ॥ मे० ॥ अंतराय उल्लंघतां, वीर्य अनंत उदार ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ हांरे लाल एम अनंत निज नामनी, स्थिरता थापी देव ॥ मे० ॥ जिम तरंस्यां सरोवर भजे, तिम स्वरूप जिन सेव ॥ ॥ मे० ॥ च० ॥ ६ ॥ इति अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ सेवो भवि शांतिजिणंद सनेहा, शांतरस गेहा, समामृत गेहा ॥ सेवो भवि शांति जिणंद सनेहा ॥ ए आंकणी ॥ राग द्वेष भव पाप संतापित, त्रिविध ताप हर मेहा ॥ माया लोभ राग करी जानो, द्वेष क्रोध मद रेहा ॥ से० ॥ १ अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानी, पच्चख्काण संजल छेहा ॥ निज अन्योन्य सदृशथी चउसठ, संख्या वासित देहा ॥ से० ॥ २ ॥ नोकपाय नव हास्य अरति रति, शोक जुगुप्सा भय वेहा ॥ मन वच काय तपावत तायें, कहियें ताप अछेहा ॥ से० ॥ ३ ॥ जैसें वनदव तरुगण बाले,

त्यों अंतर्गत एहा ॥ खम शम दम उपशम शीत लता, करि जल लहेरी लेहा ॥ से० ॥ ४ ॥ आतमराय राज्य अभिसंच्यो, पूजित त्रिभुवन गेहा ॥ तुम शिर छत्रकी छांह अमासिर, द्यो स्वरूप अनुपेहा ॥ से० ॥ ५ ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे सफल दिवस थयो आजनो ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे महिमा मल्लि जिणंदनी, मानी माहरे मन्न ॥ मोह महीपति जीतियो, वली तस पुत्र मदन्न ॥ १ ॥ नित नमीएं नीरागता, नमतां होए नव छेह ॥ दुःख दोहग दूरें टले, एहमां नहिं संदेह ॥ जाणो निःसंदेह ॥ नि० ॥ २ ॥ जीरे मल्लि जिणंदनी साहेबी, देखीनें रति प्रीति ॥ वचन कहे निज कंतने, पति प्रेमदानी रीति ॥ नि० ॥ ३ ॥ जीरे नाथ कहो ए कुण अछे, कहे ए जिनदेव ॥ जिन ते किम तुम वश नहिं, कहे एम सत्यमेव ॥ नि० ॥ ४ ॥ जीरे नहिं प्रताप इहां माहरो, तो वृथा पौरुष तुज्झ ॥ हरव्यो मोह माहारो पिता, तो शो आशरो मुज्झ ॥ ॥ नि० ॥ ५ ॥ जीरे ते सांभलि रति प्रीति बे, त्रीजो काम सबाण ॥ मलीनें मल्लि जिणंदनी, शिर धारी छे आण ॥ नि० ॥ ६ ॥ जीरे तेमाटे तुम वीनवुं, वारो तेह अशेष ॥ द्यो सौभाग्य स्वरूपनें, सुखलब्धि विशेष ॥ नि० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवनं राग प्रभातीमां ॥

॥ जागे सो जिनभक्त कहावे, सोवे सो संसारी

हे ॥ कर्म कलंककी कीच लइ है, ताथें लयो भ्रम लारी हे ॥ जा०॥१॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, स्थावर करुणा कारी है ॥ कूडी साख कथन नही कूडा, बोले बोल विचारी है ॥ जा० ॥ २ ॥ थापण मोसो अदत्त न लेवे, चोरी मारी निवारी हे ॥ पंच साखें पाणिग्रहण करीने, अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी हे ॥ ॥ जा० ॥ ३ ॥ स्नान प्रमित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धारी है ॥ रूपचंद समकितके लछन, ताकूं वंदना हमारी है ॥ जा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवने समताविषे शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अति ऊंडो मरम विचारीयें ॥ हांरे तुमें कुमतिके घर जावो छो, तुमें कुलमां खोट लगावो छो, धिग एठ जगतनी खावो छो ॥ हो० ॥ १ ॥ अमृत त्यागी विष पीयो छो,कुमतिनो मारग लीयो छो,ए तो काज अयुक्त कीयो छो ॥ ॥ हो० ॥ २ ॥ ए तो मोहरायकी चेटी छे, शिवसंपत्ति एहथी छेटी छे, एतो साकर गलती पेटी छे ॥ ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी छे, किणी विध ए चित्त लावी छे, एतो दाहण जगमां चावी छे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सद्गु रूढि तमारी खाए छे, करी कामण चित्त लरमाए छे, तुम पुण्ययोगें ए पाए छे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आंब काज बाउल बोवो, अनुपम लव विरथा नवि खोवो, अब खोल नयण

प्रगट जोवो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इणविध समता बहु समजाए, गुण अवगुण कइ सहु दरसाए ॥ सुणी चिदानंद निज घर आए ॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ देव निरंजन जव जय जंजण, तत्त्व ज्ञानका दरिया रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनःपर्यव, केवल ज्ञानें जरिया रे ॥ देव० ॥ १ ॥ काम क्रोध लोह म त्वर मारण, अष्ट करमकूं हणीयां रे ॥ चारे नारी दूर निवारी, पंचम सुंदरी वरिया रे ॥ देव० ॥ २ ॥ दरिसन ज्ञान एक रस जाकूं, क्षीरोदधि ज्युं जरिया रे ॥ रूपचंद प्रजु नामकी नावा, जो बेठा सो तरिया रे ॥ देव० ॥ ३ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे आज दिवस जलें उगीयो, जीरे आज थयो सुविहाण ॥ पास जिणेसर जेटीया, थयो आनंद कुशल कल्याण हो साजन ॥ सुखदायक जाणी सदा, जवि पूजो पास जिणंद ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीरे त्रिकरण शुद्धियें त्रिहु समे, जीरे निसिही त्रण संजार ॥ तिहुं दिशि निरखण वर्जीनें, दीजें खमासमण त्रण वार ॥ हो साजन० ॥ २ ॥ जीरे चैत्य वंदन चोवीशनो, जीरे स्वरपद वर्ण विस्तार ॥ अर्थ चिंतन त्रिहुं कालनां, जिन नाथ निक्षेपा चार हो ॥ साजन० ॥ ३ ॥ जीरे श्रीजिन पद फरसे लहे, कलि मलिनतें पद कल्याण ॥ ते वलि अजर अमर

हुवे, अपुनर्नव शुच निर्वाण हो ॥ सा० ॥ ४ ॥ जी
रे लोह नाव मूकी परो, जीरे पारस फरस पसाय ॥
थाय कल्याण कुधातुथी, तिम जिनपद मोक्ष उपाय
हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीरे उत्तम नारी नर घणा, जी
रे मन धरी नक्ति उदार ॥ आराधी जिनपद नलुं,
थाये जिन करे जग उपगार हो ॥ सा० ॥ ६ ॥ जी
रे एहवुं मन निश्चल करी, जीरे निशिदिन प्रभुने ध्या
य ॥ पामे सौनाग्य स्वरूपनें, निवृत्ति कमलावर था
य हो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति जिनेसर साहिबा रे, शांति तणो दातार ॥
सलूणा ॥ अंतरजामी गो माहरा रे, आतमना
आधार ॥ स० ॥ शांति० ॥ १ ॥ चित्त चाहे प्रभु
चाकरी रे, मन चाहे मलवाने काज ॥ स० ॥ नयण
चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिसण माहाराज ॥स०॥
शांति० ॥ २ ॥ पलक न विसरो मनथकी रे,
जेम मोरा मन मेह ॥ स० ॥ एक पखो केम रा
खीयें रे, राज कपटनो नेह ॥ स० ॥ शांति० ॥ ३ ॥
नेह नजर निहालतां रे, वाधे बमणो वान ॥ स० ॥
अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजियें वंछित दा
न ॥ स० ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आश करे जे कोइ आ
पणी रे, नही मूकीयें नीराश ॥ स० ॥ सेवक जा
णी ने आपणो रे, दीजियें तास दिलास ॥ स० ॥
शांति० ॥ ५ ॥ दायकने देतां थकां रे, कृण नवि

लागे वार ॥ स० ॥ काज सरे निज दासनां रे, ए मो
होटो उपगार ॥ स०॥ शांति०॥ ६ ॥ एवुं जाणीने जग
धणी रे, दिलमांहि धरजो प्यार ॥ स० ॥ रूपविजय
कवि रायनो रे, मोहन जयजयकार ॥स०॥शांति०॥ ७॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ रे वंदन आयो ॥ ए आंकणी ॥ बाजत जेरी
भुंगल सुर डुंडुजि, नाद सुरपति जायो रे ॥ वंदन
आयो० ॥ १ ॥ ऐरावत गज सप्तसूंढ शिर, कम
लहि गयो ॥ कमल कमल जिन जुवन जुवन, नाट
क बनायो रे ॥ वं० ॥ २ ॥ सुधर्म ईशान सनत म
हेंद्र, आदिदश सवायो ॥ वीश जुवनपति त्रीश दोय,
व्यंतर बनायो रे ॥ वं० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज दोय
ज्योतिषि चोशठ, आय वीर वधायो ॥ वंदत सुरप
ति विधि लेई, जावना जायो रे ॥ वं० ॥ ४ ॥ सम
वसरण श्रीवीरजिणंद, त्रिहुं कोट रचायो ॥ देशना
सरस सुधारस देई, जविक मन लोजायो रे ॥ वं० ॥५॥
इत नरपति दसार्णजद्र जड, तेज सवायो ॥ देखत सु
र रूद्धि मान गोडी, निज संजम पायो रे ॥वं०॥६ ॥
धनधन शासन जैनधर्म, धनवीर जिनरायो ॥ संघ
सकल सुखदाय पाय, जयरामें गायो रे ॥ वं० ॥ ७॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ सद्गुरुने चरणे नमी, गायशुं गोडी राय ॥ माहारा
वाला ॥ एकल मल्ल यलरो धणी, देखतां सुख थाय
॥ माहारा०॥ १ ॥ वामाजीनो कुंअर लाडलो, जोवा

मुज मन थाय ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ देवघणा धरणी तलें, ते दीठा न सुहाय ॥ मा० ॥ वा० ॥ १ ॥ अ खीयां प्यासी थइ रही, देखण प्रनु मुख लाल ॥ मा० ॥ अंतरजामी माहेरा, महेर नजरशुं निहा ल ॥ मा० ॥ वा० ॥ २ ॥ यात्रा करणनी होंश ढे, बहु दिननी मनमांहे ॥ मा० ॥ हुकम करो प्रनुजी हवे, आवुं धरिय उन्नाहे ॥ मा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ दूर देशांतर जइ रह्या, तेनां दरिसण सरज्यां थाय ॥ मा० ॥ आस विलुब्धा मानवी, रात दिवस गुण गा य ॥ मा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ समरथ साहिबजी हवे, उलंग कीजें तास ॥ मा० ॥ प्रापति होय तो पामीयें, नाग्य फले सुविलास ॥ मा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तुम वि ण कहो कोण सांनले, सेवकनी अरदास ॥ मा० ॥ जाणुं हुं सही आपशो, मनवांढित सुख वास ॥ मा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ कूडा कलियुगमां प्रनु, परता पूरण हार ॥ मा० ॥ मारगमां सानिध करो, आप थई अ सवार ॥ मा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ नक्तिना रंग अनेक ढे, साहिब सुगुण सुजाण ॥ मा० ॥ मन मोहन जगजी वना, प्रनुजी मुज महिराण ॥ मा० ॥ वा० ॥ ए ॥ प्रत्य क्ष गोडी पासजी, अरिदल नंजणहार ॥ मा० ॥ वाचक सहज सुंदर तणो, नितलान जय जय कार ॥ मा० ॥ वा० ॥ १० ॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवनं ॥

॥ सुरत सुविधि जिणंदनी रे लो, महिमावंत प्र

धान ॥ माह्हारा वाल्लाजी रे ॥ तुमने अमारी वंदना रे लो ॥ नयण पावन थयां देखतां रे लो, गुण अनंत नगवंत ॥मा०॥ हवे न बोडुं तह्हारी चाकरी रे लो ॥१॥ वामा राणीना नंदना रे लो, सांजल दीनना नाथ ॥ मा० ॥ तुम० ॥ प्रेम धरी सेवा करूं रे लो, हवे न बो डुं तारो साथ ॥ मा० ॥ हवे० ॥ २ ॥ सोना रूपानां फूलनी रे लो, आंगी बनावुं सार ॥ मा० ॥ तु० ॥ नाच करुं प्रनु आगलें रे लो, मादलना धोंकार ॥ ॥मा०॥हवे०॥३ ॥ अमने ते शिवसुख आपजो रे लो, शुं कहुं वारोवार ॥ मा० ॥ तु० ॥ आतम अ नुनव ध्यानथी रे लो, लहीयें वंबित सार ॥ मा० ॥ ॥ हवे० ॥ ४ ॥ मनना मनोरथ माह्हरा रे लो, सफल थया सहु आज ॥ मा० ॥ तु० ॥ नित्यलान प्रनु पद सेवतां रे लो, सीधां सघलां काज ॥ मा०॥हवे० ॥५॥

॥ अथ सिद्धस्वरूप परिकर विपक्षत्याग स्तवनं ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें. रंग लागो मोरी सज नी ॥ ए आंकणी ॥ केली करंतां गइ नवि जाणी, आ जूनी रजनी जी ॥ अवि० ॥ १ ॥ मान सरोवर हंस तणी परें, मुक्ति तणा गुण चुगताता ॥ ज्ञान वन की कुंज गलिनमें, आतमराम रमताता ॥ अवि०॥ ॥ २ ॥ सासू कुमति कामणगारी, ससरो लोन धू तारो जी ॥ पिता मोह्ह बे महापापियो, माया मात वगारी जी ॥ अ० ॥ ३ ॥ क्रोध पाडोसण केड न मेले, कंदर्प देवर मीठो जी ॥ विषय वासना गइ दे

राणी, तिहां अविनाशी दीठा जी ॥ अवि० ॥ ४ ॥ एटलाने अलगाज करीने, कंत तणा कर झाल्या जी ॥ अविनाशी वाह्लाशुं रमतां, मोह मच्छर मद गाल्या जी ॥ अवि० ॥ ५ ॥ बावना चंदनथी अति शीतल, नाथ निरंजन वाणी जी ॥ रूपचंद रस प्रेमें पीतां, तिहांथी प्रीति बंधाणी जी ॥ अवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन प्रभाती स्तवनं ॥

॥ ऊठो ऊठो रे मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइयें रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रभुजीनुं दरिसण छे अति दोहेलुं, ते किम सोहेलुं जाणो रे ॥ वार वार मानव भव जेहवो, मलवो मुशकिल टाणो रे ॥ ऊठो० ॥ १ ॥ चार दिवसनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विणसी जातां वार न लागे, काया गढ छे काचो रे ॥ ऊठो० ॥ २ ॥ हीरो हाथ अमूलक पायो, मूढ पणे मत गमजो रे ॥ सहज सलूणा पास जिणंद शुं, राजी थइ चित्त रमजो रे ॥ ऊठो० ॥ ३ ॥ अनंतगुणें करी भरिया जिनवर, पूरव पुण्यें पायो रे ॥ ते देखीनें म्हारा मनमां, आनंद अधिक सोहायो रे ॥ ऊठो० ॥ ४ ॥ मनगत मोरा आतम, राम करजो सुकृत कमाई रे ॥ लाभ उदय जिणचंद लइने, वरते सिद्ध सवाई रे ॥ वर्त्ते आनंद वधाई रे ॥ ऊ० ॥ ५ ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तवनं ॥ राग प्रभाती ॥

॥ चालोने प्रीतमजी प्यारा, शेत्रुंजे जइयें ॥ शेत्रुंजे जइयें रे स्वामी, शेत्रुंजे जइयें ॥ चालो० ॥ ए आंक

णी ॥ शुं संसारें रह्या छो मूंझी, दिन दिन तन छीजे ॥ आथ आजनी छाया सरिखी, पोतानी कीजें ॥ चा० ॥ १ ॥ जे करवुं ते पेहेलां कीजें, कालें शी वातो ॥ अणचिंतवी आवी पडशे, सबलानी लातो ॥ चा० ॥ ॥ २ ॥ चतुराईशुं चित्तमां चेती, हाथे ते साथें ॥ मरण तणा नीशाणां महोटां, गाजे छे माथे ॥ चा० ॥ ॥ ३ ॥ मात मरुदेवानंदन निरखी. नव सफलो कीजें ॥ दानविजय साहेबनी सेवा, ए संबल लीजें ॥ चा० ॥ ४ ॥

॥ अथ पद्मप्रजिन स्तवनं ॥

॥ रुषज जिनेसर प्रीतम माहरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ कागलीयो किरतार जणी शी परें लिखुं रे, कवि पूछे कर जोड ॥ जिम तिम लखतां हाथ वहे नही रे, लखवानो पण कोड ॥ का० ॥ १ ॥ सैंगो माणस शिवपुर चालतो रे, न मले इण कलि काल ॥ प्रजु लगे सपगो पोहोंची सके नही रे, निपगानो जंजाल ॥ का० ॥ २ ॥ हाथ न झाले कागल केहनो रे, कहो केम वाधे नेह ॥ अलवे ते पाछो उत्तर नवि लखे रे, साहेबीयो निसनेह ॥ का० ॥ ३ ॥ एह निरंजन ते किम रंजीयें रे, जो लिखुं विनती लाख ॥ दूरथकी सेवक हुं थइ रहुं रे, लेइ सहुनी साख ॥ का० ॥ ४ ॥ एक पखी जो जाणो पालशुं रे, पदम प्रजुशुं प्रीत ॥ तो कागल जिनराजमां मूकजो रे, इण घर एहीज रीत ॥ का० ॥ ५ ॥ इति पद्म प्रजजिन स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन छंद ॥

॥ सकल सुखाकर जिनवरराय, नवियण वंदो पासजीना पाय ॥ नामें नवनिधि होये वली, पूज्यां पातक जाये टली ॥ १ ॥ नयरी वणारसी अश्वसेन राय, वामादेवी जेहनी माय ॥ सतीय शिरामणि रूपनिधान, जिणे जन्म्या प्रजु पार्श्व प्रधान ॥ २ ॥ अंगे आंगी दीपे अति सार, रत्नजडित शिर मुकुट उदार ॥ काने कुंमल बांहे बेरखा, हार हीये सोहे नवलखा ॥ ३ ॥ इंद्रनील सम तनु दीपंत, तेजें शशिहर रवि जीपंत ॥ वदनकमल जस पूनम चंद, नयन कमल दीठे आनंद ॥ ४ ॥ वाघ सिंह गज जय सवि टले, जूत प्रेत व्यंतर नवि छले ॥ रोग सोग दुःख वारणहार, पासजीने नामें नित जय जयकार ॥ ५ ॥ अंचलगछें उदयो जाण, धर्म मूर्त्ति सूरि जगजाण ॥ तास तणा वाचकवर शिष्य, वंदूं राजमूर्त्ति गणि मुख्य ॥ ६ ॥ तास शिष्य पंमित कलट धरी, स्तवन रच्युं में खंतें करी ॥ विजयसागर मुनि पजणे मुदा, स्तवन जणे तस घर संपदा ॥ ७ ॥

॥ अथ वैराग्यसद्याय ॥

॥ ईआ मेवासमें बे, मरदो मगन जया मेवासी ॥ कायारूप मेवास बन्यो है, माता ज्युं मेवासी ॥ साहेबकी शिर आण न माने, आखर क्या ले जासी ॥ ई० ॥ १ ॥ खाई अति दुर्गंध खजाना, कोटमां बहुंतेर कोठा ॥ वणसी जातां वार न लागे, जैसा

जल पपोटा ॥ ई० ॥ २ ॥ नव दरवाजा वहे निरंतर, दुखदायी दुर्गंधा ॥ क्या उसमें तल्लीन नया है, रे रे आतम अंधा ॥ ई० ॥ ३ ॥ छिनमें छोटा छिनमें मोहोटा,छिनमें छेह दिखावी ॥ जब जमरेकी नजर लगेगी, तब छिनमें उड जासी ॥ ई० ॥ ४ ॥ मुलक मुलककी मली लुगाई, बोहोत करी फरीयादी ॥ पण मुजरो माने नही पापी, अति छाक्यो उन्मादी ॥ ई० ॥ ॥ ५ ॥ सारा मुलक मेव्या संतापी, काम करोडी कोटो ॥ लोन तलाटी लोचा वाले, तो किम नावे तोटो ॥ ई० ॥६॥ उदयरत्न कहे आतम मेरा,मेवासीपणुं मेलो ॥ जगवंतने जेटो जली जांतें, मुक्तिपुरीमें खेलो ॥ ई० ॥ ७ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ रातां जेवां फूलडां ने, सामंल जेवो रंग ॥ आज तारी अंगीनो कांई, रूडो बन्यो रंग ॥ प्यारा पासजी हो लाल, दीनदयाल मुने नयणें निहाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जोगीवाडे जागतो ने,मातो धिंगड मल्ल ॥ शामलो सोहामणो ने, जीत्या आठे मल्ल ॥ ॥ प्या० ॥ २ ॥ तुं छे मोरो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास ॥ आश पूरो दासनी कांई, सांजली अरदास ॥ प्या० ॥ ३ ॥ देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अवल्ल ॥ लाखेणुं छे लटकुं तहारुं, देखी रीझे दिल्ल ॥ प्या० ॥ ॥ ४ ॥ कोइ नमे पीरनेने,कोई नमे राम ॥ उदयरत्न कहे रे प्रजु, मारे तुमशुं काम ॥ प्या० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ सकल सुखाकर, शांति जिनेसर राय ॥ हरषें गुण गाइश, वांदीश प्रनुजीना पाय ॥ १ ॥ हथिणा उर नयरी, विश्वसेन नूपाल ॥ राणी अचिरा देवी, शियलगुणें सुविशाल ॥ २ ॥ तस कूखें उपना, स्वामी ते शांति जिणंद ॥ जन्ममहोत्सव आव्या, सुर नर चोशठ इंद ॥ ३ ॥ नर जोबन पाम्या, रायनी रुद्धि अनंत ॥ दइ दान संवछरी, दीक्षा ले नगवंत ॥ ४ ॥ वली केवल पाम्या, लाख वरषनी आय ॥ अणसणशुं पोहोता, समेतशिखर सिद्ध थाय ॥ ॥ ५ ॥ नमो शांति जिनेश्वर, नविक जीव हितकारी ॥ नणे वाचक शंकर, देजो सेव तुमारी ॥६॥ इति॥

॥ अथ श्रीआबूजीनुं स्तवन ॥

॥ आबू पर्वत रुअडो रे लाल, ऊंचो ते गाउडा बार रे ॥ आदीसर देव ॥ पाए चढतां दोहिलो रे लाल, जिहां नथी पुण्यनो पार रे ॥ आ० ॥ आबू० ॥ ॥१॥ ए आंकणी ॥ पहेलां आदीसर जुहारीयें रे लाल, पछें सहु परिवार रे ॥ आ० ॥ वलता नेमीसर जुहारीयें रे लाल ॥ मुक्ति तणो दातार रे ॥ आ० ॥ आबु० ॥ २ ॥ देरा सामां दोय जोडलां रे लाल ॥ विमल महेतो चड्या तुरंग रे ॥आ०॥ वस्तुपाल तेजपालना जोडलां रे लाल, चामर ढले दोय अंग रे ॥ ॥ आ० ॥ आबू० ॥ ३ ॥ देराणी जेठाणीना आरीया रे लाल, खरच्या ते लाख अढार रे ॥ आ०॥ रूपा ब

रोबर कोरणी रे लाल, सोनुं घडे सोनार रे ॥ आ०
॥ आबू० ॥ ४ ॥ एकावन उरसीया जला रे लाल,
सूखड केशर चंग रे ॥ आ० ॥ चंपा सेवंत्रीना जा
डुवां रे लाल, जाणे प्रियशुं प्रीतम रंग रे ॥ आ० ॥
॥ आबू० ॥ ५ ॥ अचल गिरि वधामणा रे लाल, चौमु
ख प्रतिमा चार रे ॥ आ०॥ वलि वलि सेवक वीनवे रे
लाल, आवागमण निवार रे ॥ आ०॥ आबू०॥ ६ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लागो मेरो पारस प्रजुजीसें ध्यान ॥ लागो० ॥
मुगता गिरि पर आप बिराजे, फरकत ऊरीय निशा
न ॥ ला० ॥ १ ॥ बारा व्रत तप बाह्य अभ्यंतर,
समकित जाव धरान ॥ ला० ॥ २ ॥ नेमीचंद कहे
सुनो जाइ श्रावक, आपहीं आप पीछान ॥ ला०॥३॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति मिलनकी आश हो ॥ जीया मानुवे ॥
शांति० ॥ शांति मेरा वारी में शांतिको, ज्युंरे फूलन
बिच बास हो ॥ जीया मा० ॥ १ ॥ निशि दिन प्रजु
जीको ध्यान धरत हुं, जब लग घटमें सास हो ॥
जी० ॥ २ ॥ शांति जिणंदजीके चरनकी सेवा, गावे
गुलाबचंद दास हो ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ रूषजस्तवनं ॥

॥ नैना सफल जई, में निरख्या नाजि कुमार, अ
खीयां सफल जई ॥ में० ॥ जवो जव जटकत सर
न हूं आयो, अब तो राखोने मोरी लाज ॥ नैना० ॥

में०॥ १ ॥ रोम रोम आनंद नयो मेरे, अशुन करम गये नाज ॥नैना०॥में०॥ २ ॥ और चाहन कबु रह्यो नही मेरे, पायक गजरथ वाज ॥ नैना० ॥में०॥ ३ ॥ रामचंद्र प्रनु एह मागत है, लोक शिखरको राज ॥ ॥ नैना० ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ विमलाचल विमला प्राणी, शीतल तरु ठाया ठेराणी, रस वेधक कंचन खाणी, कहे इंद्र सुणो इंद्राणी ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो, चौद खेत्रमां ती रथ न एहवो ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो ॥ १ ॥ए आंकणी ॥ ठरी पालीने उल्लसीयें, ठठ अठम काया कसीयें, मोह मल्लनें सामा धसीयें, विमलाचल वेहेला वसियें ॥ सनेही० ॥ २ ॥ अन्य थानक कर्म जे करीयें, ते हेमगिरि हेठ हरीयें, बे पोलें प्रदक्षिणा फरीयें, नवजलधि हेला तरीयें ॥ सनेही० ॥ ३ ॥ शिवमंदिर साधवा काजें, सोपाननी पंक्ति बिराजे, चढंता दृढ समकित ठाजे, दुर्नव्य अनव्य ते लाजे ॥ सनेही० ॥ ४ ॥ पांमव पमुहा केई संता, आदीसर ध्यान धरंता, परमातम नावें नजंता, सिद्धाचल सीधा अनंता ॥ सनेही० ॥ ५ ॥ षट मासी ध्यान धरावे, शुकराजा राज्य ते पावे, देहांतर शत्रु हरावे, शत्रुंजय नाम धरावे ॥ सनेही० ॥ ६ ॥ प्रणिध्यान धरो ए गिरि साचो, तीर्थंकर नाम निकाचो, मोहरायने लागे तमाचो,शुनवीर विमलगिरि साचो॥सनेही०॥ ७

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल सिद्ध सुहावे, अनंत अनंत कहावे, भेद पंदरथी शिव जावे, गुण अगुरु लघु निपजावे रे॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ गिरिराज तणा गुण गावो रे, जो होवे शिवपुर जावो रे ॥ विम० ॥ १ ॥ ए आं कणी ॥ जितारी अभिग्रह लीधो, दिन सातमे भोजन कीधो ॥ शुक राजायें राज ते लीधो, शत्रुंजय नाम ते दीधो रे ॥ वि० ॥ २ ॥ देव दानव इण गिरि आवे, जिनराजने शीश नमावे, सूत्रमांहे नाच नचावे, जोगावंचक फल पावे रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ विद्याचार ण मुनि वरिया, मर्कट फल जल संचरिया, आका शें पवनसें चलिया, देखी हेमगिरि हेग उतरिया रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रभु देखीने आनंद पावे, जिनराजने शीश नमावे, देव साथें भावना भावे, पछी इच्छित स्थानकें जावे रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ ग्यान दर्शन जेहथी लहियें, नवमो श्रावकगुण वहियें, संसारनी रीतें र हियें, जिन शासन तीरथ कहियें रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ सहु तीरथनो ए राजा, सूर्यकुंममां जल ताजां, ना हातां जिन आनंद भाजा, हुउ कूकडो ते चंदराजा रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ ए तीरथ भेटण काजें, गुजरात नो संघ समाजें, पंथें पंथें विसामो गाजे, गिरि दे खी वधावे उल्लासें रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ अढार तिहुंते रा वरसें, मार्गशिरवदि तेरश दिवसें, भेट्या आदीस र उल्लसें, जाणुं भवजल पार उतरशे रे ॥ वि० ॥

॥ ए ॥ गिरि देखी लोचन ठरियां, चक्केसरी वीर केश रीया, जाय केतकी वृक्ष लहेरीयां, शेत्रुंजे नदी जल नरीयां रे ॥ वि० ॥ १० ॥ राय नरत रतन बिंब ठावे, चक्केसरी यात्रा करावे, ते त्रीजे नवें शिव जावे, शुन वीर वचन रस गावे रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ कर्म उपर सज्झाय प्रारंनः ॥

॥ देवदाणव तीर्थंकर गणधर, हरिहर नरवर सबला ॥ कर्म संयोगें ते सुख दुःख पाम्या, सबल हुआ महा निबला रे ॥ प्राणी कर्म समो नही कोय ॥ कीधां कर्म विना नोगवीयां, बूटक बारो न होय रे ॥ प्राणी कर्म० ॥१॥ ए आंकणी ॥ आदीसरने अंतराय विटंब्यों, वर्ष दिवस रह्या नूखें ॥ वीरने बार वर्ष दुःख दीधुं, उपना ब्राह्मणी कूखें रे ॥ प्राणी कर्म० ॥ २ ॥ शाठ सहस सुत मूआ एक दिन, सामत सूरा जैसा ॥ सगर हूउ महा पुत्रें दुखीयो, करम तणां फल एसा रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ बत्रीश सहस देसांरो साहेब, चक्री सनतकुमार ॥ शोल रोग शरीरें उपना, करमें कीयो तस खुवार रे ॥ प्राणी० ॥ ॥ ४ ॥ सुनूम नामें आठमो चक्री, कर्में सायर नाख्यो ॥ पच्चीस सहस यक्षें उना दीठे, पण किणहीं नवि राख्यो रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त नामें बारमो चक्री, कर्में कीधो अंधो ॥ एम जाणी प्राणी विण कामें, कर्म कोई मत बंधो रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ वीश नुजा दश मस्तक हूता, लखमणे रावण मा

ख्यो ॥ एकलडे जग सहुने जीत्यो, कर्मथी ते प
ण हाख्यो रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ लखमण राम म
हा बलवंता, वली सत्यवंती सीता ॥ बार वरस लगें
वनमांहे जमिया, वीतक तस बहु वीतां रे ॥ प्रा
णी० ॥ ८ ॥ छपन्नकोड यादवरो माहेब, कृष्ण म
हाबलि जाणी ॥ अटवीमांहे एकलडो मूउ, वह व
लतो विण पाणी रे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥ पांमव पांच म
हा जूजारा, हारी डौपदी नारी ॥ बार वरस लगें व
न डुःख दीठां, जमिया जेम जिखारी रे ॥ प्राणी० ॥
॥ १० ॥ सतीय शिरोमणी डौपदी कहियें, ए सम
अवर न कोय ॥ पंच पुरुषनी थई ते नारी, पूरव क
र्मेशुं होय रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ कर्मे हलंको कीधो
हरिचंदने, वेची तारा राणी ॥ बार वरस लगें माथे
आण्युं, नीच तणे घर पाणी रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥
दधिवाहन राजानी बेटी, चावी चंदन बाला ॥ चो
पदनी परें चउटे वेचाणी, करम तणा ए चाला रे ॥
प्राणी० ॥ १३ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे
बांध्यो मुसके ॥ धर्मी नरपति कर्मे दबाया, करमथी
जोर न किसके रे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥ ईश्वरदेवने
पार्वती राणी, करता पुरुष कहेवाय ॥ अहोनिशि
समसाणमांहे वासो, जिक्षा जोजन खाय रे ॥ प्राणी०
॥ १५ ॥ सहसकिरण सूरज परतापी, रात दिवस
रहे जमतो ॥ शोलकला ससिहर जग जाचो, दिन
दिन जाये घटतो रे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥ एम अने

क नर खंमथा कर्मै, नल नलेरा जे साज ॥ ऋद्धिहर्ष करजोडिने कहे, नमो कर्म महाराज रे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥ इति कर्म सद्याह्

॥ अथ आत्मप्रबोध सद्याय ॥

॥ जीव क्रोध म करजे, लोन म धरजे, मान म लाईशन्नाइ॥कूडां करम म बांधीश, धर्म म चूकीश, विनय म मूकीश ॥ न्नाई रे जीवडा ॥ दोहिलो मानव नव लाधो ॥ तुमे कांई करी तत्त्वने साधो रे न्नाला ॥ दोहि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पठवाडे देरासर जातां, वीश विमासण थाय ॥ नूख्यो तरश्यो राउल रातें, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवडा दोहि० ॥ २ ॥ धर्म तणी पोसालें चाल्या, सुणवा सद्गुरु वाणी ॥ एक वात करे बीजो उठी जायें, नयणे निंद नराणी रे ॥ जीव० ॥ ३ ॥ नामें बेठो लोनें पेठो, चार पोहोर निशि जाग्यो ॥ बे घडीनुं पडिक्कमणुं करतां, चोखो चित्त न राख्यो रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ आठम चउदश पूनम पाखी, पर्व पर्यूषण सारो ॥ बे घडीनुं पच्चख्काण करंतां, एक बीजाने वारो रे ॥ जीव०॥५॥ कीर्त्ति कारण पगरण मांमी, अरथ गरथ सवि लूंटे, पुण्यने काजें पारकुं पोतानुं, गांठडीयें न वी छूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घडाव्यां, पहेरण आठ वाघा ॥ दश आंगुली दश वेढ ज पहेख्या, निर्वाणें जावुं ठे नागां रे ॥ जीवडा० ॥ ॥ ७ ॥ वांको अक्षर माथे मींडुं, नीलवट आघो

चंदो ॥ मुनि लावण्य समय इम बोले, ए त्रण काले वंदो रे ॥ जी॰ ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमिनी सझाय प्रारंभः ॥

॥ काउस्सग्गथकी रे रहनेमि, राजुल निहाली ॥ चित्तडुं चलियुं तव बोले नार रे ॥ देवरिया मुनिवर, ध्यानमां रेजो ॥ ध्यान थकी होये भवनो पार रे ॥ ॥ देव॰ ॥ १ ॥ उत्तम कुलना यादव कुल रे अजुआली, लीधो छे संयम भार रे ॥ देव॰ ॥ हुं रे व्रती रे तुं छे संयम धारी, जाशो सरवे व्रतहारी रे ॥ देव॰ ॥ ॥ ध्या॰ ॥ २ ॥ विषधर विष वमी आप न लेवे, करे पावक परिचार रे ॥ देव॰ ॥ तुझ रे बांधव नेमजीयें मुजने रे वामी, वम्यो न घटे तुमने आहार रे ॥ देव॰ ॥ ध्या॰ ॥ ३ ॥ नारी अछे रे जगमां विषनी रे वेली, नारी छे अवगुणनो भंमार रे ॥ देव॰ ॥ नारी मोहें रे मुनिवर जेह विगूता, ते नवि लहे भव पार रे ॥ देव॰ ॥ ध्या॰ ॥ ४ ॥ नारीनुं रूप देखी मुनिने न रहेवुं, ए छे आगममां अधिकार रे ॥ देव॰ ॥ नारी निःसंगी तेतो मुनिवर कहीयें, न करे फरी संसार रे ॥ ॥ देव॰ ॥ ध्या॰ ॥ ५ ॥ एरे सतीनां मुनिवर वयण सुणीने, पाम्या भव प्रतिबोध रे ॥ देव॰ ॥ नेमजी भेटीने फरी संयम लीधो, कर्यो छे आतम शोध रे ॥ देव॰ ॥ ध्या॰ ॥ ६ ॥ धन्य रे सती रे जेणें मुनि प्रतिबोध्या, धन धन ए अणगार रे ॥ देव॰ ॥

ए रे वसता रे मुनिवर वयण सुणीने, फरी न करे संसार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशालिभद्रनी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ प्रथम गोवालिया तणे नवें जी रे, दीधुं मुनिवर दान ॥ नयरी राजगृही अवतस्यो जी, रूपें मयण समान ॥ सोभागी रे शालिभद्र भोगी रे होय ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ बत्रीश लक्षण गुणें नस्यो जी रे,परण्यो बत्रीश नार ॥ माणसने नवें देवनां जी रे, सुख विलसे संसार ॥ सो० ॥ २ ॥ गोभद्रशेठ तिहां पूरवे जी रे, नित नित नवला रे भोग ॥ करे सुभद्रा नवारणां जी रे, सेव करे बहु लोग ॥ सो० ॥ ॥ ३ ॥ एक दिन श्रेणिक राजियो जी रे, जोवा आव्यो रे रूप ॥ अंग देखी सकोमलां जी रे, थयो मन हरखित नूप ॥ सो० ॥ ४ ॥ वळ वैरागी चिंतवे जी रे, मुऊ शिर श्रेणिक राय ॥ पूरव पुण्य में नवि कियां जी रे, तप आदरशुं माय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इणे अवसरें श्रीजिनवरू जी रे, आव्या नयरी उद्यान ॥ शालिभद्र मन ऊजम्यो जी रे, वांद्या प्रभुजीना पाय ॥ सो० ॥ ६ ॥ वीरतणी वाणी सुणी जी रे, वूठो मेह अकाल ॥ एकेकी दिन परिहरे जी रे, जिम जल ठंडे पाल ॥ सो० ॥ ७ ॥ माता देखी टल वले जी रे, माछलडी विण नीर ॥ नारी सघली पायें पडे जी रे, म म ठंडो साहस धीर ॥ सो० ॥ ८ ॥ बहुअर स

घली वीनवे जी रे, सांनल सासु विचार ॥ सर ठांभी पालें चड्यो जी रे, हसलो ऊमण हार ॥ सो० ॥ ए ॥ इण अवसर तिहां नावतां जी रे, धना शिर आंसु पडंत ॥ कवण डुःख तुऊ सांनछुं जी रे, कंचुं जोइ कहंत ॥ सो० ॥ १० ॥ चंइमुखी मृगलोचनी जी रे, बोलावी नरतार ॥ बंधव वात में सांनली जी रे, नारीनो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ धनो नणे सुण वेलडी जी रे, शालिनइ पूरो गमार ॥ जं मन आएयुं ठंमवा जी रे, विलंब न कीजें लगार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कर जोडी कहे कामिनी जी रे, बंधव समो नही कोय ॥ कहेतां वातज सोहली जी रे, मूकतां दोहली होय ॥ सो० ॥ १३ ॥ जारे जा तें इम कह्यो जी रे, तो में ठंमी रे आठ ॥ पिउडा में हसतां कह्युं जी रे, कुणशुं करशुं वात ॥ सो० ॥ १४ ॥ इणे वचनें धनो नीसस्यो जी रे, जाणे पंचायण सिंह ॥ जइ सालाने साद कस्यो जी रे, धन्ना कठ अबीह ॥ सो० ॥ १५ ॥ काल आहेडी नित नमे जी रे, पूंठे म जोइश वाट ॥ नारीबंधन दोरडी जी रे, धव धव ठंमे निराश ॥ सो० ॥ १६ ॥ जिम धीवर तिम माठलो जी रे, धीवरें नाख्यो रे जाल ॥ पुरुष पडी जिम माठलो जी रे, तिमहिं अचिंत्यो काल ॥ सो० ॥ १७ ॥ जोबन नर बिहुं नीसस्या जी रे, पोहोता वीरजीनी पास ॥ दीक्षा लीधी रूअडी जी रे, पाले मन उल्लास ॥ सो० ॥ १८ ॥ मास खमणने पारणे जी रे, पूठे श्री

जिनराज ॥ अमनें शुद्धज गोचरी जी रे,लाभ देशे कुण आज ॥ सो०॥१ए॥ माता हाथे पारणुं जी रे,थाशे तुमने रे आज ॥ वीर वचन निश्चय करी जी रे, आव्या नगरीमांज ॥सो०॥२०॥ घरे आव्या नवि उलख्या जी रे, फरिया नगरी मझार ॥ मारग जातां महियारडी जी रे, सामी मलि तेणि वार ॥ सो० ॥ २१ ॥ मुनि देखी मन उल्लस्युं जी रे, विकसित थइ तस देह ॥ मस्तक गोरस सूजतो जी रे, पडिलाभ्यो धरि नेह ॥ सो० ॥ २२ ॥ मुनिवर वोहोरी चालिया जी रे, आव्या श्रीजिनपास ॥ मुनि संशय जइ पूछियो जी रे, माय न दीधुं दान ॥ सो० ॥ २३ ॥ वीर कहे तुमें सांभलो जी रे,गोरस वोहोरयो रे जेह ॥ मारग मली महियारडी.जी रे, पूर्व जन्म माय एह ॥ सो० ॥ २४ ॥ पूरव भव जिनमुखें लही जी रे, एकत्र भावें रे दोय ॥ आहार करी मुनि धारियो जी रे, अणसण शुद्धज होय ॥ सो० ॥ २५ ॥ जिन आदेश लही करी जी रे, चढिया गिरि वैभार ॥ शिला ऊपर जइ करी जी रे, दोय मुनि अणसण धार ॥ ॥ सो० ॥ २६॥ माता भद्रा संचस्यां जी रे, साथें बहु परिवार ॥ अंतेउर पुत्रज तणो जी रे, लीधो सघलो सार ॥ सो० ॥ २७॥ समवसरणें आवी करी जी रे, वांद्या वीर जगतात ॥ सकल साधु वांदी करी जी रे, पुत्र जोवे निजमात ॥ सो० ॥ २८ ॥ जोई सघली परषदा जी रे, नवि दीठा दोय अणगार ॥ कर जोडी

करे वीनति जी रे, जांखे श्रीजिनराज ॥ सो०॥२ए॥ वैजार गिरि जाइ चड्या जी रे,मुनिदरिसण उमंग ॥ सहु परिवारें परवस्या जी रे, पहोता गिरिवरशृंग ॥ ॥ सो० ॥ ३० ॥ दोय मुनि अणसण उच्चरी जी रे, जीले ध्यान मजार ॥ मुनि देखी विलखा थया जी रे, नयणें नीर अपार ॥ सो० ॥ ३१ ॥ गदगदशब्दें बोलती जी रे, मली बत्रीशे नार ॥ पिउडा बोलो बो लडा जी रे, जिम सुख पामे चित्त ॥ सो० ॥ ३२ ॥ अमे तो अवगुणें जस्या जी रे, तुं सही गुण जंमार ॥ मुनिवर ध्यान चूका नही जी रे, तेहने वचने लगार ॥ सो०॥३३॥ वीरा नयणें निहालियें जी रे,जिम मन थाये प्रमोद ॥ नयण उघाडी जोइयें जी रे, माता पा मे मोद ॥ सो० ॥ ३४ ॥ शालिजइ माता मोहनी जी रे, पोहोता अमर विमान ॥ महाविदेहें सीजशे जी रे,पामी केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ३५ ॥ धनो धर्मी मुक्तें गयो जी रे, पामी शुकल ध्यान ॥ जे नर नारी गावशे जी रे, समयसुंदरनी वाण ॥ सो० ॥ ३६ ॥

॥ अथ चोत्रीश अतिशयनो छंद ॥

॥ श्रीसुमतिदायक डुरितघायक, ज्ञान अनुजव श्रीवरी ॥ तसु सुगुरु केरा चरण प्रणमुं, युगम कर जोडी करी ॥ बहु जाव जक्तें थुएं जिनवर, चोत्रीशे अतिशय करी ॥ जे सुगुरु मुखथी सुण्या ते कहुं, आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ १ ॥ तिहां प्रथम अतिश य श्रीजिन केरा, रोम नख वाधे नही ॥ नीरोग निर्म

ल गात्र जेहनुं, द्वितिय अतिशय ए सही ॥ गोदूध सरिखां मांस लोही, तृतिय एह वखाणियें॥ चोथो ने उत्पल गंध सरिखो, श्वासोश्वास सो जाणियें ॥ २ ॥ आहार ने नीहार प्रछन, एह अतिशय पांचमो ॥ आकाशगत धर्मचक्र छठो, गगन छत्र ए सातमो ॥ रह्यां ते अंबर श्वेत चामर, युग्म अष्ट म ए कह्यो ॥ स्फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवमो अतिशय ए लह्यो ॥ ३ ॥ आकाशगत ध्वज सहस मंडित, इंद्रध्वज आगल चले ॥ ए दशम अतिशय कह्यो श्रुतमां, देखी परमत खलन्नले ॥ इग्यारमे वलि स्वामी ऊना, रहे वली बेसे जिहां ॥ सन्नाय स ध्वज देव ततक्षण, अशोकतरु विरचे तिहां ॥ ४ ॥ द्वादश अतिशय प्रनामंमल, पूठें रविकर जीपियें ॥ रमणीय सुंदर नूमि नागसो, तेरमो ए दीपियें ॥ अ धोमुख होये सर्व कंटक, चौदमे अतिशयवरू ॥ अ नुकूल थइने प्रणमे ऋतु सब, पंचदशमो सुखकरू ॥ ५ ॥ संवर्त्तपवनें नूमि पूंजे, योजन लगें ए शो लमे ॥ सुगंध वर्षा तिहां वरसे, प्रगट अतिशय सतर मे ॥ जानुप्रमाणे बीट नीचां, पंचवर्ण सोहामणां ॥ जल ने थलना फूल वरसे, अढारमे अतिशय घणां ॥६॥ अमनोज्ञ शब्दादिकह्वी नासे, उगणीशमे अतिश यें वली ॥ विशमे अतिशयें सुनक्ष थाये, एम कहे प्रनु केवली ॥ एकवीशमे प्रनु तणीय देशना, योजन लगें सवि जन सुणे ॥ बावीसमे धर्म अर्द्ध मागध, ना

पायें जिनजी नणे ॥ ७ ॥ त्रेवीशमे जिनवाणि जन
ने, हेतु शिवजणी परिणमे ॥ चोवीशमे प्रजु चर
ण मूले, वैर जंतुनां उपशमे ॥ अन्यलिंगी नमे जि
नने, पंचविंशति अतिशयें ॥ अन्य तीर्थी मौन था
ये, बवीशमे प्रजु निश्चयें ॥८॥ पणवीश जोयण लगें
जिनथी,ईती ने मारी नही ॥ स्वचक्र ने परचक्र न होए,
त्रीश अतिशय ए सही ॥ अतिवृष्टि ने अनावृष्टि डु
र्जिक्, त्रण ए नवि ऊपजे ॥ चोत्रिशमे वलि व्याधि
पीडा, आदि डुःख न संपजे ॥ ए ॥ चोत्रीश अति
शय एह कहिया, सूत्र समवायांगमां ॥ ते जणतां
गुणतां हिये धरतां, रहे आतम रंगमां ॥ निज शुद्ध
आतम रूप प्रगटे, जावशुं जो ध्याइयें ॥ दर्शनादिक
रत्न लहियें, परम पद सुख पाइयें ॥ १० ॥ अर्हंत
जगवंत तणा अतिशय, जणो आणी आसता ॥
बहु पुण्य करियें ध्यान धरियें, सुख लहियें शाश्वतां ॥
श्रीसूरिविद्या उदधि सेवक, शिष्य इणि परें संस्तवे ॥
मुनि ज्ञानसागर कहे प्रजुपद, सेवा मागुं जवो जवें॥ ११

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंज ॥

॥ हवे राणी पदमावती,जीवराशि खमावे ॥ जाण
पणुं जग ते जलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुक
मिबामि डुक्कडं, अरिहंतनी साख ॥ जे में जीव विरा
धिया, चउराशी लाख ॥ ते मुक० ॥ २ ॥ सात ला
ख पृथिवीतणा, साते अपकाय ॥ सात लाख ते
उकायना, साते वली वाय ॥ ते मुक० ॥ ३ ॥ दश

प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधार ॥ बी ति चउरिंदी जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता ति र्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउदह लाख मनुष्य ना, ए लाख चोराशी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण नवें परन वें सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं, डुर्गतिनां दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा की धी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारि मो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोन में की यां, वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जी व दूहव्या. दीधां कूडां कलंक ॥ निंदा कीधी पार की, रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ए ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, नलो आण्यो नरोंसो ॥ ते० ॥१०॥ खाटकीने नवें में कीया, जीव नानाविध घात ॥ चडीमार नवें चरकलां, मार्यां दिन रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ का जी मुल्लाने नवें, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक ऊ न्ने कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ मा छीने नवें माछलां, झाल्यां जलवास ॥ धीवर नील कोली नवें, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने नवें में कीया, आकरा करदंम ॥ बंदी वान मराविया, कोरडा छडी दंम ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने नवें, दीधां नारकी डुरक ॥ छेदन ने दन वेदना, ताडन अति तिरक ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुं

जारने जवें में किया, नीमाह पचाव्या ॥ तेली जवें तिल पीलिया, पापें पिंम जराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली जवें हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट ॥ सूम निदान घणां कियां, दीधा बलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जवें रोपिया, नानाविध वृक्ष ॥ मूल पत्र फल फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधोवाईयाने जवें, जस्था अधिका जार ॥ पोठी पूठें कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ ठीपाने जवें ठेतस्था, कीधां रंगण पास ॥ अग्नि आरंज कीधा घणा, धातुवाद अन्यास ॥ ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूफता, मास्यां माण सवृंद ॥ मदिरा मांस माखण जख्यां, खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उल्लेच्यां ॥ आरंज कीधा अतिघणा, पोतें पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया वली, घर में दव दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्लीजवें उंदर लीया, गिरोली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणे जवें, में जू लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ जाडजुंजा तणे जवें, एकेंड्रिय जीव ॥ ज्वारि चणा गहूं शेकिया, पाडंता रीव ॥ ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंज अनेक ॥ रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उदेक ॥ ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पांच प्रमाद ॥ इष्टवियोग पाड्या कीया, रूदन विषवा

द ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ल
हीने नांग्यां ॥ मूल अने उत्तर तणां, मुऊ दूषण ला
ग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चीवरा, शक
रानें समली ॥ हिंसक जीव तणे नवें, हिंसा कीधी
सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूवावडी दूषण घणां, वली
गर्ज गलाव्या ॥ जीवाणी ढोल्यां घणां, शील व्रत
नंजाव्यां ॥ ते० ॥ ३० ॥ नव अनंत नमतां थकां,
कीधा देह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, ति
णशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ नव अनंत नमतां थकां,
कीधा परिग्रह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं,
तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३२ ॥ नव अनंत नमतां
थकां, कीधा कुटुंबसंबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसि
रुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणि परें इह
नव परनवें, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविध त्रिविध
करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३४ ॥ ए
णि विधें ए आराधना, नावें करशे जेह ॥ समय
सुंदर कहे पापथी, वली बूटशे तेह ॥ ते० ॥ ३५ ॥ राग
वेराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे
पापथी, बूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आत्मशिक्षानावना ॥

॥ दोहा ॥ श्रीजिनवरमुखवासिनी, जगमें ज्यो
तिप्रकाश ॥ पदमासन परमेश्वरी, पूरे वंबित आश
॥ १ ॥ ब्रह्मसुता गुण आगली, कनक कमंमलु सा
र ॥ वीणापुस्तकधारिणी, तुं त्रिनुवन जयकार ॥ २ ॥

श्रीसरसति जिन पाय नमी, मन धरि हर्ष अपार ॥ आतम शिक्षा नावना, नणूं सुणो नर नार ॥ ३ ॥ रे जिव सुण तुं बापडा, हिये विमासी जोय ॥ आप स्वारथी सहु मल्युं, ताहारुं नहि जग कोय ॥४॥ धर्म विना सुण जीवडा, तुं नम्यो नव अनंत ॥ मूढ पणे नव तें किया, इम बोले नगवंत ॥ ५ ॥ लाख चोराशी योनिमां,फरी लियो अवतार ॥ एकेकी योनी वली, अनंत अनंती वार ॥६॥ चउद राज परमाण आ, सूई अग्रनाय गाम ॥ कर्मवशें जिव तुं न थो,मूरख चेतन ताम ॥७॥ निगोद सूक्ष्म बादरें, पुजल अनंत अपार ॥ एतो काल तुं तिहां रह्यो, हवे कर हैये विचार ॥८॥ श्वास उश्वासा एकमां, मरण सतर अंध कीध ॥ सूक्ष्म निगोदमांहे वली,ए जिन वचन प्रसीध ॥९॥ नरय विगलेंडी तिर्यगति, नव कीधा बहु हेव ॥ नुवनपति व्यंतर जोतिषी, उंर विमानिक देव ॥ १० ॥ इम नमतां नमतां लियो, मनुअ जनम अवतार ॥ मिथ्यात्वपणें नव निगम्या, काज न सीध लगार ॥ ॥ ११ ॥ जगमां जीव अछे बहु, एकशुं अनंतीवार ॥ विविधप्रकार सगपण कियां, हैया साथ विचार ॥ १२ ॥ तो कुण आपणुं पारकुं, कुण वेरी कुण मित्त ॥ राग द्वेष टाली करी, कर समता इक चित्त ॥ १३ ॥ पूर्व कोडिने आउखें, ग्यानी गुरुह अपार ॥ उत्पति कहि जिउं ताहरी, कहेतां नावे पार ॥ १४ ॥ पुत्र पिता पण अवतरे, पिता पुत्र पण

जोय ॥ माता सगपण नारि मली, नारी मा
ता होय ॥ १५ ॥ सूतो सुपन जंजालमां, पाम्यो
जाणे राज ॥ जब जाग्यो तब एकलो, राज न सीझे
काज ॥ १६ ॥ तिम ए कुटुंब सहू मल्युं, खोटी मा
या जाल ॥ आयू पहोंचे आपणे, खिण थाये वि
सराल ॥ १७ ॥ सोदो लेयण जण मिले, जिहां
जोडी सहि हाट ॥ आथ सारु विवसाय करी, फरि
चाल्या निजवाट ॥ १८ ॥ तिम भव भमतां सवि
मल्या, कुटुंब जोडि जो हाट ॥ पुण्य पाप विवसाय
करी, जो भतरियें घाट ॥ १९ ॥ इम कुटुंब मिल्युं
कारिमुं, माय अने वलि ताय ॥ बंधू भगिनी भार
जा, को केलनो न कहाय ॥ २० ॥ नव नव नाट
क तुं वली, नाच्यो करि बहु रूप ॥ नाटक एकशुं
नाचियो, जो तूटे भव कूप ॥ २१ ॥ उत्तम कुल
नर भव लही, पामि धर्म जिनराय ॥ प्रमाद मू
की कीजियें, खिण लाखीणो जाय ॥ २२ ॥ जिसुं
कीजे तिसुं पाइयें, करे तैसा फल जोय ॥ सुख डुख
आप कमाइयें, दोष न दीजें कोय ॥ २३ ॥ दो
ष दीजें निज कर्मने, जिण नवि कीधो धर्म ॥ धर्म
विना सुख नवि मले, ए जिन शासन मर्म ॥ २४ ॥
वावी कूरी कोदरी, तो क्युं लुणीयें शाल ॥ पुण्यवि
ना सवि जीवडा, आशा आल पंपाल ॥ २५ ॥
आय पहोती आतमा, कोइ नवि राखण हार ॥
इंद्र चंद्र जिनवर वली, गया सवी निरधार ॥ २६ ॥

मोह्नोढा मोढ न कीजियें, न किजें मोह्नोटी वात ॥ कोडी अनंत में वेचियो, त्यारें किह्नां गइ जात ॥२७॥ आपसरूप विचार तुं, जो हुइ ह्नियडे शान ॥ करणी तेह्नवी कीजियें, जिम वाधे जग वान ॥ २८ ॥ वम्पण धर्म थाये नही, जोबन एलें जाय ॥ तरु ण पणे धसमस करी, पछे फरी पछताय ॥ २९ ॥ जरा आवी जोबन गयुं, शिर पलिया ते केश ॥ ल लुता तो छोडी नहीं, न कस्यो धर्म लवलेश ॥ ३० ॥ पचेंड्रिय जिह्नां परवडा, रोग जरा नावंत ॥ जो बन चंचल आवे सदा, कर तुं धर्म महंत ॥ ३१ ॥ छते हाथ न वावस्यो, संबल न कियो साथ ॥ आय गई मन चेतियो, पछें घसे निज हाथ ॥ ३२ ॥ ध न जोबन नर रूपनो, गर्व करे ते गमार ॥ कृष्ण बल नइ द्वारिका, जातां न लागी वार ॥ ३३ ॥ आठ पहोर तुं धसमसी, धनार्थ देशांतर जाय ॥ सो धन मेल्युं ताह्नरुं, उंरज कोई खाय ॥ ३४ ॥ आंख त णे फरुकडे, कथल पायल थाय ॥ इस्युं जाणी जिव बापडा, म करिश ममता माय ॥ ३५ ॥ मा या सुख संसारमां, ते सुख सह्निय असार ॥ धर्म प सायें सुख मले, ते सुख नावे पार ॥ ३६ ॥ नय न फरुके जिह्नां लगें, तिह्नां तह्नारुं सहु कोय ॥ नयन फरूकत जब रही, तब तह्नारुं नहि होय ॥ ॥ ३७ ॥ पाप कियां जिव तें बहू, धर्म न कियो ल गार ॥ नरग पड्यो यम कर चड्यो, तिह्नां करे

पोकार ॥ ३७ ॥ कोइ दिन राणो राजियो, कोइ दि
न जयो तुं देव ॥ कोइ दिन रांक तुं अवतर्यो, क
रतो उरज सेव ॥ ३ए ॥ कोइ दिन कोडी परिवर्यो, को
दिन नहि को पास ॥ को दिन घर घर एकलो, नमे
सही ज्युं दास ॥ ४० ॥ को दिन सुखासन पालखी,
जेठमची चकमोल ॥ रथपाला आगल चले, नित
नित करत कलोल ॥ ४१ ॥ को दिन कूर कपूर
तुं, जावत नही लगार ॥ को दिन रोटी कारणें, न
मतो घर घर बार ॥ ४२ ॥ हीर चीर अंग पहेरि
यां, चुआ चंदन बहु लाय ॥ सो तन जतन करत
यौं, क्षिणमांही विघटाय ॥ ४३ ॥ सातम गोरव तुं शो
जतो, कांमिनि जोग विलास ॥ इक दिन उही आव
शे, रहेणोही वनवास ॥ ४४ ॥ रूपें देव कुमार स
म, देख मोहे नर नार ॥ सो नर खिण इकमां व
ली, बलि जलि होवे ठार ॥ ४५ ॥ जे विन घडि
य न जायती,सो वरसां सो जाय ॥ ते वल्लज विसरी
गयो, उरहिंसुं चित लाय ॥ ४६ ॥ देखत सब जुग
जातुही, थिर न रही सवि कोय ॥ इस्युं जाणी जलुं
कीजियें, हियड विमासी जोय ॥ ४७ ॥ सुरपति स
वि सेवा करे, राय राणा नर नार ॥ आय पहोते आ
तमा, जात न लागे वार ॥ ४८ ॥ देखत नर अंधा
हुआ, जे मोह विंध्या बाल ॥ जण्या गण्या मूरख व
ली, नर नारी बाल गोपाल ॥ ४ए ॥ रात दिवस नि
ज नारिशुं, तुं रमतो मनरंग ॥ जे जोइयें ते पूरतो, क

लट आणी अंग ॥ ५० ॥ सो रामा जीउं ताहरी, क्षणमांही विघटाय ॥ स्वारथ पहोंचत जब रह्यो, तब फरि वैरी थाय ॥ ५१ ॥ समुद्र द्वीप सायर सबे, पामे को नर पार ॥ नारी छिद्र चरित्रनो, को न वि पाम्यो पार ॥ ५२ ॥ ब्रह्मा नारायण ईश्वर, इंद्र चंद्र नर कोड ॥ ललना वचनें लालची, ते रह्या बे कर जोड ॥ ५३ ॥ नारी वदन सोहामणुं, पण वाघण अवतार ॥ जे नर एहने वश पड्या, तस लूंट्यां घर बार ॥ ५४ ॥ हसतमुखी दीसे नही, करति कारमो नेह ॥ कनकलता बाहिर जिसी, अंतर पित्तल तेह ॥ ५५ ॥ पहलि प्रीत करि रंगशुं, मीठा बोली नार ॥ नरने दास करि आपणो, मूके ठाकर मार ॥ ५६ ॥ नारी मदन तलावडी, बूड्यो सयल संसार ॥ काढणहारो को नही, बूमा बूंब न वार ॥ ५७ ॥ वीश वसाना जे नरा, कोइ नही तस वंक ॥ नारी संगति तेहने, निश्चें चढे कलंक ॥ ५८ ॥ मुंज ने चंडप्रद्योतना, दासीपति पाम्या नाम ॥ अभय कुमार बुधि आगलो, तेह ठग्यो अभिराम ॥ ५९ ॥ नारी नहि रे बापडा, पण ए विष नी वेल ॥ जो. सुख वांछे मुक्तिनां, नारी संगति मेल ॥ ६० ॥ नारी जगमां ते भली, जिण जायो पुरुष रतन्न ॥ ते सतिने नित पाय नमुं, जगमां ते धन धन्न ॥ ६१ ॥ तुं पर काम करी सदा, निज काज न करिय लगार ॥ अकृत्र नकृत्र करिय तुं, किम

बूडिश नव पार ॥ ६२ ॥ पाप घडो पूरण नरी, तें लीधं शिर नार ॥ ते किम बूडिश जीवडा, न करी ध र्म लगार ॥ ६३ ॥ इसुं जाणी कूड कपट, छल छि द्र तुं छांम ॥ ते छांमीनें जीवडा, जिन धर्मे चित मांम ॥ ६४ ॥ जिण वचने पर डुख हुए, जिण हो य प्राणी घात ॥ क्लेश पडे निज आतमा, तज उ त्तम ते वात ॥ ६५ ॥ जिम तिम पर सुख दीजियें, डुःख न दीजें कोय ॥ डुख देई डुख पामियें, सुख दे ई सुख होय ॥ ६६ ॥ पर तांत निंदा जे करे, कूडां देवे आल ॥ मर्म प्रकासे परतणा, तेथि नलो चं माल ॥ ६७ ॥ पटमासीनें पारणे, इक सिथ लहे आहार ॥ करतो निंदा नवि टले, तस डुर्गति अव तार ॥ ६८ ॥ छार उपर जिम लीपणुं, तिम क्रोधें तप कीध ॥ तस तप जप संजम मुधा, एके काज न सीध ॥ ६९ ॥ पूर्व कोडिने आउखे, पाली चारित्र सार ॥ सुकृत सुणो सवि तेहनुं, क्रणमां होवे छा र ॥ ७० ॥ पर अवगुण सरशव समो, अवगुण नि ज मेरु समान ॥ कां करे निंदा पारकी, मूरख आप ण शान ॥ ७१ ॥ पर अवगुण जिम देखियें, तिम परगुण तुं जोय ॥ परगुण लेतां जीवडा, अखय जरामर होय ॥ ७२ ॥ क्रोधी नर अछे सदा, कह्यिें जे उलटी रीश ॥ ते छोडी डुर आतमा, रहे जोय ण पणवीस ॥ ७३ ॥ गुण कीधा माने नही, अ वगुण मांमी मूल ॥ ते नर संगति छांमियें, पग पग

मां घासूल ॥ ७४ ॥ निंदा करे जे आपणी, ते जीवो जगमांय ॥ मल मूत्र धोए परतणां, पडे अधोगति जाय ॥ ७५ ॥ जे मल मूत्र धोए सदा, गुणवंतना निशदिस ॥ ते डुर्जन जीवो घणुं, जगमां कोडि वरीस ॥ ७६ ॥ सजन डुर्जन किम जाणियें, जब मुख बोले वाण ॥ सज्जन मुख अमृत लवे, डुर्जन विष नी खाण ॥ ७७ ॥ नरजव चिंतामणि लही, आले तुं मम हार ॥ धर्म करीनें जीवडा, सफल करो अव तार ॥ ७८ ॥ सकल सामग्री तें लही, जिण तरियें संसार ॥ प्रमाद वशे जव कां गमे, कर निज हियें विचार ॥ ७ए ॥ दीधे उपदेश लागे नहीं, जो नवि चिंते आप ॥ आप सरूप विचारतां, बूटीजें सवि पाप ॥ ८० ॥ जिण रस पाप कियां तुमें, तिण रस तुं कर धर्म ॥ अक्षत्र नक्षत्र जव अनंतना, बूटीजें सवि कर्म ॥ ८१ ॥ जिम आउखा दिन गुणी, वरस मास घडि मान ॥ चेति सके तो चेतजे, जो होए हियडे शान ॥ ८२ ॥ धन कारण तुं रुल फले, धर्म करि थाये सूर ॥ अनंत जवनां पाप सवि, क्षणमां जाये दूर ॥ ८३ ॥ जे रचना दिन रुगती, ते रचना नहिं सांऊ ॥ इस्युं जाणी रे जीवडा, चेतहि हियडा मांऊ ॥ ८४ ॥ आशा अंबर जेवडी, मरवुं पगला हेठ ॥ धर्म विना जे दिन गया, तिण दिन कीधी वेठ ॥ ८५ ॥ रे जिव सुण तुं बापडा, म करिश गर्व गमार ॥ मूल स्वरूप देखी करी,

निज जीवशुं तुं विचार ॥८६॥ कर्मे को नवि छूटियें, इंद्र चंद्र नरदेव ॥ राय राणा मंमलिक बली, अवर नरज कुण हेव ॥ ८७ ॥ वरस दिवस घर घर नम्या, आदिनाथ नगवंत ॥ कर्म वशें डुख तिणें लह्यां, जे जगमां बलवंत ॥ ८८ ॥ पास जिणंद प्रतिमा र हि, उपसर्ग कियो सुरिंद ॥ ते उपसर्गने टालियो, पद्मावति धरणिंद ॥ ८९ ॥ काने खीला घातिआ, च रणे रांधी खीर ॥ तेहुंने कर्मे नड्यो, चोविशमो श्री वीर ॥ ९० ॥ मल्ली माया तप करी, पाम्या स्त्री अवतार ॥ सुरपति कोडि सेवा करी, कर्मनो एह प्रकार ॥ ९१ ॥ पुरुषविषे चूडामणि, नरत नरेस र राय ॥ बाहुबलि हार मनावियो, आज लगें कहे वाय ॥ ९२ ॥ कीधां कर्म न छूटियें, जेहनो विषमो बंध ॥ ब्रह्मदत्त नर चक्कवई, सोल वरस लगें अंध ॥ ९३ ॥ आठमो सुनूम चक्कवी, ऋद्धि तणो नहिं पार ॥ कर्मवशें परिवारशुं, बूमा समुद्र मका र ॥ ९४ ॥ पांच पांमव अतुली बली, तेह नम्या वनवास ॥ इस्या पुरुष जगमां बली, दिनपणे फस्या निराश ॥ ९५ ॥ राम लखमण जगमां बली, जेह नुं जपे सहु नाम ॥ ते वनवासमांहे रह्या, जे बहु गुणना धाम ॥ ९६ ॥ रावण विकट रामें ह ण्यो, कृष्णें हण्यो जरासंध ॥ जराकुमर हरिनें हण्यो, देखो कर्मनो बंध ॥ ९७ ॥ निज पुत्री तातें वरी, तस कूखें सुत हेव ॥ कर्मवशें जिव रूप

नो, त्रिपृष्ठ वासूदेव ॥ ए८ ॥ जमतां जमतां अव तस्यो, देवानंदानी कूख । ब्यासी रात्रि तिहां रही, क र्में लह्युं वलि दुःख ॥ ए ' ॥ इंड अहिल्याशुं जुउ, लुब्ध हुउ सुरदेव ॥ ईश्वर देव नचावियो, पारवती पियु हेव ॥ १०० ॥ मास खमणने पारणे, कुल वालुउ अणगार ॥ चित चलगुं संग नारियें, चुकत न लागी वार ॥ १०१ ॥ पांचेशें रामा तजी, लीधो संयम जार ॥ दश दश नंदिषेण बूऊवी, नर कोश्या दरबार ॥ १०२ ॥ बांधी तांतणा सूत्रना, वींट्यो आईकुमार ॥ सुत मोहनी वशें रही, पछि लियो संज म जार ॥ १०३ ॥ पंचसया मुनि नेमना, उर श्री पासना बार ॥ जोग कारण संयम तजी, मांड्यो तिणें घरबार ॥ १०४ ॥ नवाणुं कोडि कंचन तजी, उर तजि आठे नार ॥ ते दुःकर नित वंदियें, श्रीजंबू त्रण काल ॥ १०५ ॥ एक कन्या कोडी कंचन, तजि जेणें वलि दूर ॥ वहेरस्वामि ते वंदीयें, नित ऊगम ते सूर ॥ १०६ ॥ नवाणुं पेटी सुरतणी, नित नित होय निर्माल्य ॥ नरजव सुरसुख जोगवे, ते शालि जड कुमार ॥ १०७ ॥ रत्न कंबलने कारणें, श्रेणि क आव्यो बार ॥ गोंखथकी बोली रह्यो, लीयो संजम जार ॥ १०८ ॥ आठ नारी जेणें तजी, ते धन्नो धन धन्न ॥ नारी हास्य संयम लीयो, राख्युं गाम जिणें मन्न ॥ १०९ ॥ खट नंदन देवकि तणा, जद्दिलपुर सुलसा नार ॥ तास घरे ते उछर्या, रूपें

देव कुमार ॥ ११० ॥ बत्रीश बत्रीश पदमणी, बत्रि
श बत्रिश हेम कोड ॥ नेम समीप संयम वरी, ते
वंदूं कर जोड ॥ १११ ॥ सहस पुरुषशुं संजम लि
यो, श्रीनेमीसर हाथ ॥ ते थावच्चो वंदियें, मोछव
कस्यो यदुनाथ ॥ ११२ ॥ बार वरष छठ आंबिल,
कीधां शिवकुमार ॥ शीयल व्रत सदा धरी, ए पण दु
क्करकार ॥ ११३ ॥ कोश्या मंदिर चोमासुं रही, चो
राशी चोवीश ॥ ते थुलिभद्र मुनि वंदियें, भद्रबाहु
गुरुशिष्य ॥ ११४ ॥ कपिला संगें नवि चल्यो, शेठ
सुदर्शन चंग ॥ शूली सिंहासन थई, सुर करे मनने
रंग ॥ ११५ ॥ शिवरमणीने कारणें, जिण सुख
छंम्यां देह ॥ तिस नाम दोय चार लीजियें, नवि
जन सुणजो तेह ॥ ११६ ॥ वरस दिवस काउसग
किउ, बाहूबल अणगार ॥ मानगजेंथी ऊतस्यो, तब
लियो केवल सार ॥ ११७ ॥ गजसुकमाल शिर शो
मले, देखि धस्या अंगार ॥ समता पसायें ते वली,
पाम्या भवनो पार ॥ ११८ ॥ मेतारज शिर सोनि
यें, वाधर वींट्यो धरि खेद ॥ निजमन ठामज रा
खयुं, कियो संसारनो छेद ॥ ११९ ॥ सकोसल सुक
माल मुनि, वलुखुं वाघण अंग ॥ बापनी जामि मा
नखी, शिवपुरि वरि मनरंग ॥ १२० ॥ पूर्व भव प्रि
या शिआलणी, तिण भख्यो अवंति सुकुमाल ॥ न
लिनीगुल्म विमानमां, पाम्यो सुख ततकाल ॥ १२१ ॥
पंचशत शिष्य खंधक तणा, घाणी पील्या सोय ॥

शिवनयरी शिव पामिया, ए समता फल जोय ॥ १२२ ॥ चिलायति पुत्र नारि शिर, छेदीने कर लीध ॥ उपशम संवर विवेकथी, कृतकर्म दूरें कीध ॥ १२३ ॥ दिन प्रति सात हत्या करी, अर्जुनमा ली नाम ॥ परिसह देखी क्षमा धरी, पाम्या शिवपुर गाम ॥ १२४ ॥ मुनिपति मुनि काउस्सग रहे, अगनी दाधी देह ॥ परिसह साहे पदवी वरी, अमर वधू धरि नेह ॥ १२५ ॥ वंश उपर नाटक करी, एला पुत्र कुमार ॥ जाति स्मरण ऊपनुं, ज्ञान अनंत अपार ॥ १२६ ॥ कर्म वशें आषाढमुनि, जरतनुं नाटक कीध ॥ अनित जावना जावतां, तिणें तिहां केवल लीध ॥ १२७ ॥ सुशिष्य पंथकजी मुनि, गुरु प्रमाद कियो दूर ॥ शत्रुंजय अणसण करी, ते वंदूं गुण सूर ॥ १२८ ॥ चंडरौड गुरु खंधें करी, रजनी कियो विहार ॥ शिष पण केवल पामियो, तिम गुरु केवल धार ॥ १२९ ॥ षटमासीने पारणें, ढंढ ण नाम कुमार ॥ मोदक चूरत पामियो, केवल ज्ञा न उदार ॥ १३० ॥ षट खंम राज हेलां तजी, लीधो संजम जार ॥ षटदश रोग इहां सह्या, श्रीश्रीसनत कुमार ॥ १३१ ॥ कुर जखतां केवल लह्युं, कूरगड अणगार ॥ क्षमा खड्ग हाथे धरी, जे मुनिमां सिण गार ॥ १३२ ॥ पंखी प्राणज राखवा, करि खंमो खंम देह ॥ मेघरथ राय तणे जवें, प्रसन्न हुउ सुर तेह ॥ १३३ ॥ वंदी वीर गुमानशुं, दशार्णजड

नरसिंह ॥ सुरपति पाय लगाडियो. जग राखी जिण लीह ॥ १३४ ॥ प्रसन्न चंद्र काउसग्गमां, कोपी युद्ध करंत ॥ कोप शम्यो केवल लह्युं, मोहटो ए गुणवंत ॥ १३५ ॥ अइमंतो सुकुमाल मुनि, वखाण्यो वीर जिणंद ॥ इरियावही पडिक्कमतां केवल लह्युं आणंद ॥ १३६ ॥ विरजिनवचनें थिर रह्यो, श्रेणिक सुत मेघ कुमार ॥ जातिसमरण पामियो, करि दो नयणां सार ॥ १३७ ॥ हाट वेचाणी चंदना, सुलद्रा चढयुं कलंक ॥ दमयंती नल विजोग लह्यो, एह कर्मनो वंक ॥ १३८ ॥ कलावती कर छेदिया, द्रौपदी का ढयां चीर ॥ अग्नि शितल सीता कस्यो, शील गुणें थयुं नीर ॥ १३ए ॥ चंदना चरण मृगावती, खमावि निज अपराध ॥ केवल लहि गुरुणी दियो, दो जीव टल्यो विषवाद ॥ १४० ॥ चंद कलंक सायर कस्यो, खारो नीर किरतार ॥ नवसो नवाणुं नदी तणो, देखो ए भरतार ॥ १४१ ॥ हरिचंदराय करम वशें, शिर वह्युं कुंब घर नीर ॥ कर्म वशें नर सवि नम्या, जे जग बावन वीर ॥ १४२ ॥ गउ ब्राह्मण स्त्री बालका, दृढप्रहारें हत्या कीध ॥ चार पोल का उसग रही, षटमास केवल लीध ॥ १४३ ॥ मेरु ढले ने ध्रुव चले, सायर लोपे लीह ॥ कीधां कर्म न छूटियें, जो उगे पश्चिम दीह ॥ १४४ ॥ कीधां कर्म तो छूटियें, जो कीजें जिनधर्म ॥ मन वच कायायें करी, ए जिन शासन मर्म ॥ १४५ ॥ कर्म प्रकाशी

आपणां, मन शुध आणंद पूर ॥ सद्‌ गुरु पास अछे वली, जाय पाप सवि दूर ॥ १४६ ॥ बल वंत अनंता जे नरा, केइ सुर सुनट जूकार ॥ कर्म सुनट जुउ एकले, सवी मनाव्या हार ॥ १४७ ॥ कर्म सुनट विषम विकट, ते वश कियो न जाय ॥ जे नर एहने वश करे, हुं वंदूं तस पाय ॥ १४८ ॥ इम जाणीने कीजियें, जिम आतम सुख थाय ॥ परजिव डुःख न दीजियें, इम बोल्या जिनराय ॥ १४९ ॥ दान शियल तप नावना, धर्मनां चार ए मूल ॥ पर अवगुण बोलत सही, ए सब थाए धूल ॥ १५० ॥ दान सुपात्रें दीजियें, तस पुण्यना नहि पार ॥ सुख संपति लहियें घणी, मणि मोती नंमार ॥ १५१ ॥ धन्नो सारथपती हुवो, घृत वोहराव्युं मुनि हाथ ॥ दानप्रनावें जीवडो, प्रथम हुवो आदिनाथ ॥ १५२ ॥ दान दियो धन सारथी, आनंद हर्ष अपार ॥ नेमनाथ जिनवर हुवा, यादव कुल सिणगार ॥ १५३ ॥ कलथी केरा रोटला, दीधुं मुनिवर दान ॥ वासुपूज्य नव पाछले, जिनपद लह्युं निदान ॥ १५४ ॥ मुनी नलो एक मारगें, वोहराव्यो तस आहार ॥ साथ मल्यो ते सारथी, ते विर जगदाधार ॥ १५५ ॥ सुलसा रेवति रंगशुं, दान दियो महावीर ॥ तीर्थंकर पद पामशे, लहेशे ते नवतीर ॥ १५६ ॥ दानें नोगज पामियें, शियलें होय सोनाग ॥ तप करि कर्मज टालियें,

ज्ञावना शिव सुख माग ॥ १५७ ॥ ज्ञावन ठे जव ना शिनी, जे आपे जवपार ॥ ज्ञावन वडि संसारमां, जस गुणनो नहि पार ॥ १५ᴗ ॥ अरिहंत देव सु साधु गुरु, केवलिज्ञाषित धर्म ॥ इमुं समकित आ राधतां, तूटीजें सवि कर्म ॥ १५ए ॥ नव पद जाप ज कीजियें, चउद पुरवनो सार ॥ इस्या मंत्र गणियें सदा, जे तारे नर नार ॥ १६० ॥ सकल तिरथनो रा जियो, कीजें तेहनी यात्र ॥ जस दरिसणें डुर्गति टले, निर्मल थाये गात्र ॥ १६१ ॥ अष्टापद अर्बुदगिरि, समेत शिखर गिरनार ॥ पंचे तीरथ वंदियें, मन धरि हर्ष अपार ॥ १६२ ॥ रुषज्ञ शांति जग नेमिजिन, पार्श्व अने वर्ड्मान ॥ पांचे तीरथ प्रणमतां, नित वाधे जिउं वान ॥ १६३ ॥ उत्तम नर नारी तणां, नाम कह्यां एमांय ॥ नाम निरंतर लीजियें, जिम सहि आणंद थाय ॥ १६४ ॥ आतम शिक्षा ज्ञाव ना, गुण मणि रयण जंमार ॥ पाप टले सवि तेह ना, जेह ज्ञणे नर नार ॥ १६५ ॥ आतमशिक्षा ज्ञावना, जे सुणे हर्ष अपार ॥ नवनिधि तस घर संपजे, पुत्र कलत्र परिवार ॥ १६६ ॥ ए सुणतां सु ख ऊपजे, अंग टले सवि रीस ॥ समता रसमां जीव डो, ऊीले ते निशदीस ॥ १६७ ॥ इण ज्ञव परज्ञ व ज्ञव ज्ञवें, जिन मागूं हुं हेव ॥ मन वच काया यें करी, द्यो तुम चरणनि सेव ॥ १६ᴗ ॥ ए गुण जिहां ज्ञावशुं, तिहां रान वेलाउल थाय ॥ आत

म शिक्षा नामथी सुर नर लागे पाय ॥ १६९ ॥
वीर शासन दीपावतो, आणंद विमल सुरिंद ॥
प्रमाद पंथ दूरें कस्यो, प्रणमुं तेह आणंद ॥ १७० ॥
तास शिष्य मुनिसर धणी, श्रीविजय दान सूरी
श ॥ प्रगट महिम तस जागतो, पाय नमे नर ईश ॥
॥ १७१ ॥ उपशम रसनो कूपलो, तास पट्टधर ही
र ॥ सकल सूरि शिरोमणि, सायर जिम गंभीर
॥ १७२ ॥ हीरविजय गुरु हीरलो, प्रतिबोध्यो अ
कबर नूप ॥ राय राणा सेवा करे, जेहनुं अकल स
रूप ॥ १७३ ॥ म्लेछराय जिणे वश कस्यो, जग
वर्त्ताविं अमार ॥ विमलाचल मुक्तो कियो, शासन
शोभाकार ॥ १७४ ॥ कुमारपाल प्रतिबोधियो,
श्रीश्रीहेम सुरिंद ॥ तिम अकबर गुरु हीरजी, मन
धरि अति आणंद ॥ १७५ ॥ ध्यानवशें निज पद
दियो,निज मन हर्ष अपार ॥ विजयसेनसुरि नाम
थी, नित होय जय जय कार ॥ १७६ ॥ कामकुं
भ चिंतामणि, कल्पतरू अवतार ॥ ते सविथी जेह
सिद्धिनी, अधिक ए नवि विचार ॥ १७७ ॥ वि
जयसेन गुरुराय वर, विजयदेव सूरिंद ॥ विजय
मान गुरु वंदियें, जिम सूरज उर चंद ॥ १७८ ॥ त
पगछ वाचकमें वरू, विमल हर्ष शिरताज ॥
नामें नवनिधि संपजे, दरिसण सीझे काज ॥ १७९ ॥
आतमशिक्षा भावना, तास शिष्य मनरंग ॥ प्रेमवि
जय प्रेमें करी, भलट आणी अंग ॥ १८० ॥ श्रीरत्नह

षे विबुध मुझ, बंधू तास पसाय ॥ तासु सानिध ग्रंथ में कह्यो, मन धरि हर्ष अपार ॥ १८१ ॥ मूढ मती छे माहरी, कवि मत करजो हास ॥ कृपा करी मुझ ऊपरें, शोधी करजो खास ॥ १८२ ॥ संवत शोल बाशठि ए, वैशाख पूनम जोय ॥ वार गुरु सहि दिन जलो, एह संवत्सर होय ॥ १८३ ॥ नयर उक्केणीमां वली, आतमशिक्षा नाम ॥ मन जाव धरिने तिहां करी, सीधां वंछित काम ॥ १८४ ॥ एक शत एंशी पांच ए, दोहा अति अनिराम ॥ जणे गुणे जे सांजले, तेह लहे शिवगाम ॥ १८५ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश सित्तरी प्रारंज ॥

॥ उतपति जो जो आपणी, मन मांहि विमास ॥ गरजावासें जीवडो, वसियो नव मास ॥ उतपति जो जो आपणी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नारी तणे नाजि तलें, जिन वचनें जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तामें नाडी छे दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तलें योनि कहीयें, वर फूल समान ॥ आंब तणी मांजर जिस्यो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर स्रवे तिण गामथी, ऋतुकाल सदैव ॥ रुधिर शुक्र जोगें करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ उ० ॥ ४ ॥ जे अपावन पवनें करी, वासित डुरगंध ॥ तिणे थानक तुं उपनो, हवे हूर्ड मदंध ॥ उ० ॥ ५ ॥ नाली वांस तणी घणुं, जरियें रू घाल ॥ ताती लोह शीलाक ते, जाले तत काल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी यो

निमें, छे नवलख जीव ॥ पुरुषप्रसंगें ते सहु, मरी जाय सदैव ॥ उ० ॥ ७ ॥ उपजे नर नारी मले, पंचेंद्रिय जेह ॥ तेह तणी संख्या नहिं, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव जघन्यपणें टके, एक दो त्रण चार ॥ उ० ॥ ए ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, मुहूरत परिमाण ॥ बार वरसनी स्थिति तिहां, उत्कृष्टी जाण ॥ उ० ॥ १० ॥ तिणे गरनें कोइ जीवडो, इम कहे जगदीश ॥ फरी मरी आवे तो रहे, संवत्सर चोवीश ॥ उ० ॥ ११ ॥ महिला वरस पंचावनें, कहियें निर्बीज ॥ पंचोतेर वरस पछें, थाए पुरुष अबीज ॥ उ० ॥ १२ ॥ जिमणि कूखें नर वसे, तिम वामी नार ॥ वच्चें नपुंसक जाणियें, जिनवचनें विचार ॥ उ० ॥ १३ ॥ हवे सामान्य पणे इहां, आव्यो गर्नावास ॥ सात दिवस ऊपर रहे, नरगति नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ वरस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टो काल ॥ गर्नावासें नोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कार्मणकायें करि लीयो, पहिलो ते आहार ॥ शुक्र अने शोणित तणो, नहि जूठ लगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ पर्यापति पूरी नही, तिहां विसवा वीश ॥ तिणे आहारें तनु थयो, औदारिक अरु मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन आवे उदरथकी, उपजावे अंग ॥ अग्नि करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग ॥ उ० ॥

॥ १७ ॥ कठिनपणुं पृथिवी रचे, अवगाह आका
श ॥ पांचे नूत शरीरनो, एम करे प्रकाश ॥ ज० ॥
॥ १ए ॥ बार मुहूर्त ऋतु पछें, विलसे नर नार ॥
गर्न्न तणी उत्पति तिहां, नही अवर प्रकार ॥
॥ ज० ॥ २० ॥ कलिल हुवे दिन सातमे, खरबुद
दिन सात ॥ खरबुदथी पेशी वधे, घन मांस कहा
त ॥ ज० ॥ २१ ॥ मांस तणी गोटी हुवे, अडताली
श टांक ॥ प्रथम मासें जिनवर कहे, मन म धरो शं
क ॥ ज० ॥ २२ ॥ रुधिर मांस बीजे हुवे, हवे त्रीजे
मास ॥ कर्मतणे योगें करी, माता मन आश ॥
॥ ज० ॥ २३ ॥ चोथे मासें मातना, परिणमे सहु
अंग ॥ हाथ अने पग पांचमे, तिम मस्तक संग ॥
॥ ज० ॥ २४ ॥ पित्त रुधिर छठे पडे, सातमे इम
संच ॥ नव धमणी नस सातशें, पेशी सय पंच ॥
॥ ज० ॥ २५ ॥ रोमराइ पण सातमे, साडी तिन
क्रोड ॥ उपजे कणा केटले, इम आगम जोड ॥
ज० ॥ २६ ॥ आठमे मासें नीपनुं, एम सकल
शरीर ॥ कंधे शिर वेदन सहे, कंपे जिन वीर ॥
॥ ज० ॥ २७ ॥ शोणित शुक्र संलेषमा, लघु ने व
डि नीत ॥ वात पित्त कफ गर्न्नमें, ए थाये इण रीत ॥
॥ ज० ॥ २७ ॥ मात तणी डूंटी लगें, बालकनुं
नाल ॥ रस आहार तणो तिहां, आवे ततकाल ॥
॥ ज० ॥ २ए ॥ जननी ले आहार ते, जाए नाडो
नाड ॥ रोम इंडी नख चख वधे, तिम मज्जा ने हा

ड ॥ उ० ॥ ३० ॥ सविहूं अंगें उछ्नसे, सर्वांग आ
हार ॥ कवल आहार करे नही, गर्ने इस्यो विचा
र ॥ उ० ॥ ३१ ॥ ते गर्नें किण ज मने, थाय ज्ञा
न विनंग ॥ अथवा अवधि कहीजियें, तिणे ज्ञान
प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥ कटक करी वैक्रिय पणे, जू
ऊी नरकें जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी
सुर पण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ उंधे मुखें गुफा हि
ये, सहेतो बहु पीड ॥ दृष्टि आगल बिहुं हाथगुं,
रहे मूठी नीड ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जला
दिकें, उपजे उंधान ॥ अथवा बिहूं नारी मल्यां,
कह्यो गर्न विधान ॥ उ० ॥ ३५ ॥ कोई उत्तम चिंत
वे, देखी डुःख राश ॥ पुण्य करुं परो नीकली, नावुं
गर्नावास ॥ उ० ॥ ३६ ॥ उंठ कोडी सूई अंगमां,
कोइ चांपे समकाल ॥ तिणथी गर्नमां अठगुणी, स
हे वेदना बाल ॥ उ० ॥ ३७ ॥ माता नूखी नूखी
उ, सुखिणी सुख थाय ॥ माता सूते ते सुवे, परवश
दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गर्नथकी डुःख लखग
णुं, जनमे जिण वार ॥ जनम थये डुःख विसखुं,
धग मोह विकार ॥ उ० ॥ ३९ ॥ उपज्यो अशुचि
पणे तिहां, मल मूत्र कलेश ॥ पिंम अशुचि करी पूरि
यो, नवि शुचि लव लेश ॥ उ० ॥ ४० ॥ तुरत रुद
न करतो थको, जनमे जिण वार ॥ माता पयोधर
मुख ठवे, पिये दूध तेवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दीसे दिन
दिन दीपतो, करे रंग अपार ॥ लाम कोम माता पिता,

पूरे सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ बिड् बारह नारीने, नरनां नव जाण ॥ रात दिवस वहेतां रहे, चेतो चतुर सुजाण ॥ उ० ॥ ४३ ॥ सात धातु साते त्वचा, छे सातशें नाड ॥ नवशें नारां छे पिंममां, तिम त्रणशें हाम ॥ उ० ॥ ४४ ॥ संधि एकसो साठ छे, सत्तोतेर सो मर्म ॥ तिन दोष पेशी पांचशें, ढांक्यां छे चर्म ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर शेर दश देहमें, पेसाब सरीष ॥ शेर पांच चरबी तिहां, दोय शेर पूरीष ॥ उ० ॥ ४६ ॥ पित्त टांक चोशठ छे, वीरज बत्रीश ॥ टांक बत्रीश सलेषमा, जाणे जगदीश ॥ ॥ उ० ॥ ४७ ॥ इण परिमाणथकी जदा, उंछो अधिको थाय ॥ व्यापे रोग शरीरमें, नवि चले तव काय ॥ उ० ॥ ४८ ॥ पोष्यो पहिले दायके, इम वाध्यो अंग ॥ खान पान जूषण जलां, करे नव नव रंग ॥ उ० ॥ ४९ ॥ हवे बीजे दशके जणे, विद्या विविध प्रकार ॥ त्रीजे दशके तेहने, जाग्यो काम विकार ॥ उ० ॥ ५० ॥ जिण थानक तुं उपन्यो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दशके धन तणा, करे कोडि उपाय ॥ उ० ॥ ५१ ॥ पहोतो दशके पांचमे, मनमां ससनेह ॥ बेटा बेटी ने पोतरा, परणावे तेह ॥ उ० ॥ ५२ ॥ छठे दशके प्राणियो, वली परवश थाय ॥ जरा आवी यौवन गयुं, तृष्णा तोय न जाय ॥ उ० ॥ ५३ ॥ आव्यो दशके सातमे, हवे प्राणी तेह ॥ बल जांग्युं बूढो थ

यो, नारी न धरे नेह ॥ उ० ॥ ५४ ॥ आठमे द
शके फोसलो, खुलीया सहु दांत ॥ कर कंपावे शि
र धुणे, करे फोकट वात ॥ उ० ॥ ५५ ॥ नवमे
दशके प्राणियो, तन शक्ति न कांय ॥ साले वचन
सहू तणां, दिन फूरतां जाय ॥ उ० ॥ ५६ ॥
खाट पड्यो खू खू करे, सूगाली देह ॥ हाल हुकम
हाले नही, दिये परिजन छेह ॥ उ० ॥ ५७ ॥ आं
ख गले बे पड मिले, पडे मुहडे लाल ॥ बेटा बे
टी ने वहू, न करे संनाल ॥ उ० ॥ ५८ ॥ दशमे
दशकें आवियो, तव पूरी आय ॥ पुण्य पाप फल नो
गवी, प्राणी परजव जाय ॥ उ० ॥ ५९ ॥ दश द
ष्टांतें दोहिलो, लही नरनव सार ॥ श्रीजिनधर्म स
माचरे, ते पामे नवपार ॥ उ० ॥ ६० ॥ तरुणपणे
जे तप तपे, पाले निर्मल शील ॥ ते संसार तरी
करी, लहे अविचल लील ॥ उ० ॥ ६१ ॥ कोडी
रतन कवडी सटे, कांइ गमे रे गमार ॥ धर्म विना
ए जीवने, नही को आधार ॥ उ० ॥ ६२ ॥ काया
माया कारिमी, कारिमो परिवार ॥ तन धन जोबन
कारिमो, साचो धर्म संसार ॥ उ० ॥ ६३ ॥ चउदे
राज प्रमाण ए, छे लोक महंत ॥ जनम मरण करी
फरसीयो, जीव वार अनंत ॥ उ० ॥ ६४ ॥ आप स
वारथीयो सहु, नही केहनो कोय ॥ निज स्वारथ वि
ण पूगतां, सुत पण रिपु होय ॥ उ० ॥ ६५ ॥ ज
रा न आवे जिहां लगें, जिहां लगें सबल शरीर ॥ ध

में करो जीव तिहां लगें, होइ साहस धीर ॥ ज० ॥
॥ ६६ ॥ आरज देश लह्यो हवे, लाधो गुरु संजो
ग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संजोग ॥
॥ ज० ॥ ६७ ॥ श्रीनेमिराज तणी परें, चेतो चित्त
मांहि ॥ स्वारथनो सहु को सगो, कोइ किणरो नांहि ॥
॥ ज० ॥ ६८ ॥ जोग संजोग तजी सहु, थया जे अ
णगार ॥ धन धन तसु माता पिता, धन धन अव
तार ॥ ज० ॥ ६ए ॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो, से
वो श्रीजिनधर्म ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजें
तेहज कर्म ॥ ज० ॥ ७० ॥ तंदूलि व्यालीमें अछे,
एहनो अधिकार ॥ तिणथी उद्धरीने कह्यो, नही जू
ठ लगार ॥ ज० ॥ ७१ ॥ कलश ॥ एह जैनधर्म वि
चार सांजली, लहियें संजम जार ए ॥ वली सिंहनी
परें सदा पाले, नियम निरतीचार ए ॥ संसारनां सु
ख सकल जोगवी, ते लहे जव पार ए ॥ श्रीरत्नहर्षसु
शिष्यरंगें, इम कहे श्रीसार ए ॥ ७२ ॥ इति गर्नवेली
जीवनी उत्पत्तिनुं स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ क्षमाछत्रीशी प्रारंजः ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर, म करिश राग
ने द्वेष जी ॥ समतायें शिव सुख पामीजें, क्रोधें कुगति
विशेष जी ॥ आ० ॥ १ ॥ समता संजम सार सुणी
जें, कल्पसूत्रनी साख जी ॥ क्रोध पूर्वकोडि चारित्र
बाले, जगवंत इणी परें जाख जी ॥ आ० ॥ २ ॥ कुण
कुण जीव तस्या उपशमथी, सांजल तुं दृष्टांत जी ॥

कुण कुण जीव नम्या नवमांहे, क्रोध तणे विरतंत जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ सोमल ससरे शीश प्रजाल्युं, बांधी माटीनी पाल जी ॥ गजसुकुमाल क्षमा मन धरतो, मुगति गयो तत काल जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ कुलवालुउ साधु कहातो,कीधो क्रोध अपार जी ॥ कोणिकनी गणिका वश पडियो, रडवडियो संसार जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ सोवनकार करी अति वेदन, वाधरशुं वींटियुं शीश जी ॥ मेतारज रुषि मुग पोहोतो, उपशम एह जगीश जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुरुड वुरुड बे साधु कहाता, रह्या कुणाला खाल जी ॥ क्रोध करीते कुगतें पहोता, जनम गमायो आल जी ॥ आ० ॥ ७ ॥ कर्म खपावी मुगतें पहोता, खंधक सूरिना शिष्य जी ॥ पालक पापीयें घाणी पील्या, नाणी मन मां रीश जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ अच्चंकारी नारी अचुंकी, त्रोड्यो पीयुशुं नेह जी ॥ बब्बर कुल सह्यां दुःख बहुलां, क्रोध तणां फल एह जी ॥ आ० ॥ ॥ ए ॥ वाघणे सर्व शरीर वलूर्युं, ततक्षण छोड्यां प्राण जी ॥ साधु सुकोशल शिव सुख पाम्या, एह क्षमा गुण जाण जी ॥ आ० ॥ १० ॥ कुण चंमाल कहीजें बिहुमें, निरति नही कहे देव जी ॥ रुषि चंमाल कहीजें वडतो, टालो वेढनी टेव जी ॥ ॥ आ० ॥ ११ ॥ सातमी नरक गयो ते ब्रह्मदत्त, काढी ब्राह्मण आंख जी ॥ क्रोध तणां फल कडुआं जाणी, राग द्वेष द्यो नाख जी ॥ आ० ॥ १२ ॥ खं

धक रुषिनी खाल उतारी, सह्यो परिसह जेण जी ॥ गरजावासना दुःखथी छूट्यो, सबल क्षमा गुण ते ण जी ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्रोध करी खंधक आचारि ज, हुउ अग्निकुमार जी ॥ दंडक नृपनो देश प्रजा ल्यो, जमशे जवह मझार जी ॥ आ० ॥ १४ ॥ चंद्रो द्र आचारिज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी ॥ क्ष मा करंतां केवल पाम्यो, नव दीक्षित अणगार जी ॥ आ० ॥ १५ ॥ पांच वार रुषिनें संताप्यो, आ णी मनमां द्वेष जी ॥ पंच जव सीम दह्यो नंद नावि क, क्रोध तणां फल देख जी ॥ आ० ॥ १६ ॥ साग रचंदनुं शीस प्रजाली, निशि नजसेन नरिंद जी ॥ समता जाव धरी सुरलोकें, पहुतो परमानंद जी ॥ ॥ आ० ॥ १७ ॥ चंदना गुरुणीयें घणुं निज्रंठी, धिग धिग् तुझ अवतार जी ॥ मृगावती केवलसिरि पामी, एह क्षमा अधिकार जी ॥ आ० ॥१८॥ सांब प्रद्युम्न कुंअर संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साह जी ॥ क्रोध क री तपनुं फल हार्यो, कीधो द्वारिकादाह जी ॥ ॥ आ० ॥ १९ ॥ जरतने मारण मूठी उपाडी, बा हूबल बलवंत जी ॥ उपशम रस मनमांहे आणी, संजम ले मतिमंत जी ॥ आ० ॥ २० ॥ काउसग मां चडियो अतिक्रोधें, प्रश्नचंद्र रुषिराय जी ॥ सा तमी नरक तणां दल मेल्यां,कडुआं तेण कषाय जी ॥ ॥ आ० ॥ २१ ॥ आहारमांहे क्रोधें रुषि थूंक्यो, आण्यो अमृत जाव जी ॥ कूरगडूयें केवल पाम्युं,

क्षमातणे परभाव जो ॥ आ० ॥ २२ ॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधा, कमठ भवांतर धीठ जी ॥ नरक तिर्यंच तणां दुःख लाधां, क्रोध तणां फल दीठ जी ॥आ०॥ ॥ २३ ॥ क्षमावंत दमदंत मुनीश्वर, वनमां रह्यो का उसग्ग जी ॥ कौरव कटक हण्यो इटालें, त्रोड्या कर्मना वर्ग जी ॥ आ० ॥ २४ ॥ सज्यापालक कानें तरुउ, नाम्यो क्रोध उदीर जी ॥ देहु कानें खीला ठोकाणा, नवि तूटा महावीर जी ॥ आ० ॥ २५ ॥ चार हत्यानो कारक हुतो, दृढप्रहार अतिरेक जी ॥ क्षमा करीने मुक्तें पहोतो,उपसर्ग सह्या अनेक जी ॥ ॥ आ० ॥ २६ ॥ पदुरमांहे उपजतो हाय्यो, क्रोधें केवल नाण जी ॥ देखो श्रीदमसार मुनीसर, सूत्र गुण्यो उठाण जी ॥ आ० ॥ २७ ॥ सिंह गुफावासी रुषि कीधो, थूलिभद्र ऊपर कोप जी ॥ वेश्या वचन गयो नेपालें, कीधो संजम लोप जी ॥आ०॥ ॥ २८ ॥ चंड़ावतंसक काउसग रहियो, क्षमा तणो भंमार जी ॥ दासी तेल भर्यो निशि दीवो, सुरपदवी लहे सार जी ॥ आ० ॥ २९॥ इम अनेक तख्या त्रिभुवनमें, क्षमागुणें भवि जीव जी ॥ क्रोध करी कुगतें ते पहोता, पाडंता मुख रीव जी ॥ आ० ॥३०॥ विष हलाहल कहीयें विरुउ, ते मारे एक वार जी ॥ पण कषाय अनंती वेला, आपे मरण अपार जी ॥ ॥ आ० ॥ ३१ ॥ क्रोध करंतां तप जप कीधां, न पडे कांई ठाम जी ॥ आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं के

हो काम जी ॥ आ० ॥ ३१ ॥ क्षमा करंतां खरच न लागे, भांगे क्रोड कलेश जी ॥ अरिहंत देव आराधक थाये, व्यापे सुजस प्रदेश जी ॥ आ० ॥ ३३ ॥ नगरमांहे नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रासाद जी ॥ श्रावक लोक वसे अति सुखिया, धर्मतणे परसाद जी ॥ आ० ॥ ३४ ॥ क्षमा छत्रीशी खांतें कीधी, आतम पर उपगार जी ॥ सांभलतां श्रावक पण समज्या, उपशम धस्यो अपार जी ॥ आ० ॥ ३५ ॥ जुगप्रधान जिणचंद सुरीसर, सकलचंद तसु शिष्य जी ॥ समयसुंदर तसु शिष्य भणे इम, चतुर्विध संघ जगीश जी ॥ आ० ॥ ३६ ॥ इति क्षमाछत्रीशी ॥

॥ अथ वैकुंठपंथ लिख्यते ॥

॥ वैकुंठ पंथ बीहामणो, दोहिलो छे घाट ॥ आपणनो तिहां कोइ नंही, जे देखाडे वाट ॥ १ ॥ मार्ग वहे रे उतावलो, उभे जीएरी खेह ॥ कोइ केहने पडखे नही, छांभी जाए सनेह ॥ मा० ॥ २ ॥ एक चाल्या बीजा चालशे, त्रीजा चालणहार ॥ रात दिवस वहे वाटडी, पडखे नही लगार ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणीने परियाणुं आवियुं, न गणे वार कुवार ॥ भडा भरणी योगिणी, जो होय सामो काल ॥ मा० ॥ ४ ॥ जम रूपें बिहामणो, वाटें दीये रे मार ॥ कृत कमाई पूछशे, जीवनो किरतार ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोभें वाह्यो जीवडो, करतो बहु पाप ॥ अंतरजामी आगलें, केम करीश जबा

प ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे विण घडी सरतो नही, जीव न प्राण आधार ॥ ते विण वरस वही गयां, शुद्ध नहि समाचार ॥ मा० ॥ ७ ॥ आव्यो तुं जीव एकिलो, जातां नहि कोइ साथ ॥ पुण्य विना तुं प्राणिया, घसतो जाइश हाथ ॥ मा० ॥ ८ ॥ मग कोरी मांहे पेशीयें, तोहि न मेले मोत ॥ चेतणहारा चेतजो, जाशे गोफण गोला सोत ॥ मा० ॥ ए ॥ छत्रपति नृप केइ गया, सिद्ध साधक लाख ॥ क्रोड गमे करण आवल्या, अमर कोइ जीव दाख ॥ मा० ॥ ॥ १० ॥ आपण देखतां जग गयो, आपणें पण जाणा ॥ ऋद्धि मेली रहेशे नही, मोहोटा राय ने राणा ॥ ॥ मा० ॥ ११ ॥ दाहाडे पहोते आपणे, सहु कोई जाशे ॥ धर्म विना तुमें प्राणिया, पडशो नरकावासें ॥ मा० ॥ १२ ॥ संबल होय तो खाइयें, नही तो मरीयें नूख ॥ आपणडो तिहां कोइ नही, जेहने कहियें दुःख ॥ मा० ॥ १३ ॥ आगल हाट न वाणीया, न करे कोई उधार ॥ गांठे होय तो खाइयें, नहि कोइ देअणहार ॥ मा० ॥ १४ ॥ निश्चल रहेवुं छे नही, म करो मोडा मोड ॥ परस्त्री प्रीत न मांमियें, ए तो महोटी खोड ॥ मा० ॥ १५ ॥ वस्तु पीयारी मत लीयो, म करो तांत पियारी ॥ धर्म विना जग जीवने, होशे अंतें खुआरी ॥ मा० ॥ १६ ॥ कूड कपट तुमें मत करो, जीव राखजो गम ॥ जीवदया प्रतिपालजो, जो होय वैकुंठ काम ॥ मा० ॥ १७ ॥

मोह्होटां मंदिर मालीयां, घर पण घणेरी आथ ॥ हीरा माणक अति घणा, पण कांइ नावे साथ ॥ मा० ॥ ॥ १७ ॥ कोडी गमे कुकर्म कियां, केतां कहुं तुम आगल ॥ लेखे किणि परें पोहोंचीयें, प्रजुजीशुं कागल ॥ ॥ मा० ॥ १ए ॥ आगल वैतरणी वहे, तिहां कोइ न तारे ॥ धर्मी तरी पार पामशे, पापी जाशे पायालें ॥ ॥ मा० ॥ २० ॥ दीठे मारग चालीयें, न नरियें कूडी साख ॥ काल काया पडि जायशे, मशाणें उमशे राख ॥ मा० ॥ २१ ॥ जतन करंतां जायशे, उमी जाशे सास ॥ माटी ते माटी थायशे, ऊपर उगशे घास ॥ ॥ मा०॥ २२॥ माय बाप ए केहनां, केहनो परिवार ॥ पुत्र पौत्रांदिक केहनां, केहनी घरनार ॥ मा० ॥ २३ ॥ कोइ म करशो गारवो, धन जोबन केरो ॥ अंतें उगर्यो कोइ नही, आपणंथी नलेरो ॥ मा० ॥ २४ ॥ मह्हारुं मह्हारुं करतो थको, पड्यो माया ने मोह ॥ लोचन बे मीचाणडां, तव घणी अनेराइ होय ॥ मा०॥ ॥ २५ ॥ जे जिहां ते तिहां रह्युं, चाल्यो एकलो आप ॥ साथें संग ते बे थयां, एक पुण्य ने पाप ॥ मा०॥ ॥ २६ ॥ सुगुरु सुसाधु वंदियें, मंत्र मह्होटो नवकार ॥ देव अरिहंतने पूजीयें, जेम तरीयें संसार ॥ मा० ॥ ॥ २७ ॥ शालिनइ सुख नोगव्यां, पात्र तणे अधिकार ॥ खीर खांम घृत वहोरावीयां, पोहोता मुक्ति मकार ॥ मा० ॥ २७ ॥ तस घर घोडा हाथीया, राजा दीए बहु मान ॥ दान दया करी दीजियें, नावें साधु

ने मान ॥ मा० ॥ २ए ॥ धर्मं पुत्रज रूअडा, धर्मं रूडी नार ॥ धर्मं लखमी पामीयें, धर्मं जय ज यकार ॥ मा० ॥ ३० ॥ नवनंद मत्ता मेली गया. डूं गर केरा पाणा ॥ समुद्रमां थया शंखलां, गा ा नं दनां नाणां ॥ मा० ॥ ३१ ॥ पूंजी मेली मरि जाय शे, खावे खरचवे खोटा ॥ ते कडाह ऊपर थई. अव तस्या मणिधर महोटा ॥ मा० ॥ ३२ ॥ माल मेली करी एकठा, खरचे नवि खाय ॥ लेई न दारे नूमिमां. तिहां कोई काढि जाय मा० ॥ ३३ ॥ मूंजी लख मी मेलशे, केहने पाणी न पाय ॥ धर्म कार्य आवे न ही, ते धूल धाणी थाय ॥ मा० ॥ ३४ ॥ जीवता दा न जे आपशे, पोतें जमणे हाथ ॥ श्रीनगवान एम ना खियुं, सहु आवशे साथ ॥ मा० ॥ ३५ ॥ दया करी जे आपशे, उलटें अन्ननुं दान ॥ अडशठ तीर्थ इहां अछे, वली गंगास्नान ॥ मा० ॥ ३६ ॥ जोगी जंगम घणा थायशे, दुखिया इण संसार ॥ खीचडी खाए खांतशुं, साचो जिन धर्मसार ॥ मा० ॥ ३७ ॥ खांमानी धारें चालवुं, सुणजो ए सार ॥ परस्त्री मात करि जाणवी, लोन न करवो लगार ॥ मा० ॥ ३७ ॥ कनक कामिनी जेणें परिहरी, तेतो कर्मथी छूटा ॥ नीखारी नमे घणा, बीजा खीचड खूटा ॥ मा० ॥ ॥ ३ए ॥ पाथरणें धरती नली, उढण नलुं आका श ॥ शणगारें शीयल पहेरवुं, तेहनें मुक्तिनो वास ॥ मा०॥ ॥ ४० ॥ उपवास आंबिल नित करे, नित

अरिहंत ध्यान ॥ काम क्रोध लोज परिहरे, तेहनें मु
क्ति निधान ॥ मा० ॥ ४१ ॥ मनुष्य जनम पामी क
री, जे करशे धर्म ॥ सुख सघलांए संपजे, बूटे सर
वे कर्म ॥ मा० ॥ ४२ ॥ धर्मै धन्नज पामीयें, ध
र्मे सवि सुख थाये ॥ अरिहंत नाम आराधियें, पाप
परले थाये ॥ मा० ॥ ४३ ॥ खाट पथरणे सुई रहो,
खाउं नित्य खाणां ॥ एक अरिहंत नाम संजारतां,
कियां बेसे तुज नाणां ॥ मा० ॥ ४४ ॥ मनसा वाचा
कायथी, लीजें जगवंत नाम ॥ सुख स्वर्गनां संपजे,
सीके वंछित काम ॥ मा० ॥ ४५ ॥ खातां पीतां ख
रचतां, इछा म करे खलखंच ॥ काया माया कारि
मी, जोबन दहाडा पंच ॥ मा० ॥ ४६ ॥ केही सुचं
गी वाढीयो, केही सुचंगी नार ॥ केते माटी होई रही,
केते जए अंगार ॥ मा० ॥ ४७ ॥ हंसराजा जब जमी
यो, तव कोई न करे सार ॥ सगां कुटुंब सहु एम जणे,
वहि काढो बार ॥ मा० ॥ ४८ ॥ मित्र मंत्रादिक
तिहां लगें, तिहां लगें स्नेह जरपूर ॥ हंसराजा जव
चालिया, तव थया सहु दूर ॥ मा० ॥ ४९ ॥ जेवो
जाण्यो तेवो काढियो, नवि मागीयो जाग ॥ आगल
खोखर हांमली, मांहे अधबलती आग ॥ मा० ॥ ५० ॥
पतित पावन प्रजुजी तुमें, सुणो हो दीननाथ ॥ सं
सार सागरमांहि बूडतां, देजो तुमें हाथ ॥ मा० ॥ ५१ ॥
सांजलो स्वामी शामला, मोरी अरदास ॥ हुं मागुं
प्रजु एटलुं, देजो वैकुंठवास ॥ मा० ॥ ५२ ॥ अर्हं

कार चित्त न आणीयें, केहनें गाल न दीजें ॥ काम क्रोध लोन मारियें, तो अमर फल लीजें ॥ मा० ॥ ॥ ५३ ॥ करत कमाई जोडियें, केहनें दोष न दीजें ॥ विषनां फल जो वावियें, तो अमृत फल किम लीजें ॥ ॥ मा० ॥ ५४ ॥ छति ऋद्धे खरचे नही, ते पण मूरख महोटा ॥ गलो आव्यो नूलो जायशे, आगल पडशे खोटा ॥ मा० ॥ ५५ ॥ चोराशी लख जीवा जोनि मां, फिरिया वार अनंत ॥ मुनि नीम नणे अरिहंत जपो, जिम पामो नव अंत ॥ मा० ॥ ५६ ॥ संवत शोल नवाणुयें, बीज ने बुधवार ॥ आसोमासें गाइयो, छीकारी नगरी मकार ॥ मा० ॥ ५७ ॥ नीम नणे सहु सांनलो, मत संचो दाम ॥ जिमणे हाथे वावरो, तो सहि आवशे काम ॥ मा० ॥ ५८ ॥ नीम नणे सहु सांनलो, नवि कीजें पाप ॥ उंगो अधिको जे में कह्यो, ते तमें करजो माफ ॥ मा० ॥ ५९ ॥

॥ अथ माहावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मुने ते दिननो विशवास छे, प्रनुजी तुमारो ॥ साहेबजी तुमारो ॥ मु० ॥ दास तुमारो वीनवे, प्रनु पार उतारो ॥ मु० ॥ १ ॥ चोशठ इंड्ज था पिया, इंड्रासन आप्युं ॥ राज ऋद्धि सुख संपदा, समकित लइ थाप्युं ॥ मु० ॥ २ ॥ नक्त नली परें उद्धर्यो, तें तो शेठ सुदर्शन ॥ शूलि नांजी साहिबा, कीधुं सिंहासन ॥ मु० ॥ ३ ॥ चारित्रथी चूकी करी, गणिका घर वसिया ॥ आषाढ नंदिषेण उद्धर्या, तु

में नक्तिना रसिया ॥ मु० ॥ ४ ॥ बारे व्रतमां एको नही, कांइ नियम न लीधुं ॥ श्रेणिक नक्ति जाणी करी, तेहने निज पद दीधुं ॥ मु० ॥ ५ ॥ चंदनबा ला बारणें, प्रज्ञु चालीने आव्या ॥ बेडी नांजी नेउर थयां, सोल शणगार पहेराव्या ॥ मु० ॥ ६ ॥ अ ग्निज्वाला अंगें वसे, विषधर विकरालो ॥ चरणे म स्यो चंमकोशीयो, उद्धस्यो नाग कालो ॥ मु० ॥ ७ ॥ नक्त नला बुरा उद्धस्या, तेतो शास्त्र वखाणे ॥ नाथ निरंजन लहेरमां, रूपचंद रस माणे ॥ मु० ॥ ८ ॥

॥ अथ शंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ राग प्रन्नाती ॥ कडखो ॥ पास शंखेश्वरा सार कर सेवका, देव कां एवडी वार लागे ॥ कोडि कर जो डि दरबार आगें खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥ पा० ॥ १ ॥ जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज कंघे ॥ महोटा दानेश्वरी तेहने दाखियें, दान दिये जेह जग काल मूंघे ॥ पा० ॥ २ ॥ नीड पडि जादवा जोर लागी जरा, तिणे समे त्रीक में तुज संन्नास्यो ॥ प्रगटि पातालथी पलकमां तें प्र ज्ञु, नक्तजन तेहनो नय निवास्यो ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रगट था पासजी मेलि पडदो परो, मोड असुराणने आप ठोडो ॥ मुज महीराण मंजूषमां पेसिने, खलकना नाथजी ! बंध खोलो ॥ पा० ॥ ४ ॥ आदि अनादि अरिहंत तुं एक ठे, दीनदयाल ठे कोण दूजो ? ॥

उदयरतन कहे प्रगट प्रभुपासजी, पामी भयभंजनो एह पूजो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीनेमनाथ स्तवनं ॥

॥ नेम मिले तो वातां कीजीयें,वो प्यारो नेम मिले तो वातां कीजीयें रे ॥ ए आंकणी ॥ में हुं प्यारी ने खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ में हुं केतकी तुम होजो भमरा, फरि फरि वासना लीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ १ ॥ में हुं धरणी तुम होजो मेहुला, कबहीक मिलनां कीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ राजुल नेम दोनुं मुगति सीधाये, रूपचंद पद दीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ २ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ निर्मल होइ भज ले प्रभु प्यारे, सब रे संसारसें है जिन न्यारे ॥ निर्मल० ॥ १ ॥ पार्श्वप्रभुजीको दर्शन कर ले, भवजल पार उतारण हारे ॥ निर्मल० ॥ २ ॥ जाके अविचल ज्योति बिराजे, अकल अगोचर रूप उदारे ॥ निर्मल० ॥ ३ ॥ वाके गुनको पार न लहियें, कहि न शके कोइ जग आधारे ॥ निर्मल० ॥ ४ ॥ वाके भजन सुख पावत प्राणी, शुद्ध क्षमा कल्याण उदारे ॥ निर्मल० ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ अथ प्रभातीयुं ॥

॥ आतमतत्त्व विचारो रे जोगी, आतमतत्त्व विचारो रे ॥ ए आंकणी ॥ थावर जंगम व्यापारज होवे, करुणा दृष्टि तिहां कारी रे ॥ वचन विशासको छत्र

न फरसे, सत्यसिंहासन धारी रे ॥ आतम० ॥ १ ॥ कोडी कनक रतन नहि लेवे, घर घर भिक्षा हारी रे ॥ कंदर्पदेवकुं जेर कीयो है, त्रिया जोग निवारी रे ॥ आत० ॥ २ ॥ स्नान मज्जन अरु परिग्रह त्यागी, वैरी मित्र न यारी रे ॥ परमहंसकी पदवी लीनी, जाउं जोगीपर वारी रे ॥ आतम० ॥ ३ ॥ महीमंम लमें विचरे जोगी, देहदिशा वीसारी रे ॥ रूपचंद चरणे शीस नामी, तेरी नक्ति न्यारी रे ॥ आ० ॥४॥

॥ अथ संप्रतिराजानुं स्तवन ॥ राग आशावरी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा, जेणे कीधां उत्तम काम रे ॥ सवा लाख प्रासाद करावी, कलियुग राख्युं नाम रे ॥ धन० ॥ १ ॥ वीर संवत्सर संवत बीजे, ते रोत्तरें रविवार रे ॥ माहाशुदि आठमी बिंब नरावी, सफल कियो अवतार रे ॥ धन० ॥ २ ॥ श्रीपद्मप्रन मूरति थापी, सकल तीरथ शणगार रे ॥ कलियुग कल्पतरु ए प्रगट्यो, वंछित फल दातार रे ॥ धन० ॥ ॥ ३ ॥ उपासरा बे हजार कराव्या, दानशाला शय सात रे ॥ धर्म तणा आधार आरोपी, त्रिजग हुउ विख्यात रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ सवा लाख प्रासाद करा व्या, छत्रीश सहस उद्धार रे ॥ सवा कोडी संख्यायें प्रतिमा, धातु पंचाणुं हजार रे॥ धन० ॥ ५ ॥ एक प्रासाद नवो नित नीपजे, तो मुखशुद्धीज होय रे ॥ एह अनिग्रह संप्रति कीधो, उत्तम करणी जोय रे ॥ ॥ धन० ॥ ६ ॥ आर्य सुहस्ति गुरु उपदेशें, श्रावकनो

आचार रे ॥ समकित मूल बार व्रत पाली, कीधो जग उपगार रे ॥ धन० ॥ ७ ॥ जिनशासन उद्योत करी नें, पाली त्रण खंभ राज रे ॥ ए संसार असार जाणी नें, साध्यां आतम काज रे ॥ धन० ॥ ८ ॥ गंगाणी नयरीमां प्रगट्या, श्रीपद्मप्रभ देव रे ॥ विबुध कानजी शिष्य कनकने, देहो तुम पयसेव रे ॥ धन० ॥ ए ॥

॥ पद ठुमरीमां गीत ॥

॥ सहसफणा रे मोरा साहेबा, तोरी सांमरी सुरत पर वारी जाउं रे ॥ सह० ॥ तन मन लगन लगो इक तोशुं, हांरे में तो देव अवर नही ध्याउं रे ॥ स० ॥ १ ॥ सफल आजकी घडी हे मेरी, हांरे में तो देखी दरश सुख पाउं रे ॥ सह० ॥ २ ॥ वदन कमल छबि देखत सुंदर, हांरे हुं तो रोम रोम उलसाउं रे ॥ सह० ॥ ३ ॥ तुम गुनको कबु पार न आवे, हांरे हुं तो उपमा कहा बताउं रे ॥ सह० ॥ ४ ॥ कीर्त्तिसागर कहे भव भव तोरी, हांरे में तो मोज महिर नित पाउं रे ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ पद राग षट ॥

॥ स्वारथकी सब हे रे सगाइ, कुण माता कुण बेनड भाइ ॥ स्वा० ॥ १ ॥ स्वारथ भोजन भुक्त सगाइ, स्वारथ बिन कोइ पाणि न पाइ ॥ स्वा० ॥ २ ॥ स्वारथ मा बाप शेठ बडाइ॥ स्वारथ बिन नहु होत सहाइ ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ स्वारथ नारी दासी कहाइ, स्वारथ बिन लाठी ले धाइ ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ स्वारथ चेला गुरु गुरु भाई, स्वारथ बिन नित होत लराइ ॥ स्वा०

॥ ४ ॥ समयसुंदर कहे सुणो रे लोकाइ, स्वारथ हे नलि परम सगाइ ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद राग षट ॥

॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ, बेरन निंद्रा कहांसें रे आइ ॥ सो० ॥ निंद्रा कहे में तो बाली रे नोली, बडे बडे मुनिजनकूं नाखुं रे ढोली ॥ सो० ॥ १ ॥ निंद्रा कहे में तो जमकी दासी, एक हाथे मूकी बीजे हाथें फांसी ॥ सो० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो नाइ ब नीया, आप मूए सारी डुब गइ डुनीयां ॥ सो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पंचपरमेष्ठी आरति ॥

॥ इहविध मंगल आरति कीजें, पंच परमपद नजि सुख लीजें ॥ इह० ॥ पहेली आरति श्रीजिनरायजा, नविजन पार उतार जीहाजा ॥ इह० ॥ १ ॥ बीजी आरति सिद्धस्वरूपी, ध्याने उपजे परम रस कूपी ॥ इह० ॥ २ ॥ त्रीजी आरति सूरि मुणिंदा, जनम जनम डुःख दूर हरंदा ॥ इह० ॥ ३ ॥ चोथी आरति श्रीउवझाया, दरिसण देखत पाप नसाया ॥ इह० ॥ ४ ॥ पांचमि आरति साधु बताइ, मोह मान ममताकुं हटाइ ॥ इह० ॥ ५ ॥ छठी आरति हे सुखदाइ, कुमति बिदारण शिव अधिकाइ ॥ इह० ॥ ६ ॥ सातमि आरति श्रीजिनबानी, ध्यान धरत मुगती सुखदानी ॥ इह० ॥ ७ ॥ इति आरति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार लिख्यते ॥

॥ सखि नमीयें ते नेम जिनराज, गढ गिरनारें

रे ॥ राणी राजुल जूए वाट, साते वारें रे ॥ १ ॥ सखि आदित्यें अरिहंत,अम घर आवो रे ॥ म्हारा श्याम सलूणा नेम, दिलमां नावो रे ॥ २ ॥ सखि सोमें ते शुभ शणगार, सजियें अंगें रे ॥ मारा जगजीवन जिनराज, रमीयें रंगें रे ॥ ३ ॥ सखि मंगल शुभदिन आज, मंगल चारो रे ॥ म्हारो नवभव केरो नेह, स्वामी संभारो रे ॥ ४ ॥ सखि बुधें ते घरे आवो नाथ, बुद्धिना दरिया रे ॥ तमें एक सहस्र ने आठ, लखणें भरिया रे ॥ ५ ॥ सखि गुरु गिरुवा गुणवंत, शिवा देवीना रे ॥ तमें समुद्रविजय कुलचंद, नेम नगीना रे ॥ ६ ॥ सखि शुक्रें सहसावन्न, चालो सजनी रे ॥ म्हारे प्रगट थयो रे प्रभात, वीती रजनी रे ॥ ७ ॥ सखि शनियें ते संयम लीध, प्रीत वधारी रे ॥ वेहु पोहोतां मुक्ति मझार, नर ने नारी रे ॥ ८ ॥ कहे मूलचंद मन रंग, आशा फलशे रे ॥ जे उज्ज्वल पाले शील, भवोदधि तरशे रे ॥ ए ॥ इतिसं० ॥

॥ अथ पखीखामणा प्रारंभ ॥

॥ अरिहंतजीने खमावीयें रे, जेहना गुण छे बार ॥ खमो भवि खामणां रे ॥ १ ॥ सिद्ध जीवने खमावीयें रे, गुण आठेएं मनोहार ॥ खमो भवि० ॥ २ ॥ आचारजने खमावीयें रे, जेहना गुण छत्रीश ॥ खमो भवि० ॥ ३ ॥ उपाध्यायने खमावीयें रे, जेहना गुण पचवीश ॥ खमो भवि० ॥ ४ ॥ साधु सरवे खमावीयें रे, शोभे गुण सत्तावीश ॥ खमो भवि० ॥ ५ ॥ श्राव

क श्राविकानें खमावीयें रे, जेह्ना गुण एकवीश ॥ खमो नवि० ॥ ६ ॥ आठम पाखी खमावीयें रे, चो मासुं त्रण वार ॥ खमो नवि० ॥ ७ ॥ संवत्सरी शुद्ध ख मावीयें रे, खमावीयें वारं वार ॥ खमो नवि० ॥ ८ ॥ रूडो संघ मनावीयें रे, मनावीयें वारं वार ॥ खमो नवि० ॥ ए ॥ मुक्तिसागर सूरि खमावीयें रे, अचलगच्छ शणगार ॥ खमो नवि० ॥ १० ॥ चोमासी गुरुने ख मावीयें रे, वांचे सूत्र सिद्धांत ॥ खमो नवि० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीजीवविचारनुं स्तवन प्रारंन ॥

॥ ढाल ॥ श्रीसरसती जी, वरसति वचन विलास रे ॥ थुणशुं त्रिनुवन जी, तारण श्रीजिन पास रे ॥ सुणो समरथ जी, सुंदर श्रीजिन देव रे ॥ मुऊ देजो जी, नव नव तुम पयसेव रे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तुऊ सेव पा खे सहिज नमियो, तुं निगमियो जिनवरू ॥ छक्का यमांहे जीव सहियो, छेदन नेदन आकरूं ॥ उत्कृष्ट आयु अवगाहना जे, ईणें जीवें जोगवी ॥ लाख चो राशी जीवा योनि, तेह पण इम नोगवी ॥ २ ॥ ढाल ॥ मणि स्फटिक जी, हिंगलो रयण प्रवाल रे ॥ पारो अबरख जी, गेरु खडी हरियाल रे ॥ उस सुर मो जी, माटी पाषाण सात धात रे ॥ लूणादिक जी, पृ थिवी नेद बहु जात रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ अनेक नेद वलि पाणी नणीयें, कुप सरोवर धूअरू ॥ उसा हि म घणोदधि करा कहीयें, समुद्र अनेक पाणी ख रू ॥ अंगाल जाल मुम्मूर विजली, उलकापात अग्नि

कणा ॥ सिद्धांतमांहे छे विशेषें, नेद अनेक अग्नि त
णा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एक वायरो जी, हलुउं हलुउं वा
य रे ॥ गुंजारव जी,करतो चिहुं दिशि धाय रे ॥ पाडे उ
त्कली जी,वली वंटोलीयो एक रे ॥ घनवातें जी,वायु
नेद अनेक रे ॥ ५ ॥त्रुटक ॥ इम दोय नेद वनस्प
ति केरा, साधारण प्रत्येक तरू ॥ कंद कोमल फल
अंकूरा, फूल सेवाल सेखरू ॥ अनेक नेद साधारण
सुणीयें, लक्षण तस शास्त्रें ग्रही ॥ एहथी जे होय वि
परीत, तेह प्रत्येक वनस्पति कही ॥६॥ ढाल ॥ पृथिवी
पाणी जी,तेऊ वाउ काय रे ॥ वणसई पांचमी जी, था
वरकाय कहेवाय रे ॥ विकलेंडी जी, नारकी तिर्यंच
मानवी ॥ वली देवता जी, छठो त्रसकाय पालवी
॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ पहेली पृथिवीकाय आयु, वरस
सहस बावीश ए ॥ सात सहस्र अपकाय नणीयें, अ
ग्नि त्रण दिन दीस ए ॥ वरस सहस त्रण वायु सुणी
यें, वणसई दस सहस जाणीयें ॥ नारय देव बिण
जघन्य आयु, अंतर मुहूर्त्त प्रमाणीयें ॥८॥ ढाल॥अंगु
लतणो जी,नाग असंख्यातमो नणुं ॥ स्वानाविक जी,
जघन्य हुवे सहुनो तनु ॥ चार थावर जी,गुरु लघु स
म तनु जोय रे ॥ वनस्पति जी,सहस योजन जाजी
होय रे ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ इम होय समूर्छिम मनुष्य
साधारण, सूक्ष्म जेह निगोद ए ॥ तस आयु अंतर
मुहूर्त्त होवे,चौदराज अनेद ए ॥ पांच थावर कहियें
एक इंडी, शास्त्रें नेद तस छे घणा ॥ एम कहे कवि

यण सुणो नवियण, नाम मात्रज ए नण्यां ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ नव साढा सत्तर कह्या, श्वासोश्वास मका र ॥ एकेंडी नव नोगवी, वलतो विगल विचार ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बे कर जोडी ताम रे, नड़ा वीनवे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ शंख बीप कोमा सरमीयां रे, मेहर थापना सा र ॥ जलो पूरानें अलसीयां रे, ए बेइंडी विचारो रे ॥ धन जिनवयणडां, उतारे नव पारो रें, ते ज गमां वडा ॥ ए आंकणी ॥ १२ ॥ कान खजूरा माकडि जूआ रे, गद्दहीयां घीमेल ॥ कीडी गिंगोडा कातरा रे, गोकीड मकोडा चूडेल रे ॥ धन० ॥ १३ ॥ सावा जूवा धान कीडला रे, ईली अने इंडगोप ॥ उद्देही ने वली कुंथुआ रे, म करो तेंडीनो लोप रे ॥ धन० ॥ ॥ १४ ॥ वीबी कसारी खडमाकडी रे, नमरा नमरीने तीड ॥ माखी मसा मंसा पतंगीया रे, टाली चौरिं डीनी पीड रे ॥ धन० ॥ १५ ॥ बेंडी वरसज बारनुं रे, हवे तेंडी प्रकाश ॥ दिवस उगणपञ्चाशनो रे, चौ रिंडी षट् मास रे ॥ धन० ॥ १६ ॥ शंख प्रमुख जे बेइंडी रे, तस तनु जोयण बार ॥ कान खजूरा गाउ त्रणनो रे, नमर होये गाउ चार रे ॥ धन० ॥ १७ ॥ बेंडी तेंडी चौरिंडी रे, ए विगलेंडी रे नाम ॥ कहे कवियण तुमें सांनलो रे, हवे पंचेंडी अनिराम रे ॥ ध० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ नहि विवेक विकल पणे, नही तस तत्त्व वि चार ॥ नव नवांतरें नोगव्या, उपनो नरक मकार ॥ १९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जंबूद्विप मकार रे ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नप्रभा पहेली जेह रे, सागर एकनुं ॥ एकत्रीश हाथ ठ आंगुला ए ॥ शर्क प्रभा बीजी होय रे, त्रण सागर तिहां ॥ हाथ बाशठ बार आंगुला ए ॥२०॥ वालुप्रभा पुह्वी त्रीजी रे, सात सागर आयु ॥ एकत्रीश धनुष एक हाथनुं ए ॥ पंकप्रभा चोथी नाम रे, दश सागर सही ॥ बाशठ साढा धनुष तनु ए ॥ २१ ॥ पंचमी धूमप्रभायें रे, सत्तर सागर सुणो ॥ धनुष सवासो जाणीयें ए । तमप्रभा ठठी जाणो रे, बावीश सागर ॥ धनुष अढीशें नाणीयें ए ॥ २२ ॥ तम तमा सातमी नाम रे, तेत्रीश सागर ॥ धनुष पांचशें देह रचे ए ॥ पांच कोडी अडशठ लाख रे, सहस नवाणुं ए ॥ रोगें नारकी नित्य पचे ए ॥२३॥ परमाधामी पचावे रे, वली दश वेदना ॥ कीधां कर्म ते भोगवे ए ॥ राज राज प्रत्यें पोह्वी रे, इम सात राजनी ॥ सातमी पृथिवी योगवी ए ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ सात प्रकारें नारकी,बोल्यो तास विचार ॥ जलचर थलचर खेचरू, तिर्यंच त्रण्य प्रकार ॥ २५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ त्रिपदीनी देशी ॥

॥ उरपुरी भुजपुरी गर्भज थाय, गर्भ समूर्छिम मछ कहेवाय, वरस पूरव कोडी आय हो ॥ भविका ॥ वरस पूर्वकोडी आय ॥ २६ ॥ सहस योजन तस काया दीसे, भुजपुरिकोश पृथक्त वली कहीसे, जिन वचनें चित्त हींसे हो ॥ भवि० ॥ जि० ॥ २७ ॥

त्रेपन सहस संमूर्छिम व्याल, भुजपुरि सर्प सहस बायाल, योजन पृथक्त तनु नाल हो ॥ नवि० ॥ ॥ यो० ॥ २८ ॥ गर्भ तिर्यंच चतुष्पदनी जात, त्रण पल्योपम आयु विख्यात, काया ब कोश सुणो भ्रात हो ॥ नवि० ॥ काया० ॥ २९ ॥ चतुष्पद संमूर्छिम कहियें जास, आयु सहस चोरासी वास ॥ कोश पृथक्त तनु तास हो ॥ नवि० ॥ कोश० ॥ ३० ॥ पंखी गर्भज आयुनो भाग, पल्योपम असंख्यातमो भाग, धनुष पृथक्त तनुलाग हो ॥ नवि० ॥ धनु० ॥ ॥ ३१ ॥ संमूर्छिम पंखी बहुंतेर सहस, ए पहेले आगे कहेश, भजपद विवरी लहेश हो ॥ नवि०॥ च०॥ ॥ ३२ ॥ जेणे आरे जे मानव आयु धार, तेह तणा भाग कीजें उदार, भाग चोथे अश्व सार हो ॥ नवि० ॥ भाग० ॥ ३३ ॥ अज आयु भाग आठमे वखाणुं, गाय भेंष मे उंट खरादिक जाणुं, पांचमे भाग प्रमाणुं हो ॥ नवि० ॥ पांच० ॥ ३४ ॥ श्वानादिक भाग दशमे कहीयें, हस्ति आयु मानव पदें लहीयें, जिन आणा शिर वहीयें हो ॥ नवि० ॥ जिन० ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥ पशुअपणे परवश पड्यो, पाम्यो दुःख अपार ॥ कर्म केतां तिहां निर्झरी, धरीयो मनुज अवतार ॥ ३६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ कपूर होवे अतिऊजलो रे॥ ए देशी ॥

॥ चार कोडाकोडी सागरू रे,सुसम सुसमा नाम ॥ त्रण्य पल्योपम आयुखं रे, त्रण गाउ अभिराम रे ॥

प्राणी मानव नव अवतार, नरीयें सुकृत नंमार रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३७ ॥ ए आंकणी ॥ सागर कोडा कोडी त्रण्यनो रे, सुसम बीजो जेह ॥ दोय पल्योपम आउखुं रे, युगल गाउ दोय देह रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३८ ॥ त्रीजो सुसम डुसमा रे, सागर कोडा कोडी दोय ॥ एक पल्योपम युगलनो रे, कोश काया एक होय रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३९ ॥ पेहेले तुअर बीजे बोर समो रे, त्रीजे आमलधार ॥ अठम छठ एकांतरो रे, सुर तरु पूरे आहार रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४० ॥ डुसम सुसम कोडा कोडी नो रे, सहस बेंआलीश ऊण ॥ पूर्व कोडी वरस मा नथी रे, पांचशें धनुष प्रमाण रे ॥ प्राणी मान० ॥ ॥ ४१ ॥ वरस सहस एकवीशनो रे, डुसमा कलियुग नाथ ॥ एकशो वीश वर्ष आंउखुं रे, मानव काया सात हाथ रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४२ ॥ छठो सहस एकवीशनो रे, डुसमाडुसम अपार ॥ वीश वरस दोय हाथना रे, मछाहारी नरनार रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४३ ॥ ए छ आरे अवसर्प्पिणी रे, उत्सर्प्पिणी विपरीत जाण ॥ कालचक्र ए दोय मली रे, बार आरे प्रमाण रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४४ ॥ पांच नरत पांच ऐरवतें रे, तिहां सदा सरिखो काल ॥ पांचविदेह परंपरा रे, चोथो आरो सुविशाल रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥ दश दृष्टांतें दोहिलो, मानवनो अवतार ॥ शुनन्नावें सुकृत पणे, उपनो देव मझार ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ नंदनकूं त्रिसला हुलरावे ॥ ए देशी ॥

॥ दश प्रकारें नवनपति कहीयें, व्यंतर आठ प्रकारो रे ॥ ज्योतिषी पांच प्रकारें सुणजो, दोय विमानिक सारो रे ॥ दश० ॥ ४७ ॥ असुर कुमार साधिक एक सागर, सात हाथ तस काय रे ॥ देशें ऊणा दोय पल्योपम, नव निकाय कहेवाय रे ॥ दश० ॥ ॥ ४८ ॥ लाख सहस वरस एक पल्योपम, चंद्र सूर्य विचार रे ॥ व्यंतर आयु एक पल्योपम, तनु सम असुर कुमार रे ॥ दश० ॥ ४९ ॥ नारकी नवन पति ने व्यंतर,दश सहस वरस जघन्य रे ॥ ज्योतिषी पल्योपम अड नागें, पल्योपम विमान रे ॥ दश० ॥ ॥ ५० ॥ युग्म सौधर्मने ईशानेंद्र, इहांथी होय एक राजे रे ॥ सागर बे बीजे बे जाजा, सात हाथ विराजे रे ॥ दश० ॥ ५१ ॥ सनतकुमार जुगम माहेंद्रे, दोय राज हवे जाणो रे ॥ त्रीजे सात चोथे सात जाजा, ठ हाथ काया प्रमाणो रे ॥ दश० ॥ ॥ ५२ ॥ पांचमे ब्रह्म आयु दस सागर, लांतक ठ्ठे चौद रे ॥ पांच हाथ तस काया कहीयें, त्रण्य राज अनेद रे ॥ दश० ॥ ५३ ॥ शुक्र सातमे सत्तर सागर, वली सहसारें अढार रे ॥ चार हाथ तनु सुर देह सोहे, राज होवे तिहां चार रे ॥ दश० ॥ ५४ ॥ नवमे आनत उंगणीश सागर, प्राणत दशमे वीश रे ॥ एकादशमे आरण्य एकवीश, बारमे अच्युत बावीश रे ॥ दश० ॥ ५५ ॥ ए चारे त्रण हाथनी का

या, पांच राज्य इहां सोहे रे ॥ नव ग्रैवेयक एक उपर उपे, दीठे नवि मन मोहे रे ॥ दश० ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥ बार स्वर्ग सोहे सदा, तिहां राज्य नीति प्रधान ॥ नेद बीजो वैमान नो, नव ग्रैवेयक विधान ॥ ५७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माइ धन सुपन तुं, धन ॥
॥ जीवो तोरी आश ॥ ए देशी ॥

॥ सुदर्शन पहेले, सागर तिहां त्रेवीश ॥ सुप्रतिबंध चोवीश, मनोरमें पचवीश ॥ ५८ ॥ सर्वतोभद्रें छव्वीश, सुविशालें सत्तावीश ॥ सुमनसें अठावीश, हवे त्रिक त्रीजे जगीश ॥ ५९ ॥ उगणत्रीश सोमनसें, प्रियंकर आठमे त्रीश ॥ आदित्यें एकत्रीश, दोय हाथ तनु दीश ॥ ६० ॥ ए नव ग्रैवेयकें, ठए राज प्रधान ॥ सातमें सिद्ध ठेहडे, हवे अनुत्तर विमान ॥ ॥ ६१ ॥ विजय विजयंतें, जयंत अपराजीत ॥ सरवारथ सिद्धें, नहीं तिहां राजनी नीत ॥ ६२ ॥ सागर आयु तेत्रीश, काया कर एक वारू ॥ एका अवतारी, सुख अनंत तस चारू ॥ ६३ ॥ तिहांथी बार योजन, सिद्ध शिला महंत ॥ जोजनने अंतें, सिद्ध हवा अनंत ॥ ६४ ॥ आयु अवगाहना, कहि सामान्य प्रकार ॥ जघन्य संक्षेपें, बोल्या तास विचार ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥ नवस्थिति इणि परें नोगवी, तुऊविण त्रिभुवन देव ॥ कुण स्थानक काया स्थितें, रह्यो कहूं सुण हेव ॥ ६६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ जरतनृप जावशुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ सात हेठल सात उपरें ए, चउद राजलोक जाव ॥ जविक जिन जावशुं ए ॥ पुरुषाकार लोक पूरीयो ए, षट पदारथ जाव ॥ जवि० ॥६७॥ नयर जवनपति देवता ए, अधो लोक निःशंक ॥ जवि० ॥ व्यंतरनर तिरि गिरिवरू ए, द्वीप समुद्र असंख्य ॥ जवि० ॥ ६८ ॥ अग्नि विकलेंडी ज्योतिषी ए, ए सवि तीर्छे लोक ॥ ॥ जवि० ॥ स्वर्ग ग्रैवेयक पांच अनुत्तरू ए, सर्व सिद्ध ऊर्ध्व लोक ॥ जवि० ॥ ६९ ॥ असंख्याती उत्सर्प्पिणी ए, सर्व एकेंद्रिय स्थितिकाय ॥ जवि० ॥ काल अनंतो अनंतकायमां ए, उपजे ने वली जाय ॥ ॥ जवि० ॥ ७० ॥ विगल संख्या वरस सहस्सनी ए, नर तिरि जव सात आठ ॥ जवि० ॥ नारकी देव चवीय न उपजे ए, जघंन्य आयु परिपाठ ॥ जवि० ॥ ॥७१॥ सात सात लाख चार थावरू ए, वनस्पति दश लाख ॥जवि० ॥ अनंतकाय चौद लाख सुणो ए, विगलेंडी दो दो लाख ॥ जवि० ॥ ७२ ॥ नारकी तिर्यंच देवता ए, चउद लाख होये तेह ॥ जवि० ॥ चउद लाख वली मानवी ए, संख्या जीवायोनि एह ॥ जवि० ॥ ॥ ७३ ॥ इंडी पांच त्रण बल कह्यां ए, श्वासोश्वास वली आय ॥ जवि० ॥ दश प्राण होयें सन्निया रे, नव असन्निया थाय ॥ जवि० ॥ ७४ ॥ ठ सात आठ विकलेंद्रिय तणा ए, एकेंडी प्राण चार ॥ जवि० ॥ नर तिरियंच त्रण वेद सुणो ए, देवता दोय वेद सार ॥

नवि० ॥ ७५ ॥ थावर विकलेंडी ने नारकी ए,एक न पुंसक वेद ॥ नवि० ॥ पद्मणुं अधिक बादर अग्गी ए, वैमानिक जुवणेंद ॥नवि० ॥ ७६ ॥ निरय व्यंतर ज्योतिषी चउरिंदि ए, तिरियंच बितिइंडीक ॥ नवि० ॥ पृथिवी पाणी वायु वणसई ए, एक एक जीवथी अधि क ॥ नवि० ॥ ७७ ॥ चिहुं गति जमी जमी उपनो ए, संप्रति प्रजु पद लीध ॥ नवि० ॥ शास्त्रथकी जे विरुद्ध कह्युं ए, ते पंमित करजो शुद्ध ॥ नवि० ॥ ७८ ॥ हार हृदये रयणनो ए, धरजो चतुर सुजाण ॥नवि०॥ जणे गणे जे सांजले ए, तस घर कोडि कल्याण ॥न०॥७ए॥

॥ ढाल नवमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ चउदराजमांहे जीव केइ केइ जुग जम्यो, सूक्ष्म वली बादर अनंती वारू ॥ कर्मनी कोड जरी अकाम नि र्जर करी, पामीयें पास त्रिजुवन्न तारू ॥ ८० ॥ जेट रे जेट प्रजु पास चिंतामणि, एहिज मुक्तिनो मार्ग सा चो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने परिहरो, मोह मिथ्यामतें केम राचो ॥ जेट० ॥ ८१ ॥ नयर गुण दीव गुण वेलि वाधे सदा, पुष्करावर्त्त पास मेघ देवा ॥ श्रीसं घ मंमप तलें वेलि ते विस्तरे, कपजे आनंद सुकृत मे वा ॥ जेट० ॥ ८२ ॥ संवत ससी सायर चंड्लोचन (१७१२) स्तव्यो, आशोशुदि दशमी रविवार राजे॥सू रि शिर ताज गुरु राज आणंदजी, तस पटें सूरि वि जयराज गाजे ॥ जे० ॥ ८३ ॥ धन धन हर्ष गुरु विबुध चूडामणि, जास दीक्षित जगें कीर्त्ति सारी ॥

रत्नविजय बुध सत्यविजय तणो, वृद्धिविजय नणे आनंदकारी ॥ नेट० ॥ ७४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीजिनप्रतिमा उपर स्तवन ॥

॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ जेहने जिनवरनो नहीं जाप, तेहनुं पासुं न मेले पाप ॥ जेहने जिनवरशुं नहीं रंग, तेहनो कदी न कीजें संग ॥ १ ॥ जेहने नहीं वाहाला वीतराग, ते मुक्तिनो न लहे ताग ॥ जेहने नगवंतशुं नहीं नाव, तेहनी कुण सांनलशे राव ॥ २ ॥ जेहने प्रतिमाशुं नहीं प्रेम. तेहनुं मुखडुं जोइयें केम ॥ जेहने प्रतिमाशुं नहीं प्रीत, तेतो पामे नहिं समकित ॥ ३ ॥ जेहने प्रतिमाशुं ठे वेर, तेहनी कहो शी थाशे पेर ॥ जेहने जिनप्रतिमा नहीं पूज्य, आगम बोले तेह अपूज्य ॥ ४ ॥ नाम थापना द्रव्य ने नाव, प्रनुने पूजो सही प्रस्ताव ॥ जे नर पूजे जिननां बिंब, ते लहे अविचल पद अविलंब ॥ ५ ॥ पूजा ठे मुक्तिनो पंथ, नित नित नांखे इम नगवंत ॥ ४ ॥ सहि एक नर कविना निरधार, प्रतिमा ठे त्रिनुवनमां सार ॥ ६ ॥ सतर अठाणुं आषाढी बीज, उज्ज्वल कीधुं ठे बोध बीज ॥ इम कहे उदयरतन उवज्झाय, प्रेमें पूजो प्रनुना पाय ॥ ७ ॥ इति जिनप्रतिमा स्तवनं ॥

॥ अथ नवतत्त्वनुं स्तवन प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ सरसतिनें प्रणमुं सदा, वरदाता नित्य मेव ॥ मुऊ मुख आवी तूं वसे, करुं निरंतर सेव ॥ १ ॥

आदीसर अरिहंत नमुं, जुगला धर्म निवार ॥ गुरु श्रुत देवी चंदलो, एहिज मुज आधार ॥ २ ॥ जास तणां पदयुग नमी, वर्णवुं तत्त्वविचार ॥ नवियण एक चित्तें करी, नाम कहुं हितकार ॥ ३ ॥ जीव अ जीव पुण्य पाप ने, संवर आश्रव नेद ॥ निर्जरा बं ध ने मोक्ष जे, जिनजीयें नाख्या एह ॥ ४ ॥ एहना नेद ठे नव नवा, आगममां अनुरूप ॥ गुरुमुखथी ते सांजली, नाखुं एह स्वरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ शोलमा श्रीजिनराज, उलंग ॥
॥ सुणो अम तणी ललना ॥ ए देशी ॥

॥ जीव तत्त्वना नेद ते, चउदें जाणीयें ॥ ल० ॥ चउद अजीवना नेद, ते मनमां आणीयें ॥ ल० ॥ नेद बहेंतालीश पुण्यना, नवियण चित्त धरो ॥ ल० ॥ व्यासी नेद ते पापना, मनथी संवरो ॥ ल० ॥ १ ॥ आश्रवना बहेंतालीश, नेद ते नावियें ॥ ल० ॥ संवरना सत्तावन, चित्तमां लावीयें ॥ ल० ॥ बार नेदें ठे निर्जरा, कर्म ते निर्जरे ॥ ल० ॥ जेहथी प्राणी मोक्ष, रमणी सुखने वरे ॥ ल० ॥ २ ॥ बंध तत्त्वना चार, ते बंध ने तोडीयें ॥ ल० ॥ मोक्ष तत्त्वना नव, ते सुखथी जोडीयें ॥ ल० ॥ सर्व मली नव तत्त्वना, नेद ते जाणजो ॥ ल० ॥ बशे ने ठहोतेर ते, मनमां आणजो ॥ ॥ ल० ॥ ३ ॥ तेमां अठ्याशी अरूपी, नेद ते सुख करू ॥ ल० ॥ एकशो अठ्यासी रूपी, कहे ते जिनवरू ॥ ल० ॥ रुंगर गुरु ध्यानथी, सुखने अनुसरे ॥ ल० ॥

विवेक कहे नविलोक, ते नव सायर तरे ॥ ते०॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ हवे प्रथम जीव तत्त्वना, नेद कहुं हितकार ॥ विवरीने ते वर्णवुं, एक एक सुखकार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ नदी यमुनाके तीर, उमे ॥
॥ दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ एक नेदें कह्यो जीव, डुविध नेदें वली ॥ त्रण्य प्रकारें जाण, चउविह कहे केवली ॥ पंच षटविध जीव ठे, उए नांखीया ॥ अरिहा जिनवर एह के, मुखथी दाखीया ॥ १ ॥ चेतना लक्षण जीव ते, एक अनेद ठे ॥ त्रस अने बीजो स्थावर, इहां नवि खेद ठे ॥ स्त्री पुरुष नपुंसक, वेद त्रण्ये सही ॥ देव गइ मनुष्य तिर्यंच, वली नारक कही ॥ २ ॥ पांच प्रकारें जीव, पंचेंड्रिय परखीयें ॥ ठ प्रकारें जीव, ठकायने निरखीयें ॥ इणेविध ठ नेदें जीव, धारो तुमें एक मना ॥ हवे आगल दश प्राण,कहे त्रिजुवन जिना ॥३॥ पांच इंडी त्रण बल, श्वासोच्छ्वास आउखुं ॥ ए दश प्राणीने होय, विवरी कहुं पारिखुं ॥ एकेंडीने चार प्राण, बेंडीने ठ कह्या ॥ तेंडी सात जाणो, चौरिंडीयें आठ लह्या ॥ ४ ॥ असन्नी पचेंडी ने नव,संज्ञी दश धारजो ॥ ए विना अवर न होय,संदेह मन वारजो ॥ हवे एकेंड्रिय सूक्ष्म, बादर दोय ठे ॥ पंचेंड्रिय संज्ञी असंज्ञी, दोय नेद जोय ठे ॥ ५ ॥ बेंडी तेंडी एक, चौरिंडी जाणजो ॥ ए साते नेद होय के, शुन मन आणजो ॥ पज्ज अपज्ज ए दोय, चउद नेद जीवना ॥

धारो चित्तमें जेह के, नवि जन एकमना ॥ ६ ॥ आ
हार शरीरने इंद्रिय, श्वास वचन सही ॥ मननी छठी
जाण, एकेंद्रिय चउ कही ॥ बि ति चौरिंद्रिय अस
न्नी, ने होये पंच ए ॥ षट् सन्नी ने जाणवी, विशेष
कहे संच ए ॥ ७ ॥

॥ दोहा॥ जीव तत्त्व पूरण थयुं, हवे अजीव वि
चार ॥ भिन्न भिन्न करीने कहुं, सांभलजो नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वीरजीने वचनें रे अमृत रस झरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मास्तिकाय खंध देश प्रदेश छे रे, तेम अधर्मा
स्तिकाय ॥ एहना पण ए त्रण भेदज कह्या रे, एम
आकाशना त्रण थाय ॥ भवि तुमें जाणो रे अजीव त
त्त्वना रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ए त्रणना मली नव भेद
सुंदरू रे, दशमो भेद छे काल ॥ खंध देश प्रदेश प्रमा
णुउ रे, अजीवना चौद कह्या सुविशाल ॥ भवि० ॥
॥ २ ॥ धर्मास्ति अधर्मास्ति पुग्गला रे, आकाश काल
सुविहाण ॥ ए पांचे अजीव ते जिन कह्या रे, कह्या
कह्या त्रिभुवन भाण ॥ भवि० ॥ ३ ॥ चलण स्वभाव
धर्मास्तिकायमां रे, अधर्मास्ति थिर ठाण ॥ अवकाश
आपे पुग्गल जीवने रे, हवे पुग्गलना चार विन्नाण ॥
भवि० ॥ ४ ॥ खंध देश प्रदेश प्रमाणुउ रे, पुग्गलना
ए चार भेव ॥ हवे आवलिका भेद तुमें लहो रे, अ
संख्य समय एक आवलि मेव ॥ भवि० ॥ ५॥ एक को
डीने सडसठ लाख छे रे, उपर सीतोत्तर सहस्सज जो

य ॥ बशें ने शोल आवलिका कही रे, एटली आवलि
यें एक मुहूर्त्त होय ॥ नवि० ॥ ६ ॥ त्रीश मुहूर्त्तें दिवस
रात्रि कही रे. पंदर अहोरात्रें एकज पक्ष ॥ बे पक्षें ए
कमासज ना वियें रे, बार मासें एक वर्षज दक्ष॥ नवि०
॥ ७ ॥ एहवे वरसें हवे पूर्व कहुं रे, सितेर लाख कों
डी वरसज नाय ॥ उपन्न स हस्स कोडी वरस मान
कहुं रे, पूर्व एटले वरसें थाय ॥ नवि० ॥ए॥ असंख्या
त पूरवें एक पल्य जाणीयें रे, दश कोडा कोडी पल्यें
सागर एक ॥ सागर दश कोडाकोडी उत्सर्प्पिणी रे,
अवसर्प्पिणी कोडाकोडी दश बेक ॥ नवि० ॥ ए ॥
वीश कोडाकोडी सागरें काल चक्र बे रे, काल अनंतें
पुजल परावर्त्त जाण ॥ रुंगर गुरुना पद शुज ध्यानथी
रे, नित्य नित्य विवेक लहे कल्याण ॥ नवि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ पुण्य तत्त्व तणा कहुं, नेद बहेंतालीश
जेह ॥ एकमना थइ सांजलो, आणी अधिको नेह ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेबजी श्रीविमलाचल ॥
॥ नेटीयें हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ बहेंतालीश नेद पुण्य तत्त्वना हो लाल, शाता
वेदनी उंच गोत्र ॥ साहेबजी ॥ मनुष्यगति मनुष्यानु
पूर्वी हो लाल, चार नेद ए युक्त ॥ सा० ॥ पुण्य तत्त्व
हवे सांजलो हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साहे
बजी सुरडुग पंचेंड्रियपणुं हो लाल, पांच देह मनो
हार ॥ सा० ॥ औदारिक वैक्रिय आहारकें हो
लाल, अंगोपांगें युक्त धार ॥ सा० ॥ पु० ॥ २ ॥

॥ सा० ॥ प्रथम संघयण संस्थानशुं हो लाल, शुभ वरण शुभ गंध ॥ सा० ॥ शुभ रस शुभ स्पर्शने हो लाल, अगुरु लघु अदंभ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ॥ ३ ॥ सा० ॥ पराघात श्वासोश्वासने हो लाल, भेवाने जेहनी सक्त ॥ सा० ॥ आताप भेद पच बीशमो हो लाल, उद्योत कर्मनी व्यक्त ॥ सा० ॥ ॥ पु० ॥ ४ ॥सा०॥ शुभखगई शुभगति करे हो लाल, निर्माण नाम अगर्व ॥ सा० ॥ त्रस दशको दश भेदनो हो लाल, आगलें कहे ते सर्व ॥ सा० ॥ ॥ पु० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सुर नर तिरि आउखूं हो लाल, तीर्थंकर नाम कर्म ॥ सा० ॥ हवे त्रस दशको वर्णवुं हो लाल, जेहथी लहे शिव शर्म ॥ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ सा० ॥ त्रस बायर पर्याप्ता हो लाल, प्रत्येक स्थिर शुभ नाम ॥ सा० ॥ सौभाग्य नामकर्मथी हो लाल, जीव लहे शुभ गाम ॥ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ सा० ॥ सुस्वर आदय जस नामथी हो लाल, जीव लहे सुख नित्य ॥ सा० ॥ डूंगर गुरु पद सेवतां हो लाल, विवेक लहे जग जीत ॥ सा० ॥ पु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वथी दुःख होये, पामे नरक दुवार ॥ ते माटे चेतन तुमें, मनथी एह निवार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सुरति महीनानी देशी ॥

॥ आवरण पंचने तिम वली, अंतराय छे पंच ॥ पंच निद्रा कहि दर्शन, चारे ते खल खंच ॥ नीच गोत्र

आशाता, तेम वली मिथ्यात्व ॥ थावर दशको आगल कहे, सांजलो एह विख्यात ॥ १ ॥ नरक त्रिक अने वली, पणवीस कषाय ॥ तिरिय डुग मली कह्या, नेद बासठ ए थाय ॥ ईग बि ति चउ जाई, कुखगई उपघात ॥ होये प्राणीने ते सही, नीच कर्मनी ख्यात ॥२॥ अशुन्न वरण अशुन्न रस, गंध अशुन्न तेम जाण ॥ फरस अशुन्न तेमज कह्यो, आगममां जिन नाण ॥ पढम संघयण विनाहीज, मूकी पढम संस्थान ॥ बहोंत्तेर नेद ए थया, जाणो एहनुं मान ॥ ३ ॥ थावर सुहुम अपज्ज, साधारण अस्थिर ॥ अशुन्न डुनग डुःस्वर, अनादेय अपजश धीर ॥ आगममां पाप तत्वना, नेद ए व्यासी जाण ॥ मूंगर गुरुनो सेवक, तेहने नित्य कल्याण ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वने ए कह्युं, हवे आश्रवनुं ठाम ॥ पाप आवे जे जीवने, आश्रव एहनुं नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ ही ॥ देखी कामिनी दोय के, कामें व्यापीयो रे के ॥ कामें व्यापियो ॥ ए देशी ॥

॥ पांच इंडी कषाय चार के, अव्रत पण कह्या रे के ॥ अव्रत० ॥ त्रण योग त्रण नेद के, गुरु मुखथी लह्या रे के ॥ गुरु० ॥ हवे किरिया ते जोय के, पणवीश अनुक्रमें रे के ॥ पण० ॥ तजीयें जेहथी होय के, पुण्य सुसंक्रमे रे के ॥ पुण्य० ॥ १ ॥ पहेली कायिकी जाण के, बीजी अधिकरणकी रे के ॥ बीजी० ॥ त्रीजी परद्वेषकी होय के, चोथी पारितापनकी रे के

॥ चो० ॥ प्राणातिपातनी पांचमी, ढठी आरंजकी रे के ॥ढठी०॥ परिग्रहकी कही सातमी,आठमी कायिकी रे के ॥ आ० ॥ २ ॥ मिथ्यादंसण अपच्चखाणकी, नव दस एक कह्या रे के ॥ नव० ॥ दिठि पुठि पाडूचकी, त्रयोदश ए लही रे के ॥ त्रयो० ॥ सामंतोनपात निःशस्त्र, स्वहस्तकी शोलमी रे ॥ स्व० ॥ सत्तरमी आणवणी, विदारण अढारमी रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ अणानोग अणवकंख के, बे मली वीश थइ रे के ॥ बे० ॥ अणनपयोग समुदायकी, बावीश ए लइ रे के॥ बा० ॥ त्रवीशमी ते रागकी, चोवीशमी द्वेषकी रे के ॥ चो० ॥ पणवीशमी ईर्यापथिकी, कही विशेषकी रे के ॥ कही० ॥ ॥ ४ ॥ नेद बेहेंतालीश आश्रव, तत्त्वना ए कह्या रे के ॥ तत्त्व० ॥ सम्यक्दृष्टि जीव के,मनथी सद्दह्या रे के ॥ ॥ मन० ॥ डुंगर गुरु शुनध्यानथी, आश्रवने तजो रे के ॥ आश्रव० ॥ विवेक कहे नविलोक के, शिव रमणी नजो रे के ॥ शिव० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ प्राणी वाणी जिन तणी ॥ ए देशी ॥

॥ संवर तत्त्व ते सांजलो, संवरीयें आतमा नित्य रे ॥ अरिहा जिनवरें नांखियो, आगममांहे शुन्न रीत रे ॥ आगममांहे शुनरीत सूचित, सुनित जगत गुरु नासियो सुख कंद रे ॥ सुख कंद अमंद आनंद ॥ जगत गुरु नासीयो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति जे, परिसह बावीश निवारो रे ॥ दशविध मुनिवर धर्म जे,ते मुनिजन नित्य

तुमें धारो रे ॥ते मुनि० ॥सु० ॥ सु० ॥ ज०॥ २॥ पांच स
मिति विवरी कहुं, ईर्या समिति प्रथम वखाण रे ॥
छक्काय रक्षा जे करे, ईर्या कही तेह सुजाण रे ॥
॥ ईर्या० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥३॥ नाषा समिति बीजी
हवे, सहुने सुख उपजे सोय रे ॥ एषणा बहेंतालीश
दोष छे, मुनिने आहार एम होय रे ॥ मुनि० ॥ सु०
॥ सु० ॥ ज० ॥ ४ ॥ अदान निक्षेपणा, समिति ले मूके
योग रे ॥ पारिष्ठापनिका कही, मल मूत्र नाखे उप
योग रे ॥ मल० ॥सु० ॥ सु० ॥ज०॥ ५॥ त्रण गुप्ति हवे
चित्त धरो, मन वचन काया करे शुद्ध रे ॥ आठ प्रव
चन मात जे, मुनि धारे तेहिज बुद्ध रे ॥ मुनि० ॥
॥ सु० ॥सुं०॥ ज० ॥६॥ क्षुधा पिपासा शीत जे, उष्ण
मंसा परिसह चेल रे ॥ रती स्त्रियादिक ते वली, चरि
या निसिहियादिक मेल रे ॥च० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज०
॥ ७ ॥ सया आक्रोश वह जायणा, अलान्न रोग त
ण फास रे ॥ मल सक्कार परिसह जे, पन्ना अन्नाण सं
मत्त रे ॥पन्ना०॥ सु० ॥ सु०॥ ज० ॥८॥ खंति मद्दव अ
ज्जव, मुत्ति तव संजम मेह रे ॥ सच्चं सोहं अकिंचण,
ब्रह्मचर्य ए दशविध जेह रे॥ ब्रह्म०॥ सु०॥ सु०॥ ज०॥
॥ ए ॥ प्रथम अनित्यह नावना, अशरण संसार ए
कत्व रे ॥ अन्यत्त्व नावना पंचमी, अशुचि नावना त
त्त्व रे ॥ अशु०॥ सु०॥ सु०॥ ज०॥१०॥ आश्रव संवर
निर्जरा, लोक बोधि दुर्लन्न नाव रे ॥ धर्म ध्यान ते
बारनी, ए छे नवजल जंतु नाव रे ॥ ए छे० ॥ सु० ॥

॥ सु० ॥ ज० ॥ ११ ॥ पांच भेद चारित्रना, सामायिक छेदोपस्थान रे ॥ परिहार सूक्ष्म चारित्र जे, यथाख्यातथी मोक्ष निदान रे ॥ यथा० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १२ ॥ यथाख्यात चरण जे आचरे, ते पामे मुक्तिनुं ठाण रे ॥ डूंगर गुरुना ध्यानथी, विवेक लहे बहु नाण रे ॥ विवे० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ बार प्रकारें तप तपे, निर्ज्जरा जेहनुं नाम ॥ आतम प्रदेशह तेथकी, कर्म पुज्जल खिरे ठाम ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हुउं चारित्र युत्तो समितिये गुत्तो, विश्वनो तारू जी ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलुं अनशन ते अन्न पाणी लेवे नही ॥ सोभागी ॥ वली ऊने अठम तप तेह जाणो सही ॥ सो० ॥ पुरुषने बत्रीश कवल स्त्री अठावीश लहे ॥ सो० ॥ नपुंसकने चोवीश कवल जिनवर कहे ॥ सो० ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्र कालने भाव अभिग्रह जे वरे ॥ सो० ॥ जेम चंदनबाला वीरनो अभिग्रह पूरण करे ॥ सो० ॥ वृत्ती संक्षेप पण तप ए त्रीजो कह्यो ॥ सो० ॥ खट रस नो करे त्याग एह चोथो लह्यो ॥ सो० ॥ २ ॥ लोच करावे ने अलुवाणे पगे संचरे ॥ सो० ॥ इत्यादिक भली भातशुं काय कष्ट तप आदरे ॥ सो० ॥ पांच इंद्रि चार कषाय योगने शोधवा ॥ सो० ॥ स्त्रीयादिक संसर्ग ते सर्वथी रोधवा ॥ सो० ॥ ३ ॥ षटविध बाह्य ए तप तुमें जाणवो ॥ सो० ॥ गुरुमुखथी लही भाव संदेह मन नाणवो ॥ सो० ॥ हवे षट्विध अभ्यंतर

नवि तुमें सांजलो ॥ सो०॥ धरीयें चित्तमां ए मूकीने मन आमलो॥सो०॥४॥पोतानी कीधी वातने लोक ते नवि लहे ॥ सो० ॥ हेलामांहे तें बहु कर्मने खेपवे ॥ ॥ सो० ॥ पाप लागां होय ते गुरु मुखथी आलवे ॥ ॥ सो०॥ इणिविध प्रायश्चित्त तपने जालवे ॥ सो०॥ ५ नाण दंसण चारित्रनो विनय घणो करे ॥ सो० ॥ अरिहंत सिद्ध चैत्य विनय मनमां धरे ॥ सो० ॥ वै यावच्च तप त्रीजो प्रश्न व्याकरणें कह्यो ॥ सो० ॥ चौदे नेदें वैयावच्च गुरु मुखथी लह्यो ॥ सो०॥ ६ ॥ हवे चोथुं तप सद्याय ध्यानने मन खरे ॥ सो० ॥ सिद्धांत वांचे पूछे सिद्धांतने नित्य गणे ॥ सो० ॥ चिंतवे धर्मोपदेश दीये नवि चित्तने ॥ सो०॥ जेहथी पामे सद्याय तप वित्तने ॥ सो० ॥ ७ ॥ समता नावें मनने आणे ध्यानमें ॥ सो० ॥ निरामय निराकार अवस्था ज्ञानमें ॥ सो० ॥ शुक्ल ध्यानने ध्यावे रौ द्रनें परिहरे ॥ सो० ॥ ए पांचमुं तप नवियण चित्तें धरे ॥ सो० ॥ ८ ॥ छहुं हवे काउसग्ग, तपने आ दरे ॥ सो० ॥ क्रोध अने मान माया, लोनने परिहरे ॥ सो०॥ ए अन्यंतर षट नेद ने प्राणी मन धरो॥सो०॥ विवेक कहे नवियण, नवसायर तरो ॥ सो० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व दूरें तजो,बंधन ते नित्यमेव ॥ गतिनां दुःख पामे घणां, कहे इम जिनवर देव ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ कपूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ बंध तत्त्व हवे सांनलो रे, नवियण तुमे उमे

द ॥ चार प्रकारें बंध छे रे, नाषे जिन अवेद रे ॥ प्राणी सांजलो तेह सुजाण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रकृतिबंध पहेलो कह्यो रे, सहावा कहेतां स्वजाव ॥ स्थिति ते कालने जाणजो रे, एहिज एहनो नाव रे ॥ प्राणी० ॥ सां० ॥ २ ॥ अनुनागबंध ते शुं कहियें रे, कटुक मिष्ट जेम रस ॥ प्रदेश बंध चोथो हवे रे, दल संचय जाणो तस रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी कर्मनुं रे, चक्षुबंधन जेह ॥ दर्शन ते कहीयें बीजुं रे, पोलीया सरिखुं एह रे ॥ ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ४ ॥ वेदनी लित्त असि सारिखुं रे, मोहनी मदिरा समान ॥ हड सरिखुं आयु जाणीयें रे, चितारा सरिखुं नाम रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ गोत्र ते कुंनार जेहवुं रे, नंमारी सम अंतराय ॥ आठ करम नाव जाणजो रे, जेहथी डुर्गति जाय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ६ ॥ नाण दंसण वेयणी अंतरायनुं रे, त्रीश कोडाकोडी मान ॥ मोहनी सितेर कोडा कोडीनुं रे, सागर एह निदान रे ॥ ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ७ ॥ वीश कोडाकोडी नाम गोत्रनुं रे, आयु अयर तेंत्रीश ॥ काल उत्कृष्ट पूरो थयो रे, नाखे श्रीजगदीश रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ८ ॥ जघन्य काल हवे कहुं रे, आठ कर्मनो जेह ॥ वेदनी कर्मनो जाणीयें रे, बार मुहूर्त्त कह्यो एह रे ॥ प्रा० ॥ ॥ सां० ॥ ए ॥ नामकर्म गोत्र कर्मनो रे, आठ मुहूर्त्त तिम होय ॥ पांच कर्मनो आगल कहे रे, जघन्य

काल स्थिति जोय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १० ॥ ज्ञानावरणी कर्मनी रे, दर्शनावरणी अंतराय ॥ मोह नी आयु कर्मनी रे, अंतर मुहूर्त कहेवाय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ११ ॥ आठ कर्मथी अलगा रह्यो रे, जिम लह्यो सुख निरवाण ॥ डूंगर गुरुना पदथकी रे, विवेकने कोडि कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व पूरण थयुं, मोक्षतत्त्व सुविचार ॥ तेमाटे नवियण तुमें, आराधो हितकार ॥१ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ नविका सिद्धचक्र पद वंदो ॥ ए देशी ॥

॥ छता पदनुं प्रथम प्ररूपण, द्रव्य प्रमाण ए बीजुं ॥ खेत्र प्रमाण ते त्रीजुं जाणो, फरसना द्वारें रीजो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति पद आराधो ॥ आराधी शिव साधो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ काल द्वार ते पांचमुं सुणीयें, अंतर छठुं धीर ॥ सातमुं नागने आठमुं नाव, अल्प द्वार कहे वीर रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ २ ॥ चारगतिमांहे मनुष्य गतियें, मोक्ष होवे निरधार ॥ पांच इंद्रीमांहे पंचेंद्रीथी, शिवपद लहे सुखकार रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ३ ॥ पृथिवी आदि पांचे थावर, एहने मोक्ष न लहीयें ॥ त्रसकायथी मोक्षें जावे, एह आणा सद्दहीयें रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ४ ॥ नव्य अने अनव्य ए दोविध, नव्यने होय शिव ठाण ॥ सन्नी असन्नी बे पदमांहे, सन्नीयो लहे निर्वाण रे ॥ प्राणी० ॥ मुक्ति० ॥ ५ ॥ चारित्र पांच प्रकारें नांख्यां, श्री

जिन आगममांहि ॥ यथाख्यात चारित्रें ते मोक्ष, बीजे चरणें मोक्ष नाहि रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ६ ॥ पांच प्रकारें समकित जाणो, पंचांगीना जाण ॥ बी जे समकीतें नवि लहीयें, क्षायिके मोक्ष होय नाण रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ७ ॥ आहार ने नवमाहे न माडे, अणाहार लिये मोक्ष ॥ दर्शन चार कह्यां जि नराजें, केवल मोक्षने मांझे रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ८ ॥ मति अने श्रुत अवधि ज्ञानह, मनःपर्यव ते ज ॥ केवल ज्ञानथी केवल ज्योति, प्रथम द्वार एम होवे रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ए ॥ सिद्धना जीव द्रव्य अनंता, अनंता जीव सिद्धि पाम्या ॥ लोकने असंख्यातमे जा गें, सिद्ध ते सवि दुःख वाम्यां रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ १० ॥ खेत्रथी फरसना अधिकी जाणो, एक आकाश प्रदेशें ॥ एक सिद्ध आश्रित आदि छे, अनंतें अनादि रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ११ ॥ पडवाना अजावथी जा णो, अंतर सिद्धने नही ॥ सर्व जीवने अनंतमे जागें, सिद्ध रह्या शुचि सही रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥ क्षायिक ने परिणामिक जावें, बे जावें होवे सिद्ध ॥ सर्व थकी थोडा नपुंसक, संख्यातगुणी स्त्री सिद्ध रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १३ ॥ तेहथी संख्याता पुरु षज जाणो, समयें नपुंसक दश ॥ स्त्री सीझे एक स मयें वीश, पुरुष अष्टोत्तर ईश रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १४ ॥ अल्प बहुत्त्व ए नवमुं द्वार, कह्युं गुरुमुखथी में

आज ॥ मूंगर गुरु पद कमलनो सेवक, विवेकना सी धां काज रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ हवे पंदर नेद सिद्धना, वर्णवुं ते सुखकारी रे ॥ जिण सिद्ध ते अरिहंतजी, पुंमरिक अजिण ब लिहारी रे ॥ वारी जाउं हुं सिद्धनी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विहरमान ते तीर्थे सिद्ध, अतीर्थे सिद्ध म रुदेवी माय रे ॥ गृहस्थावासें कूर्मापुत्र सिद्धा, अ न्यलिंगें वल्कल शिवजाय रे ॥ वारी० ॥ २ ॥ स्व लिंगें साधु ते सिद्ध कह्या, स्त्रीलिंगें चंदन बाला रे ॥ पुरुषलिंगें गोतम जाणवा, नपुंसकलिंगें गांगे या रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुध ते नमि थया, पो तानी मेलें स्वयंबुद्ध रे ॥ बुद्ध बोधित सिद्ध ते उपदे शें, नरतादिक बुद्धबोधि रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एक जी व ते एक सिद्ध छे, घणा सिद्धें अनेक रे ॥ इम पंदर नेद सिद्धना, वरणव्या सुविवेक रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीवादिक नव तत्त्वने, प्राणी सद्दहे जे नावें रे ॥ ते नर समकित सुरतरु, पामीने शिव जावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ जीव संवर निर्जरा मोक्ष, ए चारे होवे अ रूपी रे ॥ बंध आश्रव पुण्य पाप जे, एहने कहियें रूपी रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ मिश्र नावें अजीव छे, बंध आश्रव पुण्य पाप रे ॥ ए चारेने छांमवा, जेहथी ल हे प्राणी संताप रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ जीव अजीव बे

जाणवा, संवर निर्जरा मोक्ष रे ॥ आदरवां ए त्रण तत्त्वने, प्राणी लहे शिव शर्म रे ॥ वा० ॥ ए ॥ काल अनंत गये जिन मार्गें, सिद्धनी पृछा उल्लासें रे ॥ गो लाने अनंतमें नागें,सिद्ध थया सुविलासें रे ॥ वा० ॥ १० ॥ ए नव तत्त्व तणा गुण गाया, दिन दिन चडत सवाया रे ॥ श्रीविजय डूंगर गुरु सुपसाया, विवेकें नित सुख पाया रे ॥ वा० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥ जगजंतु तारण दुःख निवारण, आदि जिनवर में थुण्यो ॥ संवत अढार बहोतेरा वर्षे, नविक हित हेतें नण्यो ॥ दमण पूरव विजय दशमी, आश्विन मास सु पक्ष ए ॥ सुरगुरुवारें सुखवधा रे, कहे कवि जन दक्ष ए ॥ १ ॥ तपगछ रांजे वड दीवाजे, श्रीविजय दया सुरीन्दरू ॥ तस चरण सेवी मुक्ति विजयें, नविक जन मन सुखकरू ॥ तस शिष्य सुंदर गुणपुरंदर, पंमित डुंगर मुणिंद ए ॥ तस शिष्य सेवक नणे नावें, विवेक लहे आणंद ए ॥ २ ॥

॥ इति नवतत्त्व स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री जिनदासजी कृत घन ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, उनसें उतरोगे नवपार ॥ होवे तेरी कायाको उधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनसें धरो नर नार, खाण दुःखकी यह हे संसार ॥ करो प्रनु ख्याल अबे जिनदास, रखो प्रनु मुऊ चरणोंके पास ॥ १ ॥

॥ सरक जा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गइ

लाली ॥ सोबत समताकी में टाली, आतमा तपमें नही घाली ॥ अनंत नव वीत गया खाली, वेदना निगोदकी झाली ॥ अमरपद जिनदास मागे, सदा पद प्रभुजीकुं लागे ॥ २ ॥

॥ सीस नित नमुं नाभिनंदन, चरण पर चढे केसर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे कमौंका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकुं सुख कंदन ॥ जिनद गुण जिनदास गावे, सीस चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥

॥ बोलत हैया मेरा हस कर, चढावुं चंदन चूवा घस कर ॥ पेठा में धर्मोमें धस कर, पाप दल दूर गया खस कर ॥ चेतन हुवा खडा कमर कस कर, हगाया कर्मोंका लसकर ॥ श्रीजिनराज झिहाज खासा, शरण जिनदास लिया बासा ॥ ४ ॥

॥ समज मन मेरा मतवाला, तुझें नहिं कोइ हटकणवाला ॥ वस्या तेरे हईए कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ताला ॥ फेरतो ममताकी माला, वालतो नगवंत पर नाला ॥ दयाकूं दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥

॥ किया में गणधर प्रेमपती, मुझे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्ग्रंथ मति, पूठ पर खडे जागता जती ॥ मुझे बलवंत नइ सोल सती, मिटी मेरी डुर्गतिकी सब गति ॥ एसा घन जिनदास गावे, अचल पद नक्तिसें पावे ॥ ६ ॥

॥ बिकट घट डुर्गतिका जारी, नीर जिहां नरतिकु मति नारी ॥ बरछी उन नैनोंकी मारी, रुव्या केइ कामी संसारी ॥ इनोंकी हो रइ खूआरी, जित्या को इ सत्य धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आया ॥ ७ ॥

॥ चेत नर निगोदका बासी, कराई जगमें तें हासी ॥ कुमतिकी पडी गले फांसी, सुमति सुं रखी है उदासी ॥ कुमतिकी बसी सेज खासी, मान रह्यो नम ताकूं मासी ॥ हियो खोल अरिहंतकों परखो, करो जिनदास आप सरिखो ॥ ८ ॥

॥ अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी न ही मानी ॥ किया नही गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें उतर गया पानी, गति तेरी डुर्गतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास बाजे, सुधारोगे तुमही काजें ॥ ए ॥

॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी, कानसें ल गी सुमति रानी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पानी, ग ति तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास बा जे, सुधारोगे तुमही काजें ॥ १० ॥

॥ अथ पहेली जीवशीखामणनी लावणी ॥

॥ चल चेतन अब उठ कर अपनें, जिनमंदिर ज इयें ॥ किसीकी नूंडी नां कहीयें, किसीकी बूरी नां क हीयें ॥ चल० ॥ ए आंकणी ॥ चरण जिनवरजीका

भेट्या ॥ चर० ॥ भव भव संचित पाप करम सब, तन मनका मेट्या ॥ सुकृत कीजें, महाराज ॥ सुकृ० ॥ जिनवरका गुण भज लीजें, समकित अमृत रस पीजें, लाभ जिन भक्तिको लहीयें रे ॥ लाभ० ॥ चल० ॥ १ ॥ करो जी मत मुखसें बडाई ॥ करो० ॥ तज तामस तन मनकी सुमता, सें रेनां भाइ ॥ रीतसें बोलो, मेरी जान ॥ रीत० ॥ आतम समतामें तोलो, मत मरम पारका खोलो, मौन कर तन मनसें रहियें रे ॥ मौन० ॥ चल० ॥२ ॥ जोबन दिन चार तणो संगी रे ॥ जोबन० ॥ अंत समय चेतन उठ चाले, काया पडि नंगी ॥ प्रीत सब तूटी, मेरी जान प्रीत० ॥ आउखाकी खरची खूटी, चेतनसें काया रूठी, सुख दुःख आप किया सहियें रे ॥ सुख० ॥ चल० ॥ ३ ॥ जगतसें रहेनां उदासी रे ॥ जग० ॥ परख्या में जिनराज, हरो मेरी दुर्गतिकी फांसी ॥ तजो सब धंधा, मेरी जान ॥ तजो० ॥ जिनवर मुख पूनम चंदा, जिनदास तुमारा बंदा, मेरे एक जिन दर्शन चहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ बीजी जीवशिखामणनी लावणी ॥

॥ तुम भजो जिनेसर देव, मुगति पद पाइ ॥मुग०॥ अब अचल अखंमित ज्योत, सदा सुखदाइ ॥ ए आंकणी ॥ में रुल्यो चोराशी मांहे, भूल्यो में भरम ॥ भूल्यो० ॥ म्हारे उदये अनंतां दुःख, बांध्यां जब करम ॥ में कदिएक हुउ रंक, फिस्यो तजी शरम ॥

फिर्यो० ॥ अरु कदि क राजा भयो, गरथकी गरम ॥ जब गरथ आणकर बांध्यो, पारका मरम ॥ पार० ॥ पण निर्मल जुगमें जैन, कीयो नही धरम ॥ अब मनख जनममें चेत, घडी शुभ आइ ॥ घडी० ॥ अब० ॥१॥ में सुर नरका सुख वार, अनंती पाया ॥ अनं० ॥ मह्यारे शिव समताका सूरा, हाथ नही आया ॥ में कुगुरु ने कुदेव, भजा कर ध्याया ॥ भजा० ॥ में जजज्यो अनादि अज्ञान, विषय जोग जाया ॥ में पड्यो लोभके फंद, जोडतो माया ॥ जोड० ॥ पण लग्यो अंत जब आय, कालने खाया ॥ अब परिहर सब परमाद, धर्म कर जाइ ॥ धर्म० ॥ अब० ॥ २ ॥ अब दुर्लभ अवसर लही, तुं सुकृत कर रे ॥ तुं सुकृ० ॥ अब दान शियल तपभाव, हियामें धर रे ॥ तुं कर्मकी माला काट, पाप परिहर रे ॥ पाप० ॥ अब वार वार कहुं तोहे, जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणें देख, नरकसुं डर रे ॥ नर० ॥ तुं शीख सुगुरुकी मान, अग्यानी नर रे ॥ अब पर त्रीया कर जान, बेन ने माइ ॥ बेन० ॥ अब० ॥ ३ ॥ अब जिनवर मुझ मन भायो, सदा गुण गाउं ॥ सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो, नरक नहिं जाउं ॥ अब भव भव मांही देव, जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी, चरण चित लाउं ॥ ए दया धरम हितकार, सदा में चाउं ॥ सदा० ॥ ए चोराशी के मांहे, फेर नहिं आउं ॥ युं अरज करे जिनदास,

कीरत ए गाइ ॥ कीरत० ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ त्रीजी जीवशिखामणनी लावणी ॥
॥ कब देखुं जिनवर देव, जगत गुरु ग्यानी ॥ जग० ॥ कोइ आप समो नहीं उ, जो अंतरध्यानी ॥ ए आंकणी ॥ अब विषम वन संसार, जगतमें नट क्यो ॥ जग० ॥ मुझे अनमतने ले जाय, नरकमें पटक्यो ॥ अब लहुं दरिसन जिनवरका, उ दिन कब उगे ॥ उ० ॥ मुझ मनकी वंछित आस, अधिक सब पूगे ॥ अब जिनदरिसन बिन नयन, झरे मुझ पानी ॥ झरे० ॥ कोइ० ॥ १ ॥ थारे कुगुरुको उपदेश, हियामें लायो ॥ हिया० ॥ पण सरस भेद समकितको, जीव नंही पायो ॥ अब जैनधर्म निज माल, मूरख मत खोवे ॥ मूरख० ॥ ए सुमति सुरगको पंथ, अमर गत होवे ॥ अब दुर्लभ जिन भक्तिकी, लही निज टानी ॥ लही० ॥ कोइ० ॥ २ ॥ अब सुर नर गावे गीत, अजब जड लागी ॥ अजब० ॥ जिहां नाचत नृत्य अनेक, अलसकूं त्यागी ॥ अब मोहत मन नरपतिका, गगनधुनि गरजे ॥ गग० ॥ ए जिनवर महिमा अनंत, ध्यान दिल धरजे ॥ एसी अधिक छबी जिनजीकी, मेरे मन मानी ॥ मेरे० ॥ कोइ० ॥ ३ ॥ अब जिनचरणोसें रंग, अधिक दिल लागो ॥ अ० ॥ में पेहेख्यो जिन गुण अजब, सुरंगी वाघो ॥ आ सफल घडी समकितकी, हाथ अब आइ ॥ हाथ० ॥ में गगन गमनकी पांख, अमूलक पाइ ॥ अब बोलत युं

जिनदास, सुनो जिनबानी ॥ सुनो० ॥ को३० ॥ ४ ॥

॥ चोथी जीव शिखामणनी लावणी ॥

॥ एक जिनवरका निज नाम, हियामें लेनां ॥ ॥ हिया० ॥ अब लगी लगन जिनवरसें, आप खुश रहेनां ॥ सदा खुश रहेनां ॥ ए आंकणी ॥ अब निरखुं जिन दीदार, दरस कब पाउं ॥ दर० ॥ जगमें जिनवर निज नाम, निरंजन ध्याउं ॥ अब रहे नयन जो लाय, हियो नित्य फरके ॥ हियो० ॥ मोहे जिनदर्शनकी आस, पाप सब सरके ॥ अब सुरपति निरखत रूप, नजर नर नेनां ॥ नजर० ॥ अब० ॥ १ ॥ अब मिट्यो भरण नव नवको, आस मुऊ पूरो ॥ आस० ॥ में जपुं जिणंदको नाम, मेलुं नही दूरो ॥ एं घनघाति घाले घेर, करम सब चूरो ॥ कर० ॥ में डुर्गति नमतां आयो, आप हजूरो ॥ अब शुन नजरां मुऊ निरख, मुगति पद देनां ॥ मुग० ॥ अब० ॥ २ ॥ अब हे हीराकी खान, ग्यान निज करणी ॥ ग्यान० ॥ ए मुगति पंथ दातार, सुमतिकी घरणी ॥ अब शुकल ध्यानकी पेडी, चढा नीसरणी ॥ चढा० ॥ एसा जगमें संत सुजान, मुगति पद वरणी ॥ अब आपो मया कर कर कें, अमर सुख चेनां ॥ अमर० ॥ अब० ॥ ३ ॥ अब बैठ करुं में मोज, आनंदके घरमें ॥ आ० ॥ में परख्या श्रीजिनराज, जगत कुण नरमें ॥ में डुःख जोगता हे अनंत, करे कुण लेखो ॥ करे० ॥ में अरज करुं तन मनसें, नजर नर देखो ॥ अब बोलत

युं जिनदास, सरव रस बेनां ॥ सरव० ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ पांचमी जीव उपदेशनी लावणी ॥

॥ खबर नहीं आ जुगमें पलकी रे ॥ खबर० ॥ सुकृत करनां होय तो कर ले, कोन जाने कलकी ॥ ए आंकणी ॥ या दोस्ती हे जगवासकी, काया मंमल की ॥ काया० ॥ सास उसास समझ ले साहेब, आयु घटे पलकी ॥ खबर० ॥ १ ॥ तारा मंमल रवी चंद्रमा, सब हे चलनेकी ॥ सब० ॥ दिवस चारका चमत्कार ज्युं, वीजलिया जलकी ॥ खबर० ॥ २ ॥ कूड कपट कर माया जोडी, करि बातां छलकी ॥ करि० ॥ पापकी पोटली बांधी सिर पर, कैसे होय हलकी ॥ खबर० ॥ ३ ॥ या जुग हे सुपनेकी माया, जैसी बुंदा जलकी ॥ जैसी० ॥ विणसंतां तो वार न लागे, डुनीयां जाये खलकी ॥ खबर० ॥ ४ ॥ मात तात सुत बंधव बाई, सब जुग मतलबकी ॥ सब० ॥ काया माया नार हवेली, ए तेरी कबकी ॥ खबर० ॥ ५ ॥ मन मावत तन चंचल हस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ ॥ मस्ती० ॥ सतगुरु अंकुश धरो सीसपर, चल मारग सतकी ॥ खबर० ॥ ६ ॥ जब लग हंसा रहे देहमें, खुशियां मंगलकी ॥ खुशि० ॥ हंसा छोड चल्या जब देही, मटीयां जंगलकी ॥ खबर० ॥ ७ ॥ दया धरम साहेबको समरन, ए बातां सतकी ॥ ए बातां० ॥ राग द्वेष उपजे नही जिनकुं, बिनति अखमलकी ॥ ख० ॥ ८ ॥

॥ ठगी सुमति कुमतिनी लावणी ॥

हांरे तुं कुमति कलेसण नार, लगी क्युं केडे ॥ लगी० ॥ चल सरक खडी रहे दूर, तुझे कुण छेडे ॥ ए आंकणी ॥ हांरे तुं सुमतिको भरमायो, मुझे क्युं छोडी ॥ मुझे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत, छीनकमें तोडी ॥ तुझ बिन सुन मेरी सेज, कहुं कर जोडी ॥ कहुं० ॥ अब चलो हमारे संग, सुखें रहो पहोडी ॥ युं झुर झुर कुमति आंसुं, आंखसें रेडे ॥ आंख० ॥ चल० ॥१॥ हांरे तेरी नरक निगोदकी सहेज, सेंतिमें रूठयो ॥ सेंति०॥पकड्यो साचो जिनराज, संग तेरो छूट्यो ॥ तेरी मूरख माने बात, हैयाको फूट्यो ॥हैया०॥ में सहज हुवो हुं दूर,तार तेरो त्रूट्यो॥ तुं कर दूरसें बात, आव मत नेडे॥ आ० ॥ च०॥२॥तेरी अनंत कालकी प्रीत,पलक नही पाली ॥ पलक० ॥ सुमतिके लागो संग, मुझे क्यों टाली ॥ तुं सुमतिको सिरदार, सुणावे गाली॥सु०॥तेरी हम दोनुं हे नार, गोरी अर काली ॥ तूं हमकुं छेले दूर, सुमतिकुं तेडे ॥ सुम० ॥ चल० ॥ ३ ॥ अब कुमतिको लल चायो, रति नहीं मगियो ॥ रति० ॥ सुन कर सूत्रकी शीख, लाज होय लगीयो ॥ चेतन कुमतिके सेहज, दूरशुं भगीयो ॥ दूर० ॥ जिनराज वचनको ग्यान, हैयेमें जगीयो ॥ जिनदास कुमत तुं बात, खोटी मत खेडे ॥ खोटी० ॥ चल सरक० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ आत्मोपदेश लावणी सातमी ॥

॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसका गानां ॥ इस० ॥ तेरी अल्प उमर खुट जाय, नरक उठ जानां ॥ तें दिनो चार जुग बीच, लिया हे वासा ॥ लिया० ॥ तेरे सिरपर बेग काल, करे हे हांसा ॥ में बोलुं साची बात, जूठ नही मासा ॥ जूठ० ॥ तुं सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज, खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जोबन पतंगका रंग, जूठ सब आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समज रे दिवाना ॥ सम० ॥ तुम० ॥ १ ॥ अब बुरी नली सब बात, मौन कर रीजें ॥ मौन० ॥ ए मुख मीठा संसार, नेद नहिं दीजें ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर लीजें ॥ हिये० ॥ पण नीच नारिका संग, मांहे मत नीजें ॥ अब सात बिसनको संग, प्रीति मत कीजें ॥ प्रीति० ॥ तोहे डुर्गति दे पहोंचाय, तेरो तन ठीजे ॥ तुं सुख दुःखका सिरदार, रंक नही राणा ॥ रंक० ॥ तुम० ॥ २ ॥ तुं बिसर गया जुग बीच, नाम जिनवरका ॥ नाम० ॥ पच रह्या कुटुंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धर्म बिन खोया, जनम सब नरका ॥ जनम० ॥ तें पहले बांध्या पाप, कसाई सरखा ॥ अब लीया नही तें लान, बखत पर करका ॥ बखत० ॥ तेरी वीति बात सब जाय, जनम ज्युं खरका ॥ अब सुणो सीख सूतरकी, सुलट रे शाणा ॥ सुल० ॥ तुम० ॥ ३ ॥

तेरी चरण सहेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया ॥ ॥ आनं० ॥ मेरी नगी नूख सब प्यास, सुधारस पाया ॥ मेरे शिरपर तुम शिरदार, जिनेसर राया ॥ जिने० ॥ में चाहुं चरणकी सेव, सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसनकी, मेरे एहि माया ॥ मेरे० ॥ युं अरज करे जिनदास, अलप गुन गाया ॥ अब बुरा कुगुरु उपदेश, धरो मत काना ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ४ ॥

॥ जीवोपदेश लावणी आठमी ॥

॥ सुगुरुकी शीख हिये धरनां रे ॥ सुगुरु० ॥ अमरापुरको पंथ सदा, श्रीजैनधर्म करनां ॥ सु० ॥ परम परमारथ तें टाल्यो रे ॥ पर० ॥ सार जगतमें जैनधर्म, जुगतीसें नही पाल्यो ॥ प्रजुको नाम नही लीनो रे ॥ प्रजु० ॥ महा हलाहल विषय विकट, मिथ्यामतसें नीनो ॥ चेतन युं बहुविध दुःख पावे रे ॥ चेत० ॥ लपट्यो लालचमांहे पांच, इंड्डीके सुख चावे ॥ जीव अब पाप परीहरनां रे ॥ जी० ॥ अमरापुर० ॥ १ ॥ दया चेतनकुं सुखकारी रे ॥ दया० ॥ श्री जिनराज प्ररूपी जैसी, केसरकी क्यारी ॥ जगतमें तीरथ हे चारी रे ॥ जग० ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, हूआं व्रतधारी ॥ इनूंकूं कहियें ब्रह्मचारी रे ॥ इनूं० ॥ समता संयम सार करीने, कर्म हण्यां नारी ॥ इनूंने मेट्या जनम मरणां रे ॥ इनूं० ॥ अमरा० ॥ २ ॥ पंच इंड्रियसें लपटायो रे ॥ पंच० ॥ दुःख अनंतां सह्यां रे बहुलां, प्राणी पछतायो ॥ बहु दुर्गतिमें नमि आ

यो रे ॥ बहु० ॥ शुभ मंत्र नवकार सार, दुर्लभ अब में पायो ॥ मेरो मन जिनवरसुं लायो रे ॥ मेरो० ॥ कुगुरुको सब संग अशुभ, मिथ्या मत छटकायो ॥ ३ नविध भवजलसें तरनां रे ॥ इन० ॥ अ० ॥ ३ ॥ र हो जिनवाणीमें राता रे ॥ रहो० ॥ अनंत सुखकी खाण, सदा शिव मंगलकी दाता ॥ सदा जिनवर भ क्ति करजो रे ॥ सदा० ॥ चित्त धारी हैयामें भवि तुम, पाप परां हरजो ॥ अल्प जिनवरका गुण गाया रे ॥ अल्प०॥ कर जोडि जिनदास कहे, जिन भक्तिसें न्हाया ॥ सदा में चाहुं जिन चरनां रे ॥ सदा० ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ अथ चोवीश दंमकनुं स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ वंदी जिन चोवीशने, तसु भाषित श्रुतभेद॥ दंमक पद कही तस थुणुं, अहो भवि सुणो उमेद ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी भटीयाणीनी ॥

॥ साते नरकें एक, भवनपति दस दंमक हो ॥ पुढ वी आदि पंच जाणीया, विकलेंडीना त्रण ॥ गर्भज तिरियंचने नर हो, व्यंतर जोईस वेमाणीया ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ ताहारा मेहेला उपर मेह, फरूखे वीजली ॥ हो लाल फ० ॥ ए देशी ॥

॥ जीव दंमाए ज्यांहि, दंमक नाम जेहनो ॥ हो लाल ॥ दंमक० ॥ संक्षेपें लवलेश, संग्रह करुं तेहनो ॥ हो लाल ॥ संग्रह० ॥ नरकादिक चोवीश, दंमक पद जे लहे ॥ हो लाल ॥ दंमक० ॥ दंमाये नही तेह, वाचक उदय कहे ॥हो लाल ॥ वाच० ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ गौतम समुद्र कुमार रे ॥ ए देशी ॥

॥ शरीरने शरीरनुं मान रे,संघयण ने संज्ञा,संस्थान कषाय लेश्या वली ए ॥ इंद्रिय ने समुद्घात रे, दृष्टि नें दरिसन्न, ज्ञान अने योगावली ए ॥ १॥ उपयोग ने उपपात रे, चवन स्थिति पर्यापति, आहार ने संज्ञा त्रिक ए ॥ गति आगति वेद अल्प रे, द्वार चोवीश ए, दंमकप्रत्यें जणो जवि ए ॥ २ ॥

॥ द्वार पहेलुं ॥ढाल चोथी ॥सिद्धचक्र पद॥वंदो एदेशी॥

॥ गर्जज तिर्यंच वाउकाय ने, शरीर कह्यां छे चार ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण, नर ने पांच निरधार रे, श्रोता द्वार एणी परें जाणो ॥ बीजा सर्वेने त्रण जाणो,आगम मनमां आणो रे ॥श्रोताद्वा०॥१॥

॥ द्वार बीजुं ॥ ढाल पांचमी ॥ सोरठी चालमां ॥वनस्पति विण थावर चार, तनु जघनोत्कृष्ट विचार ॥ अंगुलनो असंख्यातमो जाग, वदे मान एहवुं वीतराग ॥ ॥ १ ॥ बीजे पण दंमक वीशें, जघन्य एमज कह्यो जगदीशें ॥ उत्कृष्टुं कहुं हवे आगें, धनुष पांचशें नारकी जागें ॥ २ ॥ सुरने सात हाथ वखाणुं, जोयण सहस गर्जज तिरिय जाणुं ॥ वनस्पतिने जाजेरूं, त्रण गाउ नर तेंद्रि जलेरूं ॥ ३ ॥ बेंद्री चौरिंद्रि बार एक, जोयण जाणो सुविवेक ॥ देह उंचपणे ए जणियो, वैक्रिय सूत्रें इम पुणियो ॥४॥ अंगुलनो असंख्यातमो जाग, प्रारंज समय लहो लाग ॥ सुर नरने साधिक लाख, जोयण नवशें तिरिय सुजाख ॥ ५ ॥

मूलथी नारकीने बमणुं, अंतर मुहूर्त्त रहे एम पभणुं ॥
तिरि नरने मुहूर्त्त चार, देवने एक पक्ष उदार ॥ ६ ॥
॥द्वार त्रीजुं॥ ढाल छठी॥रह्यो रे आवास डुवार॥ए देशी॥
॥ वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच रे, नाराच अर्द्धनाराच छे रे ॥ किलिका छेवटुं ए सूत्रें, जिनवर देवें रे, संघयण छ भाख्यां अछे रे ॥ १ ॥ थावर नारकी देव, असंघयणा रे, छेवठा विकलेंद्रिया रे ॥ मनुष्य अने तिर्यंच, छ संघयणा रे, समयविषे नि वेदीया रे ॥ २ ॥
॥ द्वार चोथुं ॥ ढाल सातमी ॥ वृषभानु भवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥ चार दश संज्ञा हुए सहूनी, आहार भय मैथुन परिग्रहनी ॥ क्रोध मान माया लोभ लोक, उघ दशमी संज्ञा थोक ॥ १ ॥
॥ द्वार पांचमुं ॥ ढाल आठमी ॥ सेला मारूनी देशी ॥
॥ समचतुरस्त्र हो न्यग्रोध निसादिक, वामन कूब्ज हो हुंमक ए छ कह्यां ॥ सर्वे सुरने हो पहेलुं होय संस्थान, नर तिर्यंचमां हो सघलां ए लह्यां ॥ १ ॥ विकलेंद्रीनें हो नरकमां हुंमक होय, नानाविध धजहो सूई बुब्बु वणसई ॥ वाउ तेउ हो अपचउकें ए चार, पुढवी मसुर हो चंदाकारें कही ॥ २ ॥
॥ द्वार छठुं ॥ ढाल नवमी ॥ सिरोईनो
सेलो हो के ॥ ए देशी ॥
॥ क्रोध मान माया हो के, वली लोभ सूत्रें लह्या ॥ दंमक चोवीशें हो के, कषाय ए चार कह्या ॥ १ ॥

॥द्वार सातमुं॥ढाल दशमी॥देखीकामिनी दोय॥एदेशी॥

॥ कृष्ण नील कापोत तेजो, पद्म शुकल कही ॥ के तेजो०॥ ए छ लेश्या नर तिर्यंच, गर्भजमां लही ॥ के गर्भ० ॥१ ॥ नारक तेउ वाउ, के विगल वेमाणीया ॥ के वि० ॥ त्रण त्रण लेश्यावंत, के नीच उच्च जाणीया ॥ के नीच० ॥ २ ॥ ज्योतिषी पांचे मांहे, तेजोलेश्या घणी ॥ के तेजो० ॥ बाकी चउद दंडकें चार, लेश्या सूत्रें भणी ॥ के लेश्या० ॥ ३ ॥

॥ द्वार आठमुं ॥ ढाल अगीयारमी ॥ बिंझलीनी देशी ॥

॥ आठमुं ॥ इंद्रिया द्वार छे, सुगम तेहनो विचार हो ॥ भो भवि भावें लहो ॥ जेहने इंद्रिय होय जे ती, तेमजगणी लेजो तेती हो ॥ भो भवि० ॥ १ ॥

॥ द्वार नवमुं ॥ ढाल बारमी ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ वेदनाकषायने मरण, वैक्रिय तेजस वली ॥ आहारकने केवलीसात, ए लहो मननी रली ॥ १ ॥ संज्ञी नरने होय सात, तिरि सहु सुर पदें ॥ आहारकने केवल वर्जित, पांच आगम वदे ॥ २ ॥ नारक वाउमां पहेलां चार, बाकी सात दंडकें ॥ वेदनादि पहेलां त्रण होय, कह्यां श्रुतमां जिके ॥ ३ ॥

॥ द्वार दशमुं ॥ ढाल तेरमी ॥ प्रभु ताहारो प्रभु ताहारो महेर करी मुने जी ॥ ए देशी ॥

॥ विकलेंद्री विकलेंद्रीमांहे दृष्टि बे वदी जी ॥ समकितने समकितने मिथ्या दृष्टि सोय हो ॥ पांच

थावर पांच थावर मिछदिठि कह्या जी, बीजा सर्वे बीजा सर्वे त्रिदृष्टि होय हो ॥ विकलें० ॥ १ ॥

॥ द्वार अगीयारमुं ॥ ढाल चौदमी॥सुरती महीनानी ॥

॥ पंच थावर बि तिइंद्रीने, अचक्षु दर्शन एक ॥ चक्षु अचक्षु चउरिंद्रीने, बे जाणो सुविवेक ॥ १ ॥ चक्षु अचक्षु अवधि, केवल दर्शन चार ॥ नरमां बीजे सर्वे दंमकें, केवल विण त्रण धार ॥ २ ॥

॥ द्वार बारमुं ॥ ढाल पंदरमी ॥ कोइ सुध लावे दिनानाथनी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रण त्रण सुर तिरि निरयमां, ज्ञान अने अ ज्ञान ॥ थावरमां अज्ञान बे, विकलें दो दो मान ॥ १ ॥ अज्ञान ज्ञान त्यो उलखी, त्रण पंच प्रधान ॥ अनु क्रमें मनुजना कह्या, समजो सावधान ॥ अ० ॥ २ ॥

॥ द्वार तेरमुं॥ढाल शोलमी ॥शारद बुधदायी॥ए देशी ॥

॥ सत्य असत्य ने मिश्र, असत्य मृषा संयोग ॥ मन वचनने योगें, आठ थया ए योग ॥ वैक्रियने आहारक, औदारिक मिश्र सोय ॥ तैजस कार्मण साते, काय तणा योग होय ॥ नारक सुर सहुने, अ नुक्रमें योग इग्यार ॥ तेर तिर्यंचने जाणो, नरने पंदर निरधार ॥ विकलेंद्रीने चार वली, वायुकायने पंच ॥ त्रण थावरमां जोजो, सिद्धांतें ए संच ॥ १ ॥

॥ द्वार चौदमुं॥ ढाल सत्तरमी॥सोहमपतिजी॥ए देशी॥

॥ त्रण अज्ञानजी, ज्ञान पांचनी आवली ॥ चार दर्शनजी, उपयोग बार सहु मली ॥ मानवमांजी, बा

रे लह्यो मननी रली ॥ देव तिरियने जी, नव नार कने कह्या वली ॥ उथलो ॥ वली पांच कह्या विकलेंडी मांहे, चउरिंडीमां बे कह्या ॥ पांच थावरमां त्रण प्रकाश्यां, सूत्र मार्गें सद्दह्यां ॥ १ ॥

॥ द्वार पंदरमुं उपपातनुं ॥ तथा शोलमुं च्यवननुं ॥ ढाल अढारमी ॥ एक अनोपम शीखामण खरी ॥ ए देशी ॥

॥ गर्नज तिरिय, विगल सुर नारकी ॥ असंख्य संख्याता, ल्यो तमें पारखी ॥ नर संख्याता, असन्नी असंख्याता ॥ तेमज थावर, हवे वणसई ख्याता ॥ ढाल ॥ वनस्पतिमां विख्यात जाणो. अनंता उपजे चवे ॥ उपजे जेता चवे तेता, बीजो नेद नहीं नवे ॥ १ ॥

॥ द्वार सत्तरमुं ॥ ढाल उंगणीशमी॥ काठबानी॥देशी ॥

॥ पुढवी अपने वायु, वनस्पतिमांहे हो, उत्कृष्टुं आयु लह्यो ॥ वरस बावीशने सात, त्रण दश सहस हो, साचुं सद्दहो ॥ १ ॥ त्रण दिवस तेउकाय, नर तिरि केरुं हो, त्रण पल्य सारिखो ॥ सुर निरय सागर तेत्रीश, व्यंतर आयु हो, पल्य एक पारिखो ॥ २ ॥ साधिक पल्य चंद सूर, असुर निकायें हो, सागर जाजेरडूं ॥ पल्य दोयें देशूण, निश्चय जाणो हो, निकाय नव केरडूं ॥ ३ ॥ बे इंडियनुं वरस बार, तेंडियनुं दिन हो उंगण पचाश ठे ॥ चउरिंडियनुं ठ मास, अनुक्रमें आयु हो उत्कृष्ट एह ठे ॥ ४ ॥ जघन्य आयु एक मुहूर्त्त, पुढवी आदें हो दंमक दशमां कह्यो ॥ दस सहस वरस प्रमाण, नवनपति नरकें हो, व्यंत

र गति लह्यो ॥ ५ ॥ एक पल्योपम मान, वैमानिक सुरनुं हो, ज्योतीषीनो जाणजो वली ॥ पल्योपमनो आठमो नाग, आगममांहे हो कहे एम केवली ॥ ६ ॥

॥ द्वार अढारमुं ॥ ढाल वीशमी ॥ वूठां दल वादल ॥ ए देशी ॥

॥ आहारने शरीर इंद्रिय हो, सासोसास नासा मण ॥ सुर नर तिरि निरयने हो, ए ठ पर्याप्ति गण ॥ १ ॥ पांचे थावरमांहे हो, पर्याप्ति चारे कही ॥ वली पंच पर्याप्ति हो, विकलेंडीयमांहे लही ॥ २ ॥

॥ द्वार उंगणीशमुं ॥ ढाल एकवीशमी ॥ राम चंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ षट दिशिनो ले आहार, सघला जंतु सदाइ ॥ लोकने खूणे जीव, पंच चार त्रण दिशि ताइ ॥ १ ॥

॥ द्वार वीशमुं ॥ ढाल बावीशमी ॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे संज्ञा त्रण कहेशे रे, दीर्घकालिकी पहेली दीसे ॥ हितोपदेशिकी बीजी रे, दृष्टिवादोपदेशिकी त्रीजी ॥ १ ॥ देवताना दंमक तेर रे, तिर्यंच नारक नहिं फेर ॥ संज्ञा ए पहेली दाखी रे, दीर्घकालिकी सूत्र ठे साखी ॥ २ ॥ विकलेंद्रियमां हितोपदेशा रे, संज्ञा रहित थावर अशेषा ॥ नरने पहेली बे नाखी रे, कोईकने त्रीजी पण दाखी ॥ ३ ॥

॥ द्वार एकवीशमुं तथा बावीशमुं॥ गति अगतिनुं॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ धण समरथ पीयु नानडो ॥ ए देशी ॥

॥ पर्याप्ता पंचेंड्रिय जेह, तिर्यंचने मानव मरी तेह ॥ चार निकायमांहे उपजे. सुरनी योनि जाणो ससनेह ॥ १ ॥ गति आगति लहो जीवनी, असंख्याता आउखावंत ॥ पंचेंड्रिय पर्याप्त, तिरियंचने नर ए बे तंत ॥ गति० ॥ २ ॥ तिम पर्याप्ता वली, भू जल ने जे तरु प्रत्येक ॥ अमर मरीने अवतरे, समजो ए पांच पदें सुविवेक ॥ गति० ॥ ३ ॥ संख्या आयु पर्याप्ता, गर्जज नरने तिर्यंच जेह ॥ साते नरकें उपजे, तिहांथी आवे नर तिरियमां तेह ॥ गति०॥४॥ भू जल वणसइ योनिमां, नारकीने वर्जी सर्व जीव ॥ आवी आवी उपजे, निज निज कर्म प्रमाणें सदीव ॥ गति० ॥ ५ ॥ पृथिव्यादिक दश दंमकें, भू जल वणसइना जीव जाय ॥ वली ते दश दंमक विना, तेउ वाउ पण नवि थाय ॥ गति० ॥ ६ ॥ तेऊ वाउ तिम वली, पृथिव्यादिक नव दंमकें जंति ॥ दश पदना विगलेंड्रियमांहे, विगलेंड्री दश पद उपजंति ॥ गति०॥७॥ गर्जज तिरियंच उपजे, मरी चोवीशे दंमक मांय ॥ चोवीश पदना जीव ते, गर्जज मरी तिरियंच थाय ॥ गति० ॥ ८ ॥ चोवीश पदने शिव पदें, मानव मरी सघले जाय ॥ तेऊने वाऊ विना, बावीश पदना मानव थाय ॥ गति० ॥ ए ॥

॥ द्वार त्रेवीशमुं ॥ ढाल चोवीशमी ॥ थांपर वारी ॥
॥ म्हारा साहेबा ॥ ए देशी ॥

॥ गर्भज नर तिरि योनिमां, वेद त्रण्य वखाण्या ॥
स्त्री पुरुष वेद छे देवमां, नव नारक जाण्या ॥ १ ॥

॥ द्वार चोवीशमुं अल्प बहुत्वनं ॥ ढाल पच्चीशमी ॥
॥ शुं करीयें जो मूलज कूडुं ॥ ए देशी ॥

॥ सहु जीवथी थोडा संसारी, पर्याप्ता मानव नि
र्धारी ॥ बादर अग्नि वैमानिक देवा, भुवनपति व्यंत
र नारक लेवा ॥ १ ॥ ज्योतिषी चौरिंद्री पंचेंद्री तिरिया,
बेंद्री तें इंद्री जल वाउ कहीया ॥ चढते पदें एक एक थ
कां, असंख्य गुणा लहो अधिकां अधिकां ॥ २ ॥ स
हुथी वधता वनस्पति जीव, अनंतगुणा जाणो स
दीव ॥ जिनजीयें कह्या भाव में जोया, तुम खिज
मत विना भव खोयां ॥ ३ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ सुण करुणानिधि हंसला ॥ए देशी ॥
एणी परें चोवीश दंडकें,भवमांहे प्राणी भमियो रे
॥ अनंत चोवीशी वही गई, पण जिन मारग नवि
गमियो रे ॥ १ ॥ धन धन दिन म्हारे आजनो ॥
मुने त्रिभुवन नायक तूठो रे॥ श्री जिनशासन पामी
यो, आज मेह अमीरस वूठो रे ॥ धन० ॥ २ ॥
सत्तर एक्याशियें चैत्रमां, वारु वदि छठ मंगल वार
रे ॥ वीतराग एम वीनव्या, सूरय पुर नगर मोझार
रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ श्रीवासुपूज्य पसाउले, हीररत्न
सूरि सान्निध्यें रे ॥ वाचक उदय रतन वदे, ऋद्धि

वृध्दि वाधि सर्व सिध्दें रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ राग धन्या श्री ॥ रूषज्ञ अजित संज्ञव अज्ञिनंदन, सुमति पद्म सुपास जी ॥ चंदप्रज्ञ सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य विमल जिन खास जी ॥ अनंत धर्म शांति कुंथु अर, मल्लि मुनिसुव्रत नमी नेम जी ॥ पार्श्व वीर चोवीशे प्रणमुं, परम उदय लही प्रेम जी ॥ १ ॥ ॥ इति चतुर्विंशति दंमक गर्जित श्रीचतुर्विंशति वीतराग स्तवन ॥ ढाल सत्यावीश ॥ गाथा चोशठ छे ॥

॥ अथ श्री आनंदघनकृत चोवीश जिनस्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रूषज्ञजिनस्तवनं ॥

॥ राग मारू॥करम परीक्षाकरण कुमर चल्यो रे ॥ए देशी

॥ रूषज्ञ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे,उर न चाहुं रे कंत ॥ रीज्यो साहेब संग न परिहरुं रे, नांगें सादि अनंत ॥ रूषज्ञ० ॥ १ ॥ प्रीति सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ रूषज्ञ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ठ जक्षण करे रे, मलशुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियें संज्ञवे रे, मेलो ठाम न ठाय ॥ रूषज्ञ० ॥३॥ कोइ पति रंजन अति घणुं तप करे रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित्त धर्युं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ रूषज्ञ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख ललख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ रूषज्ञ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नें रे पूजन फल कह्युं

रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ रुषज्न० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री अजितजिन स्तवनं ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारुं मन मोह्युं रे श्रीविम ॥
॥ लाचलें रे ॥ ए देशी ॥

॥ पंथडो निहालूं रे बीजा जिन तणो रे, अजित अजित गुण धाम ॥जे तें जीत्या रे तेणें हुं जीतियो रे, पुरुष किश्युं मुफ नाम॥पंथ० ॥ १॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, नूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणें करी मारग जोश्यें रे,नयण ते दिव्य विचार॥पंथ०॥ २॥पुरुष परंपर अनुजव जोवतां रे, अंधो अंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे, जो आगमें करी रे, तो चरण धरण नहीं गय॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहोंचे कोय ॥ अनिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे, ते विरला जग जोय ॥पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य नयणतणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगें रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लब्धि लही पंथ निहालशुं रे, ए आशा अविलंब ॥ ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे, आनंदघन मति अंब ॥ पंथ० ॥६ ॥ इति ॥

॥ अथश्रीसंनवजिनस्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग रामग्री ॥ रातडी रमीने किहांथी ॥
॥ आविया रे ॥ ए देशी ॥

॥ संनवदेव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रनु सेवन

नेद ॥ सेवन कारण पहेली नूमिका रे, अनय अद्वे ष अखेद ॥ संनव० ॥ १ ॥ नय चंचलता हो जे प रिणामनी रे, द्वेष अरोचक नाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकीयें रे, दोष अबोध लखाव ॥ संनव० ॥ ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, नव परि णति परिपाक ॥ दोष टले वलि दृष्टि खुले नली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ संनव० ॥ ३ ॥ परिचय पाति क घातिक साधुशुं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हे त ॥ संनव० ॥ ४ ॥ कारण जोगें हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज सा धीयें रे, ए निज मत उनमाद ॥ संनव० ॥ ५ ॥ मु ग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनू प॥ देजो कदाचित् सेवक याचना रे, आनंदघन रस रूप ॥ संनव० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनिनंदन जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग धन्यश्री सिंधुउ ॥ आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ अनिनंदन जिन दरिसण तरसीयें, दरिसण डुर्लन देव ॥ मत मत नेदें रें जो जई पूछीयें, सहु थापे अह मेव ॥ अनि० ॥ १ ॥ सामान्यें करी दरिसण दोहे लूं, निर्णय सकल विशेष ॥ मदमें घेर्यो रे आंधो केम करे, रविशशि रूप विलेख ॥ अनि० ॥ २ ॥ हेतु विवादें हो चित धरि जोइयें, अति डुर्गम नय वाद ॥

आगमवादें हो गुरुगम को नहीं, ए सबलो विषवाद ॥ अजि० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अति घणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धीगाई करी मारग संचरूं, सगूं कोइ न साथ ॥ अजि० ॥ ४ ॥ दरिसण दरिसण रटतो जो फरूं, तो रण रोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अमृत पाननी, किम नांजे विषपान ॥ अजि० ॥ ॥ ५ ॥ तरष न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरिसण काज ॥ दरिसण डुर्लन सुलन कृपा थकी, आनंदघन महाराज ॥ अजि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथश्री सुमति जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपण, दरपण जिम अविकार ॥ सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणियें, परिसरपण सुविचार ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनुधर गत आतमा, बहिरातम धुरि नेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, परमातम अविछेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥ आतम बुद्धें कायादिकें ग्रह्यो, बहिरातम अघरूप ॥ ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखी धर रह्यो, अंतर आतमरूप ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदें हो पूरण पावनो, वर्जित सकल उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतींड्रिय गुण गण मणि आगरू, एम परमातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ बहिरातम तजी अंतर आतमा, रूप थइ थिर नाव ॥ सु० ॥

परमातमनुं हो आतम नाववूं, आतम अर्पण दाव ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आतम अर्पण वस्तु विचारतां, नरम टले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे, आनंदघन रस पोष ॥ सु०॥ सु० ॥६॥

अथश्री पद्मप्रन जिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारु ॥ तथा सिंधुर्ज ॥ चांदलीया संदेशो ॥ कहेजे मारा कंतने रे ॥ ए देशी ॥

॥ पद्मप्रन जिन तुऊ मुऊ अंतरू रे, किम नाजे नगवंत ॥ कर्म विपाकें कारण जोइने रे, कोइ कहे मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥ पयइ ठिइ अणुनाग प्रदेशथी रे, मूल उत्तर बहु नेद ॥ घाती अघाती हो बंधूदय उदीरणा रे, सत्ता कर्म विछेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥ कनकोपलवत पयडि पुरुष तणी रे, जोडी अनादि स्वनाव ॥ अन्य संजोगी जिहां लगें आतमा रे, संसारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ कारण जोगें हो बंधे बंधने रे, कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव संवर नाम अनुक्रमें रे, हेय उपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥ युंजन करणे हो अंतर तुऊ पड्यो रे, गुण करणे करी नंग ॥ ग्रंथ उकतें करी पंमित जन कह्यो रे, अंतर नंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ तुऊ मुऊ अंतर अंतर नांजशे रे, वाजशे मंगल तूर ॥ जीव सरोवर अतिशय वाधशे रे, आनंदघन रस पूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीसुपार्श्वजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग सारंग ॥ तथा मल्हार ॥ ललनानी देशी ॥

॥ श्रीसुपासजिन वंदियें, सुख संपतिने हेतु ॥ललना॥ शांति सुधारस जलनिधि, भव सागरमांहे सेतु ॥ ल लना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥ सात महा भय टालतो, स प्तम जिनवर देव ॥ ललना ॥ सावधान मनसा क री, धारो जिनपद सेव ॥ ललना ॥ श्रीसु०॥ २ ॥ शि वशंकर जगदीश्वरू, चिदानंद भगवान ॥ ललना ॥ जिन अरिहा तीर्थंकरू, ज्योति सरूप असमान ॥ ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥ अलख निरंजन वछलू, स कल जंतु विशराम ॥ ल० ॥ अभयदान दाता सदा, पूरण आतमराम ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥ वीतराग मद कल्पना, रति अरति भय शोग ॥ ललना ॥ नि द्रा तंद्रा दुरदशा, रहित अबाधित योग ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ ५ ॥ परम पुरुष परमातमा, परमेश्वर पर धान ॥ ललना ॥ परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव परमान ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥ विधि विरंचि विश्वं भरू, रुषीकेश जगनाथ ॥ ल० ॥ अघहर अघ मोच न धणी,मुक्ति परमपद साथ ॥ ल० ॥ श्रीसु०॥ ७ ॥एम अनेक अभिधा धरे,अनुभव गम्य विचार ॥ल० ॥ जेह जाणे तेहने करे,आनंदघन अवतार ॥ल०॥श्री०॥ ८॥

॥ अथ श्रीचंद्रप्रभजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग केदारो ॥ तथा गोडी ॥ कुमरी रोवे आक्रंद करे, ॥ मुने कोइ मूकावे ॥ ए देशी ॥

॥ देखण दें रे सखि मुने देखण दे, चंद्रप्रन्न मुख चंद ॥ सखि० ॥ उपशम रसनो कंद ॥ सखि० ॥ सेवे सुरनर इंद ॥ सखी० ॥ गत कलिमल डुख दंद ॥ सखी॥मु०॥ १॥ सुहुम निगोदें न देखियो॥ सखि०॥ बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥ पुढवी आउ न लेखियो ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेश ॥ स० ॥ २ ॥ वनसपति अति घण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीय दीदार ॥ स० ॥ बि ति चउरिंदी जल लिहा ॥ स० ॥ गति सन्नी पण धार ॥ स० ॥ ३ ॥ सुर तिरि निरय निवासमां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥ अपऊता प्रतिन्नासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीयो हाथ ॥ स० ॥ ४ ॥ एम अनेक थल जाणियें ॥ स० ॥ दरिसण विणु जिन देव ॥ स० ॥ आगमथी मत जाणियें ॥ स० ॥ कीजें निर्मल सेव ॥ स० ॥ ५ ॥ निर्मल साधु नगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक होय ॥ स० ॥ किरिया अवंचक तिम सही ॥ स० ॥ फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ स० ॥ मोहनीय क्षय जाय ॥ स० ॥ कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदघनप्रन्नु पाय॥स०॥७॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनस्तवन प्रारंन्नः ॥

॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधि जिणेसर पाय नमिने, शुन्न करणी एम कीजें रे ॥ अति घणो उलट अंग धरीने, प्रह उठी पूजीजें रे ॥ सुवि० ॥ १ ॥ द्रव्य नाव शुचि नाव धरी

ने, हरखें देहरे जइयें रे ॥ दह तिग पण अहिगम साचवतां, एकमना धुरि थइयें रे ॥ सु० ॥ २ ॥ कुसुम अक्षत वर वास सुगंधो, धूप दीप मन साखी रे ॥ अंग पूजा पण भेद सुणी एम, गुरु मुख आगम भाखी रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ एहनुं फल दोय भेद सुणीजें, अनंतर ने परंपर रे ॥ आणा पालण चित्त प्रसन्नी, मुगति सुगति सुर मंदिर रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फूल अक्षत वर धूप पईवो, गंध नैवेद्य फल जल भरी रे ॥ अंग अग्र पूजा मलि अडविध, भावें भविक शुभगति वरी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सत्तर भेद एकवीश प्रकारें, अष्टोत्तर सत भेदें रे ॥ भाव पूजा बहुविध निरधारी, दोहग दुर्गति छेदे रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ तुरिय भेद पडिवत्ती पूजा, उपशम खीण सयोगी रे ॥ चउहा पुजा इम उत्तरज्झयणें, भाखी केवल भोगी रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ एम पूजा बहु भेद सुणीनें, सुखदायक शुभ करणी रे ॥ भाविक जीव करशे ते लेहेशे, आनंदघन पद धरणी रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मंगलिक माला गुणह विशाला ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥ हानादानरहित परिणामी, उदासीनता वीक्षण रे ॥ शी० ॥ २ ॥

पर दुख छेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण पर दुख रीझे रे ॥ उदासीनता उनय विलक्षण, एक गामें केम सीझे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अनय दान ते मलक्षय करुणा, तीक्ष्णता गुण नावें रे ॥ प्रेरण विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मनि नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिनुवन प्रनुता, निर्ग्रंथता संयोगें रे ॥ योगी नोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि उपयोगें रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु नंग त्रिनंगी, चमतकार चित्त देती रे ॥ अचरिज कारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिन स्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग गोडी ॥ अहो मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे ॥ अध्यातम मत पूरण पामी, सहज मुगति गति गामी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥ सयल संसारी इंद्रियरामी, मुनिगुण आतम रामी रे ॥ मुख्य पणे जे आतम रामी, ते केवल निःकामी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥ निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहियें रे ॥ जे किरिया करि चउगति साधे, ते न आध्यातम कहियें रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥ नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंमो रे ॥ नाव अध्यातम निजगुण साधे, तो तेहशुं रढ मंमो रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ॥ ४ ॥ शब्द अध्यातम अरथ सुणीने, निर्विकल्प आदरजो रे ॥ शब्द अध्यातम नजना जाणी, हान

ग्रह्ण मति धरजो रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ५ ॥ अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे ॥ वस्तुगतें जे वस्तु प्रकासे, आनंदघन मतवासी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग गोडी तथा परजीयो ॥ तूंगियागिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ वासुपूज्य जिन त्रिभुवन स्वामी, घननामी पर नामी रे ॥ निराकार साकार सचेतन, करम करम फल कामी रे ॥ वासु० ॥ १ ॥ निराकार अभेद सं ग्राह्क, भेदग्राह्क साकारो रे ॥ दर्शन ज्ञान डुभेद चेतना, वस्तु ग्रह्ण व्यापारो रे ॥ वासु० ॥ २ ॥ कर्त्ता परिणामी परिणामो, कर्म्म जे जीवें करियें रे ॥ एक अनेक रूप नय वादें, नियतें नर अनुसरियें रे॥वासु०॥ ॥ ३ ॥ डुख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनंदो रे॥चेतनता परिणाम न चूके,चेतन कहे जिन चंदो रे॥वासु०॥४॥ परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल नावी रे ॥ ज्ञान करम फल चेतन कहियें, लेजो तेह मनावी रे ॥ वासु० ॥ ५ ॥ आतम ज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो ड्व्यालिंगी रे ॥ वस्तुगतें जे वस्तु प्रकाशे, आनंदघनमति संगी रे ॥वा०॥६॥इति॥

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवनं प्रारभ्यते ॥

॥ राग मल्हार ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ डुख दोह्ग दूरें टल्यां रे, सुख संपदशुं भेट ॥ धींग धणी माथे किया रे, कुण गंजे नर खेट ॥ विम

लजिन, दीठा लोयण आज ॥ मारा सीधां वंछित काज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥ चरण कमल कमला वसे रे, निर्मल थिर पद देख ॥ समल अथिर पद परिहरी रे, पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥ ॥ २ ॥ मुझ मन तुझ पद पंकजें रे, लीनो गुण मकरंद ॥ रंक गणे मंदिरधरा रे, इंद चंद नागिंद ॥ ॥ वि० ॥ दी० ॥ ३ ॥ साहिब समरथ तुं धणी रे, पाम्यो परम उदार ॥ मन विशरामी वालहो रे, आतमचो आधार ॥ वि० ॥ दी० ॥ ४ ॥ दरिसण दीठे जिन तणुं रे, संशय न रहे वेध ॥ दिनकर कर भर पसरंता रे, अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥ अमीय भरी मूरति रची रे, उपम न घटे कोय ॥ शांति सुधारस झीलती रे, निरखत तृप्ति न होय ॥ ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥ एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिनदेव ॥ कृपा करी मुझ दीजीयें रे, आनंदघन पद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंत जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग रामग्री ॥ देशी कडखानी ॥

॥ धार तरवारनी सोहली दोहली, चउदमा जिनतणी चरण सेवा ॥ धार पर नाचतां देख बाजीगरा, सेवना धार पर रहे न देवा ॥ धा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एक कहे सेवियें विविध किरिया करी, फल अनेकांत लोचन न देखे ॥ फल अनेकांत किरिया करी बापडा, रडवडे चार गतिमांहे लेखे ॥ धा० ॥

॥ २ ॥ गछना भेद बहु नयण नीहालतां, तत्त्वनी वात करतां न लाजे ॥ उदर भरणादि निज काज करतां थकां, मोह नडिया कलिकाल राजें ॥ धा० ॥ ॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल, सांभली आदरी कांइ राचो ॥ धा०॥ ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे, केम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो ॥ शुद्ध श्रद्धान विणु सर्व किरिया करी, छार पर लीपणुं तेह जाणो ॥ धा० ॥ ॥ ५ ॥ पाप नही कोइ उत्सूत्र भाषण जिस्युं, धर्म नही कोइ जग सूत्र सरिखो ॥ सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे, तेहनुं शुद्ध चारित्र परिखो ॥ ॥ धा० ॥ ६ ॥ एह उपदेशनो सार संक्षेपथी, जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावें ॥ ते नरा दिव्य बहु काल सुख अनुभवी, नियत आनंद घन राज पावे ॥ धा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीधर्मजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ रसीयानी देशी॥

॥ धर्मजिनेसर गाउं रंगशुं, भंग म पडशोहो प्रीत ॥ जिनेसर ॥ बीजो मनमंदिर आणुं नही, ए अम कुलवट रीत ॥ जिनेसर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ धरम धरम करतो जग सहु फिरे, धरम न जाणे हो मर्म ॥ जि०॥ धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पछी,कोइ न बांधे हो कर्म ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे, देखे परम निधान ॥ जि० ॥ हृदय नयण नि

हाले जग धणी, महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ दोडत दोडत दोडत दोडीयो, जेती मननी रे दोड ॥ जि० ॥ प्रेम प्रतीत विचारो ढूकडी, गुरुगम लेजो रे जोड ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ एक परखी केम प्रीति वरे पडे, उनय मिल्या हुए संधि ॥ जि० ॥ हुं रागी हुं मोहें फंदियो, तुं नीरागी निरबंध ॥जि० ॥ ध० ॥ ५ ॥ परम निधान प्रगट मुख आगलें, जगत उलंघी हो जाय ॥ जि० ॥ ज्योति विना जुउ जगदीशनी, अंधो अंध पलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥ निर्मल गुण मणि रोहण नूधरा, मुनिजन मानस हंस ॥ जि० ॥ धन ते नगरी धन वेला घडी, माता पिता कुलवंश ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ मन मधुकर वर कर जोडी कहे, पदकज निकट निवास ॥ जि० ॥ घन नामी आनंदघन सांनलो, ए सेवक अरदास॥जि०॥धर्म०॥८

॥ अथ श्रीशांतिजिनस्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग मल्हार ॥ चतुर चोमासुं पडिक्कमी ॥ ए देशी ॥

॥ शांति जिन एक मुऊ वीनति, सुणो त्रिजुवन राय रे ॥ शांति सरूप किम जाणियें, कहो मन परखाय रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धन्य तुं आतमा जेहने, एहवो प्रश्न अवकाश रे ॥ धीरज मन धरी सांनलो, कहुं शांति प्रतिनास रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ नाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे, कह्या जिन वर देव रे ॥ ते तेम अवितथ सद्दहे, प्रथम ए शांति पद सेव रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ आगमधर गुरु समकिती,

किरिया संवर सार रे ॥ संप्रदायी अवंचक सदा, शु चि अनुजवाधार रे ॥ शांति० ॥४ ॥ शुद्ध आलंबन आद रे, तजी अवर जंजाल रे ॥ तामसी वृत्ति सवि परि हरी, जजे सात्विकी शाल रे ॥ शांति० ॥ ५ ॥ फल विसंवाद जेह्मां नही, शब्द ते अर्थ संबंधि रे ॥ सकल नय वाद व्यापी रह्यो, ते शिव साधन संधि रे ॥ शांति० ॥ ६ ॥ विधि प्रतिषेध करि आतमा, प दारथ अविरोध रे ॥ ग्रह्ण विधि महाजनें परिग्र ह्यो, इस्यो आगमें बोध रे ॥ शांति० ॥ ७ ॥ डुष्ट ज न संगति परिह्री, जजे सुगुरु संतान रे ॥ जोग सा मर्थ्य चित्त जावजे, धरे मुगति निदान रे ॥ शांति० ॥ ॥ ८ ॥ मान अपमान चित्त सम गणे, सम गणे क नक पाखाण रे ॥ वंदक निंदक सम गणे, इस्यो हो ये तुं जाण रे ॥ शांति० ॥ ए ॥ सर्व जगजंतुने सम ग णे, गणे तृण मणि जाव रे ॥ मुक्ति संसार बेहु स म गणे, मुणे जवजल निधि नाव रे ॥ शांति० ॥ ॥ १० ॥ आपणो आतमजाव जे, एक चेतनाधार रे ॥ अवर सवि साथ संयोगथी, एह निज परिकर सार रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ प्रजु मुखथी एम सांज ली, कहे आतमराम रे ॥ ताह्रे दरिसणें निस्तस्यो, मुऊ सीधां सवि काम रे ॥ शांति० ॥ १२ ॥ अहो अहो हुं मुऊने कहुं, नमो मुऊ नमो मुऊ रे ॥ अमित फल दान दातारनी, जेहनी जेट थइ तुऊ रे ॥ शां ति० ॥ १३ ॥ शांति सरूप संक्षेपथी, कह्यो निज

पररूप रे ॥ आगममांहे विस्तर घणो, कह्यो शांति जिन नूप रे ॥ शांति० ॥ १४ ॥ शांति सरूप एम नावशें, धरी शुद्ध प्रणिधान रे ॥ आनंदघन पद पामशे, ते लेहेशे बहु मान रे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग गुर्जरी ॥ अंबर देहो मुरारी, हमारो० ॥ ए देशी ॥

॥ कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे हो ॥ कुं० ॥ जिम जिम जतन करीने राखूं, तिम तिम अलगुं नाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसति उजड, गयण पायालें जाय ॥ साप खायने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगति तणा अनिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अन्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासें हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगमधरने हाथें, नावे किणविध आंकूं ॥ किहां कणे जो हठ करी हटकूं, तो व्याल तणी परें वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, शाहुकार पण नांही ॥ सर्व मांहे ने सहुथी अलगुं, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मतें रहे कालो ॥ सुर नर पंमित जन समजावे, समजे न माहारोसालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ डे नर, एहने कोइ न जेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणें सघलुं साध्युं, एह वात नहि खोटी ॥ एम कहे साध्युं

ते नवि मानुं, ए कहि वात छे महोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य तें वश आणुं, तें आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग परज ॥ रुषभनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

॥ धरम परम अरनाथनो, केम जाणुं भगवंत रे ॥ स्वपर समय समजावियें, महिमावंत महंत रे ॥ ध० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शुद्धातम अनुभव सदा, स्वसमय एह विलास रे ॥ परबडी छांहडी जेह पडे, ते परसमय निवास रे ॥ ध० ॥ २ ॥ तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी, ज्योति दिनेश मझार रे ॥ दर्शन ज्ञान चरण थकी, शकति निजातम धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भारी पीलो चीकणो, कनक अनेक तरंग रे ॥ पर्याय दृष्टि न दीजियें, एकज कनक अभंग रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ दरिसन ज्ञान चरणथकी, अलख सरूप अनेक रे ॥ निर्विकल्प रस पीजियें, शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंत रे ॥ व्यवहारें लख जे रहे, तेहना भेद अनंत रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ व्यवहारें लखे दोहिला, कांइ न आवे हाथ रे ॥ शुद्धनय थापना सेवतां, नवि रहे दुविधा साथ रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ एकपखी लखि प्रीतिनी, तुम साथें जगनाथ रे ॥ कृपा करीने राखजो, चरण तलें ग्रही हाथ रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ चक्री धरम तीरथ तणो,

तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ सेवे ते लहे, आनंद घन निरधार रे ॥ध०॥ ए ॥ इति अरनाथस्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीमल्लिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ रागकाफी ॥

॥ सेवक किम अवगणियें हो, मल्लिजिन ॥ एह अब शोभा सारी ॥ अवर जेहने आदर अति दीये, तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ ज्ञान स्वरूप अनादि तुमारुं, ते लीधुं तुमें ताणी ॥ जुर्ज अज्ञान दशा रीसावी, जातां काण न आणी हो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ निद्रा सुपन जागर उजागरता, तुरिय अवस्था आवी ॥ निद्रा सुपन दशा रीसाणी, जाणी न नाथ मनावी हो ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ समकेत साथें सगाई कीधी, सपरिवारशुं गाढी ॥ मिथ्यामति अपराधण जाणी, घरथी बाहिर काढी हो ॥ मल्लि० ॥ ॥ ४ ॥ हास्य अरति रति शोक दुगंछा, भय पामर करसाली ॥ नोकषाय श्रेणी गज चडतां, श्वान तणी गति जाली हो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ राग द्वेष अविरतिनी परिणति, ए चरणमोहना योद्धा ॥ वीतराग परिणति परिणमतां, उठी नाठा बोद्धा हो ॥ मल्लि० ॥६॥ वेदोदय कामा परिणामा, काम्य करम सहु त्यागी ॥ निःकामी करुणा रस सागर, अनंत चतुष्क पद पागी हो ॥ मल्ली० ॥ ७ ॥ दान विघन वारी सहु जनने, अभय दान पद दाता ॥ लाभ विघन जग विघन निवारक, परम लाभ रस माता हो ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥ वीर्य विघन पंमित वीर्यें हणी, पूरण पदवी

योगी ॥ जोगोपजोग दोय विघन निवारी, पूरण जोग सुजोगी हो ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ ए अढार दूषण वर्जित तनु,मुनिजन वृंदें गाया ॥ अविरति रूपक दोषनिरूपण, निर्दूषण मन जाया हो ॥मल्लि०॥१०॥ इणविध परखी मन विशरामी,जिनवर गुण जे गावे॥ दीनबंधुनी महेर नजरथी, आनंदघन पद पावे हो ॥ म० ॥ ११॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग काफी ॥ आघा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन राय, एक मुज विनति निसुणो ॥मु० ॥ आतम तत्त्व क्युं जाण्युं जगत गुरु, एह विचार मुज कहियो ॥ आतम तत्त्व जाण्या विण निरमल, चित्त समाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ अबंध आतम तत माने, किरिया करतो दीसे ॥ क्रियातणुं फल कहो कुण जोगवे, इम पूछ्युं चित रीसें ॥ मुनि० ॥ २ ॥ जडचेतन ए आतम एकज, स्थावर जंगम सरिखो ॥ दुःख सुख संकर दूषण आवे, चित विचारी जो परिखो ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ एक कहे नित्यज आतम तत, आतम दरिसण लीनो ॥ कृत विनाश अकृतागम दूषण, नवि देखे मतिहीणो ॥ मु० ॥ ४ ॥ सौगत मतिरागी कहे वादी, क्षणिक ए आतम जाणो ॥ बंध मोख सुख दुःख न घटे, एह विचार मन आणो ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ भूत चतुष्क वर्जित आतम तत, सत्ता अलगी न घटे ॥ अंध शकट जो नजर न देखे,

तोशुं कीजें शकटें ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ एम अनेक वा दिमत विभ्रम, संकट पडियो न लहे ॥ चित्त समा ध ते माटे पूबुं, तुम विण तत कोइ न कहे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ वलतुं जगगुरु इणि परें भाखे, पक्षपात सब छंमी ॥ राग द्वेष मोह पख वर्जित, आतमशुं रढ मं मी ॥ मुनि० ॥ ८ ॥ आतम ध्यान करे जो कोउ, सो फिर इणमें नावे ॥ वाग जाल बीजुं सहु जाणे, एह तत्त्व चित्त चावे ॥ मुनि० ॥९॥ जिणें विवेक धरी ए पख ग्रहीयें, ते तत ज्ञानी कहियें ॥ श्रीमुनि सु व्रत कृपा करो तो, आनंदघनपद लहियें ॥ मुनि०॥ १०

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग आशावरी ॥ धन धन संप्रति साचो ॥

॥ राजा ॥ ए देशी ॥

॥ षटदरिसण जिन अंग भणीजें, न्यास षडंग जो साधे रे ॥ नमि जिनवरना चरण उपासक, षट दरि सण आराधे रे ॥ षट० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जिन सुर पादप पाय वखाणुं, सांख्य जोग दोय भेदें रे ॥ आतम सत्ता विवरण करतां, लहो डुग अंग अखे दें रे ॥ षट० ॥ २ ॥ भेद अभेद सौगत मीमांसक, जिनवर दोय कर भारी रे ॥ लोकालोक अवलंबन भजियें, गुरुगमथी अवधारी रे ॥ षट० ॥ ३ ॥ लो कायतिक कूख जिनवरनी, अंश विचारी जो कीजें रे ॥ तत्त्व विचार सुधारस धारा, गुरुगम विण केम पी जें रे ॥ षट० ॥ ४ ॥ जैन जिनेसर वर उत्तम अंग,

अंतरंग बहिरंगें रे ॥ अक्षरन्यास धरा आधारक, आ राधे धरी संगें रे ॥ षट० ॥ ५ ॥ जिनवरमां सघलां दरिसण छे, दर्शन जिनवर भजना रे ॥ सागरमां सघली तटिनी सही, तटिनीमां सागर भजना रे ॥ षट० ॥ ॥ ६ ॥ जिनस्वरूप थई जिन आराधे, ते सही जिन वर होवे रे ॥ भृंगी ईलिकाने चटकावे, ते भृंगी जग जोवे रे ॥ षट० ॥ ७ ॥ चूर्णी भाष्य सूत्र निर्युक्ति, वृत्ति परंपर अनुभव रे ॥ समय पुरुषनां अंग कह्यां ए, जे छेदे ते दुर्भव रे ॥ षट० ॥ ८ ॥ मुद्रा बीज धा रणा अक्षर, न्यास अरथ विनियोगें रे ॥ जे ध्यावे ते नवि वंचीजें, क्रिया अवंचक भोगें रे ॥ षट० ॥ ए ॥ श्रुत अनुसार विचारी बोलुं, सुगुरु तथा विधि न मिले रे ॥ किरिया करी नवि साधी शकीयें, ए विष वाद चित्त सघले रे ॥ षट० ॥ १० ॥ ते माटे उना कर जोडी, जिनवर आगल कहीयें रे ॥ समय चरण सेवा शुद्ध देजो, जेम आनंदघन लहीयें रे॥ष०॥ ११॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारूणी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ अष्ट भवंतर वालही रे, तुं मुफ आतमराम ॥ मनरा वाला ॥मुगति स्त्रीशुं आपणे रे, सगपण कोइ न काम ॥ म० ॥ १ ॥ घर आवो हो वालम घर आवो, महारी आशाना विशराम ॥ म०॥ रथ फेरो हो साजन रथ फेरो, साजन महारा मनोरथ साथ ॥ ॥ म० ॥ २ ॥ नारी पखो श्यो नेहलो रे, साच कहे

जगनाथ ॥ म० ॥ ईश्वर अरधंगें धरी रे, तुं मुफ जा
ले न हाथ ॥ म० ॥ ३ ॥ पशु जननी करुणा करी रे,
आणी हृदय विचार ॥ म० ॥ माणसनी करुणा न
ही रे, ए कुण घर आचार ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रेम कल
पतरु बेदीयो रे, धरियो जोग धतूर ॥ म० ॥ चतुरा
इरो कुण कह्यो रे, गुरु मिलियो जग सूर ॥ म० ॥
॥ ५ ॥ मारुं तो एमां क्युंही नही रे, आप विचारे
राज ॥ म० ॥ राजसजामें बेसतां रे, किसडी बंधसी
लाज ॥ म० ॥ ६ ॥ प्रेम करे जग जन सहु रे, नि
र्वाहे ते उर ॥ म० ॥ प्रीत करीने बोडी दे रे, तेह्शुं
न चाले जोर ॥ म० ॥ ७ ॥ जो मनमां एहवुं हतुं
रे, निसपत करत न जाण ॥ म० ॥ नसपत करी
ने बांफतां रे, माणस हुवे नुकशान ॥ म० ॥ ८ ॥
देतां दान संवत्सरी रे, सहु लहे वंबित पोष ॥ म० ॥
सेवक वंबित नवि लहे रे, ते सेवकनो दोष ॥ म० ॥
॥ ए ॥ सखी कहे ए शामलो रे, हुं कहुं लक्षण सेत
॥ म० ॥ इण लक्षण साची सखी रे, आप विचारे
हेत ॥ म० ॥ १० ॥ रागीशुं रागी सहु रे, वैरागी
श्यो राग ॥ म० ॥ राग विना किम दाखवो रे, मुगति
सुंदरी माग ॥ म० ॥ ११ ॥ एक गुह्य घटतूं नथी रे,
सघलोई जाणे लोक ॥ म० ॥ अनेकांतिक जोगवो
रे, ब्रह्मचारी गतरोग ॥ म० ॥ १२ ॥ जिण जो
णी तुमने जोउं रे, तिण जोणी जोवो राज ॥ म० ॥
एक वार मुफने जुउ रे, तो सिजे मुफ काज ॥ म० ॥

॥ १३ ॥ मोहदशा धरी नावना रे, चित्त लहे तत्त्व विचार ॥ म० ॥ वीतरागता आदरी रे, प्राणनाथ नि रधार ॥ म० ॥ १४ ॥ सेवक पण ते आदरे रे, तो रहे सेवक माम ॥ म० ॥ आशयसाथें चालीयें रे, एहीज रूडुं काम ॥ म० ॥ १५ ॥ विविध योग धरी आदस्यो रे, नेम नाथ नरतार ॥ म० ॥ धारण पोष ण तारणो रे, नव रस मुगता हार ॥ म० ॥ १६ ॥ कारणरूपी प्रनु नज्यो रे, गण्युं न काज अकाज ॥ ॥ म० ॥ कृपा करी मुऊ दीजीयें रे, आनंदघन पद राज ॥ म० ॥ १७ ॥ इति द्वाविंशतिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ समकेतनुं स्तवन प्रारंन ॥

॥ समकित द्वार गंनारे पेसतां जी, पाप पमल गयां दूर रे ॥ माता मरु देवीनो लाडिलो जी, दीठां आनंद पूर रे ॥ सम० ॥ १ ॥ आयु वर्जित सात क र्मनी जी, सागर कोडा कोडी हीन रे ॥ स्थिति प्रथ म करणें करी जी, वीर्य अपूर्व मोघर लीन रे ॥ स म० ॥ २ ॥ नुंगल नांगी आदि कषायनी जी, मिथ्या मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघाड्यां स्वामी संवेग नां जी, दीठा श्री अनुनव नवियण नाथ रे ॥ स म० ॥ ३ ॥ तोरण बांध्यां जीवदया तणां जी, सा थीयो पूस्यो श्रद्धा रूप रे ॥ धूप घटा प्रनु गुण अनुमो दना जी, दीप मंगल आठ अनूप रे ॥ सम० ॥ ४ ॥ संवर पाणीयें अंग पखालियां जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतमरुचि मृग मद महमहे जी, पंचा

चार कुसुम प्रधान रे ॥ सम० ॥ ५ ॥ जावें पूजो रे पावन आतमा जी, पूजो परमेसर परम पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजे जी, क्षमाविजय जिन आगम रीत रे ॥ सम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वीरजगवाननुं स्तवन ॥

॥ श्रीसीधारथ नंदन देवा, प्रभु सेव करुं नित्य मेवा ॥ देजो मुफ जव जव सेवा ॥ जगत गुरु वीर परम जपगारी ॥ प्रभु करुणा निधि दातारी ॥ जग त० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शाज पहोर प्रभु देशना वरसे, सांजली जवि हृदयमां धरशे ॥ तोरा चरण कमल नित्य फरसे ॥ ज० ॥ २ ॥ ब्राह्मण देवशर्मा जाणे, प्रतिबोधवा मोकलिया ते टाणे ॥ गौतम चाव्या गुण खाणे ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रतिबोधीने पाछा वलिया मारग मांहे श्रवणे सांजलिया ॥ प्रभु मोक्ष मारग संचरिया ॥ ज० ॥ ४ ॥ ते सांजली दिलमां वात, गौतम ने थाये वज्रघात ॥ विवेकें गुण मणि ख्यात ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ हवे केहने हुं कहीश वीर, गौतम चिंतवे साहस धीर ॥ कर्म शत्रुना त्रोड्या जंजीर ॥ ॥ जग० ॥ ६ ॥ काती कृष्ण हुआ निर्वाण, प्रजा ते इंद्रजूति केवल नाण ॥ जयो जयो जणे गुण खाण ॥ ज० ॥ ७ ॥ अढार देशना राजा मलिया, जाव दीपक मोक्षमां जलिया ॥ इव्य दीपक गुणमणि जरिया ॥ ज० ॥ ८ ॥ प्रभु वरिया शिव लटकाली, धरयुं ध्यान पद्मासन वाली ॥ तिहां प्रगटी लोक दीवाली

॥ ज० ॥ ए ॥ मुज मंदिर सुरतरु फलियो, परमातम गौतम मलियो, गई जावठ शुनदिन वलियो ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ संवत उगणीश पचलोतेरा वर्षें, दीवाली दिन मन हर्षें ॥ प्रनु मोक्ष वस्या शुन दिवसें ॥ ज०॥ ११॥

॥ अथ कलियुगनी स्वाध्याय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमांहे आयो॥तीरथ नहिं कोइ इण संसारें, तेणे ए कलियुग आयो ॥ देखो वे यारो कूडो कलियुग आयो ॥ ए आंकणी ॥ बाबो कहे मह्यारी नानडी बेटी, दिन दिन मूल्य सवायो ॥ बे यारो कूडो कलियुग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम नलायो ॥ बोल बंध नही मंत्रीने, गोचर खेत्र खेडायो ॥ बे यारो कू० ॥ २ ॥ गुरुने गाल दीये निज चेलो, वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूलेने वहु खाटलडे, फूकें शरीर जलायो ॥ बे यारो कू०॥ ३ ॥ एंशी वर्षनो डोसो होंशें, मूठें हाथ घलायो ॥ पंच तणी साखें परणीनें, अबला अर्थ गमायो ॥ बे यारो कू० ॥ ४ ॥ जोगी जंगम ने संन्यासी, नांग नखे मदवायो ॥ चोर चाड परधनने खाये, साधुजन सीदायो ॥ बेयारो कू० ॥ ॥ ५ ॥ निर्धनने बहु बेटा बेटी, धनवंत एक न पायो ॥ नीच तणे घर अति घणी लखमी, उत्तम जन सीदायो ॥ बे यारो कू० ॥ ६ ॥ न मले बाप संघातें बेटो, घणे रे मनोर्थे जायो ॥ हाथ उपाडे माय नें मारे, परणीशुं उमाह्यो ॥ बे यारो कू० ॥ ७ ॥ घर

डाने घहेलो कहे बेटो, आप तणो मद वाह्यो ॥ वहू सूती ने वर हिंमोले, सासरे सूवाने धरायो ॥ बे यारो कू० ॥ ८ ॥ हल खेडे बांजण गो जुत्ति, निर्ग्रंथ नाक फडायो ॥ मा बापें बेटी वेचीने. बेटाने पर णायो ॥ बे यारो कू० ॥ ए ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परायो ॥ कांगानी पेरें कलहो मांमी, कुलगुरु नाम धरायो ॥ बे यारो कू० ॥ १० ॥ बेयर बार वरसनीने बेटो. दीगो गोद खेलायो ॥ मान्या मेह न वरसे महीयल. लाचें धरव्यो सवायो ॥ बे यारो कू० ॥ ११ ॥ कूडा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥ पलणे प्रीतिविमल परमारथ, जिन वचनें सुख पायो ॥ बे यारो कू० ॥१२॥इति॥

॥ अथ जंबूस्वामीनी सचाय प्रारंभः ॥

॥ सरसति सामिणी वीनवुं, सहगुरु लागुंजी पाय॥ गुण रे गाउं जंबु स्वामीना, हरख धरी मन मांय ॥ ॥ १ ॥ धन धन धन जंबु स्वामीने ॥ए आंकणी ॥ चारित्र बे वत्स दोहिलुं, व्रतबे खांमानी धार॥पाये अणु आणेजी चालवुं, करवोजी उग्रविहार ॥ धन० ॥ २॥ मध्यान्ह पबी करवी गोचरी, दिनकर तपे रे निलाड ॥ वेलु कवल समा कोलिया, ते किम वाल्या रे जाय ॥ ॥ धन० ॥ ३ ॥ कोडी नवाणुं सोवन तणी, तमा रे बे आठे जी नार ॥ संसार तणां सुख सुण्यां नही, जोगवो जोग रसाल ॥ धन० ॥ ४ ॥ रामें सीताने विजोगडें, बहोत किया रे संग्राम ॥ बती रे नारी

तुमें कांइ तजो, कांइ तजो धन ने धाम ॥ धन० ॥ ५ ॥
परणीने शुं जी परिहरो, हाथ मल्यानो संबंध ॥ प
छीने करशो स्वामी उंरतो, जिम कीधो मेघमुणिंद ॥
॥ धन० ॥ ६ ॥ जंबू कहे रे नारी सुणो, अम मन
संयम नाव ॥ साचो सनेह करी लेखवो, तो संयम
ल्यो अम साथ ॥ ध० ॥ ७ ॥ तेणे समे प्रनवोजी
आवियो, पांचशें चोर संघात ॥ तेने पण जंबुस्वामियें
बूऊव्या, बुऊव्या माय ने बाप ॥ धन० ॥ ८ ॥ सा
सु ससराने बूऊव्या, बुऊवी आठे नार॥पांचशें सत्तावी
शशुं, लीधोजी संयम नार॥धन०॥ए॥सुधर्मास्वामी पा
सें आविया, विचरे ठे मनने उल्लास ॥ कर्मखपावी के
वल पामीया,पोहोताजी मुक्ति मोऊार॥ ध० ॥ १ ॥

॥ अथ एकादशीनी सझाय प्रारंनः ॥

॥ आज महारे एकादशी रे, नणदल मौन करी
मुख रहियें ॥ पूठयानो पडुत्तर पाठो, केहने कांइ न
कहियें॥ आ० ॥ १ ॥ माहारो नणदोइ तुऊने वाल्हो,
मुऊने ताहारो वीरो ॥ धूआडाना बाचका नरतां,
हाथ न आवे हीरो ॥ आज० ॥ २ ॥ घरनो धंधो
घणो कस्यो पण, एक न आव्यो आडो ॥ परनव
जातां पालव जाले, ते मुऊने देखाडो ॥ आ० ॥ ३ ॥
मागशिर शुदि अगीयारश महोटी, नेवुं जिनना निर
खो ॥ दोढसो कल्याणिक महोटां, पोथी जोइने
हरखो ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्राव
क, मौन धरी मुख रहीयो ॥ पावक पूर सघलो पर

जाल्यो, एह्नो कांई न दहीयो ॥ आ० ॥ ५ ॥ आठ पहोर पोसा ते करियें, ध्यान प्रभुनुं धरियें ॥ मन वच काया जो वश करियें, तो भव सायर तरियें ॥ आ० ॥ ६ ॥ ईर्या समिति भाषा न बोले, आडुं अवलुं पेखे ॥ पडिकमणाशुं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे ॥ आ० ॥ ७ ॥ कर उपर तो माला फिरती, जीव फरे मनमांही ॥ चितडुं तो चिहुंदिशि मोले, इणे भजने सुख नांही ॥ आ० ॥ ८ ॥ पोषध शालें भेगां थइने, चार कथा वली सांधे ॥ कांइक पाप मिटावण आवे, बारगणुं वलि बांधे ॥ आ० ॥ ९ ॥ एक उठंती आलस मोडे, बीजी उंघे बेठी ॥ नदियोमांथी कांइक निसरती, जइ दरियामां पेठी ॥ आ० ॥ १० ॥ आई बाई नणंद भोजाई, न्हानी मोहोटी वहूने ॥ सासु ससरो मा ने मासी, शीखामण छे सहुने ॥ आ० ॥ ११ ॥ उदय रतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी रहेशे ॥ पोसामांहे प्रेम धरीने, अविचल लीला लेशे ॥ आ० ॥ १२ ॥

॥ अथ वैराग्यसज्झाय ॥ मनभमरानी देशीमां ॥

॥ उंचा मंदिर मालीयां, सोड्य वालीने सूतो ॥ काहाडो काहाडो एने सहु करे, जाणे जनम्योज नोतो ॥ १ ॥ एक रे दिवस एवो आवशे, मने सबलो जी साले ॥ मंत्री मल्या सर्वे कारिमा, तेनुं कांइ न चाले ॥ एक रे दिवस० ॥ ए आंकणी ॥ साव सोनांनां रे सांकलां, पहेरण नव नवा वाघा ॥ धोलुं रे वस्तर एना

कर्मनुं, तेतो शोधवा लागा ॥ एक रे० ॥ २ ॥ चरु कढाईया अति घणा, बीजानुं नही लेखुं ॥ खोखरी हांमी एना कर्मनी, तेतो आगल देखुं ॥ एक रे० ॥ ॥ ३ ॥ केनां गोरु ने केनां वाछरु, केनां माय ने बाप ॥ अंतकालें जावुं जीवने एकलुं, साथें पुण्यने पाप ॥ एकरे० ॥ ४ ॥ सगीरे नारी एनी कामिनी, उनी ट ग मग जूवे ॥ तेनुं पण कांइ चाले नही, बेठी धूसके रूवे ॥ एक रे०॥५॥ वाल्हां ते वाल्हां शुं करो, वाल्हां वो लावी वलशे ॥ वाल्हां ते वनना लाकडां, तेतो साथें जी बलशे ॥ एक रे० ॥ ६ ॥ नही तापी नही तुंबडी, नथी तरवानो आरो ॥ उदयरतन प्रनु इम नणे, म ने पार उतारो ॥ एक रे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अमल वर्जन स्वाध्याय ॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनवाणी मन धरी, सद्गुरु दीये उपदेश ॥ मेरे लाल ॥ बावीश अनक्ष्मांहे कह्युं, अमल अन क्ष विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाजो साजनां ॥ १॥ अमल विगोवे तन्न ॥ मे० ॥ उंघ बगासां घेरणी, आवे आखो दिन्न ॥ मे० ॥ अ० ॥ २ ॥ अमली अमलने सारिखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आर ति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥३॥ आलस ने उजागरो, बेठो ढबकां खाय ॥ मे० ॥ अकल न कांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी ऊपनुं, नामें जे अ

हिणीए ॥ मे० ॥ संग करे कोण एहनो, पंमित लो
क प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलुं मुख कडवुं
हुए, वली घांटो घेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथा नि
त्य आफरो, इणथी अवगुण थाय ॥ मे० ॥ अ० ॥
॥ ६ ॥ नाक बंधायें बोलतां, आधुं वचन बोलाय
॥ मे० ॥ अमीय सुकाये जीननुं, एहनी खाय बला
य ॥ मे० ॥ अ० ॥ ७ ॥ दाढोने मूछांदिशि. उगे
नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मश हुए, गाब
डी गाले नूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पलक अवेरुं
जो लोए, तो आतम अकुलाय ॥ मे० ॥ नाक चूए
नयणां फरे, काम करी न शकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥
॥ ए ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्यु समा
न ॥ मे० ॥ हाथ पगोनी नस गले, अमली आवी
शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराई आगे कह्यो,
मालवी मांहे नेल ॥ मे० ॥ आप इस्युं सखरुं नही,
मिशरीशुं मन मेल ॥मे०॥अ०॥ ११॥ नवटांक जे नर
जीरवे, तसु अहि विष न जणाय ॥ मे० ॥ अमल
घणुं खाधाथकी, कंदर्प बल मिट जाय ॥ मे०॥अ०॥
॥१२॥ अमलीने उन्हुं रुचे, टाढुं नावे दाय ॥मे० ॥
खोन्नी रोटी खांम घी, उपर दूध सुहाय ॥ मे० ॥अ०॥
॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामिनी, जाणे जुगति सुजाण
॥मे०॥ वस्तु वेची छिण करी, अमलीने दीए आण
॥मे०॥अ०॥ १४॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश ल
गार ॥मे०॥ कथन न लोपे कंतनुं, ते विरली संसार ॥मे०

॥अ०॥१५॥ दुर्भागणी नारी जिका, बोले कर्कश वाणी ॥ मे० ॥ रे रे अधम अफीणिया, आलसवंत अजाण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥ परणी जाई पारकी, शुं कीधुं तें धीठ ॥ मे० ॥ पोतानुं पण पेट ए, निठुर नराय न नीठ ॥ मे० ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट नूषण सहु, वेची खाधुं तेह ॥ मे० ॥ निर्लज तुऊ घरवासमां, कहे सुख पाम्यु जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ १८ ॥ अमल समो असुगो नहीं, मानो ए मुऊ शीख ॥ मे०॥ बाले सुंदर देहडी, अंते मगावे नीख ॥ ॥ मे० ॥ अ०॥ १९ ॥ दालिद्रीने दोहिलुं, सूर उग्यानुं शाल ॥ मे० ॥ श्रीमंतने पण नहीं नलुं, जोतां ए जंजाल ॥ मे० ॥ अ०॥ २० ॥ सासु वहु वढतां ठतां, रीशें अमल नखंत ॥ मे० ॥ बालक खाये अजाणतां, जो घर अमल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी वध जिणशुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मादान दशमुं कह्युं, विष व्यापार पमूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ २२ ॥ चतुर विचार ए चित्त धरी, कीजें अमल परिहार ॥ मे० ॥ खिमाविजय पंमित तणो, कहे माणिक मनोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥ २३ ॥ इति ॥

अथ

॥ श्रीजिनहर्षजीकृत पांचमा आरानी सशय ॥

॥ वीर कहे गौतम सुणो, पांचमा आराना नाव रे ॥ डुखीया प्राणी अति घणा, सांनल गौतम स्व नाव रे ॥ वीर० ॥ १ ॥ सहेर होशे रे गामडां, गाम

होशे समशान रे ॥ विण गोवालें रे धण चरे, ज्ञानी नहिनिरवाण रे ॥वीर०॥ २ ॥ मुक केडे कूमति घणा, होशे ते निरधार रे ॥ जिनमतिनी रुची नवी गमे, थापशे निजमति सार रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कुमति जाजा कदाग्रही, थापशे आपणा बोल रे ॥ शास्त्र मारग सवि मूकशे, करशे जिन मत मोल रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ पाखंमी घणा जागशे, नांगशे धरमना पंथ रे ॥ आगम मत मरडी करी, करशे नवा वली ग्रंथ रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ चारणीनी परें चालशे, धर्म न जाणे लेश रे ॥ आगम शाखाने टालशे, पालशे निज उपदेश रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चोर चरड बहु ला गशे, बोली न पाले बोल रे ॥ साधुजन सीदायशे, डुर्जन बहुला मोल रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ राजा प्रजाने पीडशे, हिंमशे निरधन लोक रे ॥ माग्या न वरसशे मेहुला, मिथ्या होशे बहु थोक रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ संवंत उगणीश चौदोत्तरें, होशे कलंकी राय रे ॥ मात ब्राह्मणी जाणीयें,बाप चंमाल कहेवाय रे ॥वीर०॥ए॥ उयासी वरषनुं आउखुं, पाम्लीपुरमां होशे रे ॥ तसु सुत दत्त नामें नलो, श्रावककुल शुन पोषे रे ॥ ॥ वीर० ॥ १० ॥ कोतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे निक्षा तणी, महा अकरा कर होय रे ॥ वीर० ॥ ११ ॥ इंड अवधियें जोयतां, देखशे एह स्वरूप रे ॥ द्विज रूपें आवी करी, हणशे कलंकी नूप रे ॥ वीर०॥१२॥दत्तने राज्य थापी करी,

इंद्र सुर लोकें जाय रे ॥ दत्त धरम पाले सदा, नेटशे शेत्रुंज गिरिराय रे ॥ वीर० ॥ ॥ १३ ॥ पृथ्वी जिन मंमित करी, पामशे सुख अपार रे ॥ देव लोकें सुख नोगवे, नामें जयजयकार रे ॥ वीर० ॥ १४ ॥ पांच मा आराने ठेडले, चतुर्विध श्रीसंघ होशे रे ॥ ठहो आरो बेसतां, जिनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वीर० ॥ १५ ॥ बीजे अग्नि जागशे, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे प्रहरें लोपना, ठहे आरे ते होय रे ॥ वीर० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ ठहे आरे मानवी, बिलवासी सवि होय ॥ वीश वरसनुं आउखुं, षटवर्षे गर्नज होय ॥ ॥ १७ ॥ सहस चोराशी वर्षपणे, नोगवशे नवि कर्म ॥ तीर्थंकर होशे नलो, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥ ॥ १८ ॥ तसु गणधर अति सुंदरु, कुमारपाल नृपा ल ॥ आगम वाणी जोइने, रचीयां रयण रसाल ॥ ॥ १ए ॥ पांचम आराना नाव ए, आगमें नांख्या वीर ॥ ग्रंथ बोल विचार कह्या, सांनलजो नवि धीर ॥ २० ॥ नणतां समकित संपजे, सुणतां मं गल माल ॥ जिनहर्षे कही जोड ए, नाख्यां वयण रसाल ॥ २१ ॥ इति पांचमा आरानी सद्याय ॥

॥ अथ मरुदेवाजीनी सद्याय ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ तुऊ साथें नहीं बोलुं रे रुखनजी, तें मुऊने वीसारी जी ॥ अनंत ज्ञाननी तुं रुद्धि पाम्यो, तो जननी न संनारी जी ॥ तु० ॥ १ ॥ मुऊने मोह ह तो तुऊ उपर, रुषन रुषन करी जपती जी ॥ अन्न

उदक मुझने नवि रुचतुं,तुझ मुख जोवाने तृपती जी ॥ तु० ॥ २ ॥ तुं बेठो शिर छत्र धरावे, सेवे सुर नर नारी जी ॥ तो जननीने केम संजारे, जाणी जाणी प्रीति तह्यारी जी ॥ तु० ॥ ३ ॥ तुं कहेनो ने हुं वली कहेनी, नथी इहां कोइ कहेनुं जी ॥ ममता मोह धरे जे मनमां, मूर्ख पणुं सहि तेहनुं जी ॥ तु० ॥ ४ ॥ अनित जावनायें चढया मरु देव्या, बेठां गयवर खंधो जी ॥ अंतगड केवली थइ गया मुक्तें, रुषजने मन आणंदो जी ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीखामणनी सद्याय ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसाउले, कहिशुं शीखामण सार॥ मन समजावो रे आपणुं, जिम पामो जव पार ॥ १ ॥ कहे जाइ रूडुं तें शुं कर्युं,आतमने हितकार ॥ इह जव परजव सुख घणां, लहियें जय जय कार ॥ कहे० ॥ २॥ लाख चोराशी योनि तुं जमि, पाम्यो नर अवतार ॥ देव गुरु धर्म न उलख्या, न जप्यो मन नवकार ॥ कहे० ॥ ३ ॥ नव मसवाडा उदर धर्यो, पाली पोढो रे कीध ॥ माय ताय सेवा कीधी नहीं, न्यायें मन नवि दीध ॥ कहे० ॥ ४ ॥ चाडी कीधी रे चोतरें, दंमाव्यां जलां लोक ॥ साधु सहुने संतापिया, आल चढाव्यां तें फोक ॥ कहे० ॥ ५ ॥ लोनें लाग्यो रे प्राणीयो, न गणे रात ने दीस ॥ हाहो करतां रे एकलो, जई हाय घशीश ॥ कहे० ॥ ६ ॥ कपट छल जेद तें कर्यां, जांख्या परना रे मर्म ॥ साते व्यसनने सेवियां, नवि

कीधो जिनधर्म ॥ कहे० ॥ ७ ॥ क्षमा न कीधी तें खांतशुं, दया न कीधी रेख ॥ परवेदन तें जाणी नहीं, तो शुं लीधो तें नेख ॥ कहे० ॥ ७ ॥ संध्यारंग सम आउखुं, जल पंपोटो रे जेम ॥ डाज अणी उपर बिंदुउं, अथिर संसार छे एम ॥ कहे० ॥ ए ॥ अनक्षअनंतकाय वावस्यां, पीधां अणगल नीर ॥ रात्रि नोजन तें कस्यां, कम पामीश नवतीर ॥ कहे० ॥ १० ॥ दान शीयल तप नावना, धर्मना चार प्रकार ॥ ते तें नावें न आदस्या, रजलीश अनंतो संसार ॥ कहे० ॥ ११ ॥ पांचे इंडी रे पापिणी, डुर्गति घाले छे जेह ॥ तेतो मेली रे मोकली, किम पामिश शिव गेह ॥ कहे० ॥ १२ ॥ क्रोधें वींट्यो रे प्राणीयो, मान न मूके रे केड ॥ माया सापणीने संग्रही, लोनने लीधो तें तेड ॥ कहे० ॥ १३ ॥ पररमणी रस मोहियो, परनिंदानो रे ढाल ॥ परड्व्य तें नवि परिहस्युं, परने दीधी रे गाल ॥ कहे० ॥ १४ ॥ धर्मनी वेला तुं आलसु, पाप वेला उजमाल ॥ संच्युं धन कोइ खायशे, जिम मध माखी मदुआल ॥ कहे० ॥ १५ ॥ मेली मेली मूकी गया, जे उपार्जी रे आथ ॥ संचय कीजें रे पुण्यनो, जे आवे तुऊ साथ ॥ कहे० ॥ १६ ॥ शुद्ध देव गुरु उलखी, कीजें समकित शुद्ध ॥ मिथ्या मति दूरें करी, राखी निरमल बुद्ध ॥ पाठांतरें ॥ गुरु शिखामण ए सही, ए जाणो हित बुद्धि ॥ कहे० ॥ १७ ॥ गोडीदास संघवी तिणें, आदरें कीध सद्याय ॥ शांति

विजय उवझायनो,रूपविजय गुण गाय ॥ क० ॥१८॥

॥ अथ नेमिनाथजिन स्तवनं ॥

॥ सुनो मेरे नेमजी प्यारे, इगनसें मत रहो न्यारे ॥ सुनो० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पचरंगी पाग सिर सोहीयें, गले फूल माल मन मोहियें ॥ सुनो० ॥ २ ॥ दया करी दरिसन मुज दीजें, मया करी अपनो कर लीजें ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ जिनदास चेला हे तेरा, लगा जिनराजसें नेहा ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन ॥

॥ लाल तेरे नैनोंकी गत न्यारी, एतो उपशम रसकी क्यारी ॥ लाल तेरे० ।ए आंकणी ॥ काम क्रोधादि दोष रहितसें, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपन दिशा नही यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल० ॥१॥ और नैनुंमें काम क्रोध है, बहोत भरी हे खुमारी॥परधनादि हरनकी इछा,एही है हुशियारी ॥लाल० ॥२॥एता लक्षण हे नैनुंमें, क्युं पामे भव पारी॥और बिचार करो दिल अपने,ए तो है करमुसें भारी ॥लाल० ॥३॥धर्मबिना कोइ सरणां नही है, ऐसो निश्चय दिल धारी ॥ विनय कहे प्रभु भक्ति कर ले, एहि हे तारणहारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन पूजानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाहला ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशला नंदन रे देहें, रचीयें पूजा अधिक सनेहें ॥ नवनव भातें रे करीयें, जिम भव सायर हे

लें तरीयें ॥ चेतन प्यारा रे मह्वारा, जिन पूजा करि लहो जवपारा ॥ चेतन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ न मण करीयें रे मन रंगें, चर्चो केशर प्रजु नव अंगें ॥ फूलनी फुटरी रे माला, कंठ ठवो पंच रंग रसाला ॥ चेतन० ॥२॥ धूप दीप रे मनोहार, अक्षत नैवेद्य फल सुरसाल॥श्रीजिनवरजी जग शणगार, गावो गीत ज्ञान मनोहार ॥ चेतन० ॥३॥ दरिसण चरणने रे नाण, तप ए चउहा पूजा जाण ॥ आराधक तेहने रे कही यें, पूजा द्वादश जेदें लहीयें ॥ चेतन० ॥४॥ पादो प गमन पद धारी, वरिया जिन उत्तम शिवनारी ॥तस पद पद्मने रे वंदो, रूपविजय पद लही आनंदो ॥चे०॥५॥

॥ अथ नेमराजुल स्तवनं ॥

॥ मत जाउ रे पिया तुमें पाहाडमां ॥ पाहाड मां पाहाडमां पाहाडमां ॥ मत०॥ तुम तो कहो ह म नारी त्यागी, किम जाउ गिरनारिमां ॥ म० ॥ १ ॥ छकाय के रक्षक हो तुम, तो केम जाउ जाडिमां ॥ म० ॥ २ ॥ कठिन गिरिवरकी वांकी टूंको, वसवुं ज ड़ ऊजाडिमां ॥ म० ॥ ३ ॥ राजिमतीकी वीनति मा नो, रहेवुं संघनी हारमां ॥ म० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, नेम मग्न जयो संजम जारमां ॥म०॥५॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥ राग काफी ॥

॥ मह्वारा सामलीयानी वात रें, हुं केहने पूछुं ॥ मह्वारा० ॥ जेने पूछुं ते दूर बतावे, पिया बिन रह्यो न जाय रे ॥ हुं०॥ मह्वा० ॥१ ॥ तोरण आए चले रथ

फेरी, पशुअन सुणी पोकार रे॥ हुं० ॥ मह्।० ॥ आंबा मोर्या केसुडां फूल्यां, आयो मास वसंत रे ॥ हुं० ॥ मह्।०॥२॥ दादुर मोर बपैया रे बोले, कोयल शब्द सुणावे रे ॥ हुं० ॥ मह्।० ॥ झरमर झरमर मेहुला रे वरसे, बुंद पडे रंग रोल रे ॥ हुं० ॥मह्।० ॥३ ॥ लख्यो संदेशो पिया मिलवेको, कोइ बटाउ न जाय रे ॥ हुं० ॥ मह्।० ॥ ऋद्धि कुशल बुध शिष्य इम जंपे, वालम ध्यान धराय रे ॥ हुं० ॥ मह्।० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नीडनंजन जिन स्तवनं ॥

॥ जिनराज जोवानी तक जाय छे रे, खरां दुःख डां खोवानी तक जाय छे रे ॥ हलुकर्मि होवानी तक जाय छे रे, नगवंत नज्यानी तक जाय छे रे ॥ बहु लोनें ते लाज लूंटाय छे रे ॥ जिन० ॥ १ ॥ दुनिया रंग दोरंगी दीसे, पलक पलक पलटाय छे रे ॥ ॥ जि० ॥ खोटे नरोंसे खोटी थावुं, गांठनो ग्रंथ लुंटाय छे रे ॥ जि० ॥ २ ॥ सज्जन सगां सहु स्वारथ सूधी, गरजें घहेलां थाय छे रे ॥ जिन० ॥ पुण्य विना एक परनव जातां, संसारी सीदाय छे रे ॥ ॥ जि० ॥ ३ ॥ रामा रामा धन धन करतो, धव धव जिहां तिहां धाय छे रे ॥ जि० ॥ कनक अने बीजी कामिनी लुब्धा, केई प्राणी कूटाय छे रे ॥जि०॥ ॥ ४ ॥ पंच विषयना प्रवाहमांहे, तृष्णा पूरें तणाय छे रे॥ जि० ॥ नाव सरिखा नाथने मूकी, पापने नारें नराय छे रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहराजाना राजमां

वसतां, परमाधामी पासें जाय छे रे ॥ जि० ॥ जिन मारग विण जमनो जोरो, कह्योने केणें जीताय छे रे ॥ ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीसद्गुरुने उपदेशें, सूधो झवेरी जणाय छे रे ॥ जि० ॥ पाखंमममांहे पड्या जे प्राणी, काचमलामां कहेवाय छे रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ नीडनं जन प्रजु पास जिनेसर, पूजतां पाप पलाय छे रे ॥ ॥ जि० ॥ उदयरत्नो अंतरजामी, बूडतां बांहे साहे छे रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रेशठ शिलाका पुरुषनुं प्रजातीयुं ॥

॥ चोपाईनी देशीमां ॥

॥ प्रह समे प्रणमुं सरसति माय, वली सद्गुरुने लागुं पाय ॥ त्रेशठ शिलाकानां कहुं नाम, नाम ज पंतां सिजे काम ॥ १ ॥ प्रथम चोवीश तीर्थंकर जाण, तेह तणो हुं करीश प्रणाम ॥ रुषन्न अजित ने संजव स्वाम, चोथा अजिनंदन अजिराम ॥ २ ॥ सुमति पदमप्रन्न पूरे आस, सुपार्श्व चंद्प्रन्न द्ये सुख वास ॥ सुविधि शितलने श्रेयांस नाथ, ए छे साचा शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जिन विमल अनंत, धर्म शांति कुंथु अरिहंत ॥ अर मल्लि मुनि सुव्रत स्वाम, एहथी लहियें मुक्ति सुगाम ॥ ४ ॥ नमी नाथ नेमीसर देव, जस सुर नर नित सारे सेव ॥ पार्श्वनाथ महावीर प्रसिद्ध, तूठा आपे अविचल रिद्ध ॥ ५ ॥ हवे नाम चक्रवर्त्ती तणां, बार चक्री जे शास्त्रें जण्या ॥ पहेलो चक्री जरत नरेश, सुखें सा

ध्या जिणें षट खंम देश ॥ ६ ॥ बीजो सगर नामें नूपाल, त्रीजो मघव राय सुविशाल ॥ चोथो कहीयें सनतकुमार, देव पदवी पाम्या ठे सार ॥ ७ ॥ शांति कुंथु अर त्रसे राय, तीर्थंकर पण पद कहेवाय ॥ सुनूम आठमो चक्री थयो, अति लोनें करी नरकें गयो ॥ ८ ॥ महापद्म राय बुद्धि निधान, हरिषेण दशमो राजान ॥ अग्यारमो जय नाम नरेश, बारमो ब्रह्मदत्त चक्रेश ॥ ९ ॥ ए बारे चक्रीसर कह्या, सूत्र सिद्धांतथकी में लह्या ॥ हवे वासुदेव कहुं नवनाम, त्रण खंम जेणें जीत्या गाम ॥ १० ॥ वीर जीव प्रथम त्रिपृष्ठ, बीजो नृप जाणो द्विपृष्ट ॥ स्वयंनू पुरुषोत्तम महाराय, पुरुषसिंह पुरुष पुंमरिक राय ॥ ११ ॥ दत्त नारायण कृष्ण नरेश, ए नव हवे बलदेव विशेष ॥ अचल विजय नद सुप्रन नूप, सुदर्शन आनंद नंदन रूप ॥ १२ ॥ पद्म राम ए नव बलदेव, प्रतिशत्रु नव प्रतिवासुदेव ॥ अश्वग्रीव तारक राजेंद, मेरक मधु निशुंन बलेंद ॥ १३ ॥ प्रह्लाद ने रावण जरासंध, जीत्यां चक्र बलें तस संध ॥ त्रेशठ संख्या पदवी कही, माता एकशठ ग्रंथें लही ॥ १४ ॥ पिता बावनने शाठ शरीर, उगणशाठ जीव महाधीर ॥ पंच वरण तीर्थंकर जाण, चक्री सोवन वान वखाण ॥ १५ ॥ वासुदेव नव शामल वान, उज्ज्वल तनु बलदेव प्रधान ॥ तीर्थंकर मुक्ति पद वस्या, आठ चक्री साथें संचस्या ॥ १६ ॥ बल

देव आठ वली तेनी साथ, शिवपद लीधुं हाथो हाथ ॥ मघवा सनतकुमार सुर लोक, त्रीजे सुख विलसे गतशोक ॥ १७ ॥ नवमो बलदेव ब्रह्म निवास, वासुदेव सहु अधोगति वास ॥ अष्टमो बारमो चक्री साथ, प्रतिवासुदेव समा नरनाथ ॥ १८ ॥ सुरवर सुख शाता जोगवी, नारकी दुःख व्यथा अनुजवी ॥ अनुक्रमें कर्म सैन्य जय करी, नर वर चतुरंगी सुख वरी ॥ १ए ॥ सद्गुरु जोगें क्षायिक जाव, दर्शन ज्ञान जवोदधि नाव ॥ आरोही शिव मंदिर वसे, अनंत चतुष्टय तव उल्लसे ॥ २० ॥ लेशे अक्षय पद निर्वाण, सिद्ध सवे मुज द्यो कल्याण ॥ उत्तम नाम जपो नर नार, स्वरूपचंद लहे जय जयकार ॥ २१ ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥ निंदडीनी देशी ॥

॥ उलंग अजित जिणंदनी, नवि कीधी हो जेणें एक वार के ॥ दश उपनय करी दोहिलो, पाम्यो पण हो एलें अवतार के ॥ उलंग० ॥ १ ॥ असासय सासय इस्यो, कोइ कुमति हो देखाडे संद के ॥ पुत्र पिता गुरु शिष्यनो, केम तेहने हो घटशे संबंध के ॥ उलंग० ॥ २ ॥ अक्षरथी जेम ज्ञाननो, गुण प्रगटे हो टले सयल विरुद्ध के ॥ तिम वाहाला जिनजी तणा, दरिसणथी हो होय दंसण शुद्ध के ॥ उलंग० ॥ ३ ॥ परम साधन जिन सेवना, कोइ तेहमां हो कहे हिंसा दोष के ॥ गमन अशन गुरु वंदना, जलक्रमणादि हो किम क्रियापोष के ॥ उलंग० ॥ ४ ॥

सुर करणी संजारीयें, जो वारीयें हो नर करणी कीध के ॥ घट पट आगम लीपि कला, इत्यादिक हो सवि थाये निषेध के ॥ उलंग० ॥५॥ उछमछादि न्हवणादिकें, अवछा हो तिहां होय सुप्रसाद के ॥ जिहां अनुजव संजावना, ते पूजा हो किम करवो प्रमाद के ॥ उलंग० ॥ ६ ॥ वृद्धानुगत नवि चर्चियें, लो जीने हो लोजी ठे सिद्ध के ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, गज लंछन हो नामें नवनिध के ॥ उलंग० ॥ ७ ॥

॥ अथ रूषजजिन स्तवन ॥ निंदडीनी देशीमां ॥

॥ वृषज लंछन दिन पहला, अति पावन हो कीधुं पाताल के ॥ जाग्य योगें हवे जक्तिने, दीधुं दरिसण हो एह दीन दयाल के ॥ १ ॥ सौजगी साहेब सेवीयें ॥ ए आंकणी ॥ जक्त वत्सल महिमानिधि, करुणा कर हो उपशम रस पूर के ॥ प्रगट थया जूपति पुरें, जिम प्रहरमें हो निषिद्धाचलें सूर के ॥ सोजागी० ॥ ॥ २ ॥ अतिशयवंत जिनेसरू, जगजीवन हो नरदेव पमूर के ॥ पुण्यवशें सुप्रसन्न थया, समकितथी हो अनुजव अंकूर के ॥ सोजागी० ॥ ३ ॥ आज परम आनंद हुउ, आज वूठा हो अमिय जलधार के ॥ जवजय जंजण तुम तणो, जेह निरख्यो हो डुर्लज दीदार के ॥ सोजागी० ॥ ४ ॥ सुर नायक सेवा करे, तुम मूरति हो सहि मोहनवेल के ॥ रस लीणा गुण आलवे, स्वर जीणा हो नारी गजगेल के ॥ सोजागी० ॥५॥ स्वामी नाम प्रजावथी, सवि संपद हो नवनिधि

ऋध्दि गेह के ॥ चरण कमल नेत्व्यायकी, महामंग ल हो मन मान्यो नेह के ॥ सोनागी० ॥ ६ ॥ संवत सत्तर अडशतें, फागुण शुदि हो तेरश तिथि सार के ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, जिन प्रणम्या हो होये जयजयकार के ॥ सोनागी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवनं ॥

॥ अजित जिणंद जुहारीयें, साहेबा विजया राणीना नंद ॥ जिणंद मोरा हे ॥ सुर नर किन्नर तुम तणा, साहेबा सेवे पय अरविंद ॥ जिणं० ॥ अजि० ॥ ॥ १ ॥ जितशत्रु नृप लाडिलो ॥ सा० ॥ जितशत्रु नगवान ॥ जि० ॥ जितशत्रु मुफ कीजियें ॥ सा० ॥ दीजियें वंछित दान ॥ जि० ॥ अजि० ॥ २ ॥ अंत राय पंचक टल्युं ॥स०॥ हास्य षटक् अज्ञान ॥ जि० ॥ अविरति काम निद्रा तंजी, तेम राग द्वेष अंतवान॥ जि० ॥ अजि० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व दोष अढार ए ॥ सा० ॥ त्यजी करवो तुम गुणसंग ॥ जि० ॥ केव लज्ञान बिराजता ॥ सा० ॥ सादि अनंत अनंग ॥ जि० ॥ ४ ॥ तुं सकल परमेसरू ॥ सा० ॥ तुं निज शिव पद नूप ॥ जि० ॥ तुम पद पद्मनी चाकरी ॥ सा० ॥ चाहे चित्त नित्य रूप ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवनं ॥ सुरतीमहीनानी देशी ॥

॥ कोशल देश सोहामणो, नयरी अयोध्या रे गा म ॥ राज करे तिहां राजवी, जीतशत्रु एनुं नाम ॥ १ ॥ विजया रे राणी तेहनी, शीलवती अनिरा

म ॥ तेह्नी कूखें अवतस्या, अजित जिनेसर स्वाम ॥ १ ॥ साडा रे चारशें धनुषनी, कंचन वर्णी काय ॥ बहोंतेर लाख पूर्व आउखुं, श्रीजिनवरनी आय ॥ ३ ॥ पुण्यसंयोगें हुं पामियो, तमने श्रीजिनराज ॥ पाप गयां सर्वे माहरां, फलिया मनोरथ आज ॥ ४ ॥ दीन दयाल दया करी, देजो अविचल राज॥ नितलाभ कहे प्रभु माहरां, सारजो वंछित काज ॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ संदेशो जइ लावे वागड देशनो रे ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबा श्री संखेसर पासजी, प्रभुजी भवोदधि तरण जहाज ॥ संदेशो सुणजो वामानंदजी ॥ साहिबा धारक तारक बिरूदनो, प्रभुजी अहो अहो गरीब निवाज ॥ संदेशो० ॥१॥ साहिबा अतीत चोवीशीमा वर्तता,प्रभुजी दामोदर भगवंत ॥सं०॥ साहिबा तेसली जीव गणधर तेणें,प्रभुजी बिंब भराव्यो गुणवंत॥सं०॥ ॥२॥ साहिबा ध्यान धरयुं जब आपनुं, प्रभुजी श्रीशंखेश्वर राय ॥ सं० ॥ साहिबा प्रगट थया पातालथी, प्रभुजी विघ्न हर्यां सहु जाय ॥ सं० ॥ ३ ॥ साहिबा जनम मरण भय सवि हरो,प्रभुजी तो ए उपद्रव कुण मात्र ॥ सं० ॥ साहिबा इंद्र चंद्र नागेंद्रथी, प्रभुजी रूप अनंतगणुं गात्र ॥ सं० ॥४॥ साहिबा प्रातिहार्य सवि सुंदरू, प्रभुजी शोभित गुण गण वृंद ॥ सं० ॥ साहेबा सुरपति नरपति मुनिवरा, प्रभुजी सेवित पद अरविंद ॥ सं० ॥ ५ ॥ साहिबा अहोनिशि पदकज से

वना, प्रभुजी चाहुं हुं दरिस देदार ॥ सं० ॥ साहेबा दीपविजय कहे दीजियें,प्रभुजी तुम दरिसन सुखकार ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथनी स्वाध्याय ॥

॥ साते वारनी देशीमां ॥

॥ तोरण आवी कंत, पाछावलिया रे ॥ मुफ फर के दाहिण अंग, तेणें अटकलिया रे ॥ १ ॥ कुण जोशीयें जोया जोप, चुगल कुण मलिया रे ॥ कुण अवगुण दीठा आज, जिणथी टलिया रे ॥ २ ॥जाउ जाउ रे सहियरो दूर, शाने छेडो रे ॥ पातलीयो श्यामल वान,वालिम तेडो रे ॥ ३ ॥ यादव कुल तिलक समान,एम न कीजें रे ॥ एक हांसुं ने बीजी हाण,केम खमीजें रे ॥४॥ इहां वाये जाजो समीर,वीज फबूकेरे ॥बापैयो पीउ पोकारे, हैयंडुं चमके रे ॥ ५ ॥ मर पावे दादुर सोर,नदीयो माती रे॥घन गर्जारवने जोर,फाटे छाती रे॥६॥हरितांशुक पहेर्यां भूमि,नवरस रंगें रे॥वा वलीया नवरस हार,प्रीतम संगें रे॥७॥में पूरण कीधां पाप, तापें दाधी रे ॥ पडे आंसुधार विषादें, वेलडी वाधी रे ॥ ८ ॥ मुने चडावी मेरु शीश, पाडी हेठी रे ॥ केम सहेवाये महाराज, विरह अंगीठी रे ॥९॥ मुने परणी प्राण आधार, संयम लेजो रे ॥ हुं पतिव्रता हुं स्वामी, साथें वहेजो रे ॥ १० ॥ इम आठे भवनी प्रीत, पिउडा वलशे रे ॥ मुज मनना मनोरथ नाथ, पूरण फलशे रे ॥ ११ ॥ हवे चार महाव्रत सा

र, चुंदडी दीधी रे ॥ रंगीली राजुलनारें, प्रेमें लीधी रे ॥ १२ ॥ मैत्र्यादिक नावना चार, चोरी बांधी रे ॥ देइ ध्यानानल सलगाय, कर्म उपाधि रे ॥ १३ ॥ थयो रत्नत्रयी कंसार, एकी नावें रे ॥ आरोगे नर ने नार, शुद्ध स्वनावें रे ॥ १४ ॥ तजी चंचलता त्रिक योग, दंपती मलियां रे॥श्री खिमाविजय जिन नेम, अनुनव कलिया रे ॥ १५ ॥

॥ अथ केशरीथाजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रनुनी मूरति मोहन वेलडी, जी तुमारी मूरति मोहन वेलडी ॥ चालो सखी धुलेवे रे जइयें, प्रनुनी सामरी सूरत ठे सेलडी ॥ जी तु० ॥ १ ॥ केशर चंदन नर्यां रे कचोलां, प्रनुजीनी पूजा करुं सहु पहेलडी ॥ जी तु०॥२॥ जाई जुई वर गुलमरोजी मरुवो, प्रनुजीने पूजी चडाउं चंबेलडी॥जीतु०॥३॥सुर नर मुनिवर जोइने मोह्या, कांइ रूपचंदास गुण वेलडी ॥ जी तु० ॥४॥

॥ अथ उपदेश विषे सद्माय ॥ देशी फतमलनी ॥

॥ पडजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो राउ मोह राव ॥ वालो म्हारो निज घरे नावीयो, एणे परघरे कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ एम कहे सुमति सुजाण ॥ वा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दांत पाडूं रे दूती तणा, पाडोसणनां रे लउं प्राण ॥ जेणें म्हारो जीवन नोलव्यो, लइ नाख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ मायायें मद पाइने, एतो वास्यो पोताने वास ॥ म्हारोने वासो टालीने, एणें मुजने कीधी निराश ॥

॥ वा० ॥ ३ ॥ गुणवंतना गुण गोपवी, गुण हीणा शुं मांभी गोठ ॥ आप स्वरूप न उलखे, एतो पाप नी चलवे पोठ ॥ वा० ॥ ४ ॥ अबुझ साथें धरे आसकी, एतो पूजे न पूज्यना पाय ॥ परम महोदय पामशे, ज्यारें आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादा पास पसाउलें, में तो कुमतिनो पाड्यो कोट ॥ घर आण्यो निज घरधणी, में तो चुकवी शोकनी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ वाचक उदयरतन वदे, जे पूजशे प्रभुना पाय ॥ ते परमपदें पद धारशे, वली संपत्ति लहेशे सवाय ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मजिन स्तवनं ॥

॥ केशर वरणो हो काढ कसुंबो माहारा लाल॥ए देशी ॥

॥ धर्मजिणंदा हो, में तुज बंदा ॥ माहारा लाल ॥ तुज गुण वृंदा हो, गावे इंदा ॥ मा० ॥ शिवतरु कंदा हो, तुं कुलचंदा ॥ मा० ॥ तेज दिणंदा हो, अति आनंदा ॥ मा० ॥ १ ॥ मोहन गारी हो, मूरति तारी ॥ मा० ॥ प्राण पियारी हो, जाउं बलिहारी ॥ मा० ॥ घो शिवनारी हो, रंग करारी ॥ मा० ॥ तें जग तारी हो, वे मुझ वारी ॥ मा० ॥ २ दिल अटकाणो हो, दास कहाणो ॥ मा० ॥ तुं जग राणो हो, सुजश गवाणो ॥ मा० ॥ करुणा आणो हो, सेवा जाणो ॥ मा० ॥ हवे न ताणो हो, मलियो टाणो ॥ मा० ॥ ॥ ३ ॥ नेह नवेली हो, सुमति सहेली ॥ मा० ॥ रंगें खेली हो, थई मुझ बेली ॥ मा० ॥ माया वेली

हो, मूल उखेली ॥ मा० ॥ कुमति अकेली हो, दूरें मेली ॥ मा० ॥ ४ ॥ तुं जिनराया हो, सुजस सवाया ॥ मा०॥ दिलमें आया हो, पाप गमाया ॥ मा०॥ वंछित पाया हो, विमल पसाया ॥ मा० ॥ गुण मन भाया हो, रामें गाया ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवन ॥ होरी खेलेंगे ॥ ए देशी ॥

॥ मन मोहन मल्ली नाथको, जस बोलेंगे ॥ शिव रमणीको रंग, घुंघट पट खोलेंगे ॥ मोह्यो मन घन मोर ज्युं ॥ जस० ॥ अब ओर न चाहुं संग ॥ घुं० ॥ ॥ १ ॥ चिंतामणिकूं पाइकें ॥ ज० ॥ कुण राचे काचे काच ॥ घुं० ॥ को चाहे खर केलिकूं ॥ ज० ॥ तजी सुर कुमरीको नाच ॥ घुं० ॥ २ ॥ बाउलकूं सेवे नहीं ॥ ज० ॥ तजी मधुकर मालती फूल ॥ घुं० ॥ कोमल शय्या छोर कें ॥ ज० ॥ कुण बैठे धरिके शूल ॥ घुं० ॥ ३ ॥ प्रभुकी मूरति मेरे मन वसी ॥ ज० ॥ सो तो विसराइ विसरै न ॥घुं० ॥ दरसन प्रभु मुख देखकें ॥ ज० ॥ हम पावन कीने नैन ॥ घुं० ॥४॥ जनम कृतारथमें कर्यो ॥ ज० ॥ जब पायो ऐसो ईश ॥ घुं० ॥ विमल विजय उवझायको ॥ ज० ॥ एम राम कहे शुभ शीश ॥ घुं० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवनं ॥ राग जंगलो ॥

॥ संयम लेउंगी साथ, पिया में तो संयम लेउंगी ॥ माय बाप मेरे काम न आवे, जूठो ए संसार ॥ पिया० ॥ १ ॥ तोरणसें रथ फेर चलायो, सुण पशु

अन पोकार ॥ पि० ॥ २ ॥ सहसावन जई संयम लीनो, नेम चढे गिरनार ॥ पी० ॥ ३ ॥ मोतन लाल कहे अपने प्रीमसें, उतारो नव पार ॥ पी० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीदेवचंइजी कृत चोवीशी प्रारंजः ॥ तत्र प्रथम श्रीरुषजजिन स्तवनं ॥ निइडी वेरण हुई रही ए देशी ॥

॥ रुषज जिणंदशुं प्रीतडी, किम कीजें हो कहो चतुर विचार ॥ प्रजुजी जइ अलगा वस्या, तिहां किणे नवि हो कोइ वचन उच्चार ॥ १ ॥ रु० ॥ कागल पण पोहोंचे नहि, नवि पोहोंचे हो तिहां को पर धान ॥ जे पोहोंचे ते तुम समो, नवि नांखे हो कोइनुं व्यवधान ॥ २ ॥ रु० ॥ प्रीत करे ते रागीया, जिन वरजी हो तुमें तो वीतराग ॥ प्रीतडी जेह अरागीथी, नेलववी हो लोकोत्तर माग ॥ ३ ॥ रु० ॥ प्रीति अनादिनी विष जरी, ते रीतें हो करवा मुऊ नाव ॥ करवी निर्विष प्रीतडी, किण नांते हो कहो बने ब नाव ॥ ४ ॥ रु० ॥ प्रीति अनंती परथकी, जे तोडे हो ते जोडे एह ॥ परम पुरुषथी रागता, एकत्वता हो दाखी गुण गेह ॥ ५ ॥ रु० ॥ प्रजुजीने अवलं बतां, निज प्रजुता हो प्रगटे गुण राश ॥ देवचंइनी सेवना, आपे मुऊ हो अविचल सुखवास ॥ ६ ॥ रु० ॥

॥ अथ श्रीअजितजिन स्तवनं ॥

॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुऊ अनंत अपार ॥ ते सांजलतां उपनी रे, रुचि तेणें पार उतार ॥ १ ॥

अजित जिन तारजो रे, तारजो दीनदयाल ॥ अजि० ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मलतां कारज नीपजे रे, कर्त्ता तणे प्रयोग ॥१॥ अ०॥ कार्यसिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पद कारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तह नोग ॥ ३ ॥ अ०॥ अजकुल गत केसरी लहे रे, निज पद सिंघ निहाल ॥ तिम प्रभु नक्तें नवि लहे रे, आतम शक्ति संनाल ॥ ४ ॥ अ० ॥ कारण पद कर्त्ता पणे रे, करी आरोप अनेद ॥ निजपद अरथी प्रभुथकी रे, करे अनेक नमेद ॥ ५ ॥ अ० ॥ एहवा परमातम प्रभु रे, परमानंद स्वरूप ॥ स्यादवादसत्ता रसी रे, अमल अखंम अनूप ॥ ६ ॥ अ० ॥ आरोपित सुख नम टल्यो रे, नास्यो अव्याबाध ॥ समभुं अनिलाखीपणुं रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ ॥ ७ ॥ अ० ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक नोक्ता नाव ॥ कारणता कारज दिशा रे, सकल ग्रह्युं निज नाव ॥८ ॥ अ०॥ श्रद्धा नासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्ता रसी रे, जिनवर दरिसण पाम ॥ ए ॥ अ० ॥ तिणे निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरु रे, नाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसंनवजिन स्तवनं ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी॥

॥ श्रीसंनवजिन राजजी रे,ताहरुं अकल स्वरूप॥ जिनवर पूजो ॥ स्वपर प्रकाशक दिनमणि रे, समता

रसनो भूप ॥ जि० ॥ १ ॥ पूजो पूजो रे भविक जिन पूजो, प्रभु पूज्या परमानंद ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ अविसंवाद निमित्त छो रे, जगत जंतु सुखकाज ॥ जि० हेतु सत्य बहुमानथी रे, जिन सेव्यां शिवराज ॥ ॥ जि० ॥ २ ॥ उपादान आतम सही रे, पुष्टालंबन देव ॥ जि० ॥ उपादान कारण पणे रे, प्रगट करे प्रभु सेव ॥ जि० ॥ ३ ॥ कारजगुण कारण पणे रे, कारण कारज अनूप ॥ जि०॥ सकल सिद्धता ताह री रे, माहारे साधन रूप ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक वार प्रभु वंदना रे, आगमरीतें थाय ॥ जि० ॥ कारण सत्यें कार्यनी रे, सिद्धि प्रतीति कराय ॥जि० ॥ ५ ॥ प्रभुपणे प्रभु उलखी रे, अमल विमल गुण गेह ॥ ॥ जि० ॥ साध्यदृष्टि साधकपणे रे, वंदे धन नर तेह ॥ जि० ॥ ६ ॥ जन्म कृतारथ तेहनो रे, दिवस सफल पण तास ॥ जि० ॥ जगतशरण जिन चरणने रे, वंदे धरिय उल्लास ॥ जि० ॥ ७ ॥ निज सत्ता निज भावथी रे, गुण अनंतनुं ठाण ॥ जि० ॥ देवचंद्र जिन राजजी रे, शुद्धसिद्धसुख खाण ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ ब्रह्मचरिज पद पूजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ क्युं जाणुं क्युं बनी आवशे, अभिनंदन रस रीत हो मित्त ॥ पुद्गल अनुभव त्यागथी, करवी जसु परतीत हो मित्त ॥ क्युं० ॥ १ ॥ परमातम परमेश्वरू, वस्तुगतें ते अलिप्त हो मित्त ॥ द्रव्यें द्रव्य मिले

नहीं,जावें तें अन्य अभ्यास हो मित्त ॥ क्युं० ॥ २॥ शुद्ध स्वरूप सनातनो, निर्मल जे निःसंग हो मित्त ॥ आतम विभूति परिणम्यो, न कर ते परसंग हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ पण जाणुं आगम बलें, मलवो तुम प्रभु साथ हो मित्त ॥ प्रभु तो स्वसंपत्तिमयी, शुद्ध स्व रूपनो नाथ हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ पर परिणामि कता अछे, जे तुफ पुद्गल जोग हो मित्त ॥ जड चल जगनी एठनो, न घटे तुफने जोग हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ५॥ शुद्ध निमित्त प्रभु ग्रहो, करी अशुद्ध पर हेय हो मि त्त ॥ अत्मालंबी गुण लही, सहु साधकनो ध्येय हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ जिम जिनवर आलंबनें, वधे सधे एक तान हो मित्त ॥ तिम तिम आत्मालंबनी, ग्रहे स्व रूप निदान हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ७ ॥ स्व स्वरूप एकत्वता, साधे पूर्णानंद हो मित्त ॥ रमे भोगवे आतमा, रत्नत्रयी गुणवृंद हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ अभिनंदन अवलंबने, परमानंद विलास हो मित्त ॥ देवचंद्र प्रभु सेवना, क रि अनुभव अभ्यास हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमतिजिनस्तवनं ॥ कडखानी देशी ॥

॥ अहो सिरी सुमतिजिन शुद्धता तादृरी, स्वगुण पर्याय परिणाम रामी ॥ नित्यता एकता अस्तिता इतरयुत, भोग्यभोगीथको प्रभु अकामी ॥ १ ॥ अ० ॥ उपजे व्यय लहे तहवि तेहवो रहे, गुण प्रमुख बहुलता तहवि पिंमी ॥ आत्मभावें रहे अपरता नवि ग्रहे, लोक प्रदेश मित पण अखंमी ॥ २ ॥

॥ अ० ॥ कार्य कारण पणे परिणमे तहवि ध्रुव, कार्य नेदें करे पण अनेदी ॥ कर्तृता परिणमे नव्यता नवि रमे, सकल वेत्ता थको पण अवेदी ॥ ३ ॥ अ० ॥ शुद्धता बुद्धता देव परमात्मता, सहज निज नाव नोगी अयोगी ॥ स्वपर उपयोगि तादात्म्य सत्तारसी, शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी ॥ ४ ॥ अ० ॥ वस्तु निज परिणते सर्व परिणामकी, एटले कोइ प्रनुता न पामे ॥ करे जाणे रमे अनुनवे ते प्रनु, तत्त्व स्वामित्व शुचि तत्त्व धामे ॥ ५ ॥ अ० ॥ जीव नवि पुग्गली नैव पुग्गल कदा, पुग्गलाधार नहीं तास रंगी ॥ पर तणो ईश नहीं अपर ऐश्वर्यता, वस्तुधर्में कदा न परसंगी ॥ ६ ॥ अ० ॥ संग्रहे नहीं आपे नहीं पर नणी, नवि करे आदरें न पर राखे ॥ शुद्धस्याद्वाद निज नाव नोगी जिके, तेह परनावने केम चाखे ॥ ७ ॥ अ० ॥ ताहरी शुद्धता नास आश्चर्यथी, उपजे रुचि तेणे तत्त्व ईहे ॥ तत्त्वरंगी थयो दोषथी उनग्यो, दोष त्यागे टले तत्त्व लीहे ॥ ८ ॥ अ० ॥ शुद्ध मार्गें वध्यो साध्य साधन सध्यो, स्वामी प्रतिछंदे सत्ता आराधे ॥ आत्म निष्पत्ति तिम साधना नवि टके, वस्तु उत्सर्ग आतमसमाधें ॥ ए ॥ अ० ॥ माहरी शुद्ध सत्तातणी पूर्णता, तेहनो हेतु प्रनु तुंहि साचो ॥ देवचंद्रें स्तव्यो मुनिगणें अनुनव्यो, तत्त्व नक्तें नविक सकल राचो ॥ १० ॥ अ०॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रभजिन स्तवन ॥

॥ हुं तुज आगल शी कहुं केशरीया लाल ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपद्मप्रभ जिन गुणनिधि रे लाल, जग तारक जग दीस रे ॥ वाल्हेसर ॥ जिन उपगारथकी लहे रे लाल, भविजन सिद्धि जगीस रे ॥ वा० ॥ १ ॥ तुझ दरिसण मुझ वालहुं रे लाल, दरिसण शुद्ध पवित्त रे ॥ वा० ॥ दर्शन शब्द नयें करे रे लाल, संग्रह एवं भूत रे ॥ वा० ॥ २ ॥तु० ॥ बीजें वृक्ष अनंतता रे लाल, पसरे भू जल योग रे ॥ वा० ॥ तिम मुझ आतम संपदा रे लाल, प्रगटे प्रभु संयोग रे ॥ वा० ॥ ॥ ३ ॥ तु० ॥ जगत जंतु कारज रुची रे लाल, साधे उदयें भाण रे॥वा०॥ चिदानंद सुविलासता रे लाल, वाधे जिनवर झाण रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ तु० ॥ लब्धि सिद्धि मंत्राक्षरें रे लाल, उपजे साधक संग रे ॥ वा०॥ सहज अध्यातम तत्त्वता रे लाल, प्रगटे तत्त्वी रंग रे ॥ वा०॥ ५ ॥ तु०॥ लोह धातु कंचन हुवे रे लाल, पारस फरसन पामि रे ॥ वा० ॥ प्रगटे अध्यातम दिशा रे लाल, व्यक्त गुणी गुण ग्राम रे ॥ वा० ॥६॥ ॥ तु० ॥ आत्मसिद्धि कारज भणी रे लाल, सहज निर्यामक हेतु रे ॥ वा० ॥ नामादिक जिनराजनां रे लाल, भवसागरमांहे सेतु रे ॥ वा० ॥७॥ तु० ॥ थंभन इंद्रिय योगनो रे लाल, रक्त वरण गुण राय रे ॥ वा० ॥ देवचंद्र वृंदें स्तव्यो रे लाल, आप अवर्ण अकाय रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ तु० ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तम श्रीसुपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ हो सुंदर तप सरिखो, जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसुपास आनंदमें,गुण अनंतनो कंद हो ॥ जिनजी ॥ ज्ञानानंदें पूरणो, पवित्र चारित्रानंद हो ॥ ॥ जि० ॥ १ ॥ श्री० ॥ संरक्षण विण नाथ छो, द्रव्य विना धनवंत हो ॥ जि० ॥ करता पद किरिया विना, संत अजेय अनंत हो ॥ जि० ॥ २ ॥ श्री० ॥ अगम अगोचर अमर तुं, अन्वय ऋद्धि समूह हो ॥ जि० ॥ वर्ण गंध रस फरस विणु, निज जोक्ता गुण व्यूह हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अक्षय दान अचिंतना, लाज अयत्तें जोग हो ॥ जि० ॥ वीर्य शक्ति अप्रयासता, शुद्ध स्वगुण उपजोग हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ एकांतिक आत्यंतिको, सहज अकृत स्वाधीन हो ॥ ॥ जि० ॥ निरुपचरित निर्द्वंद्व सुख, अन्य अहेतुक पीन हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ एक प्रदेशें ताहरे, अव्याबाध समाय हो ॥ जि० ॥ तसु पर्याय अविजागता, सर्वाकाश न माय हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्री०॥ एम अनंत गुणनो धणी, गुण गुणनो आनंद हो ॥ ॥ जि० ॥ जोग रमण आस्वाद युत, प्रजु तुं परमानंद हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अव्याबाध रुचि थई, साधे अव्याबाध हो ॥ जि० ॥ देवचंद्र पद ते लहे, परमानंद समाध हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टम श्रीचंद्रप्रजजिनस्तवनं ॥

॥ श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीचंद्रप्रजजिनपदसेवा, हेवायें जे हलिया जी ॥ आतम गुण अनुजवथी मलिया, ते जवजयथी टलिया जी ॥ १ ॥ श्री० ॥ द्रव्य सेव वंदन नमनादिक, अर्चन वलि गुणग्रामो जी ॥ जाव अजेद थावानी ईहा, परजावें निःकामो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ ॥ श्री० ॥ जावसेव अपवादें नैगम, प्रजुगुणने संकल्पें जी ॥ संग्रह सत्ता तुल्यारोपें, जेदाजेद विकल्पें जी ॥ ३ ॥ श्री० ॥ व्यवहारें बहु मान ज्ञान निज, चरणे जिनगुणरमणा जी ॥ प्रजु गुण आलंबी परिणामें, रुजु पद ध्यानस्मरणा जी ॥ ४ ॥ ॥ श्री० ॥ शब्दें शुक्लध्यानारोहण, समजिरूढ गुण दशमे जी ॥ बीअ शुकल अविकल्प एकत्वें, एवंजूत ते अममें जी ॥ ५ ॥ श्री० ॥ उत्सर्गे समकित गुण प्रगट्यो, नैगम प्रजुता अंशें जी ॥ संग्रह आतम सत्तालंबी, मुनिपद जाव प्रशंसे जी ॥ ६ ॥ श्री० ॥ रुजुसूत्रें जे श्रेणिपदस्थें, आतमशक्ति प्रकाशे जी ॥ यथाख्यात पद शब्द स्वरूपें, शुद्ध धर्म उल्लासे जी ॥ ॥ ७ ॥ श्री० ॥ जाव सयोगि अयोगि शैलेसें, अंतिम दुग नय जाणो जी ॥ साधनतायें निज गुणव्यक्ति, तेह सेवना वखाणो जी ॥ ८ ॥श्री०॥ कारण जाव तेह अपवादें, कार्यरूप उत्सर्गे जी ॥ आत्मजाव ते जाव द्रव्य पद, बाह्य प्रवृत्ति निसर्गे जी ॥ ९ ॥

॥ श्री० ॥ कारण नाव परंपर सेवन, प्रगटे कारज नावो जी ॥ कारज सिद्धें कारणता व्यय, शुचि परिणामिक नावो जी ॥ १० ॥ श्री० ॥ परम गुणी सेवन तन्मयता, निश्चय ध्यानें ध्यावे जी ॥ शुद्धातम अनुनव आस्वादी, देवचंद्र पद पावे जी ॥ ११ ॥ श्री०॥

॥ अथ नवम श्रीसुविधिजिनस्तवनं ॥

॥ थारा महेला ऊपर मेह, जरूखे वीजली ॥

॥ हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ दीठो सुविधि जिणंद, समाधिरसें नस्यो हो लाल ॥ समाधिरसें नस्यो ॥ नास्युं आत्मस्वरूप, अनादिनो वीसस्यो हो लाल ॥ अ० ॥ सकल विनाव उपाधि, थकी मन उसस्यो हो लाल ॥ थ० ॥ सत्ता साधन मार्गे, नणी ए संचस्यो हो लाल ॥ न० ॥ १ ॥ तुम प्रन्नु जाणंग रीति, सरव जग देखता हो लाल ॥ स० ॥ निज सत्तायें शुद्ध, सहुने लेखता हो लाल ॥ स० ॥ पर परिणति अद्वेष,पणें उवेखता हो लाल ॥ पणें० ॥ नोग्यपणें निज शक्ति, अनंत गवेखता हो लाल ॥ अ० ॥ २ ॥ दानादिक निज नाव, हता जे परवशा हो लाल ॥ हता० ॥ ते निजसंमुख नाव, ग्रही लही तुऊ दशा हो लाल ॥ ग्र० ॥ प्रन्नुनो अद्भुत योग, स्वरूप तणी रसा हो लाल ॥ स्व० ॥ नासे वासे तास, जास गुण तुऊ जिसा हो लाल ॥ जा० ॥ ३ ॥ मोहादिकनी घूमि, अनादिनी ऊतरे हो लाल ॥ अ० ॥ अमल अखंम अलिप्त, स्वनावज सांनरे

हो लाल ॥ स्व० ॥ तत्त्व रमण शुचि ध्यान, जणी जे आदरे हो लाल ॥ ज० ॥ ते समतारस धाम, स्वामी मुझ वरे हो लाल ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ प्रजु बो त्रिजुवन नाथ, दास हुं ताहरो हो लाल ॥ दा० ॥ करुणानिधि अजिलाख, अबे मुऊ ए करो हो लाल ॥ अ० ॥ आतम वस्तु स्वजाव, सदा मुऊ सांजरो हो लाल ॥स०॥ जासन वासन एह, चरणध्यानें धरो हो लाल ॥ च० ॥ ५ ॥ प्रजु मुझाने योग, प्रजु प्रजुता लखे हो लाल ॥ प्र० ॥ इव्य तणे साधर्म्य, स्वसंपति उलखे हो लाल ॥ स्व० ॥ उलखतां बहुमान. सहित रुचि पण वधे हो लाल ॥ स० ॥ रुचि अनुयायी वीर्य. चरण धारा सधे हो लाल ॥ च०॥ ६ ॥ क्षायोपशमिक गुण सर्व, थया तुऊ गुण रसी हो लाल ॥ थ०॥ सत्ता साधन शक्ति, व्यक्तता उल्लसी हो लाल ॥ व्यं० ॥ हवे संपूरण सिद्ध, तणी शी वार बे हो लाल ॥ त०॥ देवचंद जिनराज, जगत आधार बे हो लाल ॥ जग० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दशम श्रीशीतलजिनस्तवनं ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ शीतलजिनपति प्रजुता प्रजुनी, मुऊथी कहिय न जाय जी ॥ अनंतता निर्मलता पूरणता, ज्ञान विना न जणाय जी ॥ १ ॥ शी० ॥ चरम जलधि जल मिणे अंजली, गति जीपे अति वाय जी ॥ सर्व आकाश उलंघे चरणें, पण प्रजुता न गणाय जी ॥ ॥ २ ॥ शी० ॥ सर्व इव्य प्रदेश अनंता, तेहथी गु

ए पर्याय जी ॥ तास वर्गथी अनंत गुणुं प्रभु,केवल ज्ञान कहाय जी ॥ ३ ॥ शी० ॥ केवल दर्शन एम अनंतो,ग्रहे सामान्य स्वभाव जी ॥ स्वपर अनंतथी चरण अनंतो, स्वरमण संवर भाव जी ॥ ४ ॥ शी०॥ द्रव्यक्षेत्र ने काल भाव गुण,राजनीति ए चार जी॥ त्रास विना जड चेतन प्रभुनी,कोइ न लोपे कार जी ॥ ५ ॥ शी० ॥ शुद्धाशय थिर प्रभु उपयोगें, जे समरे तुझ नाम जी ॥ अव्याबाध अनंतो पामे, परम अमृत सुख धाम जी ॥ ६ ॥ शी० ॥ आणा ईश्वरता निभयता,निर्वांछकता रूप जी ॥ भाव स्वाधीन ते अव्यय रीतें,इम अनंत गुण भूप जी ॥ ७ ॥ शी० ॥ अव्याबाध सुख निर्मल तेतो, करण ज्ञानें न जणाय जी ॥ तेहज एहनो जाणंग भोक्ता, जे तुम सम गुण राय जी ॥ ८ ॥ शी० ॥ एम अनंत दानादिक निजगुण, वचनातीत पंडूर जी ॥ वासन भासन भावें दुर्लभ, प्रापती तो अति दूर जी ॥ ए ॥ शी०॥ सकल प्रत्यक्ष पणे त्रिभुवन गुरु, जाणुं तुझ गुण ग्राम जी ॥ बीजुं कांइ न मागुं स्वामि,एहिज छे मुझ काम जी॥ १०॥शी० एम अनंत प्रभुता सर्दहतां,अर्चे जे प्रभु रूप जी॥देवचंद्र पभुता ते पामे,परमानंद स्वरूप जी॥ ११॥शी०॥

॥ अथ एकादश श्रीश्रेयांसजिनस्तवनं ॥

॥ प्राणी वाणी जिनतणी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीश्रेयांस प्रभु तणो, अति अद्भुत सहजानंद रे ॥ गण एकविध त्रिक परणम्यो, एम गुण अनंत

नो वृंद रे ॥ १ ॥ मुनिचंद जिणंद अमंद दिणंद परें, नित्य दीपतो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी ॥ निज ज्ञानें करी ज्ञेयनो, ज्ञायक ज्ञाता पद ईश रे ॥ देखे निज दर्शन करी, निज दृश्य सामान्य जगीश रे ॥ ॥ २ ॥ मु० ॥ निज रम्यें रमण करो, प्रभु चारित्रें रमता राम रे ॥ भोग अनंतन भोगवो, भोगें तेणें भोक्ता स्वाम रे ॥ ३ ॥ मु० ॥ देय दान नित दीजते, अति दाता प्रभु स्वयमेव रे ॥ पात्र तुम्हें निज शक्तिना, ग्राहक व्यापकमय देव रे ॥ ४ ॥ मु० ॥ परिणामिक कारज तणो, करता गुण करणे नाथ रे ॥ अक्रिय अक्षय स्थितिमयी, निकलंक अनंती आथ रे ॥ ॥ ५ ॥ मु० ॥ परिणामिक सत्ता तणो, आविर्भाव विलास निवास रे ॥ सहज अकृत्रिम अपराश्रयी, निर्विकल्प ने निःप्रयास रे ॥६॥मु० ॥ प्रभु प्रभुता संभारतां, गातां करतां गुणग्राम रे ॥ सेवक साधनता वरे, निज संवर परिणति पाम रे ॥७॥मु०॥ प्रगट तत्त्वता ध्यावतां, निज तत्त्वनो ध्याता थाय रे ॥ तत्त्वरमण एकाग्रता, पूरण तत्त्वें एह समाय रे ॥ ८ ॥ मु० ॥ प्रभु दीठे मुझ सांभरे, परमातम पूर्णानंद रे ॥ देवचंद्र जिन राजना, नित्य वंदो पय अरविंद रे ॥९॥मु०॥

॥ अथ द्वादश श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनं ॥

॥ पंथीडो निहाळुं रे बीजा जिनतणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पूजना तो कीजें रे बारमा जिन तणी रे, जसु प्रगट्यो पूज्य स्वभाव ॥ परकृत पूजा रे जे इच्छे नहीं

रे, साधक कारज दाव ॥ १ ॥ पू० ॥ द्रव्यथी पूजा रे कारण नावनुं रे, नाव प्रशस्त ने शुद्ध ॥ परम इष्ट वल्लन त्रिनुवन धणी रे, वासुपूज्य स्वयंबुद्ध ॥ २ ॥ पू० ॥ अतिशय महिमा रे अति उपगारता रे, निर्मल प्रनु गुण राग ॥ सुरमणि सुरघट सुरतरु तुं बते रे, जिन रागी महानाग ॥ ३ पू० ॥ दर्शन ज्ञानादिक गुण आत्मना रे, प्रनु प्रनुता लय लीन ॥ शुद्ध स्वरूपी रूपें तन्मयी रे, तसु आस्वादन पीन ॥ ॥ ४ ॥ पू० ॥ शुद्ध तत्त्व रस रंगी चेतना रे, पामे आत्म स्वनाव ॥ आत्मालंबी निज गुण साधतो रे, प्रगटें पूज्य स्वनाव ॥ ५ ॥ पू० ॥ आप अकर्त्ता सेवाथी हुवे रे, सेवक पूरण सिद्धि ॥ निज धन न दीये पण आश्रित लहे रे, अक्षय अक्षर ऋद्धि ॥ ६ ॥ पू० ॥ जिनवर पूजा रें ते निज पूजना रे. प्रगटे अन्वय शक्ति ॥ परमानंद विलासी अनुनवे रे, देवचंद्र पद व्यक्ति ॥ ७ ॥ पू० ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशश्री विमलजिनस्तवनं ॥

॥ दास अरदास शी परें करे जी ॥ ए देशी ॥

॥ विमलजिन विमलता ताहरी जी, अवर बीजे न कहाय ॥ लघु नदी जिम तिम लंघीयें जी, स्वयंनू रमण न तराय ॥ १ ॥ वि० ॥ सयल पुढवी गिरि जल तरुजी, कोइ तोले एक हाथ ॥ तेह पण तुऊ गुण गण नणी जी, नांखवा नही समरथ ॥ २ ॥ वि० सर्व पुजल नन धर्मना जी, तेम अधर्म प्रदेश ॥

तास गुण धर्म पज्जव सहु जी, तुज गुण एक तणो लेश ॥ ३ ॥ वि० ॥ एम निज नाव अनंतनी जी, अस्तिता केटली थाय ॥ नास्तिता स्वपर पद अस्तिता जी, तुज समकाल समाय ॥ ४ ॥ वि० ॥ ताह्रा शुद्ध स्वन्नावने जी, आदरे धरी बहु मान ॥ तेह्ने तेह्नीज नीपजे जी, ए कोइ अद्भुत तान ॥ ५ ॥ वि० ॥ तुम्ह प्रनु तुम्ह तारक विनुजी, तुम समो अवर न कोय ॥ तुम दरिसणथकी हूं तस्यो जी, शुद्ध आलंबन होय ॥ ६ ॥ वि० ॥ प्रनुतणी विमलता उल्लखी जी, जे करे थिर मन सेव ॥ देवचंद्र पद ते लहे जी, विमल आनंद स्वयमेव ॥ ७॥ वि० ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दश श्रीअनंतजिन स्तवनं ॥

॥ दीठी हो प्रनु दीठी जगगुरु तुज ॥ ए देशी ॥

॥ मूरति हो प्रनु मूरति अनंत जिणंद, ताह्ररी हो प्रनु ताह्ररी मुज नयणे वसी जी ॥ समता हो प्रनु समता रसनो कंद, सहेजें हो प्रनु सहेजें अनुनव रस लसी जी ॥ १ ॥ नवदव हो प्रनु नवदव तापित जीव, तेह्नने हो प्रनु तेह्नने अमृतघनसमी जी ॥ मिथ्याविष हो प्रनु मिथ्याविषनी खीव, हरवा हो प्रनु हरवा जांगुलि मन रमी जी ॥ २॥ नाव हो प्रनु नाव चिंतामणि एह, आतम हो प्रनु आतम संपति आपवा जी ॥ एह्निज हो प्रनु एह्निज शिवसुखगेह, तत्त्व हो प्रनु तत्वालंबन थापवा जी ॥ ३ ॥ जाये हो प्रनु जाये आश्रव चाल, दीठे हो प्रनु दीठे संवरता वधे

जी ॥ रत्न हो प्रनु रत्नत्रयी गुणमाल, अध्यातम हो प्रनु अध्यातम साधन सधे जी ॥ ४ ॥ मीठी हो प्रनु मीठी सूरत तुऊ, दीठी हो प्रनु दीठी रुचि बहु मानथी जी ॥ तुऊ गुण हो प्रनु तुऊ गुण नासन युक्त, सेवे हो प्रनु सेवे तसु नव नय नथी जी ॥ ५ ॥ नामें हो प्रनु नामें अद्भुत रंग, ठवणा हो प्रनु ठवणा दीठे उल्लसें जी ॥ गुण आस्वाद हो प्रनु गुण आस्वाद अनंग, तन्मय हो प्रनु तन्मयतायें जे धसे जी ॥ ६ ॥ गुणअनंत हो प्रनु गुणअनंतनो वृंद, नाथ हो प्रनु नाथ अनंतने आदरे जी ॥ देवचंद्र हो प्रनु देवचंद्रने आनंद, परम हो प्रनु परम महोदय ते वरे जी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचदश श्रीधर्मजिनस्तवनं ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म जगनाथनो धर्म शुचि गाइयें, आपणो आतमा तेहवो नाविये ॥ जाति जसु एकता तेह पलटे नहिं, शुद्ध गुण पऊवा वस्तु सत्तामयी ॥ १ ॥ नित्य निरवयव वलि एक अक्रिय पणे, सर्व गत तेह सामान्य नावें नणे ॥ तेहथी इतर सावयव विशेषता, व्यक्तिनेदें पडे जेहनी नेदता ॥ २ ॥ एकता पिंमने नित्य अविनाशता, अस्ति निज ऋद्धिथी कार्य गत नेदता ॥ नाव श्रुत गम्य अनिलाप्य अनंतता, नव्य पर्यायनी जे परावर्त्तता ॥ ३ ॥ क्षेत्र गुण नाव अविनाग अनेकता, नाश उत्पाद अनित्य पर नास्तिता ॥ क्षेत्र व्याप्यत्व अनेद अव्यक्तता, वस्तु

ते रूपथी नियत अनव्यता ॥ ४ ॥ धर्म प्रागभावता सकल गुण शुद्धता, भोग्यता कर्तृता रमण परिणामता ॥ शुद्ध स्वप्रदेशता तत्त्व चैतन्यता, व्याप्य व्यापक तथा ग्राह्य ग्राहक गता ॥ ५ ॥ संग परिहारथी स्वामी निज पद लह्युं, शुद्ध आत्मिक आनंद पद संग्रह्युं ॥ जहवि परभावथी हुं भवोदधि वस्यो, परतणो संग संसारतायें ग्रस्यो ॥ ६ ॥ तहवि सत्ता गुणें जीव ए निर्मलो, अन्य संश्लेष जिम फिटक नवि शामलो ॥ जे परोपाधिथी दुष्ट परिणति ग्रही, भाव तादात्म्यमां माहरुं ते नहीं ॥ ७ ॥ तिणे परमात्म प्रभु भक्ति रंगी थई, शुद्ध कारणरसें तत्त्व परिणति मयी॥ आत्मग्राहक थये तजे पर ग्रहणता, तत्त्व भोगी थये टले परभोग्यता ॥ ८ ॥ शुद्ध निःप्रयास निजभाव भोगी यदा, आत्मक्षेत्रे नही अन्य रक्षण तदा ॥ एक असहाय निस्संग निर्द्वंद्वता,शक्ति उत्सर्गनी होय सहु व्यक्तता॥९॥तेणे मुझ आतमा तुझथकी नीपजे, माहरी संपदा सकल मुझ संपजे॥ तिणे मन मंदिरें धर्म प्रभु ध्याइयें,परम देवचंद्र निज सिद्धि सुख पाईयें॥ १०॥

॥ अथ षोडश श्रीशांतिजिन स्तवनं ॥

माला किहांछे रे ॥ एदेशी ॥

॥ जगत दिवाकर जगत कृपानिधि, वाल्हा मारा समवसरणमां बेठा रे ॥ चउमुख चउविह धर्म प्रकासे, ते में नयणें दीठा रे ॥ १ ॥ भविक जन हरखो रे, निरखो शांतिजिणंद ॥ भ० ॥ उपशमरसनो कंद, नहिं

इण सरिखो रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रातिहारज अतिश
य शोजा ॥ वा० ॥ ते तो कहिय न जावे रे ॥ बूक
बालकथी रवि करजरनुं, वर्णन केणि परें आवे रे ॥
॥ २ ॥ ज० ॥ वाणी गुण पांत्रीश अनोपम ॥ वा० ॥
अविसंवाद सरूपें रे ॥ जव डुख वारण शिव सुख
कारण, सूधो धर्म प्ररूपे रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ दक्षिण प
श्चिम उत्तर दिशि मुख ॥ वा० ॥ ठवणाजिन उपगा
री रे ॥ तसु आलंबन लहिय अनेकें, तिहां थया स
मकितधारी रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ खट नय कारय रूपें ठ
वणा ॥ वा० ॥ सग नय कारण ठाणी रे ॥ निमित्त
समान थापना जिन जी, ए आगमनी वाणी रे ॥ ५ ॥
॥ ज० ॥ साधक तीन निक्षेपा मुख्य ॥ वा० ॥ जे वि
णु जाव न लहीयें रे ॥ उपगारी डुग जाष्यें जांख्या,
जाव वंदकनो ग्रहीयें रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ ठवणा समव
सरणें जिनसेंती ॥ वा० ॥ जो अजेदता वाधी रे ॥
ए आतमना स्वस्वजाव गुण, व्यक्त योग्यता साधी रे
॥ ७ ॥ ज० ॥ जलुं थयुं में प्रजु गुण गाया ॥ वा० ॥
रसनानुं फल लीधो रे ॥ देवचंद कहे माहरा मननो
सकल मनोरथ सीधो रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तदश श्रीकुंथुजिनस्तवनं ॥ चरम
जिनेसरू ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरण बेसी करी रे, बारह परखद मांहि ॥
वस्तु स्वरूप प्रकाशता रे, करुणाकर जग नाहो रे
॥ १ ॥ कुंथुजिनेसरू ॥ निर्मल तुज मुख वाणी रे, जे श्रव

एें सुणे॥तेह्विज गुणमणि खाणी रे॥कुं०॥ए आंकणी॥ गुण पर्याय अनंतता रे, वली स्वन्नाव अगाह ॥ नय गम नंग निक्षेपना रे, हेयादेय प्रवाहो रे ॥ २ ॥कुं० ॥ कुंथुनाथ प्रन्नु देशना रे, साधन साधक सिद्धि ॥ गौण मुख्यता वचनमां रे, ज्ञान ते सकल समृद्धि रे॥ ३॥ ॥ कुं० ॥ वस्तु अनंत स्वन्नाव बे रे, अनंत कथक त सुं नाम ॥ ग्राहक अवसर बोधथी रे, कहेवे अर्पित कामो रे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ शेष अनर्पित धर्मने रे, सापे क्ष श्रद्धाबोध ॥ उन्नय रहित नासन हुवे रे, प्रगटे के वल बोधो रे ॥ ५ ॥ कुं०॥ बति परणति गुण वर्त्तना रे, नासन नोग आनंद ॥ समकालें प्रन्नु ताहरे रे, र म्य रमण गुण वृंदो रे ॥ ६ ॥ कुं० ॥ निजन्नावें शी अस्तिता रे, परनास्तित्व स्वन्नाव ॥ अस्तिपणे ते नास्तितता रे, शीय ते उन्नय स्वन्नावो रे॥ ७ ॥ कुं० ॥ अस्ति स्वन्नाव जे आपणो रे, रुचि वैराग्यसमेत ॥ प्रन्नु सन्मुख वंदन करी रे, मागिश आतमहेतो रे ॥ ८ ॥ कुं० ॥ अस्ति स्वन्नाव रुचि थई रे, ध्यातो अस्ति स्वन्नाव ॥ देवचंद्र पद ते लहे रे, परमानंद ज मावो रे ॥ ए ॥ कुं० ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टादश श्रीअरजिनस्तवनं ॥ राम चंद्रके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमो श्री अरनाथ, शिवपुर साथ खरो री ॥ त्रिन्नुवन जन आधार, नव निस्तार करो री ॥१॥ क र्ता कारण योग, कारज सिद्धि लहे री ॥ कारण चार

अनूप, कार्यार्थि तेह ग्रहे री ॥२॥ जे कारण ते कार्य, थाए पूर्ण पदें री ॥ उपादान ते हेतु, माटी घट ते वदे री ॥ ३ ॥ उपादानथी भिन्न, जे विणु कार्य न थाये ॥ न हुवे कारज रूप, कर्त्ताने व्यवसाये ॥ ४ ॥ कारण तेंह निमित्त, चक्रादिक घट भावें ॥ कार्य तथा समवाय, कारण नियत ने दावे ॥ ५ ॥ वस्तु अभेद स्वरूप, कार्यपणुं न ग्रहे री ॥ ते असाधारण हेतु, कुंभें स्थास लहे री ॥ ६ ॥ जेहनो नवि व्यापार, भिन्न नियत बहुभावी ॥ भूमि काल आकाश, घट कारण सद्भावी ॥ ७ ॥ एह अपेक्षा हेतु, आगममांहि कह्यो री ॥ कारण पद उतपन्न, कार्य थये न लह्यो री ॥८॥ कर्त्ता आतम द्रव्य, कारज सिद्धि पणो री ॥ निज सत्तागत धर्म, ते उपादान गणो री ॥ ९ ॥ योग समाधि विधान, असाधारण तेह वदे री ॥ विधि आचरणा भक्ति, जिणे निज कार्य सधे री ॥ १० ॥ नरगति पढम संघयण, तेंह अपेक्षा जाणो ॥ निमित्ताश्रित उपादान, तेहने लेखे आणो ॥११॥ निमित्त हेतु जिनराज, समता अमृत खाणी ॥ प्रभु अवलंबन सिद्धि, नियमा एह वखाणी ॥१२॥ पुष्ट हेतु अरनाथ, तेहने गुणथी हलियें ॥ रीझ भक्ति बहुमान, भोग ध्यानथी मलियें ॥ १३ ॥ मोहोटाने उत्संग, बेठाने शी चिंता ॥ तिम प्रभु चरण पसाय, सेवक थया निचिंता ॥ १४ ॥ अर प्रभु प्रभुता रंग, अंतर शक्ति विकासी ॥ देवचंद्रने आनंद, अक्षय भोग विलासी ॥ १५ ॥ इति॥

॥ अथ एकोनविंश श्रीमल्लिजिनस्तवनं ॥ देखी कामिनी दोय, के कामें व्यापीयो रे के का० ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिनाथ जगनाथ, चरण युग ध्याईयें रे ॥ ॥ च० ॥ शुद्धातम प्राग्नाव, परम पद पाईयें रे ॥ प०॥ साधक कारक षट्क, करे गुण साधना रे ॥ क०॥ तेह्जि शुद्ध स्वरूप, थाये निराबाधना रे ॥ था० ॥ ॥ १ ॥ कर्त्ता आतम द्रव्य, कारज निज सिद्धता रे ॥ ॥ का० ॥ उपादान परिणाम, प्रयुक्त ते करणता रे ॥ ॥ प्र०॥ आतम संपद दान, तेह संप्रदानता रे ॥ ते०॥ दाता पात्रने देय, त्रिन्नाव अन्नेदता रे ॥ त्रि० ॥ २ ॥ स्वपर विवेचन करण, तेह अपादानथी रे ॥ ते० ॥ सकल पर्याय आधार, संबंध आस्थानथी रे ॥ सं०॥ बाधक कारक नाव, अनादि निवारवा रे ॥अ० ॥ साधकता अवलंबी, तेह समारवा रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ शुद्ध पणे पर्याय, प्रवर्त्तन कार्यमें रे ॥ प्र० ॥ कर्त्तादिक परिणाम, ते आतम धर्ममें रे ॥ ते०॥ चेतन चेतन नाव, करे समवेतमें रे ॥ क० ॥ सादि अनंतो काल, रहे निज खेतमें रे ॥ र० ॥ ४ ॥ परकर्तृत्व स्वन्नाव, करे तां लगि करे रे ॥ क० ॥ शुद्ध कार्य रुचि नास, थये नवि आदरे रे ॥ थ० ॥ शुद्धातम निज कार्य, रुचि कारक फिरे रे ॥ रु० ॥ तेह्जि मूल स्वन्नाव, ग्रहे निज पद वरे रे ॥ ग्र० ॥ ५ ॥ कारण कारज रूप, अछे कारक दशा रे ॥ अ० ॥ वस्तु प्रगट पर्याय, एह मनमें वस्या रे ॥ ए० ॥ पण शुद्धसरूप ध्यान, ते

चेतनता ग्रहे रे ॥ ते० ॥ तव निज साधक जाव, सक ल कारक लहे रे ॥ स० ॥ ६ ॥ माहरूं पूर्णानंद, प्र गट करवा जणी रे ॥ प्र० ॥ पुष्टालंबन रूप, सेव प्रजु जी तणी रे ॥ से० ॥ देवचंद जिनचंद, जगति मनमें धरो रे ॥ ज० ॥ अव्याबाध अनंत, अक्षय पद आद रो रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ विश श्रीमुनिसुव्रतजिनस्तवनं ॥ उलंगडी उलं
गडी सुहेली हो श्रीश्रेयांसनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ उलंगडी उलंगडी तो कीजें श्रीमुनिसुव्रतस्वामि नी रे, जेहथी निज पद सिद्धि ॥ केवल केवल ज्ञा नादिक गुण उल्लसे रे, लहीयें सहज समृद्धि ॥ १ ॥ ॥ उ० ॥ उपादान उपादान निज परिणति वस्तुनी रे, पण कारण निमित्त आधीन ॥ पुष्ट अपुष्ट डुविध ते उपदिस्यो रे, ग्राहक विधि आधीन ॥ २ ॥ उ० ॥ सा ध्य साध्य धर्म जेमांही हुवे रे, ते निमित्त अति पुष्ट ॥ पुष्प पुष्पमांहि तिल वासक वासना रे, नवि प्रध्वंसक डुष्ट ॥ ३ ॥ उ० ॥ दंम दंम निमित्त अपुष्ट घडा त णो रे, नवि घटता तसु मांहि ॥ साधक साधक प्र ध्वंसकता अछे रे, तिणे नही नियत प्रवाह ॥ ४ ॥ ॥ उ० ॥ खट कारक खट कारक ते कारण कार्यनां रे, जे कारण स्वाधीन ॥ ते कर्त्ता ते कर्त्ता सहु कारक ते वसु रे, कर्म ते कारण पीन ॥ ५ ॥ उ० ॥ कारण कारण संकल्पें कारक दशा रे, छति सत्ता सदजाव ॥ अथवा अथवा तुल्य धर्मने जोयवे रे, साध्यारोपण दाव ॥ ६ ॥

॥ उ० ॥ अतिशय अतिशय कारण कारक करणता रे, निमित्त अने उपादान ॥ संप्रदान संप्रदान कारण पद जवनथी रे, कारण व्यय अपादान ॥ ७ ॥ ॥ उ० ॥ जवन जवन व्यय विणु कारज नवि हुवे रे, जिम दृषदें न घटत्व ॥ शुद्धाधार शुद्धाधार स्वगुणनुं द्रव्य छे रे, सत्ताधार सुतत्त्व ॥ ८ ॥ उ० ॥ आतम आतम कर्त्ता कारज सिद्धता रे, तसु साधन जिनराज ॥ प्रजु दीठे प्रजु दीठे कारज रुचि उपजे रे, प्रगटे आत्म समाज ॥ ए ॥ उ० ॥ वंदन वंदन सेवन नमन वलि पूजना रे, समरण स्तवन वली ध्यान ॥ देवचंद देवचंद कीजें जिनराजनी रे, प्रगटे पूर्ण निधान ॥ १० ॥ उ० ॥ इति ॥

॥ अथ एकविंश श्रीनमिजिन स्तवनं ॥ पीछोलारी पाल, उजा दोय राजवी रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीनमिजिनवर सेव, घनाघन ऊनम्यो रे ॥घ०॥ दीठां मिथ्यारोर, जविक चित्तथी गम्यो रे ॥ ज० ॥ शुचि आचरणा रीति ते, अत्र वधे वडां रे ॥ ते० ॥ आतम परिणति शुद्ध,ते वीज ऊबूकडा रे॥ ते वी०॥१ वाजे वाय सुवाय, ते पावन जावना रे ॥ ते० ॥ इंद्रधनुष त्रिक योग, ते जक्ति इक मना रे ॥ ते० ॥ निर्मल प्रजु स्तव घोष, ध्वनि घनगर्जना रे ॥ ध्व० ॥ तृष्णा ग्रीषम काल, तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥ २ ॥ शुज लेश्यानी आलि, ते बगपंकति बनी रे ॥ ते० ॥ श्रेणी सरोवर हंस, वसे शुचि गुण मुनी रे ॥ व० ॥

चउगति मारग बंध, नविक जन घर रह्या रे ॥ न० ॥ चेतन समता संग, रंगमें उमह्या रे ॥ रं० ॥ ३ ॥ सम्यक् दृष्टि मोर, तिहां हरखे घणुं रे ॥ ति० ॥ देखी अद्भुत रूप, परम जिनवर तणुं रे ॥ प० ॥ प्रनुगुण नो उपदेश, ते जलधारा वही रे ॥ ते० ॥ धरम रुचि चित्त नूमि, मांहि निश्चल रही रे ॥ मां० ॥ ४ ॥ चातक श्रमण समूह, करे तव पारणो रे ॥ क० ॥ अनुनव रस आस्वाद, सकल दुःख वारणो रे ॥ स० ॥ अशुनाचार निवारण, तृण अंकूरता रे ॥ तृ० ॥ विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ ते० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत धान्य, तणां कर्षण वध्यां रे ॥ त० ॥ साध्य नाव निज थापी, साधनताएं सध्या रे ॥ क्षायिक दरिसण ग्यान, चरण गुण उपना रे ॥ च० ॥ आदिक बहुगुण सस्य, आतम घर नीपना रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्रनुदरिसण महामेह, तणे परवेशमें रे ॥ त० ॥ परमानंद सुनिक्ष, थया मुझ देशमें रे ॥ थ० ॥ देवचंद्र जिनचंद्र, तणो अनुनव करो रे ॥ त० ॥ सादि अनंतो काल, आतम सुख अनुसरो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वाविंशश्रीनेमनाथजिन स्तवनं ॥

॥ पद्मप्रनजिन जइ अलगा वस्या ॥ ए देशी ॥

॥ नेमजिणेसर निज कारज कर्युं, गंम्यो सर्व विनावो जी ॥ आतमशक्ति सकल प्रगटी करी, आस्वाद्यो निजनावो जी ॥ १ ॥ ने० ॥ राजुल नारी रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतो जी ॥ उत्त

म संगें रे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतो जी ॥ २ ॥ ने० ॥ धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजाती अग्राह्यो जी ॥ पुजल ग्रहवे रे कर्मकलंकता, वाधे बाधक बाह्यो जी ॥३॥ ने०॥ रागी संगें रे रागदशा वधे, थाये तिणे संसारो जी ॥ नीरागीथी रे रागनुं जोडवुं, लहीयें नवनो पारो जी ॥ ४ ॥ ने० ॥ अप्रशस्तता रे टालि प्रशस्तता, करतां आश्रव नासे जी ॥ संवर वाधे रे साधे निर्जरा, आतमनाव प्रकासे जी ॥ ५ ॥ ने० ॥ नेमि प्रनु ध्यानें रे एकत्वता, निज तत्त्वें एकतानो जी ॥ शुक्लध्यानें रे साधि सुसिद्धता, लहियें मुक्ति निदानो जी ॥ ६ ॥ ने० ॥ अगम अरूपी रे अलख अगोचरू, परमातम परमीशो जी ॥ देवचंद्र जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशो जी॥ ७

॥अथ त्रयोविंश श्रीपार्श्वजिनं स्तवनं॥कडखानी देशी॥

॥ सहज गुण आगरो, स्वामी सुख सागरो, ज्ञान वैरागरें प्रनु सवायो ॥ शुद्धता एकता, तीक्ष्णता नावथी, मोह रिपु जीति जय पडह वायो ॥ १ ॥ ॥ स० ॥ वस्तु निज नाव, अविनास निकलंकता, परिणति वृत्तिता करि अनेदें ॥ नावतादात्म्यता, शक्ति उल्लासथी, संतति योगने तुं उच्छेदें ॥ २ ॥ स० ॥ दोष गुण वस्तुनी, लखिय यथार्थता, लहि उदासीनता अपर नावें ॥ ध्वंसितज्जन्यता, नाव कर्त्तापणुं, परम प्रनु तूं रम्यो निज स्वनावें ॥ ३ ॥ स० ॥ शुन अशुन नाव, अविनास तहकीकता, शुन अशुन

नाव तिहां प्रजु न कीधो ॥ शुद्ध परिणामता, वीर्य कर्त्ता थई, परम अक्रीयता अमृत पीधो ॥ ४ ॥ स०॥ शुद्धता प्रजु तणी, आत्मनावें रमे, परम परमात्मता तास थाये ॥ मिश्र नावें अछे, त्रिगुणनी निन्नता, त्रि गुण एकत्व तुऊ चरण आये ॥ ५ ॥ स० ॥ उपशम रस नरी, सर्व जन संकरी, मूर्त्ति जिनराजनी आज नेटी ॥ कारणें कार्य नि,ष्पत्ति श्रद्धान छे, तिणे नव भ्रमणनी नीड मेटी ॥ ६ ॥ स० ॥ नयर खंनायतें, पार्श्वप्रजु दर्शनें, विकसते हर्ष उत्साह वाध्यो ॥ हेतु एकत्वता रमण परिणामथी, सिद्धि साधकपणो आ ज साध्यो ॥ ७ ॥ स० ॥ आज कृत पुण्य, धन दीह माहारो थयो, आज नर जनम में सफल नाव्यो ॥ देवचंड स्वामि त्रेवीशमो वंदीयो, नक्ति नर चित्त तुऊ गुण रमाव्यो ॥ ८ ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनं ॥ कडखानी देशी ॥

॥ तार हो तार प्रजु, मुऊ सेवक नणी, जगतमां एटलुं सुजश लीजें ॥ दास अवगुण नस्यो, जाणी पोता तणो,दयानिधि दीन पर दया कीजें ॥१॥ ता०॥ राग द्वेषें नस्यो, मोह वैरी नड्यो, लोकनी रीतिमां घणुंये रातो ॥ क्रोधवश धमधम्यो, शुद्ध गुण नवि र म्यो, नम्यो नवमांहि हुं विषय मातो ॥ २ ॥ ता०॥ आदर्युं आचरण, लोक उपचारथी, शास्त्र अन्यास पण कांई कीधो ॥ शुद्ध श्रद्धान वलि, आत्म अवलंब विनु, तेहवो कार्य तिणे को न सीधो ॥ ३ ॥ ता० ॥

स्वामि दरिसण समो, निमित लही निर्मलो,जो उपा दान ए शुचि न थाशे ॥ दोष को वस्तुनो, अहवा उ द्यम तणो, स्वामी सेवा सही निकट लाशे ॥ ४ ॥ ॥ ता० ॥ स्वामि गुण उलखी, स्वामिने जे भजे,दरि सण शुद्धता तेह पामे ॥ ज्ञान चारित्र तप, वीर्य उ ल्लासथी, कर्म जीपी वसे मुक्तिधामें ॥५॥ ता० ॥ जग त वत्सल, महावीर जिनवर सुणी,चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो ॥ तारजो बापजी, बिरुद निज राखवा, दासनी सेवना रखे जोशो ॥ ६ ॥ ता० ॥ वीनति मानजो, शक्ति ए आपजो, भाव स्याद्वादता शुद्ध भा से ॥ साधि साधक दशा, सिद्धता अनुभवी, देवचंद्र विमल प्रभुता प्रकासे ॥ ७ ॥ ता० ॥ इति ॥

॥कलश॥चोवीसे जिनगुण गाइयें, ध्याइयें तत्त्वस रूपो जी ॥ परमानंद पद पाइयें, अक्षय ग्यान अनूपो जी ॥ १ ॥ चो० ॥ चवदहसें बावन भला, गणधर गु ण भंभारो जी ॥ समतामयि साहु साहुणी, सावय सावई सारो जी ॥ २ ॥ चो० ॥ वर्द्धमान जिनवर तणो, शासन अति सुखकारो जी ॥ चउविह संघ वि राजतां, दूसम काल आधारो जी ॥ ३ ॥ चो० ॥ जि न सेवनथी ज्ञानता, लहे हिताहित बोधो जी ॥ अ हित त्याग हित आदरे, संयम तपनी शोधो जी ॥ ॥ ४ ॥ चो० ॥ अभिनव कर्म अग्रहणता, जीर्ण क र्म अभावो जी ॥ निःकर्मीने अबाधता,अवेदन अना कुलभावो जी ॥ ५ ॥ चो० ॥ भावरोगना विगमथी,

अचल अक्षय निराबाधो जी ॥ पूर्णानंद दशा लही, विलसे सिद्ध समाधो जी ॥ ६ ॥ चो० ॥ श्री जिनचंद्रनी सेवना, प्रगटे पुण्यप्रधानो जी ॥ सुमति सागर अति उल्लसे, साधुरंग प्रभुध्यानो जी ॥ ७ ॥ चो० ॥ सुविहित गच्छ खरतरवरू, राजसागर उवझायो जी ॥ ज्ञानधर्म पाठक तणो, शिष्य सुजस सुखदायो जी ॥ ८ ॥ चो० ॥ दीपचंद्र पाठक तणो, शिष्य स्तवे जिनराजो जी ॥ देवचंद्र पद सेवतां, पूर्णानंद समाजो जी ॥ ९ ॥ चो० ॥ इति देवचंद्रजी कृत चतुर्विंशतिजिन स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ खंधकमुनिराजनुं चोढालियुं ॥

॥ ढाल पहेली ॥ नमूं वीर शासन धणी जी, गणधर गोयम स्वाम ॥ कथाअनुसारें गायशुं जी, खंधकना गुणग्राम ॥ १ ॥ क्षमावंत जोय भगवंतनो जीज्ञान ॥ ॥ ए आंकणी ॥ अति क्षमा अधिकी करी जी, संजम धारी जी जान॥शिवमारगने कारणें जी, रहेता धरमने ध्यान ॥ २ ॥ क्ष० ॥ त्वचा उतारी देहनी जी, रहेता समताजी भाव ॥ जिनधर्म कीधो दीपतो जी, महोटा ए मुनिराव ॥३॥क्ष०॥ सावथि नगरी शोभती जी, कनक केतु तिहां भूप ॥ राणी मलयासुंदरी जी, खंधक कुमर अनूप ॥ ४ ॥ क्ष० ॥ सघला अंगें सुंदरु जी, इंद्री नही एक हीण ॥ प्रथम वयें चढती कला जी, चतुर कला प्रवीण ॥ ५ ॥ क्ष० ॥ विजयसेन गुरु आवीया जी, साधु तणे परिवार ॥ ज्ञानगुणें कर आगला

जी, तपसी मारग सार ॥ ६ ॥ कृ० ॥ नर नारि बहु तिहां मिली जी, साधू वांदण कोड ॥ केइ पाला केइ पालख्यां जी, वंदे होडाहोड ॥ ७ ॥ कृ० ॥ खंधक कुमर पण आवीयो जी, बेठो परखदा मांय ॥ मुनिवर दीधी देशना जी, सघलाने चित लाय ॥ ८ ॥ कृ० ॥ आगारने अणगारना जी, धर्म तणा दोय नेद ॥ समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति उमेद ॥ ए ॥ कृ० ॥ म्हाल अणी जलबिंडुवो जी, पाकूं पीपल पान ॥ अथिर तन धन ए आउखुं जी, तजो कपट ने मान ॥ १० ॥ कृ० ॥ विहडे सुतने बांधवो जी, विहडे सज्जन पर्म ॥ कुटुंब पण विहडे सहु जी, नवि विहडे जिनधर्म ॥ ११ ॥ ॥ कृ० ॥ आव्यो छे जीव एकिलो जी, वली एकिलो जी जाय ॥ बांध्यां कर्म जीवें जिस्यां जी, तिस्यां उदय हुवे आय ॥ १२ ॥ कृ० ॥ पुण्यजोगें नरनव लह्यो जी, सदगुरुनो संयोग ॥ हवे टालो राखो मती जी, तजो जहेर जिम नोग ॥ १३ ॥ कृ० ॥ चारु गति संसारना जी, लग रहि खांचाजी ताण ॥ चल वस्तु सघली कही जी, निश्चल छे निरवाण ॥ १४ ॥ कृ० ॥ उंछा सुखने कारणें जी, शुं द्यो कंम्ही रांग ॥ नवनव मांहे काढिया जी, नटुवे वाला सांग ॥ १५ ॥ कृ० ॥ अथिर ए सुख संसारनां जी, कांई अलुको जाल ॥ वचन सुणी सदगुरु तणां जी, चेतो सुरत संनाल ॥ १६ ॥ कृ० ॥ पंचमाहाव्रत आदरो जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ कष्ट पड्या गाढा रहो जी, जिम पामो नव पार ॥ १७ ॥

कु० ॥ धन धान्य घर हाटडी जी, ममता म करोजी कोय ॥ काचा सुखने कारणेजी, हाखो जनम म खोय ॥ १८ ॥ कु० ॥ सगपण सहु संसारनां जी, थया अनंतीजी वार ॥ मिल मिलने विछडी गयां जी, करमज लागां लार ॥ १९ ॥ कु० ॥ सगपण सहु संसारनां जी, स्वारथना छेजी एह ॥ जो स्वारथ पूगे नही जी, तटके तोडे नेह ॥ २० ॥ कु० ॥ नरक निगोदमें दुःख सह्यां जी, छेदन नेदन ऽनेक ॥ तो प ण धीठा जीवने जी, सुरत नहीं छे रेक ॥ २१ ॥ ॥ कु० ॥ ठगबाजी मांभी घणी जी, चाडी चुगली जी खाय ॥ करम उदय आयां थकां जी, पडे गलामां आय ॥ २२ ॥ कु० ॥ इस्या दुखें भरपे नही जी, चेतो तुमें नव्य जीव ॥ ज्ञानादिक आराधीने जी,तुमें द्यो मुगतनी नीव ॥२३॥ कु० ॥ दिलमां दया विचा रीने जी,छांमोजी खांचा ताण ॥ आज्ञा सहित किरिया करो जी, ए जीवित परमाण ॥२४॥ कु० ॥ मुगति तो निश्चें मिले जी,कदा नरे रहे जाय ॥ देवलोक वासो वसें जी, सुख घणां तिण गाय ॥ २५ ॥ कु० ॥ वाणी सुणि साधु तणी जी, कुमर जोड्या बेहु हाथ ॥ वचन तुमारां सर्दह्यां जी, नली करी कृपा नाथ ॥ २६ ॥ ॥ कु० ॥ मातपिताने पूछीने जी, लेशुं संजम नार ॥ वलता मुनिवर इम कहे जी, म करो ढील लगार ॥ ॥ २७ ॥ कु० ॥ घरे आवी कहे मातने जी,द्यो अनु मति आदेश ॥ संजम लेई हूं सुखी जी, काटूं करम

कलेश ॥ २८ ॥ कु० ॥वचन सुण्यां सुतनां इस्यां जी, धरणि ढली ठेजी माय ॥सावधान हुइने करयुं जी,इसी म काढो वात ॥ कुमरजी, संजम विषम अपार॥२९॥ संजम ठे वज्र दोहिलो जी, जिसी खांमानीजी धार॥ पाग उवराणें चालवुं जी,लेवो शुद्ध आहार ॥ ३० ॥ ॥ कु० ॥ सं० ॥ सुवचन कुवचन लोकनां जी,सहणा पडशेजी मार ॥ राजकुमर सुकुमाल ठो जी, एह न करणी सार ॥ ३१ ॥ कु० ॥ सं० ॥ साधपणुं दोहिलुं कह्युं जी, तिणमें फेर न कोय ॥ कायरने ठे दोहिलुं जी, शूराने नहि होय ॥ ३२ ॥कु० ॥ सं० ॥ उत्तर पडुत्तर बहु हुवा जी, बाप बेटानेजी माय ॥ सूत्रमांहे विस्तार ठेजी, देजो चतुर लगाय ॥ ३३ ॥ ॥ कु० ॥सं०॥ चितशुं दीधी आगना जी, करी महोटे मंमाण ॥ शिबिकामां बेसाडीने जी, सोंप्यो साधुने आण ॥ ३४ ॥कु० ॥ इष्ट त्यंत वालो हुतो जी,स्वामी महारे ए पुत्र ॥ मरियो जामण मरणथी जी, सोंप्यो तुम कर सुत ॥ ३५ ॥ कु० ॥ सिंहपणे व्रत आद रोजी,पालजो सिंहनी जेम ॥ घणुं पराक्रम फोरजोजी, मात पिता कहे एम ॥ ३६ ॥ कु० ॥ इम शीखामण देइ करी जी, आया जिण दिशि जाय ॥ खंधकने नले नावशूं जी, दीक्षा दिनी मुनिराय ॥ ३७ ॥ कु० ॥ आगन्या मागी साधु तणी जी, सूत्र अरथ लिया धा र ॥ जिनकलपी पणुं आदयुं जी, एकलमल अण गार॥३८॥कु०॥मिलि शिरदार रायने कह्युं जी, ए नान

डियोजी बाल ॥ सिंहादिकना नय तणा जी,करवावो रखवाल ॥ ३९ ॥कु० ॥ पांचशें जोधा बोलावीने जी, दीया कुमरनेजी लार॥ ते साधुने खबर नहि जी,साथें वहे शिरदार ॥ ४० ॥ कु० ॥ सावथि नगरीशुं चालियो जी, कुंती नगरीजी जाय ॥ नगरी बहिनोई तणी जी, शंक न आणी कांय ॥४१॥ कु०॥दूहा ॥ पांचेशें तिण अवसरें, खावा पीवा काज ॥ वलो वली च लता रह्या, एकल रह्या मुनिराय ॥१॥ हवे किम करे गोचरी, उपसर्ग व्यापे केम ॥ एकमना थइ सांजलो, मुनी करे वे जेम ॥ २ ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ तिण अवसर मुनिराय, कुंति नगरीमांहे,सूकोमल साधु॥ विहरण विरियां पांगुरया ए ॥१॥ वाजे लूवर काल, दाफे पग सुकमाल ॥ सु० ॥ दो पहेराने तावडे ए ॥ २ ॥ निरमोही निरमाय, इरजा जोवंता जाय ॥ सु० ॥ गउ तणी परें गोचरी ए॥ ३ ॥ सुसत उतावला नांहि, धीरज धरे मनमांहि ॥ सु० ॥ गयवरनी परें मलप ता ए ॥ ४ ॥ राय राणी तिण वार,रमतां पासा सार ॥ सु० ॥ महेल तले मुनि आविया ए ॥ ५ ॥ पड्यो हे राणीनी दिठ, खंधक महेलनी हेठ ॥ सु० ॥ एतो हुवे माहरो बंधुवो ए ॥ ६ ॥ चिंता आवी पिहीर, नयणें वूटुं नीर ॥ सु० ॥ विरह व्यापी चिंता थई ए ॥ ७ ॥ राजा साहमो जोय, राणी इम किम रोय ॥ सु० ॥ सुखमांहे डुख किम हुवां ए ॥ ८ ॥ साधुने जावतो देख, राजाने जाग्यो द्वेष ॥ सु० ॥

ए ए करम एणे कियां ए ॥ ए ॥ राणी हूती सुख मांय, रोवाडी इण आय ॥ सु० ॥ तो ए खबर साधु तणी ए ॥ १० ॥ राय विचारी गैर, जाग्यो पूरव वैर ॥ ॥ सु० ॥ पाठल नव काचर तणो ए ॥ ११ ॥ मातुं विचारी राय, मसाण जूमि ले जाय ॥ सु० ॥ त्वचा उतारो एहनी ए ॥ १२ ॥ राजा नफर बोलाय, वेगा जावो धाय ॥ सु० ॥ इण साधुने पकडी लीयो ए ॥ ॥ १३ ॥ मत करजो कांइ कांण, ले जायजो सम साण ॥ सु० ॥ सघली खाल उतारजो ए ॥ १४ ॥ नफर सुणी इम वाण, करी लीधी परमाण ॥ सु० ॥ अजाण चक रा जायने ए ॥ १५ ॥ पकड्या मुनिना हाथ, मसाण जूमि ले साथ ॥ सु० ॥ खाल उतारवा देहनी ए ॥ १६ ॥ माहरो नही छे दोष, मुनि म करो कोइ रोष ॥ सु० ॥ मरप्या ऋषज समीकरें ए ॥ १७ ॥ मसाण जूमिका मांय, काया दीधी वो सिराय ॥ सु० ॥ चारू आहार त्यागी दीया ए ॥ १८ ॥ करडो आवी बन्यो काम, न कह्युं आपणुं नाम ॥ सु० ॥ सगपण को दाख्युं नहि ए ॥ १ए ॥ राख्यो समता जाव, संजम ऊपर चाव ॥ सु० ॥ मने करीने झोल्या नही ए ॥ २० ॥ तीखा पाछणानी धार, मसतक ऊपर प्रहार ॥ सु० ॥ खाल उतारी देहनी ए ॥ २१ ॥ पगां सूधी खाल, रहिता संजममां जाल ॥ सु० ॥ नाके सल घाल्यो नही ए ॥ २२ ॥ रह्या ते रूडे ध्यान, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सु० ॥ क

रम खपावी मुगतें गया ए ॥ २३ ॥ केवल महिमा होय,धन धन करे सहु कोय ॥सु०॥ जिनमारगकियो दीपतो ए ॥ २४ ॥

॥ दुहा ॥ कुंती नगरीनी मध्ये, हुवोज हाहाकार ॥ देखो राय मरावीयो, विना गुने अणगार ॥ १ ॥ लोक हुवा सहु आगला, जोर न चाले कोय ॥ मुनिने मोक्ष सिधावणो, पण वैर न छोडे कोय॥ २ ॥ किम बूझे पांचशें सुन्नट,वलि राणी ने राय ॥ वैर खबर किण विध पडे, ते सुणजो चित्त लाय ॥ ३ ॥

॥ढाल त्रीजी॥धरम हिये धरो॥ए देशी॥हजी साधु आयो नहीरे, जोवे पांचशें वाट ॥ न्नलामण दीनी रायजी रे, क्षण क्षण करे उच्चाटो रे ॥ धन्य महोटा मुनी ॥ नित्य कीजें गुण ग्रामो रे॥ ध० ॥ सीझे सघलां कामो रे ॥ १ ॥ ध० ॥ नगर गली फरी जोयता रे, किहांइ न दीठो रे साध ॥ सुण्यो साधु मास्यो गयो रे, तव परमारथ लाधो रे ॥ २ ॥ ध० ॥ राजा पूछे कुण तुमें रे, तव वलता कहे जोध ॥ कनककेतुना रजपूत छां रे,तुमें करी वात अयुक्तो रे॥३॥ध०॥खंधक कुमर दीक्षा लेइ रे, अमें रखवालाजी लार॥सो मुनिवर तें मारीयो रे, न सरी गरज लगार रे ॥ ४ ॥ ध० ॥ वचन सुणी जोधा तणां रे,राय हुवो दिलगीर ॥ हाहा पाप जाझां कीयां रे, मास्यो राणीनो वीर रे ॥ ५ ॥ ॥ ध० ॥ राणी वात सुणी तिसें रे, लागो मरम प्रहार ॥ मूरछागत धरणी ढली रे,बूटी आंसूडानी धार

रे ॥ ६ ॥ ध० ॥ बंधव नव सफलो कीयो रे,तोड्या मोहना रे फंद ॥ हुं पापणी किम बूटशुं रे,इम ते करे आक्रंद रे॥७॥ध०॥ लोहीयें खरडी मुहपती रे, समली महेलमां राल ॥ बहिन सुनंदा देखीने रे,ऊठे मोहनी काल रे ॥८॥ ध० ॥ जिम जिम नाई सांजरे रे, आणे रागने द्वेष ॥ वीरा वेगो आवजे रे,हुं नजरें लेउं देख रे ॥ ए ॥ ध० ॥ कुण वीरो कुण बहिनडी रे, जोजो मोहनी वात ॥ इण नव मुगति सिधावशुं रे,एम करे विलपात रे ॥ १० ॥ ध० ॥ इम जाणीने मानवी रे,मोह न करशो रे कोय ॥ मोह कियां डुख उपजे रे, करमबंध बहु होय रे ॥ ११ ॥ ध० ॥ सालो सगो न वी जाणीयो रे,तपसी महोटो रे साध॥पुरुषसिंह राजा कूरे रे, बहोत लग्यो अपराध रे ॥ १२ ॥ ध० ॥ पांचशें जोधा इम चिंतवे रे,मार्यो गयो मुनिराय ॥कनक केतु राजा कने रे, कांइ कहेशुं तिहां जाय रे ॥ १३ ॥ ॥ ध० ॥ चारित्र ल्यो हवे चोंपशुं रे, किसो सास वीश वास ॥ काल कितो इक जीवणो रे, राखो मुगतिनी आश रे॥ १४ ॥ ध० ॥ निश्चें करी संजम लीया रे, पांचशें जोधा शिरदार ॥ चोखो पाली सुरगति लही रे,वलि करशे नव पार रे ॥ १५ ॥ ध० ॥ डुहा ॥ हवे राजा मन चिंतवे, एहवो खून न कोय ॥ साधु मारण मन ऊपनुं, ए संशय ठे मोय ॥ १ ॥ इम विचारी वंदण गयो, साधु नणी कहे एम ॥ विण गुनहें महोटो मुनि, में मार्यो कहो केम ॥ २ ॥ ढाल ॥

चोथी ॥ वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी ॥ साधु कहे राय सांजलो, तूंतो हूतो हो काचरनो जीव ॥ ए खंधक मानव हूतो, चतुराई हो धरतो रे अतीव ॥ ॥सा०॥१॥ करम न बोडे केहने, नीखारी हो कुंण राणो राव ॥ कुंण साधुने कुंण चोरटो, नला नूंमा हो सहु होवे नाव ॥ २ ॥ क० ॥ पुवला नव इण खंधकें,ऊतारी हो काचरनी ाल ॥ विचलो गिर का हाडी लीयो, सराय हो घणी करिय कितोल ॥ ३ ॥ ॥ क० ॥ पढेंहि पबतायो नही, बंध पडियो हो ति ण रे नण गय ॥ तिणे करमें करी खालडी,उतारी हो तें साधूनी राय ॥ ४ ॥ क० ॥ वचन सुणी राय मरपीयो, करमोनी हो घणी विषमी वात ॥ राय राणी दोनूं कहे, घरमांहे हो घडी अफली जात ॥ ५ ॥ ॥ क० ॥ पुरषसिंह राजा तिहां, सुनंदा हो राणी सु विनीत ॥ राज बोडी चारित्र लियो,आराध्यो हो दोनुं रूडी रीत ॥६॥ क० ॥ करम खपावी मुगतें गयां, व धारी हो जग धरमनी सोह ॥ अजर अमर सुख शा श्वतां, एहवी करणी हो करजो सहु कोय ॥७॥ क०॥ अढारशें इग्यारोत्तरें, चैत्र मासें हो शुदि सातम जो य ॥ लाडणूं गाम सुखी सदा, उबो अधिको हो मि बाडुक्कड होय ॥ ८ ॥ क० ॥ इति चोढालियुं संपूर्ण॥ ॥ अथ श्रावक नीचें लखेला त्रण मनोरथने चिं ॥

॥ तवतो माहा मोहोटी निर्ज्जरा करे ॥

॥ संसारनो अंत करे,ते लखियें बैयें ॥

॥ किवारें हुं, बाह्य तथा अभ्यंतर परिग्रह जे माहापापनुं मूल दुर्गतिने वधारनारो, काम, क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय अने कषायनो स्वामी, माहादुःखनुं कारण, महा अनर्थकारी, दुर्गतिनी शिक्षा, माठी लेश्यानो परिणामी, अज्ञान, मोह, मत्सर, राग अने द्वेषनुं मूल, दशविध यति धर्म रूप कल्प वृक्षनो दावानल, ज्ञान, क्रिया, क्षमा, दया, सत्य, संतोष तथा बोधबीज रूप समकेतनो नाश करनारो, संयम अने ब्रह्मचर्यनो घात करनारो, कुमति तथा कुबुद्धिरूप दुःखदारिद्रनो देवा वालो, सुमति अने सुबुद्धिरूप सुखसौभाग्यनो नाश करनारो, तप संयम रूप धनने लूंटनारो, लोभ क्लेश रूप समुद्रनो वधारनारो, जन्म जरा अने मरणनो देवावालो, कपटनो भंमार, मिथ्यात्व दर्शन रूप शल्यनो भरेलो, मोक्षमार्गनो विघ्नकारी, कडवा कर्म विपाकनो देवावालो, अनंत संसारनो वधारनारो, महा पापी, पांच इंद्रियना विषयरूप वैरीनी पुष्टिनो करनारो, मोहोटी चिंता शोक गारव अने खेदनो करनार, संसार रूप अगाध वह्निनो सिंचवावालो, कूड कपट अने क्लेशनो आगार, मोहोटा खेदनो करावनारो, मंदबुद्धिनो आदर्यो, उत्तम साधु निर्ग्रंथोयें जेने निंद्यो छे, अने सर्व लोकमां सर्व जीवोने एना सरिखो बीजो कोइ विषम नथी, मोहरूप पाशनो प्रतिबंधक, इहलोक तथा परलोकना सुखनो नाश करनार, पांच आ

भवनो आगार, अनंत दारुण डुःख अनें नयनो देवा वालो, महोटा सावद्य व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादा ननो करावनारो, अध्रुव, अनित्य, अशाश्वतो, असा र, अत्राण, अशरण, एवो जे आरंन अने परिग्रह तेने हुं केवारें ढांमीश! जे दिवसें ढांमिश, ते दिवस महारो धन्य ढे! ॥ ए प्रथम मनोरथ ॥

२ केवारें हुं मुंम थइने दश प्रकारें यतिधर्म धारी, नववाडें विशुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावद्य परिहारी, अ णगारना सत्तावीश गुणधारी, पांच समिति त्रण गु प्तियें विशुद्धविहारी, मोहोटा अनिग्रहनो धारी, बे हेंतालीश दोष रहित विशुद्ध आहारी, सत्तर नेदें संय म धारी, बार नेदें तपस्याकारी, अंत आहारी, प्रांत आहारी, अरस आहारी, विरस आहारी, लुरक आ हारी, तुब्ब आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, अरसजी वी, विरसजीवी, लुरकजीवी, तुब्बजीवी, सर्व रस त्या गी, ढकायनो दयाल, निर्लोंनी, निःस्वादी, पंखी तु ल्य, वायरानी परें अप्रतिबंध विहारी, वीतरागनी आ ज्ञासहित, एहवा गुणोनो धारक जे अणगार ते हुं केवारें थईश! जे दिवस हुं पूर्वोक्त गुणवान् थाइश ते दिवस धन्य ढे ॥ ए बीजो मनोरथ ॥

३ केवारें हुं सर्व पापस्थानक आलोई, निःशल्य थइ, सर्व जीवराशी खमावीने, सर्व व्रत संनारीने, अ ढार पापस्थानकथी त्रिविधें त्रिविधें वोसरीने, चारे आहार पच्चरकीने, शरीरने, ढेहेले श्वासोच्छ्वासें वोस

रावीने, त्रण आराधना आराधतो थको, चार मंग लिक रूप चार शरण मुखें उच्चरतो थको, सर्व संसा रने पूंठ देतो थको, एक अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्री जा साधु, अने चोथो केवलि प्ररूपितधर्म, तेने ध्याव तो थको, शरीरनी ममता रहित थयो थको, पादोप गमन संथारा सहित, पांच अतिचार टालतो थको, मरणने अणवांछतो थको, एहवुं पंडित मरण अंत काले मुजने कराविश ॥ ए त्रीजो मनोरथ ॥ ३ ॥

ए त्रण मनोरथने श्रावक, मन, वचन अने कायायें करी शुद्धपणे ध्यावतो थको सर्व कर्म निर्जरीने संसा रनो अंत करे, मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्यें पामे ॥

॥ अथ वसंत धमाल वगेरे होरीमां गावानां पद प्रारंभ ॥ तत्र प्रथम वसंत ॥

॥ ए रुतु रूडी रूडी माहारा वाला, रूडो मास वसंत ॥ रूडो समकित केसू फूल्यो, गुंजत मधुकर संत माहारा वाला ॥ ए० ॥ १ ॥ संवेग रंग परवाव ज बाजे, दुविध दया कर नाल ॥ उपशम भर पिच कारी भारी, नवनिरवेद्य गुलाल माहारा वाला ॥ ॥ ए० ॥ २ ॥ आस्तिक आप सुबागमें बेठे, खेलत खे ल रसाल ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु फगुआ मांगत, दीजें शांति कृपाल माहारा वाला ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ धमाल ॥

॥ सुमति सदा सुख दाई हो, खेलन आई होरी ॥ खेलन आई प्यारे खेलन आई ॥ सुमति० ॥ ए टे

क ॥ पूर्णानंद सुखद पियु संगें, सब सखीअन मि
लाई हो ॥ खेल० ॥ निज गुन बागमें सहज बसंतें,
मौज मचा मन लाई हो ॥ खेल० ॥ १ ॥ ध्यान स
माधि जवनमें बेठे, रस जरी खेले गोसांई हो ॥ खे०॥
प्रभु आणा शिर छत्र बिराजे, बिहुं नय चमर ढला
ई हो ॥ खे० ॥ २ ॥ आगम वचन संगीते बहुगम,
वाजित्र विविध बजाई हो ॥ खे० ॥ शांति सुधारस
प्याले पीवत, आनंद लील जमाई हो ॥ खे० ॥ ३ ॥
या विध पीउ प्यारी मिलि खेलत, सब सुख संपत्ति
पाई ॥ खे० ॥ जानुचंद प्रभु पास पसायें, शिव सुख-
हर्ष वधाई हो ॥ खे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ राग धमाल ॥

॥ होरी खेलावत कानईयां, नेमीसर संगें ले ज
ईआं ॥ ए आंकणी ॥ रेवत गिरि पर एकठा मिले
सब, सहस बत्रीश अंतेउरीआं ॥ होरी० ॥ १ ॥
कोई संग पिचकारी लीए कोई, अबिर गुलालसें फोरी
जरईआं ॥ हो० ॥ २ ॥ नेमकुमर खेले उत होरी,
विवाह मनावत गोपी मिलईआं ॥ हो० ॥ ३ ॥ मौन
रह्या प्रभु बात विचारी, परणो देवर नारी जलईआं ॥
॥ हो० ॥ ४ ॥ तोरण आवी पशुआं छुडावत,
राजुल नारी विचार करईआं ॥ हो० ॥ ५ ॥ मुक्ति
धूतारी शोक्य हमारी,इनसें क्युं मेरो चित्त जलइआं ॥
॥ हो० ॥ ६ ॥ सहसावन जई संयम लीनो, शुकल
ध्यानसें केवल पईआं ॥ हो० ॥ ७ ॥ नेम राजुल

दोए मुक्ति सिधाए, रूप कहे हम लेत बलईआं ॥
॥ हो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ राग वसंत ॥

॥नहींरे नाहार नवरंग बनायो, अपने नेमजीको घर रे ॥ १ ॥ हांरे नहीं रे नाहार० ॥ ए टेक ॥ आंबो मोर्यो केसू फूल्यां, फूल्युं सघलुं वन्न रे ॥ हां० ॥ ॥ २ ॥ उपशम रसको रंग नयो है, अबिर अरगजा धर रे ॥ हां० ॥ ३ ॥ पंच समिति खेले सब सहीयो, शील सदाकों धर रे ॥ हां० ॥ ४ ॥ रास मच्यो है शुनमति सखीको, कुमति सखीकों मर रे ॥ हां० ॥ ॥ ५॥ फगुआ दो नर फोली अविचल, माहानंदको घर रे ॥ हां० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग धमाल ॥

॥ वामा नंदन अंतर जामी, जीवन प्राण आधार ललना ॥ दरिसण देखी ताहारुंहो, सफल कर्यो अवतार ॥ मन मोहन गोडी पासजी हो, अने हो मेरे ललना, तुम समो नहि कोई देव ॥ मन० ॥ ॥ १ ॥ तुम सार्थे मुज प्रेम बन्यो है, न गमे बीजानो संग ललना ॥ तुम पसायें पामीयें हो, अति घणो उत्सव रंग ॥ म० ॥ २ ॥ अमने मोटी होंश मुक्तिनी, ते आपो मुज स्वामि ललना ॥ तुं प्रजु सुरतरु सारिखो हो, पूरण वंछित काम ॥ म० ॥ ३ ॥ महेर घणी प्रजु राखीयें हो, शुं कहुं वारो वार ललनां ॥ नेह कीधो तुमशुं खरो हो, नवि जाऊं बीजे दरबार ॥ म० ॥

॥ ४ ॥ जिहां तिहां संग न कीजियें हो, रहीयें सहेजा नंद लालना ॥ नित्यलाभ कहे प्रभु सेवियें हो, लीजियें शिवसुख कंद ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ धमाल ॥

॥ नयरी वणारसी जाणीयें हो, अश्वसेन कुल चंद लालना ॥ वामानंदन वंदीयें हो, पासजी सुरतरु कंद ॥ परमेश्वर नित्य गुण गाइयें हो, अहो मेरे लालना गावत शिवसुख पाइयें हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ फणिधर लंछन नव कर जिनजी, सबल घनाघन सार लालना ॥ संयम लेई शत तीनशुं हो, सवि कहे तुं धन्य धन्य ॥ पर० ॥ २ ॥ वरस शत एक आउखुं हो, सीधा समेत गिरीश लालना ॥ शोल सहस मुनी तुम तणा हो ॥ समणी सहस अडत्रीश ॥ पर० ॥ ॥ ३ ॥ धरणीधर पदमावती हो, प्रभु शासन रखवाल लालना ॥ रांग सोग संकट टले हो, नाम जपतो जयमाल ॥ पर० ॥ ४ ॥ पास आश पूरो अब मेरी, अरज एक अवधार लालना ॥ श्रीनयविजय विबुध पसायथी हो, जस कहे भवजल तार ॥ पर०॥ ५॥

॥ राग वसंत ॥

॥ श्रीचिंतामणि पास प्रभु तारा, मंदिर बरसे रंग रे ॥ ए टेक ॥ ग्यान गुलाल अबिर उडावत, समता नीर सुचंग रे ॥ श्रीचिं० ॥ मंदिर० ॥ १ ॥ अनुभव लहेर फूली फूलवाडी, फबकती नव नव रंग रे ॥ ॥ श्री० ॥ २ ॥ उपशम वाघा अंग अनोपम, शुकल

ध्यानसें चंग रे ॥ श्री०॥ अमरचंद चिंतामणि चित्तध र, लागो अविहड रंग रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ काफी होरी ॥

॥ ऐसें होरी तो होय रही चंपा नगरीमें, फागुनके दिन आए ॥ ऐसें० ॥ ए टेक ॥ वासपूज्यजीके नव ल मंदिरमें, होई रही हो सुखदाई ॥ ऐसें० ॥ १ ॥ केसर घोलो नरी रे कचोली, प्रनु पूजो नले नावें ॥ ऐसें० ॥ २ ॥ अनुपम प्रेम पिचरकी अदनुत, ना वना अबीर सुवासे ॥ ऐसें० ॥ ३ ॥ परमानंद पर म सुख दायक, कीरति जग कहाय ॥ ऐसें० ॥ ४ ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ आदिजिनेसर प्रनुजी. साहिब तेरी रे, जाउं में बलिहारी ॥ आ०॥ ॥ ए टेक ॥ नानिके नंदन पाप निकंदन,तीन नवन हितकारी रे॥जाउं में बलिहारी१ सिद्धगिरि सोहन जिन मन मोहन,पेखत मूरति प्या री रे ॥ जा० ॥ २ ॥ पूर्व नवाणुं वार प्रनुजी, रह्या रायण निरधारी रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जात्रा नवाणुं कीनी युक्तें, डुर्गति दूर निवारी रे ॥ जा०॥४॥ अढार अठावन चैत्री पूनम, जात्रा नवाणुं जुहारी रे ॥ जा०॥ ॥५॥ सुरत संघ सदा सुखदाता, कहत कल्याण जय कारी रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ नेमि निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ नेमि० ॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, पंचमहाव्रत ली

नो रे ॥ वनमें० ॥ १ ॥ उपशम अबिर गुलाल उ डावत, खेलत नेम नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ २ ॥ रेव त गिरि पर इकठा मिले सब, सहस बत्रीशे लीनो रे ॥ वनमें० ॥ ३ ॥ आत्मग्यानकी जरी पिचकारी, प्रनु लहे ज्ञान नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ ४ ॥ रूप चंदए प्रनु गुण गावत, नेम राजुल शिव लीनो रे ॥ ॥ वनमें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ धमाल ॥

॥ सोरीपुर नगर सोहामणुं हो,समुइ विजयराजें इ ॥ शिवादेवी राणी तेहनो हो, अंगज नेम जिणंद, वृंदावन फाग सोहामणो हो ॥ अहो मेरे ललना, गावत नेम जिणंद ॥ वृं० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ समुइ विजयको न्रातलो हो, श्रीवसुदेवकुमार ॥ जास सो हाग गुणें करी हो, मान तजे हरि हार ॥ वृं० ॥ २ ॥ बहुतेर सहस त्रिया रस रसधर, मधुकर सुख मकरंद ॥ अंगज सकज अठे तस दोउ, गुण नया राम गोविंद ॥ वृं० ॥ ३ ॥ सोल सहस गोपी मनमोहन, मनोहर रूप मोरार ॥ मेघश्याम मुरली लैनीके, वाजत वेणुविशाल ॥ वृं० ॥ ४ ॥ चंग मृदंग उपंग बजावत, गावत हे व्रजनार ॥ नेम कुमर हल धर गिरिधरमिल, करत हे केलि अपार ॥ वृं० ॥ ५ ॥ टोलें मिली मिली तान मचावत, फीलत सुरन्नी गु लाल ॥ मारत केसर कमल पिचकारी, रंग करत हे नर नार ॥ वृं० ॥ ६ ॥ अजब लाल तनु वेष बन्यो हे,

नयन लाल मुख लाल ॥ पंच पीतांबर उढत नीके, जादव लेल लोगाल ॥ वृं० ॥७॥ अंबअंब कोकिलरव आलापित, गावत गीत रसाल ॥ चढी कदंब श्रीकृष्ण बजावे, मधु बसंतकी ढाल ॥ वृं० ॥ ८ ॥ नटिका नंदी करुणानिधि, हरिकुल पंकज भाण ॥ करत केलि श्रीनेम मुरारी. रवि शशि उपमा आण ॥ ॥ वृं० ॥ ९ ॥ यादव कुमर भले एकेकथे, गुणवंत अरु रूपवंत ॥ नेमीसर सरिखो नहीं कोई, त्रिभुवनके बलवंत ॥ वृं० ॥ १० ॥ वृंदावनमें एणिपरें खेलत, सब यादवके वृंद ॥ नेमीसर जिनचंद पसायें, प्रत्यक्ष परमानंद ॥ वृं० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रभाति स्तवनं ॥

॥ जाग जाग जीव तुं, कब थयो प्रभात रे ॥ प्रभु जीको नाम भज, पावे ज्युं शिव सात रे ॥जा०॥१॥ पूरव दिशि उदित सूर, धरि प्रवाल रंग गात रे ॥ विबुधवृंद पढत पाठ, नाठ गई ले रात रे ॥ जा० ॥ २ ॥ मोह गहेली नींद छांडी,दूर करि मिथ्यात रे ॥ सुगुरु वचन बोध करि, धर्मशुं धरि धात रे ॥जा०॥३॥दान शील तपो भाव, भावनशुं बहु भांत रे॥ चार मंगल चार बुद्धि,होत नामथी विख्यात रे॥जा०॥४॥पंच पद को ध्यान करी,गुणियल गुण गात रे॥आपहीमें दोष देखि,टाल पराइ तांत रे॥जा०॥५॥चरण करण विवेक शुद्ध,मनडुं करि थिर शांत रे॥ कहत मुनि मलूक चंद, होत सदा सुख शात रोजा०॥६॥इति आत्मशीक्षापद॥

॥ अथ पुंमगिरि स्तवन प्रारंनः ॥

॥ वीरजी आयारे विमलाचलके मेदान, सुरपति नाया रे, समवसरण मंमाण ॥ ए आंकणी छे ॥ देशना देवे वीरजी स्वाम, शत्रुंजय महिमा वरणवे ताम ॥ नाखे आठ उपर सो नाम, तेह्मां नांख्युं रे, पुंमरगिरि अनिधान ॥ सोहम इंदो रे, तव पूछे बहु मान ॥ किम थयुं स्वामी रे, नांखो तास निदान ॥ वीर० ॥ १ ॥ प्रनुजी नाखे सांनल इंद, प्रथम जे हुआ रुषन जिणंद ॥ तेह्ना पुत्र ते नरत नरिंद, नरतना हुआ रे रुषनसेन पुंमरिक ॥ रुषनजी पासें रे, देशना सुणी ते उत्तंग ॥ दीक्षा लीधी रे,त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥ वीर०॥ ॥ २ ॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादश अंगी गुंथी अनिराम ॥ विचस्या महियलमां गुण धाम, अनुक्रमें आव्या रे श्रीसिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोडि रे, पांच तणे परिवार ॥ अनशन कीधुं रे,निज आतमने उपगार ॥ वीर०॥ ३ ॥ तेणे ए प्रगट पुंमरगिरि नाम, सांनल सोहम देवलोक स्वाम ॥ एह्नो महिमा अतिहि उद्दाम, इणेदिन कीजें रे, तप जप पूजा ने दान ॥ व्रत वली पोसो रे, जेह् करे निदान ॥ फल तस पामे रे, पंच कोडी गुण मान ॥ वीर० ॥ ४ ॥ चैत्री पूनम दिवसें जेह्, पाम्या केवल ज्ञान अछेह् ॥ शिव सुख वरिया अमल अदेह् ॥ पूर्णानंदी रे, अगुरु लघु अवगाह् ॥ अज अविनाशी रे, निजगुण नोगी अबाह् ॥ निज गुण करता रे,पर पुजल नही चाह् ॥

॥वीर०॥५॥ नक्तें नव्य जीव जे होय, पंच नवें मुक्ति लहे सोय ॥ एहमां बाधक ठे नही कोय, व्यवहार केरी रे, मध्यम फलनी ए वात ॥ उत्कृष्टे योगें रे, अंतरमुहूर्त्त विख्यात ॥शिव सुख साधे रे,आतमने अवदात ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चेत्री पूनम महिमा देख, पूजा पंच प्रकार विशेष ॥ तहमां कणिम नही कांइ रेख, इणी परें नांखे रे,जिनवर उत्तम वाण ॥ सांनली बूज्या रे, केइक नविक सुजाण ॥ इणि परें गाया रे, पद्मविजय सुप्रमाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रस्ताविक दोहा कवित्त सवैया वगेरे प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ सत्य म ठोडीश चतुर नर, लब्धी चिहु गणि होय ॥ सुख दुःख रेखा कर्मकी, मेट न शके कोय ॥१॥ हिंसा दुखनी वेलडी,हिंसा दुखनी खाण ॥ जीव अनंत नरकें गया,हिंसा तणे प्रमाण ॥ २ ॥ दया ते सुखनी वेलडी, दया ते सुखनी खाण ॥ जीव अनंत स्वर्गे गया, दया तणे परिमाण ॥ ३ ॥ जीव मारंतां नरक ठे,राखंतां ठे सग्ग ॥ ए बेहू ठे वाटडी, जिण नावे तिण लग्ग ॥ ४ ॥ विण कपास कपडुं नही, दया विना नहि धर्म्म ॥ पाप नही हिंसा विना,बूझो एहज मर्म ॥ ५ ॥ धन वंठे एक अधम नर, उत्तम वंठे मान ॥ ते थानक सहु ठंमीयें, जिहां लहियें अपमान ॥ ६ ॥ बार बुलावण बेसणुं, बीडी बेकर जोड ॥ जिणघर पांच बब्बा नहि, ते घर दूरे ठोड ॥७॥

ठप्पय ॥ हरखे किश्युं गमार, देखि धन संपत ना

री ॥ प्रौढ पुत्र परिवार, लोकमांहे अधिकारी ॥ यौव
न रूप अनूप, गर्व मनमांहे नमावे ॥ करतो मोडा मो
ड, जगत तृण सरिखो जावे ॥ अखियां मूढ देखे न
ही, आज काल मरवुं अछे ॥ जिनहर्ष समज रे प्रा
णीया, नहितर दुःख पामीश पछें ॥ १ ॥ लंक सरी
खी पुरी, त्रिकट गढ जास दुरंगम ॥ पाखली खाई स
मुद्र, जां पहुंचे नही विहंगम ॥ विद्याधर बलवंत,
खंम त्रण केरो स्वामी ॥ सेव करे जसु देव, नवग्रह
पाये नामी ॥ दशकंध वीश भुजा लहे, पार पाखें सेना
बहु ॥ जिनहर्ष राम रावण हण्यो, दिन पलटयो प
लटया सहु ॥ २ ॥ सवैयो ॥ रूप घटयो रस रंग घ
टयो, नघटयो मन पाप विकारनथैं, तेज घटयो तरु
णाप घटयो न घटयो, चित्त कामविलासनथैं ॥ सा
र घटयो अब सीर घटंयो, न घटयो चित्त लोभ रसा
यनथैं, भद्रसेन कहे जुग जात घटयो, न घटयो कोउ
क्रोध कषायनथैं ॥ १ ॥

॥कवित्त॥पहेलुं सुखजे दीठें नरा, बीजुं सुख जे घर
दीकरा ॥ त्रीजुं सुख जे ऋण विण वरा, चोथुं सुख जे
पोतें घरा ॥ पांचमुं सुख जे भक्ति नारि, छहुं सुख जे
प्रतिष्टा बार ॥ सातमुं सुख जे आंगण भुत्त, पुण्यें ल
हीयें ए घरसुत्त ॥ १ ॥ पहेलुं सुख जे न जईयें गा
म, बीजुं सुख जे वसीयें गाम ॥ त्रीजुं सुख जे माने भू
प, चोथुं सुख जे रूप सरूप ॥ पांचमुं सुख जे छाा
यें रमें, छहुं सुख जे वेलो जमे ॥ कवि कहे सातमुं

सुख गमे, सकल लोक घर आवी नमे ॥ २ ॥ पहेलुं दुःख पडोशी चाड, बीजुं दुःख घर उग्युं जाड ॥ त्रीजुं दुःख नित सहीयें मार, चोथुं दुःख जे नजरें आहार ॥ पांचमुं दुःख पाला चालवुं, छठुं दुःख नित नित मागवुं ॥ कवि कहे मांचे माकड बहु, ए साते दुःख सुणजो सहु ॥ ३ ॥ पहेलुं दुःख जे परनी आश, बीजुं दुःख जे उंडो वास ॥ त्रीजुं दुःख जे बहु रुण चडे, चोथुं दुःख परने वश पडे ॥ पांचमुं दुःख जे न टले रोग, वांछ्यो न मले जेहने जोग ॥ कवि ज्ञन कहे नित्य खारूं नीर, ए साते दुःख सहे शरीर॥ ४ ॥

॥ गुणविन निसी कबाण, ज्ञान विन ब्रह्म योगीसर ॥ पति विण जुवती नेह, दीप विन अनुपममंदिर ॥ लूण विना रसवती, पत्र बिन जिस्यां तरुवर ॥ वदन नेत्र विहूण, नीर विण सार सरोवर ॥ विद्या चतुराई विन, चंद्र विना रजनी जिसी ॥ विनयमेर गणि इम कहे, तिम दान विना लक्षी किसी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥ ते अजाण्यां माणसां, रूपें जे राचंत ॥ दीप ज्योति पतंग जिम, पंख सहित दाजंत ॥ १ ॥ नर जो कडवां तुंबडा, गुणे करीने मीठ ॥ ते माणस केम वीसरे, जेह तणा गुण दीठ ॥ २ ॥ राति गमाई सोवते, दिवस गमाया खाय ॥ हीरा जैसा मनुष्य जनम, कवडी बदलें जाय ॥ ३ ॥ पठन गुनरव कवि चातुरी, ए तीनो बातां सहेल ॥ काम दहन मन बस करन, गगन चढन मुसकेल ॥ ४ ॥ प्रीत नली पंखेरु

आ, उडी जेह मिलंत ॥ माणस परवश बापडां, दूर रह्यां झूरंत ॥ ५ ॥ संपति सहु वेंचे मली, विपत्ति न वेंचे कोय ॥ संगत उनकी कीजीयें, नांग्या नेरु होय ॥ ६ ॥ सर सूके सूके कमल, पंखी दह दिसी जंत ॥ आपणा सोही आपणा, पर आपणा न हुंत ॥ ७ ॥ सज्जन एसा कीजियें, जैसा ज्वारिकाखेत ॥ थडे कटे टोचे लणे, तो धरा न मेले हेत ॥ ८ ॥ सज्जन एसा कीजीयें, जामें लखन बत्तीस ॥ नीड पडे नाजे नहीं, सूंपे अपनो सीस ॥ ए ॥ सो सज्जन लख मित्र कर, ताली मित्र अनेक ॥ सुख डुःख जासुं कीजियें, सो लाखूंमें एक ॥ १० ॥ सज्जन ऐसा कीजीयें, जैसी निशि उर चंद ॥ चंद बिना निशि आंधली, निशि बिनु चंदा अंध ॥ ११ ॥ केबिध चतुरकूं धन दीयो, के चतुराई लइ छीन ॥ एक चतुर और निर्धना, दोनुं डुःख क्या कीन ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्महित स्वाध्याय ॥ वालम ॥

॥ वेहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ माहारुं माहारुं म कर जीव तुं,जगमां नहीं ताहरुं कोय रे ॥ आप सवारथें सहु मल्या, हृदय विचारीने जोय रे ॥ माहरुं० ॥ १ ॥ दिन दिन आयु घटे ताहरुं, जिम जल अंजलि होय रे ॥ धर्म वेला नावे ढूकडो, कवण गति ताहारी होय रे ॥ महारुं०॥ ॥ २ ॥ रमणीशुं रंगें राचे रमे, कांई लीये बावल बाथ रे ॥ तन धन यौवन थिर नही, परनव नावे

तुऊ साथ रे ॥ माह्रुं० ॥ ३ ॥ एक घेर धवल मंगल हुवे, एक घेर रोवे बहु नार रे ॥ एक रामा रमे कंतशुं, एक छोडे सकल शणगार रे ॥ माह्रुं० ॥ ४ ॥ एक घर सहु मली बेसतां, नित नित करता विलास रे ॥ ते रे साजनीयो उठी गयो, थिर न रह्यो एक वास रे ॥ माह्रुं० ॥ ५ ॥ एह्वुं स्वरूप संसारनुं, चेत चेत जीव गमार रे ॥ दश दृष्टांतें रे दोहिलो, पामवो मणुत्र्य अवतार रे ॥ माह्रुं० ॥ ६ ॥ हर्षविजय कहे एह्वुं, जे जजे जिनपद रंग रे ॥ ते नर नारी वेगें वरे,मुक्ति वधू केरो संग रे॥मा०॥ ७॥इति॥

॥ अथ नेमजीना बार मास प्रारंजः ॥

॥ स्नेही वीरजी जयकारी रे ॥ ए देशी ॥

॥ चैत्र मासें ते चतुरा चिंते रे, नेम जई वस्या एकांत रे, मननी किम जांगे ब्रांत ॥ दयालु नेमजी दिल वसीयो रे, एतो शिवरमणीनो रसीयो ॥ दया०॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वैशाखें वनिता विलखे रे, डुःख देखीने मनडुं कलखे रे, पीयु मलवाने तनडुं तलखे ॥ दयालु० ॥ २ ॥ जेठें योवनें युवती लाजे रे, तडका लुकना वाजे रे ॥ विरही दील जींतर दाजे ॥ दयालु० ॥ ३ ॥ अबला एकेली आषाढें रे, वेलडी वलगी छे वाडें रे ॥ कस्या पंखीयें माला जाडें ॥ दयालु० ॥ ४ ॥ श्रावण सुंदर सोजागी रे, वरसे झरमर झरमर झड लागी रे ॥ पिक मोर मधुर स्वर रागी ॥ दयालु० ॥ ५ ॥ जली जामिनी जाद्रव

मासें रे, पीयुने मळवानी आशें रे ॥ दिन रेन गमे वीशवासें ॥ दयालु० ॥ ६ ॥ आशोयें तो अवनी उपे रे, तरुणीनी शोना लोपे रे ॥ राणी राजुल रतीय न कोपे ॥ दयालु० ॥ ७ ॥ कहे कार्त्तिक कामिनी काती रे, पीयु विरहें दाधी नाती रे ॥ दीसे गुंजा तणी पेरें राती ॥ दयालु० ॥ ८ ॥ मागशिरें माननी मदमाती रे, कोकिल सम कंठें गाती रे ॥ दीपे कनकलता तनु जाती ॥ दयालु० ॥ ए ॥ पोपें प्रेम सवायो कीजें रे, अबलानो अंत न लीजें रे ॥ उप शम रस अमृत पीजें ॥ दयालु० ॥ १० ॥ माहा म हिने मनोहर नारी रे, उग्रसेन धूआ कनी सारी रे॥ वालम तमें जूउ विचारी ॥ दयालु० ॥ ११ ॥ फाल गुणें केशुवन फलीयां रे, नेमजी राजुलने मलीया रे ॥ नव नवनां पातक टलीयां ॥ दयालु० ॥ १२ ॥ बार मास नली परें गाया रे,आज अधिकानंदमें पाया रे ॥ राज रतन रसुल पुर गाया ॥ दयालु०॥ १३॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार ॥ देशी उपरनी ॥

॥ रविवारें ते हो रढीयाला रे, आदित्यनी आक री जाला रे ॥ एम राजिमती कहे बाला ॥ प्रनुजी मानियें अरदास रे, विसारी न मूको निराश ॥ प्रनु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोम शोल कलायें ठे पूरो रे, शशी चंद नहीं अधूरो रे, ॥ ते माटे चिंता चूरो ॥ ॥ प्रनु० ॥ २ ॥ नोम मंगल नाग्य निधान रे, जेणें दूर कस्युं अनिमान रे ॥ नमीयें नेमजी नगवान ॥

॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ बुधें प्रभुबोध वधाऱ्यो रे, जेणें संसारनो जय वाऱ्यो रे, जव्य जीवने पार उताऱ्यो ॥ ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ गुरुथी बृहस्पति हाऱ्यो रे, जेणे मोह मत्सर मद माऱ्यो रे ॥ जीवने जम जयथी उगाऱ्यो ॥ ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ भृगु शुक्रथकी जय जागा रे, जिम नाहर आगें जागा रे ॥ निज थानक जोवा लागा ॥ ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ शनिश्चर चीड कहीजें रे, स्थिरथानक वास लहीजें रे ॥ प्रभु गुण अवगुण परखीजें ॥ ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ सात वार ए राजुल राणी रे, कहे राजरतन एम वाणी रे ॥ प्रभु गुण गाये सुखिया प्राणी ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ राजुलनी पंदर तिथि प्रारंभः ॥देशी जपरनी॥

॥ पडवे पिउ प्रीतज पालो रे, प्रेमदाशुं अबोला टालो रे ॥ नेह करीने नजरें जालो ॥ मनोहर मलवुं सुधारस तोलें रे, राणी राजुल एणि पेरें बोले ॥मनोहर० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बीजें बीजो नेह न कीजें रे, जोगाला छेह न दीजें रे ॥ खोटी वातनो अंत न लीजें ॥ मनो० ॥ २ ॥ त्रीजें ते तमने नमीयें रे,पीयु परदेशें केम जमीयें रे॥ निज स्वामिनी संगें रमीयें ॥ मनो० ॥ ३ ॥चोथें चित्त चोखुं कीधुं रे, जेणें दान अजय जग दीधुं रे॥ तेणें जीवितनुं फल लीधुं ॥ ॥ मनो० ॥ ४ ॥ पांचमे पंचम गति जोई रे, जाणे केशरनी खसबोई रे ॥ किम काढी नं खाए धोई ॥ ॥ मनो० ॥ ५ ॥ छठे षड्विध जीवना त्राता रे, जि

म आठे प्रवचन माता रे ॥ ए तो साचो करम विधाता ॥ मनो० ॥ ६ ॥ गयो शोक सातम तिथि सारी रे, नेम निरंजन ब्रह्मचारी रे ॥ तेना नामनी जाउं बलिहारी ॥ मनो० ॥ ७ ॥ आवी आठम आनंद कारी रे, हुंतो आठ जवांतर नारी रे ॥ वालम मत मूको विसारी ॥ मनो० ॥ ८ ॥ नवमें नवमो जव सारो रे, नेम राजुलनो आधारो रे ॥ नेह निर्वही पार उतारो ॥ मनो० ॥ ए ॥ दशमे प्रजुदया धरीजें रे, अबलानी आशीष लीजें रे ॥ ते माटे दरिसन दीजें ॥ मनो० ॥ १० ॥ अगीयारशें एकली नारी रे, पीयु मेली तमो निरधारी रे ॥ प्रीतम तमें पर उपकारी ॥ मनो० ॥ ११ ॥ बारसना बोल संजारो रे, आडो आव्यो वरसालो रे ॥ मोहन किम जरीयें उचालो ॥ मनो० ॥ १२ ॥ तेरशें तोरणथी फरिया रे, गिरनार जणी संचरीया रे ॥ नेम राजिमती नहीं वरीया ॥ मनो० ॥ १३ ॥ चौदशथी चिंता जांगी रे, सुत समुद्रविजय जय लागी रे ॥ प्रजु थई बेग नीरागी ॥ मनो० ॥ १४ ॥ पूनमें तो परम पद धारी रे, थया जनम मरण जय वारी रे ॥ प्रजुयें राजुलने तारी ॥ मनो० ॥ १५ ॥ पन्नर तिथि पूरी गाई रे, कहे राजरतन सुखदाई रे ॥ तेज खेटक पुरमां सवाई ॥ मनो० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथश्री शत्रुंजयनी गरबी ॥ जे कोई अंबिकाजी ॥
॥ मातने आराधशे रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ जे कोई सिद्धगिरिराजने आराधशे रे लोल, तेनी संपदा मनोरथ वाधशे रे लोल ॥ गिरिराज छे नवो दधि तारणो रे लोल, माहा तीरथ छे सर्व दुःख वारणो रे लोल ॥ १ ॥ पुंडर गिरि छे मनोरथ पूरणो रे लोल, सिद्धक्षेत्र छे नवोदधि चूरणो रे लोल ॥ एनां एकवीश नाम छे सोहामणां रे लोल, हुंतो वंदना करीने लहुं नामणा रे लोल ॥ २ ॥ एना साधनथी तप जप आकरे रे लोल, मुनि सिद्धा छे कांकरे कांकरे रे लोल ॥ मुनिराजजी अनंत मुगतें गया रे लोल, सिद्ध राज थइ अविनाशी थया रे लोल ॥ ३ ॥ तेहनां नाम कहुंने विनंति करुं रे लोल, एना नामथी पाप सरवे हरुं रे लोल ॥ पांच पांमव ने नारद मुनिवरा रे लोल, सोलंग सूरि सुदर्शन मुनि तरया रे लोल ॥ ४ ॥ द्रविड वारीखेण देवकीना नंदजीरे लोल, महीपालजीने मही पति चंदजी रे लोल ॥ थावच्चा कुमरने मुनि विद्याधरा रे लोल, सिद्धि सांवने प्रद्युम्नजी जिहां वर्या रे लोल ॥ ॥ ५ ॥ (वली जालि मयाली उवालीने रे लोल) ध्यान धरियां छे चित एक आसनें रे लोल, जोगी तर्या छे चंद्रप्रभ शासनें रे लोल ॥ भरत रामचंद्रजी ने नंदिखेणजी रे लोल,सिद्ध सीलापें चढ्या छे क्षपकश्रेणिजी रे लोल ॥६॥ नमि विनमी ने मुनि शुकराजजी रे लोल, ज्ञातासूत्रमां सार्यां छे सर्व काजजी रे लोल ॥ केतां नाम कहुं ते मुनिराजनां रे लोल, जीभ एकनें अनंत नाम साजना रे लोल ॥७॥ एवा अनंत अनंत

मुनिजी तख्या रे लोल, तेतो दर्शन ज्ञानथकी नख्या रे लोल ॥ नमोत्थुणं ते सात पदमें मल्या रे लोल, तेतो चार अनंत सुखमां नल्या रे लोल ॥ ८ ॥ जई व सीया ठे सिद्ध शिला उपरी रे लोल, तेनी सादि अनंत स्थिति ठे खरी रे लोल ॥ हुंतो जाणुं बुं गणधर वाणी यें रे लोल, सहु सिद्धगिरि महातम जाणीयें रे लोल ॥ ए ॥ वार पूरव नवाणुं आदिनाथजी रे लोल, समो सख्या ठे पुंमरिक साथजी रे लोल ॥ गिरि फरस्यो त्रेवी श जिनराजजी रे लोल, अनशन कीधां अनंत मुनिरा जजी रे लोल ॥ १० ॥ सेवो सेवो ए गिरि सुख कंदने रे लोल, सेवो सेवो मरुदेवी नंदनें रे लोल ॥ वंदो वंदो इक्ष्वाकु कुल सूरने रे लोल, पूजो पूजो श्रीरुषन्न हजूरने रे लोल ॥ ११ ॥ (नाजी राजाना कुलमांहि दिनकरू रे लोल) रुषन्न नाथजीनो वंश ठे गुणाकरु रे लोल, आदिनाथजीना पाटवी प्रनाकरू रे लोल ॥ जेहना आठ पाट आरीसा नुवनमां रे लोल, पाम्या केवल ग्यान शुन्न ध्यानमां रे लोल ॥ १२ ॥ जेहना पाटवी असंख्य मुगतें गया रे लोल, तेतो सिद्ध मं मिकामां सरवे कह्या रे लोल ॥ नरत रायथी उद्धार शोल ठे सहु रे लोल, विच अंतरें उद्धार थया ठे बहु रे लोल ॥ १३ ॥ जे कोई गिरराज दरिसन नाविया रे लोल, इहां संघवी असंख्य संघ लाविया रे लोल ॥ माता चक्केसरीजी सुखदायिनी रे लोल, नुजा आठने गरुड सिंह वाहिनी रे लोल ॥ १४ ॥ विक्रमराजथी

अढारशें सत्योत्तरें रे लोल,मार्गशिर मास ने त्रयोदशि वासरें रे लोल॥गरबी गाइ छे कवि दीपराजजीरे लोल, जे सांभले तेहनां सरशे काजजी रे लोल॥१५॥ इति॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकरनुं स्तवनं ॥

॥ रिसह जिणेसर प्रणमी पाय, बीजा अजित जिणेसर राय ॥ संभव स्वामी सुख भंडार, अभि नंदन नामें जयकार ॥ १ ॥ सुमति पद्म प्रभु देव सुपास, चंद्रप्रभ जिन पूरे आस ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिणंद, वासुपूज्य दीठे आणंद ॥ २ ॥ विमल अनंत धरम जगदीश, शांति कुंथु अर नामुं शीश ॥ मल्लिनाथ मुनि सुव्रत देव, नमि नेमीसर सारे सेव ॥ ३ ॥ पास वीर नित प्रणमे जेह, रुद्धि सिद्धि नर पामे तेह ॥ चोवीशे गुण तणा निवास, भाव मुनि कहे पूरो आश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन ॥ धोलनी देशी ॥

॥ शांति जिनेसर साहेब वंदो, अनुभव रसनो कंदो रे ॥ मुखने मटके लोचन लटके, मोह्या सुर नर वृंदो रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ आंबे मंजरी कोयल टहुके, मेघ घटा जेम मोरो रे ॥ तेम जिनवरने देखी हरखुं, वली जिम चंद चकोरो रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ जिन प्रतिमा श्रीजिनवर भांखी, सूत्र घणां छे साखी रे ॥ सुर नर मुनिवर वंदन पूजा, करतां शिव अभि लाखी रे ॥शांति०॥ ३ ॥ रायप्पसेणी प्रतिमा पूजी, सूरियाभ समकेत धारी रे ॥ जीवाभिगमें प्रतिमा

पूजी, विजयदेव अधिकारी रे ॥शांति०॥४॥ जिनवर बिंब विना नवि वंडुं, आणंदजी एम बोले रे ॥ सातमे अंगें समकित मूलें, अवर नहि तस तोले रे ॥ ॥ शांति० ॥ ५ ॥ ज्ञातासूत्रें द्रौपदी पूजा, करती शिवसुख मागे रे ॥ राय सिद्धारथ प्रतिमा पूजी, कल्पसूत्रमांहे रागें रे ॥ शांति०॥ ६ ॥ विद्याचारण मुनिवर वंदी, प्रतिमा पांचमे अंगें रे ॥ जंघाचारण मुनिवर वंदी,जिन पडिमा मन रंगें रे ॥ शांति०॥ ७ ॥ आर्य सुहस्ती सूरि उपदेशें, चावो संप्रतिराय रे ॥ सवा कोडी जिनबिंब जराव्यां, धन धन एहनी माय रे ॥ शांति० ॥ ८ ॥ मोकली प्रतिमा अजय कुमारें, देखी आर्द्रकुमार रे ॥ जातिस्मरणें समकित पामी, वरियो शिववधु सार रे ॥ शांति०॥ए॥ इत्यादिक बहु पाठ कह्या बे, सूत्रमांहे सुखकारी रे ॥ सूत्रतणो एक वरण उथापें, ते कह्यो बहुल संसारी रे ॥ शांति० ॥ १० ॥ तेमाटे जिन आणा धारी, कुमति कदाग्रह निवारी रे ॥ जक्ति तणां फल उत्तराध्ययनें, बोध बीज सुखकारी रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ एक जवें दोय पदवी पाम्या, शोलमा श्रीजिनराय रे ॥ मुऊ मन मंदिरिये पधारावो, धवल मंगल गवराय रे ॥ ॥ शांति० ॥ १२ ॥ जिन उत्तमपद रूप अनुपम, कीर्त्ति कमलानी शाला रे ॥ जिनविजय कहे प्रजुजीनी जक्ति, करतां मंगल माला रे ॥ शांति० ॥१३॥ इति ॥

॥ अथ नेम जिन स्तवनं ॥ राग कल्याण ॥

॥ घरें आवो तो पूछुं एक वातडली रे ॥ घरे० ॥ ताह्यरेनें माह्यरे साहेबा प्रीत घणेरी, पडिय पटोलें भातडली रे ॥घरे०॥१॥ तोरणथी रथ फेर चलायो, जाणी तुमारी जातडली रे ॥घरे०॥२॥ महेर करीने माह्यरे मंदिर पधारो, रह्योने आजुनी रातडली रे ॥घरे०॥३॥ नेम राजुल दोये सरग सीधाए, मुक्तें गया मली भातडली रे ॥घरे०॥४॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, तुमशुं बांधी मारी प्रीतडली रे॥घरे०॥५॥इति॥

॥ अथ नेमजिन स्तवनं ॥

॥ तोरण आवी रथ पाछो केम फेरो रे ॥ वा०॥ संयम ल्यो तो साथें अमने तेडो ॥ मारा वा०॥ उभां उभां अरज करे सहु लोक रे ॥वा०॥ बोल कोल किम करीने थाशे फोक ॥ मारा० ॥ १ ॥ नेमजी तमें तो लीलाना छो साथी रे ॥ वा० ॥ कीडीना रोक्या केम रहेशो हाथी ॥ मारा० ॥ नेमजी तमें तो धरी रह्या एक ध्यान रे ॥ वा०॥ आवडलुं ते किहांथी आव्युं ध्यान ॥ माहा०॥ २ ॥ नोधारां ते केने उंथें रेहेशुं रे ॥ वा० ॥ हियडलानां दुःखडां केने केहेशुं ॥ मारा०॥ उदयर तनना रसिया वालम नेम रे ॥ वा०॥ राजिमतीना सीधा वंछित प्रेम ॥ माहारा वा० ॥ ३ ॥

॥ प्रस्ताविक दुहो ॥

॥ सबे न सब युग सरस हे, ज्यां लग न परत काम ॥ हेम हुताशन परखियो, पीतल निकसत श्याम॥१

॥ अथ कर्मनी मूलोत्तर प्रकृतिनां नाम ॥

॥ तेमां प्रथम आठ मूलप्रकृतिनां नाम ॥

१ ज्ञानावरणीय कर्म.	५ आयुःकर्म.
२ दर्शनावरणीय कर्म.	६ नाम कर्म.
३ वेदनीय कर्म.	७ गोत्र कर्म.
४ मोहनीय कर्म.	८ अंतराय कर्म.

॥ पहेला ज्ञानावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ मतिज्ञानावरणीय.	४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय.
२ श्रुतज्ञानावरणीय.	५ केवलज्ञानावरणीय.
३ अवधिज्ञानावरणीय.	

॥ बीजा दर्शनावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति नव ॥

१ चक्षुदर्शनावरणीय.	६ निद्रा निद्रा.
२ अचक्षुदर्शनावरणीय.	७ प्रचला.
३ अवधिदर्शनावरणीय.	८ प्रचला प्रचला.
४ केवलदर्शनावरणीय.	९ थीणद्धी.
५ निद्रा.	

॥ त्रीजा वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति बे ॥

१ शातावेदनीय.	२ अशातावेदनीय.

॥ चोथा मोहनीयकर्मनी उत्तर प्रकृति अठावीश ॥

१ सम्यक्त्वमोहनीय.	१५ संज्वलन माया.
२ मिश्रमोहनीय.	१६ अनंतानुबंधीलोभ.
३ मिथ्यात्वमोहनीय.	१७ अप्रत्याख्यानी लोभ.
४ अनंतानुबंधी क्रोध.	१८ प्रत्याख्यानी लोभ.
५ अप्रत्याख्यानी क्रोध.	१९ संज्वलन लोभ
६ प्रत्याख्यानी क्रोध.	२० हास्य नोकषाय.
७ संज्वलन क्रोध.	२१ रति नोकषाय.
८ अनंतानुबंधीमान.	२२ अरति नोकषाय.
९ अप्रत्याख्यानीमान.	२३ शोक नोकषाय.
१० प्रत्याख्यानी मान.	२४ भय नोकषाय.
११ संज्वलन मान.	२५ जुगुप्सा नोकषाय.
१२ अनंतानुबंधी माया.	२६ पुरुषवेद नोकषाय.
१३ अप्रत्याख्यानीमाया	२७ स्त्रीवेद नोकषाय.
१४ प्रत्याख्यानी माया.	२८ नपुंसकवेद नोकषाय.

॥ पांचमा आयुः कर्मनी उत्तर प्रकृति चार ॥

१ देवायु.	३ तिर्यगायु.
१ मनुष्यायु.	४ नरकायु.

॥ छठा नामकर्मनी उत्तर प्रकृति ॥ १०३ ॥

१ नरकगति नामकर्म.	४ देवगति नामकर्म.
२ तिर्यग्गति नामकर्म.	५ एकेंद्रिय जातिनाम.
३ मनुष्यगति नामकर्म.	६ बेंद्रिय जातिनाम.

७ तेंद्रिय जातिनाम.
८ चतुरिंद्रियजातिनाम.
९ पंचेंद्रिय जातिनाम.
१० औदारिकशरीरनाम.
११ वैक्रिय शरीरनाम.
१२ आहारकशरीरनाम.
१३ तैजस शरीरनाम.
१४ कार्मण शरीरनाम.
१५ औदारिक अंगोपांग.
१६ वैक्रिय अंगोपांग.
१७ आहारक अंगोपांग.
१८ औदारिक औदारिक बंधन.
१९ औदारिकतैजसबंधन.
२० औदारिककार्मणबंधन
२१ औदारिकतैजसकार्मण बंधन.
२२ वैक्रियवैक्रियबंधन.
२३ वैक्रियतैजसबंधन.
२४ वैक्रियकार्मणबंधन.
२५ वैक्रिय तैजसकार्मण बंधन.
२६ आहारक आहारक बंधन.
२७ आहारक तैजसबंधन.
२८ आहारककार्मणबंधन
२९ आहारक तैजस कार्मण बंधन.
३० तैजस तैजस बंधन.
३१ तैजस कार्मण बंधन.
३२ कार्मणकार्मण बंधन.
३३ औदारिक संघातन.
३४ वैक्रिय संघातन.
३५ आहारक संघातन.
३६ तैजस संघातन.
३७ कार्मण संघातन.
३८ वज्रऋषभ नाराचसंघयण.
३९ ऋषभ नाराचसंघयण.
४० नाराच संघयण.
४१ अर्द्धनाराचसंघयण.
४२ कीलिका संघयण.
४३ छेवठुं संघयण.
४४ समचतुरस्त्र संस्थान.
४५ न्यग्रोध संस्थान.
४६ सादि संस्थान.
४७ वामन संस्थान.
४८ कुब्ज संस्थान.

४९ हुंड संस्थान.
५० कृष्णवर्ण नाम.
५१ नीलवर्ण नाम.
५२ लोहितवर्ण नाम.
५३ हारिद्रवर्ण नाम.
५४ श्वेतवर्ण नामकर्म.
५५ सुरभिगंध.
५६ दुरभिगंध.
५७ तिक्तरस नामकर्म.
५८ कटुकरस नामकर्म.
५९ कषायरस नामकर्म.
६० आम्लरस नामकर्म.
६१ मधुररस नामकर्म.
६२ कर्कशस्पर्श नामकर्म.
६३ मृदुस्पर्श नामकर्म.
६४ गुरुस्पर्श नामकर्म.
६५ लघुस्पर्श नामकर्म.
६६ शीतस्पर्श नामकर्म.
६७ उष्णस्पर्श नामकर्म.
६८ स्निग्धस्पर्श नामकर्म.
६९ रूक्षस्पर्श नामकर्म.
७० नरकानुपूर्वी.
७१ तिर्यगानुपूर्वी.
७२ मनुष्यानुपूर्वी.
७३ देवानुपूर्वी.
७४ शुभविहायोगति.
७५ अशुभविहायोगति.
७६ पराघात नामकर्म.
७७ उश्वास नामकर्म.
७८ आतप नामकर्म.
७९ उद्योत नामकर्म.
८० अगुरुलघु नामकर्म.
८१ तीर्थंकर नामकर्म.
८२ निर्माण नामकर्म.
८३ उपघात नामकर्म.
८४ त्रस नामकर्म.
८५ बादर नामकर्म.
८६ पर्याप्त नामकर्म.
८७ प्रत्येक नामकर्म.
८८ स्थिर नामकर्म.
८९ शुभ नामकर्म.
९० सौभाग्य नामकर्म.
९१ सुस्वर नामकर्म.
९२ आदेय नामकर्म.
९३ यशःकीर्त्ति नामकर्म.
९४ स्थावर नामकर्म.
९५ सूक्ष्म नामकर्म.
९६ अपर्याप्त नामकर्म.

९७ साधारण नामकर्म.
९८ अस्थिर नामकर्म.
९९ अशुन्न नामकर्म.
१०० डुर्नाग्य नामकर्म.
१०१ डुःस्वर नामकर्म.
१०२ अनादेय नामकर्म.
१०३ अयशोऽकीर्त्ति नामकर्म.

॥ सातमा गोत्रकर्मनी उत्तर प्रकृति बे ॥

१ उच्चैर्गोत्र.
२ नीचैर्गोत्र.

॥ आठमा अंतराय कर्मनी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ दानांतराय.
२ लान्नांतराय.
३ नोगांतराय.
४ उपन्नोगांतराय.
५ वीर्यांतराय.

एवं आठ कर्मनी एकशो अठावन उत्तर प्रकृति जाणवी.

॥ अथ नव तत्त्वनां नाम ॥

१ जीवतत्त्व— ४ पापतत्त्व— ७ निर्जरातत्त्व.
२ अजीवतत्त्व—५ आश्रयतत्त्व ८ बंधतत्त्व.
३ पुण्यतत्त्व— ६ संवरतत्त्व—९ मोक्षतत्त्व.

॥ हवे ए नव तत्त्वमांहेला प्रत्येकें एकेका तत्त्व ना जुदा जुदा नेदोनी संख्या विवरीने लखीयें बैयें. तिहां प्रथम जीव तत्त्वना चौद नेद बे, ते लखीयें बैयें.

१ सूक्ष्म एकेंड्रिय पर्याप्ताः
२ बादर एकेंड्रिय पर्याप्ताः
३ संज्ञी पंचेंड्रिय पर्याप्ताः

४ असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताः
५ बेंद्रिय पर्याप्ताः
६ तेंद्रिय पर्याप्ताः
७ चउरिंद्रिय पर्याप्ताः

ए सात भेद पर्याप्ताना तेनी साथें एज सात भेद अपर्याप्ताना भेळीयें, तेवारें सर्व मळी जीवतत्त्वना चउद भेद थाय, ते अरूपी जाणवा.

॥ बीजा अजीव तत्त्वना चौद भेद कहे छे ॥

१ धर्मास्तिकायस्कंध.
२ धर्मास्तिकायदेश.
३ धर्मास्तिकायप्रदेश.
४ अधर्मास्तिकायस्कंध.
५ अधर्मास्तिकायदेश.
६ अधर्मास्तिकायप्रदेश.
७ आकाशास्तिकायस्कंध.
८ आकाशास्तिकायदेश.
९ आकाशास्तिकायप्रदेश.
१० काळवर्त्तनालक्षण.
११ पुद्गलास्तिकायस्कंध.
१२ पुद्गलास्तिकायदेश.
१३ पुद्गलास्तिकायप्रदेश.
१४ पुद्गलास्तिकायपरमाणु

एमां धर्मास्तिकायादिकना दश भेद अरूपी अने पुद्गलास्तिकायना चार भेद रूपी जाणवा.

॥ त्रीजा पुण्यतत्त्वना बेंहेंताळीश भेद कहे छे ॥

१ शातावेदनीय.
२ उच्चैर्गोत्र.
३ मनुष्यगति.
४ मनुष्यानुपूर्वी.
५ देवगति.
६ देवानुपूर्वी.
७ पंचेंद्रियजातिनामकर्म
८ औदारिकशरीरनामकर्म

९ वैक्रिय शरीरनामकर्म
१० आहारक शरीरनाम.
११ तैजसशरीरनामकर्म.
१२ कार्मणशरीरनामकर्म.
१३ औदारिक अंगोपांग.
१४ वैक्रियअंगोपांगनाम
१५ आहारक अंगोपांग.
१६ वज्रऋषभनाराच संघयण.
१७ समचतुरस्रसंस्थान.
१८ शुभवर्ण.
१९ शुभगंध.
२० शुभरस.
२१ शुभस्पर्श.
२२ अगुरु लघुनामकर्म.
२३ पराघात नामकर्म.
२४ श्वासोच्छ्वासनामक०
२५ आतप नामकर्म.
२६ उद्योत नामकर्म.
२७ शुभ विहायोगति नामकर्म.
२८ निर्माण नामकर्म.
२९ त्रस नामकर्म.
३० बादर नामकर्म.
३१ पर्याप्ति नामकर्म.
३२ प्रत्येक नामकर्म.
३३ स्थिर नामकर्म.
३४ शुभ नामकर्म.
३५ सौभाग्य नामकर्म.
३६ सुस्वर नामकर्म.
३७ आदेय नामकर्म.
३८ यशःकीर्त्ति नामकर्म.
३९ देवायु.
४० मनुष्यायु.
४१ तिर्यंचायु.
४२ तीर्थंकर नामकर्म.

ए बेहेंतालीश भेद रूपी जाणवा.

॥ चोथा पाप तत्वना ब्याशी भेद कहे छे ॥

१ मतिज्ञानावरणीय.
२ श्रुतज्ञानावरणीय.
३ अवधिज्ञानावरणीय.
४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय
५ केवलज्ञानावरणीय.
६ दानांतराय.

७ लाभांतराय.
८ भोगांतराय.
९ उपभोगांतराय.
१० वीर्यांतराय.
११ चक्षुदर्शनावरणीय.
१२ अचक्षुदर्शनावरणीय
१३ अवधिदर्शनावरणीय
१४ केवलदर्शनावरणीय.
१५ निद्रा.
१६ निद्रानिद्रा.
१७ प्रचला.
१८ प्रचलाप्रचला.
१९ थीणद्धी.
२० नीचैर्गोत्र
२१ अशाता वेदनीय.
२२ मिथ्यात्वमोहनीय.
२३ स्थावरनामकर्म.
२४ सूक्ष्मनामकर्म.
२५ अपर्याप्तनामकर्म.
२६ साधारणनामकर्म.
२७ अस्थिरनामकर्म.
२८ अशुभनामकर्म.
२९ दुर्भाग्यनामकर्म.
३० दुःस्वरनामकर्म.
३१ अनादेयनामकर्म.
३२ अयशनामकर्म.
३३ नरकगति.
३४ नरकायु.
३५ नरकानुपूर्वी.
३६ अनंतानुबंधी क्रोध.
३७ अनंतानुबंधी मान.
३८ अनंतानुबंधी माया.
३९ अनंतानुबंधी लोभ.
४० अप्रत्याख्यानी क्रोध.
४१ अप्रत्याख्यानी मान.
४२ अप्रत्याख्यानीमाया.
४३ अप्रत्याख्यानी लोभ.
४४ प्रत्याख्यानी क्रोध.
४५ प्रत्याख्यानी मान.
४६ प्रत्याख्यानी माया.
४७ प्रत्याख्यानी लोभ.
४८ संज्वलन क्रोध.
४९ संज्वलन मान.
५० संज्वलन माया.
५१ संज्वलन लोभ.
५२ हास्यनो कषाय.
५३ रतिनो कषाय.
५४ अरतिनो कषाय.

५५ शोकनो कषाय.
५६ जयनो कषाय.
५७ डुगंछानो कषाय.
५८ पुरुषवेदनो कषाय.
५९ स्त्रीवेदनो कषाय.
६० नपुंसकवेदनो कषाय
६१ तिर्यंचगति.
६२ तिर्यंचानुपूर्वी.
६३ एकेंद्रियजाति.
६४ बेंद्रियजाति.
६५ तेंद्रियजाति.
६६ चतुरिंद्रियजाति.
६७ अशुजविहायोगति.
६८ उपघात नामकर्म.
६९ अप्रशस्त वर्ण.
७० अप्रशस्त गंध.
७१ अप्रशस्त रस.
७२ अप्रशस्त स्पर्श.
७३ रुषजनाराचसंघयण
७४ नाराचसंघयण.
७५ अर्द्धनाराच संघयण.
७६ कीलिकासंघयण.
७७ छेवटुं संघयण.
७८ न्यग्रोधपरिमंमलसं०
७९ सादिसंस्थान.
८० वामनसंस्थान.
८१ कुब्जसंस्थान.
८२ हुंमकसंस्थान.

ए ब्याशी जेद रूपी जाणवा.

॥ पांचमा आश्रव तत्वना बेंहेंतालीश जेद कहे छे ॥

१ स्पर्शनेंद्रिय.
२ रसनेंद्रिय.
३ घ्राणेंद्रिय.
४ चक्षुरिंद्रिय.
५ श्रोत्रेंद्रिय.
६ क्रोध कषायं.
७ मान कषाय.
८ माया कषाय.
९ लोज कषाय.
१० प्राणातिपात अव्रत.
११ मृषावाद अव्रत.
१२ अदत्तादान अव्रत.
१३ मैथुन अव्रत.
१४ परिग्रह अव्रत.

१५ अशुनमनोयोग.
१६ अशुनवचनयोग.
१७ अशुनकाययोग.
१८ कायिकी क्रिया.
१९ अधिकरणकी क्रिया.
२० प्रद्वेषिकी क्रिया.
२१ पारितापनकी क्रिया.
२२ प्राणातिपातकीक्रिया
२३ आरंनकी क्रिया.
२४ पारिग्रहिकी क्रिया.
२५ मायाप्रत्ययिकीक्रिया
२६ मिथ्यात्वदर्शनप्रत्ययिकी क्रिया.
२७ अप्रत्याख्यानकीक्रिया
२८ दृष्टिकी क्रिया.
२९ पृष्टिकी क्रिया.
३० पाडुच्चकी क्रिया.
३१ सामंतोपनिपातिकी.
३२ नैशस्त्रिकी क्रिया.
३३ स्वहस्तकी क्रिया.
३४ आज्ञापनिकी क्रिया.
३५ विदारणिकी क्रिया.
३६ अनानोगिकी क्रिया.
३७ अनवकांक्षप्रत्ययिकी क्रिया.
३८ प्रयोगिकी क्रिया.
३९ समुदायिकी क्रिया.
४० प्रेमकी क्रिया.
४१ द्वेषिकी क्रिया.
४२ ईर्यापथिकी क्रिया.

ए बेहेंतालीश नेदरूपी जाणवा.

॥ ठठा संवरतत्त्वना सत्तावन नेद कहे ठे ॥

१ ईर्यासमिति.
२ नाषासमिति.
३ एषणासमिति.
४ आदान नंममतनिक्षेपणासमिति.
५ उच्चारपासवणखेलजलसिंघाणजलपारिष्ठापनिकासमिति.
६ मनोगुप्ति.
७ वचनगुप्ति.

८ कायगुप्ति.
९ क्षुधापरिसह.
१० पिपासापरिसह.
११ शीतपरिसह.
१२ उष्णपरिसह.
१३ दंशमशकपरिसह.
१४ अचेलक परिसह.
१५ अरतिपरिसह.
१६ स्त्रीपरिसह.
१७ चर्यापरिसह.
१८ नैषेधिकीपरिसह.
१९ शय्यापरिसह.
२० आक्रोशपरिसह.
२१ वधपरिसह.
२२ याचनापरिसह.
२३ अलाभपरिसह.
२४ रोगपरिसह.
२५ तृणफरसपरिसह.
२६ मलपरिसह.
२७ सत्कारपरिसह.
२८ प्रज्ञापरिसह.
२९ अज्ञानपरिसह.
३० सम्यक्त्वपरिसह.
३१ क्षमाधर्म.
३२ मार्दवधर्म.
३३ आर्यवधर्म.
३४ मुक्तिधर्म.
३५ तपोधर्म.
३६ संयमधर्म.
३७ सत्यधर्म.
३८ शौचधर्म.
३९ अकिंचनधर्म.
४० ब्रह्मचर्यधर्म.
४१ अनित्यभावना.
४२ अशरणभावना.
४३ संसारभावना.
४४ एकत्वभावना.
४५ अन्यत्वभावना.
४६ अशुचिभावना.
४७ आश्रवभावना.
४८ संवरभावना.
४९ निर्ज्जराभावना.
५० लोकस्वरूपभावना.
५१ बोधिदुर्लभभावना.
५२ धर्मभावना.
५३ सामायिक चारित्र.
५४ छेदोपस्थापनीय चारित्र.

५५ परिहारविशुद्धिचारित्र. | ५७ यथाख्यातचारित्र.
५६ सूक्ष्मसंपरायचारित्र.

ए सत्तावन्न भेद अरूपी जाणवा.

॥ सातमा निर्जरा तत्त्वना बार भेद कहे छे ॥

तेमां प्रथम छ प्रकारें बाह्य तप कहे छे.	छ प्रकारें अभ्यंतर तप कहे छे.
१ अनशन तप.	७ प्रायश्चित्त तप.
२ ऊणोदरी तप.	८ विनय तप.
३ वृत्तिसंक्षेप तप.	९ वैयावच्च तप.
४ रसत्याग तप.	१० सज्झाय तप.
५ कायक्लेश तप.	११ ध्यान तप.
६ संलीनता तप.	१२ उपसर्ग तप.

ए बार भेद अरूपी जाणवा.

॥ आठमा बंधतत्त्वना चार भेद कहे छे ॥

१ प्रकृतिबंध.	३ अनुभागबंध.
२ स्थितिबंध.	४ प्रदेशबंध.

ए चार भेद अरूपी जाणवा.

॥ नवमा मोक्षतत्त्वना नव भेद कहे छे ॥

१ छतापदनीप्ररूपणानुं द्वार.	३ क्षेत्रद्वार.
	४ स्पर्शनाद्वार.
२ द्रव्यप्रमाणद्वार.	५ कालद्वार.

६ अंतरद्वार. | ७ नागद्वार.
८ क्षायिकादिकनावद्वार. | ए अल्पबहुत्वद्वार.

ए नव नेद अरूपी जाणवा.

अथ चार गतिमां रहेला समस्त संसारी जीव, चोवीश दंमकोने विषे परिच्रमण करे ले, ते दंमकनां नाम कहे ले. तिहां प्रथम सात नारकीनो एक दंमक ले, ते साते नारकीनां नाम तथा गोत्र, नीचें प्रमाणें ले.

नाम.	गोत्र.
१ घमा.	रत्नप्रना.
२ वंसा.	शर्करप्रना.
३ सैला.	वालुकप्रना.
४ अंजणा.	पंकप्रना.
५ रिठा.	धूमप्रना.
६ मघा.	तमप्रना.
७ माघवती.	तमतमप्रना

हवे दश नवनपतिना दश दंमक तेनां नाम कहे ले.

१ असुरकुमार निकायनो दंमक.
२ नागकुमार निकायनो दंमक.
३ सुवर्णकुमार निकायनो दंमक.
४ विद्युत्कुमार निकायनो दंमक.
५ अग्निकुमार निकायनो दंमक.
६ द्वीपकुमार निकायनो दंमक.
७ उदधिकुमार निकायनो दंमक.
८ दिशिकुमार निकायनो दंमक.
ए वायुकुमार निकायनो दंमक.
१० स्तनितकुमार निकायनो दंमक.

बारमो पृथिवी कायनो दंडक, तेना मूलनाम छ छे, ते कहे छे.

१ सुना. २ सुधा. ३ वालुया.
४ मणशिल. ५ शर्करा. ६ खरपुढवी.

॥ हवे ए पृथिवी कायना भेद कहे छे ॥

१ स्फाटिकरत्न. २ मणिरत्न. ३ रत्ननी सर्वजाति.
४ परवालां.– ५ हिंगलो.– ६ हरताल.
७ मणशिल.– ८ पारो.– ९ सोनुं.
१० रूपुं.– ११ त्रांबुं.– १२ लोढुं.
१३ जसत.– १४ सीसुं.– १५ कथिर.
१६ खडीमाटी. १७ हरमजीवानी. १८ अरणेटोपाषाण.
१९ पलेवोपाषाण. २० अबरख. २१ तूरीमाटीनीजाति.
२२ खारीमाटीनीजाति. २३ माटीनीसर्वजाति.
२४ पाषाणनी सर्वजाति. २५ सुरमानी जाति.
२६ अंजननी जाति. २७ लूणनी जाति.

इत्यादि पृथिवी कायना अनेक भेद जाणवा.

तेरमो अप्कायनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ जमीननुं पाणी.
२ आकाशनुं पाणी अने नदीसमुद्र कूपादिकनुं जल.
३ गारनुं पाणी.
४ हिमनुं पाणी.
५ रोयेडानुं पाणी.
६ लीलीवनस्पतिनुं पा०
७ मांकनुं पाणी.
८ घनोदधि ते पृथ्वीनो आधारभूत थीण्याघृतसमानजलपिंड.

चौदमो तेउकायनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ अंगारानो अग्नि.	४ उल्कापातनो अग्नि.
२ ज्वालानो अग्नि.	५ कणियानो अग्नि.
३ त्रासडनो अग्नि.	६ विजलीनो अग्नि.

पन्नरमो वाउकायनो दंमक छे. तेना नेद कहे छे.

१ उद्भ्रामकवायु.	५ मुखशुद्धवायु.
२ मंदवायु.	६ गुंजवायु.
३ उत्कलिकवायु.	७ घनवात.
४ मंमलिकवायु.	७ तनवात.

शोलमो वनस्पतिकायनो दंमक छे. तेनी मूलजाति बे छे, तिहां जे एकशरीरमां अनंता जीव होय ते साधारण वनस्पति. अने जे एक शरीरमां एक जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पति कहेवाय, तेना नेद कहे छे.

१ गुच्छा, २ वृक्ष, ३ गुल्म, ४ लता, ५ वल्ली, ६ तृण, ७ जलरुह, ७ औषधि, ए कुहन, १० पर्वग, ११ हरि, इत्यादिक एना अनेक नेद छे.

सत्तरमो बेंइियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ शंख.	२ कोमा.	३ गंमोला.
४ जलु.	५ अलसीया.	६ लारीया.
७ मेहरी.	७ क्रमिया.	ए पाणीना पूरा.

अढारमो तेंइियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ कानखजुरा.	२ मांकड.	३ जू.
४ कीडियो.	५ उद्देही.	६ मक्कोडा.

७ ईल. ८ घीमेल. ए सावा.
१० गोकीडा. ११ गद्दहीया. १२ विष्टाना कीडा.
१३ गोबरना कीडा. १४ धनेरियां. १५ कुंथुआ.
१६ गोपालिक. १७ इंद्रगोप.

उगणीशमो चौरिंद्रियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ वींछी. ४ नमरी. ७ झांस. १० कंसारी.
२ ढंकण. ५ टीड. ८ मत्सर. ११ खडमांकडी.
३ नमरा. ६ माखी. ए पतंगीया.

वीशमो तिर्यंचपंचेंद्रियनो दंमक छे. तेना त्रण नेद कहे छे.

१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर. ४ उरःपरिसर्प.
५ नुजपुरिसर्प, ए बे स्थलचर मांहेला छे.

एकवीशमो मनुष्यनो दंमक छे. तेना नेद कहे छे.

नरतादिक पंदर कर्मनूमि क्षेत्रनां मनुष्य.
देवकुरादिक त्रीश अकर्मनूमि क्षेत्रनां मनुष्य.
छप्पन्न अंतर द्वीपनां मनुष्य.
ए सर्व मली एकशोने एक नेदो थया.

बावीशमो वाणव्यंतर देवोनो दंमक छे. ते बे प्रकारें छे.

एक व्यंतरनी निकाय छे, तेना आठ नेद कहे छे.

१ पिशाच. ३ यक्ष. ५ किन्नर. ७ महोरग.
२ नूत. ४ राक्षस. ६ किंपुरुष. ८ गंधर्व.

बीजी वाणव्यंतरनी निकाय तेना पण आठ नेद छे.

१ अणपन्नि. ३ इसिवादि. ५ कंदी. ७ कोहंम.
२ पणपन्नि. ४ नूतवादि. ६ महाकंदी. ८ पतंग.

त्रेवीशमो ज्योतिषी देवोनो दंमक पांच प्रकारें ठे.

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

चोवीशमो वैमानिक देवोनो दंमक. तेना मूल बे नेद ठे.

एक कल्प एटले आचारवाला देवो ते बार देव लोकना नेदें करी बार प्रकारें ठे. तेना नाम कहे ठे.

१ सौधर्म देवलोक. ७ महाशुक्र देवलोक.
२ ईशान देवलोक. ८ सहस्रार देवलोक.
३ सनत्कुमार देवलोक. ९ आनत देवलोक.
४ माहेंद्र देवलोक. १० प्राणत देवलोक.
५ ब्रह्म देवलोक. ११ आरण देवलोक.
६ लांतक देवलोक. १२ अच्युत देवलोक.

बीजा कल्पातीत एटले जेने विषे स्वामी सेवक संबंध नथी, एवा देवो तेना मूल बे प्रकार ठे. एक नवग्रैवेयक वासी, बीजा पांच अनुत्तर विमान वासी तेमां प्रथम नवग्रैवेयकनां नाम कहे ठे.

१ सुदर्शन. ४ सर्वतोनद्र. ७ सौमनस्य.
२ सुप्रतिबद्ध. ५ सुविशाल. ८ प्रीतिकर.
३ मनोरम. ६ सुमनस. ९ आदित्य.

हवे पांच अनुत्तर विमाननां नाम कहे ठे.

१ विजय. ३ जयंत. ५ सर्वार्थसिद्धि.
२ विजयंत. ४ अपराजित.

ए रीतें ए चोवीश दंमकनां नेद सहित नाम कह्यां.

हवे प्रत्येक दंमकें चोवीश द्वार कहेवाय, तेनां नाम.

पहेलुं शरीर द्वार पांच प्रकारें छे.

१ औदारिकशरीर, ३ आहारकशरीर, ५ कार्मणशरीर.
२ वैक्रिय शरीर, ४ तैजस शरीर,

बीजुं अवगाहना द्वार. ते प्रत्येक दंमकें जघन्य तथा उत्कृष्ट एवा बे भेदें शरीरनुं प्रमाण कहेवुं.

त्रीजुं संघयण द्वार छ प्रकारें छे.

१ वज्रऋषभनाराच संघयण. ४ अर्द्धनाराचसंघ०
२ ऋषभनाराचसंघयण. ५ कीलिका संघयण.
३ नाराच संघयण. ६ छेवटुं संघयण.

हवे ए संघयणवाला जीवो ऊर्ध्वगति गमन करे, तो कया संघयणवाला क्यां सुधी जाय? ते कहे छे.

१ वज्र ऋषभ नाराच संघयणवाला, मोक्षपर्यंत जाय.
२ ऋषभनाराचसंघयणवाला, बारमादेवलोकपर्यंतजाय
३ नाराच संघयणवाला, दशमादेवलोक पर्यंत जाय.
४ अर्द्धनाराचसंघयणवाला, आठमादेवलोकपर्यंतजाय
५ कीलिका संघयणवाला, छठा देवलोकपर्यंत जाय.
६ छेवठा संघयणवाला, चोथा देवलोक पर्यंत जाय.

हवे अधोगति गमन करे, तो कया संघयणवाला जीव क्यां सुधी जाय? ते कहे छे.

१ वज्र ऋषभ नाराच संघयणवाला सातमी नरक पृथिवी पर्यंत जाय.

२ रुषननाराच संघयणवाला, बही नरक पृथिवी पर्यंत जाय;
३ नाराचसंघयणवाला, पांचमीनरकपृथिवीपर्यंतजाय
४ अर्द्धनाराचसंघयणवाला,चोथीनरकपृथिवीपर्यंत०
५ कीलिकासंघयणवाला,त्रीजीनरकपृथिवीपर्यंतजाय.
६ बेवठा संघयणवाला, बीजीनरकपृथिवीपर्यंत जाय.

चोथुं संज्ञा द्वार, दश प्रकारें बे. तेनां नाम कहे बे.

१ आहारसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा. ८ लोन संज्ञा.
२ नयसंज्ञा. ६ मानसंज्ञा. ९ लोकसंज्ञा,
३ मैथुनसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. १० उघसंज्ञा.
४ परिग्रहसंज्ञा. तथा नीचें लखेली ब संज्ञा साथें मेलवतां शोलप्रकार पण थाय बे.

१ सुख संज्ञा. २ डुःख संज्ञा. ३ मोहसंज्ञा.
४ डुगंबा संज्ञा. ५ शोक संज्ञा. ६ धर्म संज्ञा.

पांचमुं संस्थान द्वार, ब प्रकारें बे, तेनां नाम कहे बे.

१ समचतुरस्र संस्थान. ४ कुब्ज संस्थान.
२ निग्गोहपरिमंमल संस्थान. ५ वामन संस्थान.
३ सादि संस्थान. ६ हुंमक संस्थान.

अहीं पांच इंड्रियोनां संस्थान कहे बे.

१ स्पर्शेंड्रियनुं नाना प्रकारनुं संस्थान होय बे.
२ रसेंड्रियनुं खुरपा सरखुं संस्थान होय बे.
३ घ्राण इंड्रियनुं तिलना फूल सरखुं संस्थान होय बे.

४ चक्षुरिंद्रियनुंमसूरनीदालसरखुं अर्द्धचंद्राकारें सं०

५ श्रोत्रेंद्रियनुं कल्पवृक्षना फूल सरखुं संस्थान छे.

छठुं कषाय द्वार चार प्रकारें छे. तेनां नाम कहे छे.

१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ,

सातमुं लेश्या द्वार छ प्रकारें छे.

१ कृष्णलेश्या. ३ कापोतलेश्या. ५ पद्मलेश्या.

२ नीललेश्या. ४ तेजोलेश्या. ६ शुक्ललेश्या.

आठमुं इंद्रिय द्वार पांच प्रकारें छे.

१ स्पर्शनेंद्रिय. २ रसेंद्रिय. ३ घ्राणेंद्रिय.

४ चक्षुरिंद्रिय. ५ श्रोत्रेंद्रिय.

नवमुं समुद्घात द्वार सात प्रकारें छे.

१ वेदनासमुद्घात, ४ वैक्रियसमुद्घात, ७ केवलिसमु०

२ कषाय समुद्घात, ५ तैजस समुद्घात.

३ मरण समुद्घात. ६ आहारक समुद्घात.

दशमुं दृष्टिद्वार त्रण प्रकारें छे.

१ सम्यक्दृष्टि, २ मिथ्यादृष्टि, ३ मिश्रदृष्टि,

अगीयारमुं दर्शन द्वार चार प्रकारें छे.

१ चक्षुदर्शन. २ अचक्षुदर्शन.

३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

बारमुंज्ञानतथातेरमुं अज्ञान द्वार मली आठ प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.

४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.

७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.

ए रीतें पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञाननुं द्वार कह्युं.

तेरमुं योग द्वार पंदर प्रकारें छे.

१ सत्यमनोयोग.
२ असत्यमनोयोग.
३ सत्यमृषामनोयोग.
४ असत्यामृषामनोयोग.
५ सत्यवचनयोग.
६ असत्यवचनयोग.
७ सत्यमृषावचनयोग.
८ असत्यामृषावचनयोग.
९ औदारिक काययोग.
१० औदारिकमिश्रकाययोग
११ वैक्रियकाययोग.
१२ वैक्रियमिश्रकाययोग.
१३ आहारककाययोग.
१४ आहारकमिश्रकाय०
१५ कार्मणकाययोग.

चौदमुं उपयोग द्वार बार प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान, ६ मतिअज्ञान, ७ श्रुतज्ञान. ८ विभंगज्ञान. ९ चक्षुदर्शन. १० अचक्षुदर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंमकने विषे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

शोलमुं च्यवनद्वार, ते प्रत्येक दंमकने विषे एक समयमां केटला जीव चवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

सत्तरमुं आयुष्य द्वार ते चारगति आश्री चार प्रकारें छे. तेमां कया कया दंमकें केटलुं केटलुं आयुष्य छे? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

अढारमुं पर्याप्तिनुं द्वार. ब प्रकारें बे.

१ आहारपर्याप्ति. २ शरीरपर्याप्ति.
३ इंद्रियपर्याप्ति. ४ श्वासोश्वासपर्याप्ति.
५ जाषापर्याप्ति. ६ मनःपर्याप्ति.

उंगणीशमुं दिश आहार द्वार ब प्रकारें बे.

१ अधोदिशि आहार. ४ पश्चिमदिशि आहार.
२ ऊर्ध्वदिशि आहार. ५ दक्षिणदिशि आहार.
३ पूर्वदिशि आहार. ६ उत्तरदिशि आहार.

वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारें बे.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा. २ हीतोपदेशिकी संज्ञा.
३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा.

एकवीशमुं गति द्वार. ते कया दंमकनो जीव मरी ने कया कया दंमकमां जाय ? ते कहेवानुं द्वार.

बावीशमुं आगति द्वार ते प्रत्येक दंमकने विषे केटला दंमकना जीव, आवी उपजे ? ते कहेवानुं द्वार.

त्रेवीशमुं वेद द्वार त्रण प्रकारें बे.

१ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद.

चोवीशमुं अल्पबहुत्वनुं द्वार अछाणुं प्रकारें बे.

अथ चौद मार्गणानां नाम उत्तर जेद सहित.

पहेली गति मार्गणा चार प्रकारें बे.

१ देवगति, २ मनुष्यगति, ३ तिर्यंचगति, ४ नरकगति.

बीजी इंद्रियमार्गणापांच प्रकारें बे.

१ एकेंडी. २ बेंडी. ३ तेंडी. ४ चौरिंडी. ५ पंचेंडी.

त्रीजी कायमार्गणा छ प्रकारें छे.

१ पृथिवीकाय- २ अप्काय. ३ तेउकाय.
४ वायुकाय. ५ वनस्पतिकाय. ६ त्रसकाय.

चोथी योग मार्गणा त्रण प्रकारें छे.

१ मनोयोग. २ वचनयोग. ३ काययोग.

पांचमी वेद मार्गणा त्रण प्रकारें छे.

१ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद.

छठी कषाय मार्गणा चार प्रकारें छे.

१ क्रोध. २ मान. ३ माया. ४ लोभ.

सातमी ज्ञान मार्गणा आठ प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.
४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.
७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.

आठमी संयम मार्गणा सात प्रकारें छे.

१ सामायिक चारित्र. २ छेदोपस्थापनीय.
३ परिहारविशुद्धि. ४ सूक्ष्मसंपराय चारित्र.
५ यथाख्यात चारित्र. ६ देशविरति चारित्र.
७ असंयम अविरति.

नवमी दर्शन मार्गणा चार प्रकारें छे.

१ चक्षुर्दर्शन. २ अचक्षुर्दर्शन.
३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

दशमी लेश्या मार्गणा छ प्रकारें छे.

१ कृष्णलेश्या. २ नीललेश्या. ३ कापोतलेश्या
४ तेजोलेश्या. ५ पद्मलेश्या. ६ शुक्ललेश्या.

अगीयारमी नव्य मार्गणा बे प्रकारें छे.

१ नव्य. २ अनव्य.

वारमी सम्यक्त्व मार्गणा छ प्रकारे छे.

१ उपशम. २ क्षायोपशम. ३ क्षायिक.
४ मिश्र. ५ सास्वादन. ६ मिथ्यात्व.

तेरमी सन्नी मार्गणा बे प्रकारें छे.

१ सन्नी. २ असन्नी.

चौदमी आहार मार्गणा बे प्रकारें छे.

१ आहारक. २ अणाहारक.

बत्रीश अनंत कायनां नाम.

१ सर्व कंदनीजाति.
२ सूरणकंद.
३ वज्रकंद.
४ लीली हलदर.
५ लीलुं आडुं.
६ लीलोकचुरो.
७ सत्तावरीवेली.
८ विरालीवेली.
९ कुंआरि.
१० थोहरिकंद.
११ गलोइ.
१२ लसण कली.
१३ वांसना कारेला.
१४ गाजर.
१५ लूणो साजी वृक्ष.
१६ लोढो पद्मनी कंद.
१७ गिरिकर्णिका एटले सर्व वनस्पतिना नवा उगतां कूंपलपान.
१८ खरसुआकंद.
१९ थेगकंद.
२० नीलीमोथ.
२१ लूणवृक्षनी छाली अनंतकाय जाणवी, परंतु एना बीजा अवयव अनंतकायनहीं.

२२ खीलुडा कंद विशेष.
२३ अमृतवेलि.
२४ मूलानी पाड.
२५ नूमिफोडा जे वर्षाकालें छत्राकारें ऊगे ते.
२६ विरुढाअंकूरथा धान्य.
२७ टंक वथुलशाक ते वनस्पति पहेलुं ऊग्युं तेहज, बीजुं नही.
२८ सूअरवेली.
२९ पल्लंकशाक विशेष.
३० कुवली आंबिली.
३१ आलुकंद.
३२ पिंमालुकंद.

बावीश अनक्ष्यनां नाम.

१ वडनी पीपु अनक्ष.
२ पिंपलनी पीपु.
३ ऊंबरनां फल.
४ पीपरीनी पेपडी.
५ कठुंबरना फल.
६ मधुएमां त्रस जीवनी उत्पत्ति थाय.
७ मद्य एमां तेवाज वर्णना जीव ऊपजे छे,
८ मांस एमां त्रसजीवनी उत्पत्ति थाय.
एमाखणएमहासावद्यछे
१० हिम ए बहु अप्काय मय छे.
११ विष ते सोमलप्रमुख. एथी उदर गत जीवोनो विनाश थाय छे.
१२ करहाबहुजीवमय छे.
१३ सर्व माटीनी जाति.
१४ रात्रिनोजनअनक्ष्यछे
१५ बहुबीजतेपंपोटादिक
१६ बत्रीश अनंतकाय.
१७ बोलानुं अथाणुं.
१८ घोलवडां जे काचा गोरसमांहेकरयांहोय ते.
१९ वेंगण ते रींगणा.
२० जेने ओलखीयें नही. एवा अजाण्यां फूल फल पान प्रमुख.

२१ तुछ फल ते कुअली वस्तु अति काचांफल महुडां जांबू प्रमुख.

२२ चलित रस थयेली वस्तु ते सडेलुं अन्नादिक जाणवुं.

अथ आयुर्जीव लिख्यते,

जीवजाती.	आयुवर्ष–	सर्पायु.	१००-१२०
हस्तिआयु.	१२०	कीडीआयु.	१
मनुष्यायु.	१२०	वंदरआयु.	२-२०
अश्वआयु.	३२-४८	ससलाआयु.	१०-१४
व्याघ्रआयु.	६४	देवीआयु.	५०
कागआयु.	१००	खरआयु.	५०
गर्दभायु.	६४	वागोलआयु.	५०
गालीआयु.	१६	बपैयाआयु.	३०
श्वानआयु.	१२	सिंहआयु.	१०००
शियालआयु.	२४	माछलाआयु.	१०००
हरणआयु.	२४	उंटआयु.	२५
हंसआयु.	१००	भेंसआयु.	२५
मांजारआयु.	१२	गायआयु.	२५
सूडाआयु.	१३	घेटाआयुवर्ष	१६
गेंडाआयु.	२०	जूआयु मास	३
सारसआयु.	५०	कंसारीआयु-मास.	३
क्रौंच आयु.	६०	वींछीआयु मास.	६
बगला आयु.	६०	चौरिंद्रिआयु मास.	६

संमूर्छिम गर्भज जलचरनुं उत्कृष्टायु पूर्वकोडी वर्षनु

अथश्रीजिनभुवनने विषे चोराशी आशातना न करवी, तेनां नाम लखीयें छेयें.

१ बडखो न नाखवो.
२ हिंचोलादि क्रीडान०
३ कलहप्रमुखन करवो.
४ धनुष्कलादि न करवी.
५ पाणीना कोगला न०
६ तांबूलादिक न खावां.
७ तांबूल थुंकवां नही.
८ मुखथीगालो न देवी.
९ मूत्रविष्टा न नाखवी.
१० शरीर न धोवुं.
११ वाल न उतराववा.
१२ नख न उतराववा.
१३ रुधिर न नाखवुं.
१४ सुखडी न खावी.
१५ चामडी न नाखवी.
१६ पित्त वमन न करवुं.
१७ वमन न करवुं.
१८ दांत नाखवा अथवा समारवा नही.
१९ विश्रामण न करवो.
२० गाय प्रमुख म बांधवी.
२१ दांतनोमेलननाखवो
२२ आंखनोमेलननाखवो
२३ नखनोमेलननाखवो.
२४ गंडस्थलनो मेल न०
२५ नाकनोमेलननाखवो.
२६ माथानोमेलननाखवो
२७ काननोमेलननाखवो.
२८ शरीरनी चामडीनो मेल न नाखवो.
२९ मित्रसाथेंमसलतन०
३० विवादार्थेंएकगनथवुं.
३१ नामुं न लखवुं.
३२ कोइचीज वेचवी नही.
३३ थापण न मूकवी.
३४ माठेआसने न बेसवुं.
३५ छाणां थापवां नही.
३६ कपडांसूकववांनही.
३७ धान्य सूकववां नही.
३८ पापड सूकववा नही.
३९ वडीयो करवी नही
४० राजभयादिकेंछूपवुंन०
४१ रुदन करवुं नही.
४२ विकथा करवी नही.

४३ शस्त्र घडवां नही.
४४ तिर्यंच बांधवा नही.
४५ तापणी करवी नही.
४६ अन्नादिक रांधवुं नही.
४७ नाणुं परखवुं नही.
४८ निसिहीभांगवी नही.
४९ छत्र धरवुं नही.
५० खासडां मूकवां नही
५१ शस्त्र मूकवां नही.
५२ चामर धराववुं नही.
५३ मन एकाग्र करवुं.
५४ तेलादिकनचोपडवां.
५५ सचित्तभोग त्यजवो.
५६ अयोग्यअचेतत्यजवो
५७ जिनपीठेंहाथजोडवा
५८ एकसाडीउत्तरासणक.
५९ मुकुटधारण न करवो.
६० पाघंडीनो अविवेक.
६१ तोरादिक न घालवा.
६२ होड न करवी.
६३ गेडीदडे रमवुं नही.
६४ जुहारसलामनकरवी.
६५ भांड चेष्टा नकरवी.
६६ तुंकार रेकार नकहेवो
६७ धरणे बेसवुं नही.
६८ युद्ध करवुं नही.
६९ चोटलादिसमारवान०
७० पलोठीयें बेसवुं नही
७१ चांखडीपेहेरवी नही
७२ लांबे पगे बेसवुंनही
७३ पुडपुडीवगाडवी नही
७४ कादव न करवो.
७५ अंगनी रज उडावीन.
७६ मैथुन सेववुं नही.
७७ जुगटुं रमवुं नही.
७८ भोजन करवुं नही.
७९ मल्लयुद्ध करवुंनही.
८० वैद्यकर्म करवुं नही.
८१ व्यापार करवो नही.
८२ शय्यापाथरवीनही.
८३ आहार राखवो नही
८४ स्नान करवुं नही.

ए चोराशी आशातना ते जिनपूजादिक कार्यविना शरीर शुश्रूषादिकने अर्थें करे तो आशातना जाणवी.

माटे तेनो त्याग करी आज्ञारुचि थइ आशातना रहित थका जिनमंदिरने विषे प्रवर्त्तवुं.

सात नयनां नाम.

१ नैगम नय. २ संग्रह नय. ३ व्यवहार नय.
४ ऋजुसूत्र नय. ५ शब्द नय. ६ समभिरूढनय.
७ एवंभूत नय.

चार निक्षेपनां नाम.

१ नाम निक्षेप. ३ द्रव्य निक्षेप.
२ स्थापना निक्षेप. ४ भाव निक्षेप.

चार कारणनां नाम.

१ उपादान कारण. ३ असाधारण कारण.
२ निमित्त कारण. ४ अपेक्षा कारण.

आठ मदनां नाम.

१ जातिमद. २ कुलमद. ३ बलमद.
४ रूपमद. ५ श्रुतमद. ६ तपोमद.
७ लाभमद. ८ ऐश्वर्यमद.

अष्ट मांगलिकनां नाम.

१ आरीसो. २ भद्रासन. ३ वर्द्धमान.
४ श्रीवत्स. ५ मत्स्ययुग्म. ६ प्रधानकुंभ
७ साथीउं. ८ नंदावर्त्त.

श्रावकनां बारव्रतनां नाम.

१ स्थूलप्राणातिपातवि० ३ स्थूलअदत्तादानवि०
२ स्थूलमृषावादविरमण ४ मैथुन विरमण व्रत.

५ परिग्रह परिमाण व्रत.
६ दिक् परिमाण व्रत.
७ भोगोपभोगपरिमाण.
८ अनर्थदंडविरमणव्रत
९ सामायिक व्रत.
१० देशावगाशिकव्रत.
११ पौषधोपवास व्रत.
१२ अतिथिसंविभागव्रत.

चौद गुणठाणानां नाम.

१ मिथ्यात्व गुणठाणुं.
२ सास्वादन गुणठाणुं
३ मिश्र गुणठाणुं.
४ अविरतिसम्यग्दृष्टि
५ देशविरति गुणठाणुं
६ प्रमत्त गुणठाणुं.
७ अप्रमत्त गुणठाणुं.
८ निवृत्तिबादर गुणठाणु
९ अनिवृत्तिबादर गुण०
१० सूक्ष्मसंपराय गुणठाणु.
११ उपशांतमोह गुणठाणु
१२ क्षीणमोह गुणठाणु.
१३ सयोगीकेवली गुणठाणु
१४ अयोगीकेवली गुणठाणु

संमूर्छिम मनुष्यने उपजवाना चौद स्थानक.

१ वडिनीतिमांहे.
२ लघुनीतिमांहे.
३ श्लेष्ममांहे.
४ नासिकानामलमांहे.
५ वमनमांहे.
६ पत्तमांहे.
७ पिरूमांहे.
८ रक्तमांहे.
९ शुक्रपुद्गलमांहे.
१० साडेसुवा वीर्यमांहे.
११ मृतकलेवर मांहे.
१२ स्त्रीपुरुषनेसंयोगें.
१३ नगरनाखालमांहे.
१४ सर्वअशुचिस्थानमांहे.

साधुना सत्तावीस गुणनां नाम.

५ प्रणातिपात विरमणादिक पांच महाव्रत.
६ रात्रिभोजनविरमण व्रत.

१२ छकायना जीवोनी रक्षा करे, ते छ गुण.
१७ पांच इंद्रियोनो निग्रह करे, ते पांच गुण.
१८ लोजनो जय.
१९ क्षमा राखे.
२० जाव विशुद्धि एटले चित्तनिर्मलता.
२१ पडिलेहण प्रजार्जन करवाथी विशुद्धि थाय.
२२ संयमयोगयुक्तता.
२५ अकुशल मन वचन अने कायानुं रुंधवुं, ए त्रण.
२६ शीतादिक वेदनानुं सहन करवुं.
२७ मरणांत उपसर्ग सहन करवा.

त्रीश अकर्मजूमि क्षेत्रनां नाम.

५ हेमवंत क्षेत्र.	५ हरिवर्ष क्षेत्र.	५ देवकुरु क्षेत्र.
५ उत्तरकुरु क्षेत्र.	५ रम्यक क्षेत्र.	५ऐरण्यवतक्षेत्र.

पंदर कर्मजूमि क्षेत्रनां नाम.

५ जरतक्षेत्र. ५ ऐरवतक्षेत्र. ५ महाविदेहक्षेत्र.

सिद्धना एकत्रीशगुणनां नाम.

५ पांच संस्थान रहित.	३ त्रण वेद रहित.
५ पांच वर्ण रहित.	१ शरीर रहित.
२ बे गंध रहित.	१ संग रहित.
५ पांच रस रहित.	१ जन्म रहित.
८ आठ फरस रहित.	

प्रकारांतरें वली सिद्धना एकत्रीश गुण कहे छे.
५ पांच प्रकारनां ज्ञानावरणीय कर्मथी रहित.

९ नव प्रकारनां दर्शनावरणीय कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना वेदनीय कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना मोहनीय कर्मथी रहित.
४ चार प्रकारना आयु कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना नाम कर्मथी रहित.
२ बे प्रकारना गोत्र कर्मथी रहित.
५ पांच प्रकारना अंतराय कर्मथी रहित.

सात नयनां नाम.

१ हस्तिनो नय. २ सिंहनो नय.
३ सर्प्पनो नय. ४ अग्निनो नय.
५ समुद्रादि जलनो नय. ६ राजानो नय.
७ चोरनो नय.

संसारी जीवने सात महोटां सुख कह्यां छे, तेनां नाम.

१ रोगरहित शरीर होय.
२ कोइनो देणदार न होय.
३ यात्रादिकविनाआजीविकार्थेपरदेश न जाय.
४ घरमां स्त्री सुपात्र होय.
५ पुत्रपौत्रादिकनुं सुख होय.
६ सगा कुटुंबादिक चारे पक्षेंकरी सहित होय.
७ पंच महाजनमां प्रतिष्ठावान् होय.

छ दर्शननां नाम.

१ जैनदर्शन. २ मीमांसकदर्शन. ३ बौद्धदर्शन.
४ नैयायिकदर्शन. ५ वैशेषिकदर्शन. ६ सांख्यदर्शन

सात नयनां नाम.

१ इहलोक नय. २ परलोक नय. ३ आदान नय.
४ अकस्मात् नय. ५ वेदना नय. ६ मरण नय.
७ अपजश अपकीर्त्तिनो नय.

७ भाषानां नाम.

१ संस्कृत २ प्राकृत. ३ शौरसेनी.
४ मागधी. ५ पैशाचिकी. ६ अपभ्रंशी.

चक्रवर्त्तिनाचौदरत्नमां सात एकेंद्रियरत्न छे, तेनां नाम.

१ चक्र रत्न. २ छत्र रत्न. ३ चर्म्म रत्न. ४ दंड रत्न
५ असि रत्न. ६ मणि रत्न. ७ कांगणी रत्न.

सात पंचेंद्रिय रत्ननां नाम.

१ सेनापति रत्न. २ गाथापति रत्न. ३ सूत्रधार रत्न.
४ पुरोहित रत्न. ५ स्त्री रत्न. ६ अश्व रत्न.
७ गज रत्न.

॥ हवे जीवना प्रकार कहे छे ॥

१ चेतना लक्षणें करी सर्व जीव एक प्रकारें छे; केम के, कीडी कुंजर सर्वमां चैतन्य सरखुं छे, माटे.

हवे सर्वजीवना बे बे प्रकार कहे छे.

१ सिद्धना जीव.	१ सकषायीजीव ते संसारी
२ संसारीजीव.	२ अकषायीजीवसिद्धना.
१ इंद्रियसहित ते संसारी.	१ सयोगीजीव ते संसारी
२ इंद्रियरहित ते सिद्धना.	२ अयोगीतेसिद्धनाजीव

१ सशरीरीजीवसंसारी. १ आहारीजीव ते संसारी
२ अशरीरी जीवसिद्धना. २ अणाहारीजीव सिद्धना
१ सवेदीजीवसंसारी. १ नासगाजीव.
२ अवेदीतेसिद्धना जीव. २ अनासगाजीव.

हवे संसारी जीवना बे बे प्रकार अनेक रीतें कहे छे.

१ त्रस बेंद्रियादिकजीव.
२ स्थावर एकेंद्रिय जीव
१ सूक्ष्मजीव.
२ बादरजीव.
१ पर्याप्ताजीव.
२ अपर्याप्ताजीव.
१ नवसिद्धियाजीव.
२ अनवसिद्धिया जीव.
१ जेस्वयोग्यपर्याप्ति नहीज लीयेतेलब्धिअपर्याप्ताजीव.
२ जेणे स्वयोग्यपर्याप्तिहजी लीधी नथी पण लेशे, ते करण अपर्याप्ता जीव.
१ जेणे स्वयोग्यपर्याप्ति सर्व लीधी नथी पण लेशे ते लब्धिपर्याप्ता जीव.
२ जे स्वयोग्य पर्याप्ति. पूर्ण पाम्यो ते करण पर्याप्ता जीव.

हवे संसारी जीवना त्रण त्रण प्रकार कहे छे.

१ पुरुषवेदी. २ स्त्रीवेदी. ३ नपुंसकवेदी.
१ मन योगी. २ वचन योगी. ३ काययोगी.
१ संयति. २ असंयति. ३ संयतासंयति
१ सम्यग्दृष्टि. २ मिथ्यादृष्टि. ३ मिश्रदृष्टि.
१ रुजुजड. २ रुजुप्राज्ञ. ३ वक्रजड.
१ नव्यजीव. २ अनव्यजीव. ३ जातिनव्यजीव.

सर्व जीवना त्रण प्रकार.

१ भवसिद्धिया. २ अभवसिद्धिया. ३ नोभव सिद्धिया अने नो अभव सिद्धिया ते सिद्धना जीव.

१ पर्याप्ता. २ अपर्याप्ता. ३ नोपर्याप्ता, नो अपर्याप्ता ते सिद्धना जीव.

१ सूक्ष्मजीव. २ बादरजीव. ३ नोसूक्ष्म नो बादर ते सिद्धना जीव.

॥ गतिआश्री सर्व जीव चार प्रकारें छे ॥

१ देवगति, २ मनुष्यगति, ३ तिर्यंचगति, ४ नरकगति.

॥ इंद्रिय आश्री सर्व जीव पांच प्रकारें छे ॥

१ एकेंद्रय २ बेंद्रिय, ३ तेंद्रिय ४ चौरिंद्रिय ५पंचेंद्रिय.

॥ कायआश्री सर्व जीव छ प्रकारें छे ॥

१ पृथिवीकाय. २ अप्काय. ३ तेउकाय.
४ वाउकाय. ५ वनस्पतिकाय. ६ त्रसकाय.

॥ हवे पूर्वोक्तथावर जीवना पांच प्रकार कहे छे ॥

१ पृथिवी. २ अप ३ तेउ, ४ वाउ, ५ वनस्पति,

॥ त्रस जीव चार प्रकारना छे ॥

१ बेंद्रिय. २ तेंद्रिय. ३ चौरिंद्रिय. ४ पचेंद्रिय.

तिहां बेंद्रिय तेंद्रिय अने चौरिंद्रियना भेदो संक्षेपथी आगल दंमकना बोलोमां लखाइ गया छे, तथा पंचेंद्रिय जीव नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवता मली चार प्रकारना छे; तेना भेद पण संक्षेपें आगल दंमकना बोलोमां लखाइ गया छे. अहीयां तेनुं देहमान तथा आयु कहे छे. तेमां प्रथम चार प्रका

रना देवोनुं उत्कृष्ट देहमान तथा आयु कहे छे ॥

प्रथम दश नवनपतिनी निकायमां पहेली असुरकुमार निकायना दक्षण श्रेणि तथा उत्तरश्रेणिना मली बे इंद्रो छे, तेमां उत्तरश्रेणिनो अधिपति बलींद्र छे, तेनुं आयु एकसागरोपम जाजेरुं छे, अने दक्षण श्रेणिनो अधिपति चमरेंद्र छे,तेनुं आयु एक सागरोपम छे, बाकी नवनिकायना उत्तर श्रेणिना इंद्रोनुं आयु बे पल्योपम कांइक उछेरुं जाणवुं, अने दक्षण श्रेणिना नवनिकायना इंद्रोनुं आयु दोढ पल्योपम जाणवुं. तथा ए सर्व दशेनिकायना देवोनुं देहमान सात हाथ प्रमाण जाणवुं. रत्नप्रना पृथिवीनो पिंम (१८००००) योजन जाडो छे, तेमांथी हजार योजन नीचें अने हजार योजन उपर मूकी बाकीना (१७८०००) योजनमां ए दश निकायना देवो छे.

बीजा व्यंतर निकायना देवो बे प्रकारना छे, ए सर्व देवोनुं देहमान सात हाथनुं छे, तथा जघन्यायु दश हजार वर्षनुं अने उत्कृष्टायु एक पल्योपमनुं छे, ए रत्न प्रनापृथिवीना उपरला हजार योजनमांथी शो योजन नीचे तथा शो योजन उपर मूकी बाकीना आठशो योजनमां व्यंतरदेवो वसे छे. तथा उपरना मूकेला शो योजनमांथी वली दश योजन नीचे तथा दश योजन उपर मूकीयें, तेवारे बाकीना एंशी योजनमां वाणव्यंतर देवो वसे छे.

त्रीजी ज्योतिषी देवताउनी निकाय पांच प्रकारें छे.

ते संजूतल पृथिवीथकी उपर ७९० योजनथी मांमीने नवसो योजन पर्यंतना एकशो ने दश योजनमां एमनां विमान छे, ते सर्वनुं देहमान सात हाथ प्रमाण छे. अने उत्कृष्टायु नीचें प्रमाणे छे.

१ चंद्रमानुं एक पल्योपम उपर एक लाख वर्षायु छे.

२ सूर्यनुं एक पल्योपम उपर एक हजार वर्षायु छे.

३ ग्रहमंगलादिकनुं एक पल्योपमायु छे.

४ अश्विन्यादिक नक्षत्रनो अर्द्ध पल्योपमायु छे.

५ तारानुं एक पल्योपमनो चोथो भाग आयु छे.

चोथी वैमानिक देवोनी निकाय बे प्रकारे छे तेमां प्रथम कल्पवाला देवोनुं उत्कृष्ट देह मान अने आयु कहे छे.

देवलोकनां नाम	देहमान	आयु.
१ सौधर्म.	सात हाथ.	बे सागरोपम.
२ ईशान.	सांत हाथ.	बे सागरोपमजाजेरा.
३ सनत्कुमार.	छ हाथ.	सात सागरोपम.
४ माहेंद्र.	छ हाथ.	सात सागरोपम जाजेरा
५ ब्रह्म	पांच हाथ.	दश सागरोपम.
६ लांतक.	पांच हाथ.	चौद सागरोपम.
७ शुक्र.	चार हाथ.	सत्तर सागरोपम.
८ सहस्त्रार	चार हाथ.	अढार सागरोपम.
९ आणत.	त्रण हाथ.	उगणीशसागरोपम.
१० प्राणत.	त्रण हाथ.	वीश सागरोपम.
११ आरण.	त्रणहाथ.	एकवीशसागरोपम.
१२ अच्युत.	त्रणहाथ.	बावीशसागरोपम.

हवे बारमा देवलोक सुधी चोशठ इंद्रो छे, ते आवी रीतें

२० दशभुवनपतिनी दश निकाय मांहेली एकेकी निकायने विषे दक्षिण तथा उत्तर श्रेणिनो प्रत्येके एकेक इंद्र गणता वीश इंद्रो भुवनपतिना छे.

३२ व्यंतर तथा वाणव्यंतरनी शोल निकाय मांहेली एकेकी निकायने विषे दक्षिण तथा उत्तर श्रेणिनो प्रत्येकें एकेक इंद्र गणतां बत्रीश इंद्रव्यंतर देवोना छे.

२ पांच ज्योतषीना चंद्र अने सूर्य ए बे इंद्र छे.

१० बार देवलोकमध्ये आठमा देवलोक सुधी तो एकेका देवलोकनो एकेक इंद्र छे, तेवार पछी नवमा तथा दशमा मलीने बे देवलोकनो एकज इंद्र अने अगीआरमा तथा बारमा मली बे देवलोकनो एकज इंद्र छे. ए रीतें दश इंद्र वैमानिक देवोना छे.

ए सर्व मली चोशठ इंद्र थया.

हवे उपर ग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमानने विषे स्वामी सेवकपणुं नथी,तेथी तिहां इंद्र पण नथी,ए कल्पातीत देवो छे. ग्रैवेयकना देवोनुं देहमान तथा आयु कहे छे. पहेला कोठामां ग्रैवेयकनुं नाम बीजा कोठामां जे अंक मांड्यो छे, तेटला सागरोपमनुं आयु जाणवुं; अने शरीर तो सर्व ग्रैवेयकें बे हाथ प्रमाण जाणी लेवुं.

प्रथम त्रिक.		बीजुं त्रिक.		त्रीजुं त्रिक.	
सुदर्शन.	२३	सर्वतोभद्र.	२६	सोमनस्य.	२९
सुप्रतिबद्ध.	२४	विशाल.	२७	प्रीतिकर.	३०
मनोरम.	२५	सुमनस.	२८	आदित्य.	३१

हवे पांचे अनुत्तर विमानें एक हाथनुं शरीर त था जघन्य एकत्रीश अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनुं आयु चार विमानोने विषे जाणवुं, अने पांचमा स र्वार्थ सिद्धिने विषे जघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु.

हवे तिर्यंचना उत्कृष्ट देहमान तथा आयु कहे छे.

जीवजाति.	देहमान	आयु.
पृथिवीकाय	अंगुलनो असंख्यनाग	२२००० वर्ष.
अप्कायप्राणी	अंगुलनो असंख्यनाग	७००० वर्ष.
अग्निकाय	अंगुलअसंख्यनाग	त्रण दिवसनुं आयु.
वायुकाय	अंगुलअसंख्यनाग	३००० वर्षायु.
साधारणवनस्पति	अगुलासंख्यनाग	अंतरमुहूर्त्त.
प्रत्येकवनस्पति	हजारयोजनजाजेरां	१०००० वर्ष.
बेंद्रियजीव.	बार योजन.	बार वर्ष.
तेंद्रियजीव.	त्रण गाउ.	४९ दिवस.
चौरिंद्रिय जीव.	चारगाउ.	छ महिना.
संमूर्छिममत्स्यादि.	हजार योजन.	क्रोड पूर्व.
सं० चतुष्पदादि.	बेथी नव गाउ.	८४०००) वर्ष.
सं० खेचरनुं.	बेथी नवधनुष.	७२०००) वर्ष.
सं० उरःपरिसर्प्प.	बेथी नवयोजन.	५३०००) वर्ष.
सं० भुजपरिसर्प्प.	बेथी नवधनुष.	४२०००) वर्ष.
गर्भजमत्स्यादिक.	हजार योजन.	क्रोड पूर्व.
गर्भजथलचर.	छ गाउ.	त्रण पल्योपम.
गर्भजखेचरपंखी.	बेथीनवधनुष	पल्योपमासंख्य०
गर्भजउरःपरिसर्प्प.	हजारयोजन	क्रोडपूर्व.

गर्भजभुजपरिसर्प्प. बेथी नवगाउ क्रोडपूर्व.

नारकीनां उत्कृष्ट देहमान तथा आयु.

नाम.	देहमान.	आयु.
१ रत्नप्रभा.	७॥। धनुषने ६ अंगुल	एकसागरोपम
२ शर्करप्रभा.	१५॥ धनुषने १२ अंगुल	त्रण सागरोपम
३ वालुप्रभा.	३१। धनुष.	सात सागरोपम.
४ पंकप्रभा.	६२॥ धनुष.	दश सागरोपम.
५ धूमप्रभा.	१२५ धनुष.	सत्तर सागरोपम.
६ तमप्रभा.	२५० धनुष.	बावीश सागरोपम.
७ तमतमप्रभा.	५०० धनुष.	तेत्रीश सागरोपम.

मनुष्यनुं उत्कृष्ट देहमान त्रण गाउनुं तथा उत्कृष्टायु त्रण्य पल्योपमनुं जाणवुं. मनुष्य कर्मभूमि, अकर्मभूमि तथा अंतरद्वीपना मळीने त्रण प्रकारना छे ते विषे किंचित् विस्तारें वात लखीयें छैयें.

तीर्च्छालोकने विषे अढीसागरोपम काळना जेटला समय थाय ते प्रमाणें असंख्याता द्वीप अने समुद्र छे, ते सर्व द्वीप समुद्रनी वच्चें आपणे जेमां वसीयें छैयें तेनुं नाम जंबुद्वीप छे, ते एकलाख योजननुं छे, तेने फरतो लवण समुद्र बे लाख योजननो छे, तेने फरतो चार लाख योजन प्रमाण धातकी खंडनामा द्वीप चूडीने आकारे छे, तेने फरतो आठ लाख योजन प्रमाण कालोद समुद्र छे, तेने फरतो शोळ लाख योजन प्रमाण पुष्करवर द्वीप छे, ते द्वीपना अर्द्धभागना आठ लाख योजनमां मनुष्यनी वस्ति छे, एव

छा अढीद्वीपना बेहु बाजुना मली पिस्तालीश लाख योजनमां मनुष्य वसे छे, उपरांत बीजा सर्व द्वीप स मुड़ोने विषे तिर्यंचगतिना जीवोनो निवास छे, ते जंबू द्वीपनो तथा अढीद्वीपनो जूदो जूदो नकाशो आ पुस्त कनी आदिमां छे ते जोवाथी तरत समजाइ आवशे.

हवे ए अढीद्वीपने विषे जे खेत्रमां मनुष्यो रहे छे, तेनां नाम प्रत्येक द्वीप आश्रयी लखीयें छैयें.

तिहां जंबुद्वीपमां एक जरत, बीजो महाविदेह अने त्रीजो ऐरवत, ए त्रण खेत्र, तेमज धातकी खंम मां बे जरत, बे महाविदेह अने बे ऐरवत, मलीने छ खेत्र तथा तेवाज नामें छ खेत्र पुष्करार्द्धमां छे, सर्व मलीने पंदर खेत्रमां कर्मजूमि मनुष्य वसे छे. ए क्षे त्रोने विषे चोवीश तीर्थंकरादिक त्रिषष्टिशिलाका पुरुषो उत्पन्न थाय छे. तेना वर्त्तमान नाम, आयु तथा देहमा नादिकनुं यंत्र आ पुस्तकना अंतमां दाखल कर्युं छे.

वली जंबुद्वीपमां, १ हिमवंत, २ ऐरण्यवत, ३ हरि वर्ष, ४ रम्यक, ५ देवकुरु, ६ उत्तरकुरु, ए छ क्षेत्र तथा वली एवाज नामें बे बे क्षेत्र धातकी खंमने विषे त था बे बे खेत्र पुष्करार्द्धने विषे छे तेथी बार क्षेत्र धा तकीखंमना तथा बार क्षेत्र पुष्करार्द्धना तेनी साथे जंबुद्वीपना छ मेलवीयें, तेवारें त्रीश खेत्र अकर्म जूमिते युगलीया मनुष्योने वसवानां छे, जेमां असी मसी अने कृषि, ए त्रण प्रकारना उद्यम नथी. ए मनुष्योनी स्थि ति विषे हालमां अढीद्वीपनो नकाशो छापेलो छे, तेनी

साथे तेनी हकीगतनुं पण एक पुस्तक छप्युं छे, तेमां स विस्तर अधिकार छे, तेथी अहीयां स्वल्प वात लखी छे.

वली आ जंबुद्वीपनां दक्षण बाजुना हिमवंत पर्वत अने उत्तर तरफना शिखरी पर्वत, ए बे पर्वतनी हाथीना दांतना जेवी चार चार दाढाउ लवण समुद्रमां गई छे, ते एकेकी दाढ उपर सात सात अंतरद्वीप छे, तेवारें बेहु पर्वतनी आठ दाढाउ उपर छपन्न अंतरद्वीप छे, तेमां पण पूर्वोक्त असि मसि अने कृषि ए त्रण प्रकारना उद्यम रहित युगलिक मनुष्यो वसे छे, ए रीतें सर्व मली (१०१) प्रकारना मनुष्यो छे.

हवे बीजा सिद्धना जीव पंदर भेदे छे, तेनां नाम.

१ जिनसिद्ध ते रुषभादि तीर्थंकर पोतें जाणवा.
२ अजिनसिद्ध ते पुंमरीकादि गणधर जाणवा.
३ तीर्थसिद्ध ते प्रसन्नचंद्रादिक तथा गणधरादि.
४ अतीर्थसिद्ध ते मरुदेव्यादिक जाणवा.
५ ग्रहस्थलिंगसिद्ध ते भरत चक्रवर्त्यादि.
६ अन्यलिंगसिद्ध ते तापसादिवेशें वल्कलचीरी.
७ स्वलिंगसिद्ध ते साधुवेशें जंबुस्वामी प्रमुख.
८ स्त्रीलिंगसिद्ध ते स्त्रीलिंगें राजिमत्यादि.
९ पुरुषलिंगसिद्ध ते गुणाढ्यराजादिक.
१० नपुंसकलिंगसिद्ध ते कृत्रिमनपुंसक गांगेयादिक.
११ प्रत्येकबुद्धसिद्ध ते करकंडुराजाआदिक जाणवा.
१२ स्वयंबुद्धसिद्ध ते कपिलादिक.

१३ बोधबोधित सिद्ध ते पंदरशें त्रण तापसादिक
१४ एकसिद्ध ते गजसुकुमालादिक.
१५ अनेक सिद्ध ते भरतपुत्रादिक घणा सिद्ध.

॥ अथ काल प्रमाण ॥

१ प्रथम अति सूक्ष्मकालने एक समय कहियें.
२ तेवा असंख्याता समयें एक आवलिका थाय.
३ तेवी (१६७७७२१६)आवलियें एक मुहूर्त्त थाय.
४ त्रीश मूहूर्त्तें दिवस एटले एक अहोरात्र थाय.
५ पंदर अहोरात्रें एक पखवाडयुं थाय.
६ बे पखवाडीयें एक महिनो थाय.
७ बार महीने एक वर्ष थाय
८ तेवा (७०५६००००००००००) वर्षे एक पूर्व थाय.

९ तेवा असंख्याता पूर्वे एक पल्योपम थाय, ते आ वीरीतें चार गाउ उंमो अनें चार गाउ पोहलो वाट लाकारे त्रण योजन जाजेरी परिधिवालो एक पल्य कल्पवो, तेमां उत्तर कुरु खेत्रसंबंधी युगलियाना रोम एवा सुक्ष्म छे के ते ४०९६ रोम एकठां करीयें, तेवारें क र्मभूमि मनुष्यनो एक वाल थाय. एवा ते युगलीयाना सूक्ष्म रोम छे, ते रोम लंबाइयें एक तसुनो लइने तेना सात वखत आठ आठ कटका करीयें, तेवारें (२०९७१५२) कटका थाय, तेवा कटके करी पूर्वोक्त पालो भरीने पछी ते एकेक कटको शो शो वर्षने अंतरे काढतां जे वारें ते पल्य खाली थाय, तेवारें संख्याता

वर्ष थाय, तेने बादर पल्योपम कहीयें, अने ते पूर्वोक्त एकेका रोम खंमना असंख्याता खंम करीने तेवा खंमें, ते पूर्वोक्त कूप एवी रीतें गांसीने नरवो, के तेना उपरथी चक्रवर्त्तिनी सेना चाली जाय, तोपण ते दबाय नहीं, पढी ते एकेको सूक्ष्म खंम शो शो वर्षे काढतां असंख्याता पूर्व व्यतिक्रमे ढते ते पल्य खाली थाय, तेवारें एक पल्योपम थायछे.

१० दश कोडाकोडी पल्योपमें एक सागरोपम थाय.

११ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्प्पिणीथाय.

१२ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्प्पिणी थाय.

१३ उत्सर्प्पिणीअवसर्प्पिणी मली एक कालचक्र थाय.

१४ अनंता कालचक्रें एक पुजलपरावर्त्त थाय.

एवा अनंता पुजलपरावर्त्त, संसारमां परिच्रमण करता जीवें व्यतिक्रम्याः

श्रावकने नित्यप्रत्यें चौद नियम धारवा, तेनां नाम.

१ सचेत परिमाण.

२ ड्व्य परिमाण.

३ विगय परिमाण.

४ उपानह् परिमाण.

५ तंबोल परिमाण.

६ वस्त्र परिमाण.

७ पुष्पन्नोग परिमाण.

८ वाहन परिमाण.

९ शय्या परिमाण.

१० विलेपन परिमाण.

११ ब्रह्मचर्य परिमाण.

१२ दिशि परिमाण.

१३ स्नान परिमाण.

१४ नातपाणीनुं परिमाण.

दश पच्चरकाणनां नाम तथा ते पच्चरकाण कस्याथी केटलुं नरकायु त्रूटे, ते कहे छे.

पच्चरकाणनां नाम.	नरकायु त्रूटवानी संख्या.
१ नवकारसीथी.	एकशो वर्ष नरकायु त्रूटे.
२ पोरिसीथी.	एकहजार वर्ष नरकायु त्रूटे.
३ साढ्ढपोरिसीथी.	दशहजार वर्षनरकायु त्रूटे.
४ पुरिमड्ढथी.	एकलाख वर्ष नरकायु त्रूटे.
५ एकाशनथी.	दशलाख वर्ष नरकायु त्रूटे.
६ नीवीथी.	एकक्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
७ एकलगाणाथी.	दशक्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
८ एकलदांतिथी.	शो क्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
९ आयंबिलथी.	हजार क्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.
१० उपवासथी.	दशसहस्त्रक्रोडवर्ष नरकायु त्रूटे.

अथ समवसरण मध्येनी बार परिषदानां नाम.

३ एक गणधरनी, बीजी विमानवासी देवांगनानी. त्रीजी साध्वीनी. ए त्रण परिषदा अग्निकूणें बेसे.

३ एक ज्योतिषीनी देवीनी, बीजी व्यंतरनी देवीनी, त्रीजी जुवनपतिनी देवीनी. ए त्रण पर्षदा नैरू०

३ एक ज्योतिषी देवोनी, बीजी व्यंतर देवोनी, त्रीजी जुवनपति देवोनी. ए त्रण पर्षदा वायव्य कूणे बेसे.

३ एक वैमानिक देवतानी, बीजी मनुष्यनी त्रीजी मनुष्यनी स्त्रीउंनी. ए त्रण परखदा ईशान कूणे बेसे.

अथ ७ तथा पांच सम्यक्त्वनां नाम.

१ द्रव्यसम्यक्त्व. २ भावसम्यक्त्व.
३ निश्चयसम्यक्त्व. ४ व्यवहारसम्यक्त्व.
५ निसर्गसम्यक्त्व. ६ उपदेशसम्यक्त्व.
१ क्षायोपशमिक० २ उपशमिक० ३ क्षायिक०
४ सास्वादनसम्यक्त्व. ५ वेदकसम्यक्त्व.

अथ चार विकथानां नाम.

१ स्त्रीकथा. २ भोजनकथा. ३ देशकथा. ४ राजकथा.

पांच समवायनां नाम.

१ कालवादी. २ स्वभाववादी. ३ नियतिवादी.
४ पूर्वकृतकर्मवादी. ५ पुरुषकार ते उद्यमवादी.

दश श्रावकनां तथा तेमना ग्रामादिकनां नाम.

श्रावकनाम.	ग्रामनाम.	धनसंख्या.	गोकुल,	भार्यानाम.
१ आनंद.	वाणिज्यग्राम.	१२ क्रोड.	४	शिवनंदा.
२ कामदेव.	चंपानगरी.	१८ क्रोड.	६	भद्राभार्या.
३ चुलणिपित्ता.	वणारसी.	२४ क्रोड.	८	सोमाभार्या
४ सुरादेव.	वाराणसी.	१८ क्रोड.	६	धन्नाभार्या.
५ चुल्लशतक.	आलंभिका.	१८ क्रोड.	६	बहुलाभा०
६ कुंभकोलियो.	कंपिल्लपुर.	१८ क्रोड.	६	पूसाभार्या
७ सद्दालपुत्र.	पोलासपुर.	३ क्रोड.	१	अग्निमित्रा.
८ महाशतक.	राजगृही.	२४ क्रोड.	८	रेवतीआदिकतेर
९ नंदिनीपिता.	सावत्थी.	१२ क्रोड.	४	अश्वनीभार्या.
१० तेतलीपिता.	सावत्थी.	१२ क्रोड.	४	फग्गुणीभार्या.

॥ ए दश श्रावकना चार, छ इत्यादिक जे गायनां गोकुल कह्यां छे, ते एक गोकुल दश सहस्र संख्यानुं जाणवुं, तेमज ए दशेना धर्मगुरु श्रीमहावीर स्वामी छे, अने एमणें श्रावक धर्म वीश वर्ष पाल्यो, तेमां साडाचौद वर्ष घरे रह्या, अने साडापांच वर्ष पौषधशालामां रह्या हतां, अगीयार प्रतिमाधर हता, अंते एक मासनी संलेषणा करी सौधर्मदेवलोकें जूदा जूदा विमानोमां चार चार पल्योपमायुयें उपना छे. तिहांथी महाविदेहमां सीऊशे.

धर्ममां अंतराय करनारा तेर काठीयानां नाम.

१ आलस. २ मोह. ३ अवर्णवादबो०
४ अहंकार आणवो. ५ क्रोध करवो. ६ प्रमाद करवो.
७ कृपणता. ८ गुरुजय. ए शोक राखवो.
१० अज्ञान. ११ अथिरता. १२ कुतूहल जोवुं.
१३ तीव्रविषयाभिलाष.

पांच प्रकारें मिथ्यात्वनां नाम.

१ आभिग्राहिक ते जे पोतानी मतिमां आव्युं ते साचुं.
२ अनाभिग्राहिक ते सर्व धर्म सारा छे, एवी बुद्धि.
३ आभिनिवेशिक ते जाणी बूजीने जूठुं बोलवुं.
४ सांशयिक ते सिद्धांतविचारविषे संदेह राखवो.
५ अनाभोगिक ते अजाणपणें कांइ समजे नही, अथवा एकेंद्रियादिक सर्व जीवने ए मिथ्यात्व छे.

स्वाध्यायनां पांच प्रकार कहे छे.

१ जे गुरुसमीपें शिष्यें वांचवुं ते वांचना.

२ जे शुजनावें सूत्रना विचार पूछियें ते पृछना.

३ जणेला सूत्रनुं गुणवुं, ते परियट्टणा.

४ जे हृदयमांहे सूत्रना विचार चिंतववा, ते अनुप्रेक्षा.

५ जे परने धर्मकथा संजलावीयें ते धर्मकथा.

पांच प्रकारना देव कह्या छे, तेनां नाम.

१ पंचेंद्रिय, तिर्यंच अथवा मनुष्य जेणें देवायु बांध्युं होय, ते देवतापणें उपजशे, तेने द्रव्यदेव कहीयें.

२ जे चक्रवर्त्ती होय तेने नरदेव कहीयें.

३ श्री अणगार साधुने धर्मदेव कहीयें.

४ श्री अरिहंत देवने देवाधिदेव कहीयें.

५ जुवनपत्यादिक चार निकायना देव ते जावदेव.

ए पूर्वोक्त पांच प्रकारना देवोनुं आयुष्य लखे छे.

१ द्रव्यदेवनुंजघन्यअंतरमुहूर्त्त उत्कृष्टत्रणपल्योपम.

२ नरदेवनुंजघन्यसातसेंवर्ष उत्कृष्टचोरासीलाखपूर्व.

३ धर्मदेवनुंजघन्यअंतरमुहूर्त्त उत्कृष्टदेशोऊणीपूर्वकोडी.

४ देवाधिदेवनुंजघन्यबहोत्तेरवर्ष उत्कृष्टचोराशीलाख०

५ जावदेवनुं जघन्य दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम.

त्रण प्रकारें जीवनुं अल्पायु थाय, ते कहे छे.

१ जीवहिंसा करतो थको. २ जूठुं बोलतो थको.

३ श्रीसाधुनेअनेषणीयअफासुआहारादिकदेतोथको.

पांच प्रमादनां नाम.

१ मद्यपान, २ विषय, ३ कषाय, ४ निद्रा, ५ विकथा.

पांच आश्रवनां नाम.

१ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ प्रमाद, ४ कषाय, ५ योग.

पांच संवरनां नाम.

१ सम्यक्त्वसंवर. २ विरतिसंवर. ३ अप्रमत्तसंवर.
४ अकषायसंवर. ५ अयोगसंवर.

पांच अभिगमनां नाम.

१ सचित्त द्रव्य जे शरीरभोगसंबंधि होय ते छांमे.
२ अचित्त मुद्रादिक छांमे. ३ मन एकत्र स्थानकें राखे.
४ एक साडिउं उत्तरासंग करे.
५ जिन दीठे मस्तकें करपांजली करे.

पांच राजचिन्ह जिनप्रासादें जतां मूकियें तेनां नाम.

१ खड्ग, २ छत्र, ३ वाणही, ४ मुकुट, ५ चामर.

पांच स्थानकथी जीव नीकले छे ते कहे छे.

१ पग थकी नीकले, ते जीव नरक गतियें जाय.
२ जंघा थकी निकले, ते जीव तिर्यंच गतियें जाय.
३ पेट थकी निकले, ते जीव मनुष्य थाय.
४ मस्तक थकी निकले, ते जीव देवता थाय.
५ सर्व अंग थकी निकले, ते जीव मोक्षें जाय.

पांच स्थानकें जीव दुर्लभ बोधि पणुं करे, तेनां नाम.

१ श्रीअरिहंतनो अवर्णवाद बोलतो थको.
२ श्रीअरिहंतभाषित धर्मनो अवर्णवाद बोलतो थको.

३ आचार्यादिकनो अवर्णवाद बोलतो थको.
४ चतुर्विध श्रीसंघनो अवर्णवाद बोलतो थको.
५ जे तप अने ब्रह्मचर्य पालीने देव थया छे, ते देवोनो अवर्णवाद बोलतो थको.

एज श्रीअरिहंतादिक पांचनी स्तवना करतो थको जीव सुलभबोधीपणुं पण उपार्जन करे.

त्रण मुद्रानां नाम.

१ योगमुद्रा. २ जिनमुद्रा. ३ मुक्ताशुक्तिमुद्रा.

संसारी जीवनो आहार त्रण प्रकारें छे.

१ ओजाहार. २ लोमाहार. ३ प्रक्षेपाहार.

संसारी जीवनी योनिना त्रण प्रकार.

१ सचित्तयोनि. २ अचित्तयोनि. ३ मिश्रयोनि.

॥ अथ साडा पच्चीश आर्यदेशनां नाम ॥

	देशनाम.	मुख्यनगर.	ग्रामनी संख्या.
१	मगधदेश.	राजगृहनगर.	६६००००००
२	अंगदेश.	चंपानगरी.	५००००००
३	वंगदेश.	ताम्रलिप्तिनगर.	५०००००
४	कलिंगदेश.	कांचनपुरनगर.	१००००००
५	काशीदेश.	वणारसीनगरी.	१९२०००
६	कोशलदेश.	साकेतपुरनगर.	९९०००
७	कुरुदेश.	गजपुरनगर.	८७३२५
८	कुशावर्त्तदेश.	सौरीपुरनगर.	१४०८३
९	पांचालदेश.	कांपिलपुरनगर.	३८३०००

१०	जंगलदेश.	अहिछत्रानगरी.	१४५०००
११	सौराष्ट्रदेश.	द्वारावतीनगरी.	६८०५०००
१२	विदेहदेश.	मिथिलानगरी.	८०००
१३	वत्सदेश.	कोसंबीनगरी.	२८०००
१४	शांमिल्यदेश.	नंदीपुरनगर.	१००००
१५	मलयदेश.	नदिलपुरनगर.	७०००००
१६	मत्स्यदेश.	वैराटनगरी.	८००००
१७	वरुणदेश.	अछापुरी.	२४०००
१८	दशार्णदेश.	मृत्तिकावतीनगरी.	१८९२०००
१९	चेदिदेश.	शुक्तिकावतीनगरी.	६८००
२०	सिंधुसौवीरदेश.	वीतजयपत्तननगर.	६८५००
२१	शूरसेनदेश.	मथुरानगरी.	६८०००
२२	मंगदेश.	पावापुरीनगरी.	३६०००
२३	मासदेश.	पुरिवट्टानगरी.	१४२५
२४	कुणालदेश.	सावत्थीनगरी.	६३०५३
२५	लाटदेश.	कोटीवर्षनगर.	२१०३०००

२५॥केकइदेश. श्वेतांबिकानगरी. ए देशनो अर्द्धआर्य छे

ए साडापच्चीश आर्यदेश ते आ नरत क्षेत्रना दक्षिणार्द्ध नागना मध्य खंमने विषे जाणवा, एमां तीर्थंकरादिक त्रेशठ उत्तम पुरुषोनुं उपजवुं थाय छे, तेमज शक अने यवनादिक ३१९७४॥ अनार्य देश छे, तेमां बधा अनार्य लोको वसे छे.

दश दृष्टांतें मनुष्य जन्म पामवो छुर्लन्न छे, तेनां नाम.

१ नोजननो दृष्टांत.	६ स्वप्ननो दृष्टांत.
२ पासानो दृष्टांत.	७ राधावेधनो दृष्टांत.
३ धान्यनो दृष्टांत.	८ ऽहसेवाजनो दृष्टांत.
४ जुवटानो दृष्टांत.	ए धोंसरानो दृष्टांत.
५ रत्नो दृष्टांत.	१० परमाणुनो दृष्टांत.

आ नीचे जखेला बार वानां पामवां छुर्लन्न.

१ मनुष्यनव. २ आर्यक्षेत्र. ३ मातापितानोपक्षशुद्ध.
४ मार्गानुसारी. ५ रूपवंतपणुं. ६ नीरोग्गता.
७ पूर्णआयु. ८ नलीबुद्धि. ए धर्म सांजलवो.
१० धर्मनी रुचि. ११ सद्दहणा. १२ धर्मनेविषे उद्यम.

अथ बूटक शीखामण.

१ अकार्यनेविषे आलसु थवुं.
२ प्राणवधनेविषे सदैव पांगला थवुं.
३ पारकी तांतनेविषे बहेरा थवुं.
४ परस्त्री निरीक्षणनेविषे जातिअंध थवुं.
५ कीर्त्ति, कुल, सुपुत्र, कला, मित्र, गुण अने सुशील, ए सात वानां वधारवाथी धर्मवृद्धि थाय.
६ माननो त्याग, गुरुनक्ति, सुशीलता, दयाधर्म, सत्य, विनय अने तप ए सात वानां न मूकवां.
७ खल माणसनी संगति, कुस्त्री, सात व्यसन, कुमार्गे धनागम, असमाधि, राग द्वेष अने कषाय, ए सात वानां त्यागवां.

८ उपकार, गुरुवचन, सुजनता, जली विद्या, नियम, वीतराग अने नवकार. ए सात वानां हृदयें धरवां.

९ व्यसनासक्त, सर्प्प, मूर्ख, युवती, जल, अग्नि, अने पूर्वविरुद्ध, ए सातनो विश्वास न करवो.

१० विनय, जिनभक्ति, सुपात्रदान, सुसंयमनेविषे राग, न्हाहापण, निःस्पृहता अने परोपकारपणुं, ए सात गुण मह्होटा जाणवा.

आ दुखमा काल पांचमो आरो प्रवर्त्तते थके त्रीश बोल प्रगट थशे, तेनां नाम कहे छे.

१ नगर ते गाम सरिखा थाशे.

२ गाम ते समशान सरखां थाशे.

३ राजा ते यमदंम सरखा थाशे.

४ कुटुंबी पुरुष दास सरखा थाशे.

५ प्रधान मंत्री लांचग्राही थाशे.

६ सुखी जन निर्लज्ज थाशे.

७ केटलीएक कुलवती स्त्रीयोने पण वेश्यानां आचरण प्रिय थशे.

८ पुत्र स्वछंदाचारी थशे.

९ शिष्य ते गुरुने प्रत्यनीक थशे.

१० दुर्ज्जन पुरुष सुखी अने ऋद्धि सन्मान पामशे.

११ सज्जन जन ते दुःखीया अल्पऋद्धिवाला अने अल्प मान महत्त्व पामवाना धणी थशे.

१२ देश ते परचक्र ममर दुर्भिक्षाक्रांत थशे.

१३ पृथ्वी दुष्टसत्त्वाकुल थशे.

१४ ब्राह्मण अस्वाध्यायी तथा अर्थलुब्ध थशे.

१५ श्रमण महात्मा गुरुकुलवासत्यागी थशे.

१६ यति मंदधर्मी तथा कषायकलुषितचित्तवाला०

१७ समकेतदृष्टी देव, मनुष्य अल्पबली थशे.

१८ मिथ्यादृष्टी देव ने मनुष्य घणा बलवंत थशे.

१९ मनुष्यने देवदर्शन नहीं थशे.

२० विद्या, मंत्र तथा औषध्यादिकना प्रजाव अल्प०

२१ गोरस, कपूर, शर्करादिद्रव्य वर्णादिहीन थशे.

२२ बल, धन, आयुष्य, घणा हीन थशे.

२३ मासकल्पयोग्य क्षेत्र कोइ रहशे नही.

२४ अगीआर प्रतिमा रूप श्रावकधर्मनो विछेद थशे.

२५ आचार्य, शिष्य प्रत्यें सम्यक् श्रुत जणावशे नही.

२६ शिष्य पण कलहना करनार, ऊमरना करनार, असमाधि अनिवृत्तिकारक, मंदबुद्धिवाला थशे.

२७ मुंम घणा अने श्रमण स्वल्प थशे.

२८ आचार्य सहु पोतपोताना गछनी सामाचारी जुदी जुदी प्रवर्तावशे, तथाविध मुग्धजनने मोह पमाडता उत्सूत्र जांखतां पोतानी प्रशंसा अने पारकी निंदा करता एवा केटलाएक कुमति थशे.

२९ म्लेछनां राज्य बलवंत थशे.

३० आर्यदेशना राजा अल्पबलवंत थशे.

ए जाव श्रीकल्पसूत्रनी निर्युक्तिमां कह्यां छे.

अथ पच्चीश राज घरनां नाम,

१ प्रासाद,
२ विहार,
३ हर्म्य,
४ हस्तिशाला,
५ अश्वशाला,
६ नांडागार,
७ कोष्ठागार,
८ नूमिगृह,
९ धर्मशाला,
१० दानशाला,
११ सत्राशाला,
१२ आयुधशाला,
१३ स्नानगृह,
१४ अलंकारसना,
१५ नायकगृह.
१६ शत्रुकार,
१७ पानीयशाला,
१८ आश्रमक्रीडागृह,
१९ महानसनोजनशाला
२० शांतिगृह,
२१ उटज अपवरकचंद्र०
२२ सूतिकागृह,
२३ गोशाला,
२४ पाकपूटिगतिकावपनी शल्यशाला,
२५ गंजापकणघोषनिष द्यामवशुचिस्थानम्.

अथ सात राज्यस्थानकनां नाम.

१ कुमार, २ आमात्य, ३ महांत, .
४ मंत्रीक, ५ बुद्धिपुरुष. ६ धर्म्माधिकारस्थानसाक्षीदक्षपुरुष. ७ अवसरज्ञसेवक.

अथ सप्तांग राज्यनां सात अंग.

हाथी, घोडा, रथ, पायक, नंडार, कोठार, गढ.

अथ बारप्रकारनां वाजित्रनां नाम.

हका, ढका, डमरु, काहली, नेरि, नाण, ढोल, शंख, करड, पोग्रय, मादल, कंसाल,

अथ छत्रीश राजकुलनां नाम.

१ सूर्यवंश.
२ सोमवंश.
३ यादववंश.
४ कंदबवंश.
५ परमारवंश.
६ इक्ष्वाकुवंश.
७ चहुआण.
८ चौलुक्य.
९ मौरिकवंश.
१० शोलारवंश.
११ सैंधववंश.
१२ छिंदकवंश.
१३ चापोत्कटवंश.
१४ प्रतिहारवंश
१५ लुडकवंश.
१६ राष्ट्रकूट.
१७ करटकवंश.
१८ करटपालवंश.
१९ विदकवंश.
२० गुहिलवंश.
२१ गुहिलपुत्तवंश.
२२ पौतिक.
२३ मकुआणवंश.
२४ धान्यपालकवंश.
२५ राजपालकवंश.
२६ अनंगलवंश.
२७ निकुंजवंश.
२८ दहिकरवंश.
२९ केलातुर
३० हूणवंश.
३१ हरिवंश.
३२ ढोढारवंश.
३३ शकवंश.
३४ चंदेलवंश.
३५ शोलंकीवंश.
३६ मारववंश.

अथ छत्रीश विनोदनां नाम.

१ दर्शनविनोद.
२ श्रवणविनोद.
३ गीतविनोद.
४ नृत्यविनोद.
५ लिखितविनोद.
६ वक्तृत्वविनोद.

७ शास्त्रविनोद.
८ शस्त्रविनोद.
९ करविनोद.
१० बुद्धिविनोद.
११ विद्याविनोद.
१२ गणितविनोद.
१३ तुरंगमविनोद.
१४ गजविनोद.
१५ रथविनोद.
१६ पक्षिविनोद,
१७ आखेटकविनोद.
१८ जलविनोद.
१९ यंत्रविनोद.
२० मंत्रविनोद.
२१ महोत्सवविनोद.
२२ फलविनोद.
२३ पुष्पविनोद.
२४ चित्रविनोद.
२५ पतितविनोद.
२६ यात्राविनोद.
२७ कलत्रविनोद.
२८ कथाविनोद.
२९ युद्धविनोद.
४० कलाविनोद.
३१ समस्याविनोद.
३२ विज्ञानविनोद.
३३ वार्त्ताविनोद.
३४ क्रीडाविनोद.
३५ तत्त्वविनोद.
३६ कवित्वविनोद.

॥ अथ चोराशी गछनां नाम ॥

१ दो वंदनिक गछ.
२ धर्मघोषा गछ.
३ संभेग गछ.
४ किन्नरसा गछ.
५ नागोरी तपा गछ.
६ मलधारा गछ.
७ खडतपा गछ.
८ चित्रावाल गछ.
९ उंसवाल गछथी तपागछ थयो.
१० नाणावाल गछ.
११ पल्लिवाड गछ.
१२ आगमिया गछ.
१३ बोकडीया गछ.

१४ भिन्नमालिया गच्छ.
१५ नागेंद्रा गच्छ.
१६ सेवंतरीया गच्छ.
१७ भंभेरा गच्छ.
१८ जइलवाल गच्छ.
१९ वडा खरतर गच्छ.
२० लहुडा खरतर गच्छ.
२१ भाणसोलिया गच्छ.
२२ वड गच्छथी विधिपक्ष गच्छ थयो.
२३ तपाविरुद्द गच्छ.
२४ सूराणा गच्छ.
२५ वडी पोशाल गच्छ.
२६ भरुअच्छा गच्छ.
२७ कच्छबपुरा गच्छ.
२८ संखला गच्छ.
२९ भावडहरा गच्छ.
३० जांखडीया गच्छ.
३१ कोरंटवाल गच्छ.
३२ ब्राह्मणिया गच्छ.
३३ मंभाहडा गच्छ.
३४ नीबलीया गच्छ.
३५ खेजाहरा गच्छ.
३६ उच्छिंतवाल गच्छ.
३७ रुद्रोलिया गच्छ.
३८ पंथेरवाल गच्छ.
३९ खेजडिया गच्छ.
४० वाछितवाल गच्छ.
४१ जीरावलिया गच्छ.
४२ जेसलमेरा गच्छ.
४३ जलवाणिया गच्छ.
४४ तातहड गच्छ.
४५ ढाजहड गच्छ.
४६ खंभायता गच्छ.
४७ शंखवालीया गच्छ.
४८ कमलकलशा गच्छ.
४९ सोजंतरिया गच्छ.
५० सोजतिया गच्छ.
५१ पांपलिया गच्छ.
५२ खीमसरा गच्छ.
५३ चोरवेडीया गच्छ.
५४ प्रामेचा गच्छ.
५५ बंभणिया गच्छ.
५६ गोयलवाल गच्छ.
५७ वग्घेरा गच्छ.
५८ भट्टेरा गच्छ.
५९ नाबेरिया गच्छ.
६० बाहडमेरा गच्छ.

६१ कक्करिया गछ.
६२ रंकवाल गछ.
६३ बोरसवा गछ.
६४ वेगडा गछ.
६५ वीसलपुरा गछ.
६६ संवाडिया गछ.
६७ धुंधुकिया गछ.
६८ विद्याधरा गछ.
६९ आयरिया गछ.
७० हरसोरा गछ.
७१ कोटिकगणकुलगछ.
७२ वज्रीशाखाना बिरुद०
७३ वाडियगण गछ.
७४ उडवाडियगणगछ.
७५ माणवगण गछ.
७६ उत्तरवालसह गछ.
७७ उदेहगण गछ.
८७ चारणगण गछ.
७९ आकोलिया गछ.
८० लूणिया गछ.
८१ साधुपूनमिया गछ.
८२ आंगडिया गछ.
८३ नीबजीया गछ.
८४ साचोरा गछ.

अथ सात निन्हव थयां तेनां नाम तथा मत.

१ श्रीवीरजगवानने केवलज्ञान उपन्या पछी चौदमे वर्षे जमाली निन्हव थयो, जेणें एक समयें वस्तु उपजे नही, परंतु वस्तु उपजतां घणा समय लागे, एवी सद्दहणा राखी ते प्रथम निन्हव जाणवो.

२ श्रीवीरने केवल उपन्या पछी शोलमे वर्षे तिष्यगुप्त थयो, जेणे आतमाना सर्व प्रदेशमां छेहले प्रदेशे जीव रहे छे; एवी सद्दहणा राखी ते बीजो निन्हव.

३ श्रीवीर निर्वाण पछी २१४ वर्षे आषाढाचार्य अव्यक्तवादी थयो. जेणें संयत तथा असंयत इत्यादिक सर्व पदार्थ निश्चय नय करी अव्यक्त छे, एवी सद्दहणा राखी ए त्रीजो अव्यक्तवादी निन्हव.

४ श्रीवीर निर्वाण पछी २२० वर्षे अश्वमित्र नामा निन्हव समुच्छेदवादि थयो. जेणे सर्व पदार्थ उपन्या पछी समनो उच्छेद थाय छे,एवी प्ररूपणा करी सद्दहणा राखी, ते चोथो निन्हव जाणवो.

५ वीर निर्वाणथी २२८ वर्षे एक समयें जीव बे किरिया वेदे,एवी सद्दहणानो करनार एवो दो क्रियावादी गंगसूरि नामे पांचमो निन्हव थयो.

६ वीर निरवाणथी ५४४ वर्षे जीवराशि, अजीव राशि अने नोजीव राशि एवा त्रण राशि मतनो स्थापक छठो निन्हव थयो.

७ श्रीवीर निर्वाणथी ५८४ वर्षे अबद्ध स्पष्ट कर्मवादी सातमो निन्हव थयो. एटले कर्म जे छे ते आत्माना प्रदेश साथें (अबद्ध के०) मल्या नथी, परंतु सर्पकंचुकीनी पेरें फरसमात्र छे, एवी प्ररूपणानो करनार हतो. ए सर्वनी कथा ग्रंथांतरथी जाणवी.

हवे अयोध्यानगरीनुं प्रमाण लखियें छैयें.

उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल अढीगणुं महोटुं थाय छे, ते प्रमाणें बार योजन लांबी अने नव योजन पहोली एवी नगरीना पांचशे पांचशे धनुष्यना चउखूणा चोशाला (८४३२०) थाय तेवा एक चउशाला मांहे पांचशे धनुष्यना देहधारी मनुष्य दश जण सूइ रहे तो ८४३२०० मनुष्य समाइ शके, एवी रीतें गणतां चक्रवर्तीनी सेन्यादिक परिवारनी गणनानो समावेश थइ शकतो नथी.

माटे उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल एक हजार गुणुं महोटुं छे, तेनी साथें बार योजन लांबी अने नव योजन पहोली नगरीनो हिसाब गणीयें, तो उत्सेधांगुले पांच पांचशे धनुष्यना चोखूणा चोशाला २७६४८०००००००) एटले सत्तावीश अब्ज चोशठ क्रोडने एंशी लाख खांडुवा थाय. एवुं नगर होय तो चक्रवर्तिनी सेन्या आदिक बीजी पण सर्व रुद्धिनो समावेश थइ शके. एवी रीतें अयोध्या नगरीनुं मान श्रीतीर्थंकरने वचने श्रीअनुयोगद्वार तथा जंबुद्वीपपन्नत्ति ए सूत्र साथें मलतुं आवे छे.

तथा वली कोइ एक एम कहे छे के, उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल बशे पच्चाश गणुं महोटुं छे, तेमना मते अयोध्या नगरीना चउखूणा चोशाला गणीयें तो पण १७२८००००००० एक अब्ज बहोत्तेर क्रोड ने एंशी लाख खंडुवा थाय. ए मानें गणता पण ठीक मलतुं नथी. कारण के,चक्रवर्त्तिना छन्नुं क्रोड तो एकला पायकज होय. छे ते एकेका पायकनो परिवार स्त्री,पुत्रादिक गणीयें तो घणा जनोनो समूह थाय. ते सर्वने बेसवा उठवाने तथा सूवाने क्रीडा करवाने बाहेर भूमिकायें जवाने तेटली जगा पूरी पडे नही, माटे जाणीये छैयें. जे एक प्रमाणांगुलना योजने एक हजार उत्सेधांगुल थाय छे, अने एक प्रमाणांगुलना योजने एक हजार उत्सेधांगुलना योजन थाय छे. ए प्रमाणें सूत्रोक्त वात खोटी थइ शके नही. उत्सेधांगुल

थकी श्रीवीरजगवाननी अंगुली बमणी मह्योटी जाण वी, अने श्रीवीरजगवाननी अंगुलीथी श्रीरुषजदेव जगवाननी अंगुली बशे गुणी मह्योटी जाणवी, अने श्रीरुषजनी अंगुलथी प्रमाणांगुलीअढी गुणी मह्योटी जाणवी.

ह्वे एके प्रमाणांगुले एक सह्स उत्सेधांगुल थाय. तिह्वां श्रीरुषजदेवनुं शरीर श्रीरुषजदेवनी आंगुली थी एकशोने वीश अंगुलनी उंचपणे ढे, अने तेने उत्सेधांगुलीयें गणतां पांचशे धनुष्यनी उंचाइ श्रीरु षजदेवना शरीरनी थाय, जे कारणे श्रीरुषजदेवनी एक आंगुलीयें चारशें उत्सेधांगुल थाय, अने चारशें उत्सेधांगुलीयें चार धनुष्यने शोल आंगुल थाय, तेने एकशो वीश गुणा करीयें तेवारें पांचशे धनुष्य पूरण थाय, तथा श्रीवर्धमानं स्वामीनुं शरीर श्रीवर्द्ध मानने ह्राथे साडा त्रण ह्राथ उंचपणे ढे,ते एके ह्राथ उत्सेधांगुलनी गणतीना बे ह्राथ थाय, तेवारें श्रीम ह्रावीरनुं शरीर सात ह्राथ उच्चपणे जाणवुं. इति.

॥ अथ अयोध्यावर्णन ॥

विनीता नगरी नव बारह्वी देवतायें नीपजावी. ते सर्व देवना योजन जाणवा, अने तेनो कोट बारशें धनुष्य उंचो तथा आठशें योजन धरती मांहे ढे, त था गढ प्रकार एकशो धनुष्यना जाणवा, कोशीशा पांचशें धनुष्यना जाणवा. तथा ४०० पोल जाणवी. शोल ह्जारने आठशें बारी, पांच योजन तलह्टी,

बहोंतेर लाख कोग, चोराणुं लाख विजेहरा, बारशें धनुष्य ऊंमी खाइ, गढमांहे ईशानकूणे नाभीराजा नो समचउरस्र सुवर्णमय सातभूमिउं आवास कस्यो, पूर्वदिशें वर्त्ताकारि सुवर्णमय, सर्वभद्र मंदिर एवे नामें सातभूमिउं आवास ते भरतेश्वरने अर्थे आवास क स्यो, तथा अग्निखूणे बाहुबलनो आवास जाणवो, बीजा अठाणुं भाइना अठाणुं आवास कस्या,तेनी वच्च मां एकवीश भूमिमय त्रैलोक्यसुंदर नामें आवास श्रीआदीश्वर भगवाननो कस्यो तेमां एक हजारने आठ म्होटा गोंख जाणवा. तेनी शंखावर्त्त पोल करी तथा राणी सुमंगला अने सुनंदा जेटलो राजवर्ग तेटलो मां हे लो गढ रच्यो. उत्तरादिशियें वणिकनो वास कस्यो,द क्षिणदिशें क्षत्रीयोनो वास कस्यो, पश्चिमदिशें कारी गर लोकोनो वास कस्यो, कारू, नारूग सर्व मध्यम तलहट्टीयें वास्या, दक्षिणपोलें अयोध्या पूर्वली वि नीताथी वसाव्यो. ए विनीता अने अयोध्या बेहुने आठ पहोरमांहे विश्वकर्मायें नीपजाव्या.

नगरीनी चारे दिशायें चार वन कस्यां. तेमां पूर्व दिशें सिद्धवन, दक्षिणदिशें श्रीवासवन, पश्चिमदि पुष्पाकर वन अने उत्तरदिशें नंदनवन जाणवुं. नग रीना वनमांहे चारेदिशें चार पर्वत रच्या. तिहां पूर्व दिशायें अष्टापद पर्वत, दक्षिणदिशें महाशैल पर्वत, पश्चिमदिशें पोडेढो पर्वत अने उत्तरदिशें उदयाचल पर्वत रच्यो, तथा भरतनी बहेन ब्राह्मीने शास्त्रना

नंमार सोंप्या, अने बाहुबलिनी बहेन सुंदरीने नव निधि सोंप्या, तथा चोराशी विज्ञान अने बहोंतेर कला इत्यादिक सोंप्या इत्यादि अधिकार घणो छे ते शास्त्रांतरथी जाणवो.

अथ श्रीसिद्धनगवाननना चार निक्षेपा.

१ नामसिद्ध ते नमो सिद्धाणं.
२ थापनासिद्ध ते सिद्धायतन सिद्धनुं घर.
३ इव्यसिद्ध ते जे केवलि थशे ते जीव.
४ नावसिद्ध ते जे कर्म खपावी मोक्ष पहोता ते जाणवा

अथ श्रीअरिहंत नगवंतना चार निक्षेपा.

१ नाम अरिहंत ते रुषनदेवथी श्रीमहावीर पर्यंत चोवीश तीर्थंकरनां नाम जाणवां.
२ थापना अरिहंत ते काष्ठ, पित्तल, पाषाण, सुवर्ण, रूप्य, रत्न, लेपादिकनी श्रीतीर्थंकर प्रतिमा जाणवी.
३ इव्य अरिहंत बे नेदें छे. १ नगवान् मोक्ष पहोता पछी जे तेमनुं शरीर रह्युं ते जाणंग इव्य शरीर कहीयें.
४ जे तीर्थंकर थवानो छे तेनुं शरीर ते नविय इव्य शरीर कहीयें.

॥ छ लेश्यानी कालस्थिति प्रारंनः ॥

१ कृष्णलेश्या काल जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टा तेत्रीश सागरोपम अंतर्मुहूर्त्तें अधिक जाणवी.
२ नीललेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टा दश सागरोपम पल्योपमा संखेय नाग अधिक.
३ कापोत लेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त उत्कृष्ट

त्रण सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे जागेंअधिक.
४ तेजोलेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट
बे सागरोपम पल्योपमने असंख्यातमे जागें अधिक
५ पद्मलेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट
दश सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे जागें अधिक.
६ शुक्ललेश्यानो काल जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट
तेत्रीशसागरोपम अंतरमुहूर्त्त अधिक.

त्रण जणना करेला उपकार वालीने उशीगण
न थइ शकीयें, तेनां नाम कहे छे.

७ एक तो पोताना माता पिता होय तेमने प्रजातें
उठीने सहस्र पाकादिक उत्तम प्रकारना तेलें क
री मर्दन करीयें, सुगंधित इव्यें करी उवटणुं क
रीयें, सुगंधी पाणी, उन्हुं पाणी तथा टाढुं पा
णी एवा त्रण प्रकारना पाणीयें करी न्हवरावी
यें, पछी वस्त्राजरणादिकें करी विजूषा करीयें, म
न गमतां मधुरां जोजन करावीयें, जावज्जीव प
र्यंत आपणी पीठ उपर खांधे चडावी फरावीयें
तेमनी आज्ञामां खरा अंतःकरण पूर्वक चालीयें,
अने बीजा पण जे जे सेवा करवाना उत्तम उ
पाय छे ते सर्व उपायें करी जाव जक्ति सहित
सेवा चाकरी करीयें, तो पण तेमनां उशीगण थ
इ शकीयें नही; परंतु जो पोताना माता पिताने
केवलिप्रणीतं धर्म बूजवीने धर्म पमाडी धर्मने
विषे स्थापीयें, तो उशीगण थइयें.

९ कोइ एक महर्द्धिक पुरुष होय ते कोइ दारिद्री पुरुषनी उपर उपकार बुद्धि आणीने तेने महोटो महर्द्धिक करे, पछी कालांतरें कदापि अशुभ कर्मना योगें ते उपकारनो करनार पुरुष दरिद्री अवस्थाने पामे, तेवारें तेणें जेना उपर प्रथम उपकार करी महर्द्धिक कीधो छे, ते पुरुष पोताना स्वामीने दरिद्र आव्युं जाणी जो पोतानी समस्त लक्ष्मीसप्तांग सहित आपी दीये तो पण तेनो उशीगण न थाय, परंतु केवलिप्रणीत धर्म पमाडे तो उसीगण थाय.

१० कोइक पुरुष साधु चारित्रीयादिकनी पासेंथी कोइ भलुं धर्ममय सुवचन सांभली ते मनमांहे धरी शुभध्यानमां रह्यो थको काल करी देवता पणे उपजे; पछी ते देवता पोताना धर्माचार्य प्रत्यें दुकालमांहे पड्यो जाणी तिहांथी अपहरी सुकाल मांहे लावी मूके अथवा कांतार अटवी मांहे पड्यो जाणीने वस्तिने स्थानकें आणी मूके, अथवा रोग आतंक पीडायें पराभव्यो जाणीने रोग आतंकरहित निराबाध पणे करे, तो पण ते देवता पोताना धर्माचार्यनो उसीगण न थाय; परंतु कदापि ते धर्माचार्य अशुभ कर्मना योगें केवलिप्रणीत धर्म थकी भ्रष्ट थाय, तेवारें तेने केवलिप्रणीत धर्म बूझवे, धर्ममां थापे, तो उसीगण थाय.

॥ अंगस्फुरण विचार. सझाय ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥ श्रीश्रीहर्ष प्रभु गुरु वंदि, जो

डी करीश हुं चोपाइ बंदि ॥ नर नारीनां अंग उपंग, फुरके तास फलाफल चंग ॥ १ ॥ माथे फुरके पुह वीराज, पामी अविचल सारे काज ॥ नाले फुरके साजन वृद्धि, दिन दिन थाये ऋद्धि समृद्धि ॥ २ ॥ पांपण फुरके सुख संपजे, थानक बेठा थाये वि जे ॥ नाक आंख विच फरके जेह, प्रियसंगम हो ये अविहड नेह ॥ ३ ॥ बेहू आंख्यो फुरके जाम, मित्र मले अणचिंत्यो ताम ॥ नयण विचार कहुं हवे जूउं, वेदागमनो लेई बुहो ॥ ४ ॥ जमणी आंख्यो ऊपर फुरे, तो जस लाजने सुख अनुसरे ॥ हाण अ ने ऋय जय नीचले, फुरके व्रत आंखे महीयले ॥ ५ ॥ सुख जोग संगम माबियें, नीचली फुरके फ ल जावीयें ॥ उपरलीयें ऋय डुःख थाय, इणि परें नयण कह्यां विगताय ॥ ६ ॥ नाक तणी मांमी जव फुरे, आतम संतोषी सुख करे ॥ टीगसी फुरके जब नासिका, दीये जव जसनी तवि आसिका ॥ ७ ॥ ल मणा फुरके लखमी लाज, पामे दूध दही घी ग्रास ॥ कान फुरके तो सुवचन सुणे, रूडी वात दिशों दिश सु णे ॥ ८ ॥ गाल फुरके तो सयला जोग, अथवा जोजन सासुर जोग ॥ होठ फुरके जब ऊपरे, तव अचिंत कलियल नर करे ॥ ए ॥ मुख मिष्टान्न फुरके लहे, स्त्रीसंगम थिर गह गहे ॥ जोग लहीजें हिडकी फुरी, होठे फुरकें बोली खरी ॥ १० ॥ गलूं फुरके जब नर नार, वस्त्राजरण लहे तेणि वार ॥ गावड फुरके

नय मरणरो, दाखवीयो फल शास्त्रें खरो ॥ ११ ॥
कलह फुरके हुवे तेहवे, लाज जोग जसु फुरके खवे ॥
काख फुरके होवे धन हाण,वात कही छे एहवी पुरा
ण ॥ १२ ॥ पसवाडा फुरके जिन जिसे, वल्लभ वात
सुणावे तिसे ॥ पूंठ फुरके तो वयरी मरे, काज सवी
घर बेगां सरे ॥ १३ ॥ बांह फुरके प्रिय जो मले, कुं
हणी फुरके जयपद मले ॥ कर फुरके टाले आपदा,
फुरके हथेली दीये संपदा ॥ १४ ॥ पोहोंचे फुरके
चितारे मित्त, अथवा किंपि वधारे प्रीत ॥ आंगुली
या पण तेह विचार, नख फुरके वयरी जयकार
॥ १५ ॥ हीये फुरके लाज प्रमाण, थण फुरके वि
शेष तसु जाण ॥ पेट फुरके वाधे तसु भंमार, ना
भि फुरके पाय विहार ॥ १६ ॥ आसन फुरके स्त्री
संतान, एहवुं सुणीयें लौकिक ज्ञान ॥ ढीचण फुरके
दुख निधान, अथवा पदवी लहे परधान ॥ १७ ॥
गुह्य फुरकतां रमणीरंग, पामे निश्चें उत्तम संग ॥ कटि
यें फुरके पहेरे वस्त्र, साथल फुरके बंधन शस्त्र ॥ १८ ॥
गूल्फ फुरके वाहण चडे, जंघा फुरके पंथे खडे ॥ गी
रीयें फुरके संपदा वधे, अथवा केइ अचिंतित सधे ॥
॥ १९ ॥ पग उपर फुरके धन होय, पग तलीये सवि
शेषो जोय ॥ पग आंगुलीयें जिसें फुर फुरे, तव अ
भीष्ट घर आवी भरे ॥ २० ॥ पुरुष अंगुल लीजें
जिमणो, वाम आंगुल फल नारी तणो ॥ तुरत
फल आपे लुजगने, मध्यम फल आपे वीहिवने

॥ २१ ॥ दिवस तणुं फल बोल्युं क्रमें, वली विपरीत कह्युं निशि समे ॥ ब्रह्मचारी ने बाल कुमार, राजा प्रमुख फलापति सार ॥ २२ ॥ संवत नंद नवण र स चंद, दसराह दिन महिमाएंद ॥ कही वात तन फरकन तणी, आगम वाणी जिसि गुरु नणी ॥ २३ ॥
॥ इति अंग फुरकन विचार स्वाय समाप्त ॥

छींक विचार स्वाध्याय प्रारंनः ॥ देशी चोपाइनी ॥

॥ छींक शुकननो कहुं विचार, सुगुरु समीप सुण्यो में सार ॥ आगलमां जो छींकज होय, अशुन तणी जाणे जे कोय ॥ १ ॥ पहेला शुकन हुआं शुन घणां, छींक हुआं निःफल तेह तणां ॥ छींकज हूआ पछी जे जाण, शुकन हुआं ते करो प्रमाण ॥ २ ॥ माबी छींक होय अर्द्धफल कहे, जमणी छींक बुरी सहु कहे ॥ पूठे छींक सुखदायक सही, घणी छीक ते निःफल कही ॥ ३ ॥ हांसे नय उपाधियें करी, हठ घणो मन मांहे धरी ॥ एह छींक ते निःफल जाण, कुतर छींक तो निःस्वर आण ॥ ४ ॥ मंजार छींक ते मरणज करे, स्त्री छींक कष्टकारी सरे ॥ वस्तु वेचतां छीकज होय, आण्युं क्रियाणुं मोघुं होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां छींकज होय, बमणो लान सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय, छींक होय तो लान न थाय ॥ ६ ॥ नवां वस्त्र वली पहेरतां, छींक होये आगल अण छतां ॥ नोजन होम पूजानुं काम, मंगलिक जे धर्म सुगाम ॥ ७ ॥ काम एटला कीधानी अंत, वली

क्रिया करावे खंत ॥ रति स्नान करीने रहे, छींक होय तो पुत्रज लहे ॥ ८ ॥ रुतुवतीने दीधे दान, पछी होवे पुत्र निदान ॥ वैरी जीती जाशुं जोय, छींके वैरी सबलो होय ॥९॥ रोगीकाज वैद्य तेडवा, जातां छीके जो नवनवा ॥ ते रोगीने मृत्यु जाणीयें, काम विना वैद्यें नाणीयें ॥ १० ॥ वैद्य रोगीने घरें आवतां, छीक होय औषध आपतां ॥ रोगी तणो रोग ते समे, आहार ले ते जमवुं गमे ॥ ११ ॥ व्यापारें लीधे व्यापार, छींक होय तो वृद्धि अपार॥लेखुं शुद्ध दीधुं रायने, छींके फोक थाये तेहने ॥ १२ ॥ पाणी पीतां अथ प्रीसंवाद, छींक दृष्टि दोष अनिवाद ॥ नवे घरें वसवा आवीयें,छींक होये तो उचालीयें ॥१० व्याजें द्रव्य केहने आपतां, वली पृथिवीमां धन दाटतां ॥ कर्षण जोवा जातां वली, वृष्टि होय पुहवी मन रुली ॥ १४ ॥ छींक शुकन नर जाणे जेह, पग पग संपद पामे तेह ॥ छींक विचार जाणे जो कोइ, रुद्धि वृद्धि कल्याणक होइ॥१५॥ इति छींक विचार ॥

दिशापरत्वें छींकना फल जोवानो यंत्र.

ईशानें	पूर्वदिशें	आग्निखुणें
१ हर्ष.	५ लाभ.	९ लाभ.
२ नाश.	६ धनलाभ.	१० मित्रदर्शन.
३ मित्रलाभ.	७ मित्रलाभ.	११ शुभवार्त्ता.
४ अग्निभय.	८ अग्निभय.	१२ अग्निभय.

उत्तर		दक्षिण
१ शत्रुभय.	आठदिशा उनें वि	५ लाभ.
२ रिपुसंगम.	षे प्रहर प्रहरनी	६ मृत्युभय.
३ लाभ.	त्रिकोनुं शुभा शुभ	७ नाश.
४ भोजन.	फल.	८ कलि.
वायव्य	**पश्चिम**	**नैरुत**
१ स्त्रीलाभ.	५ दूरगमन.	९ लाभ.
२ लाभ.	६ हर्ष.	१० मित्रदर्शन.
३ मित्रलाभ.	७ कलह.	११ शुभवार्त्ता.
४ दूरगमन.	८ चोरभय.	१२ लाभ.

अथ चक्रवर्त्तीनी ऋद्धिसमृद्धिनुं प्रमाण.

१ भरतक्षेत्रना ६ खंड. २ नव निधान. ३ चौद रत्न

४ शोल हजार यक्ष इत्यपरे पच्चीश हजार.

५ बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा.

६ चोशठ हजार अंतेउरी राजकन्या परणेली.

७ एकेक अंतेउर साथें बेबे वारांगना तेवारें १२८००० वारांगना होय सर्वमली १९२०००

८ चोराशी लाख हाथी.

९ चोराशी लाख घोडा सामान्य उत्तम भागें.

१० अढार कोडी महोटा अश्व.

११ चोराशी लाख रथ.

१२ छन्नुक्रोड पायक.

१३ बत्रीश हजार बत्रीश बद्धक नाटक.

१४ बत्रीश हजार महोटा देश.
१५ बत्रीश हजार वेलाकुल.
१६ चौद हजार जलपंथा.
१७ एकवीश हजार सन्निवेश.
१८ शोल हजार राजधानी.
१९ छपन्न अंतर द्वीप.
२० नवाणुंहजार द्रोणमुख.
२१ छन्नुं क्रोड गाम.
२२ उगणपच्चाश हजार उद्यान.
२३ अढार हजार श्रेणिकारू.
२४ अढार हजार प्रश्रेणिकारुकरदाता.
२५ एंशीहजार पंमित.
२६ सात क्रोड कौंटुबिक.
२७ बत्रीश कोडी कुल.
२८ चौद हजार महोटा मंत्रीश्वर.
२९ चौद हजार बुद्धिनिधान.
३० बत्रीश हजार नवबारही नगरी.
३१ उगणपच्चाशशें कुराज्य आपातसंपातप्रत्यंतरराजा
३२ शोल हजार म्लेछ राजा.
३३ चोवीश हजार कर्बट.
३४ चोवीश हजार मटब.
३५ चोवीश हजार संबाधन.
३६ शोल हजार रत्नाकर.
३७ वीश हजार आगर पर्त्यंतरें १६०००

३८ चोवीश हजार खेडाशून्य प्रत्यंतरे चौद हजार.
३९ सतावीश हजार नगर अकर.
४० शोल हजार द्वीप.
४१ बह्योतेर हजार पत्तन.
४२ अडतालीश हजार पाटण प्रत्यंतरे. २४०००
४३ पांच लाख दीवीधर दीवलीया पांचक्रो.
४४ चोराशी लाख महोटा नीशान.
४५ दश क्रोड पंचरंगी ध्वजापताका.
४६ त्रण कोड नियोगी.
४७ चोशठ हजार महाकल्याणकारक.
४८ बत्रीश क्रोड अंगमर्दक.
४९ बत्रीश क्रोड आजरणधारक.
५० बत्रीश हजार सूपकारक ते रसोइना करनार ब त्रीशकोडी.
५१ त्रणशें साठ मूल सूपकार तें पोताना रसोइया.
५२ त्रणलाखजोजनस्थानक त्रणलाखसाथेजोजनकरे
५३ एक क्रोड गोकुल.
५४ त्रणक्रोड हलहल.
५५ नवाणुं क्रोड माटंबिक.
५६ नवाणुं क्रोड पौतार.
५७ नवाणुं क्रोड दासीदास.
५८ नवाणुं क्रोड जा यात
५९ नवाणुं लाख अंगरक्षक.
६० नवाणुं क्रोड जोइ कावडीया.

६१ नवाणुंक्रोड मसूरिया.
६२ नवाणुंक्रोड पश्यायत.
६३ नवाणुंक्रोड पटलतारक.
६४ नवाणुंक्रोड पंम्व.
६५ नवाणुंक्रोड मीगाबोला.
६६ एकक्रोड एंसीहजार रासन.
६७ बारलाख नेजा.
६७ त्रण क्रोड पायक विनोदी.
६९ बार क्रोड सुखासन.
७० साठ क्रोड तंबोली.
७१ पच्चाश क्रोड पखालीया पाणीनापोठीया.
तथा प्रतिहार इत्याद्यनेक ऋद्धि चक्रवर्त्तिनी जाणवी.

अथ पल्लीपतनफल लिख्यते.

तत्रप्रथमावयवपतनफलम्.

अवयवना०	फलानि.	अवयवना०	फलानि.
मस्तके	राज्यलाभ ऐ०	हृदये	धनहानि सु०
ललाटे	ऐश्वर्यवृद्धि.	उदरे	पुत्रलाभ.
नेत्रे २	जय उपजे.	नाभौ	सुखवृद्धि.
कर्णे २	अलंकार मिले.	पृष्ठे	महालाभ.
नासिका. २	सौभाग्य.	पसवाडे २	जयउपजावे.
मुखे	मिष्टान्नभोजन.	कटौ	वस्त्रलाभ.
कंठे	प्रियसमागम.	गुह्ये	मित्रसमागम.
स्कंधे २	जय पामे.	जांघउपर	द्रव्यनाश.
भुजे २	धनलाभ.	साथल उ०	वाहन पामे.

करे १ द्रव्यव्यय. गोठणउपरद्रव्यनोसंचय.
स्तने १ सौजाग्य पामे. पगउपर भ्रमण करावे.

अथ तिथिफलम्.

तिथिनाम.	फलम्	तिथिनाम.	फलम्
पडवो०	रोग करे.	नवम०	जयकष्ट०
बीज०	शुभ करे.	दशम०	कष्ट०
त्रीज०	लाभ करे.	अग्यारस०	पुत्रलाभ करे.
चोथ०	रोग करे.	बारस०	धनलाभ थाय.
पांचम०	धनप्राप्ति.	तेरस०	हानि थाय.
छठ०	कष्ट उपजे.	चौदश०	धनहानि थाय.
सातम०	द्रव्य मळे.	पूनम०	बंधुनाश करे.
आठम०	कष्ट करे.	अमावस०	धननाश करे.

अथ वार फलम्

रविवार०	कष्ट करे.	गुरुवार०	जय पामे.
सोमवार०	शुभ करे.	शुक्रवार०	धन पामे.
मंगलवार	कष्ट करे.	शनिवार०	जय उपजे.
बुधवार०	शुभ करे.		

अथ नक्षत्रफलम्.

नक्षत्र नाम.	फलम्	नक्षत्र नाम.	फलम्
अश्विनी०	रोगनाश करे.	स्वाती०	पुत्रप्राप्ति थाय.
भरणी०	रागादिक थाय	विशाखा०	धनहानिथाय.
कृत्तिका०	धननाश.	अनुराधा०	धनपुत्रादि पामे
रोहिणी०	सत्कार पामे.	ज्येष्ठा०	कष्ट पामे.
मृगशिर०	सुख पामे.०	मूल०	संतान सुखपा

आर्द्रा.	रोग,कलहकरे	पूर्वाषाढा०	सौनाग्यप्राप्ति
पुनर्वसु.	धन पामे.	उत्तराषाढा	ग्रामांतरथीलान
पुष्य.	पुत्रसुख पामे.	अनिजित्.	सुख करे.
अश्लेषा.	जुंमीवात सां०	श्रवण०	हर्ष उपजावे.
मघा.	कल्याणथाय०	धनिष्ठा०	जय उपजावे.
पूर्वा.	कार्यसिद्धि.	शततारका	चोरजय.
उत्तरा.	प्रियसमागम.	पूर्वाजाद०	सुखलान.
हस्त.	मित्रसमागम.	उत्तराजा०	धन पामे.
चित्रा.	रोग उपजे.	रेवती०	रोगनाश थाय.

उपर कह्याप्रमाणें गिरलाइ अंगउपर पडे तो त रत स्नान करवुं. तथा तिल अने अडदनुं दक्षिणास हित दान आपवुं. तेथी अनिष्ट मटे.इतिपल्लिपतन॥

अथ अढार वर्णनां नाम.

१ कंदोइ.	२ पटेल.	३ कुंनार.	४ सोनार.
५ माली.	६ तंबोली.	७ गंधर्व.	८ वैद्य.
९ सतुआरा.	१० नारू.	११ घांची.	१२ मोची.
१३ गांडा.	१४ ठीपा.	१५ ठंगारा.	१६ ग्वाल.
१७ दरजी.	१८ कैवर्त्तक जिल्ल.		

अथ वणिक्जातिनांनाम. प्रथम सामान्यथी गाथायें करी कहीने तथा प्रकारांतरें कवित कहीने प ठी विशेषथी सर्व मली १०९ जातिनां नाम लख्यां ठे.

श्रीमाले उवएस नाम नगरे पल्लीपुरे मेडते, वग्घेरे तहडी रुआण नगरे खफ़ोफके पुष्करे ॥ राज न हर्षपुरे नराण नगरे टिंटोडके जायले, खंभे खं

फिलके स्थिता दशमिता साद्धद्वियः पंक्तयः ॥ १ ॥ एवं बार एक पांति ॥ कवित्त ॥ श्रीश्रीमालिउसवाल, प्रगट पोरवाल नणीजें ॥ गुर्जर नागर मोढसो, रठीया हुंबड सुणीजें ॥ जालोहरा जगजला, वली वायडा वखाणुं ॥ मीसावाल दीपि अधिक, ताहिं उपम आणुं ॥ फिंफुज लाड तिहां दीपता, दान सदा दूती दीये, सारिज बार नातिसर, कवित एम कविजन कहे ॥ १ ॥

वणीकनी १०८ जातिनां नाम.

१ श्रीश्रीमालि.	१६ बंबेरवाल.	३१ चित्रावाल.
२ श्रीमालि.	१७ गुणदवाल.	३२ कपोल.
३ उसवाल.	१८ इसरवाल.	३३ हुंबड.
४ पोरवाड.	१९ ढीलीवाल.	३४ मोढ.
५ गुर्जरपोर०	२० ढोडवाल.	३५ फींफु.
६ जांगडा पो०	२१ मेडतवाल.	३६ वायडा.
७ सोरठीयापो.	२२ नोरणवाल.	३७ कंथार.
८ गुर्जर.	२३ नराणावाल.	३८ आंबिला.
९ पल्लिवाड.	२४ जाइलवाल.	३९ करिहा.
१० देवणवाल.	२५ महेशरवाल.	४० दसोरा.
११ अगरवाल.	२६ टिंटोडवाल.	४१ इंदोरा.
१२ धीरवाल.	२७ पुष्करवाल.	४२ नरसिंघोरा.
१३ मंमकवाल..	२८ सिंसवाल.	४३ हरसोरा.
१४ वग्घेरवाल.	२९ खंभेलवाल.	४४ सिंदूरा.
१५ जसवाल.	३० मीसावाल.	४५ अणहिलपुरा

४६ जीराउला.
४७ वडोघा.
४८ उजेण्या.
४९ बोड.
५० केसूरा.
५१ पइगणा.
५२ गराज.
५३ उसाउला.
५४ लाड.
५५ पंचोरा.
५६ लंबेचा.
५७ माघरा.
५८ गंगराडा.
५९ मेम.
६० खोहर.
६१ त्रिहारा.
६२ सिहारा.
६३ चंदेल.
६४ जिल्लोधा.
६५ नागर.
६६ रोहण्या.
६७ कुंकुम्या.
६८ रोड.
६९ पूरवीया.
७० गोलाराडा.
७१ शंख.
७२ सोणिया.
७३ चित्रोडा.
७४ ननेरा.
७५ नागदहा.
७६ वीजापुरा.
७७ मालोधा.
७८ कानडा.
७९ कनोज्या.
८० लखणावत्या
८१ पदमावत्या.
८२ जोजावुत्या.
८३ श्रीखंमा.
८४ अष्टवर्गी.
८५ राहावर्गी.
८६ वीजावर्गी.
८७ हबिणाउरा.
८८ धूल्याकंथारा.
८९ मरहठा.
९० श्रीगौड.
९१ वधणोरा.
९२ अनोला.
९३ माहुरा.
९४ नीमा.
९५ वराड.
९६ कंब.
९७ धाकड.
९८ नमीयाडा.
९९ जट्टेउरा.
१०० खटवड.
१०१ जहल.
१०२ चउसखा.
१०३ डुसखा.
१०४ आठसखा.
१०५ खडाइता.
१०६ लिंगाइता.
१०७ ढोसर.
१०८ डुंगरवाल.

॥ इति वणिग्जाति भेदः॥

॥ अथ सूतक विचार प्रारंभः ॥

॥ प्रथम कोइने घरे जन्म थाय ते विषे ॥

१ पुत्रजन्मे दिन दशनुं सूतक तथा पुत्रीजन्मे दिन अगीयार अने रात्रें जन्मे तो दिन बारनुं सूतक.

२ बार दिवस घरना माणस देव पूजा करे नही.

३ ज्यारा जमता होय, ते बीजाना घरना पाणीथी जिन पूजा करे अने सूवावड करनारी तथा करावनारीने तो नवकार गणवो पण सूजे नही.

४ तथा प्रसववाळी स्त्री, मास एक सुधि जिनप्रतिमाना दर्शन करे नही. तथा दिन (४०) सुधि जिन प्रतिमानी पूजा न करे, अने साधुने पण वोहोरावे नही, एम विचारसारप्रकरण मध्यें कह्युं छे.

५ घरना गोत्रीने दिन पांचनुं सूतक जाणवुं.

६ व्यवहार भाष्यनी मलयगिरिकृत टीका मध्ये जन्मनुं सूतक दिन दशनुं कह्युं छे.

७ गाय, घोडी, उंटणी, भेंष, घरमां प्रसवे, तो दिन बेनुं सूतक अने वनमां प्रसवे,तो दिन एकनुं सूतक.

८ भेंष प्रसवे, तो दिन पंदर पछी तेनुं दूध कल्पे.

९ गाय प्रसवे, तो दिन दश पछी तेनुं दूध कल्पे.

१० छाली बकरी प्रसवे तो,दिन आठ पछी तेनुं दूध कल्पे.

११ उंटणी प्रसवे, तो दिन दश पछी तेनुं दूध कल्पे.

१२ दास दासी के जेनो आपणेज आश्रयें जन्म थाय, अने आपणीज नजर आगळ रह्यां होय, तो तेनुं चोवीश पहोर सुधी सूतक जाणवुं.

॥ ऋतुवंती स्त्री संबंधि सूतक निर्णय ॥

१ दिन त्रण सुधी नांमादिकने छुवे नही. दिन चार लगें पडिक्कमणादिक करे नही पण तपस्या करे, ते लेखे लागे. दिन पांच पछी जिनपूजा करें.रोगादिक कारणें त्रण दिवस वीत्या पछी पण जो रुधिर दीठामां आवे,तो तेनो दोष नथी. विवेकें करी पवित्र थई जिन प्रतिमादिक जिनदर्शन अग्रपूजादिक करे,तथा साधुने पडिलाभे,पण जिनप्रतिमानी अंग पूजा न करें. एम चर्चरीग्रंथमां कह्युं छे.

॥ मृत्यु संबंधी सूतकनो विचार ॥

१ घरनुं कोइ मरण पामेलुं होय तो सूतक दिन बारनुं. तेने घरे साधु आहार लिये नही,तेना घरना अग्नि तथा जलथी जिन पूजा थाय नही,एम निशीथ चूर्णीमां कह्युं छे. निशीथ सूत्रना शोलमा उद्देशामां जन्म तथा मरणनुं घर दुर्गंछनिक कह्युं छे.

२ मृत्युवाला पासें सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.

३ कांधिया, देवदर्शन पडिक्कमणादिक त्रण दिन न करे. परंतु जो नवकारनुं ध्यान मनमां करे,तो तेनो कांइ पण बाध नथी.

४ मृतने अडक्या न होय तो स्नान कीधे शुद्ध थाय.

५ अन्य पुरुष जो मृतने अडक्या होय तो ते शोल पहोर पर्यंत पडिक्कमणादि न करे.

६ जेने घरे जन्म तथा मरणनुं सूतक थाय, तेनें घरे जमनारा दिन बार सुधी जिनपूजा करे नही.

७ वेषना पालटनारा आठ पोहोर सूतक पाले.

८ जन्मे ते दिवसें मृत्यु थाय अथवा देशांतरें मरण पामे अथवा जति मरे तो दिन एकनुं सूतक.

९ आठ वर्षथी नानुं बालक मरण पामे, तो दिन आठनुं सूतक, विचारसार प्रकरणमां कह्युं छे.

१० गाय प्रमुखनुं मृत्यु थाय तो कलेवर घरथी बाहेर लहि गया पछी दिन एक लगें सूतक अने अन्य तिर्यंचनुं कलेवर पड्युं होय, तेने तो घरथी बाहेर लइ जाय, तिहां सुधी सूतक, पछी नहीं.

११ दास दासी जे आपणी निश्रायें घरमां रह्यां होय तेनुं मृत्यु थाय, तो त्रण दिवस सूतक लागे.

१२ जेटला महिनानो गर्भ पडे, तेटला दिवस सूतक.

१३ परदेश गयेलानुं मरण थयुं सांभले तो एक तथा बे दिवसनुं सूतक लागे, एम कल्पभाष्यमां कह्युं छे.

१ गोमूत्रमां चोवीश पहोर पछी, भेंषना मूत्रमां शोल पहोर पछी, गाडर, गधेडी तथा घोडीना मूत्रमां आठ पहोर पछी अने नर नारीना मूत्रमां चार पहोर पछी संमूर्छिम जीव उपजे छे.

॥ अथ पीस्तालीश आगमनां नाम तथा तेनी मूल श्लोक संख्या अने ते प्रत्येकनी उपर जुदा जुदा आचार्योनी करेली बृहद्वृत्तियो तथा लघुवृत्तियो, चूर्णियो, निर्युक्तियो तथा भाष्यो वगेरेना श्लोकोनी संख्यानुं प्रमाण ए सर्व नीचें लखीयें छेयें.

प्रथम श्रीसुधर्मा स्वामिनां करेलां अगीआर अंग नां नाम लखीयें छैयें.

१ श्रीआचारांग सूत्र अध्ययन २५, मूल श्लोक २५००, शीलंगाचार्य कृत टीका १२०००, चूर्णि ८३००, तथा श्रीभद्रबाहुस्वामी कृत निर्युक्ति नी गाथा ३६८, श्लोक ४५०, भाष्य तथा लघुवृत्ति नथी. सरवाले श्लोक २३२५० छे.

२ श्रीसूयगडांग सूत्र अध्ययन २३. पाखंडमत निर्दलन रूप. मूल श्लोक २१००, शीलंगाचार्य कृत टीका १२८५०तथा चूर्णी १०००० श्लोक छे, अने श्रीभद्रबाहु स्वामिकृत निर्युक्तिनी गाथा २०८, श्लोक २५० छे, भाष्य नथी, सरवाले श्लोक २५२०० तथा १५८३ नी शालमां आधुनिक श्रीहेमविमलसूरियें ७००० श्लोकने आशरे दीपिका करेली छे. पण ते जूनी टीपोमां पूर्वाचार्योंनी गणतीमां नथी.

३ श्रीठाणांग सूत्र.एनां दश अध्ययन छे.एना मूल श्लोक ३७७० छे,तेनी टीका संवत् ११२० मां श्रीअभयदेवसूरिकृत १५२५० श्लोकनी छे.सरवाले १९०२० श्लोक छे.

४ श्रीसमवायांग सूत्र. एना मूल श्लोक १६६७ छे, तेनी टीका श्रीअभयदेवसूरिकृत ३७७६ श्लोकनी छे. एनी चूर्णि पूर्वाचार्य कृत ४०० श्लोक छे. सरवाले ५८४३ नी संख्या थई.

५ श्रीविवाहपन्नत्ति जगवतिसूत्र शतक ४१ छे, ए मां छत्रीश सहस्र प्रश्न गौतमना छे. मूल श्लोक १५७५२, टीका संवत् ११२८ मां श्रीअजयदेवसूरिनी करेली झोणाचार्यें शोधेली १८६१६ श्लोकनी छे. एनी चूर्णि ४००० श्लोक पूर्वाचार्य कृत छे. सरवाले ३८३८८ नी संख्या. तथा एनी लघुवृत्ति संवत् १५६८ ना वर्षमां दानशेखर उपाध्यायनी करेली १२००० श्लोक संख्या छे.

६ श्रीज्ञाताधर्म कथांग सूत्र अध्ययन १ए, कथा उंगणीश सांप्रत देखाय छे. प्रथम साडी त्रण.कोटि कथाउ प्रसिद्ध छे,एनी श्लोक संख्या ५५००, तेनी टीका श्रीअजयदेवसूरि कृत४२५२श्लोकछे.

७ श्रीउपासक दशांग सूत्र दश अध्ययन.मूल श्लोक ८१२ एनी टीका श्रीअजयदेवसूरि कृत ए०० श्लोक छे, सरवाले १७१२.

८ अंतगड दशांग सूत्र ए०अध्ययन छे. मूल श्लोक ए००, तथा श्रीअजयदेवसूरिकृत टीका ३०० श्लोक छे. सर्वसंख्या १२००

ए अणुत्तरोववाई सूत्र तेत्रीश अध्ययन मूल,श्लोक. २ए२. तथा श्रीअजयदेवसूरिकृत टीका १००, श्लोक छे, सर्वसंख्या ३ए२.

१० श्रीप्रश्नव्याकरण सूत्र दशअध्ययन रूप, मूल श्लोक१२५०,श्रीअजयदेवसूरिकृत टीका४६०० सर्व संख्या ५८५०.

११ श्रीविपाक सूत्र वीश अध्ययन छे. मूल श्लोक १२१६, श्रीअजयदेवसूरि कृत टीका ए०० श्लोक छे. सर्वसंख्या २११६.

सर्व मली अगीआर अंगनी मूल संख्या ३५६५ए तथा टीका ७३५४४ अने चूर्णि २२७०० तथा निर्युक्ति ७०० मली १३२६०३. तथा सूयगडांगनी दीपिकानी संख्या जुदी छे. एमां आचारांग तथा सूयगडांगनी टीका श्रीशीलंगार्य कृत छे. बाकी नव अंगनी टीका अजयदेवसूरिकृत छे, माटे श्री अजयदेवसूरि, नवांगीवृत्तिकारने नामें उलखाय छे.

हवे बार उपांगनी संख्या लखे छे.

१ श्रीउववाइ उपांग आचारांग प्रतिबद्ध. एनी मूल संख्या १२०० तथा श्रीअजयदेवसूरि कृत टीका संख्या ३१२५ सर्व संख्या ४३२५.

२ श्रीरायप्पसेणी उपांग सूयगडांग प्रतिबद्ध, एनी मूल संख्या २०७ज तथा श्री मलयगिरि कृत टीका ३७००, सर्व संख्या ५७७ज.

३ श्रीजीवाभिगम उपांग ठाणांग प्रतिबद्ध, एनी मूल संख्या ४७०० तथा श्री मलयगिरिकृत टीका १४००० तथा लघुवृत्ति ११०० तथाचूर्णी श्लोक १५०० छे. सर्व संख्या २१३००.

४ श्रीपन्नवणा उपांग, श्रीश्यामाचार्यकृत समवायांग प्रतिबद्ध, एनी मूल संख्या ७७ज७ तथा श्रीमलयगिरि महाराजनी करेली टीका१६०००

तथा हरिजद्रसूरि कृत लघुवृत्ति ३७२८ श्लोक छे, सर्व संख्या २७५१५.

५ श्रीजंबूद्वीप पन्नत्ति उपांग जगवति प्रतिबद्ध एनी मूल संख्या ४१४६ मलयगिरिकृत टीका १२००० तथा चूर्णी १८६० छे. सर्व संख्या १८००६.

६ चंद्रपन्नत्तिसूत्रज्ञाताप्रतिबद्धमूल संख्या २२०० तथा मलयगिरिकृत टीका ए४११ तथा लघु वृत्ति १००० श्लोक छे. ए सर्व संख्या १२६११.

७ सूरपन्नत्ति उपांग पूर्वोक्त चंदपन्नत्ति तथा ए बेहु मली ज्ञाता प्रतिबद्ध छे एनी मूल संख्या २२०० तथा श्रीमलयगिरि कृत टीका ए००० अने चूर्णी १००० सर्व संख्या १२२००.

१२ निरयावलिका सूत्र अथवा नामांतरे एक कप्पि या अध्ययन १०, बीजुं कप्पवडिंसिया अध्यय न १२, त्रीजुं पुप्फिया अध्ययन १०, चोथुं पुप्फ चूलिया अध्ययन १०, अने पांचमुं वन्हिदिसा ए पांच उपांगनुं नाम निरयावलिका कहेवाय छे. ए कप्पिया प्रमुख पांच उपांगनी अध्ययन संख्या ५२ छे, ते अनुक्रमें सातमा उपासक दशां गादिक पांच अंग प्रतिबद्ध छे. ए पांचेनी मली श्लो कसंख्या ११०ए छे ए पांचेनी वृत्ति ७०० श्लोक प्रमाण श्रीचंद्रसूरि कृत छे. सर्व संख्या १८०ए एम बार उपांगनी सर्व मली मूल संख्या २५४२०, तथा टीकानी संख्या ६७ए३६ अने लघु टीकानी

संख्या ६०२० तथा चूर्णीनी संख्या ३३६०, ए कंदर सरवाले संख्या १०३५४४.

हवे दश पयन्नानां नाम कहे छे.

१ चउसरणपइन्नो गाथा. ६३
२ आउरपच्चरकाण पइन्नो गाथा. ०४
३ नत्तपइन्नो गाथा. १७२
४ संथारग पइन्नो गाथा. १२२
५ तंडुलवेयाली पइन्नो गाथा. ४००
६ चंदाविज्झग पइन्नो गाथा. ३१०
७ देविंदथुउ पइन्नो गाथा. २००
८ गणिविद्या पइन्नो गाथा. १००
९ महापच्चरकाण पइन्नो गाथा. १३४
१० मरणसमाधि पइन्नो गाथा. ७२०

ए दश पइन्नानी गाथा संख्या २३०५ थइ. प्रत्येकनां अध्ययन दश दश छे. ए दश पइन्ना पीस्तालीश आगमनी गणतिमां छे. उपरांत केटलीक लखेली प्रतोमां महापच्चरकाणने स्थानकें वीरस्तव पइन्नो गाथा ४३ नो लखेलो छे. हवे उपर कहेला दशथी उपरांत पइन्ना पण हालमां छे, तेनुं इहां प्रयोजन नथी, तथापि वांचनारने वाकेब थवा माटे नाम लखुं छुं.

१ वीरस्तव पइन्नो गाथा. ४३
२ रुषिनाषितसूत्र संख्या ७५०
३ सिद्धिप्राभृतसूत्र संख्या १५०, एनी ७५० टीका छे.

४ दीवसागरपन्नत्ति संग्रहणी संख्या २५०, एनी टीका २५०० छे.

६ अंगविद्यापइन्नो संख्या ८८००एकटीपमांलख्युंछे.

७ ज्योतिषकरंमक पइन्नो संख्या ५००, एनी टीका श्रीमलयगिरि महाराजनी करेली ५००० संख्या नी छे. तेमज गछाचार प्रकरण प्रमुख पण छे. अंग चूलिकानी वृत्ति ८०० श्लोक छे, परंतु ए चूलिका सूत्रमां छे किंवा बीजा कोइमां छे, ते मज उपर लखेला रुषिन्नाषित सूत्र तथा सिद्धि प्राभृत सूत्र अने दीवसागर पन्नत्ति ए पण जे सूत्रोना अंगमां होय तेमां गणवां.

हवे छ छेद ग्रंथनां नाम कहे छे.

१ श्रीनिशीथछेद सूत्र, अध्ययन २०, मूल जुनी टीपमां ८१५ श्लोक छे. एनुं लघुन्नाष्य७४०० श्लोक छे, तथा चूर्णी २८००० श्लोक छे. महोटुं न्नाष्य १२००० श्लोक छे. ते टीकाने नामें पण कहेवाय छे. सर्व संख्या ४८२१५ छे.

२ महा निशीथछेद सूत्र, अध्ययन १३, मूल ४५०० श्लोक छे, तथा मतांतरें एनी त्रण वांचना छे, एक लघुवाचना ४२००, बीजी मध्य वा चना ४५००, अने बृहद्वाचना ११८०० छे.

३ बृहत्कल्पछेदसूत्र. अध्ययन २४, एनी जुनी टी पमां संख्या ४७३ नी छे. एनी वृत्ति संवत् १३३२ ना वर्षमां बृहद्गछीय श्रीक्षेमकीर्त्तिसूरि

कृत ४२००० संख्यानी छे. तथा एनुं जाष्य जुनी टीपमां श्लोक १२००० संख्यानुं छे. तथा लघुजाष्य ८००० श्लोकनुं छे, अने एनी चूर्णि १४३२५ श्लोकनी छे. सर्व संख्या ७६७०८थइ.

३ व्यवहार दशाकल्पछेदसूत्र. एनां दश अध्ययन छे. एनी मूल संख्या जुनी टीपमां ६०० नी छे. एनी टीका श्रीमलयगिरि सूरिकृत श्लोक ३३६२५ नी छे. तथा चूर्णि १०३६१ श्लोकनी छे. एनुं जाष्य जुनी टीपमां६०००श्लोकनुं लख्युं छे. सरवाले संख्या ५०५८६ थइ.

४ पंचकल्पछेद सूत्र. शोल अध्ययन छे. एनी मूल संख्या ११३३ नी छे. एनी चूर्णी २१३० श्लोकनी छे. बीजी टीकामां एनी संख्या ३३०० नी पण लखी छे. तथा एनुं जाष्य ३१२५ श्लोकनुं छे. सर्व संख्या ६३८८ तथा एमां गाथासंग्रह. २०० छे.

५ दशाश्रुतस्कंधछेद सूत्र. जेनुं आठमुं अध्ययन कल्पसूत्र छे. तेनी मूल संख्या १८३५ छे, तथा चूर्णी २२४५ श्लोकनी छे, अने निर्युक्ति संख्या १६८ श्लोक छे. सर्व संख्या ४२४८ थइ.

६ जितकल्पछेदसूत्र. एनी मूल संख्या १०८ छे, एनी टीका १२००० श्लोक छे. तथा सेनकृत चूर्णि १००० श्लोक छे, अने जाष्य. ३१२४ श्लोक छे. सर्व संख्या १६२३२ श्लोक छे तथा

एनी चूर्णिनुं व्याख्यान ११२० छे. तथा एनी लघुवृत्ति श्रीसाधुरत्नकृत श्लोक ५७०० छे. तथा तिलकाचार्य कृत वृत्ति १५०० श्लोक छे.

६ साधुजित कल्प विस्तारें ३७५ श्लोक छे. एनी श्रीधर्मघोषसूरि कृत वृत्ति २६५० श्लोक छे. तथा दशाश्रुतस्कंधनुं आठमुं अध्ययन कल्पसूत्र १२१६ श्लोक प्रमाण श्रीभद्रबाहुस्वामिकृत छे. तेनी पृथ्वीचंद्रसूरि कृत टिप्पणी ६७० श्लोक छे, अने निर्युक्तिनी १६८ गाथा भद्रबाहुस्वामिकृत छे. तथा एनी चूर्णि अने टीकाउ पण घणी छे. परंतु ते घणुं करी विक्रम संवत् १२०० ना पछीनी छे माटे टीपमां लखी नथी.

हवे चार मूल सूत्रनां नाम लखियें छैयें.

१ आवश्यक सूत्र. मूल १२५ गाथा छे. एनी टीका श्रीहरिभद्रसूरि कृत २२००० श्लोक छे. तथा एनी निर्युक्ति श्रीभद्रबाहुस्वामिकृत ३१०० श्लोक छे. तथा चूर्णि १८००० श्लोक छे. तथा बीजी आवश्यकवृत्ति (चतुर्विंशति स्तव) २२००० छे. तथा एनी लघुवृत्ति तिलकाचार्य कृत १२३२१ श्लोक छे, अने अचलगछाचार्यकृत दीपिका १२००० श्लोक छे. तथा एनुं भाष्य ४००० श्लोक छे.तथा आवश्यक टीप्पणिका मलधारी श्रीहेमचंद्रसूरि कृत श्लोक ४६०० एकठा करतां

सरवाले श्लोक संख्या ए८१४६ थाय छे. तथा निर्युक्तिनी टीका २२५००, हरिभद्रसूरिकृत छे.

१ विशेषावश्यकसूत्र. ए आवश्यक मूल सूत्रनुं विशेष परिकर रूप छे. मूल ग्रंथ. ५००० श्लोक श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमण कृत छे, एनी लघुवृत्ति. १४०००, श्लोकनी ग्रंथना अंतमां कोटाचार्य कृत लखी छे, अने टीपमां द्रोणाचार्यनुं नाम छे. तथा एनी बृहद्वृत्ति १८००० श्लोक प्रमाण मलधारी श्रीहेमचंद्रसूरि कृत छे. तेनी टीका नर्कानुविद्या जैनस्थापनाचार्य कृत छे.

१ पाखी सूत्र मूल ३६० संख्या छे,एनी टीका संवत् ११८० मांश्रीयशोदेव सूरियें करेली तेनी श्लोक संख्या २७०० छे,तथा चूर्णि ४०० श्लोक छे.

१ यतिप्रतिक्रमण सूत्र वृत्ति श्लोक संख्या६००छे.

२ दशवैकालिक सूत्र. श्रीसिधंभवसूरिकृत मूल श्लोकनी ७०० संख्या छे. एनी वृत्ति तिलकाचार्य कृत ७००० श्लोक प्रमाण छे. तथा बीजी वृत्ति श्रीहरिभद्रसूरि कृत ६८१० श्लोक छे. तथा श्रीमलयगिरि महाराज कृत वृत्ति. ७७०० श्लोक छे. तथा चूर्णि ७५०० श्लोक छे. लघुवृत्ति ३७०० श्लोक छे, तथा निर्युक्तिनी गाथा ४५० छे. तेमज आधुनिक श्रीसोमसुंदर सूरिकृत लघुटीका ४२००, तथा श्रीसमयसुंदर उपाध्याय कृत लघुटीका २६०० छे.

२ श्रीपिंमनिर्युक्तिसूत्र श्रीनद्रबाहुस्वामिकृत एनी मूल संख्या ७०० नी छे. एनी टीका श्रीमलय गिरिकृत ७००० श्लोक छे. प्रत्यंतरें ६६०० नी छे. तथा संवत् ११६० मां श्रीवीरगणि कृत टीका ७५०० श्लोकनी छे, तथा महासूरिकृत लघुवृत्ति ४००० श्लोकनी छे. सर्व संख्या १ए२००

३ उघनिर्युक्ति श्रीनद्रबाहुस्वामिकृत मूल गाथा ११७० श्लोक १४५० छे. टीका द्रोणाचार्यकृत ७००० श्लोकनी छे एनुं नाष्य ३००० श्लोक छे, तथा चूर्णि ७००० श्लोक छे. सरवाले संख्या १७४५०

४ श्रीउत्तराध्ययन सूत्र. एना छत्रीश अध्ययन वैराग्यमय छे, एनी मूल संख्या २००० छे, तथा बृहद्वृत्ति वादिवेताल श्रीशांतिसूरिकृत १७००० छे. प्रत्यंतरें १७६४५ पण छे, तथा लघुवृत्ति संवत् ११२ए मां श्रीनेमिचंद्रसूरिकृत १३६०० श्लोकनी छे. एनी निर्युक्ति श्रीनद्रबाहु स्वामिकृत गाथा६०७ श्लोक७०० छे तथा एनी चूर्णि ६०००श्लोकनी छे.सरवाले संख्या ४०३०० छे.

हवे बे चूलिका सूत्रनां नाम कहे छे.

५ नंदीसूत्र श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण मूलश्लोक ७००छे, एनी वृत्ति ७७३५ श्लोक प्रमाण श्रीमलयगिरिकृत छे, एनी चूर्णि संवत् ७३३ मां करेली २००० श्लोकनी छे एनी लघुटीका श्रीहरि

न्द्रसूरिकृत श्लोक २३१२ छे, सरवाले संख्या १२३४७ छे. तथा एनी टिप्पणी श्रीचंद्रसूरिकृत ३००० श्लोकनी छे.

६ श्री अनुयोगद्वार सूत्र.गाथा १६०० श्लोक १८०० छे तथा मलधारी श्रीहेमचंद्रसूरिकृत वृत्ति संख्या ६००० छे, तथा श्रीजिनदास महत्तरकृत चूर्णि ३००० श्लोकनी छे,तथा श्रीहरिभद्रसूरिकृत लघुवृत्ति संख्या ३५०० छे. सर्व संख्या १४३०० ॥ ए प्रमाणें अगीयार अंग, बार उपांग, दशपयन्ना, छ छेदसूत्र, चार मूलसूत्र अने बे चूलिकासूत्र, मली पीस्तालीशनी संख्या हाल गणतीमां छे. तेनी मूल श्लोक संख्या ८०३४० तथा मुख्य महोटी एकेक टीकाउनी सरवाले संख्या ३३४३४० छे, अने लघु टीकाउनी संख्या ४७२६१ छे, तेमज चूर्णीनी संख्या ए५१ए६ तथा निर्यूक्ति ५११८ अने भाष्य ५८६४ए छे. ए सर्व एकठा करीयें तेवारें सर्व संख्या ६२०ए०४ थाय. तेनी साथें श्रीमहानिशीथ सूत्रनी लघुवाचना ४२००,मध्य वांचना ४५००,अनेबृहद्वाचना ११८०० ए त्रण वांचनाना श्लोक भेलीयें तो ६४१४०४ थाय. ए मतांतर जाणवुं. आ कहेली संख्या मात्र पूर्वाचार्योयें प्रमाण कीधेलीज समजवी. तेथी विशेषावश्यकनी लघु टीका १४००० छे. ते एमां आवी नथी, तेमज आवश्यकनी टिप्पणी ४००० श्लोक छे, ते पण आमां गणी नथी, अने वली घणा सिद्धांतोनी

बीजी नवी टीकाउ तो अनेक छे, परंतु ते आधुनिक छे, माटे पूर्वाचार्योयें ते प्रमाण करेली समजवी नही. आमां मात्र पुरातन टीकाउज प्रमाण करेली छे. तेमज एने लगता कल्पसूत्रादिकनी संख्या पण एमां गणी नथी, माटे तेनी संख्या सर्व जूदी जाणवी.

आमां आवश्यक, आचारांग, सूयगडांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन तथा कल्पसूत्र, ए छनी निर्युक्ति श्रीनद्रबाहुस्वामिकृत छे.

तथा निशीथनाष्य, बृहत्कल्पनुं लघुनाष्य तथा बृहद्भाष्य, व्यवहारनाष्य, जितकल्पनाष्य, पंचकल्पनाष्य अने उघनिर्युक्ति नाष्य, ए सात नाष्य पूर्वाचार्यकृत छे.

तथा आचारांग, सूयगडांग, नगवती, जंबुद्वीप पन्नत्ति, आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, पाखीसूत्र, अनुयोगद्वार, नंदी, निशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, पंचकल्प, जितकल्प, ए शोलनी चूर्णि पूर्वाचार्यकृत छे.

अने टीकाउमां छ सूत्रनी टीका श्रीहरिनद्रसूरिकृत छे, नव अंग तथा उववाइ उपांगनी टीका श्री अनयदेव सूरिकृत छे, आचारांग अने सूयगडांग ए बे अंगनी टीका शीलंगाचार्य कृत छे, पांचनी टीका मलयगिरिजीमहाराजकृत छे, तथा बीजी टीकाउ पृथक् पृथक् आचार्यकृत छे. सरवालानी संख्यामां सर्व सूत्रनी पहेली महोटी, वृत्ति तथा लघुवृत्ति जे पूर्वाचार्यकृत छे, तेज लीधेली छे. बीजी लीधी नथी. ए

संक्षेपथी आगमसंख्या बालजीवने समज माटे छे.

अथ नारकीनी वेदनानुं स्वरूप कहे छे.

॥ तिहां पहेली रत्नप्रभा, बीजी शर्करप्रभा, त्रीजी वालुकाप्रभा, चोथी पंकप्रभा, पांचमी धूमप्रभा, छ ही तमःप्रभा, सातमी तमस्तमःप्रभा, एम सात प्र कारनी भूमियो नारकी जीवोने रहेवा माटे छे. एने विषे जिहां सुधी ते नारकी जीवो जीवे, तिहां सुधी सदा सर्वदा निरंतर पणे अत्यंत दुःख वेदे छे, परंतु आंख मींचीने उघाडीयें तेटली वार पण वेदना भो गव्या विना रहेता नथी. कारण के, तिहां एकांत दुः खज बांध्युं छे, ते वेदे छे. बीजो उद्यम कांइ नथी.

हवे ते नारकियोने एक क्षेत्रवेदना, बीजी अन्यो ऽन्यवेदना, त्रीजी परमाधामिकृत वेदना. एम त्रण प्रकारनी वेदना होय छे. तेनुं किंचित् स्वरूप कहे छे.

प्रथम क्षेत्रवेदना कहे छे. के एक रत्नप्रभाना तथा बीजा शर्करप्रभाना त्रीजा वालुकाप्रभाना नार की जीवो शीतयोनिया छे, अने योनिस्थानविना बीजी जे नरकभूमिका छे ते सर्व जेवा अग्निवर्ण खेरना अं गारा होय ते करतां पण अत्यंत उष्ण छे माटे ते शीत योनिया जीव ते उष्णवेदना वेदे छे. एम बीजा पण नरकोनेविषे भावना जाणवी. पंकप्रभा नरकभूमिना उपरना घणा नरकावासा तो उष्ण छे, अने नीचला थोडा नरकावासा शीत छे. धूमा नामा नरकभू

मिने विषे नरकावासामां झाजा शीतल ठे अने उष्ण थोडा ठे; तथा ठठी अने सातमी ए बेहुनी एकांत शीतल नूमिकाउ ठे. अने तेमां रहेला नारकीयो उष्णयोनिया होय ठे. परंतु एक एक नूमिनी नीची नीची नूमियोमां अनुक्रमें तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम वेदनाउ ठे, तेनुं स्वरूप कहे ठे.

ग्रीष्मऋतुने अंतें मध्यान्हसमयें सूर्य प्राप्त थये ठते अने आकाश मेघ रहित ठते अत्यंत उुष्ट पित्त प्रकोपें करी व्याकुल अने ठत्ररहित चारे दिशियें प्र दीप्त थयेली जे अग्निज्वाला तेणेंकरी व्याप्त एवा कोइ पुरुषने जेवी वेदना थाय, तेथी अनंतगुणी उष्णवेद ना नरकावासाने विषे रहेला नारकीजीवोने जाणवी.

शीतयोनिया नारकीने उष्णवेदनारूप नरकावा साथी लइने खेरना अंगारामां नाखीने कोइ धमे, तेवारें तो ते नारकी चंदन जेवी शीतलता पामी अत्यंत सुखी थया ठता ते अग्निमां निद्रा पामे. वली पोप तथा माघ महिनामां रात्रिने समयें शीतल वायु वाय, तेणें करी जेम हृदयादि कंपे, तथा हिमाचलमां वस्त्ररहि त बेठा थकां उपरथी हिम पडतां जेवी शीतवेदना होय, तेथी अनंतगुणी शीतवेदना नरकावासामां होय. तें शीतवेदनायुक्त नरकवासामांथी ते नारकीने बा हेर काहाडी पूर्वोक्त हिमाचलादिक शीतल स्थलें जो स्थापन करीयें तो ते नारकी निरुपम सुखीया थया ठता निद्राने पामे.

हवे ते नारकीना डुःखदायी पुजलना परिणामो दश प्रकारें ठे, ते कहे ठे. प्रथम जे जे आहारादिक नानाप्रकारना पुजलनुं जे बंधन ते प्रदीप्त थयेला अग्नि करतां पण अत्यंत दारुण होय. बीजी ते नारकीनी गति पण उंट सरखी होय, ते गतिनुं डुःख तपावेला लोहसरखी नूमिपर चलाव्याथी पण अत्यंत वधारे थाय. त्रीजुं हुंमकसंस्थान ते पांख ठेदन थयेला पक्षी समान डुःखदायी थाय. जेने जोवाथकी जोनारने अत्यंत उद्वेग उत्पन्न थाय ठे, चोथा चिंतप्रमुखना पुजल जे उडीने शरीरें लागे, ते शस्त्र अने खड्गधारा सरीखा लागे. पांचमो ते नरकावासानो वर्ण सर्वत्र अंधकारमय अने विष्ठा, मूत्र, श्लेष्म, मल, लोही, वसा, परु, अने मेदथी नर्यो एवो तेना तलीयानो नाग ठे, तथा स्मशाननी पठें ठेकाणें ठेकाणें मांस, केश, हाड, नख, दांत, चर्म, पड्यां ठे, एवो वर्ण ठे, ठठो जेमां कुतरां, शीयाल, सर्प, मार्जार, नोलीया प्रमुखनां मृत कलेवर पडयां होय, तेना गंध करतां पण अत्यंतघणो पुजलनो डुर्गंध होय. सातमो नारकीना पुजलनो रस, ते कडवी तुंबडी करतां पण अत्यंत कडवो होय. आठमो नारकीना पुजलनो स्पर्श ते विंठीना कांटा सरखो अने क्रौंचना रोम करतां पण अत्यंत नुंमो जाणवो. नवमो अगुरुलघु परिणाम ते पण अत्यंत डुःखना आवासरूप जाणवो. दशमो अत्यंत विलाप, आक्रंद डुःखकारी शब्दना पुजल

होय. एम दश प्रकारें नारकीना पुद्गलपरिणाम होय.

हवे नारकीयोने दशप्रकारनी वेदना होय, ते कहे छे. तेमां शीतवेदना अने उष्णवेदना, ए बे पूर्वें कही ते जाणवी. वळी त्रीजी वेदना ते अढीद्वीपनां अन्न तथा घृत जो आपीयें, तो पण नारकीने भूख मटे नहिं; अने चोथी वेदना ते समस्त समुद्र अने नदीनां पाणी पाइयें, तो पण तृषा मटे नहिं, तथा तालवुं होठ सूकातां रहे नहिं. पांचमी वेदना ते छरी, करवत, तेणें करी खणतां पण जेनी खरज मटे नहिं. छठ्ठी वेदना जे निरंतर परवश रहे. सातमी वेदना जे अहियां रहेनारा पुरुषो करतां अनंतो ज्वर सदा होय, आठमी वेदना ते शरीर तापमय होय, दाघज्वरमय होय. नवमी वेदना ते अनंतो नय होय. दशमी वेदना ते शोक, अत्रत्य मनुष्य करतां अनंतगुणो होय, अने विभंगज्ञान पण सर्वत्र दुःखदायी होय; अने परमाधामी लोक पण नाळां तलवार, तीर, प्रमुख हथीयार देखाडीने महादुःख देनारा त्यां होय छे. तेणें करीनें अत्यंत दुःखी होय; अने निरंतर शोक करता रहे. एम नारकीने दश प्रकारनी क्षेत्रवेदना कही.

हवे नारकीमां अन्योऽन्यकृत वेदना कहे छे. नारकीना बे नेद छे. एक मिथ्यादृष्टि अने बीजा सम्यग्दृष्टि छे, ते जेम भिक्षु तथा वणजारा प्रमुखनो कुतरो बीजा कुतराउने देखी क्रोधांध थयो थको लडवा आवे, तेउ परस्पर दांत तथा नखें करी युद्ध

करे. तेम जे मिथ्यात्वी नारकी होय, ते पण विभंग ज्ञानें करी बीजा नारकीने दूरथकी आवतो देखी क्रोधें करी अत्यंत रौद्र एवुं नवुं वैक्रिय रूप करे, अने पोतपोताना नरकावासमां पृथ्वीना स्वभावोत्पन्न हथीयार अथवा नवां विकुर्व्यां एवां त्रिशूल अने भालां प्रमुख अथवा हाथ, पग, दांत, अने नखें करी मांहो मांहे प्रहार करे. ते प्रहारें पीडा पामेला एवा तेउ लोहीना कादवमां आलोटता आक्रंद करे, अने जे सम्यग्दृष्टि नारकी होय, ते पोताना पूर्वभवकृत पापने स्मरण करी बीजाथकी उत्पन्न थयेलुं एवुं डुःख सम्यक्प्रकारें सहन करे. परंतु बीजाने पीडा उपजावे नहिं. ए रीतें नारकीने अन्योऽन्य वेदना कही.

हवे नारकीयोने परमाधामी देवताकृतवेदना कहे छे. नरकावासनी पहेली भित्तिने विषे निःकूट आला छे,ते आला नारकीने उपजवानी योनि जाणवी. तिहां नारकी उपना पछी अंतरमुहूर्त्त आलो न्हानो अने शरीर महोटुं तेथी तेमां समाय नही. तेवारें नीचें पडे. जेवो ते नीचें पडे के तुरत तेने पड्यो जाणीने परमाधामी त्यां आवे, ते आवीने पूर्वकृत पापकर्मने अनुसारें कर्मोपचारीने डुःख आपे. ते कहे छे.

मद्यपान करनारने तपावेलो तरुउ पीवरावे. अने जे परस्त्रीसंगी होय, तेने अग्निमय लोहनी पूतलीनुं आलिंगन करावे; कूट शिमलाना वृक्ष उपर

बेसाडे. लोढाना घणा प्रकारना घात करे. वांसला यें करी छेदे, क्षतउपर क्षार मूके. उष्ण तेलमांहे तले; कुंत, भालामां शरीरने प्रोवे, तथा अग्निनी ज्व ळिमांहे शेके, घाणीमांहे पीले, करवतें करी छेदी नाखे; काक, घुअड, कुतरा अने सिंह प्रमुखें विकू र्वीने कदर्थना करावे, वैतरणी नदीमांहे ते नारकीने ऊबोळे, असिपत्र वनमांहे प्रवेश करावे, तप्तवेलुमां हे दोडावे. एवी विविध प्रकारनी वेदना उत्पन्न करी नारकीने दुःख आपे. पछी वज्रमय चंचूयेंकरी ते नारकीने पक्षीयो तोडे, तथा कांही धरतीयें पड्या रहेला नागने वाघ चूंटे, खाय. एवा ते परमाधामी अधम, महा पापिष्ठ, क्रूरकर्मा के जेमने पंचाग्नि प्र मुख कष्ट क्रिया करवा थकी उपनुं एवुं जे क्रूर सुख छे. एवा असुर परमाधामी ते कदर्थ्यमान एवा नार कीने मांहोमांहे पाडा, कूकडा अने मेंढानी पेरें जू ऊता देखी युद्ध प्रेक्षक मनुष्यनी पेरें ते परमाधामी हर्ष पामे, अट्टहास्य करे, चेलोत्क्षेप करे, पटह व गाडे, दादरी वजावे, जेम अहियानां लोको नाटक देखी खुशी थाय, तेवा परमाधामी त्रणे जातनी कद र्थना नारकीने देखी खुशी थाय. घणुं शुं कहियें ! परंतु नारकीयोने दुःख देवामां तथा दुःखी देखीने खुशी थवामां परमाधामीयोने जेवी प्रीति होय छे, तेवी प्रीति अत्यंतरम्य वस्तुने जोइने पण होय नही.

हवे पूर्वोक्त क्षेत्रवेदना, अन्योन्यवेदना, तथा

परमाधामीकृतवेदना माहेली कइ कइ वेदना कये कयें नरकें होय? ते कहे ले. साते नरकने विषे क्षेत्रवेदना ते स्वजावें क्षेत्रथकी वेदना होय. बीजी अन्योन्य कृतवेदना ते बे प्रकारें ले, ते एक शरीर थकी अने बीजी प्रहरणथकी तेमां शरीरें करी अन्योन्यवेदना साते नरक जूमिने विषे ले. अने प्रहरण कृत वेदना पहेलां पांच नरकने विषे ले, तेमज पहेलां त्रण नरकने विषे परमाधामीकृतवेदना ले; लठा तथा सातमा नरकना नारकीयो राता कुंथुआ जेवा अने जेनां मुख वज्रमय होय ले; वली गाणना कीडा सरखा विकूर्वीने अन्योऽन्य शरीरमां प्रवेश करावे. तेउ वेदना उदीरे, अने शरीरमांहे प्रवेश करी खाय. वली कोइक ठेकाणे अन्योऽन्यकृतवेदना लठी नरक पृथ्वी सुधी ले. एवुं कह्युं ले. ते परमार्थ नथी जाणता! शुं जाणीयें तेणे कया हेतुथी कह्युं हशे? एनां हाबेहुब चित्र,आ पुस्तकनी आदिमां ले,तिहांथी जोवां.

पहेली रत्नप्रजा पृथ्वीनुं गोत्र. अर्थ सहित नाम ते गोत्र कहियें. तिहां पहेले कांमे घणां रत्नो ले. ते थी ते नरकजूमिनुं रत्नप्रजागोत्र कहियें; अने ते पठीनी ल नरकजूमि पृथ्वीमय जाणवी. तिहां बीजी नरकजूमियें शर्करा कांकरा घणा ले, तेथी तेनुं गोत्र, शर्करप्रजा ले. त्रीजी वालुकप्रजायें वेलु घणी ले, माटे तेनुं वालुकप्रजा गोत्र ले. चोथी पंकप्रजायें कचरो घणो ले, तेथी तेनुं गोत्र पंकप्रजा ले. पांचमी

धूमप्रज्ञायें धूम घणो छे, माटे तेनुं गोत्र धूमप्रज्ञा छे. छठी तमःप्रज्ञायें अंधकार घणो छे तेथी तेनुं गोत्र तमःप्रज्ञा पडयुं छे. सातमी तमस्तमःप्रज्ञायें अंधकारनुं बहुलपणुं छे, माटे तेनुं गोत्र तमस्तमः प्रज्ञा छे.ए साते नरकभूमिनां गुणनिष्पन्न गोत्र कह्यां.

॥ अथ पुरुषना शोल शणगार ॥

॥ क्षौरं मज्जनवस्त्रजालतिलकं, गात्रे सुगंधार्चनं, कर्णे कुंमलमुद्रिके च मुकुटं, पादौ च पादूयुतौ ॥ हस्ते खड्गपटांबराणि छुरिका विद्याविनीतं मुखं, तांबूलं शुचि शीलकं च गुणिनां श्रृंगारकाः षोडश ॥

॥ अथ स्त्रीना शोल शणगार ॥

॥ आदौ मज्जनचारुचीरतिलकं नेत्रांजनं कुंमले, नासामौक्तिकपुष्पहारभरणं झंकारकौ नूपुरौ ॥ अंगे चंदनलेपकं कुचमणिक्षुद्रावली घंटिका, तांबूलं करकंकणं चतुरता श्रृंगारकाः षोडश ॥१॥ इति॥

॥ सवैयो ॥ योगी सिद्ध कलंदर तापस, होत दिगंबर मार कसोटी ॥ पीर मुरिद्द मुसाफर मीरा, सेख वसे वनमांहि लंगोटी ॥ जे जपियां जप जाप जपे हैं, जांहिंकी कीरति देश महोटी ॥ सेवक हे स्वामि दास निरंजन, रोटि बिना सब बात हे खोटी ॥ १ ॥

योगि धरे योग ध्यान, पंमीत पढे पुराण, ज्ञानी कहियानपें, उदास भेख लीया हे ॥ केते शाह पात शाह, केते शाहजादे केते,वासुदेव चक्री पुनि करण दा

न दीया हे ॥ कवि कहे गंगदास, गंगाके निकट बीच, एक सेर अनाजने जगत जेर कीया हे ॥ १ ॥

॥ प्रास्ताविक संग्रह ॥

ज्ञानवंतने केवली, द्रव्यादिक अहिनाण ॥
वृहत्कल्पनी नाष्यमां, सरखा नाष्या जाण ॥ १ ॥
क्रिया मात्र कृतकर्मक्षय, दड्डरचुन्न समान ॥
ग्यान कह्युं उपदेश पद, तास गार सम जान ॥ २ ॥
खजुआसम किरिया कही, ज्ञान नानसम जोय ॥
कलियुग एह पटंतरो, बूझ विरला कोय ॥ ३ ॥
हुं तुज पूछुं हे लछी, कृपण घरे कां जाय ॥
सूरा दाता चतुर नर, ते तुझ कां न सुहाय ॥ ४ ॥
सूरा घर रंमापणुं, दाता दे परहत्र ॥
चतुरां घर मुझ सोकडी, तिणे कृपण तणो लियो सत्र॥

॥ सवैयो ॥ धीरज तात क्षमा जननी, परमारथ मित्त महारुचि मासी ॥ ज्ञान सुपुत्त सुता करुणा मति, पुत्र वधू समता प्रतिनासी ॥ उद्यम दास विवेक सहोदर, बुद्धि कलत्र शुनोदय दासी ॥ नावकुटुंब सदा जिन्हके ढिग, सो मुनिकुं कहियें गृहवासी॥

दोहा ॥ जीवदया गुणवेलडी, रोपी ऋषनजिणंद ॥
श्रावक कुल मारग चढी, सींची नरत नरिंद ॥ १ ॥
क्रोध मान माया करी, लोन लग्यो महिलार ॥
वीतराग वाणी विना, किम पामे नव पार ॥ २ ॥

॥ छप्पो ॥ मधुमाखी मधुआल, रातदिन जतने राखे ॥ सदा करे संनाल, चांच नरि कदिय न चाखे॥ नम

तो आव्यो निद्न,अग्नि करी माख उमाडी ॥ सघलो लीयो सहेत, मीण कज मालो पाडी ॥ २ ॥ पस्तावो करती पछें, घणुं हाथ मारवी घसे ॥ कवि गंग कहे हो गुणियणो, कृपण तेम माया कसे ॥ ३ ॥

अथ अष्ट महासिद्धि स्वाध्याय ॥

॥ श्रुतदेवीनो लही पसाय,श्रीसद्गुरुना प्रणमी पाय ॥ लक्षण अष्ट महासिद्धि तणां, कहुं शास्त्रथी सोहामणां ॥ १ ॥ महिमा सिद्धिथी मेरुसमान, रूप करण सामर्थ्य वखाण ॥ त्रिभुवनने पूजित पण होय, विष्णु कुमार तणीपरें जोय ॥ २ ॥ वशिता सिद्धि जग वश करे. जो मनमांहे तेहवुं धरे ॥ वायु थकी पण लघुतर रूप, लघुता सिद्धिथी करे अनूप ॥ ३ ॥ भूमिपरें जल ऊपर जाय, जलपरें भूमें डुब की खाय ॥ विविध विषय भोक्ता पण कह्यो, प्राकाम्य सिद्धिनो गुण ए लह्यो ॥ ४ ॥ अंगुलि अग्र करी रविचंद, मेरु अग्र फरशे आनंद ॥ प्राप्तिसिद्धि प्रगटे जेहने, एहवी शक्ति होवे तेहने ॥ ५॥ सूक्ष्म थइ विचरे आकाश, अणिमा सिद्धि तणो सुविलास ॥ जिहां इछा तिहां विचरे सही, कामावसायि सिद्धि बल लही ॥ ६ ॥ तीर्थंकर इंद्रादिक तणी, ऋद्धि विकुर्वण शक्ति भणी ॥ सिद्धि ईशिता नामें वली, त्रण लोक प्रभुताशुं फली ॥ ७ ॥ अष्टप्रकारें ए ऐश्वर्य, नामभेद भाखे मुनिवर्य ॥ योगसिद्धिनुं ए फल सहु, सिद्धि नाम पण भाखे बहु ॥ ८ ॥ लब्धितणे अ

धिकारें ग्रह्ी, लब्धि नाम पण तेणें सही ॥ योग त
णां फल एम अनेक, योगीश्वर जाणे सुविवेक ॥ए॥
योगवंत बहु लब्धिमहंत,श्रीगौतमगणधर उलसंत ॥ प्र
ह उठी तस ध्यावो रंग,जिम लहो लीलालब्धीसंग १०॥

॥ जुंवटुं नही रमवा आश्चर्यी उपदेश स्वाध्याय ॥

सुगुण सनेहा सांजल शीखडी, जाण विचारी जोय
रे रसिया ॥ चतुर विचक्षण धर्म कला तणी, रामत
रमीयो सोय रे रसीया ॥ १ ॥ मत कोइ रमजो रे सा
जन जूवटे, रमतां लागे रे पाप रे रसीया ॥ धर्म क
रमनां हो कारज वीसरे,खोजे माय ने बाप रे रसीया
॥म०॥॥२॥व्यसनी रात दिवस रामत रमे,नवि लीये
प्रजुनुं नाम रे रसीया ॥ उंघ बगाड़ ने निद्रा नवि
करे, घरना विणसे हो काम रे रसीया ॥ म० ॥ ३ ॥
व्यसन विगूतो नलराय कुबेरशुं, रमतापासा सार रें
रसीया॥धण कण कंचण राज गमावीयुं, होडे हारी
नार रे रसीया ॥ म० ॥ ४ ॥ पांम्वे कौरवशुं क्रीडा
करी, जूवटे मीठी हार रे रसीया ॥म०॥ ५ ॥ वनवासें
रह्या वात अछे घणी,केहेतां न लाजे पार रे रसीया ॥
रंग रंगीला हो पासा सोगठां, सरस बनावे दाव रे
रसीया ॥ छयल छबीला खेले खांतशुं, होश धरी मन
मांय रे रसीया ॥ म० ॥ ६ ॥ जटकें पटकें कीडी
कुंथुआ, थाये एहनी घात रे रसीया॥ मुख थकी मार
शबद वली उच्चरे, निगमे पुण्यनी वात रे रसीया ॥
म० ॥ ७ ॥ जूठुं बोले हो रामत रमताशुं, कपटो

मेले हो तान रे रसीया ॥ चोरी शीखे निज पर घर तणी, पर रमणीनुं हो ध्यान रे रसीया ॥ म० ॥८॥ पासे रमतां हो वली मानवी, होवे जूआरी हो तेह रे रसीया ॥ सात व्यसन मांहे ए मुख्य छे, धन्य जे वरजे रे तेहरे रसीया ॥ म० ॥ ए ॥ रमतां कलेश करी उठे सही, राजा मागे दंम रे रसीया ॥ आरंभ लागे हो वायुकायना, पापें भराये पिंम रे रसीया ॥ म० ॥१०॥ रामत मत मांमो घर आपणे, वदीयें न कोशुं होड रे रसीया॥भजन करो तमे श्रीभगवंतनो,आ णंद कहे करजोड रे रसीया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिनस्तवनं ॥ सुरती महीनानी देशी ॥

॥ सरसति सामणी विनवुं.मागुं अविरलवाण ॥ बी जा जिनवर गायशुं, हरख घणो मन आण ॥ १ ॥ कोशल देश सोहामणो, नयरी अयोध्या रे गाम ॥ राज करे तिहां राजवी, जितशत्रु एनुं नाम ॥ २ ॥ विजया रे राणी तेहनी, शीलवती अभिराम ॥ तेह नी कूखें अवतस्या, अजित जिनेसर स्वाम ॥ ३ ॥ साडा रे चारशें धनुष्यनी, कंचन वरणी काय ॥ बहों तेर लाख पूरव कही,श्रीजिनवरनी आय ॥४॥ गज लं छन सोहामणुं, सेवे छे नित पाय ॥ सुर नर मली सेवा करे, आनंद अंग न माय ॥ ५ ॥ पुण्यसंयोगें हुं पामियो, तुमने श्रीजिनराज ॥ पाप गयां सवे माह रां, फलिया मनोरथ आज ॥ ६ ॥ दीन दयाल

दया करी, दीजें अविचल राज ॥ नित्य लाल कहे प्र
भु माहरां, सारजो वंछित काज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमीनी सिझाय प्रारंभ ॥

॥ निंदा म करशो कोइनी पारकी रे ॥ ए देशी ॥

॥ संजम लइ ध्यानें रह्या रे, ताणे रहनेमी गढ गिर
नार रे ॥ चीर नीचोवतां महासती रे, देखी व्याकु
ल थया मुनिराय रे ॥ १ ॥ रे रे रहनेमीने राजुल बू
झवे रे ॥ अहो रे उत्तम अणगारने रे, चारित्रें लागे
अतिचार रे ॥ रे रे० ॥ ए आंकणी ॥ हुं रे नारी
नेमजी तणी रे, ताणे तुमें छो देवर मुनिराज रे ॥ एरे
वात जुगती नही रे, ताणे एवुं केम कीजें अकाज
रे ॥ रे रे० ॥ २ ॥ एम सुणी रहनेमी बोलिया रे,
ताणे तुं नारी हुं भरतार रे ॥ राज करीयें जुनागढ
तणुं रे, ताणे सुख विलसो महि सार रे ॥ रे रे० ॥ ३ ॥
हां हां रे ए शुं मूरख बोलीया रे, ताणे जादव कुल ला
गे लाज रे ॥ तुं रे बंधव हुं बुं बेनडी रे, ताणे जुगमां हां
सी थाय रे ॥ रे रे० ॥ ४ ॥ नारीनो संग नवि कीजि
यें रे, ताणे नारी छे मोहनो पास रे ॥ नारीथकी दु
र्गति लहे रे, ताणे नीच पामो नरकावास रे ॥ रे रे० ॥
॥ ५ ॥ रत्न चिंतामणि पामीने रे, ताणे ककर ग्रहें
कोण हाथ रे ॥ गज छोडी खर नवि चडे रे, ताणे पय
मूकीने पिये कुण छाछ रे ॥ रे रे० ॥ ६ ॥ विषयमां
म राचो मुनिवरु रे, ताणे विष समं विषय विकार
रे ॥ विष खावाथी मरीयें एकदा रे, ताणे विषय

अनंती वार रे ॥ रे रे० ॥ ७ ॥ अतिचारें आलोव तां रे, ताणे मनथकी मुनिराज रे ॥ निरतिचार पणे करी रे, मुनि ध्यान चड्या सजी साज रे ॥ ॥ रे रे० ॥ ८ ॥ रहनेमी हृदय विचारीने रे, में तो कीधो महा अपराध रे ॥ ए नारी बंधव तणी रे, ताणे धिक धिक ए हुं तो साध रे ॥ रे रे० ॥ ए ॥ एही वखत खमावतां रे, ताणे राजीमतीने तेणि वार रे ॥ नरकें पडतो मुजने राखीयो रे, तुं तो सर्व सतीमां शिरदार रे ॥ रे रे० ॥ १० ॥ इति ॥ (आमां छेल्ली गां थामां कर्त्तानुं नाम नथी तेथी अधूरी जणाय छे.)

॥ सज्जन विषे दोहा ॥

॥ सज्जन हीरासें अधिक, मूल न जाको होत ॥ क हूं परायो होत नहीं, दुःखमें होत उद्योत. ॥१॥ स ज्जनशुं अंतर नहीं, राखे कोई सुजान ॥ सज्जनसें सुख होत है, यह निश्चे मन मान ॥२॥ सज्जन जगमें ब हु नहिं, बिरलो कहूं दिखात ॥ तिहि पिछान कीजें सुखद, जातें सब दुःख जात ॥३॥ सज्जन पर उपकार करि, लेत न कछु इह दाम ॥ देत सदा जो चाहियें, समयशुं आवत काम ॥४॥ सज्जन सम जगमें नहीं, अवर सु कोइ पुमान ॥ आप बहुत दुःख देखिकें, देत और सुख जान ॥५॥ सज्जन स्वभाव देखि के, आपहु ता सम होउ ॥ सज्जनता सबतें अधिक, या सम और न कोउ ॥६॥ सज्जन नाम धरायकें, भटकत जगमें और ॥ पै लछन युत देखि के, संग कीजियें गौर ॥७॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकर, बार चक्रवर्त्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बलजद्र, ए त्रेशठ शिलाका पुरुष मांहेला जे चक्रवर्त्ती अथवा वासुदेवादिक जे तीर्थंकरना वारामां थया, अथवा जे तीर्थंकरने आंतरें थया, तेमनां नाम तथा शरीरनी ऊंचाइनुं मान तथा तेना आयुष्यना प्रमाणनो यंत्र जूदा जूदा कोठा सहित जव्यजनोने नामस्मरण राखवा माटे नीचें दाखल कर्यो छे.

	जिन २४	चक्री १२	केशव ९	प्रतिवासु०	तनुमान.	आयुमान.	बलदेव ९
१	ऋषज्ञ १	जरत १	०	०	धनु० ५००	पूर्वलक्ष ८४	
२	अजित २	सगर २	०	०	ध० ४५०	पूर्वलक्ष ७२	०
३	संजव ३	०	०	०	ध० ४००	पूर्वलक्ष ६०	०
४	अजिनं० ४	०	०	०	ध० ३५०	पूर्वलक्ष ५०	०
५	सुमति ५	०	०	०	ध० ३००	पूर्वलक्ष ४०	०
६	पद्मप्रज्ञ ६	०	०	०	ध० २५०	पूर्वलक्ष ३०	०
७	सुपार्श्व ७	०	०	०	ध० २००	पूर्वलक्ष २०	०

	जिन	चक्री १२	केशव ९	प्रतिवसु०	तनुमान.		आयुमान	बलदेव.
८	चंद्रप्रभ ८	०	०	०	ध०	१५०	पूर्वलक्ष १०	०
९	सुविधि ९	०	०	०	ध०	१००	पूर्वलक्ष २	०
१०	शीतल १०	०	०	०	ध०	९०	पूर्वलक्ष १	०
११	श्रेयांस ११	०	त्रिपृष्ठ १	अश्वग्रीव १	ध०	८०	वर्षलक्ष ८४	अचल ८५
१२	वासुपूज्य	०	द्विपृष्ठ २	तारक २	ध०	७०	वर्षलक्ष ७२	विजय ७३
१३	विमल १३	०	स्वयंभु ३	मेरक ३	ध०	६०	वर्षलक्ष ६०	सुभद्र ६५
१४	अनंत १४	०	पुरुषोत्तम ४	मधु. ४	ध०	५०	वर्षलक्ष ३०	सुप्रभ ५५
१५	धर्म १५	०	पुरुषसिंह ५	निशुंभ. ५	ध०	४५	वर्षलक्ष १०	सुदर्शन १७
१६	०	मघवा ३	०	०	ध०	४२॥	वर्षलक्ष ५	०
१७	०	सनत०	०	०	ध०	४१॥	वर्षलक्ष ३	०
१८	शांति १६	शांति० ५,	०	०	ध०	४०	वर्षलक्ष १	०
१९	कुंथु १७	कुंथु० ६	०	०	ध०	३५	वर्षस० ९५	०
२०	अर १८	अर० ७	०	०	ध०	३०	वर्षस० ८४	०

	जिन	चक्री १२	केशव ९	प्रतिवसु०	तनुमान.		आयु मान		बलदेव.	
२१	०	०	पुरुषपुंड०	बलेंद्र. ६	ध०	२९	वर्षस०	६५	आनंद	८१
२२	०	सुभूम ८	०	०	ध०	२८	वर्षस०	६०	०	
२३	०	०	दत्त ७	प्रल्हाद. ७	ध०	२६	वर्षस०	५६	नंदन	६५
२४	मल्लिजि १९	०	०	०	ध०	२५	वर्षस०	५५	०	
२५	मुनिसुव्रत.	महापद्म	०	०	ध०	२०	वर्षस०	३०	०	
२६	०	०	लखमण ८	रावण. ८	ध०	१६	वर्षस०	१२	पद्म	१५
२७	नमि २१	हरिषेण	०	०	ध०	१५	वर्षस०	१०	०	
२८	०	जय ११	०	०	ध०	१२	वर्षस०	३	०	
२९	नेमनाथ २	०	कृष्ण ९	जरासंध.	ध०	१०	वर्षस०	१	राम	१२
३०	०	ब्रह्मदत्त	०	०	ध०	७	वर्षस०	७००	०	
३१	पार्श्व २३	०	०	०	हाथ	९	वर्ष	१००	०	
३२	महावीर	०	०	०	हाथ	७	वर्ष	७२	०	

॥ अथ श्रीआयंबिल तपनी ओलिनो विधि ॥

॥ ए तप प्रथम आशोशुदि सातमना दिवसथी मांडीने आशोशुदि पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस सुधी, तेमज चैत्रशुदि सातमथी मांडी पूर्णिमा पर्यंतना नव दिवस लगें नव नव आयंबिल करवां, एवी रीतें साडा चार वर्ष पर्यंतमां एक्याशी आयंबिल करे थके ए तप पूर्ण थाय छे. हवे आयंबिल करवाना नव दिवस पर्यंत ब्रह्मचर्य पालवुं. प्रतिदिन सांझ, सवार मली बे वार पडिक्कमणां करवां, तथा एकेका दिवसें अनुक्रमें एकेका पदनी क्रिया करवी, तिहां जे पदना जेटला गुण होय, ते पदना तेटला साथीया काढवा, अने तेटलाज ते पदना ॐ ह्रीं पद सहित खमासमण देवां, तथा तेटलाज लोगस्सनो काउस्सग्ग पण करवो, अने एकेक पदनां नामनी वीश वीश नोकरवाली गणवी, तथा ते ते पदना गुणनी स्तुति भावना पूर्वक भाववी जोइयें, माटे ते नव पदनां नाम तथा गुण अने गणणुं गणवानी संख्या लखीयें छैयें.

नव पदनां नाम.	गुणनी संख्या.	गणणुं गणवुं.
ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं.	१२	१२००
ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं.	८	८००
ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं.	३६	३६००
ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं.	२५	२५००
ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं.	२७	२७००
ॐ ह्रीं नमो नाणस्स.	५१	५००

ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स.	६७	१०००
ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स.	१७	५००
ॐ ह्रीं नमो तवस्स.	१२	२००

॥ हवे नव पदनां खमासमण देवानो पाठ कहे छे ॥

१ इच्छामि खमासमणो वंदीउं जावणिज्जाए निसी हिआए मत्थएण वंदामि ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहं ताणं, ए प्रथम पदें श्रीअरिहंतजी बार गुणें शोभित मध्यभागें बिराजमान, उज्ज्वल वर्ण सहित एवा श्रीअरिहंत भगवंतने महारी त्रिकाल वंदना होजो

२ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ए बीजे पदें श्रीसिद्धपरमात्मा आठ गुणें शोभित, पूर्वदिशें बि राजमान, रक्तवर्ण सहित, एवा श्रीसिद्ध भगवंत ने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

३ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ए त्रीजे प दें श्रीआचार्यजी छत्रीश गुणें शोभित, दक्षिणदिशें बिराजमान, पीतवर्ण सहित, एवा श्रीआचार्य भ गवानने महारी त्रिकालवंदना होजो.

४ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ए चोथे प दें श्री उपाध्यायजी पच्चीश गुणें शोभित, पश्चिम दिशें बिराजमान, नीलवर्ण सहित एवा श्री उपा ध्यायजीने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

५ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ए पां चमे पदें श्रीसाधुजी सत्तावीश गुणें शोभित, उत्त

रदिशें बिराजमान, कृष्ण वर्ण सहित. एवा सर्व साधुने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

६ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स ए छट्ठे पदें श्री म्यक्ज्ञान एकावन नेदें शोजित, अग्निखूणे बिराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्री ज्ञान पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

७ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीँ नमो दंसणस्स, ए सातमे पदें श्रीसम्यक् दर्शन सडशठ बोलें शोजित, नैकृतखूणे बिराजमान, श्वेतवर्णसहित, एवा श्री दर्शन पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

८ इच्छामि० ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स, ए आठमे पदें श्रीचारित्र सत्तर नेदें, शोजित, वायव्यखूणे बिराजमान, श्वेतवर्णसहित एवा श्री चारित्र पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

९ इच्छामि० ॥ ॐ ह्रीँ नमो तवस्स, ए नवमे पदें श्रीतप बारनेदें शोजित, ईशानखूणे बिराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्रीतपपदने महारी त्रिकाल वंदना होजो. ए रीतें नव दिवस पर्यंत विधि करवो, ते अहींआं संक्षेपें कह्यो. विस्तारें गुर्वादि कथी जाणवो ॥ इति उलिनो संक्षेपविधि समाप्त ॥

हवे विशेषथी नवपद उलि करण आयंबिल तपनो विधि कहे छे. आश्विन तथा चैत्र शुक्ल सप्तमीथी मांमीने पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस लगण तप करें. तिहां

प्रथम तो भूमि शुद्ध करिने मांडणादिकथी चित्रित करे, पछी बाजोठ उपर श्रीसिद्धचक्रजीनी स्थापना करे, तिहां प्रभातसमयें रात्रि पडिक्कमणुं करी वस्त्र पहिलेही सिद्धचक्रजीनी स्थापना पासें आवी पांच शक्रस्तवें देव वांदे, पछी नव देरासरें अथवा नव प्रतिमाजी आगल नव चैत्यवंदन करे, वासक्षेप पूजा करे, केसरचंदनथी पूजा करे, पछी मध्यान्ह समयें पांच शक्रस्तवें देव वांदे, पछी गुरुनी पासें आवी अप्पुहित्तमि खमावीने आयंबिलनुं पच्चरकाण करे, तिहां प्रथम दिवसें अरिहंत पदनो वर्ण सपेत छे, माटे आयंबिलमां चोखा अने गरम पाणी ए बे द्रव्य लेवुं, एम पच्चरकीने श्रीअरिहंत पदना बार गुणो छे. ते मांहेला प्रत्येक गुणने चिंतवतो थको एकेक गुणें इच्छामि खमासमणो वंदिउं० इत्यादि कहेतो बार गुणना बार नमस्कार करे, ते आ प्रमाणेः-

१ श्रीअशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः
२ सुरपुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
४ चामरयुगलप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०॥
५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
६ भामंडलप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
७ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
८ छत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥
एज्ञानातिशयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः

१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
११ वचनातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥

इति द्वादश अरिहंतगुणाः ॥ नमस्कार ॥ ए बार गुणोने नमस्कार करीने अन्नत्थ उससिएणं कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे,पछी एकलोगस्स प्रगट कहे, पछी स्वस्थानकें जइ चैत्यवंदन करी पच्चख्काण पारीने आयंबिल करे, पहेलुं जेवारें पाणी पिये,तेवारें चैत्यवंदन करीने पीये, पछी फरी चैत्यवंदन करीने तिविहार पच्चख्काण करे, अने णमो अरिहंताणं ए पदनुं गुणणुं १००० गुणे. तथा नवपद महात्म्य आश्रयी श्रीश्रीपालराजाजीनुं चरित्र सांभले, अने जेवारें तें संपूर्ण एक प्रहर दिवस रहे, तेवारें त्रीजी वखत पांच शक्रस्तवें देव वांदे, पछी सामायिक लइने दिवस छते पडिक्कमणुं करे, आरतिने समयें धूप दीप कुसुम पूजा करे, अथवा प्रथमथीज आरति अने पूजा प्रमुख करीने पछी पडिक्कमणुं करे,तेवार पछी सूवानी वखतें वली इरियावहि पडिक्कमी चैत्यवंदन करी राइ संथारानी गाथाउ गुणीने सूवे, अने जिहां सुधी निद्रा न आवे तिहां सुधी नवपदना गुण स्मरण करे॥इति॥

अथ द्वितीय दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ पहेला दिवसमां कहेली रीति प्रमाणें बीजा दिवसें पण प्रभातनी सर्व करणी करीने, श्रीसिद्धपदनो

लाल वर्ण छे, माटे गहुंनी रोटलीनुं आयंबिल करे, अने "ॐ ह्रीं" णमो सिद्धाणं ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणे, तथा श्रीसिद्धपदना आठ गुण छे. तेने चिंतवतो आठ नमस्कार करे, ते आ प्रमाणेः-

१ श्रीअनंतज्ञानसंयुताय श्री सिद्धाय नमः॥
२ श्रीअनंतदर्शनसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
३ श्रीअव्याबाधगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
४ श्रीअनंतसम्यक्त्वचारित्रगुणसंयुतायश्रीसि० नमः॥
५ श्रीअक्षयस्थितिगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
६ श्रीअरूपिनिरंजनगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
७ श्रीअगुरुलघुगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
८ श्रीअनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥

इति सिद्धस्याष्टौ गुणाः ॥ ए आठ नमस्कार करी, अन्नत्थऊससिएणंनो पाठ कही आठ लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने पछी प्रथम दिवसना विधिमां कह्या मुजबनी करणी सर्व अनुक्रमथी करे ॥ इतिद्वितीय दिवसविधिः ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ पूर्वोक्त विधि पूर्वक प्रभातनुं कर्त्तव्य करी श्रीआचार्यपद पीले वर्णे छे, माटे चणानी दाळनुं आयंबिल करे. "ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं" ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणे, अने आचार्य पदनां छत्रीश गुण याद करीने छत्रीश नमस्कार करे, ते आ प्रमाणें.

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ धैर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
७ उपदेशगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१० शीलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१२ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१३ अचपलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१४ प्रशांतवदनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१६ ऋजुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१७ मृदुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१८ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१९ द्वादशविधतपोगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः
२० सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्रीआचार्याय०
२१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२२ शौचगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२३ अकिंचनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

२५ अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
२६ अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
२७ संसारस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय०
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय०
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३२ संवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३३ निर्ज्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः॥
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः

इति षट्त्रिंशदाचार्यगुणाः॥ए छत्रीश नमस्कार करी अन्नछ उससिएणंनो पाठ कही छत्रीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने बीजी पण पूर्वोक्त करणी सर्व अनुक्रमथी करे ॥ इति॥

॥ अथ चतुर्थदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ इहां पण प्रभात संबंधि कर्तव्य करी "ॐ ह्रीं णमो उवझायाणं" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे श्रीउपाध्यायजीनो हरितवर्ण छे माटे हरितवर्णे मगनी दाल प्रमुखनुं आयंबिल करे, अने उपाध्यायजीना पच्चीश गुण याद करीने पच्चीश नमस्कार करे, ते लखीयें छैयें.

१ आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायायनमः
२ सूयगडांगसूत्रपठनगुण० ३ ठाणांगसूत्रपठनगु०
४ समवायांगसूत्रपठन० ५ नगवतीसूत्रपठनगुण०
६ ज्ञातासूत्रपठनगुण० ७ उपासकदशासूत्रपठन०
८ अंतगडदशासूत्रपठन० ९ अणुत्तरोववाइसूत्रप०
१० प्रश्नव्याकरणसूत्रप० ११ विपाकसूत्रपठनगुण०
१२ उत्पादपूर्वपठनगुण० १३ अग्रायणीपूर्वप०
१४ वीर्यप्रवादपूर्वप० १५ अस्तिप्रवादपूर्वप०
१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठ० १७ सत्यप्रवादपूर्वप०
१८ आत्मप्रवादपूर्वप० १९ कर्मप्रवादपूर्वप०
२० प्रत्याख्यानप्रवादपू० २१ विद्याप्रवादपूर्वप०
२२ अविंध्यप्रवादपूर्व० २३ प्राणायामप्रवादपूर्व०
२४ क्रियाविशालपूर्वप० २५ लोकबिंदुसारपूर्व०

इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥ एम पच्चीश नमस्कार करी उना थइ अन्नत्थऊससिएणंनो पाठ कही पच्चीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने पूर्वोक्त करणी अनुक्रमथी करे ॥इति॥

॥ अथ पंचमदिवसविधि प्रारंनः ॥

॥ पूर्वली रीतें प्रनातविधि करी "ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे. साधुपद काले वर्णे छे, माटे अडदनुं आयंबिल करे, अने सर्व साधुपंदना सत्तावीश गुण चिंतवतो सत्तावीश नमस्कार करे, ते आ प्रमाणेः—

१ प्राणातिपातविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत० ३ अदत्तादानविरमणव्र०
४ मैथुनविरमणव्रत० ५ परिग्रहविरमणव्रत०
६ रात्रिभोजनविरमणव्रत० ७ पृथ्वीकायरक्षकाय०
८ अप्पकायरक्षकाय० ९ तेउकायरक्षकाय०
१० वाउकायरक्षकाय० ११ वनस्पतिकायरक्षकाय०
१२ त्रसकायरक्षकाय० १३ एकेंद्रियजीव रक्षकाय०
१४ बेंद्रियजीवरक्षकाय० १५ त्रेंद्रियजीवरक्षकाय०
१६ चौरिंद्रियजीवरक्षकाय० १७ पंचिंद्रियजीवरक्ष०
१८ लोभनिग्रहकायश्रीसा० १९ एक्षमागुणयुक्तायश्री०
२० शुभभावनाभावकाय० २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्ध
२२ संयमयोग्ययुक्ताय० २३ मनोगुप्तियुक्ताय०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय० २५ कायगुप्तियुक्ताय श्रीसा०
२६ शीतादि द्वाविंशति परिसह सहन तत्परायश्री०
२७ मरणांतउपसर्ग्गे सहन तत्परायश्रीसाधवे नमः

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणाः॥ए रीतें सत्तावीश नमस्कार करी उभो थइ अन्नबउससिएणंनो पाठ कही सत्तावीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारे. पछी पूर्वोक्त करणी क्रमथी करे. ए पांच परमेष्ठीना सर्व मली एकशो अष्टावीश गुण थाय माटे नोकारवालीना पण १०८ मणीया होय छे॥

॥ अथ षष्ठदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ पूर्वली रीतें प्रभातसंबंधि विधि करीने "ॐ ह्रीं

णमो दंसणस्स " ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे, तथा दर्शनपद सपेत वर्णे छे, माटे नांदूलनुं आयंबिल करे, अने सम्यक्त्वना सडशठ गु चिंतवतो सडशठ नमस्कार करे ते कहे छे.

१ परमार्थ संस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
२ परमार्थज्ञानसेवनरूप श्रीस०
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप श्रीस०
४ कुदर्शन वर्जनरूप श्रीस० ५ शुश्रूषारूप श्रीस०
६ धर्मरागरूपश्रीस० ७ वैयावृत्त्यरूपश्रीस०
८ अर्हद्विनयरूप स० ९ सिद्धविनयरूप स०
१० चैत्यविनय रूप स० ११ श्रुतविनय रूप स०
१२ धर्मविनय रूप स० १३ साधुवर्ग विनय रूप०
१४ आचार्यविनयरूप० १५ उपाध्यायविनयरूप स०
१६ प्रवचनविनयरूपस० १७ दर्शनविनय रूपस०
१८ संसारे श्री जिनसार मिति चिंतनरूप स०
१९ संसारे श्रीजिनमति सारमितिचिंतन०
२० संसारे जिन मतिस्थित साध्वादिसार मितिचिंत०
२१ शंकादूषणरहिताय० २२ कांक्षादूषणरहिताय०
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्दर्शनायनमः ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहितायसद्दर्शनायनमः ॥
२५ तत्परिचय दूषण रहितायसद्दर्शनायनमः ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूपस० २७ धर्मकथाप्रभावकरू०
२८ वादिप्रभावकरूपस० २९ नैमित्तिकप्रभावकरूप०

३० तपस्वि प्रभावक रूप स०
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्याभृत प्रभावक रूप स०
३२ चूर्णांजनादि सिद्ध प्रभावक रूप स०
३३ कविप्रभावक रूप सद्दर्शनायनमः ॥
३४ जिनशासने कौशल्यभूषण रूप स०
३५ प्रभावनाभूषण रूप०
३६ तीर्थसेवा भूषण रूप०
३७ स्थैर्यभूषण रूप स०
३८ जिनशासने भक्ति भूषण रूप स०
३९ उपशम गुणरूप स०
४० संवेग गुणरूप स० ४१ निर्वेद गुणरूप स०
४२ अनुकंपा गुणरूप० ४३ आस्तिक्य गुण रूप०
४४ परतीर्थिकादि वंदन वर्जनरूप स०
४५ परतीर्थिकादि नमस्कार वर्जनरूप स०
४६ परतीर्थिकादि आलाप वर्जनरूप सद्दर्शनाय०
४७ परतीर्थिकादि संलाप वर्जनरूप स०
४८ परतीर्थिकादि अशनादि दानवर्जनरूप स०
४९ परतीर्थिकादि गंध पुष्पादि प्रेषण वर्जन रू०
५० राजाभियोगाकार युक्त स०
५१ गणाभियोगाकार युक्त स०
५२ बलाभियोगाकारयुक्त० ५३ सुराभियोगाकारयुक्त०
५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त० ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त०
५६ सम्यक्त्वचारित्रं धर्मस्य मूलमितिचिंतनरूप० ॥
५७ चारित्रं धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतनरूपस०

५८ चारित्रं धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप०
५९ चारित्रं धर्मस्याधार इति चिंतन रूपस०
६० चारित्रं धर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप०
६१ चारित्रं धर्मस्य निधिसन्निभमिते चिंतनश्रीस०
६२ अस्ति जीव इतिश्रद्धानस्थानयुक्ताय श्रीस०
६३ सच जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्तायस०
६४सच जीवः कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयुक्ताय
६५ स च जीवः कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्था०
६६ जीवस्यातिनिर्वाणमितिश्रद्धानस्थानयुक्तायस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्तायस०

इति सप्तषष्टिर्दर्शनस्य गुणाः ॥ ए रीतें सडशठ नमस्कार करी उनो थइ अन्नड उससिएणंनो पाठ कही सडशठ लोगस्स अथवा शक्तिने अनावें सात लोगस्स नो काउस्सग्ग करी एकलोगस्स प्रगट कही पारीने पछी पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति षष्ठदिवस विधिः ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ प्रनात संबंधि विधि करी "ॐह्रीं णमो नांणस्स" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे, ज्ञानपद उज्ज्वल वर्णें छे. माटे तंदूलनुं आयंबिल करे, पछी ज्ञानपदना एकावन नेदचिंतवतो नमस्कार करे, ते लखीयें छैयें.

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रह् मतिज्ञानाय नमः ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रह् मतिज्ञानाय नमः ॥
६ रसनेंद्रिय अर्थावग्रह् मतिज्ञानायनमः ॥
७ घ्राणेंद्रिय अर्थावग्रह् मतिज्ञानायनमः ॥
८ चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायथमः ॥
९ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रह् मतिज्ञानायनमः ॥
१० मनोरथावग्रह्मति० ११ स्पर्शनेंद्रियईहामति०
१२ रसनेंद्रिय ईहामति० १३ घ्राणेंद्रियईहामति०
१४ चक्षुरिंद्रिय ईहा मति० १५ श्रोत्रेंद्रियईहामति०
१६ मनोरिंद्रियईहामति० १७स्पर्शनेंद्रियअपायम०
१८ रसनेंद्रियअपायमति० १९ घ्राणेंद्रियअपायम०
२० चक्षुरिंद्रियअपायमति० २१ श्रोत्रेंद्रियअपायम०
२२ मनोरिंद्रियअपायमति० २३स्पर्शनेंद्रियधारणा०
२४ रसनेंद्रियधारणाम० २५ घ्राणेंद्रियधारणाम०
२६ चक्षुरिंद्रियधारणाम० २७ श्रोत्रेंद्रियधारणा म०
२८ मनोधारणामति० २९ अक्षरश्रुतज्ञानायनमः
३० अनक्षरश्रुतज्ञाना० ३१ संज्ञिश्रुतज्ञानायनम०
३२ असंज्ञिश्रुतज्ञा० ३३ अम्यक् श्रुतज्ञाय०
३४ मिथ्याश्रुतज्ञानायन० ३५ सादिश्रुतज्ञानायन०
३६ अनादि श्रुतज्ञाना० ३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञा०
३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञा० ३९ गमिक श्रुतज्ञाना०
४० अगमिक श्रुतज्ञा० ४१ अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञा०
४२अनंगप्रविष्टश्रुत० ४३अनुगामिअवधिज्ञानायनमः
४४ अननुगामि अवधि० ४५ वर्द्धमाण अवधि०

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ४७ प्रतिपाति अवधिज्ञा०
४८ अप्रतिपाति अव० ४९ ऋजुमति मनःपर्यव ज्ञा०
५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इति एकपंचाशत् ज्ञानभेदाः ॥ ए रीतें एकावन नमस्कार करी ऊजा थइ अन्नड ऊससिएणंनो पाठ कही एकावन लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पारीने पछी सर्व पूर्वोक्त करणी करे. इति ॥

॥ अथ अष्टमदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ प्रथम प्रभात संबंधि विधि करीने "ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे, अने चारित्र पद उज्ज्वलवर्णें छे, माटें तंडुलनुं आयंबिल करे, तथा सित्तेर भेदना सित्तेर नमस्कार करे, ते कहे छे.

१ प्राणातिपात विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
७ आर्यवधर्मरूपचारि० ८ मृडुताधर्मरूपचारि०
९ मुक्तिधर्मरूपचारि० १० तपोधर्मरूपचारि०
११ संयमधर्मरूपचारि० १२ सत्यधर्मरूपचारि०
१३ शौचधर्मरूपचारि० १४ अकिंचनधर्मरूपचारि०

१५ बंजधर्मरूपचारि० १६ पृथ्वीरक्षासंयमचारि०
१७ उदगरक्षासंयमचारि० १८ तेउरक्षासंयमचारि०
१९ वाउरक्षासंयमचारि० २० वनस्पतिरक्षासं०चा०
२१ बेंद्रियरक्षासं०चारि० २२ तेंद्रियरक्षासं०चा०
२३ चौरिंद्रियरक्षा सं०चा० २४ पंचेंद्रियरक्षा सं०
२५ अजीवरक्षासं०चा० २६ प्रेक्षासंयमचारित्रा०
२७ उपेक्षासंयमचारित्रायनमः ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रनक्तादिपरठणत्यागरूपसंयमचा०
२९ प्रमार्ज्जनरूप सं०चा० ३० मनःसंयम चारि०
३१. वचनसंयम चारि० ३२ कायसंयम चारि०
३३ आचार्यवैयावृत्यरूप संयमचारित्रायनमः ॥
३४ उपाध्यायवैयावृत्यरूपसंयमचारित्रायनमः ॥
३५ तपस्विवैयावृत्यरूपसंयमचारित्रायनमः ॥
३६ लघुशिष्यादि वैया० ३७ गिलाणसाधुवैया०
३८ साधुवैयावृत्यरूप० ३९ श्रमणोपासकवैया०
४० श्रीसंघवैयावृत्यरूप० ४१ कुलवैयावृत्यरूप०
४२ गणवैयावृत्यरूप चारित्रायनमः ॥
४३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसान ब्रह्मगुप्तिचारि०
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्ज्जन ब्रह्मगुप्तिचारित्राय०
४५ स्त्रीआसन वर्जनब्रह्मगुप्ति चारित्राय नमः ॥
४६ स्त्री अंगोपांगनिरीक्षण वर्ज्जन ब्रह्मगुप्त चारि०
४७ कुड्यंतरसहित स्त्री हाव भाव श्रवण वर्ज्जनब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंजोगचिंतनवर्ज्जन ब्रह्मगुप्तिचारित्रा०
४९ अतिसरसआहारवर्ज्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः॥

५० अतिआहारकरणवर्ज्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः॥
५१ अंगविनूषावर्ज्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥
५२ अणसणतपोरूपचा० ५३ ऊणोदरीतपोरूपचा०
५४ वित्तिसंखेवतपोरू० ५५ रसत्यागतपोरूप०
५६ कायकिलेसतपोरूप० ५७ संलेषणातपो रू०
५८ प्रायश्चित्ततपोरूप० ५ए विनयतपोरूपचा०
६० वेयावच्चतपोरूपचा० ६१ सज्झायतपोरूपचा०
६२ ध्यानतपोरूप चा० ६३ उपसर्गतपोरूप चा०
६४ अनंतज्ञानसंयुक्तचा० ६५अनंतदर्शनसंयुक्तचा०
६६ अनंतचारित्रसंयुक्तचारित्राय नमः ॥
६७ क्रोधनिग्रहकरणचा० ६८ माननिग्रहकरणचा०
६ए मायानिग्रहकरणचा० ७० लोजनिग्रहकरणचा०

॥ इति सप्ततिश्चारित्रनेदाः ॥ ए रीतें सित्तेर नमः॥स्कार करे;पढी नजो थइ अन्नढ ऊससिएणंनो पाठ कही सित्तेर लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही, पारीने पूर्वोक्त करणी सर्व करे॥इत्यष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवमदिवसविधिप्रारंजः ॥

॥ प्रथमप्रजात संबंधि विधि करी रह्या पढी "ॐ ह्रीं णमो तवस्स" ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे,तथा तपपदनो उज्ज्वल वर्ण ढे, माटे तउलनुं आयंबिल करे, अने तपना पच्चास नेदना नमस्कार करे, ते लखे ढे.

१ यावत्कथकंतपसे नमः २ इत्वरतपोनेदतपसे नमः
३ बाह्यऊणोदरितपोनेदतपसे नमः ॥

४ अभ्यंतर ऊणोदरि तपोभेद तपसे नमः ॥
५ द्रव्यतपो वृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
ट भावतपोवृत्तिसंक्षेप तपोभेद तपसे नमः ॥
ए कायक्लेश तपोभेद तपसे नमः ॥
१० रसत्याग तपोभेद तपसे नमः ॥
११ इंद्रियकषाययोग विषयकसंलीनता तपसे नमः ॥
१२ स्त्रीपशुपंमकादिवर्जितस्थानअवस्थित संलीनता०
१३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥
१४ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥
१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसेन० १६ विवेक प्रायश्चित्ततप०
१७ उपसर्गप्रायश्चित्ततप० १ट तपःप्रायश्चित्ततप०
१ए भेदप्रायश्चित्त तप० २० मूलप्रायश्चित्ततप०
२१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततप० २२ पारंचियप्रायश्चित्त०
२३ ज्ञानविनयरूप तप० २४ दर्शनविनय रूप तप०
२५ चारित्रविनयरूप० २६ गुर्वादिकमनोविनयरूपत०
२७ वचनविनयरूपतपसे० २ट कायविनयरूपतपसे०
२ए उपचारकविनयरूपत० ३० आचार्यवेयावच्चत०
३१ उपाध्यायवेयावच्च त० ३२ साधुवेयावच्च त०
३३ तपस्विवेयावच्चत० ३४ लघुशिष्यादिवेयावच्चत०
३५ गिलाणसाधुवेया० ३६ श्रमणोपासकवेया०
३७ संघवेयावच्च त० ३ट कुलवेयावच्च त०
३ए गणवेयावच्च त० ४० वायणातपसे नमः ॥

४१ पृबनातपसे नमः ४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ४४ धर्मकथातपसे नमः
४५ आर्त्तध्याननिवृत्त त० ४६ रौद्रध्याननिवृत्त त०
४७ धर्मध्यानचिंतन त० ४० शुक्ल ध्यान चिंतन त०
४ए बाह्य उपसर्ग त० ५० अभ्यंतर उपसर्ग त०

॥ इति पंचाशत् तपोभेदाः ॥

॥ ए रीतें पच्चास नमस्कार करे, पछी उभो थइने अन्नत्र उससिएणंनो पाठ कही पच्चास लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कही पछी प्रथम दिवसमां लख्या मुजब सर्व विधि अनुक्रमें करे. ए विधि लखवामां पृष्ठ ६७० मध्ये प्रथम दिवसें श्रीअरिहंत पदमां नवमो नमस्कार करतां ज्ञानातिशय संयुताय जोइयें तेने ठेकाणे जूलथी ज्ञानातिशयप्रतिहार्यसंयुताय एम छपाइ गयेलुं छे. तथा गुणणुं बे हजारने स्थानकें १००० छपाई गयुं छे, ते सुधारी वांचवुं ॥

॥ हवे ए नवपदनुं तप ग्रहण करवा माटे गुरु पासें केवी रीतें जवुं, तेनो विधि कहे छे.

॥ प्रथम शुभ दिवस शुभ घडी शुभ मूहूर्त्त जोइने सुंदर वस्त्र आभूषण पहेरी ललाटें तिलक करी भाल अने सरशव मस्तकें धारण करी हाथमां मौलि बांधी अक्षत, सोपारी, श्रीफलादिक अने यथाशक्ति रोकड नाणुं लेइ नवकार गुणतो थको श्रीगुरुनी पासें जइ द्वादशावर्त्त वंदन करी ज्ञान पूजा करे,पछी घणोज प्र

मोदवंत थइ गुरुना मुखथकी उली तप ग्रहण करे. ए तपस्याग्रहणवखतपोशालें गुरुपासेंजवानोविधिकह्यो.

॥ अथ श्रीवीशस्थानक तपनो विधि सामान्यथी लखीयें ठैयें ॥

॥तिहां प्रथम वैशाख, आषाढ, मार्गशीर्ष अने फागुण ए चार महिना मांहेला कोइ पण महिनामां शुभ निर्दोष मुहूर्त्त जोइ शुभ दिवसें नंदीस्थापनापूर्वक सुविहित गुरुनी समीपें वीशस्थानक तप विधिपूर्वक उच्चरे.

एनी एक उली ठ महीने अथवा ठ महिने पूर्ण करे, कदाचित् ठ महीनामां पूर्ण करी न शके तो ते उली गणतीमां न गणाय, फरीथी नवी करवी पडे.

हवे एक उली करतां एना वीश पद ठे, माटे कोइक तो वीश दिवसमां वीश पद प्रत्येक दिवसें जूदां जूदां गणे, अने कोइक तो वीशे दिवस सुधी एकज पद गणे, अने वली बीजा वीश दिवसमां बीजुं पद गणे, एवी रीतें वीश पदनी वीश उली करे.

तेमां पद आराधननादिवसें जो प्रबल शक्तिमान् होय तो अठम तप करीने आराधे, एवी वीश अठमें एक उली पूर्ण करे, तेनी चारशो अठमें वीशे उली पूर्ण थाय. एवी रीतें उत्कृष्टतप आराधे.

तेथी हीनशक्तिवालो होय तो ठठ ठठ तप करीने आराधे, वली तेथी हीनशक्तिमान् होय तो चउविहार उपवासेंकरी आराधे, तेथी हीनशक्तिमंत

होय तो तिविहार उपवासें करी आराधे, तेथी हीन शक्तिवालो होय तो आंबिले करी आराधे, तेथी हीनशक्तिवालो होय तो नीवीयें करी आराधे, तेथी हीनशक्तिवंत एकासणें करी आराधे.

तिहां शक्तिमान् प्राणी सर्व पदाराधनने दिवसें अहोरात्र एटले आठ पहोर पोसह करे, तेथी हीन शक्तिवालो दिवसनो चार पहोरनो पोसह करे. एवी रीतें वीशे पद पोसहथी आराधे, अने जो सर्व पदोने आराधवाना दिवसें पोसह करवानी शक्ति न होय तो पण एक आचार्य पदें, बीजा उपाध्याय पदें, त्रीजा थिविर पदें, चोथा साधु पदें, पांचमा चारित्र पदें छठा गौतम पदें, अने सातमा तीर्थपदें. ए सात थानकें तो पोतें पोतानी हीनता जावतो पोसह करीनेज आराधे, ते पण शक्ति न होय तो ते दिवसें देशावकाशिक करे, सावद्य व्यापारनो त्याग करे, ते पण न थइ शके तो यथाशक्ति तप करी आराधे.

तथा मृतक जातकना सूतकमां जे उपवासादिक तप करे ते गणतीमां गणे नही; अने स्त्री पण ऋतुसमयें तप करे ते गणतीमां गणे नहीं. तथा तपस्याने दिवसें जो पोसहसहित करे, तो बहुज श्रेयस्कर जाणवुं. तेम न बनी शके तो उनयटंक पडिक्कमणा करे.

त्रणे टंक देववंदन करे, एक पदना बे हजार जाप करे, ब्रह्मचर्य पाले, नूमिशयन करे, तपस्याना दि

वसें अत्यंत सावद्य आरंभ न करे, असत्य न बोले, आखो दिवस तपपदनुं गुणकीर्त्तन करतो रहे.

तथा तपना दिवसें पोसह करे, तो पारणाना दिवसें श्रीजिनभक्ति करीने पारणुं करे, अने जो तपना दिवसें पोसह न करे तो ते दिवसें श्रीजिनभक्ति करे, करावे भावना भावे तथा तपना दिवसें जे पदनुं आराधन करतो होय ते पदना जेटला गुणभेद होय ते संख्या प्रमाणें काउस्सग्ग करे, अने तावन्मात्र तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदना करे ते पदनो महिमा गुण याद करीने उदात्त स्वरें स्तवना करे, हर्षित थको रहे. एवा प्रकारना विधियी वीशे उली करवी, तथा वीशे उलीमां एकेका पदना उत्सव. महोत्सव,प्रभावना, उजमणां वगेरे श्रीजिनशासननी उन्नतिना हेतुयें करवां जोइयें, पण जो पदें पदें उजमणादि करवानी शक्ति न होय; तो एक उली तो विशेष उत्सव उजमणादिक सहित अवश्य करवी जोइयें. ए सामान्यथी विधि कह्यो.

हवे इहां स्थानक पद आराधक सज्जनोने जाणवाने अर्थें प्रथम श्रीअरिहंत पद आद्यमां छे, माटे तेने आराधवानो विशेष विधि लखी देखाडियें छैयें.

जे दिवसें श्रीवीशस्थानक तप सामान्य प्रकारें उच्चरे, ते दिवसेंज प्रथम श्रीअरिहंत पद विधिपूर्वक उच्चरे, माटे ते दिवसें श्रीजिनेश्वरनी महोटी भक्ति करे.

इहां प्रथम पदें "णमो अरिहंताणं" ए पदनी

वीश नोकरवाली गुणी बे हजार गुणणुं गुणवुं, अने पूर्वोक्त विधि सर्व करवो, तथा श्रीअरिहंतना बार गुण छे ते एकेका गुणने याद करी ते ते गुणना नामोच्चारपूर्वक खमासमणा देइ बार नमस्कार करवा, ते आवी रीतेंः—

१ श्रीअशोकवृक्ष प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते०
२ जानुदघ्नपंचवर्ण पुष्पप्रकरप्रातिहार्यशोभिताय०
३ अतिमधुरद्रव्यमाधुर्यतोपि मधुरतमदिव्यध्वनिप्रा०
४ हेमरत्नदंमस्थितजडितअत्युज्ज्वलचामरयुगल वीजितव्यजनक्रिया युक्तसत्प्रातिहार्यशोभिताय०
५ सुवर्णरत्नजडित सदासहचारि सिंहासनसत्प्राति०
६ तरुणतरणितेजसोऽप्यतिभास्वरतरतेजोयुक्तभामंमलसत्प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
७ दुंदुभिप्रभृत्यनेकआकाशस्थितवादितवाजित्रवादनरूपसत्प्रातिहार्यशोभिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
८ मुक्ताजालझुंबनकयुक्तछत्रत्रयसत्प्रातिहार्यशो०
९ स्वपरापायनिवारकातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः
१० पचत्रिंशद्गुणयुक्तायसुरासुरदेवेंद्रनरेंद्राणां पूजातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः ॥
११ सर्वभाषानुगामिसकलसंशयोछेदकवचनातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः ॥
१२ लोकालोकप्रकाशकेवलज्ञानरूपज्ञानातिशयैश्वर्यधराय श्रीमदर्हते नमः ॥

एवी रीतें बार खमासमण देइने वांदे. पठी अरिहंतनी स्तवना करे. ते कहे ठे.

जय, श्रीअरिहंत, अरुहंत, अर्हंत, देवाधिदेव, परमेश्वर, परमकरुणानिधान, महागोप, महामाहण, महानिर्यामक, महासबवाह, जगद्वंद्य, जिनेश्वर, तीर्थंकर, विश्वंजर, विश्वपति, विश्वोत्तम, त्रिकालवित्, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, देवाधिदेव, पुरुषोत्तम, वीतराग, जगन्नाथ, जगद्बंधु, जगत्तारण, बुद्ध, जगवंत, विश्वानंदी, सहजानंदी, शुद्धचेतनाधर्ममय, एकस्वजावमय, धर्मरत्नरत्नाकर, धर्मदेशक, जावधर्मदातार, परमात्मा, परमदर्शी परमगुरु, परमोपकारी, परमसंसारतारक, अशरणशरण तरणतारण, नवजयहरण. इत्यादि श्रीअरिहंतनां सहस्त्र नाम ठे, तेनो पाठ करे.

एम अगणितगुणगणालंकृत एवा श्रीमदर्हंतजीने प्रतिक्रुणें महारी वंदना हो; त्राण शरण गति मति स्थिति सर्व श्रीअरिहंतजी ठे. एहज श्रद्धा महारी सफल हो, एवी रीतिथी स्तवना करे.

तथा तेज दिवसें बार गुण ठे माटे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, रात्रि दिवस व्यवहारें ए श्रीअरिहंतनो श्वेतवर्ण ध्यावे, अरिहंतना गुण कीर्तनमां रहे, पारणाने दिवसें बहुद्रव्य निष्पन्न यथाशक्ति अष्टप्रकारी, सत्तरप्रकारी, एकवीशप्रकारी, अष्टोत्तरी प्रमुख पूजा जक्तिपूर्वक करे, नवा मुकुटकुंमलादि जूषण चढावे, रत्नतिलक चढावे, अंगलूहणां, चंडुआ

चढावे, समवसरण रचना करे, त्रिगडा उपर प्रभु जीने बिराजमान करे, मंत्रपवित्र धान्यें करी प्राकार समवसरण रचना करे, इंद्रध्वजा चढावे, रूप्यमय अक्षतमय अष्टमांगलिक चढावे, शुभवर्ण शुभगंधवालां पुष्पादिक चढावे, द्रव्यभंडारामां मूके, केवलज्ञानना उत्सव करे, विविध प्रकारनां पक्वान्न ढोवे, जिनबिंब भरावे, चैत्य करावे, एवा विधियें करी छ मासपर्यंत श्रीअरिहंत पदने आराधे. इति प्रथम पदाराधना॥

ए प्रथम पदनो विधि कह्यो. एवीज रीतें विधि प्रपाग्रंथ उपरथी अत्यंत विस्तारपूर्वक चौदमा पद सुधीनो विधि तो पूर्वे कोइ महापुरुषनो रचेलो ग्रंथ महारी पासें छे, तेमां लखेलो छे;अने पाछला छ पदनो विधि कोइ गीतार्थना सहायथी लखी तैयार करत, पण तेटलो विधि आमां दाखल करवाथी आ पुस्तकना सुमारे १२५ पृष्ठ भराइ जात; तेथी ग्रंथ घणो म होटो थइ जाय; तेमज एटला विधि पूर्वक तपश्चर्या करनार श्रावक भाइउनी संख्या पण स्वल्प. छे, माटे थोडानेज खपमां आवे; एवा हेतुथी ते विधि आ. पुस्तकना पाछल छापवामां आवनारा बीजा अथवा त्रीजा भागमां दाखल करवानो विचार राखीने हालमां वीशे पदनो संक्षेपविधि नीचें दाखल करेलो छे. विस्तार विधिना इछक भव्यजीवोएं पद पदनो विधि गुरुमुखथी धारीने तप आराधन करवुं.

॥ अथ वीश स्थानकनुं गुणणुं तथा काउस्सग्ग प्रमाण आदिक संक्षेप विधि प्रारंभः ॥

१ 'णमो अरिहंताणं' ए पदनुं गुणणुं बेहजार गुणवुं. श्रीअरिहंतजीनी त्रिकाल अष्टप्रकारी, सत्तरप्रकारी, एकवीशप्रकारी, अष्टोत्तरी, स्नात्र प्रमुख पूजा यथाशक्ति करवी, नवीन प्रतिमा भरावववी, चोवीश अंगलूहणां चोवीश वालाकूंची प्रमुख मूकवी, प्रतिमाजीनो नकरो करवो; तथा श्रीअरिहंतजीना बार गुण छे, माटे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने बारगुण चिंतवी बार नमस्कार करवा.

२ 'णमो सिद्धाणं' ए पदनुं गुणणुं बेहजार गुणवुं, श्रीसिद्धभगवाननुं ध्यान करवुं, त्रिकाल पूजा करवी, उभय काल पडिक्कमणुं करवुं, पुंमरीकादिक गौतमप्रमुखनी पूजा करवी; तथा श्रीसिद्धक्षेत्र तीर्थ निमित्तें द्रव्य खरचवुं, अने श्रीसिद्ध पन्नर प्रकारना छे, माटे पन्नर लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो; अथवा श्रीसिद्धना आठ गुण छे, माटे आठ लोगस्सनो काउसग्ग करवो. स्नात्रपूजा वासक्षेप पूजा करे.

३ 'णमो पवयणस्स' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, सिद्धांत भक्ति करवी, पुस्तक लखाववां, वींटांगण पाठां प्रमुख ज्ञानोपकरण अठावीश उपवासें आपवा, ज्ञाननी भक्ति करवी, विद्यमान आगमनी वरासें करी भक्ति करवी, आगमोनां नाम लइ दर्शन करवां, अथवा जो पुस्तक होय तो पुस्तको

नां दर्शन करवां, गुरुने सिद्धांत वहोरावववा, सात लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो,अने सिद्धांतनी पांच गाथा नित्य गुरुमुखें सांजलवी.

४ 'णमो आयरियाणं' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, आचार्यनी जक्ति वीसामणा करवी; तथा वस्त्र पात्रादिक आपवां; अने आचार्यनो विनय करवो, थापनाचार्यनी बरासें पूजा करवी; तथा थापनाचार्यने माटे उपकरण मूकवां; अने आचार्यजीना छत्रीश गुण छे, माटे छत्रीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

५ 'णमो थेराणं' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, थिविर गिलान तपोधनादिक वडेरानी जक्ति वीसामण करवी, अशन पान खादिम स्वादिम औषधादिक आणी आपवुं; तथा दश प्रकारना थिविर छे,माटे दश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. कोइ प्रतमां पन्नर लोगस्सनो काउसग्ग करवो कह्यो छे.

६ 'णमो उवज्ञायाणं' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गणवुं, बहुश्रुत श्रीउपाध्यायजीनी जक्ति करवी, गुरुनी आज्ञा रूडी रीतें मानवी, अंगपूजा करवी, अने एमना पच्चीश गुण छे, माटे पच्चीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

७ 'णमो लोए. सव्वसाहूणं' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं. तपस्वी सर्व साधु साधवीनी अन्न वस्त्रादिकें विशेषजक्ति करवी, विसामण करवी, अ

तिथि संविभाग करवो; तथा एमना सत्तावीश गु
ण छे,माटे सत्तावीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करीयें.

८ 'णमो नाणस्स' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गु
णवुं, ज्ञान भणवुं भणाववुं, ज्ञाननी भक्ति विशे
ष करवी, वखाण सांभळवां, पाठादिक आगम
नां पदोनुं आराधन करती वखतें लइ राखेलां
होय ते तिहां न देवाणां होय तो आ पद आ
राधननी वखतें आपी देवां. ज्ञाननो विभाग क
हाडवो, तथा ज्ञानना मत्यादिक पांच भेद छे.
माटे पाच लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

९ 'णमो दंसणस्स' ए पदनुं बे हजार गुणणुं
गुणवुं, शंकादि दूषण टाळी शुद्धमनें शुद्ध सम्
कित पाळवुं, आरंभ वर्जवो, कायायें करीने स
चित्त वस्तु आभडवी नहीं, अन्य तीर्थीना देव,
गुरु अने धर्मना सन्मान सत्कार पूजा अनुमो
दना करवानो त्याग करवो, यथाशक्ति मोदक
देवा, तथा ए पदना सडशठ भेद छे, माटे सड
शठ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

१० 'णमो विणय संपन्नाणं' ए पदनुं बे हजार गु
णणुं गुणवुं. आचार्य, उपाध्याय, साधु, तप
स्वी,गिलाण प्रमुख वडेरानो अभ्युत्थानादिकें विन
य करवो, काउस्सग्ग दश लोगस्सनो करवो.

११ 'णमो चारित्तस्स' ए पदनुं बे हजार गुणणुं
गुणवुं, उभयकाळ पडिक्कमणुं करवुं, वारंवार

सामायक विशेष पच्चरकाण करवुं, चारित्रनां उप करण जे उघो, मुहपत्ति, दशी, पडघा प्रमुख ते यथाशक्तियें आपवां, काउस्सग्ग ७ लोगस्सनो करवो.

१२ 'णमो बंजवयधारिणं, ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणीयें तथा नववाड विशुद्ध त्रिकरण शुद्धे करी ब्रह्मचर्य पालियें, सूधुं शील पालीयें, स्त्री साहामुं दृष्टें पण जोवुं नही, विकथा निद्रा टा लवी, ब्रह्मव्रत धारकने जमाडवा, तथा यथाश क्तियें वस्त्रादिकनी पहेरामणी करवी, काउस्सग्ग नव लोग्गस्सनो करवो.

१३ 'णमो किरियाणं' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, अहोरात्र खरो पोसह पालवो, निद्रा विकथा न करवी, पारणे गुरुने किरियाणुं देवुं, काउस्सग्ग पच्चीश लोगस्सनो करवो.

१४ 'णमो तवस्सीणं' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, विशेष तप करवुं, पारणें सचित्त वस्तु टालवी, तपस्वीनी जक्ति वीसामणा करवी; काउस्सग्ग बार लोगस्सनो करवो.

१५ 'णमो गोयमस्स' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, सात क्षेत्रें यथाशक्तियें द्रव्य खरचवुं, गुरुने पडगो वोहोराववो, श्रीगौतमस्वामीनी पूजा वासक्षेपथी करवी, प्रथम पारणे पडगो पूजीने खीर खांमनुं जोजन करवुं, यथाशक्तियें साहामि वात्सल, संघपूजा करवी, तथा अठावीश लब्धिछे,

माटे अठावीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अथवा चारित्रना गुण आश्रयी सत्तर लोग्गस्स नो काउस्सग्ग करवो.

१६ 'णमो जिणाणं' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, देव, गुरु, तथा पोसहना करनार वडा प्रमुखनुं वेयावच्च करवुं, सत्तरभेदी पूजा करवी, देव आगल साथीया दश करवा, जिनवर आदिक दशना वेयावच्च आश्रयी दश भेद छे, माटे दश लोग्गस्सनो काउस्सग्ग करवो.

१७ 'णमो चरणस्स' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, इहां सर्व समाधिविशेष समताभाव भावतां खरुं सामायिक करीयें, बीजानें करावीयें, काउस्सग्ग लोग्गस्स अगीयारनो करवो.

१८ 'णमो नाणस्स' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं,ए पद आराधन करतां नवा नवा ग्रंथ अवश्य भणवा. अपूर्व अपूर्व ज्ञान भणवुं, जो वधु न भणाय तो बे चार गाथाज भणवी. नव नवा तवनादिकनी रचना करवी, श्रुतज्ञाननुं आराधन करवुं,एमां काउस्सग्ग पांच लोगस्सनो करवो.

१९ 'णमो सुयनाणस्स' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, ए पद आराधतां थकां साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका, ए रीतें चतुर्विध श्रीसंघनी भक्ति करवी, यथाशक्तियें पुस्तकोनी पूजा करवी. पुस्तकना वीटांमणां २०, पाठां २०, चाबखी

२४ तवणी आदिक देवां, काउस्सग्गें दश लो गस्सनो करवो, अने सूत्रना पीस्तालीश नेद आ श्रयी पीस्तालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग जो थई शके तो उत्कृष्ट नांगे ते पण करवो.

२० 'णमो तिब्रस्स' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुण वुं. श्रीजिनशासननी प्रनावना करवी, सिद्धांत ना व्याख्यानावसरें प्रनावना करवी, दिवसनो पोसह करवो, पुंमरीकगिरिकादिक पांच तीर्थ माटे पांच लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

ए रीतें जो गुरुनो योग होय तो तेमना मुखथी समजण लइने विस्तार सहित वीश स्थानक पदनुं आराधन विधि पूर्वक करे, अने जो गुरुनो योग न होय तो महोटा विवेक सहित आ प्रमाणेंनी लखे ली सूचनाने अनुसारें विधि जोइने करे, वीश स्थान कना तवन नणे अथवा सांनले, वीश स्थानकनी पूजा करे, वीश वीश बधी जातिनां ज्ञानना पुस्तको तथा ज्ञानना उपकरणो करावे, जे देवपदसंबंधि हो य ते देवपदखाते खरचे, अने ज्ञानपदनुं होय ते ज्ञानखाते लगावे, तथा गुरुपदनुं गुरुखाते लगा वे. सर्व तीर्थोनी यात्रा यथाशक्ति करे, नही कां पण उलीयो पूर्ण थाय पढी ब महिनामांहे तो तीर्थ यात्रा अवश्य करे,साहामीवात्सल्य करे. ए रीतें इव्य नावयुक्त शुद्ध नावथी जे नव्य जीव वीश स्थानक प दनुं सेवन करे, ते जीव श्रीजिननामकर्म उपार्ज्जन

करी त्रीजे नवें अनंत सुख जिहां छे एहवुं मोक्षरूप स्थानक पामे ॥ इति वीशस्थानक तप विधिः समाप्तः ॥

अथ नव्यजीवोने आदरवा योग्य बीजा पण केटलाएक तपना प्रकार लखीयें छैयें.

॥ जे अशुभकर्मोने तपावे, तेने तप कहियें. ते तप अनेक प्रकारें छे, तेमांथी केटलाएक प्रकार इहां ल खीयें छैयें. सर्व तपमां मूल इंद्रियजयनामा तप छे. कारण के, श्रीवीतरागनो धर्म पण एवेज नामें छे, यद्यपि श्रीजिनशासनने विषे जे जे प्रकारनां तप छे, ते ते सर्व इंद्रियना जयनां करनारांज छे, तथापि पूर्वाचार्यें सर्व तपमां प्रथम इंद्रियजय एवे नामें तप क ह्युं छे, माटे तेनुं स्वरूप आदिमां लखीयें छैयें.

१ इंद्रियजयतपः– ए लोकप्रसिद्ध छे. एमां पहेले दिवसें पुरिमड्ढ, बीजे दिवसें एकासणुं, त्रीजे दिवसें नीवी, चोथे दिवसें आयंबिल, अने पांचमे दिवसें उ पवास, ए पांच दिवसें एक इंद्रियना जयने माटे एक उली थाय. एवीज रीतें पांचे इंद्रियनुं दमन करवा माटे पांच उली करवाथी ए तप पच्चीश दिवसें पूर्ण थाय छे. उजमणे पच्चीश लाडु पुस्तक आगल मूकीयें, यथाशक्तियें पुस्तकने पहेरामणी करीयें.

ए रीतें इंद्रियजय कर्या उपरांत मनादिक त्रण योगना व्यापारनी शुद्धि एटले निरवद्य पणुं करवुं जोइयें, माटे बीजुं योगशुद्धिनामा तप कहे छे.

२ योगशुद्धि तपः—पहेले दिवसें नीवी,बीजे दिवसें आयंबिल अने त्रीजे दिवसें उपवास,एवी त्रण उली ला गठ करियें,तेवारें नव दिवसें तप पूर्ण थाय, उजमणें देवपूजा तथा पुस्तकपूजा करवी. अष्टमांगलिक करवां.

हवे योगशुद्धि थयेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी प्राप्ति थाय, तो नली जाणवी, माटे ज्ञानादिक त्रणनुं तप कहे ठे.तेमां ज्ञान मुख्य ठे माटे ते प्रथम कहियें ठे.

३ ज्ञान तपः— अठम तप करवुं,अने शक्ति न होय तो एकांतरे त्रण उपवासनी उली एक करवी. उज मणें सिद्धांतपुस्तकनी पूजा करवी, पुस्तकने वींट णा प्रमुखनी पहेरामणी करवी. ज्ञानवंत पुरुषनी वस्त्र पात्र अन्नपानादिकें नक्ति करवी. सूत्र सिद्धांत प्रकरण लखाववाने माटे इव्य खरचवुं.

४ दर्शन तपः— अठम तप करवुं, शक्तिने अनावें एकांतरे त्रण उपवासनी एक उली करवी, उजमणे नगवंतनी पूजा करवी. दर्शन प्रनावक संमत्यादि क महान् ग्रंथोनी पूजा करवी.

५ चारित्र तपः— अठम तप करवुं, शक्तिने अना वें एकांतरे त्रण उपवासनी एक उली करवी; उजमणें गुरुनी नवांगें पूजा करवी, चारित्रीयानी नक्ति करवी.

हवे ज्ञानादिक त्रणनो धणी क्रोधादिक चार कषायनो जय करे, तो नलुं, माटे कषायजयनामा तप करे, ते कहे ठे.

६ कषायजय तपः– प्रथम दिवसें एकासणुं, बीजे दिवसें नीवी, त्रीजे दिवसें आयंबिल अने चोथे दिवसें उपवास, एवी एक उलीयें एक कषायनो जय करतां चार उलियें चतुःकषायजयनामा तप शोल दिवसें पूर्ण थाय. उजमणे देवनी आगल शोल लाडु मूकवा.

हवे ज्ञानादिक त्रणनो धणी चार कषायनो जय करीने पछी विविध प्रकारनां तप करे, ते मांहेलुं प्रथम कर्मसूदननामा तप कहे छे.

७ अष्टकर्मसूदन तपः– पहेले दिवसें उपवास, बीजे दिवसें एकासणुं, त्रीजे दिवसें एकल सीथुं, चोथे दिवसें एकलठाणुं, पांचमे दिवसें एकलदत्ति, छठे दिवसें नीवी, सातमे दिवसें आयंबिल, आठमे दिवसें आठ कवल, एवी आठ कर्मने सूडवाने आठ उली करीयें तेवारें चोशठ दिवसें ए तप पूर्ण थाय. एना उजमणामां रूपानुं वृक्ष तथा सोनानो कूहाडो देवनी आगल कर्मरूप तरुवर छेदवाने अर्थें ढोइयें, पुस्तकपूजा करियें, यतिने दान आपियें.

८ लघुसिंहनिःक्रीडिततपः– जेम सिंह चाल्यो जतो होय ते वली कांइक दूर जइने फरी पाछो आगला प्रदेश तरफ महोढुं करीने जूए छे, तेनी परें इहां पण जे तप प्रथम करयुं होय, तेनुं पारणुं करीने वली पण फरी आगला तपनुं आसेवन करे, माटे एने सिंहनिःक्रीडित तप कहियें. अने एनी आगलें जे महा सिंहनिःक्रीडित तप कहेशे तेनी अपेक्षायें ए न्हानुं छे,

माटे ए लघुसिंहनिःक्रीडित कहियें, ते आ प्रमाणेः–
प्रथम एक उपवास करी पारणुं करे, वली बे उ
पवास करी पारणुं करे, एम सर्वत्र उपवासें आग
ल पारणुं समजी लेवुं. पछी एक उपवास, त्रण, बे,
चार, त्रण, पांच, चार, छ, पांच, सात, छ, आठ,
सात, नव, आठ, नव, सात, आठ, छ, सात, पांच,
छ, चार, पांच, त्रण,चार, बे, त्रण,एक, बे,एक, एवी
रीतें उपवासो करवाथी एकशो ने चोपन दिवस उप
वासना थाय, अने तेत्रीश पारणाना दिवसो थाय.
जुमले दिन १८७ ना छ महीना अने सात दिवसें
एक परिपाटीयें एक श्रेणी थाय. एवी चार श्रेणी क
रीयें तेवारे बे वर्षने अठावीश दिवसें ए तप पूर्ण
थाय छे. तिहां पारणाने दिवसें पहेली श्रेणियें वि
गयसहित सर्वकामगुणित रसोपेत जमे, बीजी श्रे
णियें नीवी जमे, त्रीजी श्रेणियें जे चीज खातां थ
कां हस्त पात्र प्रमुखनें लेप लागे नही, एवी अलेप
कारी चीज वाल चणकादिक जमे,अने चोथी श्रेणि
ना पारणाने दिवसें आयंबिल करे. इति लघुसिंह० ॥

ए महासिंहनिःक्रीडिततप कहे छेः–एमां पण पू
र्वोक्त लघुसिंहनिःक्रीडित तपनी पेठें एक,बे,एक,त्रण,
बे, चार, त्रण, पांच, चार, छ, पांच,सात, छ, आठ,
सात, नव, आठ, दश, नव, अगीआर, दश, बार,
अगीआर, तेर, बार, चौद, तेर, पन्नर, चौद, शोल,
पन्नर अने शोल उपवास. एनेज वली पाछा विपरीत

करवा, एटले जेम चडता कर्या तेमज वली पूर्वोक्त रीतें चौदथी पाछा वलतां पण करवा. एम करतां छेह्डे एक उपवास आवे. इहां एकथी चढतां अने चौदथी पाछा वलता एवी रीतें उपवास करतां एक परिपाटीयें बधा आंक चार चार वखत आवे छे. मात्र शोलनो आंक बे वखत आवे, तथा पन्नरनो आंक त्रण वखत आवे छे. बधा मली ४९७ दिवस उपवासना थाय. तथा ६१ दिवस पारणाना थाय. सर्व मली ५५८ दिवसें एक लता थाय. एवी चार लताउ करतां ए तप छ वर्ष बे मासने बार दिवसें पूर्ण थाय.

१० मुक्तावलीनामा तप कहे छेः—एक उपवास. करी पारणुं करीयें, पछी बे उपवास करी पारणुं करीयें, वली एक उपवास करी पारणुं करीयें, पछी त्रण उपवास करी पारणुं करीयें, पछी वली एक उपवास करीयें, पछी चार उपवास, पछी वली एक उपवास, पछी पांच उपवास, वली एक उपवास, एम चढतां चढतां एकेकने आंतरें यावत् शोल उपवास सूधी करियें. पछी शोल उपवासनुं पारणुं करी पाछा फरीयें, ते आवी रीतें के, शोल उपवास करी पारणुं करीयें, वली एक उपवासने पारणुं करीयें, वली पन्नर उपवास, वली एक उपवास फरी चौद उपवास, फरी एक उपवास, फरी तेर उपवास, फरी एक उपवास, बार उपवास, वली एक उपवास, एवी रीतें पाछा आवतां छेह्डे एक उपवासने पारणुं करीयें, एम एक उपवासने आंतरें वध

तां शोल उपवास सुधी चढतां करीयें, तेवारें अर्ध मु क्तावली एटले अर्धमोतीनी माला थाय, अने पाबा फरतां पूर्ण मुक्तावली थाय. एमां सर्व मली त्रणशे उपवास अने शाठ पारणां ए एक परिपाटी थाय. एवी चार परिपाटी करतां पूरा चार वर्षे ए तप पूर्ण थाय. उजमणे मोतीनोहार जिनेसर आगल ढोकवो. ए मोतीना हारनी पेरें मुक्तावली तप बे ते कह्युं.

११ रत्नावली नामा तप कहे बेः—जेम रत्नावली ने आजरणविशेष कहे बे. तेम रत्ननी पंक्ति समान जे तप करवुं, तेने रत्नावली तप कहियें. एटले जेम रत्ननी पंक्ति बे बाजुयें प्रथम सूक्ष्म अने पढी स्थूल एवा विजागें करी काहलिका नामें आजरण सुवर्ण ना बे अवयवें करी युक्त होय बे, तेमज दाडिमना पुष्पोयें करी बन्ने बाजुयें शोजित बतां बन्ने तरफनी बाजुनी जे सखो तेणें करी शोजनारुं अने नीचें ना जागने विषे स्थापन करेला पदकें करी अत्यं त अलंकृत एवुं जे पट्टकादिकने विषे बतावेला आ कारने धारण करनारुं तप तेने रत्नावली तप कहियें.

हवे ए तप केवी रीतें करीयें? के जेथकी पूर्वोक्त आ जूषणना आकारने धारण करे एवी स्थापना सिद्ध था य, ते कहे बे. प्रथम एक उपवास करीने पारणुं क रीयें, तेवार पढी बे उपवास, पढी त्रण उपवास एणें करी एक काहलिका उपरना जागनी उत्पन्न थाय. ते पढी आठ अष्टम एटले आठ वखत त्रण

त्रण उपवास करवा. एणें करी काहलिकानी नीचें दाडिम पुष्प उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी एक उपवास करीयें. पछी बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, अगीयार, बार, तेर, चौद, पन्नर अने शोल, एवी रीतें एकथी मांमीने चडते चडते शोल पर्यंत उपवास करवा थकी दाडिमना पुष्पनी नीचें एक सेरिका थाय छे. त्यार पछी चोत्रीश अठम एटले चोत्रीश वखत त्रण त्रण उपवास करवा थकी नीचेनुं एक पदक उत्पन्न थाय छे. तेवार पछी वली शोल उपवास, पन्नर, चौद, तेर, बार, अगीआर, दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, त्रण, बे अने एक पर्यंत उपवास करवाथकी बीजी बाजुनी सेर थाय छे, तेवार पछी वली आठ अठम करवाथकी बीजा दाडमनां पुष्प उत्पन्न थाय छे, पछी वली त्रण उपवास, बे उपबास अने एक उपवास करवाथकी बीजी काहलिका उत्पन्न थाय छे. एवा आभूषणाकार थये छते परिपूर्ण रत्नावलीतप सिद्ध थाय छे. ए तपने विषे सर्व मली काहलिकाना तपना दिवस बार, तथा बे बाजुना दाडिमना पुष्प संबंधि तपना दिवस अडतालीश, तथा बे बाजुनी बे सेर संबंधि तपना दिवस २७२ थाय छे. तथा पदकने विषे चोत्रीश अठमना दिवस १०२ ए सर्व एकठा करतां ४३४ दिवस तपना थाय छे. तथा ८८ दिवस पारणांना थाय छे, सर्व मली ५२२ दिवसें एक परिपाटी

थाय. एवी चार परिपाटीयें ए तप पूर्ण थाय. तेवारें पांच वर्ष,नव मास अने अढार दिवसनी संख्या थाय ळे. उजमणे रत्नमय हार आपवो ॥ इति ॥

१२ कनकावलि तप कहे ळेः— ए पण सुवर्णमय मणिउथी उत्पन्न थयेलुं नूषण होय तेने कनकावली कहीयें. एनी थापना पण रत्नावलिना तपनी पेठेंज करवी; परंतु एटलुं विशेष जे मात्र दाडिमना पुष्प अने पदकने विषे जे त्रण त्रण उपवासनी स्थापना करी ळे, ते स्थानकें आमां बे बे उपवासनी स्थापना करवी,एनी पण चार परिपाटी करतां पांच वर्ष बे मास ने अष्ठावीश दिवस उपर थतां ए तप पूर्ण थाय उजमणे सुवर्णमय हार अने सुवर्ण अक्षर मय पुस्तक करवां. इहां प्रथम लघुसिंहनिःक्रीडित तथा महासिंहनिःक्रीडित नामा जे तप कह्युं, तेमां जे प्रमाणें पारणानो विधि कह्यो, तेहज विधि ए मुक्तावलि तथा रत्नावलि अने कनकावलि ए त्रणे तपने विषे जाणवो. ए पांचे तपनो पारणासंबंधि विधि सरखो जाणवो.

१३ हवे नद्रप्रतिमा संबंधि तप कहे ळेः—प्रथम एक उपवास पळी बे, त्रण, चार अने पांच, एम पन्नर उपवासें एक लता थाय. हवे बीजी उलीमां त्रण, चार, पांच, एक, बे, एवं पन्नर उपवास थाय. तथा त्रीजी उलीमां पांच, एक, बे, त्रण, चार एम पन्नर उपवास थाय, तथा चोथी लतामां बे, त्रण, चार, पांच अने एक एवं पन्नर उपवास थाय. तेम

ज पांचमी उंत्नीमां चार, पांच, एक, बे अने त्रण, एवं पन्नर उपवास थाय. सरवाले पांच उंत्नीना पंचो तेर उपवास अने एकेकी ततायें पांच पांच पारणां थाय, तेथी पच्चीश पारणां थाय. मली एकशो दिव सें नड्प्रतिमातप पूर्ण थाय.

१४ महानड्प्रतिमा तप कहे ठेः—एक, बे, त्रण, चार, पांच, ठ अने सात, ए २० दिवसें प्रथम उंत्नी थइ. पठी चार, पांच, ठ, सात, एक, बे अने त्रण ए २० दिवसें बीजी उंत्नी थाय; पठी सात, एक, बे, त्रण, चार, पांच अने ठ, ए त्रीजी उंत्नी. पठी त्रण, चार, पांच, ठ, सात, एक अने बे ए चोथी उंत्नी थइ. पठी ठ, सात, एक, बे, त्रण, चार अने पांच ए पांचमी उंत्नी. ते पठी बे, त्रण, चार, पांच, ठ, सात अने एक, ए ठही उंत्नी. ते पठी पांच, ठ, सा त, एक, बे, त्रण, अने चार ए सातमी उंत्नी थइ. ए सात उंत्नी तपनी करीयें, तेवारें एकेक उंत्नीमां अठावीश अठावीश उपवास अने सात सात पार णांना दिवसो गणतां सर्व १०६ उपवास तथा ४० पारणांना मली २४३ दिवसें तप पूर्ण थाय.

१५ हवे नड्ोत्तरप्रतिमा तप कहे ठेः—तिहां पांच, ठ, सात, आठ, अने नव, ए पांत्रीश उपवासें प्रथ म उंत्नी जाणवी. तथा सात, आठ, नव, पांच अ ने ठ, एटला उपवासें बीजी उंत्नी जाणवी. तथा न व, पांच, ठ, सात अने आठ, एटला उपवासें त्रीजी

ठली जाणवी. तथा ठ सात, आठ, नव अने पांच, ए चोथी ठली जाणवी. तथा आठ, नव, पांच, ठ अने सात, ए पांचमी ठली जाणवी. एम एकेक ठलीयें पांत्रीश उपवास अने पांच पांच पारणां थाय. तेवारें १७५ उपवास थाय. पच्चीश दिवस पारणांना मली बसो दिवसें ए तप पूर्ण थाय ठे ॥ इति ॥

१६ सर्वतोनद्र प्रतिमानुं तप कहे ठेः—एने विषे पांच, ठ, सात, आठ, नव, दश अने अगीयार, ए ठपन्न उपवासें प्रथम पंक्ति जाणवी. तथा आठ, नव, दश, अगीआर, पांच, ठ अने सात, ए बीजी पंक्ति जाणवी; तथा अगीआर, पांच, ठ, सात, आठ, न व अने दश, ए त्रीजी पंक्ति जाणवी. तथा सात, आठ, नव, दश, अगीआर, पांच, अने ठ, ए चोथी पंक्ति जाणवी; तथा दश, अगीआर, पांच, ठ, सात, आठ अने नव, ए पांचमी पंक्ति जाणवी; तथा ठ, सात, आठ, नव, दश, अगीआर अने पांच, ए ठठी पंक्ति जाणवी. तथा नव, दश, अगीयार, पांच, ठ, सात अने आठ ए सातमी पंक्ति जाणवी. एमां ए केक पंक्तियें ठपन्न ठपन्न उपवास अने सात सात पारणां करतां सात ठलीमां ३९२ उपवास तथा ४९ पारणांना दिवस मली ४४१ दिवसें तप पूर्ण थाय. ए नद्रादिक तपने विषे जे पारणां करवां, ते पूर्वोक्त पांचे तपनी पेरें प्रत्येकें जाणवां. अने चतुर्विधपणुं पण प्रत्येकें जाणवुं.

१७ हवे सर्वसंपत्तिसुख नामा तप कहे छेः– जेना आसेववा थकी सर्व कोइ वस्तुनी संपत्ति थाय, समस्त प्रकारनां सुख संपत्तिनी प्राप्ति थाय, माटे एने सर्व संपत्ति सुख एवे नामें तप कहियें. ए तपनो शुक्लपक्ष अथवा कृष्णपक्षना पडवाना दिवसथी आरंभ करीयें, तिहां पडवाने दिवसें एक उपवास करीयें, वली बीजा पक्षना बीजना दिवसथी बे उपवास करियें, वली त्रीजा पक्षना त्रीजना दिवसथी त्रण उपवास करवा. एम ज्यांसुधी छेल्ला पूर्णिमाना अथवा अमावास्याना दिवसथी जेवारें पन्नर उपवास करियें, तेवारें सर्व मली एकशोने वीश उपवासें ए तप पूर्ण थाय. एमां जे तिथी भूले ते तिथीने विषे फरीथी उपवास करवो. उजमणें १२० लाडू मंदिरें चढावे; स्नात्रमहोत्सव करे.

१८ रोहिणी नामें तप कहे छेः– सत्तावीश नक्षत्र छे, तेमां प्रथम अश्विनी नक्षत्रथी रोहिणी नामा नक्षत्र ते चोथुं छे, ए रोहिणी नक्षत्र जे दिवसें आवे, ते दिवसें रोहिणी नामक देवता विशेषना आराधवाने अर्थें सात वर्ष अने सात महिना सुधी श्रीवासुपूज्य स्वामीनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा पूजा पूर्वक जे जे दिवसें रोहिणी नक्षत्र आवे, ते ते दिवसें उपवास करीने ए तप करीयें. ए तप अक्षय तृतीयानेदिवसें रोहिणी नक्षत्र आवे,ते दिवसथी कराय छे. उजमणे अशोकवृक्षयुक्त श्रीवासुपूज्यस्वामिनी प्रतिमा करावीप्रतिष्ठित करी देवगृहे स्थापवी.एकशोनेएक मोदकढोकवा.

१ए मौनएकादशी नामा तप कहे ठेः— अगीआर शुक्ल एकादशी सुधी निरंतर एक उपवासें करी, श्रुतदेवतानी पूजा पूर्वक मौनपणुं धारण करी श्रुतदेवी आराधवाने अर्थें ए तप करीयें, उजमणें रूपाना घंट अगीयार तथा जातिजातिनां फल ढोइयें.

२० सर्वांगसुंदर नामा तप कहे ठेः— जेनुं आराधन करवाथी समस्त अंगने विषे प्रधान सुंदर पणुं होय तेने सर्वांगसुंदर तप कहियें. एने विषे चांदरडा पक्षने विषे श्रीवीतरागनी पूजापूर्वक आठ उपवासं एकांतरें आयंबिल सहित करीयें, अने क्षमा, मार्दव, आर्जवादिक नियमोनो पण परिचय करीयें. उजमणे चतुर्विध श्रीसंघ, देव, अने ज्ञाननी नक्ति करवी.

२१ निरुजशिख नामा तप कहे ठेः— निरुज एटले नीरोगपणुं तेज जेना फलनी विवक्षायें शिखा एटले चोटलीनी पेरें ठे, अर्थात् जेनाथी निरोगीपणानी प्राप्ति थाय तेने निरुजशिख नामा तप कहीयें. एने विषे अंधारा पखवाडीयामां एकांतरें आठ आयंबिल अने उपवास आठ करीयें, शोलदिवसें तप पूरुं थायं, अने गिलाननुं वेयावच्च करवानो अनिग्रह करीयें.

२२ परमनूषण तप कहे ठेः— जेना करवा थकी चक्रवर्त्ती आदिक महा पुरुषोने पहेरवा योग्य एवा उत्कृष्ट हार, कुंमल, केयूरादिक आनरण पामीयें, तेने परमनूषण तप कहीयें. एनेविषे निरंतर बत्रीश आयंबिल करीयें, जो निरंतर न थइ शके, तो ए

कांतरें पारणां करीने बत्रीश आयंबिल पूर्ण करीयें. उजमणे पोतानी शक्तिने अनुसारें श्रीवीतरागदेवने योग्य मुकुट तिलकादिक नूषण चढावीयें.

२३ आयतिजनक तप कहे ठेः— जेणें करी आयतिशब्दें परनवें जे विशिष्टफलनुं जनक एटले उपजावनार थाय, तेथी एनुं नाम पण आयतिजनक तप ठे. एमां पण पूर्वोक्त रीतें लागट बत्रीश आयंबिल करीयें, जो लागट न थाय तो एक दिवस पारणुं अने एक दिवस आयंबिल एम करीने बत्रीश पूरां करे, अने समस्त वंदनक पडिक्कमण, स्वाध्याय, साधु साध्वीनुं वेयावच्च, इत्यादिक धर्मक्रियाने विषे बल अने वीर्यनी प्रवृत्ति सहित रहे, बल वीर्य गोपवे नही, ए रीतें करे. उजमणे देवपूजा, पडिक्कमण, संघवेयावच्च करे.

२४ सौनाग्यकल्पवृक्ष नामा तप कहे ठेः— जे सौनाग्यफलना दानने विषे कल्पवृक्ष समान होय तेने सौनाग्यकल्पवृक्ष तप कहीयें. एकांतरें उपवास, पन्नर उपवास अने पन्नर एकासणां करियें, एकासणांना दिवसें सर्वरस कामगुणित जमवुं. उजमणुं चैत्रमासें करी कल्पवृक्षनां फल ढोकियें, तथा ए तप पूर्ण थये थके पोतानी शक्तिने अनुसारें एक थालमां नानाप्रकारनां फल तेणें करी विलसित जे शाखा, तेणे युक्त एवुं चोखानुं कल्पवृक्ष करीने श्रीवीतराग आगल मूकीयें.

२५ तीर्थंकर मातृतप कहे ठेः— श्रीतीर्थंकरनी मा

तानी पूजापूर्वक ए तप जादरवा शुदि सातमथी मांमी ने जादरवा शुदि तेरश सूधी लागट सात एकासणां करवां. एम सात वर्ष पर्यंत करवां.कोइक आचार्य त्रण वर्ष लगण सात एकासणां करवां कहे ठे उजमणामां प्रधान चोवीश पक्वान्नना थाल आपवा. जे पुत्र स हित स्त्री होय, एवी चोवीश श्राविकाउने जमाडवी. पीलां वस्त्र करी आपवां, मह्गेटो महोत्सव करवो. ए जिनमाता नामा तप जादरवा महिनामां करियें.

२६ समोसरण तप कहे ठेः– ए तपमां एक एका सणुं, उपर एक नीवी पठी एक आयंबिल, पठी उप वास करवो. एम करवाथी एक श्रेणी थाय. एवी चार उली करवी तेवारें शोल दिवस थाय. एमां ठेल्लो उ पवास पंजोसणना दिवसें आवे, एवी रीतें ए तप क रवुं, ए तप समोसरणनी पूजा पूर्वक चार वर्ष पर्यंत कीधे ठते चोसठ दिवसें पूर्ण थाय. एवी रीतें समोसर णना एकेक द्वारनो आश्रय करीने प्रत्येक द्वारने स्था नकें चार चार दिवसनुं तप श्रावणवदि १ थी करे ॥ उजमणे समोसरण पूजा, नवेद्य थालचार ढोके.

२७ नंदीश्वर नामा तप कहे ठेः– नंदीसर द्वीप संबंधि जे प्रासाद ठे, ते पट्ट उपर लखीने नंदीश्वरना पट्टनी पूजा पूर्वक पोतानी शक्ति माफक तप करवुं. ए मां दीवालीनी अमावस्याथी आरंजी उपवास करीयें. एम प्रत्येक अमावास्यायें तप करतां फरी दीवालीनी अमावस्या सूधी नंदीश्वरद्वीपनां एक दिशानां तेर चै

त्यनी अपेक्षायें तेर उपवास थाय. फरी त्रीजी दीवा
लीनी अमावास्याथी बीजी दिशिनी अपेक्षायें तेर उप
वास करवा, माटे प्रत्येक महिनानी अमावास्यायें
एकेको उपवास करे. एवी रीतें चार दिशाउना बावन
चैत्य आश्री सात वर्षने बे महीने ए तप पूर्ण थाय.
हमणांना काले दीवालीनी अमावास्या तथा पूनम
ना बे बे उपवास करी एक वर्षमां पण ए तप पूर्ण
करे छे. उजमणे नंदीश्वर द्वीपनुं मंमल बनावे, पूजा
करावे, ज्ञानपूजा करे, गुरुजक्ति करे, मंमलनी पूजा
करे, बावन बावन फल नालीयेर पूगी फलादिक व
स्तु ढोके, बावन्न लोगस्सनो काउस्सग्ग करे.

१७ पुंमरीकनामें तप कहे छेः— चैत्री पूनमना
दिवसें पुंमरीक गणधरने केवलज्ञान उपनुं छे, माटे ए
दिवसें एक उपवास अथवा एकासणादिक तप करियें.
यथाशक्तियें श्रीपुंमरीक गणधरनी पूजापूर्वक जक्ति क
रीयें. ए तप सात वर्ष पर्यंत करवानुं कहे छे. उजम
णे नणद पुत्रिकाउने अथवा अन्यने अगणित मंम
क जमाडवा, साधु साध्वीने उंघो, मुहपत्ति, वस्त्र त
था अगणित मंमक वहोरावता, सात घरने विषे
अगणित मंमकनी लाणी करवी.

१ए अक्षयनिधि तप कहे छेः— घर देरासरें श्रीजिन
देव आगल अथवा बीजा कोइ उत्तम स्थानकें चित्र स
हित घट थापियें. पछी तेमां प्रतिदिवसें मूठि जर चोखा
नाखतां जइयें अने प्रति दिवसें पोतानी शक्तिने अनु

सारें एकासणुं बियासणुं प्रमुख तप करीयें. श्रीपर्यूष णथकी पन्नर दिवस आगल ए तप मांमियें. ते पन्न र दिवस पर्यंत करतां पंजोसणने दिवसें ते कलश पू राइ जाय, अने तप पण पूर्ण थाय, तेवारें ते कलश उपर नालियेर राखी महोत्सव पूर्वक मंदिरमां लावी देव आगल राखी स्नात्र पूजा करे, ज्ञानपूजा करे. एम चार वर्ष पर्यंत करे. उजमणे त्रिपद्विणी करी देव आगल मूकियें. गीतवाजित्र करियें.

३० हवे चांद्रायण तपः—ते यवमध्य अने वज्र म ध्य एवा बे नेदें छे. तिहां जेम चंद्रमा शुक्लपक्षमां ए कमना दिवसथी प्रतिदिवस एकेकी कलायें वधतो जाय छे; तेम पडवाना दिवसें एक केवल, बीजना दि वसें बे कवल, एम चांद्रणे परववाडे प्रतिदिन एकेको कवल वधारतां पूनमना दिवसें पन्नर कवलनो आहा र थाय. पछी अंधारिये परववाडीयें चंद्रमा पण प्रतिदि वस एकेक कलायें हीन थतो जाय. तेम इहां पण पडवाना दिवसें पन्नर कवल लही बीजना दिवसें चौद कवल लहीयें, तेमज त्रीजना दिवसें तेर कवल. एवी रीतें प्रतिदिवसें एकेको कवल उछो करतो अमा वास्यायें एक कवलनो आहार करे. ए यवमध्य प्रति मा एक मास प्रमाणनी थाय. उजमणे रूपानो चंद्र मा अने सोनाना बत्रीश यव ढोइयें.

३१ हवे वज्रमध्य प्रतिमा तप कहे छेः—अंधारे परववाडिये पडवाना दिवसें पन्नर कवल, बीजना दि

वसें चौद कवल, त्रीजना तेर, एम एकेकनी हानि करतां अमावास्यायें एक कवलनो आहार थाय. फरी अजवालिये पखवाडिये पडवाना दिवसें एक केवल, बीजना बे केवल, त्रीजे त्रण कवल, एम दिवसें दिवसें एकेका कवलनी वृद्धि करतां पूर्णिमायें पन्नर कवलनो आहार थाय. एम एक मासें वज्रमध्य प्रतिमा तप पूर्ण थाय. उजमणे रूपानो चंद्रमा अने सोनानुं वज्र आपवुं. कवलनी संख्या प्रमाणें मोदक आपवा. देवपूजा, पुस्तकपूजा अने श्रीसंघनुं वात्सल्य वेहु तपमध्यें यथाशक्तियें करवुं.

३१ आयंबिल वर्द्धमान नामा तप कहे छेः—प्रथम एक आंबिल करी बीजे दिवसें पारणे उपवास करे, पछी बे आंबिल उपर एक उपवास पछी त्रण आंबिल उपर एक उपवास, पछी चार आंबिल उपर एक उपवास,एम वधतां वधतां छेल्ला एक शो आयंबिल करीने तेने पारणे एक उपवास करे. तेवारें सर्व मली एक शो उपवास थाय, अने पांच हजार ने पचास आयंबिल थाय. ए महातपनुं आसेवन चौद वर्ष उपर त्रण महीनाने वीश दिवसें पूर्ण थाय.

३२ गुणरत्न संवत्सर नामा तप कहे छेः—ए तपनुं आसेवन करतां दिवसें उकडू आसनें रहेवुं, अने रात्रियें वीरासने रहेवुं, वस्त्र रहित थवुं. ए तप शोल मास पर्यंत करवुं. तिहां प्रथम महीने एकांतरें उपवास करवा, एटले एकेक उपवास अने उपर पारणुं

करवुं, एम बीजा मासें बे बे उपवासनी उपर पारणुं करवुं, त्रीजा मासें त्रण त्रण उपवासनी उपर पारणुं करवुं, चोथा मासें चार चार उपवासनी उपर पारणुं करवुं, तेवारें आखा चोथा महीनामां चोवीश दिवस उपवासना थाय, अने ठ दिवस पारणांना थाय. एम मासें मासें एकेका चढता उपवासें पारणुं करतां या वत् शोल महीना सुधी ए तप करीयें, तेवारें पन्नर, वीश, चोवीश, चोवीश, पच्चीश, चोवीश, एकवीश, चोवीश, सत्तावीश, त्रीश, तेत्रीश, चोवीश, ठवीश, अ ठावीश, त्रीश, बत्रीश, ए अनुक्रमें शोल महीनांने विषे ४०७ तपना दिवसो थाय ठे. हवे पारणाना दिवसो प्रत्येक महीना महीनाना कहे ठे. पन्नर, दश, आठ, ठ, पांच, चार, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, बे, बे, बे, बे, बे, सरवाले ७३ पारणां शोल महीनामां थाय. जे महीनामां अष्टमादिक तपना दिवस पूराय नही, तेवारें आगला महीनाना दिवसो लेवा. सरवाले ४८० दिवसना शोल महीना थाय. निर्जरादि जे गुण तद्रूप जे रत्न ते एने विषे रह्या ठे, माटे एने गुणरत्नसंवत्सर तप कहीयें ॥ इति ॥

३४ श्रीचोवीश तीर्थंकरना च्यवन, जन्म, दीक्षा, ज्ञान अने निर्वाण, ए पांच कल्याणिकना एकशो ने वीश दिवसोने विषे उपवासादि तप यथा शक्तियें करवुं. ए तप पूर्ण थयाथी उजमणे कनकसिंहराजानी परें चोवीशे जिनोनी प्रतिमाउ करावची, तिलक चो

वीश कराववां, पक्वान्न चोवीश, गजी, कूंपी, कचो
ली प्रमुख पूजानां उपकरण ढोकवां. च्यवन कल्या
णकें परमेष्ठिने नमः ए जाप १००० करवो. जन्में अ
र्हते नमः एनो जाप १००० करवो, दीक्षायें नाथाय
नमः एनो जाप १००० करवो, ज्ञानें सर्वज्ञाय नमः
एनो जाप १००० करवो. अने निर्वाणने दिवसें पारंग
ताय नमः ए जाप १००० करवो. तथा च्यवने साधर्मि
कनी वात्सल्यता. जन्में गोल घृत आपीयें. दीक्षायें
टोपरा गोल वेचीयें. ज्ञानें संघपूजा. अने निर्वाणने
दिवसें महोटी पूजा रचावीयें ॥

३५ लघु पंचमी तपः—पोष अने चैत्रमास वर्जीने
अन्य महीनाउ मांहेला गमे ते महीनामां साधु, सा
ध्वी, श्रावक तथा श्राविकायें लघु पंचमी तप ग्रह
ण करी शुक्ल तथा कृष्ण पंचमीना दिवसें उपवास
करतां एक वर्षमां पच्चीश पंचमीयो करवी. उजमणुं
ज्ञानपंचमीना तप प्रमाणें करवुं.

३६ ज्ञान पंचमी तपः—ए तप पांच वर्ष अने
पांच मास पर्यंत प्रत्येक महिनानी शुक्ल पंचमीयें उ
पवास करवो.तेवारें पांशठ उपवासें ए तप पूर्ण थाय.
ए तप मागशिर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ अने
आषाढ, ए छ महीना मांहेली गमे ते मासनी शुक्ल
पंचमीयें ग्रहण करवुं. उजमणे पच्चीश पुस्तक, चोग
ठा जोडा पच्चीश, मिशांजणां पच्चीश, उतरी, वाटी,
कमली, पाटी, नवकरवाली, पूंजणी, वासकूंपी, पीत

लनां वतरणां, ऊरमरजोला, लेखण,कातरणी, पाली, कांबी, चंडुआ,चित्रित पाठांनां जोडां,सोनेरी बिंब, पानां, सूर्यकांत, ठवणी, नेहरणी, ए सर्व पच्चीश पच्चीश तथा नाणामां सोनइया, रूपइया, बद्ध फदियां, ठक्कड, डुगी,सर्व पांच पांच करतां पच्चीश नाणां, पुस्तक आगल ढोकवां. तथा पट्टसूत्रना दोरा पच्चीश.इत्यादिक ज्ञानोपकरण ढोकवां. तथा पक्कान्न, लीलां सूकां जाति जातिनां फल, नालियेर, कदली, दाडिम, द्राक्षा, साकर, खांड, अंगलूहणां, धूपधाणां, छत्र, चामर, कलश, आरतिमंगल, जालर, घंटा, पडह, नेरी, मृदंग, दांडियादिक, तथा शिलामय, पित्तलमय, रत्नमय, सुवर्णमय, मुक्तामय, विडुममय, इत्यादिक धातुना नविन बिंब नरावबां. ए सर्व वस्तु पांच पांच एकठी करीयें. ए देव आश्रयी कह्युं. हवे पोषधशालाउ करावबी,तथा पांच दीक्षा महोत्सव करावबा, पांच ध्वजारोपण, पांच कनककलश, पांच प्रतिष्ठा, पांच यात्रा, पांच वार संघपति पद, आचार्यपद, सिंहासन, त्रांबाकूंडी, त्रांबाना हांडा, धोतीजोडा पच्चीश, तथा कचोली, आरीसा, उरशीया, दीवा, थाल, कंसाल, तिलक, कुंडल, मुकुट, चक्रु, बहेरखा, कचोलां, बीजपूर, तंडुल, पूगीफल, चरवला, मुहपत्ती, ए सर्व पच्चीश पच्चीश ढोकवां. संघपूजा, साधर्मिकवात्सल्य, रात्रिजागरण, संघने वस्त्रदान, पहेरामणी, धवलगीत गान, श्राविकाउने साडीनी पहेरामणी,शृंगारदान इत्यादिक

ज्ञानोपज्ञोग्य तथा देवोपज्ञोग्य अने संघोपज्ञोग्यने माटे सर्वसार सार वस्तु लेवी. तथा सर्व प्रकारनां धान्य अने सुवर्ण, रूप्य, मणि, आदिक द्रव्य, ढोकवां. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नज्ञ०॥ कही पच्चीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

२७ श्रीमहावीर तपः—नवोंतेर अर्द्धमासी, नव चउमासी, एक ठ मासी, बे त्रिमासी, बे अढिमासी, ठ बे मासी, बे दोढ मासी, बार एकमासी, जड प्रतिमा. दिन बे, महाजड्प्रतिमा दिन चार, सर्वजड्प्रतिमा दिन दश, एम जड्रादि प्रतिमाना उपवास शोल तथा अनिग्रह सहित पांच दिवसे ऊणी ठमासी एक, व ळोने उगणत्रीश ठठ, बार अठम, ए रीतें श्रीमहावीरस्वामीयें ठद्मस्थावस्थामां बार वर्ष ने साडा ठमास तप कर्युं, तेमां पारणां ३४ए कर्यां, ते रीतें तप करीने पठी उजमणें अष्टप्रकारी पूजा, गोधूम मण एक, घृत मण अडधो, तथा यथाशक्तें श्रीसंघनुं वात्सल्य करवुं.

२ए गौतम पडघो तपः—पन्नर पूर्णिमा पर्यंत एकाशनादि तप यथाशक्तियें करवां. गौतम स्वामीने दूधपाकनुं नैवेद्य धरवुं. अष्टप्रकारी पूजा करवी. श्री गौतमजीनी प्रतिमाने अजावें श्रीमहावीर प्रतिमानी पूजा करवी. उद्यापनें रूपानो पडघो खीरें जरीने श्री गौतम अथवा वीरनी प्रतिमा आगल ढोकवो. श्रीगुरुने जोली अने पात्रां आपवां.

३९ श्रीतीर्थंकर च्यवन जन्म कल्याणक तपः—एकेक तीर्थंकरना च्यवन दिवसें एकेको उपवास करीयें. तेमज जन्म आश्रयी पण पृथक् पृथक् उपवास करतां चोवीश ऊ अडतालीश उपवास थाय.

४० श्रीतीर्थंकर दीक्षा तपः—वीश तीर्थंकरें छठ तप कर्यां, माटे तेमनी दीक्षाने दिवसें छठ छठ तप करवां. उपवास चालीश थाय, अने श्रीवासुपूज्य आश्री उपवास एक तथा श्रीमल्लिनाथ अने पार्श्वनाथ आश्री उपवास त्रण त्रण करवा. एवं ४७ उपवास तथा श्रीसुमतिनाथ आश्री एकासणुं करवुं. उजमणे एकासणा पूर्वक मोदक ४८ तथा फल ४८ ढोकवां, अने अष्टप्रकारी पूजा करवी.

४१ श्रीतीर्थंकर केवलज्ञान तपः—श्रीआदिनाथ, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, ए चार तीर्थंकर आश्री उपवास, त्रण त्रण करवा. अने श्रीवासुपूज्य आश्री एक उपवास तथा शेष उगणीश तीर्थंकर आश्री बे बे उपवास करवा. सरवाले ५१ उपवास करवा. उजमणे मोदक बावन तथा नैवेद्य, बलि, फलादि, षट्विकृति ढोकवां. अष्टप्रकारी पूजा करवी.

४२ तीर्थंकर निर्वाणतपः—श्रीआदिनाथ निर्वाणने दिवसें उपवास छ करवा. श्रीवीरप्रभु निर्वाणें उपवास बे, अने शेष तीर्थंकरने निर्वाणें एकांतरे उपवास त्रीशं त्रीश करवा. उजमणे तिलक चोवीश, पक्कान्न चोवीश, फल चोवीश, श्रीजिन आगल

ढोकवां, तथा यथाशक्तियें श्रीसंघनी पूजा करवी.

४३ मोक्ष दंडकतपः—गुरुना हाथमां दांडो हो य छे, तेने मुष्टियें करी जरीयें, जेटली मुष्टि थाय, तेटला एकांतरें उपवास करवा. अथवा बीजो विधि कहे छेः—एकासण वार, नीवी नव, आयंबिल पांच, उपवास एक. एवं सत्तावीश दिवस तप करवुं. छेहडे उपवासने दिवसें परिधापनिका चोखानो था ल तथा नालिकेरादिक फलथी,दांडानी पूजा करवी. उजमणे गुरुने वस्त्रदान आपवुं.

.४४ दमयंती तपः—ए तप नलराजानी स्त्रीयें आ गल्या वीरमतीने भवें आदर्युं हतुं, ते आवी रीतें केः— एकेक जिन आश्री वीश आयंबिलनी एकेक उली करीयें. तेवी चोवीश उली थाय अने ए मद्दोटुं तप छे ते भणी एनी साथें एक उली शासन देवतानी मली पच्चीश उलीनां पांचशें आयंबिल थाय, पार णाना दिन चोवीश थाय. उजमणे चोवीश जिन पूजा पूर्वक चोवीश तिलक तथा स्नात्रादि पूजा विशेष कर वी. श्रीजिन आगल पांचशें ने चार मोदक ढोकवा, अथवा चोवीश जिन प्रत्यें एकेक मोदक ढोकवो.

४५ ऊणोदरी तपः—इहां पुरुषने बत्रीश कवलनो आहार, अने स्त्रीने अठावीश कवल आहार कह्यो छे, तेमांथी न्यून करीने आहार लीये, ते लोक प्रवा हें ऊणोदरी तप जाणवुं. तिहां पुरुषें प्रथम दिवसें आठ कवल. बीजे दिवसें बार कवल, त्रीजे दिवसें शोल,

चोथे दिवसें चोवीश अने पांचमे दिवसें एकत्रीश कवलनो आहार करवो. एम एकाणुं कवल पुरुषने तथा स्त्रीने ८७ कवल लेवा. उजमणे जिनपूजा पूर्वक कवल संख्या प्रमाणें मोदक ढोकवा.

४६ मौन एकादशी तपः—मार्गशिर शुदि ११ ने दिवसें एक उपवास करीयें, एवा अगीयार वर्ष पर्यंत अगीआर उपवास करीने उजमणे अगीयार अगीयार वस्तु अने फलादिक पण तेटलांज ढोईयें ॥

४७ अगीआर अंग तपः—अगीयार शुक्ल पक्षनी अगीयारशें एकेक उपवास अगीयार महिना पर्यंत श्रुतदेवता आराधवाने अर्थें करीयें. उजमणे रूपाना घंट अगीयार तथा अगीयार अगीयार फल. ज्ञानपंचमीना तपमां जे लख्यां छे ते सर्व ढोकवां.

४८ द्वादशांगी तपः— द्वादशांगी तप पण तेमज शुक्ल पक्षनी बार बारश पर्यंत बार महीना करवुं, उजमणे बार बार वस्तु ढोकवी.

४९ चौद पूर्व तपः—चौद शुक्ल चतुर्दशी पर्यंत एकेक उपवास निरंतर करीयें, महीने महीने ज्ञान अने ज्ञानवंतनी पूजा करीयें, एम चौद मास तप कस्या पछी उजमणे पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, वीटांगणां प्रमुख ज्ञानोपगरण सर्व चौद चौद आपीयें ॥

५० धर्मचक्रवाल तपः—चोवीश आयंबिल निरंतर करीयें, उजमणे रौप्यमय चक्र आपीयें.

५१ अष्टापद तपः—आशोवदि अमावास्याथी ए

कांतरें आठ उपवास करीयें, पारणे एकासणुं करीयें, एम आठ वर्ष तप करीयें. उजमणे अष्टापदनी पूजा तथा घृत मय गिरिनी रचना. सुवर्णमय निसरणी आठ पावडीनी आठ, तथा पक्कान्न चोवीश तथा फलादि सर्व जातिनां चोवीश चोवीश ढोकवां. बीजी सर्व वस्तु संख्यायें आठ आठ ढोकवी ॥

५२ वडुं समोसरण तपः—प्रथम उपवास चार करी पारणे एकासणुं अथवा बेआसणुं करवुं. एवा चार वखत चार चार उपवास करीयें. पंजोसणने दिवसें ए तप पूर्ण करीयें. एम चार वर्ष सीम करतां चोशठ उपवासें ए तप पूर्ण थाय.

५३ पंच मेरु तपः—एमां एकेका मेरु आश्री पांच पांच उपवास एकांतरे निरंतर करतां पच्चीश उपवास अने पच्चीश पारणां मली पच्चास दिवसें ए तप पूर्ण थाय. उजमणे सोनानो मेरु करीयें, अने पच्चीश नेर्दे पक्कान्न ढोइयें.

५४ अदुःख दुःखित तपः—प्रथम शुक्लपक्षना पडवाने दिवसें एक उपवास करवो, वली बीजा शुक्लपक्षनी बीजने दिवसें एक उपवास करवो, वली त्रीजा शुक्लपक्षनी त्रीजने दिवसें एक उपवास करवो. एम पांच वखत आराधन करवाथी पन्नर उपवास थाय. तपने दिवसें श्रीऋषभजिनने अखंड माला चडाववी. नविन नविन नैवेद्य ढोकवुं. अने जो ए पन्नर दिवसना उपवासमांथी कोइ पण उपवास चूलीयें, तो ते

सर्व तप व्यर्थ थाय. फरीथी करवुं पडे. उजमणामां रूपानुं वृक्ष कराववुं, तेनी शाखामां सोनानुं पालणुं करावीने मूकवुं. तेने रेशमनी पाटीथी नरी उपर रेशमी वस्त्रनी तलाइ नाखीने तेमां सुवर्णमय पूतली करीने सुवारवी. श्रीऋषनदेवनी पूजा करवी.

५५ सत्तरीसयजिन तपः—एकेका जिन आश्रयी एकेका उपवास एकाशनादिक तप एकांतरें करतां १७० एकाशनादिक करवां, उद्यापने जिनपूजा पूर्व क १७० श्राविकाने नोजनादि आपवुं, तथा लाडुं १७० ढोकवा. शक्तिने अनावें एकांतरें उपवास. अथवा एकाशनादिक न थइ शके तो तूटक करवा.

५६ अमृताष्टमी तपः—शुक्लपक्षनी आठ अष्टमीयोने दिवसें आयंबिल करवां. देवपूजा करवी, उजमणे दूधें नरेला घृतनो कलश एक, कापडुं एक, एक मण मोदक, जल गाडुं एक, ढोकवां.

५७ अखंड दशमी तपः—दश शुक्लपक्षनी दश दशमीने दिवसें एकाशनादिक तप करवुं. अखंड अन्ननुं नोजन करवुं. उजमणे धान्य दश जातिनां तथा फलादि अखंड देवगृहे ढोकवां. कोरुं वस्त्र, संघपूजा तथा यथाशक्ति साधुने दान वगेरे आपवां.

॥ हवे निक्षा नियम तप चार प्रकारें कहे छे ॥

५८ सप्त सप्तमिका तपः—एमां सात दिवसनी एक उली. एवी सात उली करवाथी ४९ दिवसें पूर्ण थाय. दाति १९६ ए बे प्रकारें छे तेमां पहेला सप्त

कमां प्रतिदिन एक भिक्षा लेवी. बीजा सप्तकमां प्रतिदिन बे भिक्षा लेवी. एम प्रत्येक सप्तकें एकेक भिक्षा वधारतां सातमा सप्तकें प्रतिदिन सात सात भिक्षा लेवी, तेवारें सरवाले १९६ दाति थाय.

५९ अष्टाष्टमिका तपः—एमां पण पूर्वोक्त रीतें प्रत्येक अष्टकें एकेक भिक्षा वधारतां तप दिन ६४ अने दाति २८८ थाय. ए बे प्रकार जाणवा.

६० नवम नवमिका तपः—एमां पण उक्त रीतें तप दिन ८१ अने दाति ४०५ थाय. ए बे प्रकार॥

६१ दशम दशमिका तपः—ए पण उक्त प्रकारें तप दिन १०० अने दाती ५५० ए चारे तपमां कह्या प्रमाणें भिक्षा लेवी. नहीं कां तपनो भंग थाय.

६२ कर्म चतुर्थ तपः—प्रथम एक अठम करी पछी एकांतरें बाठ उपवास करीने वली छेहलुं एक अठम एटले त्रण उपवास करी पारणुं करीयें, तेवारें बाशठ उपवास अने बाशठ पारणां मली चार मास ने आठ दिवसें तप पूर्ण थाय छे, उजमणे आठ शाखा सहित रूपानुं वृक्ष तथा सोनानो कूहाडो मूकवो अने श्रीसंघनुं वात्सल्य करवुं.

६३ शिवकुमार बेला तपः—एमां बार बेलां लागट अथवा छूटक करीयें. पारणें आयंबिल करीयें.

६४ कर्मचक्र तपः—प्रथम एक अठम करी पछी एकशठ उपवास एकांतरें करवा. अने अंतें एक अठम

करीयें, तेवारें ६७ उपवास अने ६३ पारणें मली चार मास ने दश दिवसें ए तप पूर्ण थाय ॥

६५ बत्रीश कल्याणक तपः—प्रथम एक अठम करीने पछी एकांतरें बत्रीश उपवास करवा. वली अंत मां एक अठम करीयें, तेवारें आडत्रीश उपवास अने चोत्रीश पारणां मली बे म[illegible]नाने बार दिवसें ए तप पूर्ण थाय, उजमणे जिनगृह मध्यें बत्रीश बत्रीश वस्तु ढोकवी. ए तप वसुदेवहिंममां कह्युं छे.

६६ लघुधर्मचक्रवाल तपः— एमां प्रथम एक अठम करी पछी साडत्रीश एकांतरें उपवास करवा: अने छेहडे पण एक अठम करवुं. एम त्रेंताली उपवास अने ३९ पारणां मली ८२ दिवसें ए तप पूर्ण थाय, उजमणे जिनपूजा पूर्वक रौप्य सुवर्णमय धर्मचक्र ढोकवुं, संघभक्ति, साधुदान, ज्ञानपूजा करवी.

६७ एकावलि तपः—दिन ३३४ पारणां ८८. ए तप रत्नावली तपना यंत्रनी पेरें करवुं, पण एटलुं विशेष जे आठ आठ छठने स्थानकें चोथ करवी. तथा पदकनी चोत्रीश छठने स्थानकें एकेक उपवास करवो, ए तप शुक्लपक्षथी प्रारंभ कराय छे.

६८ नवकार पदाक्षर मान तपः—प्रथम पदें सात अक्षरना सात उपवास, बीजे पदें पांच, त्रीजे सात, चोथे सात, पांचमे नव, छठे आठ, सातमे आठ, आठमे आठ, अने नवमे आठ. एवं सर्व मली अडशठ उपवास, एकांतरें करवा. उजमणे रूपानां पत्रां उपर

सुवर्ण अक्षरें पंचपरमेष्टि लिखित, प्रणव नमः पूर्वक ढोकवुं, तेमज लाडु ६७ तथा शासन अधिष्ठायिकने मोदक एक, एवं ६८ मोदक ढोकवा ॥

६९ दश प्रकारें यतिधर्म तपः—शुक्लपक्षें एकांतरें दश उपवास करवा. देवपूजा करवी. साधुने ७ विगय.

७० पंच परमेष्टि तपः—प्रथम दिवसें उपवास, बीजे दिवसें एकलगाणुं, त्रीजे दिवसें आयंबिल, चोथे दिवसें एकासणुं, पांचमे दिवसें नीवी, छट्ठे दिवसें पुरिमड्ढ, सातमे दिवसें बियासणुं, ए सात दिवसें एक उली थाय. एवी पांच उली करवाथी पांत्रीश दिवसें तप पूर्ण थाय. उजमणे पंचतीर्थी बिंब जरावबुं. अरिहंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय अने साधुनी जक्ति करवी. मोदक पांत्रीश तथा बीजी वस्तु पांच पांच ढोकवी.

७१ चतुर्विध श्रीसंघतपः—प्रथम बे उपवास करीने पछी एकांतरें चार उपवास करवा, उजमणे चतुर्विध श्रीसंघनी पूजा करवी.

७२ निर्वाण दीपक तपः—ए तप त्रण वर्ष पर्यंत प्रत्येक दीवालीयें चौदश तथा अमावास्यायें मली बे बे उपवास करवा, एवं ७ उपवास थाय. अहोरात्र श्रीवीर आगल घृतनो दीपक सूर्यास्तथी उदय अने उदयथी अस्त पर्यंत करवो. रात्रि जागरण करवो, उजमणे साधर्मिकनुं वात्सल्य करवुं. साधुने दान आपवुं, ए तप करनार जन्मांतरें पण अंध थाय नही.

७३ घन तपः—तिहां छि पर्यंत घन तपमां प्रथम

एक उपवास, पछी बे उपवास, वली एक, पछी बे, वली बे, पछी एक, वली एक, पछी बे, एम बार उपवास अने आठ पारणां मली वीश दिवसें ए तप पूर्ण थाय, जिनपूजा पूर्वक तप करवुं. मोदक वीश ढोकवा. एवी रीतें त्रिपर्यंतादिक अनेक प्रकारें घन तप करवुं. ते सर्वयंत्रोनी स्थापनाए जोइने करवां.

७४ श्रेणि तपः—एक उपवास करीने पारणुं करवुं. पछी बे उपवास करीने पारणुं करवुं. तेवारें त्रण उपवास अने बे पारणां प्रथम श्रेणियें थाय. बीजी श्रेणियें एक,बे,त्रण, त्रीजी श्रेणियें एक,बे, त्रण,चार, चोथी श्रेणियें एक,बे,त्रण, चार,पांच, पांचमी श्रेणियें एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ. छठी श्रेणियें एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात. एवं छ श्रेणीना उपवास ८३ अने पारणां २७ मली ११० दिवसें तप पूर्ण थया पछी उजमणे रूपानुं सात खूणुं धवलगृह करवुं अनें सुवर्णमय निसरणी करवी.

७५ वर्ग तपः— एक, बे, बे, एक, बे, एक, एक, बे. ए बार उपवासें प्रथम ओली जाणवी. पछी २,१,१,२,१,२,२,१, ए बीजी पंक्ति जाणवी. पछी २,१,१,२,१,२,२,१,ए त्रीजी पंक्ति जाणवी. पछी १,२,२,१,२,१,१,२, ए चोथी पंक्ति जाणवी. पछी २,१,१,२,१,२,२,१, ए पांचमी पंक्ति जाणवी. पछी १,२,२,१,२,१,१,२, ए छठी पंक्ति जाणवी. पछी १,२,२,१,२,१,१,२, ए सातमी पंक्ति जाणवी. पछी

२,१,१,२,१,२,२,१, ए आठमी पंक्ति जाणवी. ए द्विपर्यंत वर्ग तपोदिन ए६ अने पारणां चोशठ, सर्व मली मास पांच ने दिन दश थाय. उजमणे जिनपूजा, करवी मोदक १६० ढोकवा. साधु अने संघनुं वात्सल्य करवुं.

७६ परतपालि तपः—पंच वर्ष यावत् श्रीवीरकल्याणिकथी आरंभी उपवास त्रण करवा. पछी बत्रीश नीवी करवी. छेल्ले उपवास त्रण करवा. वर्ष वर्ष प्रत्यें एक सइनी तापसी स्थालें पोलि करीने तेमां विविध सुरभि घृत शेर एक प्रक्षेपीने ढोकवुं.

७७ त्रिपर्यंत घन तपः—१,२,३. ए प्रथम पंक्ति २,१,३.ए बीजी पंक्ति,३,२,१. ए त्रीजी पंक्ति १,३,२. ए चोथी पंक्ति, २,३,१. ए पांचमी पंक्ति, ३,१,२. ए छठी पंक्ति, १,२,३. ए सातमी पंक्ति, ३,२,१. ए आठमी पंक्ति, २,३,१. ए नवमी पंक्ति. सरवाले तप दिन ५४ पारणां २७ सर्व दिन ७१ उजमणे साधुनी भक्ति तथा श्रीसंघनी भक्ति करवी.

७८ लाखी पडवे तपः—श्रीवर्द्धमानना शिष्य गौतमनुं उपवासादिकें करी आराधन करवुं. कार्त्तिकशुदि एकमने दिवसें ए तप करवुं. ते प्रत्येक प्रतिपदायें एकवर्ष पर्यंत करवुं. उजमणामां चोखा माणां पांच अने पाली बे, तथा मग सेई एक अने पाली बे, मठ सेइ एक उपर पाली बे, अडद माणां पांच, जवार माणां छ ने पाली बे, गोधूम सेइ बे, चोला सेइ त्रण, चणा सेइ पांच, तिल पाली सात, जव सेई सात,

वाल सेर आठ, कांग माणां त्रण, कोद्रवा माणां त्रण ढोकवां. यथाशक्ति दान पूजा वगेरे करवां.

७ए लघु संसार तारण तपः—प्रथम त्रण आयंबिल करी चोथा दिवसें उपवास करवो, एवी रीतें निरंतर त्रण वार करतां, बार दिवसें तप पूर्ण थाय.

ए० वृद्ध संसार तारण तपः—उपवास त्रण करीने पारणें आयंबिल करीयें, एम निरंतर त्रण वार करीयें, तेवारें नव उपवास अने त्रण पारणां थाय, सर्व मलिने बार दिवसें तप पूर्ण थाय. उजमणे रूपामय वहाण क्षीर समुद्रमां तरतुं मूकवाने बदले दूधमां तरतुं मूकवुं. मांहे मोती विद्रुम जरवां.

ए१ अहवदशमि तपः—प्रत्येकवर्षनी जादरवा शुदि दशमीना दिवसें यथाशक्तियें उपवासादिक करीने अंबिका देवी पासें संगीतादिकथी रात्रिजागरण करवुं. नालियेर, केरी, मोदकादिक अंबाजी पासें ढोकवां, बीजे दिवसें साधर्मिकने जमाडी साधुने दान आपी पारणुं करे. अंबा देवीने कंकुनी पील करवी, अंजन करवुं. तेम पोतानेपण अंजन करवुं. अने रेशमी चुरणीयो, कांचली, चंडुउ तथा चक्कु देवीने चडावीयें, दीपक करवा. तप करवुं, ते दिवसें ब्रह्मचर्य पालवुं. एम दश वर्ष पर्यंत करवुं. तेमां एटलुं विशेष जे फलादिक पहेला वर्षें चडावीयें, ते करतां बीजे वर्षें बमणां, त्रीजे वर्षें त्रिगुणा एम यावत् दशमे वर्षें दश गुणां ढोकवां.

ए२ हारतपः—प्रथम बे उपवास करीने पढी

एकासणांतरित उपवास सात करवा, वळी उपवास त्रण करीने फरी एकासणांतरित उपवास सात करवा. प्रांते उपवास बे करवा. एवं तपोदिन एकवीश अने पारणां सत्तर थाय. उजमणे सुवर्ण, माणिक, मुक्ता फळ, विद्रुम, रजत, चोखळा, पदक काहलिका संयुत हार श्रीवर्द्धमानजिन आगळ ढोकवो. अथवा टंका वळी आजूषण श्री माहावीरने कंठें धरवुं.

८३ अष्टकर्मोत्तर प्रकृति तपः—आठ कर्ममां ज्ञानावरणीयनी उत्तर प्रकृति पांच, दर्शनावरणीयनी नव, वेदनीयनी बे, मोहनीयनी अठावीश, आयुःकर्मनी चार, नामकर्मनी एकशो ने त्रण, गोत्रकर्मनी बे, अंतरायकर्मनी पांच, सर्व मळी १५८ प्रकृतिना १५८ उपवास एकाशनांतरें करवा. एटले एक उपवास पछी एक एकासणुं एम १५८ उपवासें एक ओळी थाय. तेवी आठ ओळी करवी. उजमणे एक शो अठावन्न अठावन्न वस्तु तथा १५८ मोदक ढोकवा. ज्ञाननी पूजा करवी, साधुने दान आपवुं.

८४ कूपक्क संवत्सरी तपः—एकाशनांतरित ३६० उपवास करवा, उजमणे रूपानो घट शेलडीना रसथी जरीने देव आगळ ढोकवो. अने मध्यना बावीश तीर्थंकर आश्रयी २४० उपवास एकाशनांतरित करवा.

८५ अष्टमासिक तपः—एमां एकाशनांतरित २४० उपवास करवा, उजमणे २४० मोदक ढोकवा.

८६ षट्मासी तपः—एकाशनांतरित यथाशक्तें १८०

उपवास जेवी रीतें निर्वाह थाय, तेवी रीतें करवा, उद्या पनने विषे १७० मोदक ढोकवा.

७७ क्षीरसमुद्रतपः—ए तप पर्युषण पहेलां आ दरीयें एकासणां आठ, उपर एक उपवास करवो. उज मणे खीर खांम अने घृतें नरेलो थाल ढोकवो, सा धर्मिकनुं वात्सल्य, साधुने दान तथा ज्ञानपूजा करवी.

७८ सात सौख्य, आठ मोग्व तपः—एकासणां सात करी उपर एक उपवास करीयें, उजमणे आठ मोदकं अर्पण करवा. तेमां आठमो मोदक चतुर्गुणो करवो. शोल खाद्य ढोकवां, ज्ञानपूजा करवी.

७९ शत्रुंजय मोदक तपः—पुरीमट्ट, एकासणुं, नी वी, आयंबिल, उपवास, ए पांच वानां पांच दिवसें करी तप पूर्ण करीयें, उजमणे पांच मांणाना मोदक पांच मुद्रासहित देव आगल ढोकवा, ज्ञानपूजा करवी.

९० मतांतरें दश पच्चरकाणतपः—एक उपवास, एकासणुं, एकलशीथुं, नीवी, एक कवल, एकलगणुं, एक दत्ति, आयंबिल, एक घरुं, एक अलेवाडो नीवी, एम दश दिवस पर्यंत तप करवो उजमणे मोदक दश लाववा, अष्ट प्रकारी पूजा करवी, ज्ञानपूज करवी.

९१ स्वर्ग स्वस्तिक तपः—एमां चार एकासणां करी उपर एक उपवास करीयें. उजमणे पांच धान्यनो स्व स्तिक पूरवो, पांच धान्य मण मण लेवां. ज्ञान पूजा करी.

९२ मतांतरें घनतपः—द्विपर्यंत दिन बार, पारणां आठ सर्व दिन वीश. त्रिपर्यंत दिन चोपन, पारणां स

त्तावीश, सर्वदिन एकाशी. चतुःपर्यंत दिन १६०. पा रणां ६४. सर्वदिन २२४. पंचपर्यंत घनतप दिन ३७५. पारणां १२५. सर्वे दिन ५००. षट्पर्यंत दिन ७५६ ने पारणां २१६. सर्वे दिन ९७२. पारणां नीविथी करवां.

९३ मुकुटसप्तमी तपः—आषाढ वदि सातमने दिवसें प्रथम उपवास करी श्रीविमलनाथनी पूजा करवी. बीजो कार्त्तिक वदि सातमे उपवास करी श्री आदिनाथनी पूजा करवी. मागशिर वदि सातमे उपवास करी श्रीमहावीरनी पूजा करवी. पोष वदि सात्तमें उपवास करी श्रीपार्श्वनाथनी स्नात्रपूर्वक पूजा करवी. उजमणे लोकनालिनी पूजा करी उपर मुकुटस्थानें रहेला शिवक्षेत्रनी जिनावलीने सुवर्ण रत्नघडित मुकुट धरावववो. जिनजिनप्रत्यें सात सात फोफल, तथा सात सात लाडु ढोकवा, गुरुनी पूजा करवी, तथा ज्ञानपूजा करवी.

९४ अंबिका तपः—पांच कृष्ण पंचमीयें श्रीनेमीश्वर पूजा पूर्वक अंबिकानी पूजा करी यथाशक्तियें एकाशनादिक तप करवुं. नैवेद्य तथा फल ढोकवां. उजमणे साधुने नवां वस्त्र, अन्न, पान, आपी प्रतिलाभवा. अंबानी मूर्त्ति बे पुत्र सहित तथा आम्रवृक्ष सहित करावववी. पछी तेनुं पूजन करवुं.

९५ श्रुतदेवता तपः—शुक्लपक्षनी एकादशीने दिवसें उपवास करवो. एवी अगीयार एकादशी पर्यंत करवो. जे दिवसें तप करवुं, ते दिवसें मौन रहेवुं.

श्रुतदेवतानी पूजा करवी. उजमणे पूजा परिधायनिका करवी. पोताने घेर श्रुतदेवतानी मूर्त्ति प्रतिष्ठित करीने पूजवी, छ विगय ढोकवां.

ए६ माणिक प्रस्तारिका तपः—आशोशुदि अगीयारशें उपवास, बारशें एकासणुं, तेरशें नीवी, चौदशें आयंबिल, पूनमें उपवास करवो. ए प्रथमरीति कही. हवे बीजी रीति कहे छे. आशोशुदि बारशें आयंबिल, तेरशने दिवसें नीवी, चौदशें एकासणुं अने पूर्णिमायें पण एकासणुं करवुं. ते पूनमने दिवसें प्रजातें सूर्योदय थया पहेलां प्रातःकालमां स्नान करीने पोताना हाथना खोबामां जूषण, एक नालियेर, अक्षत लइने महोत्सव पूर्वक जिनप्रासादने विषे प्रथम प्रदक्षिणा करीने जिनवरपासें खोबामां रहेली सर्ववस्तु ढोकवी. बीजी प्रदक्षिणामां बीजोरुं ढोकवुं, त्रीजी प्रदक्षिणामां सपत्र पूगीफल ढोकवुं. चोथी प्रदक्षिणामां छकडो ढोकवो. सात धान्य ढोकवां. तथा लवण, कापड, कुसुंब, कपास,सुंहाली १०८, बेहेडुं एक, एकशो शोल दीवा करवा. जमणे रूपानुं कोडियुं अने सोनानी वाट करावची.

ए७ गणधर तपः—श्रीवर्द्धमान जिनना गौतम प्रमुख अगीयार गणधरने अगीयार उपवास अथवा अगीयार आयंबिलें करी आराधवा. उजमणे गुरुने अगीयार वेश आपवा. संघपूजा करवी.

ए८ पद्मोत्तरतपः—नव कमल एटले पद्म छे. ते ए

केक पद्में आठ आठ उपवास करवा. उजमणे आठ दलनुं सुवर्ण कमल करी तेनी उपरें गौतमस्वामी आलेखीने देव आगल मूकवा. ज्ञानपूजा करवी.

९९ अंगविशोधित तपः—आयंबिल त्रण, नीवी त्रण, एकासणां त्रण अने उपवास एक करवो. उजमणे तेर मोदक पुस्तक आगल ढोकवा.

१०० आगमोक्त केवलि तपः—आयंबिल दश अने उपवास एक करवा. उजमणे मोदक अगीयार, नालीयेर अगीयार, तथा कापडुं एक, ए सर्व पुस्तक आगल ढोकवां. श्रीजिननी अष्टप्रकारी पूजा करवी.

१०१ रत्नरोहण तपः—एकाशन एक, नीवी एक, आयंबिल एक, उपवास एक, ए प्रथम ओली, पछी नीवी, आयंबिल, उपवास अने एकाशन. ए बीजी ओली. पछी आयंबिल, उपवास, एकासन, नीवी, ए त्रीजी ओली. पछी उपवास, एकासण, नीवी, आयंबिल, ए चोथी ओली थइ. अने प्रांतें छेल्ली एक उपवास, एक विकृति एकासन, एक नीवीता रहित नीवी, एक आयंबिल, ए पांचमी ओलीयें तप पूर्ण थया पछी उजमणे रत्नमय नोकरवाली पांच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच, रत्नमय बिंब पांच, मोदक वीश, एटलां वानां पुस्तक आगल ढोकवां. ए तप करवाने दिवसें ब्रह्मचर्यसहित ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनुं आराधन करवुं. पारणाने विषे गुरुनी अंगपूजा यथाशक्तियें करवी. तथा अष्टप्रकारी पूजा करवी. ए

तप करवाथी संतानप्राप्ति, निर्मलनेत्र अने तप कर नारनी स्त्रीने गर्भस्राव थाय नहिं ए तप त्रण वर्ष पर्यंत करवुं. एनो आरंभ आशो शुदि पंचमीथी करवो.

१०२ सिद्धिवधूकंठाभरण तपः—प्रथम बे उपवास, पछी एक, त्रण, एक, बे, एम नव उपवास करी उजमणे नव मुक्ताफल ढोकवा. ज्ञानभक्ति करवी.

१०३ पदकडी तपः—प्रथम एक उपवास, पछी बे उपवास, पछी एक उपवास. एव चार उपवास करी उजमणे मोती अने परवालां ढोकवा.

१०४ छठ तपः—छठ २२९ करवां तेवारे ४५८ उपवास थाय उजमणे ४५८ मोदक ढोकवा.

१०५ कल्याणिक तपः—जिन जन्मकल्याणकथी आरंभीने एकांतरादि उपवास तेम दीक्षादिकल्याणकें पण करीयें. जेम छेल्लो उपवास कल्याणक तिथियें आवे. तेम करीयें. उजमणे थाल चोवीश, पहेरामणी चोवीश, लुहुण चोवीश, तिलक चोवीश ढोकवां.

१०६ मेरु कल्याणक तपः—श्रीआदीश्वरनुं. एमां छ उपवास एवी रीतें करीयें, के जे वर्षें मेरुकल्याणक करीयें, ते वर्षें प्रथम तो लागट त्रण तेलां करीयें, अने पारणे पारणे बियासणुं करीयें. पछी वली लागट एकांतरें उपवास छ करीयें. जो त्रण तेलां पहेलां करी शके नही, तो पहेलां बे तेलां करीने पछी मेरु कल्याणक महाशुदि मध्यें त्रीजुं तेलुं तेहीज वर्षें करे.

१०७ कमलनी छली तपः—एकांतरें आठ उपवा

सनी एक उली एवी नव उलि एकज वर्षमां करवी. उ
जमणे रूपानां तथा सोनानां नव नव कमल ढोइयें.

१०८ अशोकवृक्ष तपः—आशो मासें उपवास पन्नर
एकासणां पन्नर करीयें. उजमणे अशोकवृक्ष करावीयें.

१०९ चांद्रायण तपः—शुक्ल पडवाथी आरंभीने
दिन पन्नर सीम एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल
करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो चंद्र आपीयें.

११० सूरायण तपः—कृष्ण पडवाथी आरंभीने
दिन पन्नर लगें एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल
करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो सूर्य आपीयें.

१११ तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान तपः—पहेला तीर्थंक
रनुं आयंबिल अथवा नीवी एक करवी. एम बीजा
तीर्थंकरनी बे करवी. एम अनुक्रमें वधारतां चोवीश
मांनी चोवीश नीवी करवी. फरी पाछा वलतां चोवीश
मानी एक करवी, तो पार्श्वनाथनी बे करवी. एम उत्कृष्ट
में वधारतां वधारतां यावत् प्रथम तीर्थंकरनी चोवीश
करवी. अने ते ते दिवसोमां ते ते तीर्थंकरोनी विशेष
पूजा करीयें, एम त्रसो नीवी अथवा आयंबिल थाय.

११२ लक्ष नमस्कार जाप विधि कहियें छैयें. पूर्वे
अष्टप्रकारी पूजा करीने देव वांदिने जिननी पासें पंच
परमेष्ठिनां गुणणां गुणवानो प्रारंभ करवो, प्रथमपद
जप पूर्ण थाय, त्यारें चंदननुं तिलक भगवानने करवुं,
द्वितीय पदने विषे पुष्पमाला, तृतीयपदने विषे कपू
रनी पूजा करवी. चतुर्थ पदने विषे अक्षत ढोकवा.

पंचमपदने विषे धूप धाणुं करवुं. नमस्कार पूरा थाय त्यारें नगवानने तिलक करवुं. एम ज्यारें हजार जप संपूर्ण थाय, त्यारें शक्रस्तव पूर्वक अक्षत नैवेद्यादिक दान करवुं. एम पच्चीश सहस्र पूर्ण थये बते साधु संविनाग अने साधर्मिक नक्ति करवी. एम नूमिशयन एकाशन पच्चरकाण त्रिविधाहार, ब्रह्मचर्य पालन पूर्वक लक्ष जप करवो, अने ज्यारें सहस्र जप थाय, त्यारें नालियेर नगवान पासें ढोकवुं. अक्षत दान वगेरे करवुं, साहामिवाब्रल्य तथा जागरण करवुं.

११३ अष्टापद पाहुडी तपः—आशोशुदि आठमथी पूर्णिमा पर्यंत ते आठ दिवससुधी एकाशनादिक तप करवुं. उजमणे पूजा करवी. नैवेद्य ढोकवां.

११४ जैनजनक तपः—निरंतर आयंबिल बत्रीश करवां, उजमणे जिनपूजा करवी.

११५ निगोदरस तपः—प्रथम एक उपवासने एकासणुं, पबी बे उपवासने एकासणुं, पबी त्रण उपवासने एकासणुं, फरी बे उपवास ने एकासणुं, वली एक उपवास ने एकासणुं उजमणे चौद मोदक आपवा. एथी निगोदायु क्षय थाय ॥

११६ अष्टमी तपः—आठम आठमने दिवसें उपवास अथवा आयंबिल करी आराधीयें, उजमणे दूधें नरेला कलशनी उपर धोलुं वस्त्र ढांकी ते उपर साकरना महोटा मोदक आठ तेने ज्ञानोपकरण सहित कर्मक्षय निमित्तें प्रतिमा वा पुस्तक आगल ढोकवा.

११७ मोक्ष करंड तपः—उपवास, आयंबिल, नीवी, एकासणुं, पुरिमड्ढ,ए एक ओली थइ. एवी पांच ओली करतां पच्चीश दिवसें ए तप पूर्ण थाय.

११८ स्वर्ग करंड तपः—एकासणां बार,नीवी नव, आयंबिल पांच,उपवास एक एवं २७ दिवसें पूर्ण थाय.

११९ सौभाग्य सुंदर तपः—एक उपवास अने एक आयंबिल एम बत्रीश दिवस करवाथी तप पूर्ण थाय.

१२० चतुःषष्टि तपः—एक एकासण, एक आयंबिल, एम बत्रीश दिवस करवा,एकासणें फासु पाणी त्रिविहार पच्चख्खाण करवुं ॥

१२१ जद्रादि प्रतिमा तपः—जद्र प्रतिमा तपमां बे उपवास करीयें, अने महाजद्र प्रतिमामां चार उपवास करीयें, सर्वतोजद्र प्रतिमामां दश उपवास करीयें.

१२२ अष्टाह्निका तपः—एमां एकेक जिन आश्रयी पांच कल्याणिक आश्रयी देइ चालीश चालीश एकासणां करतां चोवीश जिननां ९६० एकासणां थाय, उजमणे पक्कान्न चोवीश, तिलक चोवीश, ढोकवा. अने संघ पूजा करवी.

१२३ ठन्नुजिन तपः—एमां अतीत, अनागत अने वर्त्तमान मली त्रण चोवीश, तथा सीमंधरादिक वीश विचरता जिन अने श्रीऋषजानन, चंद्रानन, वर्द्धमान तथा वारीषेण ए चार शाश्वतजिन मली ठन्नु जिन आश्रयी एकेक उपवास वखतने अनुकूले तूटा तूटा करतां ठन्नुं उपवासें तप पूर्ण थाय.

अथाजव्यकुलकं प्रारन्यते

जे अजव्य जीव होय, ते नीचें लखेलां स्थानक क्यारें पण फरसे नही तेनां नाम कहे छे.

४ इंड्रपणुं तथा पांच अनुत्तर विमाननुं देवपणुं. त्रेशठ शिलाका पुरुषनी पदवी तथा नव नारद पणुं

६ केवली जगवान् तथा गणधरजीने हाथे दीक्षा.

७ श्रीतीर्थंकरजी वरसी दान आपे ते दान न पामे.

१३ श्रीजिनशासनना अथवा प्रवचनना अधिष्ठायिक जे देव देवीयो छे,तेनी पदवी. तथा नव लोकांतिक देवपणुं अने देवनुं स्वामीपणुं तथा तेंत्रीश गुरु स्थानकीयानुं देवपणुं वली पन्नर जातिना परमाधामि पणुं,अने युगलिक मनुष्यपणुं ए सर्व न पामे.

२२ संजिन्नश्रोत्रलब्धि तथा पूर्वधरनी लब्धि तथा आहारकलब्धि तथा पुलाक लब्धि. तथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञानादिकनी लब्धि न पामे.

२ए जावसहित सुपात्रने दान आपवा पणुं तथा समाधिपणे मरण अने विद्याचारण तथा जंघाचारणनी लब्धि, मधुरासव, खीरासव लब्धि,तथा अक्षीणमहाणसी गौतमजी जेवी लब्धि न पामे.

३१ श्रीतीर्थंकर तथा तीर्थंकरनी प्रतिमा संबंधि शरीरना जोगादिकना कारणमां पण नावे जो पृथ्वीकायादिकपणाना जाव पामे तोपण तीर्थंकरना शरीरादिपणु न पामे अथवा जोगमां नावे.

३२ चक्रवर्त्तिना चौदरत्न पणुं न पामे.

३३ विमाननुं स्वामिपणुं न पामे.

३६ समकित, सम्यक्ज्ञान तथा सम्यक् चारित्रपणुं.

३८ तपादिक गुणना बाह्याभ्यंतर भाव तेने न पामे

३९ अनुभवसहित गुणगुणीनी भावसहित भक्ति.

४१ श्रीजिनाज्ञा पूर्वक समान धर्मीनी तथा श्री संघनी वात्सल्य सेवा भक्ति सहाय साधी शके नही.

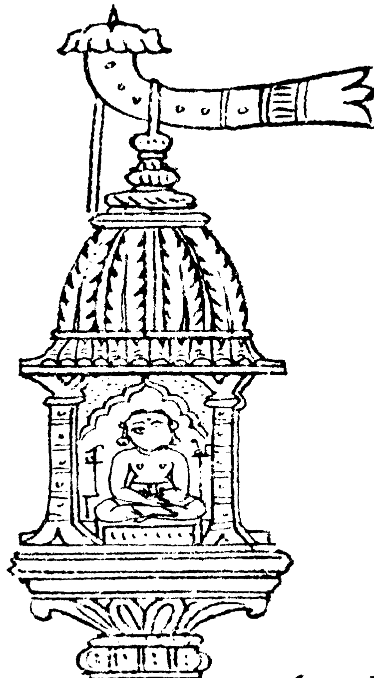
४३ संसार दुःखनी खाण छे, एवो संविज्ञ पणानो भाव नही थाय. तथा शुक्लपक्षीयो न थाय.

४९ श्रीतीर्थंकरना पितापणे, मातापणे, स्त्रीपणे, यक्ष यक्षणी पणे न थाय, तथा युग प्रधान न थाय.

५१ आचार्य, उपाध्याय, साधु, चतुर्विध श्रीसंघ, थविर, कुल, गण, ए दशनो विनय न करे, तथा ए दशनुं परमार्थ उत्कृष्ट गुणें अधिक पणुं न पामे.

५३ अनुबंधहिंसा, हेतुहिंसा अने स्वरूपहिंसा एज त्रण प्रकारें वली अहिंसा श्रीतीर्थंकरें कही छे, ते त्रणे प्रकारनी अहिंसाने द्रव्यथी तथा भावथी एवा बे प्रकारें अभव्य जीव न पामे. ए सर्व वात अभव्य कुलक उपरथी लखी छे ॥ इति अभव्य कुलकं समाप्तम्॥

॥ इति श्री जैनप्रबोध पुस्तकस्य
प्रथमभागः समाप्तः ॥

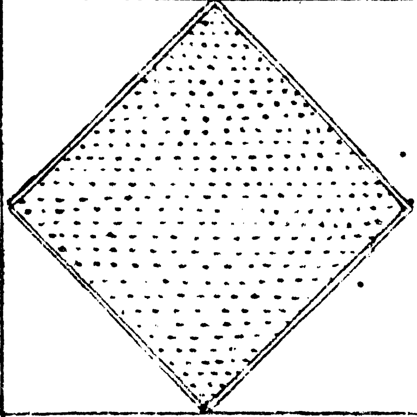

गुणरत्नसंवत्सरेतपोदिन
४०७ पारणां ७३
एवंदिनतो ४८० मासतो १६ स्कंदकमुनिनिसिक्कर्यो भगवतीजी॥
तपोदिन ३२ | १६ | १६ | पारणां २ एवं ३४
तपोदिन ३० | १५ | १५ | पारणां २ एवं ३२
तपोदिन २८ | १४ | १४ | पारणां २ एवं ३०
तपोदिन २६ | १३ | १३ | पारणां २ एवं २८
तपोदिन २४ | १२ | १२ | पारणां २ एवं २६
तपोदिन ३३ | ११ | ११ | ११ | पारणां ३ एवं ३६
तपोदिन ३० | १० | १० | १० | पारणां ३ एवं ३३
तपोदिन २७ | ९ | ९ | ९ | पारणां ३ एवं ३०
तपोदिन २४ | ८ | ८ | ८ | पारणां ३ एवं २७
तपोदिन २१ | ७ | ७ | ७ | पारणां ३ एवं २४
तपोदिन २४ | ६ | ६ | ६ | ६ | पारणां ४ एवं २८
तपोदिन २५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | पारणां ५ एवं ३०
तपोदिन २४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | पारणां ६ एवं ३०
तपोदिन २४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | पारणां ८ एवं ३२
तपोदि० २० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | पा० १०। ३०
त० १५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | पा० १५

कनकावलीतपो दिन ४३४ पारणां ८८ एवं मास १७ दिन १२ कृतगडदत्तायांकालेदेवकृतं ॥

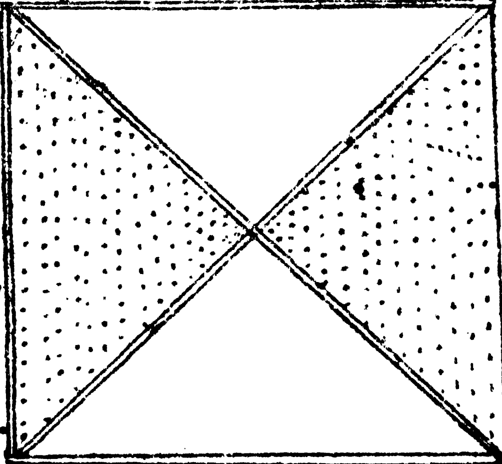
रत्नावलीतपो दिन ३८४ पारणां ८८ एतं मास १५ दिन २२

एकावलीतपो दिन ३३४ पारणां ८८ एवं मास १४ दिन २ नाम मावेण अपपातिके ॥

यव मध्य चंद्रायण शुक्ल प्रतिप
दारंभे एक कवल आदि दीजाय तत
एकोत्तर वृद्धिताव यावत् पूर्णिमा
याकवल १५ ततः कृष्ण प्रतिपदिक
वल १४ एवं एकैक हान्यात् तावत्
वत् कृष्ण चतुर्दश्यां कवल १ ततो
व्यवहारेण हृदं ॥ २०॥



वज्र मध्य चंद्र प्रतिमा कृष्ण प्रतिपदि
धारं ते कवल १५ तत एकैक हान्या
अमावास्यांक कवल १ ततः शुक्ल प्र



तिपदि २ एवं शुक्ल चतुर्दश्यां कवल
१५ पूर्णिमायां मुपवासः व्यवहारेण
हृदं ॥ २१

सप्तसप्तमीयातपसितपोदिन १९६ पारणा ४९ एवं सर्वदिन संख्या॥२४५॥

१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७
१	२	३	४	५	६	७

॥अष्टअष्टमीयातपसितपोदिन २८८ पारणा ६४ एवं सर्व संख्या॥३५२॥

१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८
१	२	३	४	५	६	७	८

महाभद्रतपःयंत्रस्थापना॥

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

२ १	१	१	१	१	२	१

हारतपोदिन २२ पारणा १७

२ १	१	१	१	१	१	१

नवनवमीयातप पा० ४८६॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९

तपोदिन ४०५ पारणा ८१ सर्व ४८६

लघुसर्वतोभद्रतपोदिन ७५ पा

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

दशदशमीयातपो दिन ५५० पा० १०० सर्व दिन ६५०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

॥सर्वतोभद्र तपो दिन ३९२ पारणा ४९ सर्व ४४१

५	६	७	८	९	१०	११
८	९	१०	११	५	६	७
११	५	६	७	८	९	१०
७	८	९	१०	११	५	६
१०	११	५	६	७	८	९
६	७	८	९	१०	११	५
९	१०	११	५	६	७	८

अल्पाहारे कोटी सहित तपः ॥१॥

कवल १ एका १ कवल १
कवल २ एका १ कवल २
कवल ३ एका १ कवल ३
कवल ४ एका १ कवल ४
कवल ५ एका १ कवल ५
कवल ६ एका १ कवल ६
कवल ७ एका १ कवल ७
कवल ८ एका १ कवल ८

प्राप्तकोटी सहित तपः ॥३॥

कवल १७ आंबिल १ कवल १७
कवल १८ आंबिल १ कवल १८
कवल १९ आंबिल १ कवल १९
कवल २० आंबिल १ कवल २०
कवल २१ आंबिल १ कवल २१
कवल २२ आंबिल १ कवल २२
कवल २३ आंबिल १ कवल २३
कवल २४ आंबिल १ कवल २४

द्विभागकोटीसहिततपः ॥२॥

कवल ९ नीवी १ कवल ९
कवल १० नीवी १ कवल १०
कवल ११ नीवी १ कवल ११
कवल १२ नीवी १ कवल १२
कवल १३ नीवी १ कवल १३
कवल १४ नीवी ० कवल १४
कवल १५ नीवी १ कवल १५
कवल १६ नीवी १ कवल १६

किंचिदूनान कोटीसहिततपः ॥४॥

कवल २५ उपवास १ कवल २५
कवल २६ उपवास १ कवल २६
कवल २७ उपवास १ कवल २७
कवल २८ उपवास १ कवल २८
कवल २९ उपवास १ कवल २९
कवल ३० उपवास १ कवल ३०
कवल ३१ उपवास १ कवल ३१
कवल ३२ उपवास १ कवल ३२

॥षट् पर्यंत तपादि यंत्र स्थापना॥ तपोदिन ७५६ पारणा २१६ उभयं वर्ष २ मास ८ दिन १२॥ सर्वदि ९७२

१	२	३	४	५	६	४	५	६	१	२	३
२	३	४	५	६	१	५	६	१	२	३	४
३	४	५	६	१	२	६	१	२	३	४	५
४	५	६	१	२	३	१	२	३	४	५	६
५	६	१	२	३	४	२	३	४	५	६	१
६	१	२	३	४	५	३	४	५	६	१	२
२	३	४	५	६	१	५	६	१	२	३	[illegible]
३	४	५	६	१	२	६	१	२	३	४	५
४	५	६	१	२	३	१	२	३	४	५	६
५	६	१	२	३	४	२	३	४	५	६	१
६	१	२	३	४	५	३	४	५	६	१	२
१	२	३	४	५	६	४	५	६	१	२	३
३	४	५	६	१	२	६	१	२	३	४	५
४	५	६	१	२	३	१	२	३	४	५	६
५	६	१	२	३	४	२	३	४	५	६	१
६	१	२	३	४	५	३	४	५	६	१	२
१	२	३	४	५	६	४	५	६	१	२	३
२	३	४	५	६	१	५	६	१	२	३	४

॥आंबिल वर्द्धमान तपः आंबिल १ उपवास १ आंबिल २ उपवास १ आंबिल ३ उपवास १ एवं तां वृद्धियितव्यं यावत् आंबिल १०० उपवास १ एवं आं० ५०५० उ० १०० एवं वर्ष १४ मास ३ दिन २० अंतकृद्दशासु महासेन कृष्णा आर्यया एतद् गणितं॥

व

धर्मचक्रवालतपोदिन

कर्मचतुर्थतपोदिन ८८ पारणां ८१ एवं मास ४ दिन ८॥

३	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	श्री	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१	१	३

बत्तीसकल्याणकतपोदिन ३८ पारणां ३४ एवं दिन सर्व ७२॥

३	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	श्री:	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	३

त्रिपर्यंतघनतपोदिन ५४ पारणा २७ एवं मा० २ दिन २१

१	२	३
२	३	१
३	१	२
२	३	१
३	१	२
१	२	३
३	१	२
१	२	३
२	३	१

त्रिपर्यंतप्रतरतप दिन १८ पारणा ९ एवं दिन २७॥

१	२	३
२	३	१
३	[illegible]	१

पंचपर्यंतप्रतरतपोदिन ७५ पारणां २५ एवं मा० ३ दिन १०

१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४

चतुपर्यंतघनतपोदिन १६० पारणां ६४ एवं [illegible] मा० ७ दिन १४

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३
१	२	३	४
३	४	१	२
४	१	२	२
१	२	३	४
२	३	४	१
४	१	२	३
१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
०	०	०	०

चतुःपर्यंततपोदिन प्रतर ४० पारणां १६ एवं मास १ दिन २६

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

पंचपर्यंतघनतपोदिन ३७५ पारणां १२५ एवं मास १६ दिन २०॥

१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	३
५	१	२	३	४
१	२	३	४	५
२	३	४	५	१
३	४	५	१	२
४	५	१	२	३